सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाश : (भाग 5)

तन्त्र सिद्धि रहस्य

• • • संस्कृत, बांग्लाभाषी, शाबर व जैन धर्मेण मन्त्र प्रयोगा : • • •

कर्णपिशाचिनि, यक्षिणि, किन्नरी, पंचाङ्गुली, घण्टाकर्ण कल्प विधान

संस्कर्त्ता :
पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)

प्रकाशक :
मयूरेश प्रकाशन
मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राज.)

* मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा * मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा * मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र

मिश्र खण्ड

सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाशः (भाग ५)

तन्त्र सिद्धि रहस्य

संस्कृत, बांग्लाभाषी, शाबर व जैन धर्मेण मन्त्र संग्रह

2000 से अधिक मन्त्र व यन्त्र

- कर्णपिशाचिनि, यक्षिणि, किन्नरी, पञ्चांगुली घण्टाकर्ण आदि के प्रयोग
- सरल बांग्ला–हिन्दी भाषी उग्र शाबर मन्त्र प्रयोग
- हिन्दी भाषी विविध शाबर मन्त्र प्रयोग
- प्राकृत ग्रन्थों, जैन ग्रन्थों में वर्णित आगम मन्त्रों के प्रयोग
- वस्तु एवं वनस्पति तन्त्र विज्ञान
- सकाम प्रयोगों के सिद्ध यन्त्र प्रयोग
- यक्षिणि, पिशाचि, भूत–प्रेत, मारण, मूठ प्रयोगों में आवश्यक सावधानियों का वर्णन

सर्वाधिकार सुरक्षित

मदनगंज किशनगढ़
मयूरेश प्रकाशन

संस्कर्त्ता :
पं. रमेशचन्द्र शर्मा 'मिश्र'

प्रकाशक :
मयूरेश प्रकाशन
मदनगंज–किशनगढ़, जिला–अजमेर (राज.)
फोन – 01463–244198, 9829144050

* मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा * मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा * मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र

✤ **प्रकाशक :-**
पं. रमेशचन्द्र शर्मा
मयूरेश प्रकाशन
छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज
किशनगढ़, जिला - अजमेर (राज.)
✆ : (01463) 244198, 9829144050

✤ **प्रथम संस्करण : -**
देवोत्थापनएकादशी, सन् २००६
✤ **पंचम संस्करण - फरवरी, २०१५**

मूल्य :- ३७०/-
(तीन सौ सत्तर रुपये मात्र)

✤ **सर्वाधिकार सुरक्षित :**
पं. रमेशचन्द्र शर्मा
मयूरेश प्रकाशन,
छाबड़ा कॉलोनी,मदनगंज
किशनगढ़ पिन-305801
जिला - अजमेर (राज.)
✆ : (01463) 244198,
मो० 9829144050

✤ **लेजर टाईप सेटिंग :**
माँ दधीमथि कम्प्युटर्स
किशनगढ़, अजमेर (राज.)
✆ : 9214511897

✤ **पुस्तक मंगवाने हेतु दूरभाष :**
✆ : (01463) 244198,
9214512223, 9829144050

✤ **चेतावनी** ✤
भारतीय कॉपीराइट एक्ट के अधीन इस पुस्तक के सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन है। न्यायक्षेत्र मदनगंज- किशनगढ़ होगा।

✤ मुख्य प्राप्ति स्थल ✤

१. सरस्वती प्रकाशन, अजमेर ✆ 2425505
२. ईश्वरलाल बुकसेलर, जयपुर ✆ 2575532
३. सुधीर एण्ड ब्रदर्स, जयपुर ✆ 2573655
४. किताब घर, जोधपुर ✆ 2637334
५. रत्नेश्वर पुस्तक भण्डार, बीकानेर ✆ 2549712
६. आनन्द प्रकाशन, दिल्ली ✆ 23923021
७. नाथ पुस्तकभण्डार, दिल्ली ✆ 23275344
८. D.P.B पब्लिकेशन, दिल्ली ✆ 23273220
९. K.K. गोयल & कम्पनी, दिल्ली ✆ 23253604
१०. सरदार करमसिंह बुकसेलर, हरिद्वार ✆ 225619
११. सरदार सोहनसिंह, इन्दौर ✆ 2532344
१२. कुल्लुका ज्योतिष केन्द्र, उज्जैन ✆ 4013150
१३. श्रीबुक डिपो, उज्जैन
१४. प्रसाद बुक एजेन्सी, पटना ✆ 9234797825
१५. खण्डेलवाल एण्ड सन्स, वृन्दावन ✆ 2443101
१६. केशव पुस्तकालय, मथुरा ✆ 2401130
१७. गोवर्धन प्रकाशन मथुरा ✆ 2415311
१८. श्रीकृष्ण पुस्तक भण्डार, गया
१९. अनिल बुक स्टॉल, कोलकाता
२०. हिन्द पुस्तक भण्डार, कोलकाता
२१. अभिषेक पुस्तक, गोरखपुर ✆ 6821902
२२. चन्द्रशेखर बुक स्टॉल, देवघर
२३. क्रियेटिव पब्लिकेशन्स, दिल्ली ✆ 23985175
२४. किशोरीलाल पुस्तकालय, विलासपुर
कोटा, भीलवाडा, उदयपुर, चित्तोड, सीकर, होशंगाबाद, नीमच, मन्दसौर, भोपाल, रायपुर, ओंकारेश्वर, बडौदा, लखनऊ, वाराणसी, मुम्बई, झाँसी, गया, रायपुर, C.P. Tank बम्बई।

****

विषय सूची

****

****

शाबर मन्त्र खण्ड (प्रथम भाग)

सरल बांग्ला भाषी उग्र मन्त्र प्रयोगाः

(१०३–१३२)

****

शाबर मन्त्र खण्ड (द्वितीय भाग)

(१३३–२९६)

षट्कर्म प्रयोगाः
(१८१-२३०)

विविध मन्त्र साधना प्रयोगाः (२३१-२३७)

अभिचार निवारक, टोटका नाशक मन्त्र (२३८-२४९)

गृह शांति, विवाह के उपाय, गर्भ रक्षा, सुख प्रसव के मंत्र (२६१-२६९)

प्राकृत ग्रन्थे जैन मतेन मन्त्र खण्ड

(२९७–३६०)

****

****

यन्त्र विज्ञान खण्ड

(३६१–४०२)

वस्तु विज्ञान तंत्रम्

(४०३–४१३)

॥ श्री गणेशाय नमः॥

गुरुदेव श्री श्री श्री १०८ श्री नथमलजी दाधीच कौलाचार्य
श्रीभुवनेश्वरी महाशक्तिपीठ, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

लेखक – पं. रमेश चन्द्र शर्मा 'मिश्र'

दो शब्द

तंत्र शास्त्र नाम से सबकी रुचि व अभिलाषा बनती है कि अब इसके ज्ञान से सर्वकार्य सुलभ हो जायेगें। कम मेहनत से अधिक लाभ होगा। मनचाहे व्यक्ति का आकर्षण होगा तथा शत्रु को प्रताड़ित किया जा सकेगा।

परन्तु तंत्र शास्त्र प्राणी की जीव से ब्रह्म पर्यन्त **''सृष्टि, स्थिति, संहार (जन्म-युवावस्था- मरण) निग्रह, अनुग्रह एवं निग्रह-अनुग्रह''** इन अवस्थाओं का बोध कराता है। तथा मोक्ष मार्ग के द्वार खोलता है। इस मार्ग के ज्ञान को यंत्र-मंत्र-तंत्र (औषधोपचार- द्रव्यहोम- वस्तु तंत्र) के द्वारा प्राप्त करने की विधि को **तंत्र शास्त्र** कहा गया है। जिस तरह वेदों में अथर्ववेद व धनुर्वेद में लौकिक कार्यो की, रोगनाश, शत्रुनाश, धन वैभव प्राप्ति हेतु प्रयोग है। उसी तरह तंत्र शास्त्र में मोक्ष साधना के अतिरिक्त भौतिक, लौकिक कामनासिद्धि हेतु अनेकानेक प्रयोग है।

नाथ सम्प्रदाय व अन्य सम्प्रदायों में आदिवासी एवं कम पढ़े लोगों के लिये सरल भाषा में शाबर मंत्रों की रचना करी। ऐसा माना जाता है कि शाबरनाथजी ने शाबर मंत्रों की रचना करी।

तंत्रशास्त्र में गुरु की उपासना एवं उन पर श्रद्धा विश्वास को सिद्धि का मूल द्योतक माना है। अधिकत्तर विद्वान प्रारम्भ में **''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु........ ''** मंत्र बोलकर कर्म प्रारम्भ कर, बाद की कर्म पद्धति पर ही ध्यान देते है। अच्छे तांत्रिक ध्यान-साधना व व्यहार में भी गुरु का स्मरण बनाये रखते है, सिद्धियां उनके अधिक नजदीक रहती है।

शाबर मंत्रों की रचना में गुरु की सत्ता को ही विशेष महत्त्व दिया गया है। सभी मंत्रों में **''नमो आदेश गुरु को.......... एवं मेरी भक्ति गुरु की शक्ति......''** शब्दों का प्रयोग किया गया है। अत: गुरु सत्ता की महिमा साधक में अधिक रहती है, जिससे मंत्र शीघ्र फलदायी होते है।

अच्छे सिद्ध साधकों ने एक दूसरे के धर्म व देवताओं का आदर किया है, कट्टरता को छोड़ दिया है। इसी कारण हिन्दू मंत्रों में मुस्लिम देवताओं की आन तथा मुस्लिम मंत्रों में हिन्दू देवताओं की आन दी गई है। जैन सम्प्रदाय में भट्टकारकों का दबदबा था उनमें भी आगम हिन्दू देवताओं का प्रचलन रहा है।

****

१००८ श्री श्री श्री आचार्य महावीरकीर्तिजी का दक्षिण भारत में व अन्य जगह प्रचार रहा है। उनके शिष्य १०८ आचार्य गणधर श्रीकुन्थुसागरजी ने अपने गुरु के संकलन को **"लघु विद्यानुवाद"** नाम से प्रकाशित किया।

इस पुस्तक में जैन प्रयोगों का प्राकृत ग्रंथों से तथा लघुविद्यानुवाद पुस्तक से संकलन किया गया है।

हिन्दी सरल **बंगला भाषी** प्रयोगों को हमारे गुरु श्रीनथमल जी दाधीच ने कामाक्षा प्रदेश के सिद्ध पुरूषों से प्राप्त किया जो दुर्गम स्थानों पर रहते थे। कठिन शब्दों की मैने टीका की है। ये मंत्र शीघ्र प्रभावी है।

मंत्र महार्णव, मंत्र महोदधि व प्रमाणिक तंत्र ग्रंथों से तांत्रिक, शाबर मंत्र, यक्षिणी-पिशाचि विद्या तथा चेटक तंत्र का संकलन किया गया है।

कुछ शाबर मंत्र अनुभवी व्यक्तियों से प्राप्त किये है। **घण्टाकर्ण कल्प** प्रयोग श्रीकृष्णगोपालजी शर्मा- खण्डार से प्राप्त किया है। कुछ प्रचलित मंत्रों का यत्र-तत्र से संकलन कर पुस्तक में १००० से अधिक मंत्र प्रयोगो का संकलन किया है।

तंत्र प्रसंग में कुछ प्रसंग दिये है जिनको जानकर साधक जान सकता है कि ऐसे प्रयोगों में क्या सावधानी बरतें, क्या-क्या बाधाऐं आती है। कर्णपिशाचि आदि प्रयोगों में कई जगह साधक को सचेत किया गया है।

कई प्रसंग जो तंत्र प्रसंग में दिये है, उनके मंत्रों का ज्ञान लुप्त है, केवल किवदंतियाँ हो गई है। अतः ऐसे लुप्त प्रयोगों को ढूंढने की आवश्यकता है।

"कौतुक रत्नाकर" मंत्रमहार्णव व कई अन्य पुस्तकों में नारेल में से वस्तु निकालना, एलम्यूनियम के बरतन या सिक्के को गर्म करके दिखाना इत्यादि कई प्रयोग दिये गये है जिनके सहारे से झूठे तांत्रिक कई लोगों को ठगते है। अतः इस तरह के तंत्र प्रचार का भण्डाफोड़ करें।
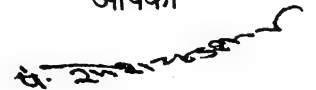
एक ही मन्त्र कई पुस्तकों में विभिन्न प्रयोग विधियों में प्राप्त होता है। अतः जो विधि सरल, अनुकूल, व गुरु मार्गदर्शन से सही प्रतीत होती हो उसे ही प्रयोग करें।

जो व्यक्ति निर्लोभ व परोपकार हेतु शाबर मंत्रों का प्रयोग करता है उसके प्रयोग अधिक सफल रहते है।

अतः मेरा निवेदन है कि प्रयोगों को निर्लोभ भाव से जनहित में कार्य में लेवें ताकि ईश्वर आपको यश दे सके।

साधकों के हित व मार्गदर्शन हेतु जो यथा शक्ति संकलन व समाधान परिचर्चा माँ भगवती की कृपा से जो कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ वह विद्वानों के चरणों में समर्पण है।

आपका

(पं रमेश चन्द्र शर्मा 'मिश्र')
(दाधीच वंशोद्भव)

तन्त्र प्रसङ्ग व सावधानियाँ

परमब्रह्म परमेश्वर आदि शक्ति है। इसी ब्रह्म ने अपनी आह्लादिनी शक्ति के सहयोग से सृष्टि का निर्माण किया। पहले शब्द ब्रह्म का प्रागट्य हुआ। यही शब्द ब्रह्म ॐ सृष्टि का आदि कारण है। वहीं त्रिगुणातीत व त्रिगुणात्मक है। सत-रज-तम इन तीन गुणों से यह सृष्टि पैदा हुई। इन्ही के कारण आत्मा व जीव का प्रादुर्भाव अलग रूप में हुआ। आत्मा अमर है एवं शब्द भी अमर है। शब्द अमर है अतः मंत्र का प्रभाव भी निश्चित है। मंत्र भावना के अनुसार कार्य करेगा। मोक्ष, मारण मोहन, उच्चाटन, आकर्षण वशीकरण, मोहन, क्षोभण, द्रावण संबन्धी जो भावना मंत्र में कही गयी है। उसका ही प्रतिफल साधक को मिलेगा। पूजन यंत्रों में प्रकृति एवं जीव के संबन्ध को स्वीकार कर पूजन क्रिया संपादित की गई। **प्रायः पूजन यंत्रों में बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल एवं भूपुर होता है।**

बिन्दु मूल देवता व ब्रह्म का द्योतक है, **त्रिकोण** सत् रज-तम का द्योतक है। **पुरुष देवता** की उपासना में त्रिकोण का मुँह उर्ध्व होना चाहिये एवं स्त्री देवता की उपासना में त्रिकोण का मुँह नीचे होना चाहिये। सृष्टि क्रम में जीव की छह अवस्थायें होती है। **सृष्टि, स्थिति, संहार, निग्रह-अनुग्रह, निग्रह-अनुग्रह**। इन अवस्थाओं को यंत्र में **षट्कोण के** रूप में दर्शाया जाता है। मनुष्य के अष्टऐश्वर्य, अष्टपाशदोष, अष्टसिद्धि तथा देवता के भी अष्टऐश्वर्य, अष्टउपदेवता आदि का निरूपण **अष्टदल** के रूप में किया जाता है।

प्राणी के निवास, कार्यक्षेत्र की सभी दिशायें तथा मूल देवता इष्टदेवता के स्वतंत्रलोक ब्रह्माण्ड की दशों दिशाओं के द्योतक के रूप में भूपुर की रचना की गयी है।

जीव के जन्म (सृष्टि) यौवन (स्थिति) मारण(संहार) तीनो अवस्थाओं को हम दैनिक जीवन काल में देखते है। निग्रह क्रम में जीव अन्तरिक्ष में पितर, प्रेत, देवता आदि योनि में विचरण करता है। अनुग्रह क्रम में जीव अपने प्रभु के लोक में प्रभु का सामीप्य पाता है। निग्रह-अनुग्रह क्रम में जीव ब्रह्म में समा जाता है एवं देशकाल के अनुसार पृथ्वी पर स्वेच्छा से अवतरण करता है।

यही **षट्कोण** का महत्व है। यह षट्कोण जीव या उपास्य देवता की इह लोक से ब्रह्मलोक तक की गतिविधियों को सम्पादित करता है।

इस समस्त क्रम की पूजा अर्चा के द्वारा साधक जीव व इष्टदेवता का इहलोक से ब्रह्मलोक पर्यन्त शक्ति को जागृत कर अभीष्ट कार्यो की सिद्धि प्राप्त करता है। निष्काम भाव से उपासना कर मोक्ष को प्राप्त करता है।

अतः इहलोक से ब्रह्मलोक पर्यन्त तक की शक्ति को प्राप्त करना, उससे सम्बन्ध स्थापित करना एवं उसके द्वारा मनोभीष्ट कार्य की सिद्धि प्राप्त करने की क्रिया को **तंत्र** कहते है। तत्संबन्धि शास्त्र को **तंत्रशास्त्र** कहा गया है।

किसी व्यक्ति विशेष के लिये यदि षट्कोण में उसका नाम लिखकर उस पर कोई प्रयोग किया जाता है तो उसके जन्मकाल के पुण्य, वर्तमान कार्य क्षेत्र एवं उसके शरीर को हानि पहुँचायी जा सकती है।

यंत्र संकेत भाषा है एवं मंत्र पूर्णरूप से भावना से एवं श्रद्धा से संबन्ध रखता है। मंत्र में जो कामना उपास्य

****

देवता से की गयी वही फल से प्रतिपादित होती है। मंत्र व देवता पर जितनी श्रद्धा व विश्वास होता है प्रयोग उतना ही शीघ्र एवं विशेष फलदायी होता है।

मंत्र जपते समय तत्संबन्धी देवता के स्वरूप एवं मंत्रार्थ तथा अभीष्ट कार्य तीनों का मन्थन साथ चलता है तभी साधना का फल मिलता है।

भावना- दृढ़ भावना एवं कल्पना के संयोग से दिव्य तेज का प्रादुर्भाव होता है। स्वप्न के समान दृश्य देवता व अभीष्ट कार्य साधक के मानस जितने दृढ़ होंगे वैसा ही फल शीघ्र होगा।

जैसे- धन प्राप्ति प्रयोग में भावना करे कि देवता की कृपा मेरे पर हो रही है, कार्य व्यापार के विघ्न दूर हो रहे है। देवता कि कृपा से धन वृद्धि हो रही है। आरोग्य लाभ विषय में कल्पना करें की ग्रहदोष, टोना-टोटका दोष, व पीड़ा दोष दूर होकर रोगी को लाभ मिल रहा है, अमुक अंग पुष्ट हो रहा है।

विवाह कार्य हेतु कल्पना करें कि उसके सम्बन्ध की चर्चा पक्की हो रही है, शुगन का मुहुर्त्त निकाल रहे है। राजपक्ष-वाद-विवाद, सभाजित प्रयोग में भावना करें कि मेरा आत्मबल बढ़ रहा है, शत्रु संघ में फूट पड़ रही है। सामने वाली पार्टी के सहयोगी एवं वकील की बुद्धि भ्रमित हो रही है मुझे विजय प्राप्त हो रही है, आदेश मेरी इच्छानुसार प्राप्त हो रहा है।

मारण प्रयोग में शत्रु को घोर पीड़ा की भावना, स्तंभन में शत्रु की समस्त गति, बुद्धि के स्तंभन व कार्य-व्यवसाय में रुकावट की भावना करे तो मोहन, आकर्षण एवं वशीकरण में व्यक्ति के अपने अनुकूल होने की भावना करे।

दृढ़ भावनाओं का ओज पुञ्ज व्यक्ति के हृदय व नेत्र भाग से निकालता है जो प्रारब्ध में भी परिवर्तन करने की शक्ति रखता है। शाप, आशीर्वाद द्वारा निकलने वाली किरणे ही व्यक्ति के लिये फल प्रतिपादित करती है।

शत्रु को हानि पहुँचाने वाली प्रक्रिया में मंत्र को रोष चित्त से करना पड़ता है जिससे विस्फोटक तरंगे अगले व्यक्ति को हानि पहुँचा सके।

टेलीपेथी द्वारा अपने विचारों को दुसरे तक पहुँचाकर उसके मन में तत्संबन्धी कल्पना को रोपित कर संदेश पहुँचाया जाता है।

ध्वनि- हम जो शब्द बोलते है उससे ध्वनि तरंग पैदा होती है। ध्वनि तरंगो से वातावरण एक आकृति पैदा होती है। भावनात्मक रूप से की गई स्तुति से उत्पन्न तरंगे आकाश उसी आकार में स्वरूप ग्रहण करती है जैसी कल्पना की गई है। अत: कभी-कभी साधना में ऐसा महसूस होता है कि कोई मेरे निकट है, कोई मेरे पास से गुजरा है कोई परछाई मेरे आस-पास है।

कुछ तरंगे हृदय को सकून देती है तो कुछ तरंगे मन में क्षोभ पैदा करती है। किसी से मीठा बोलते है तो प्रिय लगता है एवं कहीं शोर सुनाई देता है तो मन में क्षोभ पैदा होता है।

ध्वनि की अलग-अलग परिस्थिति में अलग-अलग गति होती है एवं उससे उत्पन्न होने वाले प्रकाश पुञ्ज के घेरे का रंग भी अलग-अलग होता है मधुर संगीत की गति व ओज हमारे हृदय को अधिक आह्लादित करती है, आत्मा को प्रसन्नता देती है। पाश्चात्य संगीत की कर्कश ध्वनि हमारे स्थूल शरीर को गति देती है, मन तक ही वे तरंगे पहुँचती है, हृदय व्र आतत्मा तक नहीं पहुँच पाती है अत: उनका प्रभाव अस्थाई होता है।

कर्कश व तेज ध्वनि हमारे बाह्य शरीर को, मस्तिष्क, मनोविचारों को प्रभावित करती है। इससे हमारे संस्कारों विचारों में तथा स्वभाव में परिवर्तन आता है।

अनहद नाद से शब्द ब्रह्म की उत्पत्ति हुई। दस तरह के नादों का प्राकट्य हुआ। चिंणि, चिणि, झिंणि, झिंणि, समुद्र के गर्जन, ढोल, नगाड़े, वंशी, घण्टा, शंख, मेघ के गर्जन, झांझर, ईत्यादि कई नादों का आभास व्यक्ति अपनी ध्यानावस्था में प्राप्त करता है।

साधारण व्यक्ति यह सब नहीं कर सकता है। परन्तु यदि वह मन्दिर जाता है तो ढोल, नगाड़े, घण्टा, झांझर शंख इत्यादि की ध्वनि से परिभूत होता है। ये ध्वनियाँ शब्द ब्रह्म को परिभाषित करती है इसलिये मंदिर में जाने पर आनन्द की अनुभूति होती है। मूर्ति की तरफ मुँह करके सच्ची भावना से की गई स्तुति मूर्ति में विशेष ओज पैदा करती है वही ओज परावर्तित होकर हमें आनन्द देता है हमारे अभीष्ट की पूर्ति करता है।

विशिष्ट महात्माओं एवं सिद्ध पुरूषों द्वारा स्थापित एवं देवताओं द्वारा पूजित मूर्तियां विशेष प्रभाव रखती है।

कई स्थानों पर देखा गया है कि कभी मन्दिर का स्थान निमित्त मात्र पूजित था। वहाँ आज बड़ी-बड़ी धर्मशालायें है एवं आपार भीड़ रहती है। उसका कारण है कि जैसे-जैसे भक्तों की भीड़ बडने लगी वहाँ तरंगों के घनत्व में वृद्धि होती गई।

मंत्र एवं यंत्र के साथ संख्या का भी विशेष महत्व है। सांख्यकारों एवं ब्रह्म वादियों ने शून्य से लेकर ९ तक की संख्या में ब्रह्म एवं माया का भेद बताया है। उसी के आधार पर अलग-अलग अंकों के समीकरण द्वारा अलग-अलग यन्त्र बनाने से अलग-अलग तरह की शक्ति प्रतिपादित होती है। जिससे भिन्न-भिन्न कार्य सिद्ध होते है।

पन्द्रह यंत्र, बीसा यंत्र, बत्तीसा यंत्र, चौतीसा यंत्र, छत्तीसा यंत्र, ५२ वा यंत्र, ५६ वा यंत्र, ६४ वा यंत्र, एवं अन्य तरीकों से हजारों यंत्र प्रचलित है यंत्रों में "चौथाई, आधा, तिहाई एवं ऽ " को रेखा (लकीरों) के माध्यम से रचना की गई है। ये यंत्र प्रणेता सिद्ध पुरूष के मनोबल, तपोबल के ओज से पुटित है जो हजारों वर्षो के अन्तराल से भी शक्ति संचित किये हुये है।

संख्यात्मक यंत्र मंत्रों से भी शीघ्र प्रभावी होते है। न किसी देवता की आन व सौगंध होती है न कोई विशेष श्मशान साधना व बलि प्रयोग की आवश्यकता है। यंत्र को विशेष विधि से आम्रपट्ट, भोजपत्र, ताम्र, रजतादि पत्रों पर विभिन्न द्रव्यों व अलग-अलग वृक्ष की कलम, पक्षी के पंखों से लिखने से अलग-अलग कार्य सिद्ध होते है।

जैसे पन्द्रह यंत्र के सैकड़ो प्रयोग है। पीपल के दो पत्तें लेवें, एक पत्तें पर "ज्ञं त्रं क्षं हं.......आं अं" विलोम मातृका लिखें। दूसरे पत्तें पर पन्द्रह यंत्र लिखकर नीचे लिखें अमुक व्यक्ति का संक्रमण (चेप -पीप) अमुक रोग दूर होवें। अमुक के स्थान पर रोग का नाम लिखें। पत्तें के धूप कर डोरे से बाँधकर दरवाजे से बांध देवें तो जैसे-जैसे पत्ता सूखता जावेगा वैसे-वैसे रोगी का संक्रमण रोग दूर होता जायेगा। यह प्रयोग मंगलवार, शनिवार या रविवार को करे। इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है यह स्वयं सिद्ध प्रयोग है। अंक व मातृका किसी भी स्याही, पेन, बालपेन से लिख सकते है। यह प्रयोग सकड़ौ बार प्रयोग में लिया गया है।

देवताओं का आवाह्न व वेदोक्त मंत्र ऋचाओं के प्रयोग आदिकाल से होता आया है। अथर्ववेद व धनुर्वेद में उनके तांत्रिक प्रयोग है। परन्तु राक्षसों ने शीघ्र सिद्धि प्राप्ति हेतु आगम मंत्रों का व आसुरी तांत्रिक प्रयोगों का सहारा लिया भृगु ऋषि ने राजा बलि को अग्निहोम द्वारा दिव्य रथ प्राप्त कराया जिस पर बैठकर उसने अमृत पिये देवताओं पर भी

विजय प्राप्त की।

मेघनाथ को जब अपनी विजय संशय युक्त लगी तो गुप्त रूप से अनुष्ठान करने लगा। वहीं एक वट वृक्ष के नीचे नैऋति की पूजा कर भूतो को बलि प्रदान करता था। नैऋति पूजा के बल पर ही देवताओं पर विजय प्राप्त करता था तथा मायावी शक्तियों का अधिपति था।

अतः वेदोक्त मंत्रों का प्रचलन देवताओं व ऋषियों में अधिक था। तंत्रोक्त विधि को असुर गण अधिक प्रयोग में लेते थे एवं ऋषिगण आवश्यकता वश ही प्रयोग में लेते थे।

जब विश्वामित्र ने गुरुवसिष्ठ के सौ पुत्रों को अभिचारिक कर्म के द्वारा मार दिया तो वसिष्ठ ने दुर्गासप्तशती व गायत्री आदि शक्तियों को शापित कर दिया। उन्हे तब आकाशवाणी हुई कि देवि की पंचमकारों युक्त पूजन का ज्ञान प्राप्त करों तब तिब्बत में आकर लामाओं से शिक्षा प्राप्त कर देवि कामाख्या की उपासना करी। अतः प्रतीत होता है कि तांत्रिक उपासना युगों से प्रचलित है।

नाथ सम्प्रदाय भी अपने सम्प्रदाय को राजा दक्ष के यज्ञ के बाद से ही बताते है। बौद्धों में भी चौबीस अवतारों की तरह चौबीस बौद्ध हुये तथा जैनियों में चौबीस तीर्थकर हुये है। नाथ सम्प्रदाय में आदिनाथ शिव ही है।

तांत्रिक पूजा में गुरुमण्डल पूजा में नाथत्रय का ध्यान आया है ''**श्रीगुरुनाथादि गुरुत्रयं**'' इनका पूजा-विधान अनु० प्रकाश भाग ३ व भाग ४ में दिया गया है।

वर्तमान में नवनाथ सम्प्रदाय में ८४ सिद्धों का उल्लेख मिलता है। जो लोग कम पढ़े लिखे थे, आदिवासी क्षेत्रों में रहते थे उनमें गुरु के प्रति भाव अधिक था। **अतः गुरु आज्ञा, आदेश, आन, सौगंध आदि को प्रधानता देते हुये सरल मंत्रों की रचना हुई। जो ''शाबर मंत्रों'' के नाम से प्रसिद्ध हुये।**

विशिष्ट विद्वानों ने तंत्रशास्त्र का आगम व यामल व अन्य तंत्र ग्रंथों में निर्दृष्ट किया। जिनका वर्णन शिव-पार्वती संवाद या भैरव-भैरवी संवाद द्वारा किया गया था।

यामल ग्रंथों में ब्रह्मयामल, विष्णुयामल, शिवयामल, ईत्यादि है। अश्वक्रान्ता (६४ तंत्र), रथक्रान्ता (६४ तंत्र), विष्णुक्रान्ता (६४ तंत्र) इस तरह १९२ ग्रंथ है।

इनके अलावा अनेकानेक प्रयोग हजारों तंत्र ग्रंथों में वर्णित है।

शाबर ग्रंथों का भी एक जगह संकलन ग्रंथ नहीं है। शाबरनाथजी ने लोक कल्याण के लिये लोकभाषा के मंत्र बनाये जो शाबरी मंत्र कहलाते है। शाबर मंत्रों में कुछ मंत्रो का अर्थ बनता है। **परन्तु गुरु भावना व मैंत्र प्रणेता की शक्ति तथा साधक की श्रद्धा व दृढता के कारण मंत्र शीघ्र फलीभूत होते है। इसमें साधक हठीले बालक के समान दृढ निश्चयी होता है। तथा अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु देवताओं को आन व सौगंध भी डालता है। इस साधना में विलोम क्रम व उच्छिष्ट कर्म-मलीन कर्म से भी साधना करता है।**

राजस्थान में माही डेम का निर्माण कार्य चल रहा था उस क्षेत्र में आदिवासी भील रहते है। एक भील तंत्र क्रिया करता था उसका नियम था कि वह अपने मुँह में वहाँ की बनास नदी का पानी भरता था तथा वहां पास के शिव मंदिर में जाकर शिवजी पर मुँह के पानी का कुल्ला करके छोड देता था। उसका नित्यक का नियम था अतः पुजारी उसके जाने के बाद ही साफ-सफाई करके शिवजी की पूजा करता था। वह दिन में लकाड़िया काटकर वहाँ की सरकारी कॉलोनी में कर्मचारी व अफसरों के घरों में जाकर बेचता था। एक दिन इंजिनियर के यहाँ गया तो उसकी पत्नि ने

कहा कि हमारा ट्रांसफर हो गया है, हमने सभी प्रयत्न करके देख लिये लेकिन ट्रांसफर आर्डर कैंसिल नही हुआ। इस पर भील ने कहा **"हूं केन्सिल करा देऊं"** याने मैं ट्रांसफर रुकवा दूंगा। कल साहिब को मेरे साथ भेज देना। इंजिनियर की पत्नि को आश्चर्य हुआ हमारी सारी सिफारिशें प्रयत्न व्यर्थ हुये यह कैसे रूकवा देगा। शाम को पति से कहा कि एक बार भील की बात पर विश्वास करके देखे।

सुबह भील साहब को लेकर शिव मन्दिर गया उसने मुँह से कुल्ला पानी का शिवलिंग पर डाला। इंजिनियर को कहा कि शिवजी को प्रणाम करों तथा सातबार जूते मारो। इंजिनियर साहब घबराये, ऐसा करे तो घोर पाप होगा एवं नहीं करे तो कहीं आदिवासी नाराज होकर मार नहीं देवें। मजबूर होकर अनमने मन से साहब ने वैसा ही किया, साहब जूते मार रहे थे। भील शिवजी से कह रहा था। **सुनो नथी ट्रांसफर कैंसिल करा देऊ** अर्थात् आप सुनते नहीं हो ट्रांसफर कैंसिल करा देना। घर आकर पूरा वृतान्त पत्नि को सुनाया, दोनों सिख परिवार से थे। संस्कारिक थे। बडा पश्चताप हुआ कि हमने हमारे स्वार्थ हेतु ऐसा पाप किया। प्रायश्चित हेतु व्रत व दान-पुण्य किया। शाम को तार द्वारा सन्देश प्राप्त हुआ कि आपका ट्रांसफर केंसिल हो गया है।

यह दृढ़ भावना तथा अपने हठ से की गई भील की प्रार्थन थी, उसकी अन्दरूनी उपासना भावना मैली नहीं थी, नाहीं वह किसी देवता का उपहास करने की भावना से पूजा करता था।

एक अन्य उपासक थे उनके पास सफेद रंग का नर्बदेश्वर शिवलिंग था। उनके कभी आपत्ति होती थी तो शिवजी की पूजा कर एक छोटे डंडे से लिंग पर ताड़न करते । जब शिवलिंग लाल रंग दिखाई देता तब क्षमा प्रार्थना कर पूजा समाप्त करते। पश्चात् उनका कार्य सिद्ध हो जाता।

इस तरह शाबर मंत्र प्रयोग शब्दार्थ पर आधारित न होकर भावना व श्रद्धा पर अधिक आधारित है। इनमें देवता की आन, सौगंध, एवं गुरु की शक्ति ही कार्य करती है।

आलाह व उदल बड़े लडाके व वीर थे। उन्होने ५२ किले फतह किये थे। गुरु अमरा जी सिद्ध पुरुष थे उनके आशीर्वाद से कई संकटो से मुक्ति पाई।

शाबर मंत्र शीघ्र प्रभावी होते हैं- हमारे एक मित्र बगलामुखी के उपासक थे। प्रथमा का सेवन देवी के नाम से करते थे। निराहार नवरात्र करते थे। राजस्थान नहर पर नवरात्रों के दिनों में नजर लग गई परन्तु पाठ पूजन नियमित खराब स्वास्थ्य व ज्वर में भी जारी था। एक कर्मचारी ने कहा कि आपकी उपासना पर नजर लग गई है। मैं कुछ प्रयत्न करके देखूं, कभी कभी खुद का काम खुद से नही होता। कर्मचारी ने झाडा दिया तो दस मिनिट में तबियत ठीक हो गई। परन्तु कभी कभी ऐसे संयोग हो जाते है तो स्वयं के इष्ट व उपासना पद्धति पर शंका होने लगती है। अत: उपासना करते रहे, मार्ग देर-सवेर अपने आप निकल जायेगा। आपका कोई भोग होगा तो निकल जायेगा।

आदिवासी या निम्न जाति के लोगों को ये मंत्र जल्दी सिद्ध होते है क्यों कि उनको मंत्र देने वाला यहीं बात कहता है कि इससे ऊँचा कोई मंत्र नहीं है, तुम सब कुछ करने में समर्थ हो। अच्छा पढ़ा लिखा व उच्च जाति का समझदार व्यक्ति भावार्थ के चक्कर में रह जाता है। फलत: सिद्धि न्यून ही मिलती है।

उदयपुर में पिछोला झील है। एक नटी ने आकर राजा से कहा कि मै एक कच्चे सूत के डोरे के सहारे ही पूरी झील पार कर सकती हूं तो राजा ने आवेश में आकर कहा कि यदि ऐसा हुआ तो राज्य का कुछ भाग मै तुमको दे दूंगा। अपनी प्रदर्शन क्रिया के दौरान जब वह आधी झील पार कर चुकी तो किसी दरबारी ने तलवार से सूत के डोरे से काट

दिया, फलतः नटी झील में गिरकर मर गई।

इसी तरह जोधपुर नरेश को एक जादूगर ने मैदान में बहुत बडा बाग अनेक फलों से युक्त लगाकर दिखाया। किसी दरबारी ने कहा कि यदि इस समय जादूगर को मार दिया जाय तो यह बाग स्थिर रह जायेगा वर्ना सब गायब हो जायेगा। तब जादूगर मारा गया, उसका जब पुत्र जवान हुआ तो उसने अपनी माँ से सारा रहस्य जाना। उसका बदला लेने के लिये उसने यह विद्या सीखी एवं अपना प्रदर्शन जोधपुर में दिखाया। उसने सब दरबारियों के होथों में खरबूजे दिये एवं कहा कि इसको चीरने पर इसके अन्दर से रत्न निकलेगें। फलतः ज्योंहि कटार से खरबूजे से प्रहार किया, दरबारियों के पेट चीरकर खून बहने लग गया।। उसने सूत की कूकडी आकाश में फेंकी तो वह उडकर सुरक्षित आ गया।

प्रेतो की शक्ति व आयु का पता नही लगा– कोई तांत्रिक कुछ प्रेतों को काबू में कर लेता है तो इसका अर्थ यह नही है कि जिन्दगी में उसे कोई हानि नहीं पँहुचा सकता। जिस तरह एक से बढकर एक पहलवान होते है उसी तरह एक से बढकर एक बलवान प्रेत होते है। ब्रह्मराक्षस के नीचे १०८ प्रेत होते है। जिनसे टकराना खतरनाक होता है।

राजस्थान में टोंक जिले में एक सुनार था। वह प्रेत विद्या में प्रवीण था। एक केस ऐसा आया कि जिस पर कई आत्माऐं थी। जब आत्मायें वश में नहीं हुई तो उसने आत्माओं के मारण प्रयोग किया। तिनकों के द्वारा एक बगुले की आकृति बनाई, एक परात में पानी भरा, फिर कुछ जौ लेकर रोगी के ऊपर घुमाकर परात में डालकर आत्माओं का आवाहन किया। जौ के दाने मछली के रूप में परिवर्तित हो गये। तब बगुले को परात में रखकर मंत्र पढ़ने लगा तो बगुला धीरे–धीरे सब मछलियों को खाने लगा। आखिरी मछली बची तब उसने चेतावनी दी थी कि मान जा मैं तेरा अन्त कर दूंगी। सुनार ने कहा कि मैने सबको खत्म कर दिया, तूं अकेली क्या करेगी । फलतः मुखिया प्रेत ने अपनी शक्ति दिखायी, परात उछली सब जगह पानी व जौ के दाने हो गये। उसने कहा घर जाकर देखो क्या हुआ है। घर जाने पर देखा कि उसके परिवार के ४० व्यक्तियों में से कोई नहीं बचा है।

अतः प्रेत की ताकत को धीरे–धीरे तोलना चहिये। घर से बाहर निकलने से पहले स्वयं व घर परिवार की रक्षा, बन्धन करें।

हमारे गुरुजी को उनके गुरु ने कहा था, कि संयोग से युवावस्था में ही तुम्हारी स्त्री चली जायेगी। एक रोगी स्त्री की हालत मरणासन्न जैसी थी। गुरुजी अचानक उठकर चले, उस स्त्री को जल के छीटें मारे तो ठीक हो गई परन्तु स्वंय की स्त्री पर संकट आ गया।

गंडा बनाने वाले बहुत से लोग मयादी गण्डा बनाते है– इसका कारण है कि उनके पास अपनी जो भी तांत्रिक शक्ति प्रेतादि है, वह उस दूषित प्रेत आत्मा से कुछ समय के लिये पूजा बलि भोग द्वारा प्रसन्न कर महिने भर के लिये शांत रहने के लिये मना लेती है। फिर ३ महिने, ६ महिने, साल भर के लिये मना लेती है। इस तरह २–३ वर्ष में आत्मा का मन बदल जाता है और वह उस प्राणी को छोड देती है।

बहुंत से लोग पहिले साधारण प्रयोग से गण्डा बनाते है फिर धीर–धीरे उग्र प्रयोगों को काम में लेते है।

युक्ति ही प्रेत बाधाओं के प्रकोप से बचाती है – बहुत से लोग प्रेतों का बंधन कर उन्हे शीशी, मटकी, या अन्य पात्र में बन्द कर गाड देते है या किसी पेड़ या एक स्थान पर छोड़ कर उसी जगह पर रहने को बाध्य कर देते

है।। ऐसी आत्मायें या उनके मित्र उसका बदला लेने का मौका ढूंढते रहते है।

(१)

नागौर जिले में कुचामन के पास डोढ़ी कोढ़ी नामक ग्राम के ठाकुर बहादुर व तांत्रिक थे। ऊँट के चारों पैरों को बाँधकर बीच में से अकेले ही उठा लेते थे। वे प्रेतों को पकडकर गांव के बाहर एक पेड पर छोड़ देते एवं उसी पर रहने का बाध्य कर देते थे। एक बार संयोग वश शौच के वास्ते पेड़ के पास बैठ गये। प्रेतों ने देखा कि मौका [illegible] है इस समय यह अशुद्ध भी है, इसे अभी मार देते है। प्रेत पेड़ से उतरे तथा ठाकुर को पकड़ कर उठा लिया। [illegible] ने सोचा कि मैं इस अशुद्ध अवस्था में कुछ नही कर सकता। अत: उन्होने युक्ति लगाई एवं प्रेतों से कहा कि [illegible] मेरे को मारना ही है तो कुये बावडी या तालाब में डालो। प्रेतों ने उनको तालाब में डाल दिया उसके पानी से अपने को शुद्ध कर पुन: आत्माओं को काबू में किया।

(२)

एक मौलवी साहब भी प्रेतो को बाँध देते थे। एक बार वे घर से अशुद्ध अवस्था में बाहर जा रहे थे कि रास्ते में कुए के पास बैठे एक दुबले-पतले युवक में किसी प्रेत का आवेश होगया एवं वह मौलवी को लातों घूसों से मारने लगा। वह कहने लगा कि तुमने मेरे बहुत से साथियों का परेशान किया है मै तुम्हे मार कर बदला लूंगा। मौलवी जी उस समय नापाक थे कुछ हो नही सकता था। मानसिक रूप से वजु की भावना कर शुद्ध कने लगे परन्तु सब व्यर्थ। पास में कुए पर एक जानकार समझदार व्यक्ति नहा रहा था। उसने मौके को समझ लिया तुरन्त ही उसने मौलवी साहब के हाथों व पैरों व शरीर पर पानी डाला। मौलवी ने पाक होते ही उस आत्मा को वश में कर अपनी जान बचायी।

(३)

दो जानकार तांत्रिकों में विद्वेष हो गया। एक तांत्रिक का प्रभाव विशेष था। उसने दूसरे तांत्रिक को दबा दिया। व्यक्ति कमजोर होकर मरणासन्न अवस्था में पँहुचने लगा, तो उसने अपनी भूत विद्या को बुलाकर पूछा कि तू क्या कुछ नहीं कर सकता? आत्मा ने जवाब दिया कि मैं उसकी शक्ति के आगे कमजोर हूं। तब उसने कहा कि अच्छा तू मुझे उसकी शक्ति से बात करवा दे। तब उसने बडे तांत्रिक कि प्रेतात्मा से पूछा कि उस व्यक्ति ने तुझे क्या दिया। प्रेतात्मा ने कहा कि १५ दिन कि अवधि बाकी है तब मै तुझे मार दूंगा तो वह मुझे एक मुर्गे कि बलि देगा। उस व्यक्ति ने समझदारी से काम लिया एवं कहा कि १५ दिन किसने देखे, पता नहीं १५ दिन में मुझे कोई बचाने वाला मिल जाये तो तुझे मुर्गे की बलि भी नहीं मिलेगी। मैं तुझे दो मुर्गो की बलि अभी देता हुं तू उसी व्यक्ति को जाकर मार दे। फलत: उसी आत्मा ने अपने स्वामी को ही मार दिया।

(४)

मूठ चलाने वाला कई विधि से प्रयोग करता है- कुछ लोग एक पात्र में पुतली बनाकर उसको धूप दीपादि बलि देकर अमुक के नाम पत्ते के आधार पर मूठ चला देते है एवं वह जाकर अमुक व्यक्ति पर प्रहार कर पीड़ा पँहुचाती है। कुछ मूठ की आत्माऐं मार्ग में जल, नदी, तालाब या देव मन्दिर का लङ्घन नहीं करती मार्ग बदल देती है। कभी-कभी कोई जानकार तांत्रिक के पास से गुजर जाती है तो वह तांत्रिक आकाश में घूमती हुई लौ को पहन जाता है। यदि बडे पक्षि के उडने की आवाज या खन खन जैसी आवाज महसूस कर मूठ का अंदाजा लगा लेता है तो उसे कुऐं, तालाब, पानी के घड़े या किसी वृक्ष पर उतर जाने का आदेश देकर रास्ते में रोक देता है एवं किसी का होने वाला

अनिष्ट रुक जाता है।

यदि मूठ जिस पर जा रहीं है, वह भी तांत्रिक व जानकार होगा तो वस्तु को समझ कर या तो पेड़ पौधौ, पत्थर शिला पर डाल देगा या मूठ को अपनी इष्ट शक्ति से करने वाले पर ही वापस भेज देगा। यदि मूठ चलाने वाला असावधान हो, रक्षा कर्म पूरा नहीं किया हो तो मूठ उसी तांत्रिक को मार देगी।

(५)

एक बार शत्रुबाधा से पीड़ित व्यक्ति मेरे पास आया। मैने उसे बगलामुखि यंत्र कांच में बनवाकर लाने को कहा। वह यंत्र देकर मकान के बाहर ही उतर रहा था कि गिर गया। मालूम होने पर मैंने जाकर देखा कि वह सिढ़ीयों से नीचे लुढक कर जहाँ गिरना चाहिये वहाँ से भी ७-८ फिट दूर जाकर गिरा है अतः किसी आत्मा ने उसे फेंका है। मैनें उससे पूँछा कि तुमने किसी प्रकार की कोई आवाज सुनी? तब उसने कहा कि कोई बड़े पक्षी के उडने जैसी ध्वनि थी।

कारण यह था कि जैसा कि उसके कर्म को जब छेड़ने की कोशिश की गई, उस आत्मा ने अपने मालिक को जाकर कहा कि यदि मुझे उसकी जगह को छोडना पड़े तो मुझे दूसरी जगह बता, जहाँ मैं जाऊं या उसके द्वारा की जाने वाली बचाव शक्ति को काट। अतः भय व पीड़ा पँहुचाने के लिये पुनः कोई अभिचार कर्म क्रिया।

कष्ट निवारण के लिये मैने दुर्गापाठ प्रारंभ किया चौथे दिन उस तांत्रिक ने दो शक्तियाँ चलाई एक मेरे ऊपर व एक यजमान पर ताकि किसी का भी अनिष्ट होगा तो कार्य रुक जायेगा। दिन को करीब साढे ग्यारह बजे मकान के ऊपर धमाके की आवाज हुई जैसे होली दिपावली के दिन बम छोडते है तथा केश, प्लास्टिक, कपड़ा जलने जैसी बदबू घर में फैल गई जो मैने अनुमान लगाया कि कोई मूठ भेजी गई है, दुर्गा पाठ चल रहा था अतः भगवती ने उसे स्वतः ही नष्ट कर दिया। पता करने पर मालूम हुआ कि यजमान के घर पर भी उसी दिन व उसी समय वैसा ही हुआ। शत्रु का वार खाली गया, शक्ति को समझ गया फिर कोई दुष्कर्म का प्रयत्न नहीं किया।

कई बार ऐसा होता है कि प्रयोग करवाने वाला व रोगी परिवार के अलावा प्रयोग करने वाले व बचाने वाले के बीच युद्ध ठन जाता है।

एक बार अन्य यजमान हेतु कर्म करने पर भी कुछ घटित हुआ। शत्रु ने कोई प्रहार भेजा होगा। मेरे घर में पीने के पानी की मटकिया एक पर एक रखीं हुई थी वे ऐसे फूटी की जैसे तलवार से कोई चीज काटी गई हो। मटकी के टुकडे एक तरफ के एक पर एक टिके रहे। एक तरफ के टुकड़े गिर गये। धमाके की आवाज हुई तथा पानी की मटकी से धुंआ निकला अर्थात् जो मूठ आई उसे इष्ट शक्ति ने बचाव कर उसे पानी में ठण्डा कर दिया।

(६)

किसी जमीन में एक जगह किसी आत्मा का निवास था। उस जगह कागज पुट्ठे कि फैक्ट्री लगाई गयी जिसका व्यवसाय कार्य ठप्प हो गया। एक मार्बल व्यापारी ने उसे खरीद कर मार्बल फैक्ट्री लगायी, परन्तु व्यवसायिक विघ्न रहे।

हमने शतचण्डी प्रयोग की सलाह दी परन्तु यजमान ने कहा अन्य परिस्थिति वश बाहर जाना है हम समय नहीं दे सकते अन्य कोई उपाय करे। हमने हवनात्मक प्रयोग की तैयारी शुरु की। पहने दिन वेदी व मण्डलादि बनाये गये। उसी रात्रि को १० बजे से २ बजे तक फैक्ट्री के शेड पर कूदने दौडने जैसी जोर-जोरसे आवाजे होती रही। दिन का हवन कार्य शांति से हो गया। दूसरे दिन के बाद उस आत्मा ने उत्पात मचाना शुरु कर दिया। कभी १०० हार्स पावर

से चलने वाली मशीनों को रोक देता। कभी पानी के हौदों में कूदता और पानी उछलता दिखाई देता। हमने कहा अभी प्रेत गुस्सा हो गया है। ५-७ दिन में शांत हो जायेगा। यह आत्मा किसी वशिष्ट जाति की है इसके लिये कोई स्थान बना देवें, वहाँ धूप बत्ती करके इसे प्रसन्न रखें। ऐसा हि किया तो फैक्ट्रि की दिनों दिन तरक्की हुई।

मैंने विघ्न निवारण के लिये ज्यादातर शतचण्डी केप्रयोग ही कराये है, किसी शाबर मंत्र प्रयोग का सहारा नहीं लिया। **कुछ जगह देखा गया है प्रारम्भ के ५०-६० पाठ होने तक** तो कुछ न कुछ रुकावट व चिन्ता हुई, बाद में शांति व उन्नति हुई।

(७)

जिस तरह किसी भी किरायेदार से जबरदस्ती मकान खाली करवाया जाता है तो जाते समय कोई छोटी मोटी तोड़ फोड़ या उपकरणों को क्षति पहुँचाकर जाता है उसी तरह प्रेतात्मा जाते जाते नुकसान चिन्ता दे सकती है। एक रोगी के उपर भारी आत्मा का आवेश था उसके लिये शतचण्डी प्रयोग कराया गया। रोगी तो ठीक हो गया परंन्तु जाते जाते उनके व्यवसाय को चौपट कर गया।

(८)

प्रेत आत्मायें रोगी के शरीर के साथ-साथ उसकी आत्मा पर भी अधिकार कर लेती है। एक सेठ के यहां गरीब बुढीया किराये पर रहती थी। सेठ की एक छोटी लड़की थी जो अक्सर बुढीया के पास ही खेलती रहती थी। बुढीया के मरने के बाद लडकी बीमार रहने लगी। औषधोपचार व तंत्र मंत्र सभी प्रयोग निष्फल रहे। अंत में एक सिद्ध महात्मा के पास गये उन्होने कहा कि इस लड़की के शरीर के साथ-साथ आत्मा पर भी बुढीया का अधिकार हो गया है। अत: रोगी के सारे लक्षण उस बुढीया के है यह आपकी लड़की के नहीं है। लडकी की आत्मा तो मृत हो चुकी अत: ज्यों हि इस बुढीयां की आत्मा को भगाया जायेगा लड़की मर जायेगी। परिवार के सदस्यों ने कहा कि इसका स्थूल शरीर तो हमारी लड़की का है यह तो वैसे ही मृत समान है इसे मुक्ति दिला दिजिये। अत: अच्छे तांत्रिक देशकाल परिस्थिति देख कर युक्ति से कार्य करते है।

(९)

एक महिला पर जिन्द मोहित हो गया था उसे किसी भी प्रयोग से लाभ नहीं मिल रहा था। जब जिन्द आता था सारे कमरे में सुगंध फैल जाती, औरत के चहरे का रंग हाव भाव बदल जाते। एक तांत्रिक ने सोचा कि यह जिन्द आत्मा शैतान नहीं है पाक है मुस्लिम है अत: सुअर का दांत व हड्डी से स्त्री का ताबीज बनाकर उपचार किया गया।

(१०)

एक स्टेट में महारानी पर गंधर्व का प्रकोप, आवेश हो गया। यज्ञ अनुष्ठान करने पर भी लाभ नहीं हुआ। अंत में एक सिद्ध तांत्रिक से सम्पर्क हुआ तो उसने कहा कि यह गंधर्व की आत्मा का उपद्रव है अत: गंधर्व की प्रिय वस्तुऐं व सभी सुगंधित वस्तुए कमरे से हटा लेवे। कुछ समय महारानी को गंदगी में रहना पडेगा अत: गंदगी व विष्ठा महारानी के कमरे में रखे गये। उस गंदगी के कारण गंधर्व ना ाज होकर चला गया, उसके स्थान छोड़ते ही तांत्रिक ने दिग्बन्धन प्रयोग कर हालात को काबू कर स्थान को शुद्ध कराया।

अत: जैसे कि युद्ध तीर तलवार से नहीं बुद्धि से जीते जाते है, उसी तरह बलवान आत्माओं से सामना होने पर युक्ति भी काम में लेनी चाहिये।

तांत्रिक प्रयोग, मूठ अस्थायी एवं मियादी होते है -

तांत्रिक के प्रयोग से छोडी गई मूठ कभी-कभी अस्थायी होती है जो अल्पकालिक प्रहार करके लौट जाती है। कुछ मूठ १-३-४-१२-२४ वर्ष के लिये बाधित होती है। कोई भारी तांत्रिक वर्षो या पीढ़ीयों तक का बन्धन कर देता है।

हमारे शहर में एक बहुत बडे सेठ थे। चाँदी का कारोबार था। चाँदी का सट्टा चलाते थे। मार्केट पर इतना प्रभाव था कि जो भाव वो चलाते उसी अनुसार कलकत्ते तक का काम होता था। उनकी एकाधिपत्य की प्रवृत्ति से नुकसान खाये हुये कई व्यक्ति उनके दुश्मन बन गये एवं कोई बाहरी तांत्रिक से प्रयोग करा दिया एवं शीघ्र ही उनकी मृत्यु हो गई।

उनका राजसी ठाट बाट था बिल्डींग इतनी बडी थी कि धीरे धीरे १२० किरायेदार उसमें रहने लगे। उसकी एक सन्तान थी धीर-धीरे बडी हुई उसने जो भी करोबार किया उसमें नुकसान उठाना पड़ा। धीरे-धीरे बिल्डींग के कमरों को बेचना पड़ा। २५-५० वर्ष से अधिपत्य जमाये लोगों को ही बेचने से कम किमत ही मिली। नुकसान का क्रम ४० वर्ष से अभी तक जारी है।

फलतः १२० किरायेदारों का मालिक आज स्वयं किराये के मकान में रह रहा है। व्यक्ति काफी वर्षो मेरे सम्पर्क में हैं। मैंने उनको बताया कि संभव है कि तुम्हारे पिता कि मृत्यु किसी तांत्रिक प्रयोग से हुई है। उसकी दुष्ट आत्मा ने रोजगार बन्धन कर रखा है जो भी पिता की मृत्यु का समय के दिनों का हाल बताया उससे हमारी बातों को पुष्टि हो गई।

हमने कहा कि कई बार जो तांत्रिक व्यक्ति ऐसे कार्य करता है वह भी मरने के बाद प्रेत हो जाता है तो वह भी उस मूठ वाली आत्मा की सहायता करता है एवं उपचार मुश्किल हो जाता है। यदि वह जिन्दा होता तो प्रयोग के दबाव से शायद आत्मा को अन्यत्र स्थापित कर देता है।

कई जगह अचानाक हुई ऐसी मौत को उसकी शांति के लिये पितर मानकर स्थान दे देते है परन्तु उस जीव पर अधिकार की हुई प्रेतात्मा आकर बैठ जाती है एवं उसका पुण्य, धर्म सब, खुद ग्रहण कर बलवान हो जाती है तथा बराबर नुकसान पहुँचाती रहती है। अतः तुम्हारा यह प्रयत्न भी व्यर्थ रहेगा। समय के भोग के अनुसार ही तुम्हें राहत मिलेगी। ऐसे में पहले आत्मा का बन्धन कराये। फिर पितरों का कार्य करावें।

संयोग से उनकी युवा पुत्रवधु को अचानक हार्ट अटैक हुआ एवं मृत्यु हो गई। उसकी आत्मा आकर संकेत देती है, सहयोग करती है जिससे उनको कुछ राहत है।

स्वयं के प्रेत रिश्तेदार भी परेशान करते है-

एक व्यक्ति को मैने बताया की तुम्हारे भाई का दोष है। अतः एक सफेद कपडे में चावल, नारेल, व रूपया उसके नाम से घर में रखों बाद में पितर शांति प्रयोग करना। तीन-चार दिन बाद वह व्यक्ति मिला उसने कहा कि दूसरे दिन ही परिवार में कलह हो गई, मै-पिता व अन्य सदस्य सब घर से बाहर है अपने अपने मिलने वालों व रिश्तेदारों के यहाँ है। मैंने कहा तुम्हारा भाई एक्सीटेन्ड में अकाल मौत होकर प्रेत बन गया है। अतः उसको स्थान देने से प्रेतों के से उत्पात् करने लग गया है।

नारेल को कुए में डालों फिर बंदिश कराकर नारायण बलि आदि कर्म कराये। नारेल को कुए में डालते हि घर के सब सदस्य एक हो गये, सुलह हो गई।

सम्मोहन कई तरह का होता है।

मेसमेरिज का सम्मोहन अस्थाई होता है। राजा प्रजा व अमुक व्यक्ति का सम्मोहन अधिक अवधि का भी होता है। उनसे अभीष्ट कार्य कराया जा सकता है। दाम्पत्य कलह, गृह कलह को टाला जा सकता है।

विशेष आकर्षण से प्रयोग में व्यक्ति खिंचा चला आता है चाहे कहीं भी हो। तेल, इत्तर, या अन्य विधि से किये गये प्रयोगों को जानकार व्यक्ति पहचान लेता है। यह प्रयोग रात्रिबलि अधिक होते है।

तांत्रिक जानकारों में भानुमति रानी का नाम भी आता है। एक बार एक तांत्रिक साधु ने एक दासी के द्वारा सम्मोहित इत्र भेजा। रानी ने देखा कि इत्तर पात्र में घूम रहा है। द्रव्य के चक्कर काटने का अर्थ अभिमंत्रित सम्मोहित वस्तु है, उसने इत्र को एक भारी शिला पर डाल दिया। जो प्रयोग किया था वह विशेष बली था कि पत्थर के हृदय वाला व्यक्ति भी पिघल जाये, पूर्ण आकर्षित हो जाये। अतः रात्रि को शिला उठी एवं साधु पर जाकर गिरी, वह मर गया।

ऐसे ही एक अन्य तांत्रिक साधु ने एक स्त्री की ओढनी पर कज्जल की अभिमंत्रित टीकीं लगाकर भेज दिया परन्तु उसका भेद किसी जानकार को लग गया। उसने ओढनी को पत्थर पर डाल दिया। उस पत्थर ने जाकर साधु का शिर फोड़ दिया।

४०-४५ वर्ष पहले हमारे यहाँ एक अघोड तांत्रिक रहता था। उसने किसी पर कोई प्रयोग कर दिया उसको एक जानकार बणिये ने ठीक कर दिया। एक बार संयोग से बनिया औघड से मिल गया, औघड ने कहा कि तुमने हमारी वस्तु को काट दिया, गलत किया। चलो अच्छा है तुम कुछ जानकार हो, हम तुमसे प्रसन्न है, लो यह इत्र का फौआ कान में लगा लो। कान में फौआ रखते ही उसने अन्दाज लगा लिया कि मेरे पर इत्र के बहाने किसी शक्ति का प्रहार कर दिया है। अपने गांव आकर अपने परिवार वालों से कहा कि मैं तीन दिन में मर जाऊंगा। मरते समय मुँह में उड़द भर देना परन्तु तीन दिन तक लाश को जलाना मत। बनिया मर गया, गांव वालों ने उसके परिवार वालों को यह कहकर जलवा दिया कि जब जिन्दा व्यक्ति ही अपना बचाव नहीं कर सका, तो मरा हुआ क्या करेगा?। बनिये के मरने के तीसरे दिन औघड़ श्मशान में पहुँच गया। उसकी अस्थियों को एकत्रित कर उसमें जीव डाल कर कुत्ता बना दिया। उस बनिये का नाम कालू था। उसके गले में पट्टा डालकर सांभर झील गांव में उसके परिवार व मित्र जनो से मिलवाया। कालू जो कुत्ता बन गया था, अपने हाव भाव से सबको पहिचानने का संकेत दिया।

जयपुर जिले में जोबनेर पहाड़ी पर माताजी का मन्दिर है। एक समय कालबेलियाँ जाति के लोग वहाँ बाज खेलने के लिये इकट्ठा होते थे। कोई झण्डा गाड़ता, कोई मंत्र से पताका चीरता तो कोई मंत्र से सिलवाई कर देता। अनेकानेक करतब दिखाते थे। आज उस शाबरी विद्या का लोप हो रहा है।

हमारे एक लेक्चरार मित्र बांसवाडा कालेज में पढ़ाते थे। उन्हे पास ही गांव में किसी आदिवासी भैरव तांत्रिक के बारे में मालूम हुआ। आदिवासी से मिलकर भैरव दर्शन कराने की जिज्ञासा प्रकट की जिसको कुछ शर्तो के आधार पर मान लिया। नियत दिन रात्रि को मद्य व बलि प्रयोग सामग्री के साथ एक जगह जगंल में ले गया। सबके चारों ओर रेखा खींचकर बंधन कर दिया एवं कहा कि जब भैरव आये तब हृदय पर दाहिना हाथ रख लेना और कुछ बोलना

नहीं। कुछ पूजन पाठ के बाद वहां पहाडी पर से किसी के उतरने की आवाज आयी। तथा लोहे की साँकलों के घसीटने जैसी ध्वनि नजदीक आती गई। भैरवाकृति के बडे बडे बाल थे शरीर पर लोहे की शृंखला का बन्धन था। भैरव ने कहा कि मुझे अभी क्यों बुलाया मेरी सभा हो रही है, मैं जल्दी में हूं, इतना कहकर उसने तलवार घुमाई, चारों शराब की बोतलों के ऊपर मुँह कट गये व बोतले खाली हो गयी।

राक्षसों में भी कई जातियाँ व शक्तियाँ होती है।

ब्रह्मराक्षस के नीचे कई प्रेत होते है। जानकार तांत्रिक अगर पिशाच हो जाता है एवं यदि पहले सात्विक राजसी प्रवृत्ति का था तो क्षेत्रपाल बनकर पूजित हो जाता है, क्षेत्र व ग्राम की रक्षा करता है।

सिद्ध तांत्रिक मरने के बाद भैरव स्थान व श्मशान में वास बना लेते है बाद में भैरव के बलि भोग स्वयं ग्रहण करके भैरव नाम से पूजित हो जाते है।

शाबर मंत्रों में वर्णित रक्तियावीर रींगस जिला (जयपुर-सीकर) के पास था। जाति से राजपूज एवं विशेष तांत्रिक था। उसने तपस्या द्वारा बालके के संस्कारों पर अधिकार लिया था। अतः छोटे बालक के गले में हमारे इधर क्षेत्र में रक्तियावीर की पतरी पहनाते है।

शाबर मंत्रों में राजा अजयपाल का वर्णन आता है। वह ख्वाजा मुईद्दिनचिश्ती के समय में हुये थे। अजमेर में उनका राज्य था। कुछ किस्से अजयपाल व ख्वाजा साहिब के तांत्रिक युद्ध के इधर चर्चित है।

रावण के समय में भी एक अजयपाल राजा इधर हुये थे। रावण व अजयपाल के सम्पर्क की लोक कहानियाँ है तथा अजमेर से २० किमी दूर एक पहाड़ी में एक स्थान पर शिव मन्दिर है। वह प्रतिमा रावण द्वारा पूजित बताई जाती है तथा इस स्थान का नाम भी **वैद्यनाथ धाम** है।

शाक्तों में आगम शास्त्रों के विधान के अनुसार पंचमकार पूजा कही गयी है। परन्तु नाथ सम्प्रदाय में **शाबर मंत्रों की चक्रपूजा कही गयी है।** इस पंथ के लोग रात्रि का जागरण करते है। स्त्रीयां अपनी-अपनी कांचलियां, उपवस्त्र एक मिट्‌टी के कुण्डे पात्र में डाल देती है। पुरूष उनमें से एक एक कांचली-उपवस्त्र जिस स्त्री का हो वह उसके पास पत्नि भाव से बैठकर पूजा करेगी चाहे व माँ हो या बहिन।

राजस्थान में इस **पंथ को कुण्डापंथी या कांचलिया पंथी कहते है।** इस पंथ के विषय में कहा गया है कि जो पड़ौसी उस रात्रि जागरण का प्रकाश भी दूर से देख लेता है या ऐसे व्यक्ति का उच्छिष्ट खाता पीता है, चिलम, गांजा, बीड़ी, तम्बाकू भी खाता है उसकी वैष्णव सम्प्रदाय के अनुसार गति नहीं होती है। इस सम्प्रदाय के उग्र तांत्रिक टट्‌टी, पेशाब, गंदगी आसानी से खा पी जाते है।

हमने प्रत्यक्ष में देखा है ऐसे लोगों का वास्तव में मोक्ष नहीं होता है। परिवार में प्रेत दोष का अनुमान लगाने पर नारायणबलि पिण्डदान आदि कर्म कराये गये परन्तु शांति नहीं हुई। इसी सम्प्रदाय से संबधित व्यक्ति को बुलाने पूजन पाठ कराया गया तभी शांति हुई।

हमारे फूफाजी के बडे भाई के एक पडौसी का एक मकान था, उसके कोई नहीं था। मरणोपान्त उसका संस्कार कर्म सभी कार्य किये। उसके भू भाग को अपने अधिकार में लेने के बाद उनके घर में उपद्रव चालू हो गये। पहले उनके बडे लडके को मार दिया फिर फूफाजी के बडे भाई को कष्ट देने लगा उनकी छाती पर बैठ जाता व अन्य उपद्रव

****

किया करता। फूफाजी के बडे भाई के लड्डू गोपाल की सेवा थी। ४-५ घण्टे भजन करते थे। यद्यपि फूफाजी व उनके बडे भाई अलग-अलग मकानों में रहते थे। फिर भी उनके मरणोपरान्त फूफाजी को कष्ट देने लगा, असाध्य बिमारी ने घेर लिया। फूफाजी त्रिकाल संध्या करते थे तथा ६-७घण्टें भजन करते थे, दुर्गापाठ नियमित करते थे। फिर भी कष्ट देने लगा। उस घर की मिट्टी ले जाकर गुरुजी को बतायी। उन्होने लापरवाहीं से अन्यत्र रख दिया, अचानक प्रेत ने उनको शारीरिक पीड़ा पहुँचायी। गुरुजी ने उस आत्मा के बंधन व स्वयं की रक्षा हेतु कर्म पर ध्यान नहीं दिया। **यद्यपि आप शक्ति उपासक है नियमित कर्म करते है फिर भी ऐसे वातावरण में रक्षा कर्म करना जरूरी है।**

गुरु वसिष्ठ के साथ भी ऐसा ही हुआ। निष्काम उपासक थे सिद्ध पुरूष थे। सकाम उपासना व रक्षा कर्म के अभाव में विश्वामित्र ने अभिचार कर्म द्वारा उनके पुत्रों को मार दिया। **अतः साधक को सावधान रहना चाहिये।**

फूफाजी की मृत्यु के बाद प्रेतात्मा ने उनके बडे पुत्र पर अपना प्रभाव डालना शुरु किया, मैंने उससे कहा कि यह आत्मा निम्न श्रेणी के पंथ की है उन्ही मार्ग से गति होगी। फलतः उस पंथ के गुरु से सम्पर्क किया उसने आत्मा को अपने स्थान पर बुला लिया तब जाकर शांति हुई।

अधिकतर प्रेतादि बंधन से मुक्त करने के लिये उतारा उतार कर प्रेतादि की इच्छित वस्तुये चौराहें या श्मशान में रखा देते है। ऐसें ही एक प्रयोग में मैनें देखा कि एक तांत्रिक ने उड़उ का पुतला बनाकर छाबडी में रखा, उस पर वस्त्र, कज्जल टीकीं, आदि लगाकर, भोग वस्तु रखकर उतारा उतारने का कर्म किया तो पुत्तल उछल कर उसके हाथ में चिपक गया तथा जब उसे हाथ से अलग किया तो हथेली की चमडी भी उतर कर साथ आ गयी।

भूत प्रेत को बकराकर रोग का कारण जानते है। इस प्रकार जानने पर प्रेत को राजी कर उसकी इच्छित वस्तुये उसके निमित्त प्रदान कर रोग मुक्ति का उपाय ढूंढते है। कई जगह घर की उन आत्माओं की मुक्ति के लिये तीर्थ पर कर्म भी कराय जाता है। ऐसे में एक नारियल लेकर उपने घर (वर्तमान निवास तथा पुराना पैतृक घर) पर घुमाया जाता है उसमें अतृप्त आत्माओं का आवाह्न कर बिना पीछे मुडे व देखे तीर्थ स्थान में ले जाया जाता है। आत्मा वहाँ जायेगी तब ही उसकी मुक्ति होगी वर्ना मुक्ति नहीं होगी। कई आत्मायें यो कहकर मुकर जाती है कि तुमने हमारा किराया टिकिट नहीं लिया इसलिये हम यहीं रह गये। कुछ बदमाश आत्मायें जाती ही नहीं है अतः साथ में किसी जानकार तांत्रिक को लेजे जो आत्मा को वश में कर नारेल में स्थापित होकर साथ जाये एवं उसके निमित्त होने वाले कर्म को भी स्वीकार करें।

अप्सरा, यक्षिणी, कर्णपिशाची आदि की सिद्धि

इन सिद्धियों में यदि वे नहीं आती है तो उनको जबरदस्ती इष्टदेव की शक्ति से बंधन मंत्रों से, कूट्टन मंत्रों से प्रताडित कर कार्य हेतु मजबूर किया जाता है। ये मंत्र अप्सरा साधन में दिये गये है। परन्तु फिर भी पूर्व जन्म के संस्कार से ही ये प्रयोग सफल होते है। इस विषय की विशेष जानकारी इस प्रकरण में दी गई है।

उदयपुर स्टेट में गुरु शिष्य एक स्थान पर रहते थे। गुरुजी एक कमरे के ताला हमेशा लगाये रहते थे। एक बार गुरुजी बाहर गये तो शिष्य का हिदायत दी कि अमुक कमरे को नहीं खोलना है। इस वचन ने शिष्य की उत्सुकता बढा दी उसने दरवाजा खोला तो देखा कि एक सुन्दर स्त्री बैठी है जो लोहे की सांकलो से जकड़ी हुई है। शिष्य ने पूछा तो उसने कहा कि मैं अमुक यक्षिणी हुं मैं तुम्हारे गुरु पर प्रसन्न नहीं हूं इसलिये मेरा बंधन किया गया है। मैं तुम पर प्रसन्न हुं, तुम सदा सत्कर्म करना मेरा गलत जगह उपयोग मन करना, मै सदा तुम्हारा सहयोग करुंगी।

आसमान में अमावस्या को चांद दिखाने के कई किस्से है-

जयपुर में विद्याधरजी नाम के एक तांत्रिक थे जिनके नाम से आज विद्याधर नगर बसाया गया है। वे इतने बडे तांत्रिक थे कि उनको यक्ष अवतार के रूप में जाना जाता था। एक बार उनके शिष्य दरबार में बैठे हुये थे तो राजा के पूछने पर उन्होने गफलत में अमावस्या के बजाय पूर्णिमा तिथि बता दी। दूसरे पण्डितों ने निन्दा करी। अब शिष्य भी अड़ गया उन्होने कहा पूर्णिमा का प्रमाण रात्रि को अगर चांद दिखे तो मान लेना। गुरु माता को सब हाल सुनाया। रात्रि को गुरु माता ने एक कांसी की थाली मंत्र कर आकाश में चढा दी तो चन्द्रमा की तरह रोशनी होने लगी। दरबारियों ने कहा यह नजर बन्दी है घोडा दौडाकर देखों कितनी दूर प्रकाश है। गुरु माता ने थोडी थोडी देर से चार थालिया चढाई, घोडा भी रात भर दौडता रहा, जितनी दूर दौडा वहाँ चाँदनी रात का प्रकाश दिखा। सुबह घुडसवार ने सारा हाल बताया। दूसरे दिन शिष्य से राजा ने पूछा कि यह कैसे हुआ, शिष्य ने कहा कि महाराज थी तो अमावस्या ही परन्तु आपके राज्य में तो उजाला ही था यह सब तंत्र शक्ति का प्रभाव था।

ऐसा हि किस्सा टोंक जिले में देवली ग्राम का है। राजा ने उस पण्डित को देवता की उपाधि दी थी। आज भी उस परिवार के लोग अपने नाम के आगे देवता की उपाधि लगाते है।

अगर किसी की दशा अच्छी चल रही हो तो उसका अनिष्ट करना आसान नहीं है। ऐसे में तांत्रिक लोग कुछ युक्ति से काम में लेते है। सबसे पहले उसके इष्टदेव व परिवार के पितर देवताओं का बंधन करते है। व्यक्ति का उसके गुरु तथा इष्टमित्रों के बीच विद्वेषण कराया जाता है। धीरे-धीरे उसका उच्चाटन कर इधर -उधर पालतू भ्रमण योग बनाकर पूजा अर्चा नियम को अनियमित कर दिया जाता है। जिससे उसका रक्षा कर्म कमजोर हो जाता है। इसके बाद तांत्रिक विशेष प्रयोग करने में सफल हो जाता है।

दूर स्थान से वस्तु मंगाने के प्रयोग भी कई सुने है।

अजमेर में डिग्गी चौक में मिस्टर डढ्ढा थे जो रेलवें में कार्य करते थे। उन्होने एक बार पं. जवाहर लाल नेहरू को भी बिना मौसम में तरबूज मंगाकर दिया था।

एक मंत्र मैने इस प्रकरण में **''थ्री रूम चलूं सः''** दिया है जिससे यह प्रयोग लिया है वह इस विद्या का जानकार है। कई वस्तुए कुछ अवधि हेतु मंगाई जाती है, साधक को उसका मूल्य चुकाना होता है। या वस्तु अथवा रूपये उसके बताये गये स्थान पर रखे जाते है।

प्रेत को बोतल या घड़े में बन्द करने का कार्य- प्रबल तांत्रिक ही कर सकता है। शीशी में बन्द करने से कभी कभी शीशी में धुंआ दिखाई देता है तो कहीं कहीं कोई परछाई सी दिखाई देती है। कभी कभी किसी घडे में बन्द करने पर देखा गया है कि घड़े का वजन बड गया है, उठाने पर देखा गया है कि घड़े में जैसे पानी से आधे भरे बरतन को उठाने पर अन्दर पानी हिचकोले खाता है उसी तरह अन्दर की चीज हिचकोले खाती है। लेकिन इस तरह के अनुभव के बाद भी आत्मा रोगी से शरीर में भरी रहती है, बोलती है, चिल्लाती है। अर्थात् आत्मा ने पूर्णरूप से प्रवेश नहीं किया। अतः कही ऐसा अनुभव किसी तंत्र प्रयोग समय होता है तो समझे कार्य पूरा नहीं हुआ है। तांत्रिक यह आश्वासन देकर चला जाता है कि प्रेत को पात्र में बन्द कर दिया है, अब मै गण्डा ताबीज दूंगा उससे आत्मा का इस पर असर नहीं होगा, ठीक हो जाओगे।

बहुत से तांत्रिक प्रेत रोगी की आंखों में मिर्च डालते है, पीटते है, कभी गर्म वस्तु से जलाते है। परन्तु इन सबसे

पहले यह निश्चय कर लेना चाहिये कि व्यक्ति को उन्माद या अन्य रोग तो नहीं है। बहुत सी शैतानी आत्माऐं जलाते या दण्ड देते समय भाग जाती है व रोगी को भयंकर पीड़ा भोगनी पड़ती है। कई बार इस तरह की प्रताड़ना से भयभीत रोगी प्रेतबाधा होने की हां भर लेता है जबकि वह अन्य रोग से पीड़ीत होता है। अतः प्रताडना संबन्धी कार्य सावधानी से करें।

कार्य व्यवसाय में उन्नति व रक्षा के लिये घर के ऊपर पताका यंत्र लगाया जाता है। वाहन की रक्षा के लिये हनुमान पताका या गरुड पताका यंत्र वा अन्य यंत्र लगाये जाते है। मेरे एक जैन मित्र के पास रावण पताका यंत्र था। एक गर्भवती की रक्षा के लिये वह यंत्र दिया था। संयोग से वह यंत्र बाहर चौक में रखा रह गया एवं बारिश आ गयी तो वह यंत्र नहीं भीगा। इस पर यंत्र कि महिमा जानकर महिला ने यंत्र गुम होने का बहाना बना लिया।

प्रश्न भेद जानने के कई तरीके है-

(१) स्वप्न वार्ता मंत्र। इस तरह के प्रयोग पुस्तक में दिये गये है।

(२) घट भ्रामण मंत्र प्रयोग- इस प्रयोग विधि में साधारणतः व्यक्ति अपने परिवार की आत्मा का आवाहन एक कलश या किसी पात्र में करता है। शुद्ध चौका लगाकर अनाज रखकर उस पर कलश रखकर पितर आत्माओं का आवाहन कर धूपादि करते है। दो व्यक्ति पात्र का स्पर्श करते है आत्माओं के प्रवेश से कलश हिलने लगता है। फिर अपने प्रश्न का शुभाऽशुर्भ जानने के लिये पात्र को दाँयी-बाँयी दिशा में घुमने को कहते है। कलश की दिशा भ्रमण के अनुसार प्रश्न का फल जाने। कर्म समापन के समय आत्मा को विदा करें, जल के छींटे देवें।

पुस्तक में **चक्रेश्वरी, प्रत्यंगिरा, कुष्माण्डा के मंत्र प्रयोग इस प्रकरण में दिये गये है।**

कलश को जमीन पर रखे रहने के बजाय हाथ में भी ले सकते है। दो व्यक्ति अपनी अंगुलियों को आपस में मिलाये अंजलि बनाये, उसमें पात्र रखें, आत्मा के आवाह्न व प्रश्न समय पात्र इतने जोर से हिलने लगता है कि मजबूती से पकड़ने पर भी पात्र हिलता है।

(३) कागज पर प्रश्न का हाल उभरना-

इस प्रकरण में ठगी के लिये बहुत से व्यक्ति कोरे कागज पर नींबू के रस, प्याज के रस से या अन्य रसायन से कुछ लिख देते है उन्हे धूप में रखने या अंगारे पर रखने पर अक्षर उभर जाते है, वही प्रश्न का हल होता है।

परन्तु वस्तुतः इस तरह के मंत्र प्रयोग भी है जो सत्य है।

(क) **श्री श्री श्री ५ श्री पार्वती की सिद्धि शंकर का वाचा** मंत्र प्रयोग सत्य है। आजामाइस किया गया है।

(ख) कागज को पृश्चक का हाथ लगाकर पानी में डाला जाता है एवं बाहर निकाल कर धूप में सुखाने पर अक्षर उभरकर आते है।

परन्तु इसी विधि से भी ठगी करते हुए मैंने एक मौलवी को देखा जिसके पास जिन्द सिद्ध था। उसके माध्यम से प्रश्न के उत्तर के साथ यह अक्षर भी लिखे हुए होते थे कि यह मौलवी बहुत सिद्ध है, इसके कहे अनुसार कार्य करना वर्ना बर्बाद हो जाओगे। मौलवी भारी अभिचार का डर बताता, निवृत्ति के लिये ५-१० बकरों की बलि व अन्य खर्चे बताकर मोटी रकम ऐंठ लेता। हमने हमारे सम्पर्क वाले व्यक्ति को उसके चंगुल से बचाने का प्रयम्र किया परन्तु मौलवी ने उसको अन्य वातावरण से भयभीत कर दिया एवं मोटी रकम दे बैठे।

उसने रात्रि में अपने कमरें में बुलाया। एक पीतल की डेकची मंगायी उसने उसमें कुछ चीजे डाली। नारियल रखा, रुई रखीं, फिर कहा कि अब मैं कमरे में अंधेरा करके जल अभिमंत्रित कर डालूंगा तथा तुम्हारी चीज उपरी बाधा जल जायेगी। उसने जल डाला तो छम व छन की आवाज हुई। मैं कमरे के बाहर बैठा हुआ था आवाज सुनकर मैने भांप लिया कि यह ताजा चूने के पत्थर पर पानी डालते समय जो आवाज होती है वही आवाज है।

वस्तुतः ऐसा ही हुआ होगा कि डेगची में नारियल व रुई , फासफोरस व अन्य द्रव्य के साथ ताजा चूने का पत्थर डाला गया। चूने पर पानी पड़ते ही गर्म वाष्प हुई उससे फासफोरस व अन्य द्रव्य ने आग पकड ली, फिर रुई ने आग पकडी उससे नारियल जलने लगा।

(ग) हमारे पास के गांव में एक मौलवी है जो पृश्चक से एक कागज व पेन मंगवाता है। अभिमंत्रित कर पृश्चक का हाथ लगावाकर रख लेता है। दूसरे तीसरे दिन बुलाता है जो कागज पर कुछ लिखा हुआ मिलता है।

(४) उडिया प्रान्त में कुछ लोग अन्य प्रयोग करते है- तीन कटोरियाँ रखकर उस पर लकड़ी का पट्टा रख देते है। पट्टे पर पृश्चक को बिठा देते है। फिर अपनी पूजा पद्धति कर देवता से शुभाऽशुभ की प्रार्थना करते है। प्रश्न के उत्तर में पट्टे के दाँयी-बाँयी ओर घुमने को कहते है, तो उसके घूमने के अनुसार प्रश्न का फल कहते है।

मेरा एक यजमान उधर रहता था। आपत्तिकाल में मैने बगलामुखी यंत्र बनाकर भेजा था। ४-५ वर्ष बाद पुनः विपत्ति आयी तो उसने सोचा कि शायद यंत्र का प्रभाव कम हो गया है। वह उन उडिया तांत्रिकों के पास पहुँचा, उन्होने इस प्रयोग को किया तो पट्टा नही घूमा। उसको बैठाये तो नहीं घूमे दूसरों को बैठाये तो घुमें। २-३ बार ऐसा होने से उन्होने पूछा कि बाबू तुम्हारे बदन पर अन्य कोई वस्तु है।

इससे मालूम होता है कि वे लोग प्रयोग के लिये निम्न श्रेणी की पिशाचि विद्या काम में लेते है।

अभिचार क्रिया

अभिचार क्रिया से वस्तु को तांत्रिक लोग कही भी भेज सकते है। कुछ पुत्तल प्रयोग श्मशान चौराहे पर गाड़ देते है। तो कुछ प्रयोगों में हानिकारक वस्तु को व्यक्ति के घर में पहुँचा देते है।

आसाम में किसी ने किसी सेठ पर संतान प्रतिबन्धन प्रयोग करवा दिया। एक दिन सेठ में आवेश होने से वह स्त्री का गला दबाने लग गया, उस समय उसके पितर देवों ने सहायता करी। किसी तांत्रिक को बुलाकर सहायता ली गई। तांत्रिक ने नीम्बू मंत्रकर बाहर के दरवाजे पर रखा, नींबू लुढकता हुआ सीढ़ीयों के पास आया फिर उछलता हुआ उसके शयन कक्ष में पलंग के पास आकर रुक गया, तीन बार प्रयोग करने पर उसी स्थान पर नीम्बू रुका तांत्रिक ने बताया कि अभिचारक वस्तु इस स्थान पर है खोदकर निकालना होगा। सेठ ने कहा यह कैसे संभव है यहाँ खोदकर गाड़ने जैसा काई कार्य संभव नहीं है, ना ही कोई निशान गाडने जैसे है खोदते समय जमीन इतनी सक्त लगी जैसे लोहे की चद्दर होवे। जब वस्तु को निकालने लगा तो तांत्रिक बेहोश हो गया। उसके साथियों ने वहीं उपचार किया जो उसने बताया गया था। बाद बलि प्रयोग द्वारा उस आत्मा को शांत किया। इसके बाद में सेठ के दो जुडवां बच्चे हुये।

तांत्रिक बाधा दूर करने के प्रयासों में कुछ समय रुकावटे बढ सकती है। एक फैक्ट्री में लाभ नहीं होने व अड़चने आती रहने से शंका होने पर हमने मालिक से कहा कि हम तो सात्विक अनुष्ठान करवाते है। शतचण्डी प्रयोग चालू किया गया। तीसरे दिन सेठ ने पूछा कि क्या मेरे द्वारा कोई कमी है? हमने कहा कि कुछ जगह शुरु में ५-७ दिन परेशानी बडती है, आत्मा जोर देती है, बाद में लाभ मिलता है। दूसरे दिन मार्बल फैक्ट्री में क्रेन की सफाई का कार्य

चल रहा था, उसके गियर बाक्स खोले हुए थे। संयोग से उसी समय तुफान आया एवं क्रेन ट्रेन के डिब्बों की तरह दौड़ने लगी। हम दूर से दृश्य देख रहे थे। भगवती ने सुनी क्रेन गिरी नहीं, हेगिंग में अटक गई, ५-७ लाख का नुकसान होते होते बचा। दूसरे दिन हमने भगवती से प्रार्थना करी कि हमें बदनामी के लिये ही यहाँ बुलाया है। थोड़ी देर बाद तस्वीर पर रखा फूल धीर-धीरे खिसक कर नीचे आने लगा, हमने उसे शुभ संकेत माना। उसी दिन से कार्य इतना चला कि यजमान ने ११ दिन के अनुष्ठान को २१ दिन तक खींच लिया। ब्राह्मणों ने ही अवधि बढाने के लिये मना किया। यजमान ने मना नहीं किया।

आत्मबल संयम ही शक्ति देता है। परमहंस श्रीरामकृष्ण परमहंस की पत्नि माँ शारदा के पीछे एक विक्षिप्त पहलवान पड़ गया, उन्हे चोट पहुँचाने की कोशिश करने लगा। पहले तो वह दौड़ी फिर रुक कर आत्मा में शक्ति का आवाह्न किया, फिर पहलवान को गिरा कर उसकी छाती पर बैठकर बगुलामुखि देवि की मुद्रा में प्रहार करने लगी। बहुत से नास्तिक भी धैर्य व संयम द्वारा आत्मा में शक्ति का संचार कर लेते है कि उन्हे छोटी मोटी प्रेत बाधा नुकसान नहीं पहुँचा सकती।

कई तांत्रिक सिद्धियों का गलत उपयोग करते है। सिद्धियां यद्यपि किसी को हानि पहुँचाने के लिये नहीं परन्तु ठगी के लिये भी कर सकते है। राजस्थान से एक सेठ जी गया गये। वहाँ तांत्रिकों की सिद्धि के बारे में सुना तो एक तांत्रिक से कहा मुझे भगवान शंकर के दर्शन करा सकते हो क्या? तांत्रिक ने मोटी रकम दक्षिणा को लेकर हाँ कर दी। रात्रि का समय मांगा, रात्रि अपने सिद्ध बेताल को बुलाकर कहा कि तुम अमुक वेश धारण करके अमुक जगह, अमुक सेठ के सामने प्रकट होना तथा बोलना नहीं। यदि सेठ नजदीक आने लगे तो ताण्डव नृत्य मुद्रा व क्रोध दिखाकर भगा देना।

कुछ तांत्रिक ठगी भी करते है- एलम्यूनियम के सिक्के या बरतन के किसी तरह फासफोरस का चूर्ण लगा देते है फिर उसको धुलवाकर या अन्य किसी तरह से गीला कर व्यक्ति के हाथ में रख देते है, थोड़ी देर में सिक्का गर्म होने लगता है तब व्यक्ति को यह कहकर भयभीत किया जाता है कि तुम्हारी बाधा को इसमें बुला लिया है, यह बाधा बड़ा अनिष्ट कर सकती है। इसी तरह नारियल के दो हिस्से कर उसमें पुतली, सिन्दुर, आलपिन, उड़द, छौआरा ईत्यादि वस्तुये रखकर पुनः मोम या फेविकॉल से जोड़ देते है फिर व्यक्ति को चमत्कार दिखाकर ठगा जाता है।

तांत्रिको से बदला लेने के लिये उनके विरोधी मौका ढूंढते है। तांत्रिक किस समय अशुद्ध व अशौच अवस्था में होगा, ताकि उस पर तंत्र कर्म किया जा सके। हमारी किशनगढ़ स्टेट के नीचे सरवाड़ की छोटी रियासत थी। किसी बात पर युद्ध ठन गया। किशनगढ़ बडी रियासत थी, फौजे सरवाड़ पर कब्जा करने वाली थी कि उन्होने अपने तांत्रिक पण्डितों को बुलाया। पण्डितों ने एक मधुमक्खियों के छत्ते के पास जाकर जल के छीटें दिये, मधुमक्खियों ने उडकर किशनगढ की फौजो को भगा दिया। काशी से भी तांत्रिक बुलाये गये परन्तु उनके आगे सब निष्फल रहे। तब तांत्रिकों ने राय दी, भेदिये द्वारा पता करो ये कब अपने शौचालय में जाते है। एक दिन किशनगढ के सिपाही छद्म वेश में पहुँच गये एवं अशौच अवस्था में ही उन्हे गिरफ्तार किया। कैद में भी उन्हे अशौच अवस्था में ही रहने दिया। मृत्यु दण्ड समय की आखिरी कामना पूछी तो पण्डितों ने कहा कि एक बार हमें पवित्र होने दो। परन्तु भावी संकट जानकर राजा ने मना कर दिया तथा दीवार में चुनवा दिया।

कर्णपिशाचिनी एवं यक्षिणी सिद्धि के पीछे लोग दौड़ते है।

ये व्यक्ति का भूतकाल वर्तमान ठीक बता सकती है परन्तु भविष्य ठीक नहीं मिलेगा। भविष्यफल ज्योतिषी का

अधिक ठीक मिलेगा। ये साधक का अन्त समय खराब कर मोक्ष मार्ग अवरुद्ध कर देती है। विशिष्ट साधक के सामने प्रभाव नहीं दिखा सकती। वे कर्णपिशचिनी साधक से दूर से ही वार्ता संकेत देती है उसको कर्णपिशाचि साधक समझ नही सकता एवं उसका फलित गलत हो जाता है। इस संबन्ध में विशेष विवरण कर्णपिशाचि साधना प्रकरण में दिया गया है।

प्रेतबाधा से ग्रसित होना भी पूर्वजन्म के संस्कारों से होता है।

लग्न कुण्डली में गुरु कमजोर हो, आठवें, बारहवें हो तो पितर दोष। राहु बुध शनि इन स्थानों में हो तो प्रेत दोष होता है। लग्न, चतुर्थ, अष्टम द्वादश नवम भाव में पाप योग से प्रेत बाधा योग बनता है। पंचमेश, लग्नेश, भाग्येश यदि छठे आठवे हो तो शत्रु जनित अभिचार से पीड़ा प्राप्त होती है।

पंचम, नवम, एवं लाभ स्थान में पाप ग्रह तांत्रिक उपासना कराते है। गुरु मंगल, गुरु राहु योग से अनुष्ठान कर्म में त्रुटि होने से पीड़ा योग बनता है। मंगल राहु योग में भैरव उपासना द्वारा ही प्रेत उपद्रव से मुक्ति मिलेगी। देवि उपासना में भिन्न ग्रहों के योग भिन्न देवि साधना करने से लाभ मिलता है।

कुछ आत्मायें जो भटकती रहती है, उस समय की शत्रु आत्मा चाहे वह किसी भी रूप में वर्ततान में जन्म लेवें, उसे पहचान जाती है। अपने उस प्राचीन शत्रु को दण्ड देने के रूप में वर्तमान आत्मा को अनेक प्रकार कष्ट देती है।

ऐसी आत्मा के चुंगल से मुक्त होना संभव नहीं है। प्रथम बात तो यह है कि वे लम्बी अवधि की दीर्घायु आत्मायें बलवान हो जाती है, दूसरी बात यह है कि प्राणी के संस्कार, ग्रह कमजोर हो तो उपाय संभव नहीं है। बलवान आत्मायें उसको जिन्दगी भर दुःख देती है, किसी उपाय को संभव नहीं होने देती। **ऐसी आत्माओं से उग्र प्रयोग द्वारा मुकाबला नहीं करना चाहिए। मध्यम मार्गी प्रयोग लम्बी अवधि तक करें ताकि कुछ समय में आत्मा का मन बदल जाये व पीड़ा देना छोड़ देवें।**

तांत्रिक प्रयोग, देव उपासना अलग-अलग प्रान्तों में है, वे उनकी भाषा में है। यह जरूरी नहीं है कि अमुक भाषा का ही प्रयोग होवें। **कामाख्या प्रदेश सिद्ध स्थान माना गया है। हमारे गुरुजी ने बंगला भाषी में उन प्रयोगों को प्राप्त किया जो विशिष्ट प्रभाव रखते है।**

मैने उन प्रयोगों को जो बंगला भाषी है, विशेष प्रभावी है, इस पुस्तक में संकलन किया है। जहाँ कुछ कठिन है, उनकी टीका भी साथ में दी है। **कालविकाल वान प्रयोग** प्रेत बाधा निवारण में विशेष प्रभावी है। उस प्रयोग के अन्तर्गत एक आन है कि **यदि मेरा वचन लौटे तो ७ दिन ७ रात पृथिवी कम्पन्न होवे।** १०-१२ दिन लगातार पाठ करने पर आपको अखबार में किसी न किसी देश विदेश में भूकम्प की खबर मिलेगी। ऐसा ५-७ बार मैने देखा है।

परन्तु यदि किसी के लिये ५०-१०० बार पाठ करने पर भी प्राणी का संकट नही जा रहा है तो उसे पूर्व जन्म कृत भोग माने, भीषण प्रयोग बन्द करे। मध्य मार्ग की उपासना कराये। जिससे कोई खतरा -अनिष्ट नहीं होवें। यदि स्वयं इस प्रयोग को करें तो १०-२० पाठ कर सकता है। यदि अधिक संख्या में पाठ करना है तो साथ में हनुमान, गणेश भैरव के प्रयोग रखें। स्वामी कार्तिक, दुर्गापाठ व रुद्रपाठ भी दूसरों ब्राह्मणों से कराये, तब ही ५०-१०० बार पाठ करें।

अभिनवगुप्त द्वारा शंकराचार्य पर अभिचार कर्म कर दिया था। उसकी काट नहीं हो पाने पर शंकराचार्य ने योग मार्ग से कपाल छोडकर आत्मा का विसर्जन कर किया था।

अकालमृत्यु, सर्पदंश, प्रेतबाधा, अभिचार कर्म भी कहीं ना कहीं पूर्वजन्म से जुड़े होते है। नागौर जिले में कुचामन की नारायणपुरा रेल्वे स्टेशन पर धर्मशाला में एक दम्पत्ती आकर ठहरे थे। उनके एक छोटा लडका था। दम्पत्ति अपने कार्य में लग गये, फिर छोटे बालक की याद आयी तो देखा कि बालक कच्चे आंगन में मिट्टी में बैठा खेल रहा है। समाने एक सर्प बैठा है, सर्प फण हिलाता है एवं बालक उस पर मिट्टी डाल रहा है। यह दृश्य देखकर पति पत्नि दौडे, मदद के लिये पुकार करी। अन्त में एक राजपूत ने कहा कि मै अपनी तरफ से क़ोशिश करुंगा कि गोली सर्प के ही लगे परन्तु सांप हिल जाये तो शिशु के भी गोली लग सकती है। दोनों ही परिस्थितियों में मृत्यु जानकर दंपत्ती ने हाँ भरली। राजपूत ने गोली चलायी और सांप मर गया। सांप को उठाकर यों ही फेंक दिया। रात्रि को ठण्डी हवा में घायल सांप जीवित हो गया और राजपूत को कांट खाया। सुबह राजपूत को निष्प्राण देखकर फिर हाहाकार मच गया। संयोग से सर्प विद्या का जानकार कालबेलियां उस समय आया, सर्प को बुलाने की काशिश की पर सर्प नहीं आया। अन्त में एक आटे का सर्प बनाकर गर्म तवे पर रखा, मंत्रोच्चारण किया, तब सर्प आया। सर्प को विष चूसने को कहा तो उसने मना कर दिया। तब सर्प की आत्मा को एक बालक के शरीर में बुलाया गया तो उसने वृत्तान्त सुनाया- यह लडका ७ जन्म पहले मेरा सेठ था। मै इसके ५०० रूपये नहीं दे सका। इस जन्म में मैने इसे पहिचान लिया सो क्षमा मांग रहा था, बालक यह कहकर मुझ पर मिट्टी डाल रहा था कि तेरे जीवन में धूल है तूं अब तक मेरा पैसा नही लौटा सका। हम एक दूसरे के संकेत को समझ रहे थे। यदि कोई इस बच्चे के माँ बाप को ५०० रूपये दे देवे तो मैं विष का हरण करुंगा। किसी ने ५०० रूपये की हां भरी। विष हरण से राजपूत जिन्दा हो गया। सारा वृत्तान्त सुना तो उसने अपना ऊंट बेचकर ५०० रूपया चुकाया। मन में सन्देह हो गया कि अब मेरे जीवन में कहीं किसी बात में ऐसा चक्कर किसी भी योनि का हो सकता है। यह सारा वृत्तान्त वहाँ के स्टेशन मास्टर ने कल्याण अंक में प्रकाशित कराया।

उदारवादी सिद्ध पुरुषों ने धार्मि क कट्टरता छोड़कर अन्य देवता की शक्तियों का समावेश अपने मंत्रों में दिया है। मुस्लिम मंत्रों में हनुमान व भैरव तथा नरसिंह की आन तथा हिन्दु मंत्रों में मुस्लिम पीर पैगम्बरों की आन दी है।

जैन प्राकृत ग्रंथों में भी अपराजिता, पद्मावती, ललिता, मातंगी, कुष्माण्डा, काली, हनुमान, भैरव, प्रत्यंगिरा मंत्रों को अपने ढंग से उल्लिखित किया है।

ऐसे अनेक मंत्रों का समावेश इस पुस्तक में है।

सिद्धियाँ अनेक है। हर एक की साधना में समय लगता है। जैसे अर्थवादी की कामना का अन्त नहीं होता है। वैसे ही तंत्रसिद्धि की कामना का अन्त नहीं होता है। हजारों सिद्धियों की प्राप्ति के चक्कर में यह जीवन भी अधूरा रह रहेगा।

जो व्यक्ति बिना पैसे लिये शाबर मंत्रों से उपचार करता है, उसके यंत्र, मंत्र, तंत्र शीघ्र प्रभावी होते है। पैसे लेकर जो कार्य करता है, वह पूरा उपचार नहीं कर सकता है तथा जीवन में हानि उठानि पड़ सकती है। ये सिद्धियां उसके गले की हड्डी बन जाती है।

अतः निष्काम भाव से परोपकार भावना से कार्य करे तो ईश्वर आपका साथ देगा।

प्रेत दोष का ज्ञान

प्रेत दोष का ज्ञान ज्योतिष प्रश्न विचार के अनुसार देखें, कुछ उसके लक्षणों के अनुसार जाने। जन्म लग्न आधार से भी देखे। सामान्य लक्षण इस प्रकार से हो सकते है।

१. प्रेत ग्रस्त रोगी के चहरे पर काली झांईयां हो जाती है। आँखें नीचे धंस जाती है।

२. नजर लगे हुय बच्चे की आँखों के बाल सीधे खड़े हो जाते है। अथवा ऊपर घुंघराले बालों की तरह मुड़ जाते है। नजर दोष दूर होने पर आंखों की पलकों के बाल नीचे झुक जाते है।

३. कभी कभी प्रेत बाधा विशेषत: डाकिनी, शाकिनी, भूतनी, पिशाचिनी से ग्रसित महिला की आँखों में अपना प्रतिबिम्ब उल्टा दिखाई देगा।

४. उपरी बाधा ग्रसित व्यक्ति की नाड़ी देखे तो ऐसा महसूस होगा कि जैसे गर्भावस्था वाली स्त्री की डब्बल नाड़ी चलती होवें।

५. प्रेत दोष वाला व्यक्ति पवित्रता से नफरत करता है। नहोने से परहेज करता है। पवित्र वातावरण से घबराता है।अच्छे वस्त्र नहीं पहनता।

६. पाठ पूजन में मन नहीं लगता। भगवान के दर्शन में अरुचि होने लगती है। धूप व खुला वातावरण पसंद नहीं होता।

७. प्रेतग्रस्त या अभिचार ग्रस्त व्यक्ति का व्यवहार बदल जाता है। रूखा रूखा व चिड़चिड़ा स्वभाव हो जाता है। उसके हर कार्य में रुकावटें आती है। व्यवसाय अस्थिर हो जाता है।

८. उसका उच्चाटन होकर वृथा भ्रमण होवे तथा आर्थिक उपार्जन में बाधा रहें।

९. ग्राहक दूकान पर चढ़े पर कोई सौदा नहीं होवें।

१०. ऐसे व्यक्ति को नेत्र मिलाने को कहोगे तो नेत्र झुका लेगा।

११. उसकी गर्दन व कंधों पर भारी दबाव रहेगा। कभी कभी ऐसा लगेगा कि कोई उसकी गर्दन को घूमा रहा हो।

१२. यदि पाठ पूजन में बैठेगा तो शरीर टूटेगा तथा मन का ऐसा उच्चाटन होगा कि उठकर भाग जाँऊ।

१३. ऐसा व्यक्ति सुगंधित वस्तुओं को ज्यादा पसंद करता है।

१४. प्रेतावेश के समय व्यक्ति की आँखे अंगारे की तरह लाल हो जाती है। उससे कोई नेत्र नही मिला सकता॥

१५. यदि नाखूनों में सफेद धब्बे उभरते है तो शुभ है। काले धब्बे व नाखून काला होना किसी अशुभ घटना या प्रेतोपद्रव के संकेत है।

१६. इसी तरह प्रेतग्रसित महिला के मासिक धर्म में काला पानी या काला रंग का खून भी दिखाई देगा।

१७. व्यक्ति हिंसक जानवरों की तरह नाखून बढायेगा।

१८. उसके गुप्तांगों विकृति पैदा होगी। स्वप्न दोष इतना हल्का होगा कि उसके निशान भी वस्त्रों पर नहीं होंगे।

१९. भोग विलास के समय अपने जीवन साथी से अरुचि व नफरत करने लगेगा।

२०. पति पत्नि व परिवार में नित्य प्रतिदिन कलह बढेगी।

२१. जब ऐसा व्यक्ति आपके कमरे में अचानक प्रवेश करे तों ऐसा लगेगा कि कोई काली आकृति प्रवेश कर रहीं है। आपके मन को अटपटा लगेगा।

२२. मध्य रात्रि में काले रंग के पुरुष, आत्मायें व अन्य खराब तथा डरावने स्वप्न आवें।

२३. रात्रि में अधिक समय तक नींद नहीं आवें।

२४. गर्भवती स्त्री का गर्भ किसी डर या भय से गिर जाये तो ऊपरी बाधा के लक्षण है।

२५. दिन या रात्री में किसी वृक्ष, श्मशान, चौराहे के पास भोजन करने के कुछ समय बाद या १-२ दिन बाद तबियत खराब हो तो ऊपरी बाधा से परेशानी जाने।

२६. असमय, दोपहर, रात्रि में मजार, चौराहा, कब्रिस्तान, श्मशान, बरगद, इमली, व पीपल के पेड़ के नीचे लघु शंका करने के १-२ दिन में या घर पहुँचते ही तबियत खराब हो तो ऊपरी बाधा का प्रकोप जाने।

२७. उग्रदेवता या कुल देवता का बलि ग्रहण नहीं करें।

२८. चौराहे पर यदि उतारा उतार का पात्र या बलि द्रव्य रखा हो तो उसका उल्लंघन नहीं करे। प्रसाद भी नहीं खावें, ना हीं वहां रखा द्रव्य उठाये। उतारे के ठोकर लगने आदि कारणों से तबियत खराब हो सकती है।

२९. **प्रश्न द्वारा दोष निर्णय-** बहुत से अपने दोष ज्ञान के लिये घर पर गेंहू या चावल घुमाकर ले आते है। प्रश्न फल के लिये इष्ट मंत्र का जप कर उसमें से गेंहू, अक्षत् के कुछ दाने उठावें एवं उनको गिने। संख्या में १२ का भाग देवें। जो बचे उसको प्रश्न लग्न माने फिर उस दिन के ग्रह प्रश्न कुण्डली में भर देवें।

गुरु कमजोर होवें, आठवें-बारहवें होवें, गुरु राहु, गुरु शनि योग में **पितर दोष** जाने। लग्न चतुर्थ छठा भाव, अष्टम नवम, द्वादश भाव में मंगल-राहु, शनि का खराब योग हो, चन्द्र सूर्य की राहु केतु से युति योग भी ऊपरी बाधा का कारण बताती है।

अतः रोग लक्षण, प्रश्न या स्वप्न विद्या द्वारा देश काल परिस्थिति के अनुसार रोग या प्रेत दोष का ज्ञान करें। उग्र प्रयोग अचानक नहीं करे, पहले प्रेत बलाबल ज्ञात करे। यदि आत्मा महाबली है तो मध्यम मार्ग से चले। इससे आपका आत्मबल व तपोबल बढेगा, प्रेत को विशेष पीड़ा नहीं पहुँचेगी, वह आपकी उपासना का उपहास कर, आपकी कोई हानि नहीं करेगा। परन्तु आपके मध्यम मार्ग की दीर्घकालीन उपासना उसको दीमक की तरह खोखला कर देगी। संयोग व प्रारब्ध से कोई सहायक मिल जायेगा या धीरे-धीरे प्रेतात्मा का मनोबल कमजोर हो जायेगा अथवा प्रेतात्मा का मानस ही बदल जाये, वह आपको पीड़ा नहीं देगी।

एक तांत्रिक ने किसी सेठ के यहां फैक्ट्री, घर, गोदाम, माइंस से करीब ४५ पुत्तले निकाल दिये। मैने कहा कि पुत्तल प्रयोग तो एक ही काफी होता है। जब ४५ से नहीं मरे तो अब क्या मरोगे, इस ठगाई से बचो। ऐसे सतर्क रहना चाहिये। दुनियाँ में लूट व ठगी करने वाले बहुत है।

॥ हवन कर्म सम्बंधी जानकारी ॥

षटकर्म प्रयोगों में हवनादि द्रव्यों की प्रधानता होती है तथा जिस मुद्रा से आहुति दी जाती है। उसका भी महत्त्व होता है। होम- श्मशान, चौराहा, हवनीय वेदी या हवन पात्र में भी किया जा सकता है। श्मशान, चौरहे, एकान्त में भी हवन वेदी बनाकर हवन किया जा सकता है।

हवन कर्म में हवनीय द्रव्य का विशेष महत्त्व होता है। तिल भूरे हो तो ठीक है। सफेद तिलों में तेल कम होता है अतः चट् चट् की आवाज करते है व उछल कर वस्त्रों का जला देते है। गहरे काले तिलों में केमिकल होता है अतः उन्हे मसल कर देखें कि आपका हाथ तो काला नहीं हो रहा है। हवन में तिल १ किलो होतो चावल ५०० ग्राम, जौ २५० ग्राम, देशी शक्कर तथा घी ६० -७० ग्राम होवे। इसके अलाव अगर, तगर, नागर मोथा, छाड छडेला, कपूर काचरी, व सुगंधित अष्टांग धूप, हवनपूडा भी मिलाया जाता है।

शान्ति कर्म में उपरोक्त सामग्री काम में लेते है। तंत्र में पंचांग हवन का उल्लेख आता है, जैसे राई हवन में पंचांग में उस पौधे की जड़, तना समिधा हेतु, पत्तें, फूल एवं फल इन पांच चीजों से हवन करे। अधिकत्तर गूलर, पीप्पल आम व खेजड़ी वृक्ष की काष्ठ हवन हेतु काम में लेते है।

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु बिल्वफल व बिल्व समिध, (खीर कम दूध में पके) हुए चावल कमल गट्टा पंचामृत व पक्वान्न-हलुआ का होम करें।

पुष्टि कर्म में चमेली के फूल, बिल्वफल, पंचमेवा, दूर्वा (आयुवृद्धि हेतु) से होम करे। विवाह कर्म हेतु लाजा होम (चावल की फूली) व खीर का होम करे। आकर्षण हेतु इलायची, चिरोंजी व बिल्वफल का होम करें। उच्चाटन व विद्वेषण में नीम के पत्ते, नीम की लकडी, व नीम के तेल से होम करे। वशीकरण में राई तथा नमक अल्पमात्र काम में लेवें। स्तंभन में हल्दी व हरताल का प्रयोग करे। मारण में सरसों, काली मिर्च, सरसों का तेल प्रयोग करे पश्चात् शांति कर्म के मंत्रों की आहुति देवें। घी, शक्कर, शहद को मिलाने पर त्रिमधु कहलाते है इनके होम से लक्ष्मी की प्राप्ति होवें।

सरसों १ तोला, कालीमिर्च २० नग की एक आहुति देवे।। नारियल व कोल्हा (काशीफल) के चार खण्ड से बलि होम करें। यदि हवन वेदी छोटी हो तो उनके ८-१६ या अधिक खण्ड करके होम करे।

शत्रुनाश व रोगनाश हेतु काली मिर्च, सरसों मुट्ठी में लेकर हाथ को अधोमुख उल्टा करके होम करे। रोग व शत्रुनाश में सरसों, कालीमिर्च रोगी पर घुमाकर मुट्ठी से प्रहार मुद्रा में होम करें। शांति हवन कर्म में हाथ को अधोमुख करके होम नहीं करे।

पुष्टि कर्म में घृत, पंचमेवा, सुगंधित द्रव्यों व फलादि से होम करें। पुत्र प्राप्ति हेतु खीर, पुष्प व फलादि से होम करें।

आकर्षण में सफेद कनेर के पत्र, पुष्प, व शाखा, धत्तूरे की समिधा, पत्र, फल या बीजों से होम करें। परन्तु इसके बाद शांति पाठ तथा शरणागत मंत्र से भगवती की प्रार्थना करें।

यक्षिणि, पिशाचि, चेटक हाजरात एवं षट्कर्म प्रयोग

अथ कर्ण पिशाचिनी साधनम्

कर्णपिशाचिनी साधना मूलतः वाममार्गी साधना है, अतः आगे जाकर साधक का भविष्य बिगाड़ देती है। साधक अंत में शारीरिक कष्ट एवं दुर्गति को प्राप्त करता है। मुक्ति उससे कोसों दूर रहती है, ऐसी बात नहीं है, कुछ प्रयोग सात्विक भी है। केसर का लेप कान के लगाने से तथा अभिमंत्रित भस्म कान के लगाने से भी वार्ता फल कहती है। अघोर क्रिया वाले मल या मूत्र की भिगाई रुई कान में लगाते है। चाहे समय अधिक लगे प्रयोग सात्विक ही करना चाहिये। कर्णपिशाचि का आप के परिवार से कोई मोह नहीं होता, अतः किसी पारिवारिक दुर्घटना का भी कोई संकेत नहीं देती।

एक कर्णपिशाचि विदेश गये हुये थे। पीछे से उनकी पत्नि शांत हो गयी उसके २-३ महिने बाद वे अपने घर पहुंचे । घर आने पर ही उनको इस हेतु पता चला। एक अच्छे कर्णपिशाचि साधक थे, जिनका विशेष सम्मान होता था। उन्होनें अपने पुत्र की शादी में हाथी मंगवाया। संयोग से हाथी पागल हो गया तथा गांव में ३-४ व्यक्तियों को मार डाला। जयपुर में भी एक दाधिच ब्राह्मण कर्णपिशाचि के अच्छे साधक थे, संभव है उन्होने उसे अघोर क्रिया से सिद्ध किया था। उनकी मृत्यु के समय पिशाचि ने विशेष दुर्गन्ध वाला मल लाकर पूरे शरीर, आंख, कान, नाक, सभी में लेपन कर दिया। भीलवाड़ा में भी एक जैन वकील है, जिन्हे इसके प्रयोग हेतु शराब व सिगरेट का सहारा लेना पड़ता है।

कर्णपिशाचिनी भूतकाल वार्ता सही बता सकती है। आय स्त्रोत बढ़ा सकती है, किन्तु भविष्य फल तो ज्योतिष माध्यम से ही सही बैठता है। किसी विशिष्ट साधक का भूतकाल भी सही नहीं बता सकती। आप दुर्गासप्तशती में से कवच का पाठ करके अपनी जेब में कोई वस्तु रख लेवें। पुनः कवच का पाठ करके पिशाचि साधक के पास जायें तो वह उस वस्तु के बारे में नहीं बता सकेगा। मैं ५-७ कर्णपिशाचिनी साधकों से मिला कोई मेरा भूतकाल भी सहीं नहीं बता सका। भविष्य तो दूर रहा। विशिष्ट साधक के सामने पिशाचि पूर्णरूप से सामने नही आ सकने के कारण वह अपने साधक को दूर से ही वार्ता संकेत देती है। जिसे वह पूर्ण नहीं समझ पाता और उसका फलित गलत हो जाता है।

दुर्गापाठी व शक्ति उपासक को यह विद्या आसानी से सिद्ध नहीं होती। कर्णपिशाचिनी कई बार वर मांगती है कि "तुम मुझे किस रूप में चाहते हो मां, बहिन, पुत्री, सखी या स्त्री" इसमें से जिस रूप में आप उसे स्वीकार करोगे तो उस स्त्री की परिवार में हानि हो जायेगी। जैसे मां रूप मे माना तो मां की हानी हो जायेगी। यह कभी कभी विशेष लावण्य रूप धारण करती है अतः मां, बहिन, रूप में मानते मानते पत्नी भाव को प्राप्त करने की इच्छा होने लगती है। वहीं साधक का पतन हो जाता है।

एक साधक जिन्होने पहले बहिन रूप में माना परन्तु जब उसे पत्नी भाव से माना तो गृहस्थ से दूर हो गया। एक साधक की पत्नी यदि उनके पलंग पर सोती तो कर्णपिशाचिनी उसे उठाकर फेंक देती थी, तथा जान से मारने की धमकी भी देती थी। साधक दुखी था वह कहता "मैं जो भी भजन उपासना करता हुं उसका आध फल अब उसे पत्नी रूप के कारण मिल जाता है, अत: इसका निवारण अब मुझे असंभव लगता है" इतने सारे उदाहरण मैं साधक को भविष्य के प्रति सचेत हाने के लिये लिख रहा हुं।

कर्णपिशाचि जितनी जल्दी आयेगी उसकी शक्ति भी कम होगी। कर्णपिशाचि मंत्र में "**पिप्पलाद ऋषि**" का टल्लेख विनियोग में आता है अत: विशिष्ट शक्तिशाली पिशाचि ही उनके सामने प्रकट हुई होगी।

साधकों के हित के लिये एक विशिष्ट प्रयोग लिख रहा हुं।

१. मन्त्र:- **ॐ नमो भगवती कर्णपिशाचिनी देवि अग्रे छागेश्वरि सत्यवादिनी सत्यं दर्शय दर्शय शिव प्रसन्नमुद्रा व्यंतर्याकोपिनभर्त मम कर्णे कथय कथय हरये नम:।**

एक सिद्ध महात्मा ने यह मंत्र मेरे एक मित्र को दिया था। मित्र बगलामुखी का प्रयोग करता था। उसने मंत्र को जांचने हेतु इसका प्रयोग साधारण धूप दीपादि के द्वारा रात्रि में किया। १० वें दिन कर्णपिशाचिनी ने उसे एक निश्चित जगह पर आने को कहा। वहां प्रकट होकर वर मांगने को कहा तो उसने मना कर दिया कहा कि "मैने तो मंत्र सिद्धि जानने के लिये प्रयोग किया था" इससे ३-४ दिन तो उसका कोप रहा पर वह उसका कोई अहित नहीं कर सकी। मुझे जब तंत्र में रुचि हुई इसका प्रयोग करके देखा। ११ माला रोज करने पर रात्रि में मुझे स्वप्न में ज्योतिष व सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञान करवाती। ५-७ दिन बाद प्रयोग बंद कर दिया। एक बार पुन: प्रयोग करके देखा चित्र की जगह मैंने दुर्गासप्तशती की पुस्तक में जो चित्र था उस पृष्ट को खोल कर रख लिया। ३ दिन तक वह पुस्तक मुझ से एकदम दूर खिसक गई। पुस्तक के चलायमान होने से मैं समझ गया कि मंत्र सही है। परन्तु मैं इस विद्या के पीछे नहीं पड़ा दश महाविद्याओं में ही मेरी रुचि रही।

कहा जाता है पिशाचि १०,००० मंत्र में ही सिद्ध हो जाती है परन्तु यदि कभी प्रयोग बंद कर दिया तो पुन: दुगने मंत्र जप करने पर ही सिद्ध होगी यदि फिर छोड़ दिया तो ४०,००० पर सिद्ध होगी ऐसा कहा जाता है।

२. **अघोर क्रियागत मंत्र-**

मन्त्र:- **ॐ ह्लीं कर्ण पिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनी मम कर्णे अवतर अवतर सत्यं कथय कथय अतीतानागतं वर्तमानं दर्शय दर्शय ऐं ह्लीं ह्लीं कर्णपिशाचिनी स्वाहा।**

इसका प्रयोग कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से अमावस तक का है परन्तु, कृष्ण तृतीया से ही नहाना-धोना, मुख शोधन, संध्या वंदन सभी कर्म बंद करे, मल मूत्र का सेवन करे। १३ तिथी से अमावस्या तक हर रात्रि में सूर्योदय पूर्व तक जप करे। मलमूत्र की शंका हो तो नहीं करें। मलमूत्र का अपने शरीर पर लेपन करे। अमावस्या को पिशाचि साधक के पास आयेगी। भय दिखायेगी, पत्नी भाव के लिये कहेगी उस समय साधक विवेक ही कार्य करे। पश्चात् शुक्ल पक्ष की दशमी तक मुख शोधन, स्नान ध्यानादि नहीं करें, एक ही उच्छिष्ट थाली में इस तरह २३ दिन तक भोजन करे। भोजन के पहले मलमूत्र ग्रहण करें। शुक्ल एकादशी से ही शरीर शुद्धि करे। जीवन में गायत्री व शक्ति उपासना नहीं करे।

इस प्रकार से एक साधक ने इसकी सिद्धि की परन्तु मलीन क्रिया में रहने व उसको स्त्री भाव में प्राप्त करने पर साधक को अपना भविष्य अच्छा नहीं लगता था जीवन से ग्लानि हो गई।

३. **मन्त्रः- 'ॐ कर्ण पिशाचि वदातीतानागतं ह्रीं स्वाहा'**

इस मंत्र का जप करने से महर्षि वेदव्यास अल्प काल में ही सर्वज्ञ हो गए थे।

४. **मन्त्रः- 'कह कह कालिके गृह्ण गृह्ण पिण्डं पिशाचि स्वाहा'-**

यह कर्ण पिशाची का दूसरा मंत्र है। इनका ध्यान इस प्रकार है-

कृष्णां रक्त विलोचनां, त्रिनयनां खर्वां च लम्बोदरीम्,
बन्धूकारुण जिह्विकां वर कराभी युक् करामुन्मुखीम् ।
धूर्मार्चिजेटिलां कपाल विलसत् पाणि द्वयां चञ्चलाम्,
सवंज्ञां शवहृत कृताधिवसतीं पैशाचिकीं तां नुमः ॥

इनकी पूजा विधि यह है कि अर्द्ध रात्रि के समय पिशाची देवी का हृदय में ध्यान कर दुग्ध, मत्स्य की बलि देकर पूजा करे। बलि प्रदान करने का मंत्र यह है-

मन्त्रः- ॐ कर्णपिशाचि दग्ध मीन बलिं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

रक्त चन्दन, बन्धूक पुष्प, जवा पुष्प आदि पूजा की सामग्री का निम्न मंत्र द्वारा जल से प्रोक्षण करे-

मन्त्रः- ॐ अमृतं कुरु देवेशि स्वाहा।

दिन के पूर्वाह्न में कुछ जप कर मध्याह्न काल में एक समय निरामिष भोजन कर रात्रि काल में भी पूर्ववत् जप करें। ताम्बूलादि को छोड़कर और कुछ नहीं खायें। प्रतिदिन जितना जप करे उसका दशांश निम्न मंत्र से तर्पण करे-

मन्त्रः- ॐ कर्ण पिशाचीं तर्पयामि ह्रीं स्वाहा।

इस प्रकार एक लाख जप कर दशांश होम करने से इस मंत्र का पुरश्चरण होता है। होम करने में यदि असमर्थ हो तो दशांश तर्पण कर अभीष्ट वर देने की प्रार्थना करें। फिर रक्त चन्दन से मूलमंत्र को लिखकर यंत्र के ऊपर इष्ट देवता की पूजा करें।

मंत्र सिद्ध होने के लक्षण ये है - कि पूर्वोक्त प्रकार से पुरश्चरण करने पर यदि आकाश में हुङ्कार की ध्वनि सुनाई पड़े और दीर्घाकार अग्नि शिखा दिखाई दे, तो समझे कि मंत्र सिद्ध हो गया है, और तब तदनुसार कार्य करे।

५. **मन्त्रः- ॐ कर्ण पिशाचि मे कर्णे कथय हूं फट् स्वाहा**

रात्रि काल में दीपक का तेल पैरों में मलकर उक्त मंत्र का एक लाख जप करें। इससे यह मंत्र सिद्ध हो जायगा। इस मंत्र की साधना में जप पूजा और ध्यानादि की आवश्यकता नहीं होती।

६. **मन्त्रः- ॐ क्लीं जया देवि स्वाहा। ॐ क्लीं जयाकर्णपिशाचि स्वाहा।**

इस मंत्र में भी ऋष्यादि न्यास नहीं करे। पहले इसका एक लाख जप करे। तब एक गृह गोधिका की मारकर उसके

****

ऊपर यथा- **'शक्ति जया देवी'** की पूजा करे। जब तक वह गोधिका पुनः जीवित न हो जाय तब तक जप करे। उस गोधिका के जीवित हो जाने पर समझे कि मंत्र सिद्ध हो गया। इस मंत्र के सिद्ध होने पर साधक अपने मन में जो भी प्रश्न करेगा, उसका उत्तर तुरन्त देवी आकर देगी और साधक उस गृह गोधिका की पीठ पर भूत और भविष्य की सभी बातें लिखी हुई देखेगा।

७. मंत्रमहोदधौ -ॐ ह्रीं कर्णपिशाचिनि कर्णे मे कथय स्वाहा। इति षोडशाक्षरो **मंत्रः।**

अस्य विधानम्

विनियोगः- **अस्य कर्णपिशाचिनीमंत्रस्य पिप्पलाद ऋषिः। नीवृच्छंदः। कर्णपिशाचिनी देवता। ममाभीष्ठ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यासः- **ॐ पिप्लादऋषये नमः शिरसि। नीवृच्छंदसे नमो मुखे। कर्णपिशाचिनी देवतायै नमो हृदि। विनियोगाय नमः सर्वांगे।**

करन्यासः- **ॐ अंगुष्ठायां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। कर्णपिशाचिनि मध्यमाभ्यां नमः। कर्णे मे अनामिकाभ्यां नमः। कथय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादि न्यासः-**ॐ हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। कर्णपिशाचिनि शिखायै वषट्। कर्णे मे कवचाय हुं। कथय नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।** एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

ध्यानम्

ॐ चितासनस्थां नरमुंडमाला विभूषितामस्थिमणीन् कराब्जैः ।
प्रेतान्नरांत्रैर्दधतीं कुवस्त्रां भजामहे कर्णपिशाचिनीं ताम् ॥

पीठ पूजादिकं षड्यक्षिणीवज्ज्ञेयम्। श्मशानस्थः शवस्थे वा लक्षं जपेत्। विभीतक समिद्भिर्दशांशतो होमः। एवं कृते मंत्र सिद्धो भवति सिद्धे मंत्रे अशुचिर्भूत्वा वदरीतरौ पुनर्लक्षं जपेत्। तदा पिशाचिनी प्रसन्ना भवति परचित्तस्थितां वार्तां कर्णे कथयति।

अशुचि होकर श्मशान व शव के पास साधना करे। तथा च- श्मशानस्थः शवस्थो वा जपेल्लक्षं समाहितः। दशांशं जुहुयाद्वह्नौ विभीतक समिद्वरैः। सिद्धे मंत्रे जपं कुर्याद धस्ताद्बदतीतरौ। अशुचिर्लक्ष संख्यातं तेन तुष्टा पिशाचिनी। परचित्तस्थितां वार्तां भाविनीं च वदेच्छुतौ।

८. ग्रंथांतरेऽपि- ॐ ऐं ह्रीं ऐं क्लीं क्लीं ग्लौं ॐ नमः कर्णाग्रौ कर्णपिशाचिका देवि अतीतानागत वर्तमानवार्तां कथय मम कर्णे कथय कथय तथ्यं मुद्रावार्तां कथय कथय आगच्छागच्छ सत्यं सत्यं वद वद वाग्देवि स्वाहा।

अस्य विधानम्- मूलं रक्त चंदनेन लिखित्वा पंचामृतेन स्त्रपयित्वा लक्षं जपेत्। दशांशतो होमः। मंत्रः सिद्धो भवति। वार्तां कथयति। रक्त चन्दन से मूल मंत्र लिखकर पंचामृत इत्यादि से पूजा करे। एक लक्ष जप कर होम करे।

९. मतांतरेऽपि –**ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मत्तकर्णि प्रविश अतीतानागत वर्तमानं सत्यं सत्यं कथय मे स्वाहा।** इति षट्त्रिंशदक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्–लक्षं जपेत् सिद्धिः। पुनः आम्रपट्टोपरि अष्टोत्तर शतवारं मंत्रं लिखित्वा प्रत्येकं च पूजयित्वा तं मंत्रं शिरोऽधो धृत्वा शयनं कार्यम्। स्वप्ने वदति सत्यमेव। यदि साधको लक्षत्रयं जपेत्तदा सा प्रत्यक्षा भवति।

भूत भविष्य द्वर्त मानवार्ताः सर्वाः कर्णे कथयति। आम्रपट्टे पर यंत्र लिखे जप करे। उसे सिरहाने रखकर सोवे स्वप्न में वार्ता कहें।

१०. तंत्रांतरेऽपि– **ॐ कर्णपिशाचिनि पिंगललोचने स्वाहा।** इति पंचदशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्– अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः तद्दशांशतो होमः। तिलं भुक्त्वा एकभुक्तिव्रतं कार्यम्। एवं कृतं मंत्रः सिद्धो भवति। देवी कर्णापिशाचिनी प्रसन्ना भवति। त्रैलोकस्यवार्तां कथयति। तिल की वस्तुओ का भोजन कर व्रत कर जप करे।

११. मतांतरेऽपि– (क) **ॐ अनविंदे स्वाहा।** इति षडक्षरो मंत्रः।
(ख) **ॐ अनविन्दे कर्णपिशाचि स्वाहा।**

अस्य विधानम्– अमुमयुतं जपेदेकविंशतिदिनं यावत् कर्णपिशाचिनी सिद्धा भवति। भूत भविष्य वर्तमानवार्ताः सर्वाः कर्णे कथयति। १०००० जप करे।

१२. (मतांतरेऽपि)– **ॐ विश्वरूपे पिशाचि वद वद ह्रीं स्वाहा।** इति पंचदशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्– लक्षं जपेत् दशांशतो होमः। एवं कृते मंत्रःसिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे प्रतिदिनं त्रिसहस्त्रं जपेत् एकविंशतिदिनं यावत्। तदा त्रैलोक्यवार्तां सर्वा कर्णे कथयति।

१३. (तंत्रातरेऽपि)– **ॐ नमः कर्णपिशाचिन्यमोघ सत्यवादिनि मम कर्णे अवतर अवतरातीतानागत– वर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचि स्वाहा।** इति पंचषष्ठयक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्– प्रातः काल घृतका और रात्रि में घृत तेल दोनों का दीपक जलाकर त्रिशूल की पूजा करे। इस प्रकार मंत्र का सवा लक्ष जप करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है पीछे अशुचि हो वेर वृक्ष के नीचे बैठकर रात्रि के समय सवा लाख जप करने से कान में शब्द आने लग जाता है, फिर जिस वक्त साधक किसी बात के जानने की इच्छा करता है उस वक्त कर्णचिशाचिनी देवी साधक के कान में उसके प्रश्न का उत्तर दि देती है।

॥ १४. कर्णपिशाचिनी वार्ताली मंत्र प्रयोगः॥

मंत्रो यथा– **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नृं ठं ठं नमो देवपुत्रि स्वर्गनिवासनि सर्वनर नारी मुखवार्तालि वार्तां कथय सप्तसमुद्रान्दर्शय दर्शय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नीं ठं ठं हुं फट् स्वाहा।** इति सप्त पंचाशक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- शेह का शूल दो एवं दो जंगली वराह के दंत लेकर उसके ऊपर एक लाख बत्तीस हजार जप करे तो सिद्ध हो। पीछे नित्य ही जप करता रहे तो साधक के प्रश्न का उत्तर कान मे कहती है, रोली का तिलक नही करे, रोली का तिलक करने से सिद्धि नष्ट हो जाती है। यह मंत्र एक महात्मा की कृपा से मिला था, उस महात्मा का इस मंत्र की पूर्णसिद्धि थी, इसी के प्रभाव से भूत भविष्य वर्तमान तीनों काल की वार्ता बहुत अच्छी तरह कह देते थे।

॥ कर्णपिशाचिनी मंत्र प्रयोग:॥

१५. (वीरभद्रोड्डीशतंत्रे मंत्रो यथा) - **ॐ कं ह्रीं प्राणकर्षणमालोकितेन विश्वरूपी पिशाची वद वद इँ ह्रीं स्वाहा।** इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- पक्षैकं दशसाहस्त्रं जपित्वा पिंडदानेन सिद्धयति भूत भविष्य वर्तमानद्वार्ता कथयति।

१६. अन्यत्र मंत्रो यथा- **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दुं हुं फट् कनक वज्र वैडूर्यमुक्तालंकृत भूषणे एहि एहि आगच्द आगच्छ मम कर्णे प्रविश्य भूत भविष्य वर्तमान काल ज्ञान दूर दृष्टि दूरश्रवणं ब्रूहि ब्रूहि अग्नि स्तंभनं शत्रु स्तंभनं शत्रुमुख स्तंभनं शत्रुगति स्तंभनं शत्रुमति स्तंभनं परेषां गतिं मतिं सर्वशत्रूणां वाग्जृंभण स्तंभनं कुरु कुरु शत्रुकार्य हानिकरि मम कार्यसिद्धि करि शत्रूणामुद्योग विध्वंसकरि वीर चामुंडिनि हाटक धारिणि नगरी पुरी पट्टणस्थानसंमोहिनि असाध्य साधिनि ॐ श्रीं ह्रीं ऐं ॐ देवि हन हन हुं फट् स्वाहा** । इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- इमं मंत्रमयुतं जपेत् सिद्धिः। सर्व कर्णे कथयति शत्रून्नाशयति सर्वकार्याणि सिद्धयंति॥

यह देवि अघोर क्रिया गत नहीं है। हवनादि कर्म कर बलि प्रयोग करें। तामस प्रयोग में ही श्मशान साधना करें।

१७. मंत्रो यथा- **ॐ नमः कर्णपिशाचिनि अमोघसत्यवादिनि मम कर्णे अवतरावतर अतीतानागतवर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्यं कथय कथय ह्रीं कर्णापिशाचिनि स्वाहा।** इति पंचाधिकषष्ठ्यक्षरो मंत्र।

अस्य विधानम्- त्रिशूलका पूजन कर दिन में घृत का दीपक जलावें। ग्यारह सौ बार मंत्र जपे। पश्चात् रात्रि में इसी तरह त्रिशूलकाक पूजन कर घृत तेल दोनों का दीपक जलाकर ग्यारहसौ बार मंत्र जपे। ऐसा करने से ग्यारह दिन के भीतर प्रश्न का उत्तर स्वप्नद्वारा अवश्य देती है इसमें संदेह नहीं। प्रत्यक्ष करने हेतु अधिक समय तक जप करे। बलि प्रदान करे, प्रकट होने पर वाचा सिद्धि प्राप्त होवे।

१८. तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा - **ॐ नमः कर्णपिशाचिनि मत्तकरिणि प्रवेषे अतीतानागत वर्तमानानि सत्यं कथय मे स्वाहा।** इति षट्त्रिंशदक्षरो मंत्र।

अस्य विधानम्- इस मंत्र को आम्र के पट्टे पर गुलाल बिछाकर अनार की कलम से रात्रि के समय एक सौ आठ मंत्र लिखकर मिटाते जावें। लिखते समय मंत्र का उच्चारण भी करते जावे। अंत वाले मंत्र का पंचोपचार पूजन करके ग्यारह सौ बार मंत्र लिखकर जप करें। पश्चात् मंत्र लिखे हुए उस पट्टे को सिराहाने रखकर सो जावें। ऐसा करने से इक्कीस दिन के भीतर साधक के प्रश्न का उत्तर यथोचित ठीक ठीक स्पष्ट वचनों से स्वप्न में देती है। इसमें कुछ संदेह

नहीं। यह साधकों द्वारा कई बार अनुभव किया हुआ सिद्ध प्रयोग है इसमें संदेह नहीं जानें। अगर इसको होली या दिवाली या ग्रहण से प्रारंभ करके पलंग के ऊपर ही पांच सो मंत्र जपकर सोया करे तो अवश्य ही साधक के प्रश्न का उत्तर देती है। अथवा कई तरह की बातों से सूचित करती है, परीक्षा कर देखें।

१९. कामरत्नतंत्रे मंत्रो यथा – **ॐ ह्रीं सः नमो भगवति कर्णपिशाचिनि चंडवेगिनि वद वद स्वाहा।** इति षड्विंशत्यक्षरो मंत्र।

अस्य विधानम्– पूर्वसेवायुतं जत्वा कृष्णकन्याभिमंत्रितः। हस्तपादप्रलेपेन सुतौ वक्ति शुभाशुभम्। त्रैलोक्ये यादृशो कथयेत्फलम्। इति षड्विंशतयक्षरकर्णपिशाचिनीमंत्रप्रयोगः। काली कत्या का पूजन कर संतुष्ट करे।

२०. तंत्रांतरेऽपि मंत्रो यथा – **ॐ हंसोहंसः नमो भगवति कर्णापिशाचिनि चंडवेगिनि स्वाहा।** इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्– पूर्वसेवायुतं जप्त्वा कुष्ठकल्काभिमंत्रितम्। हस्तपादप्रलेपेन स्वप्ने वक्ति शुभाशुभम्। त्रैलौक्ये यादृशी वार्ता तादृशं कथयेत्फलम्। लाल कूष्ट के टुकडे पर पूजन करे।

२१. तंत्रातरेऽपि मंत्रो यथा – **ॐ भगवति चंडकर्णपिशाचिनि स्वाहा।** इति सप्तदशाक्षरो मंत्र।

अस्य विधानम्– पूर्वसेवपयुतं जत्वा कृत्वा होमं दशांशतः। घृताक्तै रक्तकुष्ठैश्च (लाल कूट) पूर्णांते च पुनर्जपेत्। आपादातं लिपेद्गात्रं रात्रो मंत्रः सपुच्चरेत्। यावान्निद्रावशं याति स्वप्न दत्ते च सागता। वांछित यच्छुभं किंचित्स्यात्सिद्धं वा न सिद्धपाते।

प्राकृत जैन ग्रन्थे कर्ण पिशाचिनी साधना

कर्ण पिशाचिनी के स्वतन्त्र मंत्र तो है ही कहीं कहीं इष्ट देव व इष्ट मंत्र की आन देकर अर्थात् इष्ट मन्त्र के साथ कर्णपिशाचि का आवाहन किया गया है।

इससे कर्णपिशाची शीघ्र आती है तथा अनिष्ट भी नहीं करती है।

(२२) **ॐ कर्णपिशाची अमोघसत्य वादिनी मम कर्णे अवतर अवतर अतीताऽऽनागतं वर्त्तमानं दर्शय दर्शय एहि ह्रीं कर्णपिशाचिनि स्वाहा।**

(२३) **ॐ ह्रीं कर्णपिशाचिनि अमोघसत्य वादिनी मम कर्णे अवतर अवतर सत्यं सत्यं कथय कथय अतीत आनागतं वर्तमानं दर्शय दर्शय एह्ये एह्ये ॐ ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।**

लाल चंदन की पुतली बनायें उस पुतली के आगे एक पट्टे पर इस मन्त्र को लिखकर सुगंधित पुष्पों से अर्चन कर दस हजार जप करें। स्वप्न में शुभाशुभ कहें।

(२४) **ॐ कर्णपिशाचिनी देवि अमोघ वागीश्वरि सत्यवादिनि सत्यं ब्रूहि ब्रूहि यत्वं चिंतेसि सप्त समुद्राभ्यंतरे वर्तते तत्सर्वं मम कर्णे निवेदय निवेदय ॐ वौषट स्वाहा।**

१०००० जप करें। जपमध्य में दशांश होम घृत से व मधु से करें। शुभाशुभ कहें।

(२५) ॐ रक्तोपलधारिणि मझहाजर रिपुविध्वंशिनि सदा सप्त समुद्राभ्यंतरे पद्मावती तत्सर्वं मम कर्णे कथय शीघ्रं शब्दं कुरु कुरु ॐ ह्रीं ह्रां ह्रूं कर्णपिशाचिनिके स्वाहा।

(२६) ॐ ह्रीं नमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोगनहाणं लोगहियाणं लोगपाइवाणं लोग पज्जो अगराणं मम शुभाशुभं दर्शय दर्शय कर्णपिशाचिनी स्वाहा।

१०००० जप कर होम करें।

(२७) ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोग पइवाणं लोग पज्जोयगराणं मम शुभाशुभं दर्शय दर्शय कर्णपिशाचिनी स्वाहा।

१०८ बार जप करें तथा मौन होकर सोजायें। स्वप्न में शुभाशुभ कहें।

॥ अथ विप्रचांडालिनी मंत्र प्रयोगः॥

मंत्रो यथा प्राकृतग्रंथे- **ॐ नमश्चामुडे प्रचंडे इन्द्राय ॐ नमो विप्रचांडालिनि शोभिनि प्रकर्षिणि आकर्षय आकर्षय द्रव्यमानय प्रबलमानय हूँ फट् स्वाहा।** इत्येकपंचाशदक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- प्रथम दिन उपवास करें। शीतलता से रहें, धरती पर सोयें, मीठा भोजन करें, जीमते जीमते छोड़ दें, अपवित्र स्थान में मंत्र जपें, तो इक्कीस दिन में सिद्ध हो। पश्चात् सात दिन पृथ्वी पर सोवे तो आश्चर्य दिखाई पड़ता है। तीसरे दिन स्वप्न में रौद्रादिरूप दिखता है, यदि स्वप्न में न दिखाई दे तो पुनः इक्कीस दिन जपे तो स्त्रीरूप में प्रत्यक्ष दिखाई छल कर अभक्ष्य वस्तु लाकर दे, अनाचार करे, मरने का भय दे जो शंका न करे तो सिद्ध हो लक्ष्मी प्रत्यक्ष हो।

अथ योगिनी साधनम्

'भूतड़ामर तन्त्र' में लिखा है कि यह महाविद्या अत्यन्त गुह्य और देवताओं को भी दुर्लभ है। इन योगिनियों की ही पूजा कर कुबेर धनाधिपति हुए। इन में सबसे पहली है 'सुर सुन्दरी' जिनकी पूजा करने से मनुष्य राजत्व प्राप्त करता है।

(१) सुर सुन्दरी

'सुर सुन्दरी' की पूजा पद्धति यह है कि प्रात: स्नानादि क्रिया से निवृत होकर '**ह्रौं**' मंत्र से आचमन, '**ॐ सहस्त्रार हूं फट्**' से दिग्बन्धन मूलं मंत्र से प्राणायाम और '**ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः**' इत्यादि क्रम से कराङ्गन्यास करे। फिर अष्टदल पद्म यन्त्र अङ्कित कर उस पद्म यन्त्र में देवी का जीव न्यास करे। तब पीठ देवताओं की पूजा कर 'सुर सुन्दरी' का ध्यान करे यथा-

पूर्ण चन्द्र निभां गौरीं विचित्राम्बर धारिणीम् ।
पीनोत्तुङ्गकुचां वामां सर्वेषामभय प्रदाम् ॥

अर्थात् इन देवी का मुख पूर्ण चन्द्र के समान सुन्दर है, देह गौरवर्ण है और विचित्र वस्त्र पहने हैं। दोनो स्तन उच्च और स्थूल है और ये सबको अभय देती है।

इस प्रकार ध्यान कर मूल मंत्र से पाद्यादि देकर धूप, दीप, नैवेद्य, गंध, चन्दन और ताम्बूल निवेदन करें।

'**ॐ ह्रीं आगच्छ सुर सुन्दरी स्वाहा** ' इस मंत्र से पूजा करें।

तीनों सन्ध्याओं में प्रतिदिन ध्यान कर साधक एक एक हजार मंत्र जप करें। इस प्रकार एंक मास जप कर मास के अन्तिम दिन बलि आदि विविध उपहारों से देवी की पूजा करें। पूजा की समाप्ति पर पूर्वोक्त मंत्र का जप करे। ऐसा करने पर अर्द्ध रात्रि के समय देवी साधक के सम्मुख प्रकट होती है।

'सुर सुन्दरी' साधक को दृढ प्रतिज्ञ जानकर उसके घर में आती है। देवी को प्रसन्न और हँसमुखी दर्शन कर साधक पुन: पाद्यादि उपहारों द्वारा उनका अर्चन कर चन्दन तथा सुन्दर पुष्प प्रदान कर उनसे अभीष्ट वर माँगे। उस समय साधक देवी को माता, बहन या पत्नी कहकर सम्बोधित करें।

मातृ भाव से भक्ति करने पर देवी साधक को धन और मनोहर विविध द्रव्य तथा राजत्व तक देती है और प्रतिदिन आकर पुत्रवत् उसका पालन करती है।

बहन भाव से आराधना करने पर देवी विविध द्रव्य और दिव्य वस्त्र प्रदान कर दिव्यकन्या तथा नागकन्या लाकर देती है। साधक जो कुछ भी देवी से माँगता है, वह उसे तुरन्त प्रदान करती है। भाई के समान साधक का वे पालन करती हैं और उसकी सभी कामनाओं को पूर्ण करती हैं ।

पत्नी रूप से उपासना करने पर साधक संसार में सब राजाओं में प्रधान होता है और भूत-भविष्य-वर्तमान की सभी घटनाओं को देवी साधक को सूचित करती है। वह साधक स्वर्ग, मर्त्य और पाताल सभी स्थानों में निर्विघ्न रूप से भ्रमण करने में समर्थ होता है, और देवी उसे जो समस्त वस्तुएँ प्रदान करती है, उनका वर्णन करना सम्भव नहीं है। साधक देवी के सहित सुख सम्भोग में समय व्यतीत करता है। इस प्रकार पत्नी रूप में सिद्धि करने पर साधक अन्य स्त्रियों पर आसक्ति न करे अन्यथा देवी रुष्ट होकर साधक को नष्ट कर देती है। स्वयं की स्त्री का भी सुख नहीं रहता है।

(२) मनोहरा योगिनी

नदी किनारे स्नानादि नित्य क्रिया समाप्त कर पूर्ववत् न्यासादि क्रिया करे। फिर चन्दन द्वारा मण्डल अङ्कित कर उस मण्डल के मध्य में देवी का मंत्र लिखकर मनोहरा योगिनी का ध्यान करें। यथा-

कुरङ्ग नेत्रां शरविन्दु वक्त्रां बिम्बाधरां चन्दन गन्ध लिप्ताम् ।
चीनांशुकां पीनकुचां मनोज्ञां श्यामां सदा कामदुघां विचित्रिम् ॥

अर्थात् देवी के नेत्र मृग नयनों के समान और मुख शरत् कालीन चन्द्रमा के समान सुन्दर है। अधर बिम्बा फल के समान अरुण वर्ण है, और सारा शरीर सुगन्ध चन्दन से अनुलिप्त है। महीन वस्त्र पहने हैं और दोनों स्तन अति स्थूल है। सुन्दर स्वरूपवाली, श्याम वर्णा और कामधेनु के समान सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली है एवं विचित्र वर्णा है।

इस प्रकार ध्यान कर साधक मूल मंत्र द्वारा अगरु, धूप, दीप, गंध, पुष्प, मधु और ताम्बूल से पूजा करने के बाद देवी के मंत्र का जप करें।

'ॐ ह्रीं आगच्छ मनोहरी स्वाहा'-इस मंत्र का प्रतिदिन अयुत १०००० जप करें।

एक मास जप कर महीने के अन्तिम दिन प्रातः काल से लेकर सारे दिन उत्तम रूप से मंत्र का जप करें। निशीथ समय तक जप करने पर साधक को दृढ़प्रतिज्ञ जान कर मनोहरा देवी प्रसन्न होकर उसके सम्मुख प्रकट होंगी और उससे वर मांगने को कहेंगी। उस समय साधक पुनः देवी का ध्यान कर पाद्यादि उपचारों से उनका पूजन करे। इस योगिनी की पूजा में माया बीज (**ह्रीं**) से प्राणायाम और **'ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः'** इत्यादि क्रम से कराङ्ग न्यास करें।

फिर साधक संयत होकर सद्यो मांस द्वारा बलि देकर चन्दनोदक और विविध पुष्प एवं फल द्वारा मनोहरा देवी की पूजा करें। इस प्रकार पूजा करने से देवी प्रसन्न होकर साधक की अभिलाषा पूर्ण करती है, और प्रतिदिन साधक को सौ स्वर्ण मुद्रायें प्रदान करती है, जिसे पाकर साधक प्रतिदिन खर्च कर ड़ाले कुछ भी बचाए नहीं क्योंकि कुछ भी शेष रहने से देवी क्रुद्ध होंगी और फिर कुछ न देगी।

इन योगिनी की साधना करने पर अन्य स्त्री का सहवास छोड़ना पड़ता है। इस साधना के बल से साधक सर्वत्र निश्चिन्त होकर निर्विघ्न विचरण करने में समर्थ होता है।

(३) कनकावती योगिनी

इन देवी की पूजा वटवृक्ष के मूल में करें। **'ह्रीं'** मंत्र से प्राणायाम और **'ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः'** इत्यादि क्रम से कराङ्गन्यास करे। फिर संयत होकर सद्योमांस द्वारा बलि देकर पूजा करे। उच्छिष्ट रक्त द्वारा अर्थात् दन्त रक्त से अर्घ्य

प्रदान कर प्रतिदिन पूजा करें। ध्यान निम्न प्रकार करें-

प्रचण्ड वदनां देवीं पक्वबिम्बाधरां प्रिये ।
रक्ताम्बरधरां बालां सर्वकाम प्रदां शुभाम् ॥

अर्थात् देवी प्रचण्ड मुखी है, अधर पके हुए बिम्बा फल के समान रक्त वर्ण हैं, रक्त वस्त्र पहने हैं। वे बालिका रूपिणी हैं और साधक की सब कामनाओं को देने वाली है।

इस प्रकार ध्यान कर प्रतिदिन अयुत (१००००) मंत्र जप करे। सात दिन तक इसी प्रकार पूजा और मंत्र जप करें। आठवें दिन विधि पूर्वक पूजन करें।

'**ॐ ह्रीं हूं रक्ष कर्मणि आगच्छ कनकावति स्वाहा** '- इस मंत्र से पूजा और जप करें।

देवी को मनोहर बलि देकर निशीय काल तक मंत्र जप करें। तब साधक को दृढ़प्रतिज्ञ जानकर देवी उसके सम्मुख आएँगी। उस समय साधक अर्घ्यादि द्वारा उनकी पूजा करें। इससे देवी अपनी परिचारिकाओं के सहित साधक की पत्नी बनकर साधक को वाञ्छित भोग्य वस्तुएँ प्रदान करेंगी, और अपने वस्त्र तथा आभूषणादि छोड़कर अपने मन्दिर को जायँगी। साधक अपनी पत्नी का त्याग कर कनकावती की उपासना करें।

(४) कामेश्वरी योगिनी

'**ॐ ह्रीं आगच्छ कामेश्वरी स्वाहा**' यह महामंत्र साधक के लिए सुखावह है।

पूर्ववत् अर्चनादि कर सुन्दर भूर्जपत्र पर गोरोचन द्वारा सर्वालङ्कार भूषिता देवी की प्रतिमूर्ति अङ्कित करें और शय्या पर बैठ कर एकाग्र मन से उक्त मंत्र का एक मास तक प्रतिदिन एक हजार जप करें। इस देवी के पूजन और मंत्र जप काल में घृत तथा मधु द्वारा दीपक प्रज्वलित रखें। ध्यान इस प्रकार करें-

कामेश्वरी शशाङ्कास्यां, खेलत् खञ्जन लोचनाम् ।
सदा लोलगतिं कान्तां कुसुमास्त्र शिलीमुखीम् ॥

अर्थात् कामेश्वरी देवी चन्द्र वदना है, नेत्र खञ्जन पक्षी के समान चंचल हैं। ये सदा चंचल गति से गमन करती है और हाथ में पुष्प वाण लिए हैं।

इस प्रकार ध्यान कर पूजा और जप करने से देवी प्रकट होकर साधक से कहती है कि तुम्हारी किस आज्ञा का पालन करना है। उस समय साधक देवी की पूजा स्त्री भाव से पाद्यादि द्वारा करे। इससे प्रसन्न होकर देवी साधक को अन्नादि विविध भोज्य पदार्थो द्वारा पतिवत् प्रतिपालित करती है और रात्रि भर साधक के पास रहकर ऐश्वर्यादि सुख, भोज्य सामग्री, अतुल धन और विविध आभूषण देकर प्रातः काल प्रस्थान करती है।

(५) रति सुन्दरी योगिनी

पहले निम्न ध्यानानुसार पट पर देवी की प्रतिमूर्ति अङ्कित करें-

सुवर्ण वर्णा गौराङ्गी सर्वालङ्कार भूषिताम् ।
नूपुराङ्गद हाराढ्यां रम्यां च पुष्करेक्षणाम् ॥

अर्थात देवी सुवर्णा वर्णा गौराङ्गी और सब प्रकार के आभूषणों से विभूषिता हैं। नूपुर, अङ्गद और हार आदि आभूषणों से वे सुसज्जिता है और उनके दोनों नेत्र प्रफुल्ल कमलवत् सुन्दर है।

इस प्रकार ध्यान कर पाद्य, चन्दन और जाती आदि विविध पुष्पों द्वारा पूजा करते हुए मंत्र का जप करें।

'ॐ ह्रीं आगच्छ रति सुन्दरि स्वाहा' इस मंत्र का प्रति दिन आठ हजार जप करें।

एक मास तक इसी प्रकार जप कर महीने के अन्तिम दिन पुनः पूजा करें।

घृत दीप, गंध, पुष्प और ताम्बूल निवेदन कर सुन्दरी के आगमन की प्रतीक्षा करता हुआ साधक जप करता रहे। जब तक देवी प्रकट न हो तब तक जप करें। साधक को दृढ़प्रतिज्ञ जानकर देवी निशीथ काल में निश्चय ही प्रकट होंगी। उस समय साधक जाति पुष्पों की माला से भक्ति पूर्वक देवी की पूजा करें। इससे प्रसन्न होकर देवी साधक को भोज्य पदार्थ देकर उसे सन्तुष्ट करेंगी और उसकी पत्नी बनकर उसे अभीष्ट वर प्रदान करेंगी। रात्रि भर साधक के पास रहकर वस्त्राभूषणादि छोडकर देवी प्रातः प्रस्थान करेंगी और साधक के निर्देशानुसार इसी प्रकार वे प्रतिदिन गमना गमन करेंगी।

जन शून्य स्थान में इस साधना से निश्चय ही सिद्धि मिलती है। अपनी पत्नी का त्याग कर साधक देवी की उपासना करें अन्यथा उसकी मृत्यु होगी, इसमें सन्देह नहीं।

(६) पद्मिनी योगिनी

अपने घर में या शिव के निकट यह साधना करें।

'ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि स्वाहा' इस मंत्र से पूर्ववत् अर्चनादि कर चन्दन द्वारा मण्डल बनाकर उसमें मूल मंत्र लिखें। ध्यान इस प्रकार करें-

पद्मासनां श्याम वर्णा पीनोत्तुङ्ग पयोधराम् ।
कोमलाङ्गी स्मेरमुखीं - रक्तोत्पल दलेक्षणाम् ॥

अर्थात् देवी पद्मासना और श्याम वर्णा है, दोनों स्तन स्थूल और उच्च है, शरीर अत्यन्त कोमल है, मुख पर सदा मुस्कान रहती है, और दोनों नेत्र रक्तकमल के दलों के समान सुन्दर है।

इस प्रकार ध्यान कर प्रतिदिन एक हजार मंत्र जप करे। एक मास जप कर महीने के अन्त में पूर्णिमा के दिन विधि पूर्वक पूजन कर रात भर दृढ़ता पूर्वक मंत्र जप करते रहे। पद्मिनी देवी साधक के समीप आकर उपस्थित होंगी और पतिरूप से उसे मानकर सब सुख भोग देंगी किन्तु साधक अन्य भार्या का त्याग करें।

(७) नटिनी योगिनी

विश्वामित्र ने इस महाविद्या को प्राप्त कर **बला और अतिबला** नामक विद्यायों को सिद्ध किया था।

'ॐ ह्रीं नटिनी स्वाहा' यह महाविद्या अति गोपनीय है। अशोक वृक्ष के मूल में जाकर पूर्ववत् स्नान और मूल मंत्र से पूजा करें। नटिनी देवी को ध्यान इस प्रकार करें-

त्रैलोक्य मोहिनीं गौरीं विचित्राम्बर धारिणीम् ।
विचित्रालंकृतां रम्यां नर्तकी - वेश धारिणीम् ॥
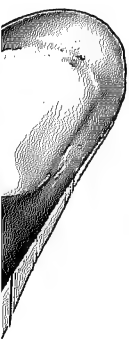
अर्थात् नटिनी देवी तीनों लोकों को मोहित करने वाली है। गौरवर्णा और विचित्र वस्त्र धारिणी है। विविध आभूषणों से वे सज्जिता है और नर्तकी का वेश धारण किए है।

ध्यान कर प्रतिदिन एक हजार मंत्र जप करें। मांस उपहार से देवी की पूजा कर धूप, दीप, गंध, पुष्प ओर ताम्बूल प्रदान करें। इस प्रकार एक मास तक पूजा कर महीने के अन्तिम दिन महापूजा करे। तब देवी अर्द्ध रात्रि के समय आकर साधक को भयभीत करेंगी, किन्तु साधक निडर होकर मंत्र जप करता रहे। साधक को दृढ़प्रतिज्ञ जानकर देवी उसके घर में आएँगी और मधुर हँसी के साथ उससे कहेंगी कि तुम्हारा जो अभीष्ट वर हो उसे माँगो। तब साधक अपनी इच्छानुसार मन ही मन देवी को माता, बहन, पत्नी कहकर सम्बोधन करे और उन्हें सन्तुष्ट करे। इससे प्रसन्न होकर नटिनी नामक योगिनी साधक के मनोरथ को पूर्ण करेंगी।

मातृभाव से देवी की उपासना करने से वे साधक को पुत्रवत् मानेंगी और प्रतिदिन उसे सौ स्वर्ण मुद्रा तथा वाञ्छित द्रव्य प्रदान करेंगी।

बहन रूप से बात करने से देवी साधक को प्रतिदिन नाग कन्या और राजकन्या लाकर देंगी तथा साधक भूत, भविष्य का ज्ञाता होगा।

पत्नी रूप मानने से देवी साधक को प्रतिदिन अतुल धन, अन्नादि, विविध सामग्री और सौ स्वर्ण मुद्रा प्रदान करेंगी।

(८) मधुमती योगिनी

भूर्ज पत्र पर कुंकुम द्वारा स्त्री की मूर्ति बनाकर उसके बाहर अष्टदल पद्म बनाकर न्यासादि करें और जीव न्यास कर उसमें मधुमती देवी का ध्यान करे यथा–

शुद्ध स्फटिक सङ्काशां नानाऽलङ्कार भूषिताम् ।
मञ्जीरहार केयूर रत्न कुण्डल मण्डिताम् ॥

अर्थात् देवी शुद्ध स्फटिक के समान शुभ्र वर्णा है। विविध अलङ्कारों से शोभिता है और नूपुर, हार, केयूर तथा रत्न जटित कुण्डल से विभूषिता है।

इस प्रकार ध्यान कर प्रतिदिन एक सहस्र मंत्र जप करे।

'ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि मैथुन प्रिये स्वाहा' यह मंत्र सब कार्यों में सिद्धि दायक है। यह सर्व सिद्धि दायिनी मधुमती देवी अति गुह्या है।

कृष्णा प्रतिपदा तिथि से आरम्भ कर पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्यादि उपचारों से तीनों सन्ध्याओं में देवी की पूजा करे। एक मास तक पूजा और मंत्र जप कर पूर्णिमा के दिन गंधादि उपचारों से देवी की पूजा करे। घृत, दीप, धूप और मनोहर नैवेद्य देकर दिन रात एकाग्र हो मंत्र जप करता रहे। इस प्रकार पूजा और जप करने से देवी प्रातः काल साधक के सम्मुख निश्चय प्रकट होती है।

देवी प्रसन्न होकर साधक को रति और भोजन द्रव्य द्वारा परितुष्ट करती है। देवकन्या, दानवकन्या, गन्धर्वकन्या,

विद्याधरकन्या, यक्षकन्या, राक्षसकन्या और विविध रत्नाभूषण तथा चर्व्यचोष्यादि विविध भक्ष्य द्रव्य प्रदान करती है। स्वर्ग, मर्त्य और पाताल में जो भी वस्तुएँ विद्यमान हों उन सबको साधक के निर्देशानुसार देवी लाती है और प्रतिदिन सौ स्वर्ण मुद्राएँ देती है।

देवी की कृपा से साधक नीरोग रहकर चिर काल तक जीवित रहता है। देवी के आशीर्वाद से वह सर्वज्ञ, सुन्दर और श्रीमान् होता है। सर्वत्र जाने आने की शक्ति उसे प्राप्त होती है। प्रतिदिन वह देवी के साथ क्रीडो कौतुक करने का सौभाग्य प्राप्त करता है।

योगिनी साधना का काल, पात्र और स्थान- बुद्धिमान साधक हविष्याशी और जितेन्द्रिय होकर वसन्त काल में योगिनी की साधना करे। निरन्तर योगिनी का ध्यान कर उनके दर्शन के लिए उत्सुक होकर उज्जट व प्रान्तर में साधना करे। विशेष कर काम रूप में यह साधना विशेष फल दायिनी है। इन स्थानों में से किसी एक स्थान व काल में संयत मन से यह साधना करे। इससे निश्चय ही देवी का दर्शन मिलता है। देवी के सभी सेवक इस साधना के अधिकारी है। ब्रह्मोपासक संन्यासी इस साधना के अधिकारी नहीं हैं।

****

अथ अष्ट अप्सरा साधनम्

अप्सरा साधना से रूपवति स्त्री का आकर्षण होता है। अप्सरा द्रव्य तथा रसायन भी प्रदान करती है। अप्सरा सिद्धि में मुद्राओं के प्रदर्शन का भी महत्व है। अग्निमुख मुद्रा से आवाहन। खड़े होकर कमल के समान अंजली करने से उसका मोहन होता है तथा हाथ जोड़कर मुद्रा दिखाने से वह दासी हो जाती है। आठ हज़ार जप नित्य एक माह तक करे।

मंत्र - **तत्क्षणात् सर्वाप्सरस आगच्छागच्छ हूं यः यः।** (इति आवाहन)

ॐ सर्वसिद्धि भेगेश्वरि स्वाहा (इति सान्निध्यम्)

ॐ काम प्रियायै स्वाहा (इति अभिमुखम्)

यदि साधना करने पर अप्सरा नहीं आवे तो **क्रोध मंत्र** का जप कर उसका **ताड़न** करे तथा **स्तंभन** मंत्र से उसका **बंधन** करे।

क्रोध मंत्र - ॐ ह्रीं अकट्टः कट्टः हूं वः फट्।

स्तंभन मंत्र - ॐ सबंध सबंधस्तनू हुं फट्।

१. शशि अप्सरा

(भूतडामर तंत्रे) मंत्र - **ॐ श्रीं शशि देव्यागच्छागच्छ स्वाहा।**

विधानम्- पर्वत शिखर पर बैठकर एक लक्षजप करे। पूर्णिमा को सारी रात जप करें। सुबह अप्सरा आकर दिव्य रसायन प्रदान करेती है। आयु वृद्धि होवे।

२. तिलोत्तमा अप्सरा

मंत्र - **ॐ श्रीं तिलोत्तमे आगच्छागच्छ स्वाहा।**

विधानम् - चंदन से चर्चित करे। क्षीर का भोग लगावे। स्वयं भी क्षीर का आधार लेवे। मंत्र जप करे। शुक्ला अष्टमी को पर्वत शिखर पर जप करे तो प्रातः काल यक्षिणी आलिंगन चुम्बन करती है। आप चुपचाप रहे। इच्छित काम की पूर्ति करती है। स्वर्ग के हाल बताती है, राज्य प्रदान करती है।

३. कांचन माला अप्सरा

मंत्र - **ॐ श्रीं कांचनमाले आगच्छागच्छ स्वाहा।**

विधानम् - नदी संगम पर १०००० जप करे। सातवें दिन विशेष पूजा करे, क्षीर का प्रसाद चढावे, गुगुल का धूप कर सारी रात जप करे। प्रातः अप्सरा आकर सभी इच्छा पूर्ति करती है।

४. कुण्डलाहारिणी अप्सरा

मंत्र – ॐ श्रीं ह्रीं कुण्डलाहारिणी आगच्छागच्छ स्वाहा।

विधानम् – यह मंत्र शीघ्र सिद्ध होता है इसमें तिथि, वार, नक्षत्र देखने की जरूरत नहीं है। पर्वत शिखर पर दस हजार जप करे। धूप, दीप, नैवेद्य प्रदान करे। प्रसन्न होकर अप्सरा आती है, उसे अर्घ प्रदान करे। अप्सरा भार्या रूप में भी आती है। धन व रसायन प्रदान करती है।

५. रत्नमाला अप्सरा

(भूतड़ामर तंत्रे) मंत्र – ॐ श्रीं ह्रूं रत्नमाले आगच्छागच्छ स्वाहा।

विधानम् – मंदिर में एक मास तक जप करे। पूर्णिमा को विशेष पूजा करे। उस दिन सारी रात्रि जप करे। जब सप्सरा आये उसे पुष्पासन देवे। यह नूपुर शब्द करती हुई आती है। प्रसन्न होकर वचन मांगती है। भार्या होकर स्वामी की सेवा करती है।

६. रंभा अप्सरा

मंत्र – ॐ सः रंभे आगच्छागच्छ स्वाहा।

विधानम् – चंदन से मंडल बनाकर प्रतिपदा से पूजन करे। गुगुल धूप देवें। पूर्णिमा को विशेष पूजा करे। रात्रि भर जप करे। अप्सरा आकर प्रसन्न होती है। भार्या बनती है धन व रसायन प्रदान करती है। राज्य प्रदान करती है।

७. उर्वशी अप्सरा

मंत्र – ॐ श्रीं उर्वशी आगच्छागच्छ स्वाहा।

विधानम् – रंभा अप्सरा के समान। अप्सरा जब आये उसे कुशा का आसन देवे। अप्सरा सभी कार्य करती है। भार्या भी बनती है। पर स्त्री प्रयोग से दूर रहे।

८. भूषणि अप्सरा

मंत्र – ॐ वाः श्रीं वाः श्री भूषणि आगच्छागच्छ स्वाहा।

विधानम् – प्रतिप्रदा से जप करे। कुंकुम से भोजपत्र पर प्रतिमा बनाकर पूजा करे। प्रतिदिन आठ हजार जप एक मास तक करे। मासान्त में विशेष पूजा करे। अर्ध रात्रि में अप्सरा आकर प्रसन्न होती है। भोग, एश्वर्य, धन, स्वर्ण, अच्छा भोजन प्रदान करती है।

॥ इति अष्ट अप्सरा साधनम् ॥

अथ अष्ट किन्नरी साधनम्

अप्सरा, किन्नरी व यक्षिणी आदि की सिद्धि हेतु आठ हजार जप लिखे गये है। परन्तु आठ हजार जप नित्य एक मास तक करने चाहिये।

(भूतडामर तंत्रेऽपि) - नहीं आने पर क्रोध मंत्र व स्तंभन मंत्र का जप करे। मासान्त में विशेष पूजा, धूप, दीप, नैवेद्य देवे।

क्रोध मंत्र- ॐ ह्रीं अकट्टः कट्टः हूं वः फट्।

स्तंभन मंत्र- ॐ सबंध सबंधस्तनू हुं फट्।

१. मंजुघोष किन्नरी

मंत्र - **ॐ मंजुघोषे आगच्छागच्छस्वाहा।**

विधानम् - प्रतिप्रदा से जप प्रारंभ करे। चंदन का मण्डल बनाकर आवाहन करे। पूर्णिमा को महती पूजा कर रात्रि भर जप करे। प्रातः काल किन्नरी आवे उसे कुशासन देवे। उससे वचन लेवे। द्रव्य, रसायन, भोग प्रदान करती है।

२. मनोहारी किन्नरी

मंत्र - **ॐ मनोहार्ये स्वाहा।**

विधानम् - प्रतिपदा से जप करे। पर्वत शिखर पर प्रयोग करे। मासान्त पर महती पूजा करे। किन्नरी आकर दिव्य रसायन भोजन प्रदान करे। भार्या रूप से सेवा करती है।

३. सुभगा किन्नरी

मंत्र - **ॐ सुभगे स्वाहा।**

विधानम् - पर्वत शिखर पर जप करे। किन्नरी प्रसन्न होकर भार्या रूप में आती है। पांच स्वर्ण मुद्रायें नित्य देती है।

४. विशालनेत्रा किन्नरी

मंत्र - **ॐ विशालनेत्रे स्वाहा।**

विधानम् - नदी तीर पर जाकर जप करे। मासांत में महती पूजा करे। किन्नरी प्रसन्न होकर भार्या बनती है। स्वर्ण मुद्रायें देती है।

५. सुरति प्रिया किन्नरी

मंत्र - **ॐ सुरति प्रिये स्वाहा।**

नदी संगम पर जप करें। मासान्त में महती पूजा करे। किन्नरी प्रसन्न होकर काम निवेदन करती है। स्वर्ण एवं वस्त्र प्रदान करती है।

६. अश्वमुखि किन्नरी

मंत्र – ॐ अश्वमुखि स्वाहा।

विधानम् – पर्वतशिखर पर जप करे। मासान्त में विशेष अर्चन करे। काम, भोग, धन, स्वर्ण प्रदान करती है।

७. दिवाकीरमुखि किन्नरी

मंत्र – ॐ दिवाकीरमुखि स्वाहा।

विधानम् – प्रयोग विधि उपरोक्त।

८. मंगला किन्नरी

मंत्र – ॐ सुभगे मंगले स्वाहा।

विधानम् – पर्वत शिखर या नदी तीर पर एक मास जप करे। किन्नरी आवे तब उसे पुष्पासन देवे। बाचा देकर अभीष्ट कहे।

॥ इति अष्टकिन्नरी साधनम् ॥

अथ यक्षिणी साधनम्

उड्डामरेश्वर तंत्र में उक्त शीर्षक के अन्तर्गत सुर सुन्दरी आदि योगिनियों की साधना यक्षिणियों के नाम से निर्दिष्ट हुई है।

(१) सुर–सुन्दरी यक्षिणी

मन्त्र - 'ॐ ह्रीं आगच्छ सुर-सुन्दरी स्वाहा'

विधानम् - इस मंत्र का जप प्रातः मध्याह्न एवं सायं तीनों सन्ध्याओं में हजार हजार बार एक मास तक करने से सुर-सुन्दरी प्रत्यक्ष आ जाती है। जप के पूर्व गुग्गुल की धूप देकर यक्षिणी का पूजन कर लें, अन्तिम दिन लाल चन्दन से अर्ध्य दें। माता, बहन या पत्नी रूप में यक्षिणी साधक का वरण करती है और उसी रूपानुसार साधक के प्रति व्यवहार करती है। माता रूप में सिद्ध द्रव्य और रसायन भगिनी रूप में अमूल्य वस्त्र और पत्नी रूप में एश्वर्य प्रदान करती है। यक्षिणी के साधक को अन्य किसी स्त्री के साथ सम्बन्ध रखना निषिद्ध है।

(२) मनोहारिणी यक्षिणी

मन्त्र - 'ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ मनोहारि स्वाहा'

विधानम् - नदियों के किसी सङ्गम पर लाल चन्दन से एक मण्डल बनाएँ। उसे अगरु का धूप दें। एक मास तक प्रतिदिन उक्त मंत्र का सहस्त्र जप करें। अन्तिम दिन चन्दन मिश्रित जल से अर्ध्य दें। प्रतिदिन एकाग्र चित्त से यक्षिणी की पूजा करें। प्रसन्न होने पर आधी रात के समय यक्षिणी दर्शन देंगी और माँगने पर स्वर्ण की सौ मुद्राएँ प्रदान करेंगी।

(३) कनकावती यक्षिणी

मन्त्र - 'ॐ ह्रीं कनकावति मैथुन प्रिये आगच्छ आगच्छ स्वाहा'-

विधानम् - किसी वट वृक्ष के समीप स्थित हों। मद्य मांसादि नैवेद्य को उक्त मंत्र द्वारा यक्षिणी को निवेदित कर स्वयं स्वीकर करें। तब मंत्र का एक सहस्त्र जप करें। इसी प्रकार एक सप्ताह तक साधना करें। प्रसन्न होने पर अर्ध रात्रि में यक्षिणी दर्शन देंगी और साधक की मनोकामना पूर्ण करेंगी।

(४) कामेश्वरी यक्षिणी

मन्त्र - 'ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ कामेश्वरी स्वाहा'।

विधानम् - गोरोचन से भोजपत्र पर यक्षिणी का चित्र बनाएँ। षोडशोपचारों या पञ्चोपचारों से पूजन करें। एकान्त में शय्या पर एकाकी होकर यक्षिणी का ध्यान कर मंत्र का सहस्त्र जप करें। मास के अन्त में यक्षिणी रूप मे अपनी पत्नी की पूजा करें। तदनन्तर प्रत्येक रात्रि को शहद मिश्रित घृत से दीप जलाकर मन ही मन उक्त मंत्र का सहस्त्र जप करें। अर्ध रात्रि कें समय यक्षिणी आएँगी और मनोकामना पूर्ण करेंगी ॥

(५) रतिप्रिया यक्षिणी

मन्त्र – 'ॐ आगच्छ आगच्छ रतिकरि स्वाहा'।

विधानम् – रेशमी वस्त्र पर यक्षिणी का चित्र बनाएँ। पट्ट्ट वस्त्र एवं स्वर्ण अलङ्करों से विभूषित पद्महस्ता कुमारी का चित्र बनायें। चमेली से पूजन करें। गुग्गुल की धूप दें। प्रतिदिन आठ सहस्त्र उक्त मंत्र का जप करें। मासान्त में धूप दीप सहित पूजन करें। अर्ध रात्रि के समय यक्षिणी देवी आएँगी और मनोकामना पूर्ण करेंगी ॥

(६) पद्मिनी यक्षिणी

मन्त्र – 'ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ पद्मिनी स्वाहा'।

विधानम् – कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को चन्दन से मण्डल बनाएँ। गुग्गुल की धूप दें। उसके समक्ष प्रतिदिन उक्त मंत्र का सहस्त्र जप करें। पूर्णिमा की रात्रि में पूजन कर मंत्र जप करें। अर्ध रात्रि में यक्षिणी देवी आएँगी और मनोकामना पूर्ण करेंगी।

(७) नटी यक्षिणी

मन्त्र – 'ॐ आगच्छ आगच्छ नटि स्वाहा'।

विधानम् – अशोक वृक्ष क नीचे आसन पर बैठकर पञ्चोपचार पूजा करें। मत्स्य मांस की बलि दें और प्रतिदिन उक्त मंत्र का सहस्त्र जप करें। मासान्त में यक्षिणी देवी आएंगी और मनोकामना पूर्ण करेंगी ॥

(८) अनुरागिणी यक्षिणी

मन्त्र – 'ॐ ह्रीं अनुरागिणि आगच्छ आगच्छ स्वाहा'।

विधानम् – कश्मीरी केशर से भोज पत्र यक्षिणी देवी का चित्र बनाएँ। आवाहन कर पञ्चोपचार पूजा कर ताम्बूल प्रदान करें। प्रतिदिन उक्त मंत्र का सहस्त्र जप करें। एक मास तक तीनों सन्ध्याओं में इसी प्रकार साधना करें। मास के अन्त में पूर्णिमा के दिन पूजा कर घृत दीप के समक्ष रात्रि भर जप करें। उषा काल में यक्षिणी देवी आएँगी और कामनाओं की पूर्ति करेंगी ॥

॥ छत्तीस यक्षिणियाँ ॥

१ विचित्रा, २ विभ्रमा, ३ हंसी, ४ भीषणी, ५ जन रञ्जिनी, ६ विशाला, ७ मदना, ८ घण्टा, ९ कालकर्णी, १० महाभया, ११ माहेन्द्री, १२ शङ्खिनी, १३ चान्दी, १४ श्मशाना, १५ वटयक्षिणी, १६ मेखला, १७ विकला, १८ लक्ष्मी, १९ मालिनी, २० शत पत्रिका, २१ सुलोचना, २२ सु शोभाढया, २३ कपालिनी, २४ विशालिनी, २५ नटी, २६ कामेश्वरी, २७ स्वणरेखा, २८ सुरसुन्दरी, २९ मनहोरा, ३० प्रमोदा, ३१ अनुरागिणी, ३२ नख कोशिका, ३३ भामिनी, ३४ पद्मिनी, ३५ स्वर्णावती, तथा ३६ रतिप्रिया ॥

ये सभी सिद्धि प्रदा है। करङ्किणी मत तंत्र में इनका विस्तृत वर्णन है। यहाँ संक्षेप में इनका विधान प्रस्तुत है–

(१) विचित्राः- **'ॐ विचित्रे, चित्ररूपिणि मे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा '।**

वट वृक्ष के नीचे दो लाख जप करे। मधु और घृत मिश्रित चम्पा पुष्पों द्वारा दशांश हवन करें।

(२) विभ्रमाः- **'ॐ ह्रीं विभ्रमे विभ्रमाङ्ग रूपे विभ्रमं कुरु रहिं रहिं भगवति स्वाहा '।**

रात्रि में श्मशान में बैठकर दो लाख जप करे। घृत गुग्गुल से दशांश हवन करे। प्रसन्न होकर विभ्रमा यक्षिणी नित्य पचास व्यक्तियों के पालन हेतु भोजन तथा द्रव्य प्रदान करती हैं।

(३) हंसीः- **(१) 'ॐ द्वी नमो हंसि हंस वाहिनि क्लीं क्लीं स्वाहा '।**

(२) हंसी हंसाहाने ह्रीं स्वाहा।

नगर या ग्राम के एकान्त स्थान में उक्त मंत्र का एक लाख जप करें। घृत मिश्रित कमल की पंखुड़ियों से दशांश हवन करें। प्रसन्न होकर हंसी यक्षिणी ऐसा अञ्जन प्रदान करेंगी, जिससे पृथ्वी में छिपे धन को देख सकेंगे। सभी विघ्न दूर होंगे।

(४) भीषणीः- (भिक्षिणी) **(१) 'ॐ ऐं द्रीं महामोदे भीषणि द्रां द्रां स्वाहा '।**

(२) 'ॐ ऐं महानादे भिक्षिणीं स्वाहा'।

जहाँ तीन मार्ग मिलते हों अर्थात् तिराहें पर आसन लगाकर उक्त मंत्र का एक लाख जप कर घृत युक्त गुग्गुल से दशांश हवन करें। भीषणी यक्षिणी प्रसन्न होकर सभी कामनाएँ पूर्ण करेंगी॥

(५) जनरञ्जिनीः- **(१) 'ॐ ह्रीं क्लीं जनरञ्जिनी स्वाहा '।**

(२) 'ॐ क्लें जनरञ्जिनी स्वाहा'।

कदम्ब वृक्ष के नीचे रात्रि में उक्त मंत्र का दो लाख जप करें। घृत युक्त गुग्गुल से दशांश हवन करें। यक्षिणी देवी सौभाग्य प्रदान करेंगी ॥

(६) विशालाः- **(१) 'ॐ ऐं ह्रीं विशाले स्त्रां स्त्रीं एह्येहि स्वाहा '।**

(२) 'ॐ ऐं विशाले ह्रां ह्रीं क्लीं स्वाहा'।

चिञ्चा वृक्ष के नीचे उक्त मंत्र का एक लाख जप करें। घृत युक्त कमल पुष्पों से दशांश हवन करें। आकाश गामिनी विशाला यक्षिणी प्रसन्न होकर दिव्य रसायन प्रदान करेंगी ॥

(७) मदनाः- **(१) 'ॐ ह्रीं मदने मदन विडम्बिनि आलये सङ्गमं देहि देहि श्रीं स्वाहा '।**

(२) 'ॐ मदने मदने देवि ममालिंगय सङ्गे देहि देहि श्रीः स्वाहा'।

राज द्वार पर बैठकर उक्त मंत्र का एक लाख जप करें। दुग्ध मिश्रित चमेली पुष्पों से दशांश हवन करें। मदना यक्षिणी प्रसन्न होकर गुटिका प्रदान करेंगी, जिसे मुख में रखकर अदृश्य हो सकेंगे।

(८) घण्टाकर्णीः- **(१) 'ॐ ऐं द्रीं पुरीं क्षोभय प्रजाः क्षोभय भगवति गम्भीर स्वने स्वप्ने स्वाहा'।**

(२) 'ॐ यक्षिणी आकर्षिणि घण्टार्णे घण्टाकर्णे विशाले मम स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा'।
(३) ॐ ऐं पुरं क्षोभय क्षोभय भगति गंभीर स्वरे क्लैं स्वाहा। (किंकिणी तंत्रे) घण्टे को बजाते हुए एकान्त में उक्त मंत्र का २० सहस्त्र जप करें। सारा संसार वशीभूत हो जायेगा।

(९) कालकर्णीः- **(१) 'ॐ हुं कालकर्णि ठः ठः स्वाहा'।**
(२) 'ॐ ल्वें कालकर्णिके टः टः स्वाहा'।
इस मंत्र का एक लाख जप कर पलाश की समिधा से मधु के द्वारा दशांश हवन करें। काल कर्णी यक्षिणी प्रसन्न होकर सुख देंगी और शत्रु का स्तम्भन करेंगी।

(१०) महाभयाः- **(१) 'ॐ द्रीं महाभये प्रें स्वाहा'।**
(२) 'ॐ ह्रीं महाभये हुं फट् स्वाहा'।
मानवास्थि की मुद्राएँ अगुलियों मे धारण कर श्मशान में उक्त मंत्र का एक लाख जप करें। महाभया यक्षिणी प्रसन्न होकर ऐसा रसायन प्रदान करेंगी, जिसे खाने से अपार बल मिलेगा। सदा युवावस्था ही रहेगी।

(११) माहेन्द्रीः- **(१) 'ॐ ह्रीं माहेन्द्रि मंत्र सिद्धि कुरु कुरु कुलु कुलु हंसः सोहं स्वाहा'।**
(२) 'ॐ माहेन्द्रि कुलु कुलु हंसः स्वाहा'।
इन्द्र धनुष के दिखाई देने पर निर्गुण्डी (सँभालू) या तुलसी वृक्ष के नीचे बैठकर उक्त मंत्र का एक लाख जप करें। माहेन्द्री यक्षिणी प्रसन्न होकर सिद्धि देगी।

(१२) शङ्खिनीः- **(१) 'ॐ ह्रीं शङ्खधारिणि शङ्खधारणे द्रां द्रीं क्लीं श्रीं स्वाहा'।**
(२) 'ॐ शङ्खधारिणि शङ्खाभरणे ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं श्रीः स्वाहा'।
सूर्योदय होने पर शङ्खमाला में उक्त मंत्र का दश सहस्त्र जप करें। घृत युक्त कनेर की समिधा से दशांश हवन कर। प्रसन्न होकर शांङ्खनी यक्षिणी मनोकामना पूर्ण करेंगी।

(१३) श्मशानाः- **(१) 'ॐ द्रां द्रीं श्मशान वासिनि स्वाहा'।**
(२) 'ॐ हूं ह्रीं स्फूं श्मशानवासिनि श्मशाने स्वाहा'।
श्मशान में नग्न होकर उक्त मंत्र का चार लाख जप करें। प्रसन्न होकर देवी अञ्जन प्रदान करेंगी। जिसे लगाने से अदृश्य हो सकेंगे और पृथ्वी में गडी निधि को देख सकेंगे। सभी विघ्न दूर होंगे।

(१४) वट यक्षिणीः- **'ॐ श्रीं द्रीं वटवासिनि यक्षकुल प्रसूते वटयक्षिणी एह्येहि स्वाहा'।**
तिराहे पर स्थित वट वृक्ष के नीचे रात्रि मे मोन होकर उक्त मंत्र का तीन लाख जप करें। प्रसन्न होने पर वट यक्षिणी देवी वस्त्रालङ्कार, दिव्य रसों की सिद्धि, रसायन एवं दिव्य अञ्जन प्रदान करेंगी।

(१५) मदन मेखला:- **(१) 'ॐ द्रीं हुं मदन मेखलायै, मदन विडम्बनायै नमः स्वाहा '।**

(२) 'ॐ क्रौं मदनमेखले नमः स्वाहा'।

चौदह दिन तक एक लाख जप करें। मदन मेखला प्रसन्न होकर सिद्ध अञ्जन प्रदान करेंगी।

(१६) चान्द्री **(१) 'ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः स्वाहा'।**

(२) 'ह्रीं चन्द्रिके हंसः क्लीं स्वाहा'।

कृष्ण प्रतिप्रदा से पूर्णिमा तक जप करें। देवि प्रसन्न होकर साधक को अभिष्ट प्रदान करती है।

(१७) विकला:- **(१) 'ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा '।**

(२) 'ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लैं स्वाहा'।

पर्वत की निम्न गुफा में बैठकर ३ मास तक उक्त मंत्र का तीन लाख जप करें। विकला यक्षिणी प्रसन्न होकर मनोकामना पूर्ण करेंगी।

(१८) लक्ष्मी:- **(१) 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लक्ष्मि कमलधारिणि हंसः सोहं स्वाहा '।**

(२) 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः '।

वटवृक्ष के पास या अपने घर में बैठकर उक्त मंत्र का एक लाख जप करें। घृत मिश्रित लाल कनेर एवं दूर्वा से दशांश हवन करें। लक्ष्मी यक्षिणी प्रसन्न होकर रस, रसायन एवं दिव्य भण्डार प्रदान करेंगी।

(१९) मालिनी:- **'ॐ द्रीं ॐ नमो मालिनि स्त्रि एह्येहि सुन्दरि हंस हंसि समीहं में सङ्गमय स्वाहा '।**

(मानिनि)

चौराहे पर बैठकर उक्त मंत्र का एक लाख जप करें। मालिनी यक्षिणी प्रसन्न होकर दिव्य खड्ग प्रदान करेंगी, जिसके प्रभाव से समस्त शत्रुओं का नाश होगा और निष्कण्टक वैभव मिलेगा।

(२०) शतपत्रिका:- **(१) 'ॐ द्रीं शतपत्रिके द्रीं द्रीं श्रीं स्वाहा '।**

(२) ॐ ह्रां शतपत्रिके ह्रां ह्रीं श्रीं स्वाहा।

कमल पुष्पों के समूह के मध्य बैठकर मौन होकर उक्त मंत्र का एक लाख जप करें। घृत युक्त दुग्ध से हवन करें। शत पत्रिका यक्षिणी प्रसन्न होकर पृथ्वी की निधि प्रदान करेंगी।

(२१) सुलोचना:- **'ॐ द्रीं क्लीं सुलोचने सिद्धि मे देहि देहि स्वाहा '।**

नदी तट पर बैठकर उक्त मंत्र का तीन लाख जप करें। घृत से दशांश हवन करें। देवी प्रसन्न होकर सिद्ध पादुका प्रदान करेंगी, जिससे इच्छानुसार आकाश में मन एवं पवन के वेग से गमनागमन कर सकेंगे।

(२२) शोभना:- **'ॐ द्रीं अशोक पल्लव कर तले शोभने श्रीं क्षः स्वाहा '। (अशोक पल्लवाकार)**

रक्त वस्त्र पहन कर चौदह दिनों तक उक्त मंत्र का जप करें। भोग दायिनी शोभना प्रसन्न

होकर सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करेंगी।

(२३) कपालिनी:- **(१) 'ॐ ऐं कपालिनि द्रां द्रीं क्लां क्लीं क्लूं क्लैं क्लौं क्लः हंसः सोहं सकलह्रीं फट् स्वाहा '।**

(२) 'ॐ ऐं कपालिनि ह्रां ह्रीं क्लीं क्लैं क्लौं हसकहल ह्रीं फट् स्वाहा'।

खीर का भोजन करें और मौन होकर उक्त मंत्र का दो लाख जप करें। प्रसन्न होकर देवी एक कपाल देंगी, जिससे आकाश गमन की शक्ति मिलेगी। कपालिनी देवी दूर से ही दर्शन देंगी।

(२४) विशालिनी:- **(१) 'ॐ वर यक्षिणी वर यक्ष विशालिनि आगच्छ आगच्छ प्रियं मे भवतु हैमे भव स्वाहा '।**

(२) 'ॐ विरूपाक्ष विलासिनी आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिया मे भव प्रिया मे भव क्लैं स्वाहा'।

(विलासिनी नाम भी है) नदी तट पर उक्त मंत्र का ५० हजार जप करें। घृत मिश्रित गुग्गुल से दशांश हवन करें। देवी प्रसन्न होकर सौभाग्य प्रदान करेंगी।

(२५) नटी:- **'ॐ द्रीं (ह्री) नटि, महानटि रूपवति द्रीं स्वाहा '।**

(ध्यान नटी योगिनी वत्)

अशोक वृक्ष के नीचे चन्दन से मण्डल बनाएँ। धूप देकर उसमें देवी की पूजा करें। एक महिने तक उक्त मंत्र का जप एकान्त में करें। केवल रात्रि में भोजन करें। नटी देवी प्रसन्न होकर रस, अञ्जन तथा निधि भण्डार प्रदान करेंगी।

(२६) कामेश्वरी:- **'ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ कामेश्वरी स्वाहा '।**

आसन पर बैठकर पवित्र स्थान में, तीनों सन्ध्याओं में उक्त मंत्र का तीन हजार जप एक मास तक करें। पुष्प, धूप, नैवेद्य और घृत दीपकों के द्वारा रात्रि में देवी की पूजा करें। मन्त्र का जप करें। अर्ध रात्ति में देवी आकर रस, रसायन, दिव्य वस्त्त एवं आभूषण प्रदान करेंगी।

(२७) स्वर्णरेखा **ॐ वर्कशाल्मले सुवर्णरेखे स्वाहा।**

कृष्णप्रतिप्रदा से एकलिंग की पूजा करें। मासान्त में रात्रि को विशेष नैवेद्य चढ़ायें। देवी साधक को धन, वस्त्रादि देती है।

(२८) सुरसुन्दरी **ॐ आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा।**

ध्यान व विधि सुरसुन्दरी योगिनी के समान है।

(२९) मनोहरा:- **'ॐ ह्रीं सर्वकामदे मनोहरे स्वाहा '।**

(ध्यान मनोहरा योगिनी वत्)

नदी तट पर रक्त चन्दन से मण्डल बनाएँ। देवी का पूजा कर मंत्र का १० सहस्र जप २१

दिनों तक करें। प्रसन्न होकर देवी आधी रात में सहस्त्र दीनार प्रदान करेंगी, जिन्हे प्रतिदिन व्यय कर देना चाहिए। व्यय न करने पर देवी दीनार पुनः नहीं देगी।

(३०) प्रमोदाः- (प्रमदा)

'ॐ ह्रीं प्रमादायै स्वाहा '।

अर्ध रात्रि में उक्त मंत्र का सहस्त्र जप एक मास तक नित्य करें। देवी प्रसन्न होकर निधि का दर्शन करा देगी।

(३१) अनुरागिणीः-

'ॐ ह्रीं अनुरागिणी मैथुन प्रिये यक्ष कुल प्रसूते स्वाहा '।

कुंकुम से भोजपत्र पर देवी का चित्र बनाकर धूप, दीप द्वारा प्रतिपदा तिथि से उसका पूजन आरम्भ करे। पूजा करके प्रतिदिन तीन सन्ध्याओं में उक्त मंत्र का सहस्त्रा जप एक मास तक करें। प्रसन्न होकर देवी अर्धरात्रि में आकर नित्य सहस्त्र दीनार प्रदान करेगी।

(३२) नखकोशिकाः

(१) 'ॐ ह्रीं नख केशिके स्वाहा '।

(२) 'ॐ नख केशिके कनकावति स्वाहा'।

पक्षि गृह (घोंसले) में देवी की पूजा नख और बालों से करे। २१ दिनों तक रात्रि में पूजा कर उक्त मंत्र का जप करें। देवी प्रसन्न होकर आधी रात में आकर मनोकामना पूर्ण करती है।

(३३) भामिनीः- **(नेमिनी)**

'ॐ ह्रीं यक्षिणी भामिनि रतिप्रिये स्वाहा '।

तीन दिन तक निराहार रहते हुए चन्द्र या सूर्य ग्रहण के समय स्पर्श से मोक्ष तक देवी का ध्यान करे, और उक्त मंत्र का जप करें। प्रसन्न होकर देवी सिद्ध अञ्जन प्रदान करेगी, जिससे अञ्जित नेत्रोंवाला अदृश्य हो सकेगा और वह पृथ्वी में छिपी निधि को देख सकेगा।

(३४) पद्मिनी

ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनी वल्लभे स्वाहा।

एकलिंग या गृह स्थान में मण्डप बनाकर, कृष्णपक्ष की प्रतिप्रदा से पूजन करें। मासान्त में रात्रि को विशेष भोग चढ़ावें। देवि साधक को धन, वस्त्र देती है।

(३५) स्वर्णावतीः-

(१) 'ॐ ह्रीं आगच्छ स्वर्णावति स्वाहा '।

(२) 'ॐ आगच्छ कनकावति स्वाहा'।

बिलल्व वृक्ष या वट वृक्ष के नीचे लाल चन्दन से मण्डल बनाए। यक्षिणी की पूजा कर शशक मांस, घृत और खीर कर नैवेद्य प्रदान करें। प्रतिदिन उक्त मंत्र का एक हजार जप सात दिनों तक करें। स्वर्णावती प्रसन्न होकर सिद्ध अञ्जन प्रदान करेंगी, जिससे सारी अदृश्य निधियाँ देख सकेंगे।

(३६) रतिप्रियाः- **(धनदा)**

'ॐ ह्रीं रतिप्रिया स्वाहा '।

शङ्ख चूर्ण से पुते हूए वस्त्र पर कमल धारिणी, गौर वर्ण और सर्वालङ्कार युक्ता दिव्य देवी का चित्र बनाए। चमेली के पुष्पों से पूजन करे और एक सप्ताह तक पूजा करते हुए नित्य उक्त मंत्र का सहस्त्र जप करे। देवी प्रसन्न होकर प्रतिदिन अर्धरात्रि में आकर २५ दीनार प्रदान करेंगी।

॥ अथ रतिप्रिया साधना ॥

भूत डामर तंत्रे – **ॐ ह्रीं आगच्छ रतिसुन्दरि स्वाहा**। इति द्वादशाक्षरो मंत्र।

मंत्र सिद्ध भाण्डागारोक्त मंत्रः– **ॐ आगच्छ रतिकरि स्वाहा**। इति दशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्– श्वेतपटे चित्ररूपिणीं लिखित्वा कनकवस्त्रसर्वालंकार भूषितामुत्पलहस्तां कुमारीं ध्यायेत्।

अथ ध्यानम्

ॐ सुवर्णवर्णां गौरांगी सर्वालंकार भूषिताम् ।
नूपुरांगदाराढ्या भजेऽहं पुष्करेक्षणाम् ॥

एवं ध्यात्वा गंधाक्षत तांबूल जातीफलैः सह कुमारीं (जायफल–सहदेवी) मूल मंत्रेण पूजयेत्।

तथा च– एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्र दद्यान्मूलेन साधकः । घृतदीपं तथा गंध पुष्पं तांबुलमेव च। मासान्ते दिवसं प्राप्य कुर्यात्पूजादिकं शुभम्। तावन्मंत्रं जपेद्विद्वान यावदायाति सुन्दरी । ज्ञात्वा दृढं साधकेन्द्रं निशीथे यामि निश्चितम्। साधकाज्ञानुरूपेण या प्रयाति दिने दिने। निर्जने प्रान्ते देशे सिद्ध स्यान्नात्र संशय। त्यक्त्वा भार्या भजेत्तां तु अन्यथा च विनश्यति। मंत्र सिद्धि भाण्डागारे विशेषः। यदि भगिनी तदा योजन मात्रात्स्त्रियमानीय समर्पयति वस्त्रालंकार भोजनानि च ददाति।

किंकिणी तंत्रोक्त मंत्रः– **ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा**। इत्यष्टाक्षरो मंत्रः॥

अस्य विधानम्– शंखलिप्ते पटे देवीं गौरवर्णां धृतत्पलाम्। सर्वालंकारिणीं दिव्यां समालिख्यार्चयत्पुनः। जातीपुष्पैः सोपचारैः सहस्रं तु ततो जपेत्। सप्ताहं मंत्रवाँस्तस्याः कुर्यादर्चां सुभाषिताम्। अर्द्धरात्र गते देवी सामगत्य प्रयच्छति। पंचविंशतिदीनारान् प्रत्यहं सा प्रयच्छति॥ इति षट्त्रिंशद्यक्षिणी साधनं समाप्तम्॥

॥ धनदा रतिप्रिया यक्षिणी प्रयोगः॥

रूद्रायामल तंत्रे

धनदा यक्षिणी की साधना से कुबेर महाधनी हुये। अतः इसकी कृपा सबको प्राप्त करनी चाहिये। विशेष अनुष्ठान में विनियोग, न्यास, ध्यान, मंत्र जप यंत्रार्चन, कवच, स्तोत्र का पाठ करे।

विधि– रक्त प्रवाल (मूंगा) या लाल चंदन की माला पर, रक्त वस्त्र पहन कर रक्त पुष्पों से अर्चन करें। चंदनादि का लेपन करें। देवी का स्थापन ताम्र कलश पर यंत्र रख कर ध्यान पूर्वक करे। रात्री में जप समापन करे क्षीर (खीर) का भोग लगावे। घृत, मधु, गन्ने के टुकड़ों से होम करे तो साधक को विपुल धन प्रदान करती है। **यह यक्षिणी रति प्रिया भी है।** सूर्य चन्द्र ग्रहण में जप करने से भी सिद्धि मिलती है, दरिद्रता दूर होती है।

पुरश्चरण प्रयोग से ३ दिन पहले क्षोर कराये, प्रायश्चित होम, विष्णु पूजा, विष्णु तर्पण, विष्णु श्राद्ध कर्म, चान्द्रयाणादि व्रत करे। देह शुद्धि हेतु गायत्री जप करे तर्पण करे। कार्यफल की सिद्धि व मार्ग प्रदर्शन हेतु शिव से आज्ञा प्राप्त करे कि मुझे स्वप्न में मार्ग प्रदर्शन करे।

मंत्र

ॐ भगवन् देवदेवेश शूलभृद् वृषवाहन । इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतः ॥१॥

ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने । वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥२॥

स्वप्ने कथय में तथ्यं सर्व कार्येष्वशेषतः । क्रिया सिद्धिं विद्यास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥३॥

स्वप्न में शुभाऽशुभ संकेत के अनुसार कार्य प्रारंभ करे। अशुभ स्वप्न होतो कार्य प्रारंभ नहीं करे।

प्रातः काल स्नान कर आसन शुद्धि, शरीर शुद्धि करे, भूतशुद्धि करे। अर्घ पात्र की स्थापना करे। गंगादि तीर्थों का जल में आवाहन करे। देवी यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा करे।

विनियोग- **अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग् यजुः सामानि छंदांसि, क्रियामयं वपुः। प्राणाख्यदेवता, आं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकम्। अस्मिन् नूतन यंत्रे प्राण प्रतिष्ठापने विनियोगः।**

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्री धनदेश्वरी यंत्रस्य प्राणाः इह प्राणाः। पुनः ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोहं श्री धनदेश्वरी यंत्रस्य वाङ् मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणि पाद पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

कलश में देवी का ध्यान आवाहन करे।

कुंकुमोदरगर्भाभां किंचिद् यौवन शालिनीम् । मृणाकोमलभुजां केयूरांगद भूषिताम् ॥१॥

नीलोत्पलदृशं किंचिद् उद्युत्कुच विराजिताम् । कराम्यां भ्राम्य कमलं वरामय समन्विताम् ॥२॥

रक्तवस्त्रपरीधानां तांबूलाधरपल्लवाम् । हेम प्राकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ॥३॥

ध्यायेत् कल्पतरोमूले देवीं तां धनदादिकाम् । रत्नपात्रद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम् ॥४॥

अन्नपूर्णा वराहाभ्यां श्री भूमि सहितां जपेत् । अन्यहस्तगतं छत्रं कुबेरश्चामरद्वयम् ॥५॥

श्री धनदेश्वरि इहागच्छेह इहतिष्ठः।

प्रार्थना

स्वागतं देवदेवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागता ।
प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत् परिपालय ॥

ॐ पद्माये नमः। देवी को पूजन करे नैवेद्य चढावे। मूल मंत्र का जप कर अर्पण करे। पश्चात् कुबेर मंत्र का जप करे।

मंत्र- **ॐ यक्षाय कुबेराय धनधान्याध्पितये धनधान्य समृद्धिं मे दापय स्वाहा।**

॥ अथ मंत्र प्रयोग ॥

रुद्रयामले-

प्रणम्य शिरसा गौरी प्रोवाच शशिशेखरम् । येन कल्पेन दारिद्र्यं विनश्येत च तद्वद ॥१॥
श्रुत्वा गौश्रीवचः शंभुः स्मितचारुशुभाननः । शृणु त्वं देवदेवेशि दारिद्र्य विनाशकम् ॥२॥
पुरा विश्वसृजा प्रोक्ता कुबेराय महात्मने । विद्या दारिद्र्य संहंत्री यक्षिणरी पापखण्डिनी ॥३॥
तेन सा तु समाख्याता यक्षिणी सुरसुन्दरी । ततो निधिवराणां तु नायको निश्चितं भवेत् ॥४॥
निर्धनो वा महीपो वा विद्यां तां ब्रह्मणो मुखात् । श्रुत्वा कुबेरवक्त्रेण स भवेत् परमो धनी ॥५॥
तच्छ्रुत्वा गिरिजा देवी पुनः प्राह शिवं प्रति । कृपा ते विद्यते कांत तदा त्वं मां प्रबोधय ॥६॥
श्रुत्वा पुनश्च पार्वत्वा वाक्यमेवं प्रहस्य च। शंभुः प्राह न जानासि पार्वत्या मूर्तिरेव सा ॥७॥
यां श्रुत्वा याति रंकोऽपि भूपालत्वं न संशयः । विद्याधरत्वमाप्नोति किं पुनर्बहुभाषितैः ॥८॥
याति लक्षेश्वरत्वं च त्वद्भक्तो देवि सर्वदा । वर्षेणापि स्मरन्मंत्रं भवेद्बहुधनोनरः ॥९॥

नो संस्पृशति दारिद्र्यं तार्क्ष्यं भोगिकुलं यथा ।
अस्य मंत्रस्य चोद्धारं प्रवक्ष्ये शृणु पार्वति ॥१०॥
नांगन्यासः करन्यासो न च्छन्दो ऋषिदैवतम् ।
कुबेरस्य मतो नास्याः पूजापि क्रियते तथा ।
विधिमस्याः प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं शैलसंभवै ॥११॥

मंत्रो यथा-ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदे रतिप्रिये स्वाहा॥ इति चतुर्दशाक्षरो मंत्रः॥

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीधनदेश्वरीमंत्रस्य कुबेर ऋषिः। पंक्तिश्छंदः। श्रीधनदेश्वरी देवता। धं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। श्रीं कीलकम्। श्रीधनदेश्वरी प्रसादसिद्धये समस्त दारिद्र्यनाशाय श्रीधनदेश्वरी मंत्रजपे विनियोगः॥

ऋष्यादिन्यासः- ॐ कुबेर ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिच्छंदसे नमो मुखे । धनदेश्वरीदेवतायै नमो हृदि । धं बीजाय नमो गुह्ये । स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। श्रीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे॥

करन्यासः- ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

हृदयादि न्यासः- ॐ श्रां हृदयाय नमः । ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ श्रूं शिखायै वषट् । ॐ श्रैं कवचाय हुं । ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ श्रः अस्त्राय फट् ।

ॐ ॐ नमः शिरसि। ॐ रं नमः मुखे। ॐ श्रीं नमः दक्षिण नेत्रे। ॐ ह्रीं नमः वाम नेत्रे। ॐ धं नमः दक्षिण कर्णे। ॐ धं नमः वाम कर्णे।

मंत्रवर्णन्यासः – **ॐ नं नमो दक्षनासा-पुटे । ॐ दें नमो वामनासापुटे । ॐ रं नमो हृदये । ॐ तिं नमो दक्षिणस्तने । ॐ प्रिं नमो वामस्तने । ॐ यें नमो नाभौ । ॐ स्वां नमो गुह्ये । ॐ हां नमः पादयोः ॥ इति मंत्रवर्णन्यासः ॥**

पदन्यासः– **ॐ ॐ नमो मस्तके । ॐ रं नमो मुखे । ॐ श्रीं नमो हृदये। ॐ ह्रीं नमः कट्याम् । ॐ धं नमो हस्तयोः। ॐ धनदे नमो गुदे । ॐ रतिप्रिये नमो लिंगे । ॐ स्वाहा नमः पादयोः ॥ इति पदन्यासः ॥**

कवचन्यासः– **ॐ धनदायै नमः शिरसि । ॐ मंगलायै नमो ललाटे । ॐ दुर्गायै नमो भ्रुवोर्मध्ये । ॐ त्रिनेत्रायै नमो दक्षिणनेत्रे । ॐ चंचलायै नमो वामनेत्रे । ॐ त्वरितायै नमो दक्षिणकर्णे । ॐ मंजुघोषायै नमो वामकर्णे । ॐ सुगंधायै नमो दक्षिणनासापुटे । ॐ पद्मायै नमो वामनासापुटे । ॐ वाराह्यै नम ऊर्ध्वोष्ठे । ॐ महामायायै नमः अधरोष्ठे । ॐ करालभैरव्यै नमो मुखे । ॐ सुंदर्य्यै नमो दंतजाले । ॐ सरस्वत्यै नमो जिह्वायाम् । ॐ रूद्राण्यै नमश्चिबुके । ॐ चामर्यै नमः कंठजाले। ॐ वज्रायै नमः कंठपृष्ठे। ॐ हरिप्रियायै नमो दक्षस्कन्धे । ॐ कमलायै नमो वामस्कंघे । ॐ वरदायै नमो दक्षिणहस्ते। ॐ अभयदायै नमो वामहस्ते । ॐ सुपट्टिकायै नमो दक्षांगुलीषु। ॐ उमायै नमो वामांगुलीषु। ॐ महालक्ष्म्यै नमो हृदये। ॐ कामदायै नमः स्तनयोः। ॐ क्षुधायै नमः उदरे। ॐ महाबलायै नमः कट्याम् । ॐ धनुर्धरायै नमः पृष्ठे। ॐ कामप्रियायै नमो लिंगे। ॐ गुह्येश्वर्यै नमो गुदे। ॐ चपलायै नम ऊर्वोः। ॐ लीलायै नमो जानुनोः। ॐ सर्वशक्त्यै नमो जंघयोः। भ्रामर्य्यै नमः पादयोः । ॐ सर्वेश्वर्य्यै नमः सर्वांगे।**

ॐ ब्राह्यै नमः पूर्वे। ॐ माहेश्वर्य्यै नमो दक्षिणे। ॐ कौमार्य्यै नमः पश्चिमे। ॐ वैष्णव्यै नम उत्तरे। ॐ वाराह्यै नम ईशान्यम्। ॐ चामुंडायै नम आग्नेय्याम्। ॐ कौबेर्य्यै नमः नैर्ऋत्याम्। ॐ वारूण्यै नमः वायव्याम्। ॐ ब्राह्मयै नम ऊर्ध्वम्। ॐ अनंतायै नमः अधः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्॥

अथ ध्यानम्

ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितटे रक्तपठिाधिरूढां
ध्यायेत्तां दक्षिणीं वै परिमलकुसुमोद्भासिधमिल्लभाराम् ॥
पीनोत्तुंगस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकांची कराभ्यां
भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषांगरागाम् ॥१॥

अथ यंत्रार्चनम्

ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले **ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः** इत्याधारशक्तिं संपूज्य अर्धस्थापनं कृत्वा स्वर्णादिपात्रे चंदनेन यत्रं विलिख्य **ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः** इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्य पाद्यादि पुष्पांतैरूपचारैः संपूज्य **देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्॥**

तथा च पुष्पांजलिमादाय–

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये॥ अनुज्ञां देहि धनदे॥

इति वदेत्॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजा मारभेत्।

प्रथमावरणम् – ततः षट्कोणकेसरेषु :- अग्नेयादि चतुर्दिक्षु मध्ये च- **ॐ श्रां हृदयाय नमः। हृदय ॐ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ इति सर्वत्र॥ ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ श्रूं शिखायै वषट्॥ शिखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ श्रैं कवचाय हुं। कवच श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ श्रः अस्त्राय फट्। अस्त्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥**

ततः पुष्पांजलिमादाय मूलच्चार्य-

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥१॥

इति पठित्वा पुष्पांजलि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत।

ततो दशदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं।
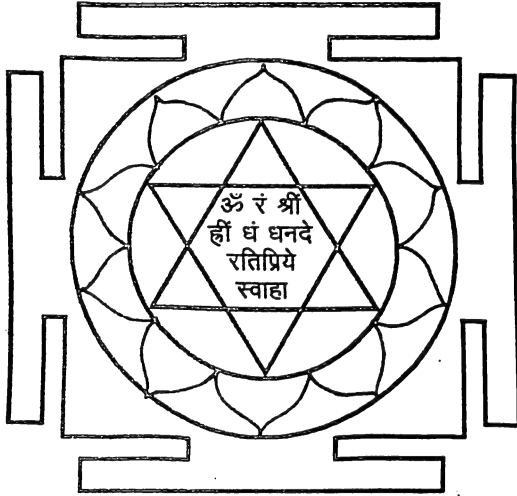
धनदा यक्षिणी साधना

द्वितीयावरणम् – तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीकमेण वामावर्तेन च- **ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मी श्री पा० पू० त०॥ ॐ पद्मायै नमः। पद्मा श्रीपा० पू० त०॥ ॐ श्रियै नमः। श्रियै श्रीपा० पू० त०॥ ॐ हरि प्रियायै। हरिप्रिया श्री पा० पू० त०॥ ॐ हरायै नमः। हरा श्रीपा० पू० त०॥ ॐ पद्मप्रियायै नमः। पद्मप्रिया श्रीपा० पू० त०॥ ॐ कमलायै नमः। कमला श्रीपा० पू० त०॥ ॐ अब्जायै नमः। अब्जा श्रीपा० पू० त०॥ ॐ चंचलायै नमः। चंचला श्रीपा० पू० त०। ॐ लोलायै। लोला श्रीपा० पू० त०॥** इति पूजयित्वा पुष्पांजलि दद्यात्॥ इति द्वितीयावरणम्॥

भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों व उनके आयुधों की पूजा करे।

यथा- **पूर्वे इन्द्राय नमः। आग्नेयां अग्ने नमः। दक्षिणे यमाय नमः। नैऋत्यां नैऋति नमः। पश्चिमे वरूणाय नमः। वायव्यां वायव्ये नमः। उत्तरे कुबेराय नमः। ईशाने ईशानाय नमः। ब्रह्मणे नमः। अनन्ताय नमः।**

॥ अथ श्रीधनदारतिप्रिया यक्षिणी कवचम्॥

रुद्रयामले

॥ देव्युवाच॥

कथयस्व महादेव धनदाकवचं शुभम् । यच्छ्रुत्वा कवचं दुर्गः कुबेर इव भैरव ॥१॥

॥ भैरव उवाच॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं धनदाप्रियम् । दारिद्र्यखण्डनं नाम सर्वसौभाग्यदायकम् ॥२॥

विनियोगः: – ॐ अस्य श्रीधनदायक्षिणी कवचमंत्रस्य कुबेर ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्रीधनदा देवता। रं बीजम्। श्रीं शक्तिः। ह्रीं कीलकम्। श्रीधनेश्वरी प्रसादसिद्ध्ये मे दारिद्र्यनाशाय कवच पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः– ॐ ह्रीं कुबेर ऋषये नमः शिरसि। ॐ ह्रीं पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे। ॐ ह्रूं धनदा देवतायै नमः हृदि। ह्रैं रं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रौं श्रीं शक्तये नमः पादयोः। ह्रः ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यासः– ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः– ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुं। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ कुंकुममोदरगर्भाभां किंचिद्यौवनशालिनीम्। मृणालकोमलभूजां केयूरांगद भूषिताम् ॥१॥

नीलोत्पलदृशं किञ्चिदुद्यत्कुचविराजिताम्। भजेऽहं भ्राम्यकमलवराभयसमन्विताम् ॥२॥

रक्तवस्त्रपरीधानां ताम्बूलाधरपल्लवाम्। हेमप्रकारमध्यस्थां रत्नसिंहासनोपरि ॥३॥

इति ध्यात्वा कवचं पठेत्॥

ॐ तत्तुर्यं रक्षयेत्सर्वशरीरं देवि सर्वतः। माया चक्षुर्भुजौ पातु पादौ रक्षेद्रतिप्रिया ॥१॥

वह्निजाया पातु लिंगं मंत्रः सर्वत्र रक्षतु। धनदा सर्वदा रक्षेत्पथि दुर्गे यमालये ॥२॥

मंजुघोषा सदा पातु पृष्ठजानुयुगे बलम्। सुन्दरी दंतजालं च कंठजालं च चामरी ॥३॥

भ्रामरी भ्रमणं रक्षेद्दशदिक्षु सुपाठिका। करालभैरवी पातु वदनं श्रुतिनेत्रयोः ॥४॥

त्रिनेत्रा त्वरिता पातु मदंगं सर्वसंकटे। ओष्ठाधरौ माहामाया रसनां चोरुदण्डयोः ॥५॥

अंगलीषु तथा शक्तिर्जघनं चैव चण्डिका। इन्द्राणी पातु मे पूर्वे माहेश्वरी तु दक्षिणे ॥६॥

कौमारी पश्चिमे पातु वैष्णवी चोत्तरेऽवतु। ऐशान्ये पातु वाराही चामुण्डा वह्निकोणके ॥७॥

कौबेरी नैर्ऋते पातु वायव्यां दुःखहारिणी। ऊर्ध्वं ब्राह्मी सदा पातु अधो दुर्गा सदाऽवतु ॥८॥

ज्ञात्वा तु कवचं दिव्यं सुखेन सर्वसिद्धिकृत। ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले देवि त्वां धनदायिकाम् ॥९॥

रत्नपात्रद्वयं चाग्रे दायिनीं निधिवर्षिणीम्। अन्नपूर्णावराहाभ्यां श्रीभूमिं सहितां जपेत् ॥१०॥

अन्यहस्तगतं छत्रं कुबेरश्चासमरद्वयम्। भविष्यति महादेव्या मंत्रैः सर्वैः समृद्धिमान् ॥११॥

कदाचिद्यः पठेद्धीमान्न वै रोगो भवेद् ध्रुवम्। अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वविद्यासुशोभनम् ॥१२॥

॥ इति श्रीरुद्रयामलोक्त धनदा यक्षिणी कवचं सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ धनदा यक्षिणी स्तोत्रम् ॥

देवी देवमुपागम्य नीलकण्ठं सदाशिवम् । कृपया पार्वती प्राह शंकरं करुणाकरम् ॥१॥

॥ देव्युवाच ॥

ब्रूहि वल्लभं साधूनां दारिद्राणां कुटुम्बिनाम् । दारिद्र्यदलनोपायमंजसैव धनप्रदम् ॥२॥

पूजयन् पार्वतीवाक्यमिदमाह महेश्वरः । उचितं जगदम्बासि तव प्रीत्याऽनुकम्पया ॥३॥

अत्यन्तं सानुजं रामं सांजनेयमथानुम् । प्रणम्य परमानन्दं वक्ष्यऽहं स्तोत्रमुत्तमम् ॥४॥

धनादाश्रद्दधानानां सद्यः सुलभसाधनम् । योगक्षेमकरं प्रोक्तं सत्य मे वचनं यथा ॥५॥

पठेत्तस्याग्रतो वापि ब्राह्मणो रसिकोत्तमः । धनलाभो भवेदाशु नाशयेत्तस्य निःस्वताम् ॥६॥

विनियोगः-ॐ अस्य श्रीधनदास्तोत्रमंत्रस्य कुबेर ऋषिः। पंक्तिश्छन्दः। श्रीधनेश्वरी देवता। धं बीजम्। स्वाहा शक्तिः। श्रीं कीलकम्। श्रीधनेश्वरी प्रसादसिद्ध्यै दारिद्र्यनाशाय स्तोत्रमंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः- ॐ कुबेर ऋषये नमः शिरसि। पंक्तिच्छन्दसे नमः मुखे। धनदा देवतायै नमः हृदि। धं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। श्रीं कीलकाय नमः कर सम्पुटे। दारिद्र्य नाशाय विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यासः- ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यासः- ॐ श्रां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रूं शिखायै वषट्। ॐ श्रैं कवचाय हुं। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ हेमप्राकारमध्ये सुरविटपितले रत्नपीठाधिरूढां
यक्षीं बालां स्मरामः परिमलकुसुमोद्भासिधम्मिल्लभाराम् ।
पीनोत्तुंगस्तनाढ्यां कुवलयनयनां रत्नकांचीकराभ्यां
भ्राम्यद्रेक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषांगरागाम् ॥

एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्यः स्तोत्रं पठेत्।

ॐ भूभवां संभवां भूत्यै पंक्तिकल्पलतां शुभाम् । प्रार्थयेत्तांस्तथा कामान कामधेनुस्वरूपिणीम् ॥१॥

धरामरप्रिये पुण्ये धन्ये धनदपूजिते। सुधनं धार्मिकं देहि यजनाय सुसत्वरम् ॥२॥

धर्मदे धनदे देवि दानदे तु दयाकरे। त्वं प्रसीइ महेशानि यदर्थं प्रार्थयाम्यहम् ॥३॥

रम्ये रुद्रप्रिये रूपे रमारूपे रविप्रिये । शशिप्रभमनोमूर्त्ते प्रसीद प्रणते मयि ॥४॥

आरक्तचरणांभोजे सिद्धसर्वांगभूषिते । दिव्याम्बरधरे दिव्ये दिव्यमाल्योपशोभिते ॥५॥
समस्तगुणसंपन्ने सर्वलक्षण लक्षिते । जातरूपमणीन्द्वादिभूषिते भूमिभूषिते ॥६॥
शरच्चन्द्रमुखे नीले नीरनीरजलोचने । चंचरीकं च भूवासं श्रीहारि कुटिलालके ॥७॥
मत्ते भगवति मातः कलकंठरवामृते । हासावलोकनैर्दिव्यैर्भक्त चिन्तापहारिके ॥८॥
रूपलावण्यतारुण्ये कारुण्यामृतभाजने । कणत्कंकणमंजीर लसल्लीसाकराम्बुजे ॥९॥
रुद्रप्रकाशिते सत्त्वे धर्माधारे दयालये । प्रयच्छ यजनायैव धनं धर्मैकशोधनम् ॥१०॥
मातरं वा विलम्बेन दिशस्व जगदम्बिके । कृपया करुणासारे प्रार्थितं पूरयाशु मे ॥११॥
वसुधे वसुधारूपे वासुवासवंदिते । धनदे यजनायैव वरदे वरदा भव ॥१२॥
ब्रह्मणे ब्राह्मणे पूज्ये पार्वती शिवशंकरे । श्रीकरे शंकरे श्रीदे प्रसीद मयि किंकरे ॥१३॥
स्तोत्रं दारिद्र्यदावार्तिशमनं च धनप्रदम् । पार्वतीशप्रसादेन सुरेश शंकरेरितम् ॥१४॥
श्रद्धया ये पठिष्यंति पाठयिष्यंति भक्तितः । सहस्त्रमयुतं लक्षं धनलाभो भवेद् ध्रुवम् ॥१५॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले धनदारतिप्रियाय यक्षिणी स्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ स्वर्णावती कनकावती मंत्र साधनम् ॥

मंत्रसिद्धि भाण्डागारे मंत्रो यथा- **ॐ कनकावति मैथुनेप्रिये स्वाहा।** इति त्रयोदशाक्षरो मंत्रः॥

अस्य विधानम्- वटवृक्षतलं गत्त्वा मद्यं मांसं च दत्त्वा सहस्त्रं जपेत् । एवं सप्तदिनं कुर्य्यात् अष्टरात्रौ सा सर्वालंकार संयुता आगच्छति साधकस्य भार्य्या भवति। द्वादशजनानां वस्त्रालंकार भोजनानि ददाति।

किंकिणी तंत्रोक्त मंत्रः- **ॐ ह्रीं आगच्छ कनकावति स्वाहा।** इति द्वादशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- विल्ववृक्ष तले कुर्य्याच्चन्दनेन यावत्सप्तादिनं सुमण्डलम् । यक्षिणीं पूजयेत्तत्र नैवेद्यमुपकल्पयेत् ॥ शशमांसं ततस्तस्मिन्मंत्रमार्चयेद बुधः। सहस्त्रं प्रजपेन्नित्यं यावत्सप्तदिनं भवेत्। अथागत्य ददात्यस्मै मंत्रं चांजनमुत्तमम् ॥ तत्प्रभावान्नरः पश्यन्निधानमविशंकितम्।

अन्यो भूत डामरतंत्रे- **ॐ ह्रीं रक्तवर्मिणी आगच्छ कनकावति स्वाहा।** इति सप्तदशाक्षरो मंत्रः॥

अस्य विधानम्- ततो वक्ष्ये महाविद्यां शृणुष्वैकमनाः प्रिये। गत्त्वा वटतटं देवीं पूजयेत्साधकोत्तमः प्राणायामं षडंगं च माययाथ समाचरेत्। ध्यानं तस्याः प्रवक्ष्यामि सावधानवधारय ।

अथ ध्यानम्

ॐ प्रचंडवदनां गौरीं पद्म बिम्बाधरां प्रियाम् ।
रक्ताम्बरधरां रामां सर्वकामफलप्रदाम् ॥

एवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रमयुतं साधकोत्तमः । सप्ताहं तु समभ्यर्च्य अष्टमे विधिमाचरेत् ॥ सद्यो मांस बलि दत्त्वा पूजयेत्तां समाहितः । अर्ध्यमुच्छिष्टरक्तेन दद्यातस्यै दिने दिने ॥

कायेन मनसा वाचा प्रजपेच्च दिने दिने । आनिशीथं जपेन्मंत्रं बलिं दत्त्वा मनोहरम् । साधकेन्द्रं दृढं ज्ञात्वा यामि सा साधकालये। साधकोऽपि च तां दृष्ट्वा दद्यादर्ध्यादिकं ततः। ततः सपरिवारेण भार्यां स्यात्कामभौजनैः । वस्त्रभूषादिकं त्यक्त्वा याति सा निजमंदिरम् । एवं भार्या भवेन्नित्यं साधकाज्ञानुरूपतः। आत्मभार्य्यां परित्यज्य स्वीकुर्यात्तां विचक्षणः।

मतांतरे- अन्यो मंत्रः- **ॐ कनकावति करवीरके स्वाहा**॥ इति द्वादशाक्षरो मंत्र॥

अस्य विधानम्- कृष्णपक्षाष्टमीमारभ्य अमावस्या पर्यन्तं प्रतिदिनं त्रिसहस्रं जपेत्। निम्ब समिदाज्यैर्दशांशतो होमः। एवं कृते मंत्र सिद्धो भवति। तदा होमभस्म नाभिमंत्रितेन तिलकं कुर्यात् अदृश्यो भवति।

॥ इति कनकावति साधनम्॥

॥ अथ वट् यक्षिणी साधनम्॥

इसकी साधना वटवृक्ष के नीचे बैठकर करनी होती है। यह साधक के सभी मनोरथ पूरे करती है। यह आकर्षण प्रधान है, धन देती है तथा वांछित प्रश्नोत्तर भी देती है।

(१) वट यक्षिणी दशाक्षर मंत्र प्रयोगः (मन्त्रमहोदधौ)

मन्त्र - **श्रीं श्रीं यक्षिणी हं हं हं स्वाहा।**

विनियोग - **ॐ अस्य श्री वट यक्षिणी मंत्रस्य विश्रवा ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, वट यक्षिणी देवता, ममात्मनोऽभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

ध्यानम्

सुवर्णप्रभां रत्नभूषाभिरामां
जपापुष्प सच्छायवासो युगाढ्याम् ।
चतुर्दिक्षु दासीगणैः सेविताघ्रिं
भजे सर्वसौख्यप्रदां यक्षिणी ताम् ॥
स्मेंच्चम्पक कान्तारे रत्नसिंहासन स्थिताम् ॥

षड्गन्यास - **श्रीं हृदयाय नमः। श्रीं शिरसे स्वाहा। यक्षिणी शिखायै वषट्। हं हं हं कवचाय हुं। स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्। श्रीं श्रीं यक्षिणी हं हं हं स्वाहा अस्त्राय फट्।**

(२) मंत्र प्रयोग

किंकिणी तन्त्रे मन्त्रो यथा – **ॐ वटवासिनि यक्षकुल प्रसूते वट यक्षिणि एह्येहि स्वाहा।**

(३) द्वात्रिंशदाक्षर मंत्र प्रयोग (मन्त्रमहोदधौ)

मंत्र – **एह्येहि यक्षि यक्षि महायक्षि वटवृक्ष निवासिनी शीघ्रं मे सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।**

विनियोग – **ॐ अस्य श्री वटयक्षिणी मंत्रस्य विश्रवा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, यक्षिणी देवता आत्मनोऽभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।**

षड्ङ्गन्यास – **एह्येहि हृदयाय नमः। यक्षि यक्षि शिरसे स्वाहा। महायक्षि शिखायै वषट्। वटवृक्षनिवासिनी कवचाय हुं। शीघ्रं मे सर्वसौख्यं नेत्रत्रयाय वौषट्। कुरु कुरु स्वाहा अस्त्राय फट्।**

सर्वाङ्गन्यास –**ॐ ऐं नमः मस्तके। ह्ये नमः दक्ष नेत्रे। हि नमः वाम नेत्रे। यं नमः मुखे। क्षिं नमः दक्षनासायाम्। यं नमः वामनासायाम्। क्षिं नमः दक्षकर्णे। मं नमः वामकर्णे। हां नमः दक्षांसे। यं नमः वामांसे। क्षिं नमः दक्षिण स्तने। वं नमः वामस्तने। टं नमः दक्षिणपार्श्वे। वृं नमः वामपार्श्वे। क्षं नमः हृदि। निं नमः नाभौ। वां नमः लिङ्गे। सिं नमः उदरे। निं नमः दक्षिण कट्याम्। शीं नमः वामकट्याम्। घ्रं नमः दक्षिण उरौ। में नमः वाम उरौ। सं नमः नाभौ। वं नमः दक्षिण जंघायां। सौं नमः वाम जंघायां। ख्यं नमः दक्षिण जानौ। कुं नमः वाम जानौ। रुं नमः दक्षिण मणिबंधे। कुं नमः वाममणिबंधे। रुं नमः दक्षिण हस्ते। स्वां नमः वामहस्ते। हां नमः शिरसि।**

ध्यानम्

अरुण चन्दन वस्त्रविभूषितां सजलतोय तुल्य तनूरुचम् ।
स्मरकुरङ्गदृशं वटयक्षिणीं क्रमुकनागलतादल युक्कराम् ।

लालचंदन व लाल वस्त्रों से विभूषित शरीर वाली विशाल जलधर बादल के समान कांतिवाली मदमत्त हरिणी के समान चंचल नेत्रों वाली अपने दोनों हाथों में पूगीफल एवं नागवल्ली दल लिये हुये वटयक्षिणी का मैं ध्यान करता हुं।

यंत्रार्चनम्

मध्य में एक वृत्त बनायें, उस पर दूसरा वृत्त बनायें। वृत्त पर अष्टदल कमल बनायें, पश्चात् भूपूर बनायें, पीठ पूजा कर यंत्र पूजा करें। मन्त्र महार्णव में यन्त्र षट्कोण, अष्टदल व भूपुर युक्त है।

अर्घपात्र व प्रोक्षणी पात्र से अपने शरीर व यंत्रादि व पूजन सामग्री को छींटें देकर शुद्ध करें। पश्चात् पीठ पूजा करें।

पीठ पूजनम्

यंत्र के पीठ देवताओं का आवाहन करें।

ॐ आधार शक्त्यै नमः। ॐ प्रकृत्यै नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ

क्षीरसागराय नमः। ॐ नवरत्नद्वीपाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। ॐ स्वर्ण सिंहासनाय नमः। ॐ आनंदकन्दाय नमः। ॐ संविन्नालाय नमः। ॐ सर्वतत्त्वात्मक पद्माय नमः। ॐ सं सत्त्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अं अंतरात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।
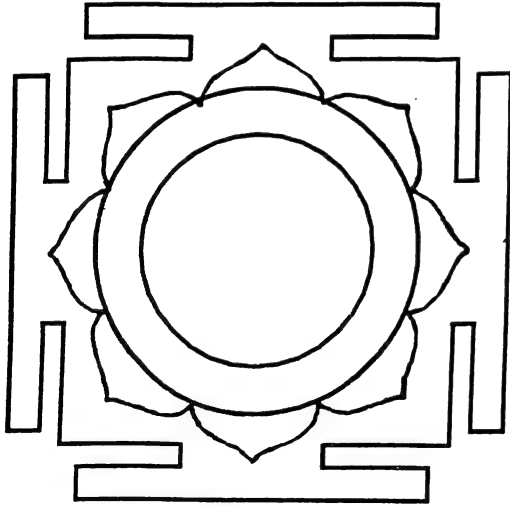
बट् यक्षिणी साधना

इसके पश्चात् पूर्वादि दिशाओं में **आठ व मध्य में** कुल नौ पीठ शक्तियों का पूजन करें -

ॐ कामदायै नमः। ॐ मानदायै नमः। ॐ नक्तायै नमः। ॐ मधुरायै नमः। ॐ मधुराननायै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ भोगदायै नमः। ॐ नन्दायै नमः। मध्ये - ॐ प्राणदायै नमः।

यंत्र मध्य में देवी का ध्यान पूर्वक आवाहन कर आवरण पूजा करें।

प्रथमावारणम् - **वृत्ताकार कर्णिका में** (दो वृत्तों के मध्य के पथ में) **अग्निकोणे - एह्येहि हृदयाय नमः। ईशानकोणे - यक्षि यक्षि शिरसे स्वाहा। नैऋत्य कोणे - महायक्षि शिखायै वषट्। वायव्य कोणे - वटवृक्षनिवासिनि कवचाय हुं। अग्रे - शीघ्रं मे सर्व सौख्यं नेत्रत्रयाय वौषट्। दिक्षु - कुरु कुरु स्वाहा अस्त्राय फट्।**

द्वितीयावरणम् - **(अष्टदले) ॐ सुनन्दायै नमः। ॐ चन्द्रिकायै नमः। ॐ हासायै नमः। ॐ सुलापायै नमः। ॐ मदविह्वलायै नमः। ॐ आमोदायै नमः। ॐ प्रमोदायै नमः। ॐ वसुदायै नमः।**

तृतीयावरणम् - **पूर्वे - ॐ इन्द्राय नमः। अग्नये - नमः अग्नेये। दक्षिणे - यमाय नमः। नैर्ऋत्ये - निर्ऋतये नमः। पश्चिमे - वरुणाय नमः। वायव्यां - वायवे नमः। उत्तरे - सोमाय नमः। ईशाने - ईशानाय नमः।**

चतुर्थावरणम् - इन्द्रादि के साथ उनके अस्त्रों का पूजन करें।

ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। पश्चात् सर्व विधि से देवी का पूजन करे-

विधि - इस देवी का पूजन, जप वटवृक्ष के नीचे रात्रि को जप करें। सातवें दिन चन्दन से मण्डल बनाकर उसमें घी का दीपक जलाकर मण्डल में यक्षिणी का आवाहन करें। देवी जब प्रसन्न होती हैं तो नूपुर की ध्वनि सुनाई देती है। जप करते रहे तो देवी आकर रति की इच्छा प्रकट करती है, व मनोवांछित कामना पूरी करती है।

॥ निधि दर्शने मेखला यक्षिणी ॥

मन्त्र – ॐ क्रौं मदनमेखले नमः स्वाहा॥

इनकी पूजन विधि पूर्ववत् है।

महुआ के वृक्ष के नीचे रात्रि में निरंतर १५ दिन तक १० हजार जप करें। महुये की काष्ठ से मधु मिश्रित महुये के फूलों की एक हजार आहुतियां देवें। सन्तुष्ट होने पर यक्षिणी साधक को अञ्जन प्रदान करती हैं। जिसके लगाने से जमीन में गड़े खजाने के दर्शन होते हैं।

॥ रोग नाशनी विशाला यक्षिणी ॥

मंत्र – ॐ ऐं विशाले ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा।

यन्त्रार्चन विधान वट् यक्षिणी की तरह।

षडङ्ग पूजा – **ऐं हृदयाय नमः। विशाले शिरसे स्वाहा। ह्रीं शिखायै वषट्। श्रीं कवचाय हुम्। क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

विधि – चिञ्चावृक्ष के नीचे बैठकर नियम पूर्वक एक लाख जप करें। पश्चात् १००० महुये के पुष्पों से हवन करें। प्रसन्न होकर देवी साधक को दिव्य रस प्रदान करती जिसके पीने से साधक निरोग व आयुष्मान होता है।

॥ प्रमदा (प्रमोदा) यक्षिणी साधना ॥

(मंत्र महौदधौ):-

(१)   ह्रीं प्रमदे स्वाहा।

(२)   ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा।

विनियोग:- **अस्य प्रमदा मंत्रस्य मनुर्ऋषिः, गायत्री छन्दः, प्रमदा देवता, ह्रीं शक्तिः, ममाऽभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ऋष्यादिन्यास:- **मनु ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। प्रमदा देवतायै नमः हृदि। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यास:- **ॐ ह्रां ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐह्रीं प्रं तर्जनीभ्यां नमः। । ॐ ह्रूं मं मध्यमाभ्यां नमः। ह्रैं दें अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं स्वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।**

अङ्गन्यास:- **ॐ ह्रां ह्रीं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं प्रं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं मं शिखायै वषट्। ॐ ह्रौं दें नमः कवचाय हुं। ॐ ह्रौं स्वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः हां अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्

केयूरमुख्याभरणाभिरामां वराभये संदधतीं कराभ्याम् ।
संक्रंदनाद्यामरसव्य पादां सत्कांचनाभां प्रमदां भजामि ॥

सर्वतोभद्रमण्ड़ल बनाकर आधार एवं पीठ शक्तियों का पूजन करे।

ॐ आधारशक्त्यादि परतत्त्वांत पीठ देवताभ्यो नमः।

पुनः पूर्वादिक्रमेणः- **ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ द्रौग्घ्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः।** मध्ये:- **ॐ मंगलायै नमः।**

तत्पश्चात् यंत्र को शुद्ध करके रखें, उस पर देवि का आवाह्न करे।

ॐ सर्वबुद्धिप्रदे वर्णनीये सर्वसिद्धिप्रदे डाकनीये प्रमदे एह्येहि नमः।

इस मंत्र से देवि का यंत्र पर आवाह्न करे। (देवि का यंत्र षट्कोण, अष्टदल, एवं भूपुर युक्त होता है।)
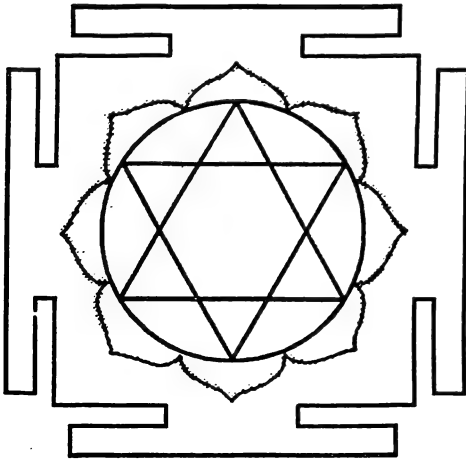
प्रथमावरण (षट्कोणे) पूजनम्- **ॐ ह्रां ह्रीं हृदयाय नमः। हृदय श्री पादूकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** (इति सर्वत्र)

ह्रीं प्रं शिरसे स्वाहा। शिर श्री पा० ॥ ॐ ह्रूं मं शिखायै वषट्। शिखा श्रीपा० ॥ ॐ ह्रैं दें कवचाय हुं। कवच श्रीपा० ॥ ॐ ह्रौं स्वां नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्र श्रीपा० ॥ ॐ ह्रः ह्रां अस्त्राय फट्। अस्त्र श्रीपा० ॥

द्वितीयावरणः- ॐ सुनंदायै नमः। ॐ चन्द्रिकायै नमः। ॐ हासायै नमः। ॐ सुलापायै नमः। ॐ मदविह्वलायै नमः। ॐ आमोदायै नमः। ॐ प्रमोदायै नमः। ॐ वसुदैन्यकायै नमः।

तृतीयावरणः- (भूपुरे)- पूर्वे- **इन्द्राय नमः।** आग्नेयां -**अग्निये नमः।** दक्षिणे- **यमाय नमः।** नैऋत्यां - **निऋत्यै नमः।** पश्चिमे - **वरुणाय नमः।** वायव्यां - **वायवे नमः।** उत्तरे - **कुबेराय नमः।** ईशान्यां - **ईशानाय नमः।** पूर्वे ईशान मध्ये - **ब्रह्मणे नमः।** नैऋति पश्चिम मध्ये - **अनन्ताय नमः।**

चतुर्थावरण- इन्द्रादि देवताओं की भूपुर में उनके वज्रादि आयुधों का पूजन करे-

वज्राय नमः। शक्तये नमः। दण्डाय नमः। खड्गाय नमः। पाशाय नमः। अंकुशाय नमः। गदाय नमः। त्रिशूलाय नमः। पद्माय नमः। चक्राय नमः।

प्रत्येक देवता के पूजन समय तर्पण भी करें।

यथा- अमुक देवतायै नमः पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

प्रत्येक आवरण पूजा के बाद पुष्पांजलि देवे।

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अमुक वरणार्चनम् ॥

धूप दीप पूजा नैवेद्य निवेदन कर जप करे। छः लक्ष जप कर दशांश होम करे। जप एकान्त व निर्जन स्थान पर करें। खीरान्न से नित्य होम करे।

१००० बार होम कर वहीं सो जाये। रात्रि को गुप्त वार्ता करे, सात दिन या मास पर्यन्त करने पर देवि प्रकट होकर अष्टविध धन धान्य से पूर्ण करती है।

॥ बिल्व यक्षिणी प्रयोग ॥

मंत्र - ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ओं श्रीं महायक्षिण्यै सर्वेश्वर्य प्रदात्र्यै नमः श्रीं क्लीं ऐं ओं स्वाहा।

विधि - आषाढ़ पूर्णिमा को व्रतकर, श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से १ मास करे।

बिल्ववृक्ष के नीचे बैठे। १६ रूद्राष्टाध्यायी का पाठ करे। कुबेर से पूजन कर आज्ञा मांगे।

यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरप्रिय बांधव । एकां मे वशगां नित्यं यक्षिणी कुरु ते नमः ॥

त्र्यम्बकं यजामहे - मृत्युंजय मंत्र के ५०००० जप करे।

कुबेर मंत्र का जप कर। यक्षिणी मंत्र का जप करे।

यक्षिणी को नैवेद्य एवं बलि प्रदान करे। दशांश होम, कन्या भोजन, ब्राह्मण भोजन कराये। तो यक्षिणी प्रसन्न होकर धन प्रदान करती है।

॥ चन्द्रद्रवा वट यक्षिणी ॥

(शिवार्चन चन्द्रिकायाम्)

(१) ॐ ह्रीं नमश्चन्द्रद्रवे कर्णा कर्ण कारणे स्वाहा।

विधि- वट वृक्ष के नीचे बैठ कर जप करे। यक्षिणी प्रसन्न होकर दिव्य रसायन प्रदान कर आयु पुष्टि वर्धन करती है। विशेष विधि-वट यक्षिणी वत्।

(२) ॐ नमो भगवते रूद्राय चन्द्रयोगिने स्वाहा।

॥ धनदा पिप्पल यक्षिणी ॥

(१) ॐ ऐं क्लीं धनं कुरु कुरु स्वाहा।

(२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि-पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर जप करे।

यक्षिणी धन प्रदान करती है। दही दूध नैवेद्य चढावे।

॥ पुत्रदा आम्रयक्षिणी ॥

(दत्तात्रेय तंत्रे) मंत्र - **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।**

आम्र पेड़ के नीचे जप करे। मेवा फल चढावे। शिव कृपा से यक्षिणी पुत्र प्रदान करती करती है।

।। अशुभ क्षयकारी धात्रि यक्षिणी ।।

मंत्र - ॐ ऐं क्ली नमः।

विधि-धत्तूरे के पेड़ के पास बैठकर जप करे। शिव के मृत्युंजय मन्त्र के जप करे अशुभ का नाश होवे।

।। विद्यादात्री उदुम्बर यक्षिणी ।।

(दत्तात्रेय तंत्रे) मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं शारदायै नमः।

विधि-उदुम्बर पेड़ के पास बैठकर जप करे।

।। विद्यादात्री निर्गुण्डी यक्षिणी ।।

(दत्तात्रेय तंत्रे) - ॐ सरस्वत्यै नमः।

विधि- निर्गुण्ड पेड़ पास जप करे।

।। जयाऽर्क यक्षिणी ।।

१ ॐ ऐं महायक्षिण्यै सर्वकार्य साधनं कुरु कुरु स्वाहा।

२ जयं दु. कुरु स्वाहा।

विधि-अर्क पेड़ के पा. जप करे तो जया नाम की यक्षिणी प्रसन्न होकर सब कार्य सिद्ध करती है।

।। संतोषाश्वेतगुंजा यक्षिणी ।।

मंत्र - ॐ जगन्मात्रे नमः।

विधि-श्वेतगुंजा के पास बैठकर जप करे। यक्षिणी सभी कार्य सिद्ध करती है।

।। राज्यदा तुलसी यक्षिणी ।।

(दत्तात्रेय तंत्रे) मंत्र - ॐ क्लीं क्ली नमः।

विधि-तुलसी वृक्ष के पास बैठ कर जप करे। राज्य में विजय प्रदान कर, सुख प्रदान करती है।

।। राज्यदा अंकोल यक्षिणी ।।

(दत्तात्रेय तंत्रे) मंत्र - ॐ ह्रौं नमः।

विधि-अंकोल वृक्ष के पास बैठ कर जप करे। राजकार्य में अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होवे।

।। कुश यक्षिणी ।।

(दत्तात्रेय तंत्रे) मंत्र - ॐ वाङ्मयायै नमः।

विधि-कुशा मूल वृक्ष के पास बैठकर जप करे। शिव कृपा से सभी कार्य सिद्ध होवे।

॥ अपामार्ग यक्षिणी ॥

(दत्तात्रेय तंत्रे) मंत्र - **ॐ ह्रीं भारत्यै नमः।**

विधि-अपमार्ग पौधे के पास बैठकर जप करे। सर्वसिद्धि प्राप्त होवे।

॥ उच्छिष्ट यक्षिणी ॥

(प्राकृत ग्रंथे) मंत्र - **ॐ जगत्त्रय मातृके पद्मनिभे स्वाहा।**

विधि-सभी अवस्था में अजपाजप करे तो यक्षिणी अन्न वस्त्रादि प्रदान करती है। उचिष्ट मुंह से भी जप करे।

॥ चन्द्रामृत यक्षिणी ॥

(प्राकृत ग्रंथे) मंत्र - **ॐ गुलु गुलु चन्द्रामृतमयि अवजालितं हुलु हुलु चन्द्रनीरे स्वाहा।**

विधि-घर या एकान्त में जप करे। पुष्प, धूपादि से अर्चन करे। पंचामृत से होम करे तो यक्षिणी स्वर्ण मुद्रा **प्रदान** करती है।

॥ स्वामीश्वरि यक्षिणी ॥

(प्राकृत ग्रंथे) मंत्र - **ॐ ह्रीं आगच्छ स्वामीश्वरि स्वाहा।**

विधि-दिन व रात्रि में जप करे तो देवि प्रसन्न होकर रसायन, द्रव्य, वस्त्र प्रदान करती है।

॥ महामायाभोग यक्षिणी ॥

(प्राकृत ग्रंथे) मंत्र - **ॐ नमो महामाया महाभोग दायिनी हुं स्वाहा।**

विधि-पांच हजार जप ११ दिन करे। मिष्ठान्न का भोग लगाकर होम करे। यक्षिणी सभी का वशीकरण कर, **पांच** स्वर्णमुद्रा नित्य दिलाती है।

॥ सर्वाङ्ग सुलोचना यक्षिणी ॥

(शिवार्चन चन्द्रिकायाम्) मंत्र - **ॐ कुवलये हिलि हिलि कुरू कुरू सिद्धिं सिद्धेश्वरि ह्रीं स्वाहा।**

विधि-लाक्ष, समिधा में गुगुल होम करे। तीन लाख जप करे। सुलोचना यक्षिणी सभी का आकर्षण करती है।

॥ विद्या यक्षिणी ॥

(प्राकृत ग्रंथे) मंत्र - **ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा।**

विधि-सवा लाख जप करे, दशांश करे।

॥ बंदी मुक्तिकारी हटेले देवी ॥

मंत्र - **ॐ नमो हटेले कुमारि स्वाहा।**

पंचामृत, घी, क्षीर, दुग्ध होम से सात दिन में बंदी मुक्त होवे।

अथ चेटक तंत्रम्

॥ अथ वटयक्षिणी चेटक ॥

(कामरत्नतंत्रे)- ॐ सुमुखं विद्युज्जिह्वे ॐ हूं चेटक जय जय स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः।

(शिवार्चन चन्द्रिकायाम्) -ॐ कारमुखे विद्युज्जिह्वे ॐ हुं चेटके जय जय स्वाहा। इति विंशत्यक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- अष्टोत्तरशतं जप्त्वा यत्किंचि आदु भोजनम्। स बलिर्दीयते तस्यै वटाधो मासमेकतः। ततो देवी समागत्य हसताद्गृह्णति भोजनम्। तदैव सा वरं दत्वा सान्निध्यं कुरुते सदा। अतीतानागतं कर्म स्वसथास्वस्थं ब्रवीति सा। पर्वत प्रतिमान्सर्वांश्चालयत्येव तत्क्षणात्॥ एक महिने तक जप करे मिष्ठान का भोग लगावे।

॥ अथ कर्णवर्त श्मशान यक्षिणीचेटकः ॥

(प्राकृत ग्रंथे) - ॐ क्लीं भगवतीभ्यो नमः। इति नवाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- श्मशाने नग्नो भूत्वा पंचाशत् सहस्त्रं जपेत् मद्यभांडे भोजनेन देवी प्रसन्ना भवति त्रैकालिकीं वार्ता सर्वा कर्णे कथयति पुष्पफलादिकं ददाति।

॥ अथ करलिनीचेटकः ॥

(प्राकृतग्रंथे) - ॐ हूं करिकरालिनी क्षं क्षां फट्। इति द्वादशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- एकपदेन अष्टोत्तरशतं जपेत् अजामांसबलि च दद्यात् रक्त पुष्पेण पूजयेत् एवं कृते षण्मासाभ्यंतरे वरं ददाति॥

॥अथ कालिका चेटकः ॥

(प्राकृतग्रंथे) - ॐ कालिकादेव्यै स्वाहा। इत्यष्टाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- गोशालायां द्विलक्षं जपेत् तदृशांशतो होमः। एवं कृते मध्यरात्रे वरं ददाति॥

॥ अथ भैरव चेटकः॥

(प्राकृत ग्रंथे) - ॐ नमो भैरवाय स्वाहा। इति नवाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- चत्वारिंशत्सहस्त्रं जपेत् गोधूमस्य दशांशतो होमः। एवं कृते प्रतिदिन मष्टादशधान्यानि प्रयच्छति॥ भैरव प्रसन्न होकर सभी धनधान्य से परिपूर्ण करता है।

॥ अथ लिंग चेटकः ॥

शिवार्चन चन्द्रिकायाम्- **ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि मे वाचां सिद्धिं वित्तातां पार्वतीपते ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रैं ह्रौं ह्रः।** इति त्रिंशदक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- लिंगमूर्ध्नि करं दत्वा वामं लक्षं जपेन्मनुम्। वाक्सिद्धिं मंत्रिणो लिंगी चेटकस्तु प्रयच्छति॥ शिवलिङ्ग पर दायां हाथ रखें, बायें हाथ से सवा लाख मन्त्र जपें।

॥ अथ विरूचेटकः ॥

प्राकृतग्रंथे मंत्रो यथा- **ॐ श्रीं काककमलवर्द्धने सर्व कार्य सर्वार्थान्देहि देहि सर्वकार्य कुरु कुरु परिचर्य्यसर्वसिद्धि पादुकायां हं क्षं श्रीं द्वादशान्नदायिने सर्वसिद्धि प्रदाय स्वाहा।** इत्येकक्षष्ठयक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- लक्षं जपेत् गोधूम (गेहूं) चणकस्य (चना) दशांशतो होमः। विरूचेटकः प्रसन्नो भवति सहस्त्रधेनुं ददाति स्वर्गवस्तु समानीय ददाति सप्तद्वीपांतरान्नं वस्त्रं च ददाति। चिंतितः शीघ्रमायाति वस्तु ददाति॥

॥ अथ नानासिद्धिचेटकः ॥

प्राकृतग्रंथे- **ॐ नमो भूतनाथाय नमः मम सर्वसिद्धिं देहि देहि श्रीं क्लीं स्वाहा।** इति चतुर्विशत्यक्षरो मंत्र।

अस्य विधानम्- अश्वत्थवृक्षस्याधः उपविश्य पंचलक्षं जपेत् तद्दशांशं पलाशसमिद्भिः शुद्धघृतं जुहुयात् दशकपालिभ्यस्तृप्ति पुर्वकमन्नं दयेम्। ततो विरूचेटकः प्रसन्नो भूत्वा प्रार्थितं ददाति खर्जूर चणक नारिकेल द्राक्षाफलान्यनेकानि ददाति ॥ पीपल के पेड़ के नीचे जपकर पलाश समिध से होम करें।

॥अथ नृसिंहचेटकः ॥

(प्राकृतग्रंथे)- **ॐ नमः श्रीनारसिंहाय मणिभद्राय शोषय वीर पहरे चीर क्षीर नाव पन वेग आव पाटवी पुजाय ठः ठः स्वाहा।** इति चतुश्चत्वारिंशदक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- कार्तिक कृष्णचतुर्दश्यां दीपमालिकायां वा अर्द्धरात्रे येन येन वस्तुना होमयेत् तत्तद्वस्तु समानीय ददाति। अथवा नवरात्रे कुर्य्यात्। द्वादशसहस्त्राहुर्ति तीर्थे दद्यात्। नारिकेलोत्थबर्लि दद्यात्। सिद्धो भवति ॥

॥ अथ सागरचेटकः ॥

(शिवार्चन चन्द्रिकायाम्) - **ॐ नमो भगवते समुद्राय देहि रत्नानि जलराशे त्रीणि नमोऽस्तु ते स्वाहा।** इत्यष्टाविंत्यक्षरो मंत्रः।

मतांतरे- ॐ नमो भगवन्समुद्र देहि रत्नानि जलराशे नमोऽस्तु ते स्वाहा। इति त्रयोविंशत्यक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- रात्रौ रात्रौ जपेन्मंत्रं सागरस्य तटे शुचिः। लक्षजापे कृते सिद्धे दत्ते सागरचेटकः रत्नत्रयं तदा मूल्यं तेन मंत्री सुखी भवेत् ॥

॥ अथ हंसबद्धचेटकः ॥

(प्राकृतग्रंथे) – **ॐ हंसः सर्वलोकलोचनानि बन्धय बन्धय देवी आज्ञापयति स्वाहा।**
इति षड्विंशत्यक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्– हृदि ध्यात्वा जपेद्रात्रौ हंसबद्धं स चेटकः योगं ददाति संतुष्टो जरामृत्युविनाशम् ॥ (हंस मुद्रा में जप करें)

॥ अथ मणिभद्रचेटकः ॥

(प्राकृतग्रंथे)– **ॐ नमो मणिभद्राय नमः पूर्णाय नमो महायक्ष सेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा।** इति चतुस्त्रिंशदक्षरो मंत्रः।

(शिवार्चन चन्द्रिकायाम्)– **ॐ मणिभद्राय नमो नमः पूर्णभद्राय नमो नमः महायक्ष सेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा।** इत्यष्टात्रिंशदक्षरो मंत्रः।

(मतांतरे)–**ॐ नमो मणिभद्राय नमः पूर्णभद्राय नमः पूर्णभद्राय नमो महायक्षाय सेनाधिपतये मोटमोटधराय स्वाहा।** इति चतुश्चत्वारिंशद क्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्– मंत्रोऽयमष्टसाहस्त्रं जप्यः सप्तदिनावधि। प्रत्यहं मणिभद्राख्यः प्रयच्छत्येकरूप्यकम्॥ आठ हजार जप करें, मन्त्र विधि अन्य प्रयोगवत्।

॥ अथ भूतेश्वरचेटको ॥

(भूतडामरतंत्रे) **ॐ हूयः आः भूतेश्वरः आगच्छागच्छ स्वाहा।** इति पंचदशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्– एकलिंग गत्वा रात्रौ एकाकी रक्त मत्स्यमांसवलिं दद्यात्। महामांस गुग्गुलुलवणेन सह धूपयेदष्टसहस्त्रं जपेत्। प्रथमे दिवसे स्वप्नं पश्यति द्वितीय दिवसे स्वयमेव पश्यति। तृतीये दिवसे शीघ्रमागच्छति पुरस्तिष्ठति स एवमाह किं मया कर्तव्यम्। साधकेन वक्तव्यं किंकरो भवेति। नित्यानुबद्धो भवति स्वर्गं गत्वा अक्षयनिधानानि आनीय ददाति अतीतानागतवर्तमानं कथयति वस्त्रालंकार कामिकभोजनं च ददाति द्विवर्षसहस्त्रं जीवति।

अस्य मुद्रा– अंगुलिं वेंष्टयित्या मध्यमांगुलिं प्रसार्य सूच्याकारेण धारयेद पराजित महाभूतराजस्य अंगुष्ठौ पार्श्वतो भूतेश्वरस्य मुद्रा। इति भूतेश्वरचेटकः ॥

॥ अथ किंकरयमस्य चेटको ॥

(भूतडामरतंत्रे) **ॐ अजः किंकरोत्तम आगच्छागच्छ स्वाहा।** इति पंचदशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्– वज्रधरस्य गृहं गत्वा कृष्णचतुर्दश्या मारभ्यायुतं जपेत् दिवसान्सप्त पूर्व सेवा भवति ततः साधनमारभेत। चंदनेन मंडलं कृत्वा गुग्गुलुधूपं दत्वा श्वेतभक्तघृतपायसपिंझकोपविष्टेन घृतप्रदीपं प्रज्वाल्य तावज्ज्पेद्यावदर्द्धरात्रे स्वयं किंकरोत्तमतां याति। आगताय चन्दनेनार्घ्यो देयः। भो साधक किं मया कर्तव्यमिति यदा पृच्छति तदा साधकेन वक्तव्यमस्माकं किंकरो भवेति। दिव्य कामिक भोजनं ददाति रसरसायनं निधानं च ददाति। पृष्ठमारोप्य स्वर्गमति नयति। पुनरपि राज्यं ददाति। पंचवर्ष सहस्त्राणि जीवति। तस्य मुद्राः संपुटं कृत्वा तर्जनीद्वयं कुंचयित्वा किंकरोत्तमस्य मुद्राः। इति किंकरयमस्य चेटकः॥

॥ अथ कालीचेटकः ॥

(वीरभद्रोड्डीशतंत्रे) **ॐ कंकाली महाकाली केलिकलाभ्यां स्वाहा।** इति पंचदशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- अनेन मंत्रेण सहस्त्रमत्स्याज्जुहुयात्। काली वरदा भवति स्वर्ण पलचतुष्कं प्रतिदिन ददाति। जप कर मछली के तेल से होम करे।

॥ अथ मंत्रवादे कालीचेटकः ॥

(अर्थातः संप्रवक्ष्यामि मंत्रवाद सुदुर्लभम्। येन विज्ञातमात्रेण सर्वसिद्धिः प्रजायते।)

ॐ काली कंकाली किलकिले स्वाहा। इति द्वादशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- अनेन मंत्रेण मल्लिकापुष्पसहस्त्रं जुहुयात् तदाकंकाली वरदा भवति। (इस मंत्र से एक हजार चमेली के फूलो का घृत मिलाकर एक हजार होम करे तो काली वर देनैं वाली होती है चार मासे सुवर्ण नित्य देती है।) सुवर्णमाषचतुष्टयं प्रतिदिनं दिदाति। इति मंत्रवादे कालीचेटकः ॥

॥ अथ रक्तकंबलाचेटकः ॥

ॐ ह्रीं रक्तकंबले महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान्कंपय नलिय विलस हुं हुं। इत्यष्टात्रिंशदक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- जप्यं मासत्रयं रक्तकंबला सा प्रसीदति। मृतकोत्थापनं कुर्यात्प्रतिमां चालयेत्तथा। इति रक्त कंबलाचेटकः।

॥ आकाशगामि चेटक ॥

ॐ ह्रीं ॐ हुँ हुँ हुँ ॐ । त्रिलक्षं जपेत्। तदा दूरदृष्टिर्भवति सर्वपापरहितो भूत्वा आकाशचारी भवंति।

अन्यत्-**ॐ नमः। इति त्र्यक्षरो मंत्रः।**

अस्य विधानम्-एतं मंत्रं वरारोहे जपेत्तु दशलक्षकम्। सर्वपापविनिमुक्तो जायते खेचरः पुमान ॥

॥ अथ देवांगनाप्राप्ति चेटकः ॥

ॐ ह्रीं नमः। इति चतुरक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- मंत्रेणानेन देवेशि सप्ताहं जपमाचरेत। रक्तांबरधरो नित्यं तथा कुंकुममालिकः। सप्ताहं जपमात्रेण ह्यानयेदमराङ्गनाम्। (एक सप्ताह जप कर लाल पुष्प और कुंकुम की रंगीन माला धारण करे तो सात दिनमे ही देवांगना प्राप्त हो)।

॥ अथ ज्वालामालिनी चेटकः ॥

ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि गृध्रगण परिवृते स्वाहा। इति द्वाविंशत्यक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ भगवति तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ज्वालामालिनि मध्यमाभ्यां नमः। ॐ

गृध्रगणपरिवृते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ स्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः। इति करन्यासः। एवमेव नेत्रहीनं पंचांगन्यासं कृत्वा जपं कुर्यात्। अभुक्तनियतश्चैव जपेन्मंत्रं जपाज्ज्यी। दीपतैलाक्तपादोऽथ वारे गुरुदिने ततः। जपेदष्ट सहस्त्रं तु त्रयोविंशतिवासरान्। प्रत्यहं सा सुवर्ण च ददातीति न संशयः। स्मृतिमात्रेण वै मंत्री रिपून्सर्वान्विनाशयेत् ॥ गुरुवार के दिन दीपक के तेल को पैरो पर लगावें।

॥ अथ फेत्कारिणीचेटकः ॥

ॐ नमो अश्मकर्णेश्वरि दुर्बले आर्द्रकेशीजटाकलापे ढक्कणफेत्कारिणी स्वाहा।

इति त्रिंशदक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- कृष्णपक्षचतुर्दशीकी रात्रि में कलहारी की जड़ लावे सफेद बकरी के दूध में पीसकर तिलक करे तो जो देखे सो ही वश हो। अथवा अजमोद की जड़ को घोडी के दूध में हरताल के साथ घिसे पीछे मुख में रख लेवे पीछे जिस किसी से जो वस्तु मांगे वही दे देगा ॥

॥ अथ मणिभद्र यक्षचेटकः ॥

ॐ नमो महायक्षसेनाधिपतये मणिभद्राय अप्रार्थितमन्नं देहि मे देहि स्वाहा।

अस्य विधानम्- बड़ के पेड़ पर इस मंत्र को सात बार पढ़के उसकी लकड़ी ले आवे उस लकड़ी पर इक्कीस मंत्र पढ़कर दाहिने कान पर लगा लेवे तो बिना मांगे अन्न प्राप्त हो ॥

॥ अथ उच्छिष्टचांडालिनी चेटकः ॥

ॐ नम उच्छिष्टचांडालिनि वाग्वादिनि राजमोहिनि प्रजामोहिनि स्त्रीमोहिनि आन आन येवे वायु वायु उच्छिष्टचाण्डालि सत्यवादिनी की शक्ति फुरे स्वाहा ।

अस्य विधानम्- भोजन करके जूठे मुख इस मंत्र को एक लाख जपे। तत्पश्चात् जहां कहीं एकांत में बैठकर इस मंत्र का स्मरण करे वहीं भोजन आकर अपने आप उपस्थित होगा ॥

॥ अथ रतिराजचेटकः ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं विटपाय स्वाहा। इति दशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- प्रथमं चेटकाय नाम गृहीत्वा ततो गृहमध्ये उपविश्य पंचशतसहस्त्रं पञ्चलक्षं जपेत्। ततः सिद्धिर्भवति। बालारमणसमये ह्यष्टाविंशतिवारं जपेत् कामोद्दपनं भवति स्त्री द्रवति वशीभवति॥

॥ अथ सूर्यदर्शक चेटको ॥

(दत्तात्रेयतंत्रे) – **मातुलुंगस्य बीजेन तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः। लेपयेत्ताम्रपात्रेण मध्याह्ने च विलोकयेत्। रथेन सह साकारो दृश्यते भास्करो ध्रुवम्। विना मंत्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धयोग उदाहृतः ॥**

॥ अथ ग्रहणदर्शक चेटकः ॥

कृकलासस्य रक्तेन दर्पणार्द्धं तु लेपयेत्। धारयेच्च शिरोमूर्ध्नि ग्रहणं दृश्यते जनैः ॥

॥ अथ दिने नक्षत्र दर्शक चेटकः॥

अगस्त फूलको तेल, जो कोइ आंजै नेत्र में। दिन में तारे देख होय अचंभो अतिघनो।

अन्यत्-सुरमा श्वेत जू लेयके, अगस्त पुष्प रस भेय। दिना सात लौं ताहि पुति छाया सूख करेह। घोट आंख में आंजिये ऊप देखे जाय। दिन में तारे दीख हीं ऐसो सहज उपाय।

अन्यत्- काठ धतूरा लेय मँगाई कोदो का भुय ताहि मिलाई। दुहुन मिलाय करै एक ढेरी भर कपडा बत्ती कर फेरी। ताको दीपक लेहु जलाय काजल आंखिन लेहु लगाय। दिन में तारे दीखे भाई सबही से यह सहज उपाई ॥

॥ अथ रात्रि समये दिनवदृश्य चेटकः ॥

उलूकव्याघ्रमहिषीधोषगृध्र विलोचनैः। स्त्रोतोंजनं युनं चांज्यं दिवावत्पश्यते निशि।

अन्यत- हृदयरुधिर नैन में जो कोई आंजै लाय। विना चिराग के रात्रि में पुस्तक सबहि पढाय।

अन्यत्- रविदिन मेंढक मेंढकी रति करता जो होय। अथवा मेंढक पीलिया मेंढक ही पर जोय। लावै मार सुखायकर जारे अग्नि माँहि। सुरमे कासा पीसके, आंजै नैनोंमाहि। रात अंधेरी होय जब करिये जो मनभाय। दीखे सगरी वस्तु यों ज्यों दिन में दृष्टि आय।

अन्यत्- घृतको दीमक बालिये उल्लूखोपडी मांहि तामें काजर पाडिये प्यालो खोपडी काहि। ताहि आंजिये नेत्र में रात्रि में दिन होय। जो चाहे सो बांचिये दृष्टि चौगुनी होय॥

॥ अथ शतयोजनदृष्टि चेटकः॥

कृष्णपक्ष चौदश दिना शीस गीधको लाय। भर मांटी गाडै कहीं लहसन बीज बुवाय। पुष्यनक्षत्र आवे जबही,फल अरु फूल लायके तबहीं। काजल संग ताहि पिसवावे घृत मिलाय आंखन में लावे। सौ योजन तक धरती चमके, पुनिः दिन में ताराहू दमके ॥

॥ अथ अनाहार चेटको ॥

(दत्तात्रेयतंत्रे)- अंत्राणि कृकलासस्य मज्जाकारंजबीजकम्। पिष्ट्वा तु वटिकां कृत्वा त्रिलोहेन तु वेष्टिताम्।(त्रिलोहो यथा-दश हेम द्विषट् ताम्रं षोडशं रौप्यभागकम्। एवं संख्या त्रिलोहस्य ज्ञातव्या सर्वकर्मणि) तां वक्त्रे धारयेद्यस्तं क्षुत्पिपासा न बाधते। यस्मै कस्मै न दातव्या नान्यथा शंकरोदितम्।

तत्र मंत्र- ॐ नमः सिद्धिरूपाय मम शरीरे अमृतं कुरु कुरु स्वाहा। अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः ॥

॥ अथ आहारकरण चेटको ॥

(दत्तात्रेयतंत्रे)- संध्यायां शुष्कवृक्षस्य कर्तव्यमभिमंत्रणम। प्रातः पुष्पाणि संग्राह्य मालां शिरसि धारयेत्। कौपीनं संपरित्यज्य भोजनं भीमसेनवत्। यस्मै कस्मै न दातव्यः सिद्धयोग उदाहृतः।

अन्यत्- गृहीत्वा मंत्रितान्मंत्री विभीततरुपल्लवान्। धारयेद्दक्षिणे हस्ते विंशत्याहारभुग्वेत्। अन्यत्- अधरं कृकलासस्य शिखास्थाने निबंधयेत्। वायुपुत्र इवाश्चर्यं स तु भुंक्तेऽन्नपर्वतम्।

तत्र मंत्रः- ॐ नमः सर्वभूताधिपतये ग्रस ग्रस शोषय शोषय भैरवी आज्ञापयति स्वाहा। इति सर्वयोगेष्वयमेव मंत्रः। अष्टोत्तरशतं जपेत्सिद्धिः।

अन्यत् प्राकृतग्रंथे- जो वरण के वृक्ष को संध्या न्यौते जाय। प्रातहि पत्र जु लायके पग के तले दबाय। भोजन करते ना थके बीस तीस को एक। साधक ही भोजन करे कसर नहीं लौलेस ॥

अथ हाजरात चेटको:

(१)

॥ ख्वाजा हाजरात चेटकः ॥

मंत्र प्रयोगः – ख्वाजा खिज्र जिन्द पीर मैदर मादर दस्तगीर मदत मेरा पीरान् पीर करो घोड़े पर भीड़ चढ़ो हजरत पीर हाजर सो हाजर। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- प्रतिदिन उल्टी माला से १०८ जप करें। लौंग, इलायची, और लोहबान की धूप देवे तो २१ दिन में सिद्ध होवे। पश्चात् जब चढाना हो तो प्रातः आठ बजे से पहिले लड़के को पवित्र करके बैठायें। लड़के के नख में स्याही या कज्लल लगा दें और आपका मुख देखने को कहें। आप उसके आगे बैठकर मंत्र पढ़ें और धूप देते रहें। पहले मैदान दिखाई देगा उस वक्त लड़का कहें कि "मुख दिखना बंद होकर चौगान हो जावे" तो चौगान हो जायेगा। फिर लड़का कहें कि "दो जने आओ" जब दो आ जावें तब कहें "दो और आवो" दो और भी आ जावें उस वक्त कहे कि "दो और भी आवो" इसी तरह ४ चार बार कहें। जब आठ आदमी आ जावें उस वक्त कहे कि "झाडूवाले को बुलाकर झाडू लगवावो" झाडू लग जाने के बाद कहे कि "भिश्ती को बुलाकर छिड़काव करावो" छिड़काव हो जाने के बाद कहें कि "फर्श बिछावो" फर्श बिछ जाने पर कहे कि "दो कुरसी और तख्त मंगावो" तख्त आने पर कहें कि "तख्त पर गद्दी बिछावो" गद्दी बिछ जाने पर कहें कि "पीरान् पीर साहब से जाकर हमारी अर्ज गुजरावो कि आपका अमुक भक्त आपको याद करता है सो मुन्शी साहब को संग लेकर कृपा कर पधारो" जब आदमी जावे और पीर साहब पधारें उस वक्त मुन्शी से कहे कि "भोग पीरान् पीर साहब की नजर करे" भोग, इलायची, इत्र सब देवें। फिरे मुन्शी से कहें कि "पीरान् पीर साहब से हमारी अर्ज करो कि अमुक भक्त आपका फलाना काम पूछता है" उत्तर मिलेगा यदि लड़का उत्तर को समझ जावे तो ठीक कहे, नहीं समझे तो मुन्शी से कहे कि "मै नहीं समझा अमुक भाषा में मुझको लिखकर दिखावो" तो मुन्शी लिखकर दिखायेगा इसी प्रकार जो कुछ पूछना हो पूछ लेवे।

(२)

॥ महंमदपीर मंत्रो ॥

बिस्मिल्ला हेर्रहेमानि रेहीम महम्मदा ताइयासिलारनवलखताजीका असवार यहां चलंता कौन कौन चल्या अजैगिर पर पर्वत चले हाजि चले गाजी चले ढोल बांजत भेरी बाजंत अहेमदा चलंत महेमदा चलंत राजा हठीली चलंत सत्तर सिला चलंत बहत्तर बल्लम चलंत एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर चलंत बावन वीर चलंत चौसठ जोगनी चलंत नौ नारसिंह चलंत बारह रावण चलंत चौसठ मसा चले सूलेमान पैगम्बरका तखत चलंत ईसा पैगंबर का तखत चलंत बहत्तर खान वज्राईल पैगंबर का तखत चलंत लाल परी चली सुपेद परी चली

जरद परी चली स्याम परी चली सबज परी चली हूर परी चली जर परी चली अलोल परी चली आसमान परी चली सुपेद परी चली अकाश से उतरी वराय खुदा मेरे कामकूं सिताबी उतार ल्यावणा एक चलंता एक सौ चल्या दोय चलंता दोय सौ चल्या तीन चलंता तीन सौ चल्या बडे वेगसूं चल्या उडा कुडा देव चल्या मंदाऊ कालेश्वरी चली लंका पै रावण चल्या हनुमंत चले घूमन गरसूं देवी घूमा चली नदी नाले सूं चली मंदोदरी रावन पुरी सुं चली उलटी पाखर सुलटी लागी जो कोई कहे हमारी बुरी उलटी सोमरली देखू ते तालमंत्र तेरी शक्ति बिस्मिल्ला हेर्रहंमानि र्रहीम उत्तरका बाजा बजा उत्तर का बादशाह आया पश्चिम का बाजा बजा पश्चिम का बादशाह आया पूरब का बाजा बजा पूरब का बादशाह आया काले काले के असवार अपनी अपनी जमात सिताबी लेकर आवणा जहां हकालूं जहां हाजिर रहेना देखुदा महम्मदा की सुखीर पीर नीर निर लीला घोडा नीलाजीन जिस पर चढिआया महम्मदा पीर रोजा करै निवाज गुजारै अन्न पानी के कने न आवै खाजखाय अखज पर हरै सो मुसलमान विहिस्त में जाय सवामव लोहे की जंजीर तोड़ तो जाई तोड़तो आव हाथ कुदाडी गले जंजीर ऐसी कही सुनो महम्मदापीर सुनो महम्मदापीर अपनी मुदारा पेशकरी पराई मुद्रा तोड डाल हमारी हकार तुम्हारी पुकार किले नारसिंह किले की असवारी ठः ठः स्वाहा। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- सफेद कपड़ा सवा हाथ, गूगल और नमक की धूप देवें। फिर सवासेर चावल की महेजित बनावें। थाली में पानी से भरकर रखें। महजित के ऊपर चौमुखा दीपक जलावें, कुवांरी कन्या को स्नान कराकर नवीन वस्त्र पहनाकर सम्मुख बैठावें। गुड़ की १४ गोली मंत्र से कन्या को खिलावें। कन्या दीपक पर निगाह रखें। पश्चात् प्रश्न पूछे तो सत्य कहेगी ॥

(३)

॥ अथ हनुमन्मंत्र प्रयोगः ॥

मंत्र - ॐ नमो भगवते रुद्रावताराय महाबलाय आंजनेयाय वायुपुत्राय कौशलेन्द्रानुचराय सांप्रतं स्वात्मानं दर्शय दर्शय सत्यं वद वद स्वाहा हां हां ॐ। इति षष्ठ्यक्षरो मंत्रः।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीविश्वलोचन चक्रराज हनुमन्मंत्रस्य अगस्त्य ऋषिः। अतिजगती छंदः। कौशलेन्द्रानुचरो महेश्वरो हनुमान् देवता। हां बीजम्। स्वाहा शक्तिः। नमः कीलकम्। कार्यदर्शने विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः - ॐ अगस्त्य ऋषये नमः शिरसि। अतिजगतीच्छंदसे नमः मुखे। कौशलेन्द्रानुचर महेश्वर हनुमद्देवतायै नमः हृदि। हां बीजाय नमो गुह्यो। स्वाहा शक्तये नमः पादयोः। नमः कीलकाय नमो

नाभौ। कार्यदर्शन विनियोगय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादि न्यासः।

हृदयादि षडंगन्यास – **ॐ नमो भगवते हां हनुमते हृदयाय नमः। ॐ रुद्रावताराय नमः। महाबलाय ह्रीं हनुमते शिरसे स्वाहा। ॐआञ्जनेयाय वायुपुत्राय हूं हनुमते शिखायै वषट्।ॐ कौशलेन्द्रानुचराय हैं हनुमते कवचाय हुं। ॐ सांप्रतं स्वात्मानं दर्शय दर्शय हौं हनुमते नेत्रत्रयाय वौषट्। सत्यं वद वद स्वाहा हां हां ॐ हः हनुमते अस्त्राय फट्।** इति हृदयादि षडंगन्यासः। एवमेव कराङ्गन्यासं कृत्वा धयायेत् ।

अथ ध्यानम्

ॐ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूजयेत्। ततः सर्वतोभद्रमण्डले लिंगतोभद्रमण्डले वा विष्णुपीठे **रुद्रपीठे वा** मंडूकादिपरतत्वांतपीठदेवताः संस्थाप्य ।

हनुमान यंत्र– मध्य में उर्ध्वमुखी त्रिकोण बनाये उस पर अष्टदल बनाये, उस पर सोलह दल बनावे। **फिर दो वृत्त** बनावें, दोनो वत्तों के बीच की गली में "**अं आं ....हं लं क्षं** " पूरी मातृका वर्ण लिखें, उसे मण्डल पर **स्थापित** कर अर्चन करें।

ॐ मं मंडूकादिपर तत्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति संपूज्य नवपीठशक्तिः पूजयेत्। तथा च **पूर्वादिक्रमेण– ॐ विमलायै नमः। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः। ॐ ज्ञानायै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ योगायै नमः। ॐ प्रह्वायै नमः। ॐ सत्यायै नमः। ॐ ईशानायै नमः। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः।** इति पूजयेत्।

ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्ति वा ताम्रपात्रे निधाय घृतंनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारा च दत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोध्य **ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्वभूतात्मने हनुमंताय सर्वात्मसंयोग पद्मपसीठात्मने नमः,** इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य मुलेन पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तथा च पुष्पांजलिमादाय

ॐ संविन्मयः परोदेव परामृतरसप्रिय ।
अनुज्ञां हनुमन्देहि परिवारार्चनाय मे ॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा आवरण पूजामारभेत्। **तथा च त्रिकोणमध्ये ॐ रां रामाय नमः। राम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।** इति सर्वत्र।

प्रथमावरणम् – **पूर्वे ॐ हां हनुमंताय नमः। हनुमंतश्रीपा। ऐशान्ये ॐ सं सुग्रीवाय८ नमः। सुग्रीवश्रीपा। अग्निकोणे ॐ लं लक्ष्मणाय नमः। लक्ष्मणश्रीपा.। इति पूजयेत्। ततः पुष्पांजलिमादाय**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

इति पठित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्। इति प्रथमावरणम्।

द्वितीयावरणम् – ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतराले प्राचीं। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण वामार्तेन च।
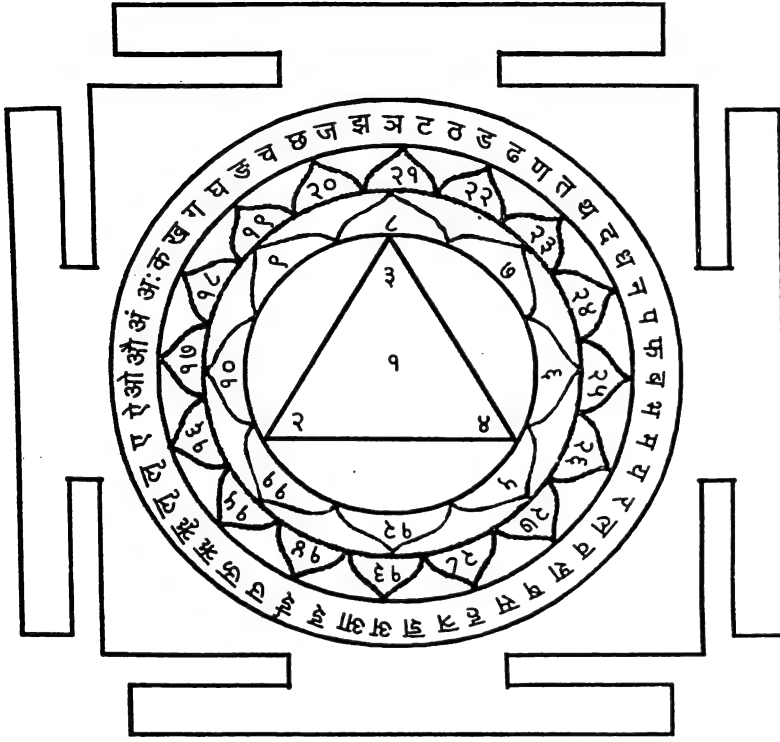
हनुमत्पूजन यन्त्र

ॐ अणिमायै नमः। ॐ अणिमा श्रीपा.॥ ॐ महिमायै नमः। महिमाश्रीपा.॥ ॐ गरिमायै नमः। गरिमाश्रीपा.॥ ॐ लघिमायै नमः। लघिमाश्रीपा.॥ ॐ प्राप्त्यै नमः। प्राप्तिश्रीपा.॥ ॐ प्रकाम्यायै नमः। प्रकाम्याश्रीपा.॥ ॐ ईशितायै नमः। ईशिताश्रीपा.॥ ॐ वशितायै नमः। वशिताश्रीपा.॥ इत्यष्टौ सिद्धीः संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।

तृतीययावरणम् – **ततः षोडशदले दक्षिणावर्तेन च। ॐ विजयध्वजाय नमः। ॐ सिंहध्वजाय नमः। ॐ हलध्वजाय नमः। ॐ सुषेणाय नमः। ॐ भद्रसेनाय नमः। ॐ जयसेनाय नमः। ॐ विजयसेनाय नमः। ॐ गोमुखाय नमः। ॐ दधिमुखाय नमः। ॐ जडलांगूलाय नमः। ॐ महीलांगूलाय नमः। ॐ कालाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ वज्रसाराय नमः। ॐ महासाराय नमः। ॐ मकरध्वजाय नमः।** इति षोडश पूजयित्वा पुष्पांजलिं दद्यात्। तृतीययावरणम्।

ततो मंडले अकारासदिक्षकारांतमातृका भूपूरे इंद्रादिदश दिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च संपूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्। इत्यावरण पूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य स्तोत्रदिकेन स्तुत्वा संस्कृतां मालामादाय हृदये धारयन् मौनी **एकचित्तो मूलमंत्रं** जपेत्।

अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। बदरघृतैः दशांशतो होमं तद्दशांशेन त्रिमधुभिस्तर्पणं तद्दशांशेन गंधवारिभिः मार्जनं तद्दशांशेन मोदकैः पायसेन वा ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात्। एवं कृते मत्रः सिद्धो भवति। मंत्रे सिद्धे मंत्री प्रयोगानसधयेत्। तद्यथा शुक्रशनिभौमवासरे घृतदीपं स्वार्णदिपात्रे सुगंधवर्त्या संयोज्य **ॐ हनुमद्दीपाय नमः** इति संपूज्य प्रज्वाल्य स्वर्णादिपात्रे कज्जलं पातयित्वा **ॐ सिद्धञ्जनाय नमः**, इति कज्जलं पातयित्त्वा **ॐ सिद्धाञ्जनाय नमः**, इति कज्जलं संपूज्य ततो शाले शोभने पात्रे द्वयंगुलं र्वतुलं तदुपरि चतुरंगुलं चक्रवालमलक्तकेन वा विधाय तत्राद्यमण्डले स्नेहन सुगंधेन कज्जलं संयोज्य तदुपरि मण्डलं कुंकुमेन संलिप्य भूर्जपत्रे मूलमंत्रं लिखित्वा मंत्रांतरे च पत्रांनरयोः स्वप्न निरूपक तगरादी नगर कुकुंम कर्पूरकल्केन निरूपयेत्। तदये यंत्रं लिखित्वा

ॐ जयत्यतिबलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलः। राजा जयति सुग्रीवो हनुमान्कार्यसाधकः। इति मंत्रेण मूलमंत्रेण वा षोडशोपचारैः संपूजयेत्।

ततः स्नातं शुद्धमखंडितब्रह्मचर्य मदूषितं बटुं संस्थापय मंत्रं श्रावयेत् पूजां च कुर्यात्। ततः गोघृतेन तैलेन वा दीपं प्रज्वाल्य शुचिर्मौनी अष्टोत्तरशतं मूलमंत्रं जपेत्। ततो बालः समुत्थाय दीपकं स्पृष्ट्वा मेचकमण्डले नेत्रं दत्वा दीपं पश्येत्। तत्र मंत्रत्रयं जपेत् हुं इति प्रजपन् बालं पृच्छेत् किं पश्यसि एवं पुनः पुनः कुर्यात् बालकः पूर्व तेजामण्डलं पश्यति तत उत्तरम् तत उपवेशनम् ततः प्रभाम् सभयदेवताः ततः सिंहासनम् ततो हनुंमतम् ततः सुग्रीवम् ततो लक्ष्मणम् ततः श्रीरामं पश्यन् वदति ततो यजमानः स्वचिंतितं कार्य बालाय श्रावयेत् बालः कृतांजलिर्वदेत् भगवन् हनुमन् मया निवेदितं कार्य कृपया वद इति। तद्भाषितं श्रुतवा गुरवे निवेदयेत्। तेन कार्यसिद्धियसिद्धि जानीयात् यदा तु किमपि नि पश्यति अन्यथा पश्यति गिरिसमुद्रनाग यक्षराक्षसनरनररी पशु पक्षिगणं पश्यति तदपि तदा शुभाशुभं तद्रूपेण जानीयात्। अनिष्टं पश्यति चेत् मंत्रयंत्रं वटुशिरसि निधाय मंत्रं जपित्वा पुनः पृच्छेत ततः इष्टं पश्यति तत्र प्रश्ने एकवारं द्विवारं त्रिवारं वा कार्य पृच्छेत्। चौरजारनारीद्यूतादीनां प्रश्नं न कुर्यात्-यदि कुर्यात् लक्षमंत्रं जपेत्। शांतौ श्वेतवस्त्र माल्यनैवेद्योपचारै स्तुष्टिं कुर्यात्। इतरे रक्तानि वस्त्राणि धारयेयुः। सिद्धं कार्यं भवति प्रश्नेवेलार्धरात्रिरेव।

गौ घृत या तेल का दीपक जलावे, उसकी पूजा करें। बालक दीपका का स्पर्श करें। दीपक की लौ की तरफ देखें। प्रकाश तेज दिखाई देवें तब सिंहासन लाने को कहे। फिर हनुमान, सुग्रीव, लक्ष्मण व राम का स्वरूप दीपक में देखें। तत्पश्चात् प्रश्न की आज्ञा कर प्रश्न करें। बालक को पशु, पक्षि, देव या अन्य दृश्य दिखाई देवें उसके अनुसार प्रश्न का फल जाने। हाजरात का काजल बनाकर भी प्रयोग कर सकते है।

॥ इत्यगस्त्य संहितायां सुतीक्ष्णागस्त्यसंवादे विश्वलोचन चक्र पूजाविधानं समाप्तम् ॥

(४)

॥ अथ कामाख्या मंत्र प्रयोगः॥

(शुभाऽशुभ ज्ञान)

मन्त्र -ॐ नमः कामाख्यायै सर्वसिद्धिदायै अमुककर्म कुरु कुरु स्वाहा।

विनियोगः - **अस्य मंत्रस्य वह्निक ऋषिः। जगती छंदः। कामाख्या देवता। प्रणवः शक्तिः अव्यक्तं कीलकम्। अमुककर्मणि सिद्ध्ये जपे विनियोगः।**

ऋष्यदिन्यासः - **ॐ वह्निकऋषिये नमः शिरसि। जगतीछंदसे नमः मुखे। कामाख्यादेवतायै नमः हृदि। प्रणवशक्तये नमः पादयोः। अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यासः - **ॐ नमो अंगुष्ठाभ्यां नमः। कामाख्यायै तर्जनीभ्यां नमः। सर्वसिद्धिदायै मध्यमाभ्यां नमः। अमुककर्म अनामिकाभ्यां नमः। कुरु कुरु कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।**

हृदयादिषडंगन्यासः - **ॐ नमो हृदयाय नमः। कामाख्यायै शिरसे स्वाहा। सर्वसिद्धिदायै शिखायै वषट्। अमुककर्म कवचाय हुम्। कुरु कुरु नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्।

अथ ध्यानम्

ॐ योनिमात्रशरीरा या कंगुवासिनि कामदा ।
रजस्वला महातेजा कामाक्षी ध्यायतां सदा ॥

इति ध्यात्वा मंत्रं जपेत्। अस्य पुरश्चरणमिहायुतजपः। गुडहलपुष्पेण दशांदतो होमं तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जन ब्राह्मण भोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति। सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान्साधयेत्।

तत्पश्चात् इस मंत्र को लिखकर इसमें मेढ़क की राख लपेट के रुई के साथ बत्ती बनावें। उसको तेल में जलावें। उस दीपक के सम्मुख आठ दस वर्ष की कन्या अथवा पुत्र उच्चवर्ण देवतागण हो नहवाकर बैठावें। उसके हाथों में मेंढ़क की राख तेल मे सानकर लगा देवें। आप मंत्र पढते रहें और बालक को दीपक की लौ पर दृष्टि बांधकर देखने को कहें। बालक को जैसा दिखाई देगा सत्य सत्य बतायेगा इसमे संदेह नहीं॥

(५)

॥ अथ तैलमातङ्गी मंत्र प्रयोगः॥

ॐ ऐं तैलमातङ्गी नृनखमध्ये आगच्छ ततः कर्म कुरु कुरु स्वाहा। इ

अस्य विधानम्- रविवार की रात्रि से काले कम्बल पर बैठकर नग्न हो प्रतिदिन १०८ बार मंत्र जपें। इक्कीस दिन में सिद्ध हो जायेगा। फिर प्रयोग इस प्रकार से करें - (हाजरात की तरह करें)

शनिवार की रात्रि को तिल का एक तोला तेल कांसी की कटोरी में ड़ालकर दूर्वा की प्रोक्षणी द्वारा एक सो आठ वार उस तेल को अभिमंत्रित करके रख छोडें। पुनः रविवार को प्रातः काल चौका लगा धूप दें, फूलमाला चढायें। एक ९-१० वर्ष के लड़के को स्नान कराके, सुगंध द्रव्य लगाकर, स्वच्छ वस्त्रादि पहनाकर बैठा देवें। फिर पिछले दिन का अभिमंत्रित किया हुआ तेल लडके के हाथवाले अंगूठे के नाखून में लगायें। लडके को एकटक देखने के लिये कहें और आप सामने बैठकर मंत्र पढ़ें। मन्त्र पढ़ते हुये लड़के के ऊपर फूंक मारते रहें। धूप भी देते रहें। थोड़ी देर बाद लड़के से पूछे "तुझको कुछ दिखाई दे रहा है" पहले मुख दिखेगा जब लड़के से कहलावे कि "हे मातेश्वरी तुम्हारा अमुक भक्त याद करता है सो जल्द आकर दर्शन दो" ऐसा कहने पर जब सिंह पर चढ़ी देवी या लटा बिखरे हुए भैरव दीखाई दे तब लड़के के हाथ में पेड़ा देकर लड़के से कहलावें कि "भोग लो" फिर इलायची दे पश्चात् सुगंधद्रव्य देवें। यदि लेती हुई दीखे जब ले चुके उस वक्त लड़का हाथ जोड़ कर पूछे "आपका अमुक भक्त अमुक कार्य पूछता है सो कृपा पूर्वक बताइये" इस प्रकार कहने पर उत्तर प्राप्त हो। जब तक प्रश्न करें धूप देते रहे। पश्चात् लड़का प्रश्न पूछे।

(६)

अन्यो मंत्रो यथा- **बिस्मिल्लहुर्रहेमानुर्रहीम खुदाई बड़ा तू बड़ा जैनुद्दीन पैगम्बर दुनी तेरा सादात फुरो वादना मरादी बेबुनियादि तुर्कमापरि तायियासिलार देखूं तेरी शक्ति बेगि बांधिल्याव नौ नारसिंह चौरासी कलवा वारा ब्रह्मा अठारहसो**

शाकिनी कामनदुरामन छल छिद्र भूत प्रेत चोर चाखर अगिया बैताल बेगि बांधिलाव जो न बांधि लावै तो दुहाई सूलेमान पैगम्बर की। इति मंत्र:।

अस्य विधानम्- प्रत्येक शुक्रवार को तेल, इत्र, लौंग, धूप, मिठाई से पूजन करके एक सौ आठ बार मंत्र पढ़ें तो चालीस दिन में सिद्ध हो जायेगा। फिर जब प्रश्नोत्तर करना होवे तब मिट्टी से चौका लगाकर उस पर चावलों की मसजिद बनायें। फिर पट्टे पर त्रिशूल बनायें। फिर कन्या को नहलाकर, स्वच्छ वस्त्र पहनावें और उस पट्टे पर बैठा देवें। उसके सम्मुख दीपक जलावें। आप मंत्र पढ़ पढ़ कर कन्या के मस्तक पर चावलों को मारें, तो वह कन्या को जो प्रश्न पूछोगे उनके उत्तर दीपक में देखकर बतायेगी। सत्यमेव न संदेह:।

अन्यत्- पुष्यनक्षत्र में सूर्योदय के पहले नग्न हो कर लाल ओंगा की जड साबित खोदकर निकाल लावे उसके तांतू

(७)

हाजरात सिद्धि मन्त्र

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम खुदाई बड़ा तू बड़ा जैनुद्दीन पैगम्बर दूनी तेरी सादात फुरो वादा नामुरादी वेवुन यादी तुर्क मा पीर ताइया सिलार देखूं तेरी शक्ति वेग बांधि ल्याव नौर नारसिंह चौरासी कलुवा ब्रह्मा अठोत्तर सो शाकिनी कामण दुशमन छलछिद्र प्रेत चोर चाबर आगिया वेताल बेगी बांधी ल्याव जो न बांधि ल्यावे तो दुहाई सुलेमान पैगम्बर की।

अस्य विधानम्- शुक्रवार से २१ बार रोज ४० दिन तक जपे। तेल, इत्र, लौंग, धूप, दीप, मिठाई से पूजन करें।

जब हाजरात करनी हो तो साफ जगह मिट्टी से लेप कर चावल की मस्जिद बनावें। दीपक जलावें, पट्टे पर त्रिशूल बनायें, कुंवारो कन्या को स्नान कराकर साफ कपड़े पहनाकर उसके सामने बैठायें। उसके मस्तक पर दीपक रखें पश्चात् चावल अभिमन्त्रित करके कन्या पर मारे तो पूछे गये प्रश्न का सही उत्तर मिले।

परन्तु जहां निधि दर्शन देखना हो या किसी प्रेत उपद्रव का पता करना हो तो वह शक्ति कन्या पर दबाव दे सकती है अत: स्थान की रक्षा व कन्या की रक्षा करना जरुरी है।में रुई लपेट दीपक बालकर दिखानेसे सत्य सत्य विना मंत्र के ही दीखने लगेगा। सत्यमेव न संदेह:॥

स्वप्न में प्रश्नोत्तर प्राप्त करना

॥ अष्टसरस्वती प्रयोगः॥

१. वागीश्वरी मंत्र- **ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं ह्रीं क्लीं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा।** मंत्र सिद्ध करने पर देवी स्वप्न में वार्ता फल कहती है तथा विद्यादान भी देती है।

२. चित्रेश्वरी मंत्र - **क्लीं वद वद चित्रेश्वरि स्वाहा।**

३. कुलजा मन्त्र - **सें कुलजे ऐं सरस्वति स्वाहा।**

यह सरस्वति कुलजा भवानी का रुप ही है साधक के मनोरथ पूर्ण करती है।

४. कीर्तीश्वरी मन्त्र - **ऐं ह्रीं श्रीं वद वद कीर्तीश्वरी स्वाहा।**

५. अंतरिक्ष सरस्वति मन्त्र - **ऐं ह्रीं अंतरिक्ष सरस्वति स्वाहा।**

६. नील सरस्वति मन्त्र - **ब्लूं वें वद वद त्रीं हुं फट्।**

७. किणि सरस्वती मंत्र - **ऐं हैं हीं किणि किणि विच्चे।**

८. घट सरस्वती मंत्र- **ह, स, फ्रे ह्सौ, ष्फ्रीं ऐं ह्रीं श्रीं द्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः घटसरस्वति घटे वद वद तर तर रुद्राज्ञया ममाभिलाष कुरु कुरु स्वाहा।**

इस विद्या के बल पर श्री मंडन मिश्र ने ७ दिन तक शंकराचार्य से शास्त्रार्थ किया था लेकिन जब श्रीशंकराचार्य ने उसे योनि मुद्रा दिखा दी तो वह विसर्जित हो गई।

विधि-घट में सरस्वती का आवाहन कर सर्वविधि से पूजन कर १लाख जप कर दशांश होम करे।

॥ त्रिदेव स्वप्न सिद्ध मन्त्र॥

स्वप्न में सिद्धि फल जानने हेतु ब्रह्मा, विष्णु, शिव के मन्त्रों की आराधना करें।

॥ विष्णु स्वप्न सिद्ध मन्त्र॥

ॐ नमः सकललोकाय विष्णवे प्रभविष्णवे ।
विश्वाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपते नमः ॥

॥ ब्रह्मास्वप्न सिद्ध मन्त्र॥

ॐ परब्रह्म स्वरूपं त्वमन्तश्चरसि विश्वधृक् ।
शुभाशुभगतिं देव स्वप्ने मे विनिवेदय ॥

॥ शिव स्वप्न सिद्ध मन्त्र ॥

ॐ हिलि हिलि शूलपाणये स्वाहा। नमो जय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने । वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः।स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः। क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वरः।

॥ दु:स्वप्न शांति मंत्र ॥

सिंह मन्त्र व अन्य मन्त्र से खीर व पलाश समिध से होम करें।

(१) **फट् दुःस्वप्नदोषान् जहि जहि फट् स्वाहा।**

(२) **ॐ वज्रनख दंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् नमः स्वाहा।**

(३) **जागता जगन्नाथ पोढता पदमनाथ तांबा का कोट सीसा की खाई आळजंजाळ आव तो राजाराम चन्द्र तैंतीस करोड़ देवी देवता की दुहाई। थांक सरण सोवां महाराज चार पहर दिन कि खैर करी चार पहर रात की खैर करज्यो।**

॥ अथ चंद्रयोगिनीमत्रंप्रयोगः ॥

शिवार्चनचन्द्रिकायाम् **ॐ ह्रीं श्रीं सः नमः श्मशानवासिनि चंडयोगिनि स्वाहा।** इत्यष्टा दशाक्षरो मंत्र॥

अस्य विधानम्-पूर्वमेवायुतं जप्तवा कृत्वा होमं दशांशतः। घृताक्तै रक्तपुष्पैश्च पूर्णांते च पुनर्जपेत्। आपादांतं लिपेद्गात्रं रात्रौ मंत्रं समुच्चरेत्। यावन्निद्रावशं याति स्वप्नं दत्ते च सागता। वांछितं यच्छुभं किंचित्स्यात्सिद्धं वा न सिद्धयति।

॥ अथ मणिभद्र मंत्र प्रयोगः ॥

मंत्रो यथा- **ॐ नमो मणिभद्राय चेटकाय सर्वकार्यसिद्धये मम स्वप्नदर्शनानि कुरु कुरु स्वाहा।** इति त्रयस्त्रिंशद्क्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- रात्रि के समय तेल का दीपक जलायें। उस दीपक में फूटी कौडी ड़ालें। उसके स्म्मुख ग्यारह सौ बार मंत्र जपें। जप करने के पश्चात् लाल कनेर के फूलों को १०८ बार मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके उन पुष्पों को ताम्र की डब्बी में बंद कर देवे फिर शिर के नीचे रख कर सो जावे। एक समय भोजन करे। ऐसा करने से ग्यारह दिन के भीतर शुभाशुभ या जैसा होने वाला हो स्वप्न द्वारा अवश्य कहता है, इसमें संदेह नहीं।

॥ अथ स्वप्नमातङ्गी मंत्रप्रयोगः ॥

मंत्रो यथा- **ॐ नमः स्वप्नमातंगिनि सत्यभाषिणि स्वप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा।** इति चतुर्विंशत्यक्षरो मंत्र।

अस्य विधानम्- दिन में निर्जल व्रत करके रात्रि के समय १०८ बार मंत्र को जपकर भूखा ही सो जावें। तो पहली ही रात्रि में स्वप्न हो जाता है। कई दिनों तक करने की आवश्यकता नहीं पडती।

॥ अथ यक्षिणी मंत्र प्रयोग:॥

मंत्रो यथा- **ॐ ह्रीं श्रीं वालीलंबाहुली क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षः स्वाहा।** षोडशाक्षरो मंत्र

अस्य विधानम्- पूर्वमुखोऽयुतं जपेत्। एकभुक्तव्रतं कुर्यात्। जपांते कुशशय्यायां सुप्तः तदा शुभाशुभं स्वप्ने पश्येत्।

॥ अथ घंटाकर्णी यक्षिणी मंत्र प्रयोग:॥

मंत्रो यथा-**ॐ यक्षिणी आकर्षिणि घंटाकर्णे घंटाकणें विशाले मम स्वप्न दर्शय दर्शय स्वाहा।**

अस्य विधानम्- रात्रौ सहस्त्रं जपेत्। एकादशदिनांतरे स्वप्ने वदति न संदेह। कर्णपिशाचि की तरह वार्ता भी कहती है।

॥ अथ चिंचिनी पिशाचिनीमंत्र प्रयोग:॥

मंत्रो यथा- **ॐ ह्रीं चीं चिंचिनि पिशाचिनि स्वाहा।** इति द्वाद्वशाक्षरो मंत्र:।

अस्य विधानम्- पूर्वसेवायुतं जुत्वा होमं कुर्यात्प्रयत्नतः। सिद्धे मंत्रे प्रकुर्वीत प्रयोगा निष्टसिद्धये। रोचनाकुंकुमक्षीरैः पद्ममष्टदलं लिखेत्। विरजस्के भूर्जपत्रे मायाबीजं दले दले। लिखित्वा धारयेन्मूर्ध्नि इमं मंत्रायुतं जपेत्। अतीतानागतं सर्व स्वप्ने वदति देवता।

॥ अथ चामुंडामंत्रप्रयोग:॥ (शुभाशुभ ज्ञान)

ॐ ह्रीं ह्रीं आगच्छागच्छ चामुंडे श्रीं स्वाहा। इति त्रयोदशाक्षरो मंत्र ।

अस्य विधानम्- मृद्गोमयैर्लिपेद्भूमिं कुशांस्तत्र समास्तरेत्। पंचोपचारनैवेद्यैर्देवदेवीं प्रपूजयेत्। साक्षसूत्रे करे धृत्वा पूर्व सेवायुतं जपेत्॥ सूर्यकोटिसमां ध्यात्वा रात्रौ पाणितलं जपेत्। अर्द्धरात्रे गते देवी वार्ता वक्ति शुभाशुभाम्।

गोमय लेपित भूमि पर देवी का आवाहन कर जप करे। सूर्यकांति वाली देवी का ध्यान करे। रात्रि में सोते समय अपनी हथेली पर मंत्र जप कर शरीर को स्पर्श कर शयन करे, गुप्त वार्ता कहे।

॥ अथ रुद्र मंत्र प्रयोग:॥

मंत्रो यथा- **ॐ नमो भगवते रुद्राय श्मशानवासिने चंडयोगिने स्वाहा।** त्रिंशदक्षरो मंत्र:।

अस्य विधानम्- करंजवृक्षमारुह्य जपेदष्टसहस्त्रकम्। तत्तं चांगैर्घृताक्तैश्च दशांश होममाचरेत्। तत्तं चांगेन कल्केन आपादांतं विलेपयते्। जपांते पूर्ववत्स्वप्ने कथयेत्सा शुभाशुभम्। करंज वृक्ष के नीचे जप करे। हवन कर भस्म को अंगो में लेपन कर सोये।

तंत्रांतरेऽपि मंत्र - **ॐ नमो भगवते रुद्राय कर्णपिशाचाय स्वाहा।** इत्यष्टादशाक्षरो मंत्र:।

अस्य विधानम्- अलाबुमूलिकां पुष्ये तथा सर्पाक्षिमूलिकाम्। संग्राह्य मंत्रितां यत्नाद्रक्तसूत्रेण वेष्टयेत्। मंत्रेण मूर्ध्नि वध्नीयाद्वदत्येव शुभशुभम्। इत्यष्टादशाक्षर रुद्र मंत्र प्रयोग:॥ अलावु व सर्पगंधा की जड़ पर जप करे उस पर डोरा लपेटे। फिर उसको गले में धारण करे।

तंत्रांतरेऽपि मंत्रो - **ॐ भगवन्देवदेवेश शूलभृद्वृषवाहन। इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम**

सुप्तस्य शाश्वते। ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने। वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः। स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः। क्रियासिद्धि विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर। इति श्लोकत्रयात्मको नमः।

अस्य विधानम्-स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादि शय्यायां यथासुखं स्थित्वा मंत्रेण अष्टोत्तरशतवारं शिवं संप्रार्थ्य निद्रां कुर्यात्। ततः स्वप्न दृष्टं निशि प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत्। अथवा स्वयं स्वप्न विचारयेत्॥

॥ स्वप्न विद्या ॥

(१) **ॐ नमो स्वप्न मातंगिनी सत्य भासिणी सुपूनं दर्शय दर्शय स्वाहा।**

विधि – गुप्त वार्ता या प्रश्नोत्तर के लिये २१ माला २१ दिन तक नित्य करके पुष्प, तिलादि से होम करें।

(२) **श्रीं ओं ह्रीं श्रीं स्वप्नेश्वरी देवी मम चिन्तक वार्ता कथय कथय स्वाहा।**

विधि – ५ माला नित्य, ५५ दिन तक जपें अक्षर ज्ञान व गुप्त वार्त्ता जानें।

॥ अथ मुसलमानीमंत्र ॥

(शुभाऽशुभ ज्ञान)

(१) **बिस्मिल्लाहुर्रहेमानुर्रहीम- अल्लाहोरवीमहम्मद रसूलरव्वाजेकीतस्वीरकुला आलम हजूर भेजैंगे मवक्कलल्यावैंगेजरूर।** इत्यैकोनचत्वारिंशदक्षरो मंत्र।

अस्य विधानम्- प्रथम अमल में करने के लिये सवा लाख जपे, बृहस्पतिवार से प्रारंभ करे, पश्चिम की तरफ मुख करके बैठे। इस प्रकार करने से मंत्र अमल में आ जाता है। पश्चात् ग्यारह सौ मंत्र से लेकर ग्याराहजार मंत्र तक जितना हो सके नित्य जपें, तो इक्कीस दिन के भीतर स्वप्न द्वारा प्रश्न का उत्तर अवश्य मिल जायेगा। इसमें कुछ संदेह नहीं परंतु, पेशाब करने के पश्चात् इस्तिजा करे अर्थात् इन्द्री को मट्टी से पोंछें और वृहस्पति वार के दिन कबर पर जाकर रकाबी फूल इत्र चढ़ावे, लोहबानकी धूप देवे, फकीरो को जिमावें। इन सब कामों के करने से मुसलमानी मंत्र जल्दी ही फलीभूत होते है। और सम्पूर्ण मुसलमानी मंत्रो में उलटी माला फेरनी पड़ती है, इस मंत्र के द्वारा और भी प्रयोजन सिद्ध हो जाता है॥

(२) **बिस्मिल्ला हुर्रहेमानुर्रहीम् शमशैरतवैरलशलै आदमहजरत महबूव सुभानी हाजर।** इति सप्तविंशत्यक्षरो मंत्र।

अस्य विधानम्- इस मंत्र को दश हजार नित्य जपें तो इक्कीस दिन के भीतर होनहार स्वप्न द्वारा कहे। इस्तिंजादि करना योग्य है।

(३) **याबासितो।** इति चतुरक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- पश्चिम मुख हो चौमुखा दीपक जला कर उलटी माला तीन सो तीस अर्थात् तेतीस हजार मंत्र नित्य जपे तो ४१ दिन में सिद्ध हो जाता है। पश्चात् नित्य दश हजार बार पढ़कर सोने से साधक के प्रश्न का उत्तर ठीक ठीक मिलता रहेगा। बहुत सी बातें बतायेगा। यह बड़ा चमत्कारी सिद्ध पुरूषों का अनुभव किया हुआ मंत्र है॥

अथ पञ्चांगुली कल्पम्

पञ्चाङ्गुली देवी का स्थान अपने हस्त में माना गया है, अतः इसकी उपासना हस्त नक्षत्र से ही आरंभ करनी चाहिये। कार्तिक मास के हस्त नक्षत्र से साधना प्रारंभ कर मार्गशीर्ष के हस्तनक्षत्र तक करें। एक माला प्रतिदिन करें। हवनादि कर कन्या भोजन करायें। जप शुरु करते समय पंचमेवा की दस आहुति अवश्य देवे।

हाथ की पांच अंगुलियों का प्रतीक देवी का चित्र बनाकर पट्टे पर रखें। देवी का स्थान हाथ के मध्य में है। उसके पैर हाथ की मणिबंध रेखा को स्पर्श करते हैं तथा हृदय रेखा के समीप मुखमण्डल है एव देवी का मुकुट मध्यमा अंगुली के प्रथम पौर को स्पर्श कर रही है।

देवी के आठ हाथ हैं दाहिनी ओर आशीर्वाद मुद्रा, रस्सी (पाश) खड्ग एवं तीर है तथा बायीं ओर हाथों में पुस्तक, घण्टा, त्रिशूल एवं धनुष धारण किये हुये है।

॥ प्रथम यन्त्र रचना ॥

यंत्र के बायी ओर – **ॐ ब्राह्मयै नमः, ॐ कामार्यै नमः, ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ संकायै नमः। ॐ कंकाल्यै नमः। ॐ कराल्यै नमः। ॐ कालिन्द्यै नमः। ॐ महाकालिन्द्यै नमः। ॐ चण्डाल्यै नमः। ॐ ज्वालापुष्यै नमः। ॐ कामाक्षायै नमः। ॐ कामाल्यै नमः। ॐ भद्रकाल्यै नमः। ॐ अंबिकायै नमः।**

दाहिनी ओर – **ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ पद्मन्यै नमः। ॐ वैष्णवै नमः। ॐ वैवाण्यै नमः। ॐ यमघण्टायै नमः। ॐ हरसिद्ध्यै नमः। ॐ परचत्यै नमः। ॐ तोतलायै नमः। ॐ चडचडे नमः। ॐ सर्वत्यै नमः। ॐ पद्मपुत्रे नमः। ॐ तारायै नमः। ॐ चित्त्यै नमः। ॐ वारण्यै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ जिंभृण्यै नमः।**

ऊपर – **ॐ सूर्यपुत्राय नमः। ॐ संततायै नमः। ॐ कृष्णावरण्यै नमः। ॐ रक्षायै नमः। ॐ अमावस्यै नमः। ॐ श्रीष्ठण्यै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ चरमण्यै नमः। ॐ कालायै नमः। ॐ कन्यायै नमः। ॐ वागेश्वर्यै नमः। ॐ अग्निहोत्र्यै नमः। ॐ चक्रेश्वर्यै नमः। ॐ चक्रेश्वराय नमः। ॐ कामाक्ष्यै नमः। ॐ विजयायै नमः।**

नीचे – **ॐ ललनायै नमः। ॐ गौर्यायै नमः। ॐ सुमंगलायै नमः। ॐ रोहिण्यै नमः। ॐ कपिल्यै नमः। ॐ सुलकरायै नमः। ॐ कण्डिल्यै नमः। ॐ त्रिपरायै नमः। ॐ कुरुकुल्ले नमः। ॐ भैरव्यै नमः। ॐ पद्मावत्यै नमः। ॐ चण्डायै नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः। ॐ नरसिंहे नमः। ॐ हेमकलायै नमः। ॐ प्रेतायै नमः।**

चारों तरफ – **ॐ नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी परशरी माताय मंगल वशीकरणी लोहमय दंडमयी श्री चौसठ कामविहंडणी रणमध्ये राउल मध्ये शत्रु मध्ये दीवान मध्ये भूत मध्ये प्रेत मध्ये पिशाच मध्ये झोटि**

मध्ये डाकिनी मध्ये शंखिनि मध्ये यक्षिणी मध्ये द्वेषिणी मध्ये शोकिनी मध्ये गुणमध्ये गारुडीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोरकष्ट मुझ उपरे बुरो जो कोई करावे जड़े जड़ावे तत् चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्रीमाता श्रीपंचांगुली देवी तणो वज्रनिर्धार पड़े ॐ ठं ठं स्वाहा।

८	७	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४१	४२	२२	२१	२०	१९	४७	४८
३३	३४	३०	२९	२८	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	४३	२३	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

पञ्चांगुली पूजन यन्त्र

अथ ध्याननम्

ॐ पंचांगुली महोदेवी श्री सीमन्धर शासने ।
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः ॥

॥ द्वितीय यन्त्रः॥

देवी यंत्र के दाहिनी ओर ऊपर –

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं अंजनेयाय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोक निवारणाय श्रीरामचन्द्राय पादुकाय महावीराय पंचमुखी वीर हनुमते मम शरीरारिष्ट निवारणाय मम शत्रुसैन्यं भञ्जय भञ्जय मम रक्ष रक्ष नमः स्वाहा।

बीच में –

यं	यं	यं
चं	चं	चं
रां	रां	रां
क्लीं	क्लीं	क्लीं

देवी यंत्र के बाँयी ओर ऊपर–

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः कृष्णवर्णाय अष्टभुजाय पंचांगुलि महारोग हरणाय सर्वशत्रून् मुख स्तंभनाय वैरिकुल दमनाय मम शरीरे रक्ष रक्ष वज्रपिञ्जराय ममानन्दाय मम शत्रुसैन्यं विध्वंसाय चूरय चूरय मारय मारय ॐ क्षीं क्षां नमः स्वाहा।

षट्कोण के बायीं ओर – तथा दायीं ओर

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः पञ्चांगुली परशरी माताय मंगल वशकरणी लोहमय दंडमयी श्री चौसठ कामविहंडणी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाच मध्ये झोटि मध्ये डाकिनी मध्ये शंखिनि मध्ये यक्षणी मध्ये द्वेषिणी मध्ये शोकिनी मध्ये गुणमध्ये गारुडीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोरकष्ट मुझ उपरे बुरो जो कोई रावे जडे जडावे तत् चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्रीमाता श्रीपंचांगुली देवी तणो वज्रनिर्धार पड़े ॐ ठं ठं स्वाहा।

यन्त्र बनाकर देवी की पूजा करें।

मन्त्र की एक माला कम से कम नित्य करें। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक सुबह मन्त्र पढकर अपने हाथ पर फूंक मारे एवं अपने हाथ में पंचांगुली का ध्यान करते हुये मुंह व सारे शरीर पर घुमावे। इससे भूत भविष्य व वर्तमान का ज्ञान साधक को हो जाता है।
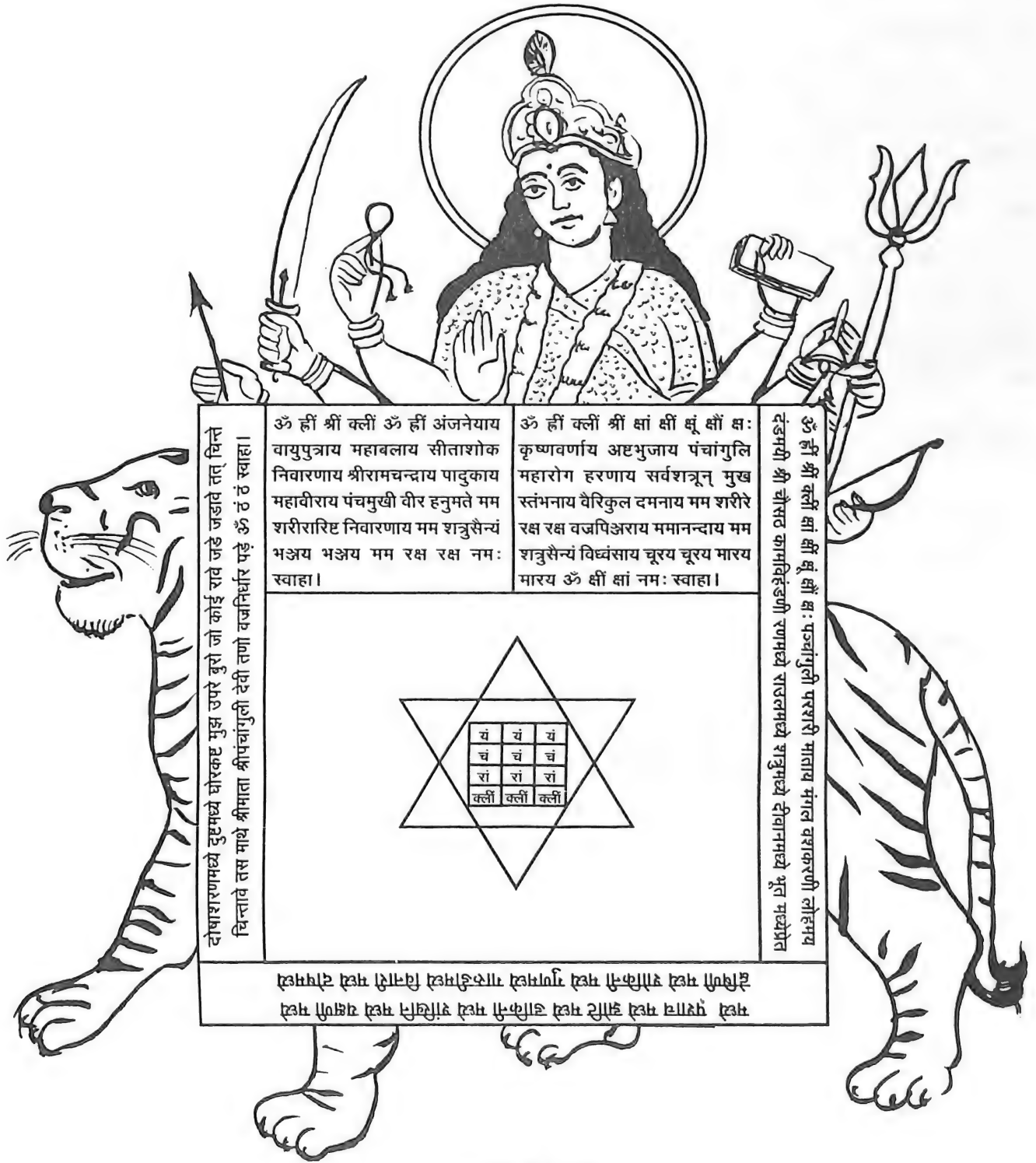
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं अंजनेयाय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोक निवारणाय श्रीरामचन्द्राय पादुकाय महावीराय पंचमुखी वीर हनुमते मम शरीरारिष्ट निवारणाय मम शत्रुसैन्यं भञ्जय भञ्जय मम रक्ष रक्ष नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः कृष्णवर्णाय अष्टभुजाय पंचांगुलि महारोग हरणाय सर्वशत्रून् मुख स्तंभनाय वैरिकुल दमनाय मम शरीरे रक्ष रक्ष वज्रपिञ्जराय ममानन्दाय मम शत्रुसैन्यं विध्वंसाय चूरय चूरय मारय मारय ॐ क्षीं क्षां नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः पञ्चांगुली परसरी माताय मंगल वशकरणी लोहमय दंडमयी श्री चौसठ कामविहंडणी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूत मध्येप्रेत
मध्ये पिशाच मध्ये झोटि मध्ये डाकिनी मध्ये शंखिनि मध्ये यक्षणी मध्ये
द्वेषिणी मध्ये शोकिनी मध्ये गुणमध्ये गारुडीमध्ये विनारी मध्ये दोषमध्ये
दोषारणमध्ये दुष्टमध्ये घोरकष्ट मुझ उपरे बुरो जो कोई रावे जडे जडावे तत् चिन्ते
चिन्तावे तस माथे श्रीमाता श्रीपंचांगुली देवी तणो वज्रनिर्धार पड़े ॐ ठं ठं स्वाहा।
यं यं यं
चं चं चं
रां रां रां
क्लीं क्लीं क्लीं

पञ्चांगुली यन्त्र
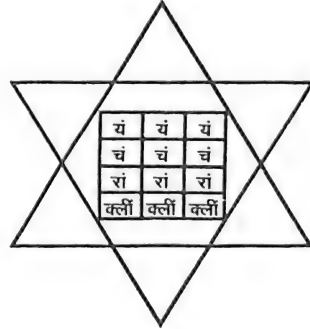
॥ अन्य प्रयोग ॥

(क) आकर्षण –

ॐ ह्रीं पंचांगुली देवी 'देवदत्तस्य' आकर्षय आकर्षय नमः स्वाहा।

अष्टगंध से मन्त्र लिखे देवदत्त की जगह व्यक्ति का नाम लिखकर १०८ बार जप करें। प्रयोग शुक्ल पक्ष की अष्टमी से करें। यंत्र को बड़े बांस की भोगली के अंदर डाल देवें। ४१ दिन में आकर्षण होय।

(ख) वशीकरण –

ॐ ह्रीं पंचांगुली देवी अमको अमुकी मम वश्यं श्रं श्रां श्रीं स्वाहा।

इस यंत्र को वश्य वाले व्यक्ति के कपड़े पर शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को हिंगुल गौरोचन मूंग के पानी के साथ स्याही बनाकर लिखें। लालचन्दन का धूप जलावें, दीपक जलावें, इस यंत्र को मकान की छत या छप्पर में बांधे १३ दिन तक १०८ बार नित्य जप करें।

(ग) विद्वेषण –

ॐ ह्रीं क्लीं क्षां क्षं फट् स्वाहा।

इस यन्त्र को शत्रु के वस्त्र श्मशान के कोयले से लिखें श्मशान में जाग पंख, उल्लू के पंख से हवन करें। यंत्र को काले कपड़े व पत्थर से बांध कर कुवे में फेंक देवे। ४१ दिन तक १०८ बार मन्त्र जपें, उल्लू के पंख व मास की धूप देवे।

(घ) उच्चाटन–

ॐ ह्रीं पंचांगुली अमुकस्य उच्चाटय उच्चाटय ॐ क्षं क्लीं घे घे स्वाहा।

इस यंत्र को धत्तूरे के रस से लिखें। पृथ्वी पर कोयले से १०८ बार यंत्र लिखें। यंत्र को पृथ्वी में गाड़ें और उस पर अग्नि जलावें तो ७ दिन में उच्चाटन हो जाता है।

इस यंत्र को अमुकस्य की जगह अमुकबाधा लिखे तथा यंत्र विष (शंखिया, नीला थोथा) से लिखें तो प्रेत डाकिनी शाकिनी बाधा दूर होवे।

(ङ) मारण –

ॐ ह्रीं ष्यां ष्यीं ष्यूं ष्यौं ष्यः मम शत्रून मारय मारय पंचांगुली देवी चूसय चूसय निराघात वज्रेन पातय पातय फट् फट् घे घे।

इस यंत्र को श्मशान के कोयले से काले कपड़े पर लिखें। नीचे शत्रु का नाम लिखें। १०८ बार जप करें भैंसा गुगल का धूप करें। रेशमी डोरे से लपेट कर एकांत में गाड़ देवे। मदिरा की धार देवे धूप गुगल जलावें पास में बैठकर १०८ बार जप करें। शत्रु के पांव की धूल भी गुगल के साथ जलावें। कृष्णपक्ष चतुर्दशी के दिन प्रयोग करें तो शत्रु पैरों में आकर गिरे।

यंत्र को निकाल कर दूध में भिगावें। **ॐ ह्रीं पंचांगुली रक्ष रक्ष स्वाहा** इस मंत्र से धूप करें, १२१ बार जपे तो शत्रु को शांति मिले।

(च) रक्षा मन्त्र –

ॐ ह्रीं श्रीं पंचांगुलि देवी मम शरीरे सर्वअरिष्टान् निवारणाय नमः स्वाहा ठः ठः ।

इस मन्त्र का सवालाख जप करें। धूप देवे तो सर्वकार्य सिद्ध होवे।

अथ कारागृह बन्दी मोक्ष मंत्र प्रयोगः

॥ बन्दी देवी प्रयोग ॥

एकादशाक्षर मन्त्र – **ॐ हिलि हिलि बन्दी देव्यै नमः।**

अष्टादशाक्षर मन्त्र – **ऐं ह्रीं श्रीं बन्दी अमुष्य** (व्यक्ति का नाम) **वन्द्य मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।**

विनियोग – **ॐ अस्य श्री बन्दी मन्त्रस्य भैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, वन्दी देवता, भव बन्ध कारागार बन्धन मुक्तये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास – **ॐ हृदयाय नमः। ॐ हिलि शिरसे स्वाहा। ॐ हिलि शिखायै वषट्। ॐ बन्दी कवचाय हुंम्। ॐ देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्

सतोय पाथोद समान कान्तिं अम्भोज पीयूषकरी हस्ताम् ।
सुराङ्गना सेवित पाद पद्मां भजामि बन्दीं भवबन्ध मुक्तये ॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

षट्कोण अष्टदल भुपूर बनायें। पश्चात् षट्कोणादि प्रत्येक आवरण की पूजा करें।

प्रथमावरणम् -(षट्कोणे)-**ॐ हृदयाय नमः। ॐ हिलि शिरसे स्वाहा। ॐ हिलि शिखायै वषट्। ॐ बन्दी कवचाय हुम्। ॐ देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।**

द्वितीयावरणम् – (अष्टदले पूर्वादि क्रमेण)–**ॐ काल्यै नमः। ॐ तारायै नमः। ॐ भगवत्यै नमः। ॐ कुब्जायै नमः। ॐ शीतलायै नमः। ॐ त्रिपुरायै नमः। ॐ मातृकायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः।**
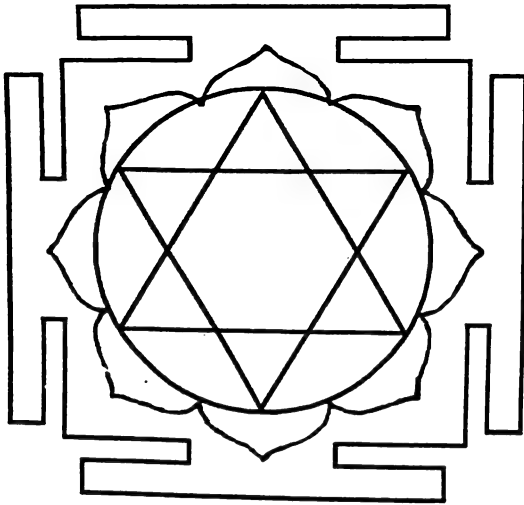
तृतीयावरणम् – (भूपूरे दश दिक्षु) यथा –पूर्वादि क्रमेण – **ॐ इन्द्राय नमः। आग्नये नमः। यमाय नमः। निर्ऋतये नमः। वरुणाय नमः। वायवे नमः। कुबेराय नमः। ईशानाय नमः। ईशान एवं पूर्व मध्ये – ब्रह्मणे नमः। नैर्ऋत्य पश्चिम मध्ये – अनंताय नमः।**

चतुर्थावरणम् (भूपूरे – इन्द्रादि लोकपाल समीपे) – **ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डायै नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।**

बन्दीदेवी यंत्र

पश्चात् यंत्र मध्य में देवी का पूजन कर जप करें। दो लाख जप कर खीर से दशांश होम करें।

॥ अस्य प्रयोग विधि ॥

मालपूआ पर घी के चतुरस यंत्र बनायें। परन्तु घी से यंत्र बनाना कठिन है घी तो पिघल जायेगा ही अतः पूरा यंत्र मंत्र कल्पना के समान ही बनेगा।

अतः घी मे कलम डुबोकर यंत्र बनायें। अथवा केसर से मालपुये पर यंत्र बनायें उसके चारों ओर अठारह अक्षर का मंत्र लिखकर उसमें देवी का आवाहन करें। पूजा किया हुआ मालपुआ जिस व्यक्ति को बन्दीगृह से छुडाना हो उसे खिलायें। बन्दी व्यक्ति देवी का स्मरण करता हुआ उसे खायें तो कारागृह से शीघ्र छूटे।

अथ षट्कर्म प्रयोगाणि

आकर्षण प्रयोग हेतु आसुरीदुर्गा, मातंगी एवं कालरात्रि के प्रयोग करने चाहिये। स्तंभन कार्य हेतु बगलामुखी, वाराही, उच्चाटन हेतु दुर्गा, वशीकरण हेतु ललिता एवं मातंगी के प्रयोग, वशीकरण व मारण दोनों कार्यो हेतु लवणदुर्गा, आसुरी दुर्गा सिद्ध विद्या है। शत्रु संहार हेतु शरभराज का प्रयोग इसके अलावा बगलामुखी, छिन्नमस्ता, धूमावती, कालिका, भद्रकाली, आर्द्रपटीदुर्गा, धर्मटिका, धूम्रवाराही, भैरवी इत्यादि देवियों के प्रयोग करे। शत्रुनिग्रह व कृत्या निवारण में शरभ शालुव पक्षीराज, कालभैरव बगला एवं प्रत्यंगिरा प्रमुख है। तारा एवं ज्वालामालिनी शत्रुनिग्रह कारक है। परन्तु इन सब प्रयोगों से पहले अपने सपरिवार की सुरक्षा हेतु रक्षाविधान करना चाहिये। धर्म एवं पुण्य कर्म भी अवश्य करना चाहिये।

॥ अथ वशीकरण प्रयोगा: ॥

१. ॥ वशीकरण प्रयोग ॥

साधक शनिवार के दिन सायंकाल तालाब पर जावें, इस मन्त्र से हल्दीयुक्त अक्षत् और फूलों से जल की पूजा करें।

मंत्र:- ''ॐ नमो जलौकायै जलौकाये सर्वजनं वशं कुरु कुरु हुम्।''

पश्चात् घर जाकर देवी का स्मरण करते हुए रात में भूमि पर शयन करें। प्रात: काल उस तालाब से दो जोंक लाकर छाया में सुखाकर चूर्ण कर लें। उस चूर्ण से युक्त काले कपास के सूत से बत्ती बनायें। कुम्हार के चाक से मिट्टी लाकर उससे बनाये गये पात्र में बत्ती को रखें। पश्चात् घूमते हुए बैल के कोल्हू से तेल लेकर उसमें डालें। वेश्या के घर से अग्नि लाकर कुचिला के वृक्ष की लकड़ियों से उस बत्तीं को जलायें। उससे उस पात्र में द्वीप-बनायें। फिर हल्दी के रस से त्रिकोण, षट्कोण तथा चतुष्कोण का यन्त्र बनायें। यन्त्र के बीच में धान का लावा फेंक कर उसके ऊपर दीप पात्र रखें। दीप में **कालरात्रि** का आवाहन करें। आवरणसहित उनकी पूजा करें। नया मिट्टी का पात्र दीये पर रख कर काजल पाड़ें। उसे काजल को लेकर पश्चिम की ओर मुख करके इस मन्त्र से तीन सौ बार अभिमन्त्रित करें।

मंत्र:- ''ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्लौं ब्लूं हसौं नम: '' काह्लेश्वरि सर्वान्मोहय मोहय कृष्णो कृष्णवर्णे कृष्णाम्बरसमन्विते सर्वानाकर्षय आकर्षय शीध्रं वशं कुरु कुरु हुं ऐं क्लीं श्रीं।''

तत्पश्चात् दीप से देवी को अपनी आत्मा में सम्बन्धित करें। उस काजल को मङ्गलवार के दिन मक्खन से मर्दित कर पात्र में रखें। उसके आगे अग्नि की स्थापना करें। महुआ के फूलों से एक सौ आठ बार मूलमंत्र से होम करें। कुंवारी कन्या, बच्चों और स्त्रियों को मधुर भोजन करायें। उस अञ्जन से तिलक करके संसार को वश में करने इत्यादि का फल स्पष्ट है।

इस अञ्जन का तिलक लगाकर साधक दर्शनमात्र से नर,नारी और राजाओं को वश में कर लेता है। प्रारम्भ में दूध के साथ

दिया हुआ वह मनुष्यों को वश में करने वाला होता है। उसके स्पर्श से मनुष्य निश्चय ही स्पर्शकर्ता का दास हो जाता है।

२. ॥ वशीकरण मंत्र ॥

इस सम्बन्ध में चामुण्डा का मन्त्र है।

मन्त्रः- चामुण्डे जय चामुण्डे मोहय वशमानय अमुकं स्वाहा।

ध्यानम्–

दंष्ट्रा कोटि विशङ्कटा सुवदना सान्द्रान्धकारे स्थिता,
खट्वाङ्गासि निगूढ़ दक्षिण करा वामेन पाशं शिरः।
श्यामा पिङ्गल मूर्द्धजा भयकरी शार्दूल चर्मावृता,
चामुण्डा शव वाहिनी जप विधौ ध्येया सदा साधकैः॥

उक्त मन्त्र का एक लाख जप कर जप के दशांश संख्यक पलाश पुष्पों से होम करे। इससे प्रसन्न होकर चामुण्डा देवी साधक के सारे अभीष्ट फलों को प्रदान करती हैं।

३. ॥ वशीकरण तंत्रम् ॥

(दत्तात्रेयतंत्रे) मंत्रो यथा- ॐ नमः सर्वलोकवशंकराय कुरु कुरु स्वाहा।
इत्याष्टादशाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- अष्टोतरशसतजपात्सिद्धिः। सिद्ध मंत्रे मंत्री सर्वप्रयोगान् साधयेत्। तथाच-

ईश्वर उवाच

नृकपाले रविदिने तंडुलैः पायसं कृतम्। छायाशुष्कं तु तच्चूर्ण खाद्ये पाने च दीयते ॥
यावज्जीवं वशं याति नारी वा पुरुषोऽपि वा। अदासो दासतां याति प्राणैरपि धनैरपि ॥

अन्यत्

पल्लीपुच्छं गृहीत्वा तु वर्तिमृतुमतीस्त्रिया। ज्वालितां यं रवौ वारे दर्शयेत्स वशो भवेत् ॥
ब्रह्मदंडीवचाकुष्ठ चूर्ण तांबूल मिश्रितम्। रवौ वारे कृतं चेत्स सर्वलोकवशंकरः ॥
गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत्। विभूत्या संयुतं तस्य तिलको लोकवश्यकृत ॥
पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभि मंत्रितम्। यस्यास्ते स भवेत्पूज्यो वधूभिः सर्वमोहकः ॥
अपामार्गस्य मूलं तु कपिलाक्षीरपेषितम्। ललाटे तिलकस्तस्य वशीकुर्य्याज्जत्रयम् ॥
गृहीत्वा सहीदेवीं वै च्छायाशुष्कां तु कारयेत। तांबूले निहितं तस्याश्चूर्ण लोकवशंकरम् ॥
रोचनासहदेवीभ्यां तिलको लोकवश्यकृत। गृहीत्वौदुंकरं मुलं ललाटे तिलकः कृतः ॥
प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टि मात्रान्न संशयः। तांबूले वा प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥

****

देवदालीं च सिद्धार्थगुटिकां कारयेद् बुधः। मुखनिक्षेपमात्रेण सर्वलोकवशंकरः ॥
कुंकुमं तगरं कुष्ठ हरितालं मनःशिला। अनामिकाया रक्तेन तिलकः सर्ववश्यकृत ॥
गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगु रक्तचंदनम्। एकीकृत्य जपेन्मंत्रं सर्वलोकवशंकरम् ॥
गृहीत्वा श्वेतेगुजायाश्छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसार्द्धेन तिलको लोकवश्यकृत ॥
तन्मूलं पत्रतांबूलं सर्वलोकवशंकरम्। तन्मूलाल्लेपयेद्देहं सर्वलोकवशंकरम् ॥
श्वेतदूर्वा गृहीत्वा कपिलाक्षीरपेषिताम्। तल्लेपनाद्भवेन्मंत्री सर्वलोकवशंकरः ॥
श्वेतार्कं वै गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसार्द्धेन तिलकः सर्ववश्यकृत ॥
बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलिंगं तथैव च। अजादुग्धेन संपेष्य तिलको लोकवश्यकृत् ॥
कौमारीकंदमादाय विजयाबीजसंयतम्। तिलकं धारयेद्भाले सर्वलोकवशकरम् ॥
हरितालं चाश्वगंधा सिंदूरं कदलीरसम्। तिलकः क्रियतेऽनेन सर्वलोकवशंकरः ॥
अपामार्गस्य बीजानि छागीदुग्धेन पेषयेत्। तल्लेपनाद्भवेन्मत्री सर्वलोकवशंकरः ॥
हरितालं च तुलसी कपिलादुग्ध पेषिता। अनेन तिलको भाले सर्वलोकवशंकरः ॥
धात्रीफलरसे भाव्यमष्टगंधं मनःशिला अनेन तिलको भाले सर्वलोकवशंकरः ॥

इन द्रव्यों को अभिमन्त्रित कर तिलक करने से वशीकरण होता है तथा चहरे की कांति बढ़ती है, जिससे भी सम्मोहन होता है।

प्राकृत ग्रंथे दोहा

लाय मनुष्य की खोपडी बीज धतूरो मेल। शहत कपूर मिलायके, करै तिलक का खेल। चौ-पुरुष होय चाहे हो नारी, देखत तिलक होय वश भारी। यह कापालिक योग अनोखो, कह्यो वशिष्ठ होय नहिं धोखो ॥

॥ अथ स्तम्भन प्रयोगाः ॥

रविवार के दिन हल्दी, गोरोचन, कूठ तथा तगर को गोमूत्र में पीसकर रोशनाई बनाकर हल्दी से रंगे। वस्त्र में अष्टदल बनायें। उसमें बीच में **ॐ ॐ ग्लौं ग्लौं चट् चट्** इन वर्णों को दलों में लिखें। उस वस्त्र को पीले सूत से लपेटे व कोकिल वृक्ष की सात कीलें बनावे। कीलों को सफेद आकड़े के पत्तों में लपेटे एवं दीमकों के रन्ध पर फेंक कर ऊपर से भेड़ के मूत्र का अभिसिंचन करे। छिद्र पर पत्थर रखे वहाँ पर बैठ कर हल्दी की माला लेकर नैर्ऋत्य दिशा की ओर मुख करके इस मन्त्र का हजार बार जप करें।

मंत्रः- "ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं कामाक्षि मायारूपिणी सर्वमनोहारिणि स्तम्भय स्तम्भय रोधय रोधय मोहय मोहय क्लां क्लीं क्लूं कामाक्षि काह्लेश्वरि हुं हुं हुं"

ऐसा करने पर शत्रु का स्तम्भन होता है।

॥ अथ मोहन प्रयोगाः ॥

१. ॥ मोहन प्रयोगः॥

रविवार के दिन हल्दी को नारी के दुग्ध में पीस लेवे। उस रस से भोजपत्र के मध्य कामबीज **क्लीं** युक्त वृत बनावें। दश कामबीजों से घेर कर फिर वृत बनावें। बारह कामबीजों से घेर कर पुनः वृत बनावें। फिर सोलह कामबीजों से घेर कर ऊपर बीजयुक्त षट्कोण बनाकर सम्पूर्ण वाग्बीज ऐं को मध्य में स्थित करें। उस यन्त्र के ऊपर बैठ कर पाँच दिन तक प्रतिदिन क्रुद्ध मन से एक हजार दशाक्षर मन्त्र का जप करें। मन्त्र यह है

मंत्रः- "ॐ क्लीं कामाय क्लीं कामिन्यै क्लीं " ।

जप के दशांश का तिल के तेल से होम करें। होम की भस्म से तिलक लगाने तथा उस यन्त्र को धारण करने से साधक सारे संसार को मोह लेता है। होम के भस्म से तिलक करने वाला तथा यन्त्र को धारण करनेवाला मनुष्य सारे संसार को मोह लेता है।

२. ॥ मोहन तंत्र प्रयोगः ॥

(दत्तात्रेयतंत्रे) मंत्रो यथा- **ॐ नमः सर्वलोकमोहनं कुरु कुरु स्वाहा**। इति षोडशाक्षरो मंत्रः। इति मंत्रेण अष्टोत्तरशतमभिमंज्य सर्वयोगान कुर्यात्।

ईश्वर उवाच

तुलसीबीजचूर्णस्य सहदेवीरसैः सह। तिलकं यो रवौ कुर्यात्स जगन्मोहकृद्भवेत् ॥
हरितालाश्वगंधा तु कदलीरसपेषिता। गोरोचनयुता तस्यास्तिलको लोकमोहनः ॥
श्रृंगिचंदन संयुक्तवचाकुष्ठेन धूपयेत्। देहं तथा स्ववस्त्रं च मुखं वै साधकस्ततः ॥
पशुपक्षिप्रजाभूपमोहदो दर्शनाद्भवेत्। गृहीतमूलतांबूल तिलको लोकमोहनः ॥
मनःशिला च कर्पूरं कदलीरस पेषितम्। अनेनैव तु तंत्रेण तिलको लोकमोहनः ॥
सिंदूरं च वचा श्वेता तांबूलरस पोषिता। अनेनैव तु तंत्रेण तिलको लोकमोहनः ॥
अपामार्ग भृंगराज लज्जालु सहदेविकाः। एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥
गृहीत्वादुंबरं पुष्पं वर्ति कृत्वा विचक्षणः। नवनीतेन प्रज्वाल्य कज्जलं पातयेन्निशि ॥
कज्जलेनाञ्जयेन्नेत्रं मोहनं जगतस्त्विदम्। यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥
श्वेतगुंजारसे पिष्ट्वा ब्रह्मदण्डीं च मूलकम्। लेपं शरीरे यः कुर्यात्स जगन्मोहनो भवेत् ॥
श्वेतदूर्वां शुभां मंत्री हरितालं च पेषयेत्। अनेन तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यमपि मोहयेत् ॥
बिल्वपत्रं गृहीत्वा तु च्छायाशुष्कं च कारयेत्। कपिलापयसार्द्धेन वटीं कृत्वा तु धारयेत् ॥
तिलकं यस्तु तं दृष्ट्वा साधकं सकलं जगत्। क्षणेन मोहनं याति प्राणैरपि धनैरपि ॥

श्वेतार्कमूलमादाय श्वेतचंदन संयुतम्। धात्री रसेन संयुक्तं तिलको तिलकोऽयं नृमोहनः ॥
विजया पत्र मादाय श्वेत सर्षप संयुक्तं । अनेन तिलकं भाले कुर्याद्यो मोहयेज्जगत् ॥
सिंदूरं कुंकुमं चैव गोरोचन समन्वितम्। अनेन लेपयेद्देहं यः स विश्वविमोहनः ॥
गृहीत्वा तुलसी पत्र छायाशुष्कं तु कारयेत्। अश्वगंधा समायुक्तं विजयाबीज संयुतम् ॥
कपिलाशुद्धपयसा वटिका टंकमानतः। भक्षिता प्रातरुत्थाय माहेयेत्सर्वतो जगत् ॥
पंचांगं दाडिमं पिष्ट्वा श्वेतगुंजासमन्वितम्। अनेन तिलकं कृत्वा मोहयेत्सर्वतो जगत् ॥
कटतुंबीबीजतैले ज्वालयेत्पटवर्तिकाम्। तत्कज्जलं नेत्रगतं मोहयेत्सकलं जगत् ॥

इन द्रव्यों के तिलक से चहरे की कांति बढ़ती है जिससे भी सम्मोहन होता है। साथ ही मन्त्र के प्रभाव से भी।

॥ अथ आकर्षण प्रयोगाः॥

१. ॥ आकर्षण प्रयोग॥

कृष्णाष्टमी मङ्गलवार तथा कृष्ण चतुर्दशी रविवार को प्रातः काल नाभिमात्र जल में खडे होकर मूलमन्त्र का ग्यारह सौ बार जाप करे। घर आकर शरीर पर तेल लगाकर पीठ पर अञ्जन से स्त्री या पुरुष की मूर्ति बनावे फिर उसका लाजवन्ती के पत्रों से पूजन करे। लाजवन्ती के जड़ के रस से प्रोक्षण करना चाहिये। फिर उसके आगे एक सौ आठ बार मन्त्र का जप करें। मन्त्र यह है-

मंत्रः- "ॐ नमः कालिकायै सर्वाकर्षिण्यै अमुकीमाकर्षयाकर्षय शीघ्रमानयानय आं ह्रीं क्रों भद्रकाल्यै नमः" ।

इसके बाद पचास कने के फलों से **अं अमुकीमाकर्षय आकर्षय नमः।**

आं अमुकीम् ...... ईत्यादि पचास वर्णपूर्वक पचास मन्त्रों से एक एक मन्त्र द्वारा या प्रति पुष्प से उस आकार की पूजा करें। इसके बाद धूप दीप और नैवेद्य देकर उसके आगे अग्नि की स्थापना करे। घी से सिक्त चने तथा मधु द्वारा इस मंत्र का सौ होम करके कुमारी द्वारा काते गये कपास के काले अट्ठाइस तन्तुओ द्वारा निर्मित सूत अपने शरीर के नाप जितना लेवे। तत्पश्चात् आकर्षण मन्त्र द्वारा एक सौ आठ ग्रन्थि देवे इस प्रकार इस अभिमंत्रित सूत को धारण करने से साधक पुरुष स्त्री को आकृष्ट करता है।

कुमारी द्वारा कपासनिर्मित काले धागे के अट्ठाइस तारों से निर्मित डोरी में एक सौ आठ गाँठे देनी चाहिये। उस डोरी के धारण करने पुरुष या स्त्री शीघ्र आ जाते है। ग्राम में यदि वे हो तो तीन रात में और यदि ग्राम से बाहर हों तो नौ रातों में आ जाते है।

२. ॥ आकर्षण प्रयोग॥

"**त्रिपुरा तन्त्र**" और "**भूत डामर**" में आकर्षण का जो विधान दिया गया है वह संक्षेप में निम्न प्रकार है-

'**श्रीं क्लीं ह्रीं ॐ त्रिपुरा देवि अमुकी आकर्षय आकर्षय स्वाहा**'- इस मन्त्र का अयुत (दस हजार) जप करें।

रक्त चन्दन और कुंकुम से षट्कोण यन्त्र अङ्कित कर उसका पूजन उक्त मन्त्र से करे। लज्जा बीज (ह्रीं) को षड् दीर्घ (ह्रां, ह्रीं ह्रूं, ह्रें, ह्रौं, ह्रः) स्वरों से युक्त कर अर्थात् **ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः** इत्यादि से कर षडङ्गन्यास करें। रक्त पुष्प, अक्षत्, धूप, दीप और नैवेद्य से पूजन करे। फिर मन ही मन देवी का ध्यान करे। यथा-

भावयामि चेतसा देवीं, त्रिनेत्रां चन्द्रशेखराम् ।
बालर्ककिरण प्रख्यां, सिन्दूरारुण विग्रहाम् ।
पद्मं च दक्षिणे पाणौं, जपमालां च वामके ॥

इस मन्त्र के प्रभाव से रम्भा और उर्वशी को भी निश्चय ही आकृष्ट कर सकते हैं। फिर मानुषी के आकर्षण में क्या आश्चर्य।

भूर्ज पत्र पर कुंकुम अथवा कस्तुरी, अगुरु और गोरोचन मिश्रित अनामिका रक्त से यह कमलाक्षी मन्त्र लिखकर उसी भूर्ज पत्र के ऊपर उक्त मन्त्र का एक सहस्त्र जप करे।

मन्त्रः- 'ॐ श्रीं कमलाक्षि अमुकीम् आकर्षय आकर्षय हूं फट्'।

फिर उस भूर्ज पत्र की गुलिका बनाकर अभीष्ट व्यक्ति या स्त्री की पैर की मिट्टी से उसे वेष्टित करे। फिर उस मिट्टी लगी गुलिका को धूप में खूब सुखा ले। फिर त्रिकटु (मरिच,पीपल और सोंठ) से अभीष्ठ रमणी की प्रतिमा बनाकर उसके पेट में उक्त गुलिका को डाल दे। तदनन्तर उस प्रतिमा को किसी पात्र में स्थापित कर वह रमणी जिस दिशा में हो, उसी दिशा की ओर मुख करके बैठे और निशा काल में किसी निर्जन स्थान में उक्त **'कमलाक्षी मन्त्र'** का जप करे। इस प्रकार करने से वह रमणी आकर्षित होकर साधक के समीप आ उपस्थित होगी।

३. ॥ विवाह हेतु आकर्षण मंत्र ॥

(१) आकर्षण विधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धि प्रयत्नतः। राज्ञां प्रजानां सर्वेषां सत्यमाकर्षण भवेत्। तत्रादौ विश्वावसुनामकगंधर्वमंत्रव प्रयोगः।

मंत्रो यथा- ॐ विश्वावसुर्नाम गंधर्वः कन्यानामधिपतिः सुरूपां सालंकारां कन्यां देहि नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा। इत्येकोनचत्वारिंशदक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- कन्यागृहे शालकाष्ठं क्षिपेदेकादशांगुलम्। ऋक्षे तु पूर्वाफाल्गुन्यां स्वयं कन्या प्रयच्छति ॥

४. ॥ अथ मूली मंत्र प्रयोगः ॥

(२) ॐ मूली मूली महामूली सर्वं क्षोभय क्षोभय उपद्रव्येभ्य स्वाहा।

अस्य विधानम् - अंजुली में जल भरकर जप करें। एक महीने में वस्त्र, आभूषण सहित सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है। जिसके मन को क्षोभित कर वशीकरण करना हो उसके नाम से जप करें। मूली अथिमंत्रित कर खिलाने से वशी होवे।

५.॥ बीज मंत्र ॥

मंत्रो यथा- **झं हां हां हें हैं।** इति पंचाक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- इस मंत्र को प्रतिदिन पांच हजार जपने से इक्कीस दिन में सिद्ध हो जाता है जायेगा ॥ इस मन्त्र से

अभिमंत्रित भक्ष्य पदार्थ खिलाने से इच्छित व्यक्ति वश में हो जायेगा।

६. ॥ अथ आदिरूपमंत्र:॥

मंत्रो यथा- **ॐ नम आदिरूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।**

अस्य विधानम्- इस मंत्र को गोरोचन और केसर से मनुष्य की खोपड़ी पर लिखकर के प्रातः काल मध्याह्न और सायंकाल इन तीनों समय खैर के अंगार में तपावें तो स्त्री व पुरुष व पशु का आकर्षण होता है अर्थात् वह आ जाता है॥

७. ॥ अथ रुद्रमंत्र प्रयोग:॥

मंत्रो यथा- **ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा।** इति षडक्षरो मंत्रः प्रथमः।

ॐ नमो भगवते रुद्राय रादृाष्टिलंपिनाहरः स्वाहा दुहाई कंसासुर की जूट जूट फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इत्येक चत्वारिंशदक्षरो मंत्रो द्वितीयः।

अस्य विधानम्- मंगलवार से प्रारंभ कर पहले षड़क्षर मंत्र को प्रतिदिन एक हजार, दूसरे मंत्र को इक्कीस बार जपे तो दशदिन में सिद्ध होता है। ग्यारहवें दिन होम, तर्पण, मार्जन व ब्राह्मण भोजन करायें। मंत्र सिद्ध हो जाने की परीक्षा इस रीति से करे- एक सरकंडे को बीच में से चीर कर दोनों तरफ से दो मनुष्य पकड़ें। साधक चूहे के बिल की मिट्टी, सरसों, बिनौले इन तीनों चीजों को मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके सरकंडे पर मारे तो दोनों टूकड़े मिल जायेंगे, तब इस मंत्र को सिद्ध हुआ जानें। फिर जिसका आकर्षण करना हो उसके वस्त्र पर उक्त तीनों चीजों को अभिमंत्रित कर के मारे तो वह स्त्री व पुरुष जितने दिनों के मार्ग पर होगा उतने ही दिनों में आ जायेगा इसमें संदेह नहीं।

॥ अथ उच्चाटन प्रयोगा: ॥

१. ॥ उच्चाटन प्रयोग॥

एकान्त स्थान में कृष्ण चतुर्दशी के दिन नीला वस्त्र धारण करके बाल और शिखा खुला रखें। दक्षिण तरफ मुख करके कुक्कुट आसन से बैठ कर ग्रन्थियुक्त मूंजकी रस्सी की माला से रात्रि में दो हजार इस मन्त्र का जप करें।

मन्त्रः- **ल्बूं स्लूं म्लूं क्ष्लूं कालरात्रि महाध्वांक्षि अमुकामाशु उच्चाटय उच्चाटय छिंधि भिंधि स्वाहा हौं कामाक्षि क्रौं।** यह मंत्र जपें।

इसके बाद इसी मन्त्र से दौ सौ बार सरसों से होम करके तेल और जल से युक्त सरसों के पिण्ड़े से उस मन्त्र से बलि देवें। इस प्रकार एक सप्ताह करने से उच्चाटन सिद्धि होती है। इस प्रकार सात दिन तक करने शत्रु दूर देश चला जाता है।

२. ॥ उच्चाटन प्रयोग:॥

(१) निम्ब पत्र पर काक पक्ष की लेखनी से महिष एवं अश्व मल द्वारा इस मन्त्र मे शत्रु का नाम पूर्वोक्त द्रव्यों से लिखे।

मन्त्रः- **'ॐ नमः काकतुण्डि, धवलामुखि अमुकमुच्चाटय हूं फट्'** ।

फिर इस मन्त्र का पूजन कर निम्ब वृक्ष स्थिर काक पक्षी के घोसले की काष्ठ द्वारा होम करे। इसके लिए श्मशान

की अग्नि लाकर धुस्तुर काष्ठ से उसे प्रज्वलित करे। महातैल (नरतैल) या त्रिकटु सहित काक निवास की काष्ठ द्वारा होम करे। होम काल में उल्लिखित होम काष्ठ में श्वेत सरसों का तैल मिलावे। फिर पञ्चोपचारों से 'धवालामुखी' की पूजा कर साधक ध्यान युक्त चित्त से जिसके घर में उक्त होम की भस्म फेंकेगा, उस व्यक्ति का उच्चाटन होगा। देवी का ध्यान निम्न प्रकार करे-

ध्यानम्

धूम्रवर्णा महादेवीं त्रिनेत्रां शशिशेखराम् ।
जटाजूट समायुक्तां, व्याघ्रचर्मपरिच्छदाम् ॥

कृशाङ्गीमस्थि मालाढ्य कर्तृकाढ्य कराम्बुजाम् ।
कोटराक्षीं सुदंष्ट्रां च, पाताल सन्निभोदराम् ॥

(२) शनि या कुजवार में चार अंगुल की मनुष्यास्थि की कील लाकर उसमें हरिद्रारस द्वारा यह मन्त्र लिखकर शत्रु के मुख्य घर में डाल दे।

मन्त्रः- **'हूं अमुकस्य उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा अथवा हूं अमुकं हन हन स्वाहा '।**

ऐसा करने से एक सप्ताह के भीतर उच्चाटन होगा।

शत्रु का मल लेकर वृश्चिक के सहित भूमि में गाड़ने से उस शत्रु का मल रुद्ध होकर उसकी मृत्यु होगी। उक्त मल और वृश्चिक को भूमि से निकाल कर फेंकने से दोष की शान्ति होती है। यह कार्य निम्न मन्त्र से करे-

मन्त्रः- **'ॐ स्तमम्भिनि अमुकस्य मलं स्तम्भय स्तम्भय हूं फट्।'**

॥ अथ विद्वेषण प्रयोगाः॥

१. ॥ विद्वेषण प्रयोगः॥

दो मित्रों के जन्म नक्षत्र वाले वृक्षों (नक्षत्र के वृक्षों का वर्णन सर्वकर्म अनुष्ठान भाग ४ में देखें) की लकड़ी (या आक की लकड़ी, नीम की लकड़ी) से दो पीढ़े बनाकर उनपर गदही के दूध से लेप करे। तत्पश्चात् उसके ऊपर विषाष्टक से नामयुक्त दो अकार लिखकर उसे छूकर रात में इस मन्त्र को एक हजार बार जपें। मन्त्र यह है-

मन्त्रः- **ॐ ह्रौं ग्लौं हसौं भ्रौं भगवति दण्डधारिणि अमुकं अमुकं शीघ्रं विद्वेषय विद्वेषय रोधय रोधय भञ्जय भञ्जय श्रीं मायाराज्ञयै ॐ हुं हुं हुं।**

इसके बाद गदहा, भैसा, कुत्ते की पूँछ के बालों को काट कर उससे रस्सी बनाकर उन दोनों पीढ़ों को बाँध देवें। उन पीढ़ों को दीमक वामी के छिद्र में (विपरीत दिशा में उनके मुंह करके) गाड़कर फिर एक हजार मन्त्र का जप करें। इस प्रकार विद्वेषण की सिद्धि होती है। वल्मीक छिद्र में उसे गाड़ देवें फिर मनुष्य एक सप्ताह जप करे तो दोनों मित्रों में बैर हो जाता है।

****

२. ॥ विद्वेषण ॥

(१) दो व्यक्तियों के परस्पर क्रुद्ध होकर लड़ने से उनके पैरों के नाखूनों से उठी हुई धूल को लाकर यदि दो भाईयों के धर में या उनकी पुतलियों को उससे ताड़न करे तो उन दोनों में तुरन्त ही विद्वेष का भाव उत्पन्न होता है।

(२) महिष और अश्व के मल को गोमूत्र से मिश्रित कर उससे जिन दो व्यक्तियो के नाम लिखे जाएँ, उसको पत्थर के नीचे दबायें तो उनमें परस्पर वैर भाव उत्पन्न होता है।

(३) महिष और अश्व के रक्त द्वारा श्मशान के वस्त्र में जिनके नाम लिखकर उसे गाड़ देवें तो उन दो व्यक्तियों में विद्वेष होता है।

(४) षट्कोण चक्र के मध्य में दो शत्रुओं के नाम लिखकर उसके ऊपर **'ॐ नमो महाभैरवाय श्मशान वासिने अमुकामुकयो र्विद्वेषं कुरु कुरु हूं फट्'** यह महाभैरव मन्त्र लिखने से उन दोनों शत्रुओं में परस्पर विद्वेष होता है।

(५) **'ॐ नमो भगवति, श्मशान कालिके अमुकं विद्वेषय विद्वेषय हन हन पच पच मथ मथ हूँ फट् स्वाहा'** – इस मन्त्र द्वारा कटु तैल युक्त निम्ब पत्रों से होम करने से शत्रुगण के मध्य विद्वेष उत्पन्न होता है।

श्मशान की अग्नि लाकर खदिर की लकड़ी से उस अग्नि को प्रज्वलित करे। फिर उस अग्नि में तिल यव और अक्षत् सहित निम्ब पत्र युक्त कटु तैल द्वारा उक्त मन्त्र से अयुत(१० हजार) होम करने से शत्रुओं मे परस्पर वैर भाव उत्पन्न होता है। होम करते समय कालिका देवी का ध्यान करे। यथा–

भावये कालिकां देवीं इन्द्रनील समप्रभाम् । व्योम नीलां महाचण्डां सुरासुर विमर्दिनीम् ॥
त्रिलोचनां महारावां सर्वाभरण भूषिताम् । कपाल कर्तृ का हस्तां चन्द्र सूर्योपरि स्थिताम् ॥
शरजालगतां चव, प्रतभरव वेष्टिताम् । वसन्तीं पितृकान्तरे, सर्वसिद्धि प्रदायिनीम् ॥

इस प्रकार ध्यान कर साधक भक्ति पूर्वक अनेक प्रकार के पुष्पों और छागादि विविध उपहारों से देवी की पूजा कर होम करे। होम के अन्त में उसकी भस्म लाकर पूर्वोक्त मन्त्र से उसे अभिमन्त्रित करे। इस भस्म को जिसके शरीर पर छोड़ा जायेगा, उनमें विद्वेषभाव उत्पन्न होगा, इसमें सन्देह नहीं।

॥ अथ मारण प्रयोग: ॥

कुजवारयुतायां कृष्णचतुर्दश्यां दिने गोशालाचतुष्पथश्मशानान्य तरस्मान्मृदमानीय विडङ्गकरवीरार्कपुष्पयुतां कृत्वा श्मशाने निर्जनालये वा उपविश्य विशिखो नीलवस्त्रधरो भूतवा नीलवस्त्रोपरि निशि तया मृदा पुत्तलीं कृत्वा हृदि वैरिनाम लिखित्वा प्राणान्प्रतिष्ठाप्य श्मशानवस्त्रेणाच्छाद्य तैलेनाभ्यज्य खराश्वमहिषरुधिरेण संस्नाप्य रक्तचन्दनेन विलिप्य धत्तुरपुष्पैः सम्पूज्य तदग्रे श्मशानाग्निं संस्थाप्य तदग्नौ वचासर्षपभल्लातकधत्तुरबीज मिश्रितैरष्टोत्तरशतं जुहुयात्।

मन्त्रो यथा–ॐ म्रां म्रीं म्रूँ मृतीश्वरि कृं कृत्ये अमुकं शीघ्रं मारय मारय क्रों। इति मन्त्रेण सर्व कुर्यात्।

ततः पुत्तलीशिरश्छित्वाऽग्नौ हुत्वा पूर्णाहुतिं कुर्यात्। एकमेकविंशतिरात्र्यन्ते रिपुर्म्रियते। ततः प्रायश्चितं कुर्यात्। तथा च: कर्मस्वेवं विधेष्वादौ भैरवाय बलिं दिशेत्। माषान्नपलमद्याद्यैरेवं सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्।

कृष्ण चतुर्दशी मंगलवार के दिन गोशाला, चौराहा श्मशान इनमें से किसी एक स्थान से मिट्टी लावें। उस मिट्टी में विडंग और कनेर के फूलों को मिला देवें। श्मशान या निर्जन स्थान में बैठकर बाल और शिखा को खोलकर नीले वस्त्र धारण करके नीले वस्त्र के ऊपर रात्रि में उस मिट्टी से पुतली बनाकर उसके हृदय पर शत्रु का नाम लिखकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके कफन से उसे ढंक देवे। उसे तेल मर्दन करके गदहे घोडे और भैसे के रक्त से स्नानकरा कर लाल चन्दन लगावें। धतूरे के फूलों से उसकी पूजा करे। पुतले के आगे श्मशान की अग्नि स्थापित कर उस अग्नि में बचा, सरसों, भिलावा, धतूरे के बीज से मिश्रित द्रव्यों से एक सौ आठ होम करना चाहिये।

मन्त्रः- **ॐ म्रां म्रीं म्रूं मृतीश्वरि कृं कृत्ये अमुकं शीघ्रं मारय मारय क्रों।**

इस मन्त्र से सब कार्य करें। अनन्तर पुत्तली के शिर को काटकर अग्नि में होम कर पूर्णाहुति करें। इस प्रकार इक्कीसवीं रात्रि के अन्त में शत्रु मर जाता है। उसके अनन्तर साधक प्रायश्चित करें। इस प्रकार के कर्मों के आदि में भैरव को माषान्नपलल आदि से बलि देनी चाहिये। इस प्रकार करने से निश्चित रूप से सिद्धि होती है।

॥ अथ अभिचार प्रयोगः॥

मन्त्रः-'ॐ विरुद्धे रूपिणि चण्डिके वैरिणमुकं देहि देहि (दह दह) स्वाहा'-

इस मन्त्र से खडग को अभिमन्त्रित कर खड्ग मन्त्रों का पाठ करने के बाद खड्ग की पूजा करे। फिर एक छाग लाकर उसे शत्रु के नाम से अभिमन्त्रित करे। यथा- **'त्वां अमुकोऽसि'**। इस प्रकार उसे शत्रु रूप कल्पना कर रक्त सूत्र द्वारा उस छाग के मुख को तीन बार बाँध कर उसमे शत्रु की प्राण प्रतिष्ठा करे। यथा-

'ॐ अयं स वैरी यो द्वेष्टि तमिमं पशु रूपिणं विनाशय महादेवि स्फें स्फें खादय खादय'।

यह मन्त्र पढ़कर छाग के मस्तक पर पुष्प रखे। फिर बलि मन्त्र का पुनः पाठ कर बलि की पूजा कर सङ्कल्प करें। यथा-

अद्याश्विने (अमुक मासे) **मासि महनवम्यां** (अमुक तिथौ) **अमुकगोत्रः श्रीअमुकदेव शर्मा अमुक शत्रुं नाशय इमं छागं महिषं वा अमुकदैवतं भगवत्यै दुर्गायै तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

इस प्रकार बलि का उत्सर्ग कर **'आं हूं फट्'** इस मन्त्र से बलि का छेदन करे। फिर **'मूलं एतद् रुधिरं दुर्गायै नमः'** इस मन्त्र से उस छाग का रक्त और मस्तक दुर्गा देवी को अर्पित करे। तदनन्तर उसी छाग के अष्टाङ्गों के मांस द्वारा मूलमन्त्र से होम करे।

प्रथम भाग

सरल बांग्ला भाषी

उग्र मन्त्र प्रयोग

शाबर मन्त्र जागृति

शाबर मन्त्र जागृति हेतु कांसी का पात्र लेवें। उस पर कुमकुम या भस्म बिखेरें। अनार की कलम से मन्त्र लिखें एक बार में पूरा मन्त्र नहीं लिखा जाये तो पुनः कुमकुम और डालकर दुबारा आगे का मन्त्र लिखें रात्री को १०८ बार जप करें। पश्चात् ८ बार खदिर की लकड़ी से पात्र को बजायें। काली मन्त्र व भैरव मन्त्र हेतु रात्रि को कुक्कुट की या अन्य बलि देवे। सात्विकी बलि नारेल से प्रदान करें।

॥ शाबर मन्त्र पुरश्चरण (पुरश्चरणायार्णवे) ॥

शाबर मन्त्र सिद्धि हेतु उस देश या स्थान के देवता की विशेष पूजा कर अनुमति लेवें।

कामरूप देश में कामाख्या पीठ या कामदेश पर्वत पर यन्त्र लिखें। गुरुमुख से सुनकर स्वयं मन्त्र पढ़ें।

गुरु के अभाव में दक्षिण दिशा में योगिनी पर्वत पर मंत्र लिखें वहां योगाम्बा विराजमान रहती हैं। दक्षिण दिशा में मुंह कर मंत्र लिखें।

ज्वालामुखी या हिङ्गुलाज देवी के समीप मन्त्र लिखें शाक्त मन्त्रों में स्त्री समीप को भी कामपीठ माना है। मन्त्र ग्रहण हेतु मन्त्र को भोजपत्र या तालपत्र पर लिखकर कुंभ में स्थापित करें। सूर्य व गुरु का स्मरण कर पूजा कर मन्त्र निकालकर ३ बार पढ़ें। पश्चात् कामनासिद्धि पर्यन्त निर्देशानुसार मन्त्र जपें।

गोरखनाथ गायत्री का जप करें।

॥ गोरखी गायत्री ॥

(१) ॐ गुरु जी सत नाम आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐकार शिवरूपी मध्याह्ने हंसरूपी संध्यायां साधुरूपी हंस परमहंस दो अक्षर गुरु तो गोरख काया तो गायत्री। ॐ ब्रह्म, सोहं शक्ति, शून्य माता, अवगत पिता, विहङ्गम जात, अभय पन्थ, सूक्ष्म वेद, असंख्या शाखा अनन्त प्रवर , निरञ्जन गौत्र, त्रिकुटी क्षेत्र, जुगति जोग जल स्वरूप, रुद्र वर्ण सर्व देवः ध्यायते। आये श्री शुम्भुजति गुरु गोरखनाथ। ॐ सो ऽहं तत्पुरुषाय विद्महे शिव गोरक्षाय धीमहि तन्नो गोरक्षः प्रचोदयात्। ॐ इतना गोरख गायत्री जाप संपूर्ण भया। गंगा गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र कोलांचल अनुपान शिला पर सिद्धासन बैठ, नवनाथ चौरासी सिद्ध अनन्त कोटि सिद्ध मध्ये श्री शंभुजति गुरु गोरखनाथजी कथ, पढ, जप के सुनाया। सिद्धो गुरुवरो आदेश आदेश।

इस मंत्र के जप से सभी विघ्न दूर होते है। गोरखनाथ कृपा से मंत्र जागृत हो जाते है।

(२) गुरु सठ गुरु सठ गुरु है वीर, गुरु साहब सुमरेरौं बडी भांत, सिंगी टोरों बन कहां, मन नाऊँ करतार, सकल गुरु की हर भजे घट्टा पाकर उठ जाग, चेत सम्हार श्री परमहंस।

॥ सावधानियाँ ॥

शाबर मन्त्रों की साधना में गुरु की भक्ति प्रधान है चाहे गुरु कैसा ही हो। अपने मन्त्र को ही सर्वोपरि मानकर दृढ़ आस्था से जप करें।

जप करते समय रक्षा रेखा अवश्य खेंचे। रक्षा रेखा चाहे पानी से खींचे या कोयले या अन्य धातु से खेंचें। यदि भूमि पर ही बैठे हैं तो किसी काष्ठ अथवा अपनी अंगुली से ही पृथ्वी पर रेखा खेंचे। रक्षा रेखा समय रक्षा मंत्र भी पढ़ें।

हनुमानजी की उपासना में कुछ मन्त्र ऐसे हैं जिनमें सर्प आता है तथा धीरे धीरे साधक के शरीर पर चढ़कर नाक की नासिका की ओर आता है तथा ऐसा महसूस होता है कि सर्प नासिका के द्वार से अन्दर प्रविष्ट हो रहा है ऐसे समय साधक को भ्रांति होती है अरे यह सर्प तो पूरा ही प्रविष्ट हो रहा है तब हाथ से पूंछ खीचने के लिये हाथ से झटका देता है तब वे दृश्य विलीन हो जाते हैं। साधक की सिद्धि भी हाथ से निकल जाती है। साधक जिंदगी भर नाक के पास हाथ को छिटकता रहता है।

कुछ विशिष्ट समर्थ साधक आजमाइस के तौर पर अन्य निम्न सिद्धियों की परिक्षा हेतु प्रयोग करते हैं। एक साधक ने मुवक्किल (जैसे हिन्दुओं में कलुआ होता है वैसे ही मुस्लिम तन्त्र में मुवक्किल होते हैं) सिद्ध किये। मुवक्किल सिद्ध होने का दिन था उस दिन साधक उस स्थान पर नहीं पहुंचा तो मुवक्किल ने रात्रि को आकर घर पर पत्थरों की बौछार शुरु कर दी जो एक सप्ताह के पश्चात् धीरे धीरे शांत हुई।

भैरव साधना भी कई तरह की होती है। कुछ क्षेत्रपाल साधारण श्रेणी के होते हैं, कुछ विशिष्ट बलिष्ठ, उग्र व विशेष शक्तिमान होते हैं। साधारणतः वटुक सदैव साथ रहता है तथा विशेष शक्तिमान भैरव यदा कदा विशेष आवाहन पर आते हैं। तथा विशेष कार्य करने में समर्थ होते हैं।

हमारे यहां एक पण्डितजी को वटुक की सिद्धि थी कहीं निमन्त्रण पर जाते तो अपने साथ एक पत्तल भैरव की अलग से लगवाते थे। किसी ने एक दिन टोक दिया कि महाराज आप पत्तल बंधवाकर ले जाते हैं, भैरव खाये तो जाने। उस समय उन्होनें भैरव का आवाहन किया तो यजमान के भण्डारे का भोजन शीघ्र ही समाप्त होने लगा तब जाकर उन्होनें इसे माना। ये पण्डितजी कभी कभी रात्रि को अपने मेहमान को सुरक्षित छोड़ने हेतु भी कह देते थे, मेहमान को महसूस होता था कि हमारे साथ कोई छोटा बालक चल रहा है। पण्डितजी की साधारण दिनचर्या थी एवं कभी उसके माध्यम से धन संग्रह नहीं किया।

हमारे दादाजी के समय में हमारे पड़ोसी ने मुवक्किल व कलुआ सिद्धि प्राप्त कि थी। यदा कदा राजघराने पर विपत्ति के समय उनके द्वारा २-४ महिने की अवधि पर रुपया मंगा देते थे, परन्तु यह भी भय रहता था कि यदि रुपया समय पर वापस नहीं आया तो मेरा जीवन असुरक्षित हो सकता है।

हमारे शहर किशनगढ़ में रेलवे लाइन के पास एक औघड़ रहता था। उसने किसी पर अभिचार कर दिया था। ग्राम "सांभर" निवासी एक वैश्य ने उस व्यक्ति का उपचार कर दिया। ऐसे में वह औघड़ अनायास ही उस वैश्य का शत्रु बन गया। एक दिन वैश्य उस औघड़ को मिल गया, तो औघड़ ने वैश्य से कहा 'आप तन्त्र के अच्छे जानकार हैं, हमारे किये प्रयोग को भी आपने काट दिया' ऐसा कहकर उसने अपने कान में लगा इत्र का फांहा उसे सूंघने को दिया। तो वैश्य ने समझ लिया कि औघड़ ने इत्र के बहाने उसने अपनी शक्ति का प्रहार मुझ पर किया है। घर पर आकर उसने अपने घरवालों से कहा कि मैं अगर मर जाऊं तो मेरे मुंह में उड़द ड़ाल देना व ३ दिन तक जलाना मत। वैश्य मर गया, घर वालों ने उसे नहीं जलाने पर सभी रिश्तेदारों व पड़ोसीयों ने कहा कि 'वह जब जीवित था तबही कुछ नहीं कर सका तो मृत्यु पश्चात् क्या कर सकेगा, अत: वैश्य का अग्नि संस्कार करना ही उचित है' सभी के दबाव में आकर उसका दाह संस्कार कर दिया गया। उसके तीसरे दिन ही औघड़ वहा आ गया एवं उसकी भस्म को संचय कर कुत्ता बना दिया। वैश्य का नाम कालु था, इसलिये उसने कुत्ते का सम्बोधन भी कालु नाम से ही किया व उसको उसके सभी रिश्तेदारों से मिलवाया।

अत: दूसरों के रक्षा प्रयोग को काटते समय अपनी सामर्थ्य देखें और रक्षा प्रयोग अवश्य करें।

उग्र साधना वीरान या श्मशान में करने पर उग्र दृश्य भी उपस्थित होते हैं। डरने पर साधक का अनिष्ट हो जाता है। एक सिद्ध ने अमावस्या को विशिष्ट साधना की रक्षा कार्य हेतु एक साधक को साथ रखा। मध्यम रात्रि में एक दृश्य उपस्थित हुआ कि एक ऊँट पर स्त्री, पुरुष व बच्चा बैठे हैं व उस पर एक कड़ाव भी बंधा हुआ है। पुरुष ने आग जलाई, उस पर कड़ाव रखा और स्त्री को यह कह कर चला गया कि मांस पकाना है मैं अभी आ रहा हुं। उसके जाने के पश्चात् स्त्री ने ऊँट को काटकर कड़ाव में ड़ाल देती है तो भी कड़ाव नहीं भरता है। तो उसने बच्चे को भी काट कर डाल दिया। इतने में पुरुष आ जाता है ओर कहता है कि कड़ाव तो अभी भी खाली है। स्त्री कहती है कि मैनें ऊँट व बच्चे दोनों को तो इसमें ड़ाल दिया है। फिर पुरुष कहता है कि ये दोनों व्यक्ति और भी तो बैठे है। इतना कह कर वह साधकों की ओर खड्ग लेकर दौड़ता है। सहायक साधक इससे भयभीत होकर वहां से भाग जाता है जो बाद में पागल हो जाता है और विशिष्ट साधक गुरु स्मरण व रक्षा मन्त्रों का प्रयोग करता है। जिससे डरावने दृश्य दूर हो जाते है तथा सिद्धियों कि प्राप्ती होती है।

इस तरह सिद्ध साधकों के कई किस्से सुनने में आते हैं। अत: इस तरह अनुभव प्राप्त कर सावधानी रखें तथा गुरु के आदेश व देख रेख में ही प्रयोग करें।

प्रेतात्माओं की शक्ति भी अलग अलग होती है। एक महात्मा अच्छे साधक थे २०-२५ दिन तक गुफा में रहकर तपस्या करते थे। बाहर भी नहीं निकलते थे। एक स्थान पर निधि प्राप्ति हेतु खुदाई करायी वहां पर उपस्थित प्रेतआत्मा ने कार्यकर्ताओं पर हमला कर दिया एक व्यक्ति को विशेष आघात पहुंचा बाबा के द्वारा कई घण्टे उपचार करने के पश्चात् उसकी बेहोशी टूटी। कई गण्डे ताबीज बनाकर दिये किन्तु आत्मा का आक्रोश बना रहा। आक्रोश से बचने के लिये हनुमानजी के मन्त्र, एकमुखी पंचमुखी हनुमत्कवच व अन्य प्रयोग वर्षो तक वह व्यक्ति करता रहा। अंत में किसी बडे मंत्र का सवा लाख जप किया तब जाकर उस प्रेतात्मा ने पीछा छोड़ा।

॥ बंगाल के सिद्ध मंत्र प्रयोग : ॥

हर क्षेत्र में अपनी अपनी प्रांतीय भाषा में लोक देवताओ के अलग अलग प्रयोग प्रचलित है। एक प्रांतीय देवता का दूसरे प्रांत में भी प्रयोग किया जा सकता है। भले ही मंत्र भाषा अन्य स्थान की हो परन्तु यह बात अवश्य है कि मंत्र प्रयोग का कुछ भावार्थ तो प्रयोग कर्ता के समझ में आना चाहिये तभी प्रयोग शीघ्र फलदायी होगा अन्यथा विलंब से कार्य सिद्ध होगा।

कामाक्षा देवी के कारण बंगाल के प्रयोगों को बहुत महत्व दिया जाता है तथा शीघ्र फलदायी प्रयोग समझे जाते हैं।

हमारे गुरुजी श्री नथमलजी दाधीच ने सर्दी, गर्मी वर्षा सभी मौसम की तपस्या व पञ्चाग्नि तपस्या की थी। बंगाल में भी साधना की थी। मोक्ष कामना व साधना व दीक्षा देने में ही रुचि अधिक थी। सकाम प्रयोगों व चमत्कारिक प्रयोगों में रुचि कम थी। बंगाल के जंगलों में जहां जहरीले कांटे वाले पौधे अधिक थे उन क्षेत्रों में सिद्ध पुरुषों से संपर्क कर कुछ तांत्रिक मन्त्र संग्रह किये जिनको उन्होनें अपने जीवन में किसी को नहीं दिये।

उनके संकलन के कुछ प्रयोग 'बंगाली हिन्दी भाषा' के साधकों के हितार्थ व संकटग्रस्त व्यक्तियों हेतु प्रस्तुत कर रहें है। **'काल विकाल बाण'** नामक प्रयोग बड़ा है लेकिन विशेष प्रभावशाली है, प्रेत दोष दूर करने में प्रबल समर्थ कारक है।

गुरुजी विशिष्ट सिद्ध पुरुष थे अत: उनके जैसे आत्मबल वाले को पाठ की १-२ आवृत्तियां ही बहुत थी।

सामान्य शक्ति वाले को २५-३० पाठ करने पड़ सकते हैं। इस प्रयोग में एक शपथ है जिसका अर्थ है **''यदि हमारा वचन लौटे तो सात दिन सात रात भूमि कंपन होवे''।**

मैने इस प्रयोग के बारे में जांचा कि एक पाठ नित्य करने पर ८-१० दिन में समाचार पत्र में कहीं न कहीं भूकंप के समाचार अवश्य छप रहे थे।

प्रेत दोष से मुक्ति कभी - कभी व्यक्ति के प्रारब्ध से भी संबंध रखती है। एक बार मैने एक पीड़िता हेतु यह प्रयोग किया, २-४ दिन बाद एक पुतली बनाकर उसमें प्रेत का आवाहन कर उस पर मन्त्र पढ़ा तो पुतली के अंग टेढे मेडे होने लगे। पुतली का विसर्जन कर दिया थाली जिसमें पुतली रखी थी को अच्छी तरह से धो दिया था। संयोग से पीड़िता ने पूछा कि क्या मैं इसे मिट्टी से और अच्छी तरह से साफ कर दूं, संयोग से मैने हां कर दी तो उस थाली के स्पर्श मात्र से ही पीड़िता के शरीर में जलन व घबराहट होने लगी व पूरे शरीर की चमड़ी जलकर काली हो गई।

ऐसे प्रयोगों को ४०-५० पाठ से अधिक नहीं करने चाहिये। यदि प्रेतात्मा बलवान हो तो नहीं जायेगी उसका उपद्रव कम हो जायेगा। अत: बाद में रक्षात्मक प्रयोगों को साथ में रखते हुये अन्य मन्त्रों के दीर्घ कालीन प्रयोग करने चाहिये। क्योंकि बलवान प्रेतात्मा जाते जाते अन्य कोई हानि कर सकती है। यदि प्रयोग लंबे समय तक करना हो तो दुर्गापाठ, रुद्रपाठ, स्वामी कार्तिक व गणेश जप भी करायें।

मन्त्र प्रयोग में बंगाल भाषा का कहीं कहीं हिन्दी अर्थ भी मैने दिया है।

****

॥ काल विकाल बाण प्रयोग ॥

इस प्रयोग को करते समय देवी घट स्थापन करें, उसमें देवी का आवाहन करें। कार्तिक, गणेश, शिव का पूजन भी करें। दिग् रक्षण प्रयोग स्वयं का एवं अपने स्थान का करें यदि अन्यत्र जाकर प्रयोग कर रहें हैं तो साधक पहले अपने स्थान परिवार व स्वयं का रक्षा प्रयोग करें, फिर जहां प्रयोग करे उस स्थान का बंधन करे। इसके पश्चात् प्रयोग करें। प्रयोग समय धूप, दीप, गुग्गल या लोबान धूप करें। पीड़ित व्यक्ति को पास बैठाकर उसको इसका पाठ सुनायें व बीच बीच में इस मन्त्र से जहां **'फू'** लिखा है उस समय फूंक मारे। इस बाण का प्रयोग किस किस देवता पर कैसा पड़ा वह मन्त्र का प्रभाव दर्शाता है।

श्रीगणेशाय नमः। श्रीकृष्णाये नमः, श्रीधनवन्तरिये नमः, अनन्त कुमाराय नमः, अरु काल विकाल वान जेही वेला (जिस क्षण) **गोहाई बैकुण्ठ आंसाली बैकुण्ठत कत वही गेल तात पासे पुर्न्र** (पुनः) **आही पृथिवी हमीपे** (समीपे) **मन्त्र परीधो हाई धरे एक आता, हेक दिला आता है हूनिया पासै देवता गने आहिला** (वान देवताओं के पास आया) **लवरी किला भैल बुली पासे खेदिया** (खदेड़ा) **आहिल्या भयखाई गोहाई पासे अन्तध्यान** (अन्तर्ध्यान) **भैला** (भये) **तात पासे देवतागने लोकक न देखी** (इस मन्त्र के प्रभाव से देवता लोक में दिखाई नहीं दिये) **आन थाने** (अन्य स्थाने) **सली गैला** (चले गये) **आपुनी आनी आनन्द करीला पासे हवे ओ आसइलै थानते आत गोहाई हाध्य पाती वाक लैला हरगौरीये स्वाहा, मधुहधात्र स्वहा, वेदाये स्वहा, प्रलये स्वहा, वावुए स्वहा, वरुनाये स्वहा, जुगसराये स्वहा, कूर्म रूपाये स्वहा, निजहस्ताये स्वहा, एही बुली जता आरंभिला** (इस प्रकार आवाहन से प्रयोग आरंभ किया) **अनेक देवतार भाय गौहाई** (अनेक देवताओं को भय हुआ) **प्रिथवी देवाना मंत्रे रे बांधी थैला** (पृथ्वी के देवताओं को मन्त्र से बांधा) **खं किरी फू फू सु सु रा रीं सिं सी थि आरु सं खं जे रं धि रू रू भां हुं लं विं विं फूं यं गं गं सिं हं हूं हूं सिसीय अं आं ता खं रिं रीं कू कू कां सवहा हाख सरीं हूं हूं हूं हं दिसं वं जं हूं के फी री दं नं लिलीया दं दं लं लं गं गं हवि हखां रुपलं तियं क्रैथं नम नं जिसी घु घु हं हं लि ली जमां रां रां एह सलिली परुवा फं फं भुं मूं हीं हीं नां कूं पां नि खं खं सुसुदि अं मसरं वितं वां जूं जं जुवा जुव लिं लीं लां ऐ ऐ लु लु धुनां ह ह ऐ ऐ हां वि वि कं सा सा यं धं धं हं हं हं हं हो हो हुं हुं स स वि वि वि हां रव रवं खीं कालं मिसारदं तूत दू हं ओं धं दि सु रु मुहुं सा सा सान्त कृता** (शान्ति करे) **नहं नहं स्वहा स्वहा हा तो स्वाहा** फू (फूंक मारे) ।

एही मन्त्र उचारीया पृथिवा खान बान्धीला फू (यह मन्त्र उच्चारण कर पृथ्वी क्षेत्र को बांध दिया) **पासे पूजाकरी वाक लैला द्रव्यक गुसाईला** (फिर पूजाकरी द्रव्य मंगाये) **मृगु माह जोवा साउल केसा माल भोग फल पिलागुरी मिथै दिला** (मालपुआ व अन्य भोग फल चढ़ाये) **गंध धुपाये फूल पुष्प हेयम हमस्त आनीला व्रतकरी** (गंध धूप फूल पुष्प समस्त लाकर व्रत किया) **पूजात वहीला नतुन कला व्रत पीन्धीला आगत पातील पातर व्रत आनि नवीन आखत पातीला गुहाई वहीला तिल कूह और सावल दूवरी तुलही दुग्ध हवा को गोपई लैला** (आंगन शुद्ध कर पत्ते बिछाये नये अक्षत दूध, दोव तिलकूटा तिल चांवल तुलसी इत्यादि चढ़ाये) **उरहूते दिला आनि आनी स्याम रूपे काय पिला संद्र** (इन्द्र) **आदि करी समस्त के दिला व्रत करी कालर नामे नाम दिला है** काल विकाल **र पूजा** (इस तरह व्रत पूजा करी जिसका नाम काल विकाल पूजा रखा)

पृथ्वीवित थैला पूजा गोहाईर काल विकाल र पाहे (पास में) **सली गैला एके निमीहेकगै** (एक क्षण में) **जमर भुवनक पाईला** (यमराज के भवन में वाण चला गया) **वही आसे काल विकाल दरीहन पाईला पासे काल विकाल तुती करी** (फिर काल विकाल की स्तुति करी) **वाक लैला** (फिर कहा) **हे प्रभु तुमी रामसन्द्र** (रामचन्द्र) **तुमी अन्तरयामी मनुष्यर सेष्ठाक देखाई ले स्वामी कि कारने इतो पूजा करीला आमार** (हमारे) **मनुष्यक देखाईला ईतो व्यवाहार आदेख** (आदेश) **करीला गोहाई एखने** (एहीक्षणे) **सली जाओ आपनाक पूजा दिवाक लागे हासढर आस्त्रई आमार पूजा कैलो पूजाक प्रभु आपनार नारी के उसीत नर लोके करे पूजा ताहाक हमीपाओ** (पास में) **एही मात काल विकाल तुती** (स्तुति) **अनेक करीला कालविकाल उसीत गोहाई तुष्ट गोहाई वुली वसन हूंना हूना कालविकाल पृथीविक सलीजोवा** (कालविकाल वान पृथिवी के पास गया) **एतीक्षने** (इसी क्षण) **मोहोर आदेहे** (मेरे आदेश से) **एतिक्षने जोवा सली स्वर्ग मत्य पाताल आदि करी तिनिओ भुवन बांधी** (इसी क्षण स्वर्ग, मृत्यु, पाताल तीनों लोक बांधो) **देवताक थैला बन्दी करी एही वुली गोहाये** (गुहार करी) **आदेह करीला तेतिक्षने** (उसी क्षण) **कालविकाल पृथिवीक सलीगैला पासे देवता गनक** (देवगण) **भाग भागकरी बान्धी वाक लैला, कोनो देवताक धरी धरी बान्धी थैला** (देवताओं को धर धर बांध लिना) **बान्धोंते बान्धोते तार नाथा किला** (कथा करी) **थाई आंगल देवता गन भगीया पलाई हूं हूंकार सारीजा देवता माया सारी हूवार हूं हूंकार सारीजा लंकार पार नाहीवि आमुकार घरवारी हीमा हंसार** (फूः) (हे माया तू लंका के पास चली जा मैं अमुक रोगी के घर परिवार सीमा को बांधता हूं।)

ऐ ऐ रे देवतागण न पलाई जाह (हे देवता अगर तू नहीं भागता है) **केन एई मते जदि न पलाव कामाक्षा मावर माथ खाव** (यदि नहीं जावे तो कामाक्षा माँ का माथा खावे) **पासे कालविकाल घोर री दिला पृथीवी हईते कंपीवाक लैला** (कालविकाल की गर्जना से पृथिवी सहित कंपन होने लगा) **कतो एक** (कोई एक) **देवतागने पलाई** (पलायमान) **आन्तरीला** (अन्तर्ध्यान) **कतो देवतागने जाईदार धरी हातो खान भुवन कंपीवाक लैला** (सातों भुवन कंपन होने लगे) **कतो देवतागने हागर तिरे स ली गैला** (कोई देवता समुद्र में चले गये)

देखी लेक देवतागने हागर प्रलय हा तो खान (तो वाण के प्रताप से सागर में प्रलय होने लगा) **हागरे करे जय जय मान र र थौ उथील मच्छ मगर बान्धी वाक लागीला** (समुद्र के मगर मछली को बांध लिया) **हागर पानी गै हमे परय वर वर जल जन्तु मूसरीया खाईला जलर जलमाया भागिया पलाईला** (जल जन्तु मारे गये, खाये गये जल की माया भागने लगी) **पासे तृाहार विपती देखीया देवतागन सलीगैला** (पास में इस तरह की विपत्ति देख कर देवताओं के पास गये) **मेरुर हमीपे मेरुगीरी भागीया पलाईला** (मेरु पर्वत की शरण ली तो मेरु पर्वत भागने लगा) **गन्द गन्द हूया मेरु आकाहे उराया** (मेरु आकाश में उड़ने लगा और खण्ड खण्ड हुआ) **कतो कतो मेरु गन्द हागर परय** (कोई कोई मेरु पर्वत के खण्ड समुद्र में गिर गये) **वर वर मेरु गिरि भागीया परय तात पासे देवतागन पाताल सलीला** (मेरुगिरि के भागने पर देवता गण पाताल चले गये) **पाताल नागगन भागीया पलाईला वासुकी पलाईला** (पाताल के नागगण व वासुकी भागने लगे) **पलाईते थाई नाई पातालर वाहूकी** (वासुकी) **कम्पे बहूमती आई खेत्र देवता कम्पे फाटादि पलाई नागगन कतेक पलाई कतो कतो रुधीर वही गैला** (नागगण भाग गये और कितना ही रुधिर बह गया) **कतो कतो नागगन मन्द सीगी गैला वाहूकीर ही हां हन खहीया परीला तातपासे देवगन लरी आहील पृथीवीत देखीला अद्भुत अमंगल, व्याधिकम**

आसे ताहातअ देखीला (पृथिवी पर अदुभुत अमंगल, व्याधि देवताओं ने देखी) **पृथीवित घोर आहूकाल पारे देखीला तहीत विदृत्य हंसारे** (बिजली की चमक) **घने घने हूं हूंकार घने घने विहत करे वर वर हमुद्र** (समुद्र) **तोमार आमुकार** (रोगी का नाम) **ही तो मेघर गरजन विदूलीर हंसारे पृथीवित फातीय जाई** (बिजली के संचार से पृथिवी फट गई) **देवगन भागीया पलाई वर वर विहंगन उजारी परम** (वीरान व उजाड़ हो जाय) **ताक वाजे लै जाई विख्य वन्धा आदीकरी हमस्ते** (समस्त जगह) **जहरीला वायु आदीकरी, हमस्ते पलाईला अग्नी जुमाई जल हुकाई यही हम आकाहे** (आकाश में) **उरय कतो कतो यही हवे आकाहा उरीते नापारे कोन कोन थाने** (स्थाने) **गैया मरहपरी वर वर हस्तीगने पाती अमस दान्त निकटाई हींह** (सींह) **बाध महीह वाराह आदि करी पृथीवि कंपीया** (हाथी, सिंह, बाघ, वाराह के चिल्लाने से पृथिवी कंपन होने लगी) **आसे कार थरि नहीं भोरी हाते पासे देवगने सर्ग** (स्वर्ग) **सली गैला वरभुत हर्गते देखीला आकारवत हून्य** (शून्य) **पासे हरग** (स्वर्ग) **खने पासे कंपीधुरी वाक लैला आकाहर तारागन खहीया परीला** (पूरे स्वर्ग में शून्य हो गया आकाश के तारे गिरने लगे) **इन्द्र आदि करी विस्मय माविला देवगन कमाति सलीवे लागीला आस्वहिया देवगन सली ओक बर्म्मार गोचर हेन हूनि बरम्भार निकते सलीगैला** (सभी देवता इकट्ठे होकर ब्रह्मा के पास गये) **पासे देवगन बर्म्माक लुतीवानी करी वाक लैला** (स्तुति वाणी करी)

हे बर्म्मा! हे विष्णु! तुमी अधीकारी तिउनिओं लोकोक तुमी आसा रक्षाकरी (तुम्ही तीनों लोक के अधिकारी हो एवं आपे से ही रक्षा की आशा है।) **एखने तोमार स्त्री सृ हव नष्ट भैला** (इसी क्षण आपकी सृष्टि, श्रीः नष्ट हो जायेगी) **थाकीवे नोवारी पासे हवे ओ आहीला प्रलय कालत रुद्रे प्रजा हंहारय हेहीमते तोमार** (प्रलयकाल में जैसे रुद्र प्रजा संहार करते है वो ही गति तुम्हारी भी होगी।)।

सीष्टि (सृष्टि) **होय रक्षा करा बर्म्मा तुमी आयुनी आहीय नतुवा** (नहीं तो) **आमार मृत्यु** (हमारी मृत्यु) **मिलील आहीया नतुना** (नहीं तो) **आमार मृत्यु** (हमारी मृत्यु) **मिलील आहीया हेन हूनि बर्म्मा देव वुलीला वसन हवे** (सभी) **देवगन सलीओ एखन माहादेव रकासे** (महादेव रक्षा करे) **जोवा हीघ्र करीं माहादेवे राखी नेक प्रणनीत करी हेन हूनि देवगने केलाहे गैला** (कैलास पर गये) **कैलाह हहीते कंपीया** (कैलास कंपित होने लगा) **आसीला उमा देवि हम निते माहादेव वही आसे तात पासे देवगन देखी तुती करी लन्त पासे रक्षा करा माहादेव तुमी तैलकर अधीकारी तुमी विन अन्य जने राखीव न पारे हेन महादेव वुलीला वसन काती** (कार्तिक) **गनपती हम सलीव एखन एही वुली माहादेव काती गनपती हमे आदेह करीला हवे देवगन सली गैला कालविकालर पूजा पातीला** (कार्तिक गणपति के आदेश से कालविकाल की पूजा करी) **अनेक फल फूल आनि** (अनेक फल फूल लाये) **लेकसाई पीथा परमान दिलन्त हजाई घृतर वाती** (घी का दीपक) **दिले गंध पुष्प धूप दीप और साउल द्रव्य व्रत करी हूल्क वष्ट गावर लैलन्त अनेक प्रकारे नाना द्रव्य दिला काती गनपती पूजात वहीला काल विकाल तुती करी ओ उसर्गा दिलन्त कालविकाले तुष्ट भैला** (काल विकाल संतुष्ट हुआ) **पूजा पाई कालविकाल महारंग भैला देवताक राखी वाक उपाई करीला** (देवता की रक्षा का उपाय बताया) **मंत्रपरी कालविकाले धेनु लैला हाते कालविकाल वान खान एरीदिला आकाहर पथे वान खन जाई** (वान आकाश पथ की ओर गया) **पासे निजान करी हवे देवगने त्राहि त्राहि वुली पलाई वाक लैला पासे कालविकालर वान पाताले सली गैला पातालर नागगन बांधी वाक लैला तार पासे आही वान कैलाहे**

****

सलीला भूतप्रेत पीसांचगन हमस्तके बांधीय थैला तार पासे वानखान इन्द्रर भवने सलीला हर्गर देवताक बांधीया थैला सन्द्र (चन्द्र) **हूर्य** (सूर्य) **वाउ वरुन आदी करी बान्धीला तार पासे वान खान हागरे सलीला हातो खान हागर खलकि लागीला** (सागर खलकने लगा) **पासे हागरर माया देवगनक हमस्ते बान्धाली तार पासे वान खान मेरुत सलीला मेरुगिरी जत्य रख्य** (दैत्य राक्षस) **गनक बान्थी वाक लैला** (फूः) **पती हमे आदेश करीला तार पासे वान खान हहूरी दिहे** (सारी दिशायें) **गैला हहूरीक सारी देवगनक बान्थीवाक लैला दाईनि दाकिनी जोगिनी** (डाइन, डाकिनी, जोगिनी) **देव देविक साई खाईते आदीकरी बान्थी वाक लैला तार पासे वान खान हीलागुरी परवते सलीला तार खेत्र गनक** (क्षेत्रगण) **बान्थी लैला तार कतो खेत्र पलाईला जाई ताक कालविकालर वान बान्थीला सकुपकाई कतो कतो खेत्रगन** (क्षेत्रगण-क्षेत्रपाल) **बोले आई वोपाई ।**

ताक बान्थो कालविकालर वान मेराई मेराई कतो कतो खेत्रगन कैत्य जाई तो की करीवो कैत्य लेवो थाई कोन कोन खेत्र बोले ईहान (ईशान) **हावर एरन न जाई एही घर खेत्रगने कातवाओ करी लाल मते बान्थी थैला तार पुर करी एईमते थाको परीमई बान्थो हमस्तके एक थाई करी एही मते कालविकालर वान खान सलीया आहीला काल विकाल पासे पिस्ती पाईला लालकरी एक हूं हूंकार दिला हूं हूंकार हवदे वान आहीलाल वरी पासे कालविकाल बोलन्त हादरी तार पासे कालविकाले बूलीला वसन सलीजुवा वान पृथीवी भुवन हमीदिवो पिथागुरी तोक लागी सला आठ कोना पृथीवित जत पवा हवाको खाईवा सली जोवा एतीक्षने हूनि वान खान उलाह करीला हवे देवताक खाओ वुली आनन्दकरीला पासे काल विकाले मन्त्रक परीला देवताक थाने थाने बन्दी करी थैला** (फूः) **क्ष सि सी अं थं मुं भुं हूं हूं आलं कं कं सु सु रि वितं तं हैला हूं खालं को पेतोव सि सी ऐ कि कि ऐं द स्त्रा दासरु हूतं दू दू प्रेतं हूं किलं ससक्र** (सचक्र) **हथवं** (बध्वं) **खं खं प काय रि री धरं ओं रां तोरा गुओ अं ली सं सं राव मारो आ स सं लिं सं वहं वहं के के ओं ओं हूरीत्य मदकं आहोद विहाद देहर परसय बम्मार** (ब्रह्मा के) **जत्यय हीथरी विमय रुद्रय हरय प्रलय करय प्रहार स्वहा स्वहा** (फूः) [जिस तरह रुद्र हरण, प्रलय करे उस तरह प्रहार करे स्वाहा]

(आगे सभी दिशाओं में बाण प्रहार का वर्णन है)

दखीनक मारो तईया वान दखीनक देवताक बंधी थरीआन, पसीमक मारो कालविकाल वान पसीमर देवताक बान्थी धरी आन, मारो वान उत्तरे जाई जमर भुवन देवता धरी धरी खाओ जजावान तई पूर्वे सलीजा पूर्व दिहर देव हव आपूनी धरी धरीखा मारो वान ऐहाने सलीज ऐहानर देवता धरी धरीखा, नैरीते मारोवान हीघ्र सलीयाजा नैरीतर देवताक धरी धरी आन आग्नीये जावान तई अग्नीर देवताक धरी धरीखा वायूये मारो वान कालविकालर वान वायुर देवताक करो खान खान अर्द्धे मारो कालविकालर वान अर्द्धे देवताक करो खान खान आकाहे मारो कालविकालर वान आकाह देव करो खान खान पाताले मारो काल विकालर वान पातालर देवताक करो खान खान मारो वान कैलाहे जा कैलाहर देवताक धरी धरीखा जा वान हर्गे सलीजा हर्गर (स्वर्ग के) **देवताक काती काती** (काट काट) **खा मारो वान देवतार गाते** (शरीर) **होमाई जा दह देवतार गात हौमाईगै** (दस दवताओं का शरीर होम दिया) **मारीलो कालविकालर वान कोनो कोनो देवतार नाही के परीत्रान पासे वान खान वायु वेगे सलीगैला खेत्र देवताक बान्थी वाक लैला।** (क्षेत्र के विभिन्न देवताओं का बंधन इस प्रकार लिखा है) **प्रथमते बान्थी वाक लैला खत्रर वान खेत्रर वान बान्थी करीला**

****

निजनि आरु क्षेत्रवान बान्थी करीला निजनि आरु क्षेत्रवान बान्थी करीला निर्जीव आरु क्षेत्रवान बान्थी करीला खान खान सं देवता खेत्रक बान्थो साई देव खेत्रक बान्थो अगाई देव खेत्रक बान्थो वगरा देव खेत्रक बांधो राजदेव खेत्रक बांधो पराई देव खेत्रक बांधो जुनि देव खेत्रक बांधो वर देउ खेत्रक बांधो हरुदेव खेत्रक बांधो हेंगादेव खेत्रक बांधो सन्दादेव खेत्रक बांधो सुजीदेव खेत्रक बांधो धुख्यदेव खेत्रक बांधो धुलीदेव खेत्रक बांधो मायादेव खेत्रक बांधो सुलीदेव खेत्रक बांधो वोन्द्रादेव खेत्रक बांधो सन्दादेव खेत्रक बांधो सोवदेव खेत्रक बांधो वेतमेलादेव खेत्रक बांधो सलनादेव खेत्रक, बांधो तेपिओदेव खेत्रक बांधो नमोवादेव खेत्रक बांधो कहूवादेव खेत्रक बांधो रजतादेव खेत्रक बांधो दिमादेव खेत्रक बांधो हस्तति दुरुवादेव खेत्रक बांधो ओमादेव खेत्रक बांधो ऐसरदेव खेत्रक बांधो ऐलरदेव खेत्रक बांधो औंगादेव खेत्रक बांधो औं जुतीदेव खेत्रक बांधो ऐकिजादेव खेत्रक बांधो उसातदेव खेत्रक बांधो उकालदेव खेत्रक बांधो उलख मेवापा देव खेत्रक बांधो उदादेव खेत्रक बांधो कसोवा देव खेत्रक बांधो उहदेव खेत्रक बांधो ओसर देव खेत्रक बांधो उसा देव खेत्रक बांधो उदूदेव खेत्रक बांधो उत्तमदेव।

खेत्रक बांधो कंपोवादेव खेत्रक बांधो कहादेव खेत्रक बांधो कलादेव खेत्रक बांधो फूलादेव खेत्रक बांधो कसारीदेव खेत्रक बांधो कमारीदेव खेत्रक बांधो मुरारीदेव खेत्रक बांधो मासुवाईदेव खेत्रक बांधो कटा देव खेत्रक बांधो कसोवा देव खेत्रक बांधो कमला देव खेत्रक बांधो धरा देव खेत्रक बांधो घुमति देव खेत्रक बांधो घने घने पानीखुवा देव खेत्रक बांधो घहुवा देव खेत्रक बांधो घमुवा देव खेत्रक बांधो खहा देव खेत्रक बांधो घटमतीया देव खेत्रक बांधो कोवोवा देव खेत्रक बांधो गोरखोवा देव खेत्रक बांधो गोधा देव खेत्रक बांधो गोजोरा देव खेत्रक बांधो गोवर पेलोवा देव खेत्रक बांधो गाव गाव देव खेत्रक बांधो गुछोवा देव खेत्रक बांधो गुरीया देव खेत्रक बांधो गहीन देव खेत्रक बांधो गरखिया देव खेत्रक बांधो गपोवा देव खेत्रक बांधो खामोसा देव खेत्रक बांधो खुन्दामरा देव खेत्रक बांधो खटमतीया देव खेत्रक बांधो खहूवा देव खेत्रक बांधो खतिया देव खेत्रक बांधो जाती देव खेत्रक बांधो जहरा देव खेत्रक बांधो राजा देव खेत्रक बांधो जलजतीया देव खेत्रक बांधो सराई देव खेत्रक बांधो जम देव खेत्रक बांधो जालोवा देव खेत्रक बांधो जजा देव खेत्रक बांधो जुम जुमी करा देव खेत्रक बांधो नतुवा देव खेत्रक बांधो लतुवा देव खेत्रक बांधो वासनि देव खेत्रक बांधो नमता देव खेत्रक बांधो नामलोवा देव खेत्रक बांधो निवोसाया देव खेत्रक बांधो निमता देव खेत्रक बांधो भंगा देव खेत्रक बांधो निमाती देव खेत्रक बांधो नदियाल देव खेत्रक बांधो नामगोवा देव खेत्रक बांधो मदाही देव खेत्रक बांधो मस्ता देव खेत्रक बांधो महीलीया देव (फूः)।

खेत्रक बांधो मलमली देव खेत्रक बांधो मिलीका देव खेत्रक बांधो मकरा देव खेत्रक बांधो मरकूसी देव खेत्रक बांधो माया देव खेत्रक बांधो नमता देव खेत्रक बांधो वेंगरा देव खेत्रक बांधो पोरा देव खेत्रक बांधो फें फं फें पसादिया देव खेत्रक बांधो पलरीया देव खेत्रक बांधो परुवा देव खेत्रक बांधो मलुवा देव खेत्रक बांधो परुवा देव खेत्रक बांधो कम्पा देव खेत्रक बांधो परी देव खेत्रक बांधो घेनकरा देव खेत्रक बांधो पसादिया देव खेत्रक बांधो परुवा देव खेत्रक बांधो यमा देव खेत्रक बांधो पलया देव खेत्रक बांधो जिलवा देव खेत्रक बांधो पिपरा देव खेत्रक बांधो करी देव खेत्रक बांधो फतफतीया देव खेत्रक बांधो कता देव खेत्रक बांधो केसा देव खेत्रक बांधो कदूली देव खेत्रक बांधो केसुवा देव खेत्रक बांधो फिताही देव खेत्रक

बांधो फेरेका देव खेत्रक बांधो फेसा देव खेत्रक बांधो कला देव खेत्रक बांधो फूर फूतिया देव खेत्रक बांधो हाहीनि देव खेत्रक बांधो हाहा देव खेत्रक बांधो हूतहूतिया देव खेत्रक बांधो हेसा देव खेत्रक बांधो हामीया देव खेत्रक बांधो हासीया देव खेत्रक बांधो हल हलिया देव खेत्रक बांधो हातबोवा देव खेत्रक बांधो हालवेवा देव खेत्रक बांधो हाई देव।

खेत्रक बांधो हूकीया देव खेत्रक बांधो हना देव खेत्रक बांधो हरीपाल देव खेत्रक बांधो हेकेतिया देव खेत्रक बांधो हाहूमीया देव खेत्रक बांधो धोलवोवा देव खेत्रक बांधो हारहरी देव खेत्रक बांधो हूमहूमीया देव खेत्रक बांधो हालोवा देव खेत्रक बांधो हवय देव खेत्रक बांधो 'हर वेटा हर रुगीयार गावर मत हतर एरीया जा पर मोर वसन लरसर कर देवीर माथा खान खाह महादेवर जन्तत पाओ मलस बर्म्मार सक्रत परीमर देवीर हूनत घर हूद्रसन सक्रत परीमर' (फूः)

(हे प्रेत! रोगी के शरीर को नुकसान मत पहुंचा अन्य स्थान पर जा यदि मेरा वचन नहीं माने तो देवी का माथा खावे महादेव के अस्त्र व ब्रह्मास्त्र की मार पड़े देवी के सुदर्शन चक्र का तुझ पर प्रहार होवे)

'सतजनी गरभावती वधकर हूं हूं हूं कार सारीजा लंकार पार हूं हूं उं प्रजर फूं कां हूं हूं श्री गुरुर पाओ हूं हूंकार सारी जा लंकार पार नाहीवि आमुकार घरवारी हीमा हंसार' (फूः)

(यदि मेरा वचन नहीं माने तो सात गर्भवती स्त्री की हत्या का पाप लगे, गुरु का आदेश है, हे प्रेत तू लंका के पार चला जा मैं अमुक रोगी के घर परिवार व सीमा का बंधन करता हूं। प्रयोग की शक्ति के अनुसार गर्भवती स्त्री के घर में प्रयोग नहीं करें अथवा प्रयोग समय गर्भवती स्त्री प्रयोग के सामने नहीं आवें। गर्भवती स्त्री व परिवार का रक्षाकर्म पहले करे फिर प्रयोग करें।)

'जदी आकुताई ओसर सापी काल विकालर वाने पलाम काती हर वरे हर अमुकारगाव रंद एरीया पर' (फूः)

(यदि वापस आवे तो काल विकाल वान से तेरे टुकड़े होवे अमुक के शरीर व क्षेत्र का बंधन करता हुं। प्रयोग में क्षेत्र की जगह आंग्ल (इंगलिश) शब्द एरीया का उल्लेख २ बार आया है अतः प्रयोग प्राचीन होते हुये भी विदेशी संस्कृति के प्रचलन का आभास होता है)

खेत्रर माया भाती दिया जाईवि नाहीवि तई ओसर सापी घरर खानी हानी अती अद्भुत होनर मारली रुपर रुवा हीरा मुकतार खेर तमाल काह पितलर कापी कामी घरखानी हाजी मई आसो साई देवतार माया भागीया पलाई।

(सब देवता की माया पलायमान हो)

''अरे अरे यख्य जाती जानो जनम जाती तई नाथा कीवि रोगीर घरे एक राती कालविकालर कथा हूनिले भागीया पलाईवि भागीन पलाई थकी रई कालविकाल तोक खावगै''।

(अरे यक्ष राक्षस जाति के, तू रोगी के घर एक बार काल विकाल की कथा सुन ले तो तेरे को भागना पड़ेगा यदि नहीं जावे तो तेरे को कालविकाल खावेगा)

****

जैते हून तई कालकविकालर कथा तात तात नाथा कीवि रई बेटा कालविकालर हूं हूंकार जिपी ने जाई आसोक मनुष्य देवतार लागे भय, रामर हूं हूंकार जिपी ने जाई हकलो देवता भगीया पलाई मोर (मेरा) कालविकालर वान जिपी ने जाई "तृदह कूटि देवता (तैतीस करोड़ देवता)" भागीया पलाई कालविकालर वान जिपी ने जाई दैत्य दानव भागीया पलाई।

घर बांधो दूवार बांधो सोताल बांधो बांधु लोहार हेंगेंरा पदूली बांधो वारी बांधो जपना बांधो वाट बांधो नागला बांधो जां बांधो मारली बांधो बांधो आखलर बांधो सुरु मारक बांधो वापरेक बांधू गोहालीर गोरु रुवा बांधो मारली बांधो बेरा (कुआ) बांधो साल बांधो कामी बांधो गाठा बांधो बांधो घरर खेर घरर सारी कोना बांधो बांधो सोतालर धुलीसारी मारीलु सारी देवतार माया पलाईतो काति नाहावि देवता ओसर सापी आकाहे बांधो पाताले बांधो पूर्वे बांधो पहीमे बांधो उत्तरे बांधो दखीने बांधो अर्द्धे बांधो उर्द्धे बांधो बान्थीलो दह दिह बांधीलो, देवता आवे करीवि किह तृदह कूटि देवता तुमी माखी बांधीलो देवता थाई हाख़ी हैवा बहूमति आई श्री हंकरक (शंकर को) नमस्कार करो हीतागोहानि को (सीता सति को) नमस्कार करो श्रीराम को नमस्कार करो सन्द्र हाखी (चन्द्र साक्षी) हूर्य हाखी (सूर्य साक्षी) हाखी हैवा बहूमति आई बांधीला देवता नेकान्दीवि तई मोर मुख लैसाई "तई थाक धरनित परी मई" (तु थककर पृथ्वी पर गिर जाये)

आहो गुरु हेवा (सेवा) करी बांधीलो देवता दहनला आदीकरी मारीलो श्री लख्यर साती दीलो देवता तोक अजर गाथी हारे मगजुवे धरीवि आती एह सन्द्रर पराकहे सन्द्रक (इन्द्रको) बांधो दहनारी आदी करी हारे हारे बांधो साले साले बांधो नारीये मगजुवे बांधो दहनारि बांधो सैध्यखन दूवार बांधो लोमे लोमे बांधो (रोम रोम बांधो) हारे मगजुवे बांधो ते जे मोहे धरीवि आती देवता पलाई वाक न पाई लेक गाथी 'मकरा जालत करीली बन्दी' (मकड़ी के जाल की तरह बंदी करता हूं)। मारीलो वान देवताक पोरो हीतो देवताई नामकरी काकुति करे गाव भैला तार सेंसा पोरा सक्षु भैला जेन तार हालदिय हात भरी लरीते सरीते न पारी हीता हीदध परीथाक कि खाओ कि खाओ खाओ व ओ वाते मारो घरवुली हीतो काकुती करय एरीदिया वाय गुरु खाओ गुसी जावो नामारीवा वाय गुरु न करी वाहास्ती एरीलो होई हांक वुलीलो होवानी हले हले एही वुली देवतागने एरी गुसी गैला 'अमुकार हरिर' (अमुक रोगी के शरीर का) पानी जेन भैला पृथीवि गंगा क बांधो अहीनिकुमार क (अश्वनीकुमार को) बांधो माया प्रेत क बांधो मांखे बांधो मध्य बांधो पूर्वे बांधो सन्द्रहूर्य दखिने बांधो जम कुबेर क उत्तरे बांधो जमर दूवार पसीमें बांधो गुलै कुबेर क अर्द्धे बांधो उर्द्धे बांधो वायू क बांधो अग्नीत्र बांधो एहाने बांधो नैरीते बांधो, बांधो परवत हाल आकाहे बांधो पाताले बांधो, बांधो आथ (आठ) कोना दिह बांध आथ अपेसुरी आताले बांधो पाताले बांधो, बांधो सौद्ध ताल हर्गे बांधो मध्य बांधो, बांधो दहो दिह सौ कूना बान्थी करीली बन्दी माया पलाई वार 'ना पालाउ हन्थी जदी काल विकालर वान क्रोधे जली जाई' (यदि माया पलायन नहीं करे तो कालविकाल वान के क्रोध से जल जाये)

बर्म्मा विष्णु आदी करी एरन न जाई हरमाया हर पाताते हर मारीलो माया एरीबा पर अरे अरे माया तोर जानो (हे माया मै तुझको जानता हुं) जनम जाती मोहोर कथा हूनिले तई नाथाकीवि एक राती कोन माया तई हू न (तू सुन) कान पाती (कान लगाकर) तई काह माया क बांधो धुगुवा मायाक बांधो।

[आगे सब देवता, जीव जन्तु की माया को बांधने का वर्णन है]

साग माया क बांधो उतर माया क बांधो, हरन माया क बांधो, पुरन माया क बांधो, पिराली माया क बांधो, लाओ माया क बांधो, कामोरा माया क बांधो, सन्द्र माया क बांधो, हूर्य माया क बांधो, इन्द्र माया क बांधो, अपेस्वरी माया क बांधो, वायू माया क बांधो, वरुन माया क बांधो, कुबेर माया क बांधो, अग्नि माया क बांधो, ब्रम्म माया क बांधो, पानीया माया क बांधो, धोपिनी माया क बांधो, धेपि माया क बांधो, दाह माया क बांधो, दह माया क बांधो, दहखान माया क बांधो, जुपी माया क बांधो, थलीमाया क बांधो, उरुवा माया क बांधो, पाद माया क बांधो, कतिका माया क बांधो, वाहन माया क बांधो, दहन माया क बांधो, थोना माया क बांधो, पलरीया माया क बांधो, पतेवलि माया क बांधो, विलधरीया माया क बांधो, सेक सेकिया माया क बांधो, भेलेंगा माया क बांधो, खारोके माया क बांधो, ककुरा माया क बांधो, कपतिया माया क बांधो, बांधो हकति माया क बांधो, रं माया क बांधो, केतुवा माया क बांधो।

नतं खेत्र माया क बांधो, अकल हरीया खेत्र माया क बांधो, हाहन हलीया माया क बांधो, मीमुल माया क बांधो, गाहरी माया क बांधो, जल माया क बांधो, गाहार माया क बांधो, जम माया क बांधो, हूर्ज माया क बांधो, मांह माया क बांधो, हागर माया क बांधो, हर्ग माया क बांधो, मेघ माया क बांधो, विख माया क बांधो, कपनि माया क बांधो, परवत माया क बांधो, साली माया क बांधो, जल माया क बांधो, सिलनि माया क बांधो, फेंसा माया क बांधो, कूकूर माया क बांधो, धनु माया क बांधो, ढोप माया क बांधो, फूरनि माया क बांधो, श्री री माया क बांधो, आर्ख माया क बांधो, हाखी माया क बांधो, गोहानी माया क बांधो, खर्ग माया क बांधो, सुली माया क बांधो, मनुष्य माया क बांधो, अकाम सुरीया माया क बांधो, मृग माया क बांधो, फूरा माया क बांधो, काजली माया क बांधो, विंही माया क बांधो, अहारी माया क बांधो, दाह माया क बांधो, कामरी माया क बांधो, हाहीनि माया क बांधो, दाहिनि माया क बांधो, हागर माया क बांधो, कूकूरा माया क बांधो, भूतनि माया क बांधो, डाकिनी माया क बांधो, शाकिनी माया क बांधो, श्रीगुवा माया क बांधो, हालथी माया क बांधो, पानी खोवा माया क बांधो, मुडूवा माया क बांधो, साग माया क बांधो, निगनी माया क बांधो, पृथीविर माया क बांधो, जेथी माया क बांधो, नाहापिया माया क बांधो, नति माया क बांधो, ससहानी नति माया क बांधो, गुजुवा माया क बांधो, भोवोकि माया क बांधो, गान्थी माया क बांधो, जख्य माया क बांधो, गरभ माया क बांधो, विता माया क बांधो, जोख माया क बांधो, लाथी माया क बांधो।

धोरा माया क बांधो, कपोवा माया क बांधो, कलह माया क बांधो, गरु माया क बांधो, पृथीविर माया क बांधो, महमाया क बांधो, विसनि माया क बांधो, साक्षू माया क बांधो, कास माया क बांधो, प्रेत माया क बांधो, भूत माया क बांधो, ब्रह्मराक्षस माया क बांधो, जिन्द माया क बांधो, वेताल माया क बांधो, पीर माया क बांधो, पैगम्बर माया क बांधो, मसान माया क बांधो, कब्र माया क बांधो, परी माया क बांधो, शैतान माया क बांधू, जादू माया क बांधू, मूठ माया क बांधो, पुतल माया क बांधो, जोगिनी माया क बांधो, भैरों माया क बांधो, काली माया क बांधो, चोर माया क बांधो, अघोर माया क बांधो, मंत्र माया क बांधो, तंत्र माया क बांधो, यंत्र माया क बांधो, शाबर माया क बांधो, सिद्ध माया क बांधो, कुग्यान माया क नाथ माया क बांधो, गुरु माया क बांधो, शबद माया क बांधो, ब्रह्म माया क बांधो।

घीत माया क बांधो, रकानी माया क बांधो, रोपनिया माया क बांधो, रुगीया माया क बांधो, चौरासीवाय व्याधि माया क बांधो, घमु माया क बांधो, भालुक माया क बांधो, ह्रीं ह्रा माया क बांधो, बान्धीलो सौखस्ती देवतार माया न करीवि उजनी भाती भात्री मारीलो वान देवतागनक मानी लुमर देवतागन हानीलो हर होमर गीरे पीन्थीया हर होमाई थाकीला देवताके थाई परी पलाई देवता भागी भागी जाई मारीलो वान मनत माहा रागी मारीलो कालविकालर वान देवतार भितर होमाई होमाई 'पर जदी माया लरसर कर कामाक्षा देवी र माथा खाह्व महादेवर जन्ता सीं हूं हूंकार सारीजा लंकार पार नाहाईवि रुगीयार घरवारी हीमा हंसार' (फूः)।

(यदि माया वापस लौटे तो कामाक्षा देवी का माथा खावे महादेवजी की जटा पडे, तू लंका के पार जा, रोगी को घर परिवार की सीमा कंा बंधन होवे)

मारोवान आकाहे साई देवता हव भागायी पलाई देवतार ठाई 'कालविकालर वाने एरन ने जाई मेरु गीरी उलति परे ते ओं काल विकालर गाथी न लरे हातखन हागर जल्दी उलति वही तवेहे कालविकालर गाथी न लरे हात खान हागर जल्दी उलति वही तेवे हे काल विकालर गाथी लोराई हातदीन हात राती भूमी कम्प जाई'

(यदि मेरुगिरि उल्टा पडे, समुद्र उल्टा बहे तो कालविकाल का प्रभाव न हो, यदि काल विकाल का वान कथा नहीं माने तो सात दिन सात रात भूमि कंपन होवे)

तेवेहे काल विकालर गाथी नोमा को लाई जलकरतिर मेले जेवे काल विकालर वानर गाथी ने मेले जेवे वाजाम्प करती ओपरे वनाई तेवे वानर गाथी विसारी न पाई तेवे कोनो वैदवे मेलीव ने वारी 'जदी लरसर गाथी खुलीया जाय हात खान हागर खलक लगाई' (यदि वचन लोटे तो समुद्र सात ताल उछाल मारे)

काल विकालर गाथी जाई देवता हवे ताहार मांह सींगी काल विकालर वान जाई धरे पासे तार घर गाथी सीगीया परे मार वापेर माथा कातिया सलवान सलवान त्रीदह कोटि देवतार गावे हीघ्रकरी सल हीघ्र वेगेवान पृथीवि ना रहे जेवे देवतागन सैदथा पोरा भैल पृथीवित परी केंकाई बाक लीला सक्षु आदी पासे विवर्न भैला मुण्ड सीगी गौला माया पलाई वे लैला तृदह कोटि देवतार कालविकालर वाने माया नाथा कीला केतु मंत्र क हूनि दरे पलाईला तृदह कुति देवतार वान लागे वानर कथा हूनि देवता भागे पृथिवी मेरु मण्डल लार तृदह कोटि देवतार गात जरे जरीहीवे मारो वान देव हव (सब देव) पलाईला आन्तरी वराहवान मारो पलाई दूरे धुलीवान (रेत या अन्न की मुट्ठी मंत्रकर मारना) मारो पलाई दूरे काल विकाल वान मारो सक्षु मोनि साई अरुवान मारो जदी प्रान मरी जाई जदि प्रानत आहा वोर त्रतिक्षने (उसी क्षण) भागी पलाओ हर्तर मई वान उसारन करो तृदह रीदयत (तेरे हृदय में) मारीलो वर खंकरी रन्द भन्द (रुण्ड भण्ड) वान हानी लो जाई अवे बेटा तई थाक दान्त निकटाई (तेरे थक कर दांत भींच जाये) जवे अन्तरी न जावो नई वान्दीर भरी साल खाव तई वारनि कोव खाई दान्त कामरदू कि करीते पारे तई वापेरर हकति घने घने काम्पे खेकताई पोरावान मारो दह नारीत लाग एकवान मारो तेज मांस मगजुत लाग मारी लो वान न करीवि उजनि भाति मई पलाओ तोक मुण्ड काति (तेरा मुण्ड काटे) तई कर धर कर मई मारो तोर गालत धर काल विकालर वान

(तेरे गाल पर मैं काल विकाल वान मारता हुं) **हानी करीवो साई भयत देवतागन कंपीया पलाई तारे हृदयत मारो वान आं थां करी थाकीला देवता निसल** (निस्तेज) **परी देवतार गावत हानो काल विकालर वान पाओ थां करो हवदे मेदिनि दीला फात कालविकालर वान जत दूरे जाई देवता आदी मन्दर आदि परीजाई** (काल विकान का वान जितनी दूर जाये उतनी दूर में मंदिर देवता कुछ नहीं रहे पलायमान हो जावे)

वर देवता सेंसा पोरा भैला लोरीव सरीव नोवारी ही तो पृथीवित परीवैला रीदयत हानीलो वान वर खं कारी थाकिला देवत थरे थरे परीय निही निलो कालविकालर वान पलाई देवतागन आपुनार स्ठान (स्थान) **संसले मारीलो वान देबतार थाई देखी वेता भागीया पलाई आकाहर देवता भागीया पलाईया कालविकालर वान खेदिया गैला अरुवान मारो प्रान जा ओक मरी अरु वान मारो हुं हूंकार करी देवतागन भागीया पलाई लवरे आगत कत कतो हारे जाई हीतो उलती पासका नासाई कतो देवताई पलाई थरामुरी खाई कतो कतो देवताई बोले त्राही त्राही हरि हरी एही वुली देवतागन थाने थाने रुगी से रोगा पूर्वा अत भैला हूं हूंकार सारीजा लंकार पार नाहाईवि अमुकार घरवारी हीमा हंसार** (फूः) (मेरे हुंकार से तू लंका पार चला जा अमुक रोगी के घर मत आना में घर परिवार सीमा का बंधन करता हूं।)

आं आं सं सं छूं छूं छूं छूं लं लं हं सविओ हर्ग वि वि आगर हं हं टं टं हं हं सं सं अं अं ऐं ऐं पोप खर्ग खाओ गु गु (फूः)।

(क्षेत्र के आसपास के कई तरह के सामोनक देवताओं का बंधन विधान आगे दिया गया है)

कालविकालर वाने मंत्रे रे करी वो हमापत रुगीर घरत नाथा किवि एक राती (रोगी के घर एक रात कालविकाल कथा करी) **जंदी आही उसररापी कालविकाल वान मारीलो दाती कैर परा आहीस जानो जन्म जाती कोन कोन सामन भैली उतपती मनुष्यर गाओत आहीली कोन देवता जाती अरे सामान बांधो तोक थाक परीमार वापरे हकलो आसे गोट खाई निमता सामोनक बांधो मय सामोनक बांधो सकुमेला सामोनक बांधो हालोवा सामोनक बांधो उतिया सामोनक बांधो रंगा सामोनक बांधो कुकुरखोवा सामोनक बांधो सागधर सामोनक बांधो उकिया सामोनक बांधो खोरा सामोनक बांधो राओदिय सामोनक बांधो एहूतिया सामोनक बांधो मिहूका सामोनक बांधो लरधरासा सामोनक बांधो सक्षुमेला सामोनक बांधो मिली सामोनक बांधो अकल हरीया सामोनक बांधो वोजोर सामोनक बांधो कम्पा सामोनक बांधो परिदीया सामोनक बांधो नतुवा सामोनक बांधो ह हां सामोनक बांधो भरा सामोनक बांधो लुकूवा सामोनक बांधो भेह धरा सामोनक बांधो मदहीसा सामोनक बांधो पानीखोवा सामोनक बांधो तेजखोवा सामोनक बांधो हगुरा सामोनक बांधो घुटुवा सामोनक बांधो भेलेंगा सामोनक बांधो लुकी सामोनक बांधो पुजाखोवा सामोनक बांधो कलीया सामोनक बांधो भोमोरा सामोनक बांधो क्रक्रा सामोनक बांधो केकेवा सामोनक बांधो।**

केकोवा सामोनक बांधो नेतसोवा सामोनक बांधो खरीफला सामोनक बांधो फालेगी सामोनक बांधो तामोल खुवा सामोनक बांधो क्रफुवा सामोनक बांधो खरीस सामोनक बांधो वात सोवा सामोनक बांधो नंगला सामोनक बांधो लोभ भंगा सामोनक बांधो भंग खोवा सामोनक बांधो एडम्रा सामोनक बांधो रान्दनि सामोनक बांधो तरनि सामोनक बांधो केकेरा सामोनक बांधो सक्षुरंगा सामोनक बांधो गगरी

सामोनक बांधो बान्धु सामोनक सक्षु पकाई वान र साटत प्रान सरी जाई (वान की चोट से प्राण चले जाये) **केने के थाकीया केले आई वो पाई पासे काल विकाल सक्षु मेली साई तानकरी वान पासे मारी वाक लैला सामोनर नावो पासे सेंसापोरा भैला कतो वेली सामोने पासे मने गुनि साईला कैर परा आहीली तई मोक लोग पाईला एहीमते सामोने पासे आल हीवे लैला वलट प्रतापे हवि कण्डीवाक लैला नीज मुर्ती धरी धरी हीतो करी वाक लैला नामारीव वा गुरुवाय न करीवा हस्वी हर्वदाये थाकी वो तोमार आज्ञा पाली हेन हूनि काल विकालर भैला कूवा एक मनक करी ताक निलाधरी हवेहा मोनक दिला एक एक कथा करी सामोनक साई वुलीला वसन (फूः)।**

हवे ओ मालीया हाजी ओं हाजीलेक घरखान आती भयंकर देखीते हून्दर खेतिपाती आदीकरी हमस्ते करी दीला अनके जतने पासे हाजी लाग्रहीक हाजीला काल विकाले ग्रहि जेन भैला खेति करी वाक हवा के आदे हीला लरा बुरा आदीकरी हमस्ते लरीला कोर थरी हरवाई करीला धान दाई आनी पासे मराल बान्धीला पासे सामोक हाते भात करन्थाईला कतो कतो सामोनक धानक वलाईला कतो कतो सामोने गोवर पलाईला अरु कतो सामोनक लपार धोवाईला अरु कतो सामोनक पानी अनवाई ला कतो कतो सामोनक गाधु उव लैला कतो कतो सामोनक गरखीया लैला अरु कतो सामोनक लगुवा लैला कतो सामोनक दोला भारी लैला आरु कतो सामोनक सुवा पेलो आईला एहीमते सामोनक वर दूखदीला पासे सामोने अनेक तुती करी वाक लैला।

(सुन्दर खेती पाती करी भात का भोग सामोनक के लगाया किसी सामोनक ने गोबर डाला किसी सामोनक ने बीज, किसी ने पानी डाला, कोई सामोनक फसल का डोला भर कर लाया इस तरह सामोनक को अनेक कष्ट उठाने पड़े फिर अनेक तरह से स्तुति करी एवं पूजन विधान इस प्रकार किया)

पासे काल विकाले हाध्य पातीला हवा के आदेह करीला एक ग्रीहक हजाईला औसरत एक पुखुरी खनाईला तात वही कालविकाले पूजा क पातीला पिथा परमान फूल आखै गुरी कराई आनी लेक हारी हारी करी हालधीया वस्त्र आनिला सरीखन रंगा बंगा नोमर आसनत पहीला ध्यानकरी पात पत्र आनीला आखन पातीवा दूर्वा तुलसी आनिलेक साई व्रतकरी पुजात वहीला घृतर वाती लगाई एक हत पुजार माल आनी थैला

(एक व्यक्ति के हाथ में पंखुरी भेजकर पूजा का आदेस दिया, काल विकाल पूजा हेतु हल्दीया वस्त्र लिया, रंग बिरंगा आसन लिया, अक्षत गुड़ लिये, हरी भरी वस्तुयें पान पत्र फल लिये, दोब तुलसी से, घी का दीपक जलाकर एक सौ एक बार पूजाकरी व्रत किया)

आगत पूजा भांगी दिला पासे रतिर मध्यत हात दिला पूजा करीला दिन राती पूजा हहहाने हाध्य करीला एहीमते पूजा जितो वैक्ष्य दिव पारे तो तोई नाथा कीवि तार घरे मनुष्यर हाध्य ईतो कोने करी वाक पारे धनि निधनि हव करी साई साई फूरी वितई पूजा ना पाई अनाहार भैलि परीवि एक जने मोर नथा हूनि पुताई उथी दि दिखलवर सामोनर पुजा जतो नरे करे तार धरे सामोनथा कीवि आसी तार आज्ञा पाली।

(आगे पूजा भंग होने पर सात दिन रात्री मध्य पूजा करी, धनी, निर्धनी सब ने पूजा करी फिर भी पूजा फल नहीं

मिला, निराहार होकर पूजा करे, सामोनक व मनुष्यों ने पूजा करी एवं आज्ञा पालन किया)

थाक जितो कोने करी पारे तार वापेरह कति एहि वुली कालविकाल आदेह करीला आपन आपन थाने सली गैला।

(इस पर काल विकाल ने बुला कर आज्ञा करी और अपने अपने स्थान पर जाने का आदेश दिया)

काल विकालर पूजा पृथीवित रैला खुं खुं लुं लुं नामाति ऐ ऐ थाकीला वृं वृं रान्थीली नागली खं खं या ये ओं ओं हूं हूं सुं सुं रुं रुं ऐं ऐं ही हीं असला ईं ई रं रं ऐं ऐं तु तु कां नो नो मि रं ऐ ऐ सपना अं अं आना सं रं ऐं ऐं कादनि तिति सरारीं ऐ ऐ वालय तं तं रातोल ऐ ऐ परा हूं हूं कामिनी ओफोन्दोवा ओं ओं दलति ऐ ऐ कपीली वीं विं पतालि ऐ ऐ खाईति खीं खीं मदाही ऐ ऐ वल ली घों घों सलनि ऐं ऐं नासनि हों हों आही सील ऐ ऐ सापनि दूं दूं जं जं वेगते ऐ ऐ उजनि नं नं धरीवि ऐ ऐ कान्दनि मों मों देखीवि ऐ ऐ जुतली गं गं फं हाधनि (फूः) ऐ ऐ कान वनति कं फं भुलते ऐ ऐ पिविकि पं पं वताही ऐ ऐ उमनि हीं हीं कापरी ऐ ऐ हमनि लुं लुं पाननि ऐ ऐ माती ली थुं थुं धामनि ऐ ऐ गोतिसी तुं तुं जासी तोई ऐ ऐ रातिते मुं मुं भीराली ऐ ऐ गोतोते खुं खुं उथीली ऐ ऐ वायी ही जुं जुं आसीली ऐ ऐ धोवाली ओं ओं पुजाइति ऐ ऐ दलनि हूं हूं खाली ही ऐऐ जापरी नं नं नोमाली ऐ ऐ थाकिली वुं वुं राधीली ऐ ऐ नगली खुं खुं जुतली ऐ ऐ वेतिया मीं मीं धरीली ऐ ऐ वितली द दं मारीली ऐ ऐ सजति कूं कूं परीलि ऐ ऐ किसाई थं थं फूकी ली ऐ ऐ हीद्धेरे ये नं कुतुली ऐ ऐ सलनि सुं सुं तलते ऐ ऐ आसीली रीं रीं कामुरी ऐ ऐ आंगुली दूं दूं एवाही ऐ ऐ नोवार जीं जीं हारीली ऐ ऐ उरीवि पांपां सोलत ऐ ऐ सारी तिं तिं माहगोतकराई ऐ ऐ देखी ली हीं हीं सक्राति ऐं ऐं फतिकी हूं हूं तोहते ऐ ऐ युकूर कं कं हातरे ऐ ऐ जुईते घुं घुं परीवि ऐ ऐ तेज खाई ति गं गं गाई लिस ऐ से दवाई सूं सूं हापति ऐ ऐ नागोनि विं विं मायाते ऐ ऐ सायाने हूं हूं थानादि ऐ ऐ मद्रक कीं कीं धराली ऐं ऐं वन्दीते रुं रं दीधली ऐ ऐ लुकाली कूं कूं आपति ऐ ऐ मसारी तं तं हमान ऐ ऐ नासनि वं वं अमान ऐ ऐ खुसली रां रां एकले ऐ ऐ सावी तोई खं खं महीलिया ऐ ऐ जेवुरी तंतं बांधते ऐ ऐ परीली तं तं मार्तपिता करीवी वर्न मून्डी धरी बांधीला हाहन हालीत भग धरी वं वं हूं हूं काको ओं ओं जालपाती धरीलो तोक रु रु औ लो उली सी सी हाट बार प्रनाम करीला सेगे साई धरीली तई हाटे बांधो तोक ईस्वर क हंपाकरी हां हां मुकीते सीरी एक मारी गाही गैल गेही आरुवान मारो मई प्रान जाओ कमरी कू कू ई ई लृ लृ आरुवान मारो मई कर आंगी भांगी (और वान मार कर अंग भंग कर दूंगा) **तितिसी समका दमका कतो वान हह तई वेटा सार हीया लुं लुं एरीया पला वेटा रुगीयारगःओ** (रोगी के शरीर पर) **खीगी आगया मी मी तोर जन्म कथा हून हूना दूहं मी मी आय आय आस्तरी जाती आव सार वां मो मो भाल मन्द न वा** (आव आव आज तेरी जाति आ गई है मेरा भाग्य मंदा नहीं है)

सी ली सीद्र तई न पाईलि ही खं कू कू खू वाई वो तोक वानी गुलैनक थाक पृथीवित परी हूं हूं अंपाली लो मोहय साल खुवाम तोक किंतं खी खी मद खाई ली हूकति खाली हू हं तत वन्दी खीनिये को वाम तोक दलं लृं लृ हारी मताये खं के खा मतोक टू खां निनिले लाथी खाई वाक आहीली तुईलं मम मम हये के लाग तोई रीक पि पी मारीली वान आकाहक साई परीलवान पृथीवित गिरी खाई गुलैगन बान्धीलो (सारे के सारे पृथ्वी पर वान के प्रहार से गिर गये, गुलैग नामक क्षेत्र गणों को बांध लिया) **थाई थाई गुलैहवर गात सेंसा पोरा**

****

भैला माती वे नोवारी हीते करे घर फर वानर साटत प्रान सारी जाई गुलैगनर गावत वानर हंधान वान फूति रुधिर भैला चक्षु काना भैला काने नुहूनय मुखे गद गदवानी गुलैगन थाक पृथीवित परी हूं हूंकार सारीजा वेटा घर गार हूं हूकार सारी जावी लंकार पार नाहाईवि रुगीर घरवारी हीमा हंसार (फूः)।

(गुलैग क्षेत्र देवता के शरीर पर वान का संधान किया रुधिर बहने लगा, आंख से काना हो गया, कान से सुने नहीं, मुख से बोला नहीं जाय, थक कर गुलैक देवता पृथीवि पर गिर गये। हे प्रेत बेटे तू रोगी के घर परिवार सीमा को छोडकर लंका के पार चला जा मैं बंधन करता हूं।)

जेवे आह तई उसर सापी कामाक्षा देवीर माथा खावी जदी बेटा लरसर कर माहादेउर जन्ताफार ब्रम्मार सक्रत परीमन आरु एक हत गरभावती तीरीक वधकर श्रीराम र हूद्रसन सक्रत परीमर।

(यदि वापस आवे तो कामाक्षा देवी का माथा खावे, महादेव की जटा पडे, ब्रह्मास्त्र भेदन करे, तीरथ पर सौ गर्भवती की हत्या का पाप लगे, श्री राम के सुदर्शन चक्र की मार पड़े)

दुर्गा मावे आसे खेरी पाती ईहाफ सार हजेवे तात परीमर तेवे पासे काल विकाल सक्षू पकाई गुलैगने बोले आई वो पाई आह आह गुलैगन न करीवि उजनि भाती बान्थीलो गुलैक दह प्रकीति

(कई तरह के क्षेत्रक गुलैक देवताओं का बंधन आगे लिखा है)

सेंगा गुलैक बांधो वोवोरा गुलैक बांधो साग गुलैक बांधो मलोवा गुलैक बांधो हाहन हलीया गुलैक बांधो अकल हरीया गुलैक बांधो तेजखोवा गुलैक बांधो गोस मारीधरा गुलैक बांधो विर गुलैक बांधो हगुरा गुलैक बांधो वगरा गुलैक बांधो जल गुलैक बांधो थल गुलैक बांधो पोरा गुलैक बांधो वेसर गुलैक बांधो दलीय गुलैक बांधो कला गुलैक बांधो पेटुवा गुलैक बांधो अकरा गुलैक बांधो सेंगा गुलैक बांधो हारखोवा गुलैक बांधो व पतवा गुलैक बांधो फुरनि गुलैक बांधो पुका गुलैक बांधो सुतीया गुलैक बांधो खोरा गुलैक बांधो पिंगली गुलैक बांधो जतिया गुलैक बांधो बांधीलो गुलैक थाकीवि परी वान र साटत वुलीला हरी हरी वान हानी करीलो नीजनि नोमर गोरे गोरे हारे मग जुवे वीन्धी विन्धी हे माई कला वेंगा दूपो थाकीला परी कालविकाल देखी प्रान उरी जाई प्रथीवित परी फूरे थाई थाई आकाहे मारीलो वान सलीन्त एखन त्रीदह देवताई वुलीला वसन सली गैला वान हागर र तिरे देखीया मस्यमगर तर तरी तोलय जोग धरी हन्या हीये आसे तपस्याई धीयान भागी हन्याहीये सक्षू मेली साईला वानर जालत तार जन्ता सीगी गैला 'वान र जालत हागर हू ही जाई वर जल जन्तु अन्तरी पलाई'(वान की ज्वाला से समुद्र सूख गया जल जन्तु भागने लगे)

जल र जल माया भागीया पलाई जल नागिनी भागीया गैला थल नागिनी पलाई गैला पेतकरा नागिनी पलाई गैला विलाही नागिनी पलाई गैला हतरा नागिनी पलाई गैला पलाई नागिनी पलाई गैला रांगली नागिनी पलाई गैला माया नागिनी पलाई गैला सिकरा नागिनी पलाई गैला मकरा नागिनी कहीवा नागिनी पलाई गैला कहोवा नागिनी पलाई गैला विहोवा नागिनी पलाई गैला सान्दनि नागिनी पलाई गैला तुहमरी नागिनी पलाई गैला केकनी नागिनी पलाई गैला केकनी नागिनी पलाई गैला तेजखाति नागिनी पलाई गैला हारखाति नागिनी पलाई गैला हालधि नागिनी पलाई गैला दिखरा नागिनी पलाई गैला नागिनी पलाईते नाई

थाई गरुन्द 'वान मारी हवा के खाईला कतो कतो नाग हवे पलाई देखो दिख नाग नागिनी हवे भस्म भैला'।

(उपरोक्त नाम वाली नागनियों का पलायन हो गया तथा वान के प्रहार से दशों दिशाओं में नाग नागिनी भस्म हो गये)

कतो वेली काल विकाल आलु सीवे लैला भूत प्रेत पिसांचर गावत वान मारी वाक लैला भूत प्रेत पिसांचर हवे धर फराईला नामारीवा गुरु वाय सरनत धरो एही वुलीयी सांच कांदे दिर्धरावो आरु रुगीयार धरत आमार नाही पान कालर हात एराओ एहीतो भाल एही वुली पीसांच आल हीवे लैला हकलो पीसांचे माया करी थाई थाई भैला भन्द भन्द लोका लुकी कुलुज्ञाकी खन्दल खन्दल भेति पेति पलाई पिसांच आपोनार थान एरी इन्द्र हवर वायु हर इन्द हरर वायु हर हवे मन्दीरे कव सब आदी करी अत्र नाना मत कतो मारई कतो खावई भूत प्रेत पीसांच परीथाक परवा माया क बांधो भूत प्रेत माया क बांधो डाकिनी शाकिनी माया क बांधो जिंद माया क बांधो शैतान माया क बांधो पीर पैगम्बर माया क बांधो मसान माया क बांधो ब्रह्मराक्षस यख्य माया क बांधो तंत्र मंत्र यंत्र माया क बांधो, शाबर माया क बांधो नाथ माया क बांधो भैरव माया क बांधो योगिनी माया क बांधो देवीकालिका माया क बांधो दुष्ट माया क बांधो चोर माया क बांधो पियरा माया क बांधो साग माया क बांधो गु माया माया क बांधो घोरा माया क बांधो हस्ती माया क बांधो भालुक माया क बांधो हींघ (सिंह) **माया क बांधो कूकूर माया क बांधो वराह माया क बांधो घों माया क बांधो वायू माया क बांधो वरुन माया क बांधो पिस्तु माया क बांधो मेरु माया क बांधो उद माया क बांधो हर्प माया क बांधो** (सर्प माया को) **बांधो जल माया क बांधो वातुल माया क बांधो कूली माया क बांधो जा थी माया क बांधो बांधिलो माया क न करीवि लरसर उन्न कूती माया क बांधो जरपुर करी आकाहे बांधो पाताले बांधो मध्य बांधो दहोदिह पूर्वे पसीमे बांधो उतरे दखीने बांधो अर्द्धे उर्द्धे बांधो नैरीते ऐसाने बांधो वायुवे अग्नीये बांधो, बांधो सौ दिख मेराई मारोवान काल विकालर व करीवि आल जाल तोर हरि मग जुवे मारो एर भूत प्रेत पिसाच माने वाने फूती वेक गैया हरि माखे साले विन्धिया हो माल हात बांधो पाव बांधो सक्षु कर्न्न बांधो दह नारी बांधो सैधू खान दुवार बांधो एह सन्दर पराकेह सन्द्र लै बांधो हर्व गाओ** (पूरा शरीर) **बांधो नकरीवि उजनि भाती जैते मारो तेते धरीवि हर लुकी हर गरभ र भीतरे न घर फर कर सयाली वुली एरीया पर।**

जदी लरसर कर मेरुर मुरत दीपर आं खं खं ही ही नं नं कू क र अ ओ हों ओ तो तो ई ई नूं नूं म्यकू (फूः) **हूं हूंकार वर्ज फूंकार हूं हूं करी वर्ज फूंकार श्रीगुरु पाओ 'हीद्ध गुरुर प्रहदि प्रान निन्द रक्षा करीवा'** (सिद्ध गुरु की शरण में हूं निन्दनीय कार्यो से रक्षा करें)।

सात्रेहे स्वभाई गुरु महेश्वराई पृथीवित दीला भरी पृथीवि खान फाती आहीला हातर हात आली वान र वात आली बांधो जरपुरकरी हूं हूंकार सारी जावी लंका र पार नाहाहीवि आमुकार (रोगी का नाम) **हीमा हंसार (फूः)।**

आद्य गुरु क नमस्कार करो देवी र सरनत धरो श्रीराम क नमस्कार करो सन्द्र हारखी (चन्द्र साक्षी) **हूर्य हाखी** (सूर्य साक्षी) **हाखी है वा तुमी बहूमति आई बांधीलो भूतप्रेत पिसांचगन क पाई गस गसाई नमो**

पारवती अन्माई हर गौरीर 'हुनिओ' काहिनि (सुनता क्यों नहीं) अरे अरे दानओ तोर कहो उतपति मंगलवार पाती ली खेर पूनीया उपजील तैरपरा हूं हूंकार मारो दानवगन आली का दानव ज्यजीला आही घर थर आ ही मारी हूनि कालविकाले उलाह करीला कोप करी सामन एरीलोर दिला दानव र माजत परीला गीरीखाई पलाई दानव पास क नाराई पासे वान खान अगनि मर्ति थरी तिखन मूर्ति भैला दानवक थाई खेदी गैला गजी गजी वान पासे आनक भेतिला दानव खेदिया पासे मोन हूया रैला पासे वान एवहे दृष्टे साई तिखन मूर्ति थरी लेक सक्षु पकाई दानव क बांधो थाई थाई दानवगन वान र साट त सेंचा पोरा भैला आही वेनी वारी पृथीवित परीला वान हानो दानव क असंक्षात (असंख्य) हात भरी नाही लरे नि स्वाहा।

नाही नाही के घात दानव र गावत वान मारो जाके जाक 'विद्युत हंसाचार वान परीला' (बिजली के समान वान पड़े) निथात जुरी जाके जाके परे 'जेन भाद्र माहर विष्ठी जेन सौ दिहे परे वान' (जिस प्रकार भाद्रपद मास में वर्षा होवे उसी प्रकार सौ दिशा में वान की वर्षा होवे) पृथीवि नाही आते वान र कथा हूनि पृथीवि फाते वानर जालत दहो दीह (दसो दिशा) पोरे दानवगन घर फर करे बांधो दानव घने घने परेवान विद्युत हंधाने गरजीया वान परे निरंन्तर दहो दिह वानर परीला हरो वर तिमीर करो जेन हूर्य रं प्रकारख वानर जालत सक्षुन मोलय (जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से अंधेरा दूर हो जाय उसी प्रकार वान के जलने से आंखे नहीं खुले)

अरे अरे दानव कतनो हहतई जाइते न परीवि वेटा परीविनिस्वपथीव होवा गोहाई जन्टा मेली वाक लैला तिनि कोना पृथीवि कंपीवाक लैला (पृथ्वी के तीनों कोनें में कंपन होवे) वाम जन्टा सीगी सींगी गैला माटीत परी दैत्य दानव भैला गोहाई वोलन्ट मई कि कार्य करो एतेदैत्य दानव कि मते मारो पासे काल विकाल खेदी लाग पाईला क्रोध करी वान पासे मारी वाक लैला दैत्य दानव भगीया पलाईला केंकोवा दानव क बांधो वलीया दानव क बांधो थेंकता दानव क बांधो घर भगा दानव क बांधो हंका दानव क बांधो ऊपर सकोवा दानव क बांधो नदीसाल दानव क बांधो ही हवा दानव क बांधो निसजा दानव क बांधो हांहीनि दानव क बांधो हाखीनि दानव क बांधो नवपाल दानव क बांधो व्रर्जकूटट दानव क बांधो ईहीरी दानव क बांधो हीजता दानव क बांधो आन्तकराली दानव क बांधो हाहन हलीया दानव क बांधो देओदिया दानव क बांधो सान्धला दानव क बांधो कामोवा दानव क बांधो न करीव्रि उजनिभाति बांधो दानव दीख जाती का लीका सन्दीका देवि भाजनी आई दह वायु ए परय दख वर गात वान मारई आनी दानव र वान आनो तानी मारो वान लातकार फरी, वान र प्रतापे हूनित वही जाई उधी व नोवारी पासे केंकाई केंकाई दानव परीया रेला देत्यक बांधी वाक भैला आहकाह पताज जुरी मारीलो वान देत्य दानव नहहे वानर तान री मारो हूंकार 'सारी दैत्य र गात वान मारो' (दैत्य के सारे शरीर पर वान मारो) मारी दैत्यर गाव सेचा पोरा भैला दैत्यक बांधी पांवर तलै थैला दैत्य र हयाखसन बांधी वा बांधी वाक लैला वली र हभाक बांधी वाक लैला 'वान र साटत दैत्य र माथा माथा सीगी गैला' (वान के प्रहार से दैत्य का माथा भेदन हो जाये) हवे दैत्य कान्दी वाक लैला देखी काल विकालर क्रोध जभी गैला पुनर जाई वान मारी वाक लैला प्रवर जाई वान खान मारो तान करी थाकील दैत्य गन पृथवीत परी वान परी दैत्यर गाव गैला गेली हात भरी सपाई आसीला ताक दिलाये ली दैत्य हव बान्ध भैला दैत्यर प्रान गली गैला केनेके दैत्यर कहो आदी कथा हूनि थाक उतपती

कथा एक मनकरी मई कही जनम जाति 'रोगी र घर नाथा कीवि एक राति' (रोगी के घर एक रात काल विकाल कथा करी) **नाहाई** (नहीं आवे) **वितई उसर सापी जेवे आह तई रोगीर गावक काल विकाल बांधवि तोक** (यदि रोगी के शरीर पर तू आवेगा तो काल विकाल तेरे को बांधेगा)।

मोर मुख साई तई न करीवि रा ओ 'जेवे दैत्य लरसर कर बम्र्मार सक्रत परीमर गंगार तिरत एक सत बम्म सारी वधकर जदी का वाक्य लरसर कर माहादेवर जन्तार धर मोर हाक गुरुर दाक रोगी र गाव र हन्ते आन्तर है थाक' (फूः फूः फूः)

(यदि दैत्य वचन न माने तो ब्रह्मास्त्र की चोट पड़े गंगा तीर्थ पर सौ ब्रह्म हत्या का पाप लगे महादेव की जटा पड़े मेरा हुकुम है गुरु की शक्ति है रोगी के शरीर पर नहीं दैत्य नहीं आवे)

॥ इति काल विकाल प्रयोग सम्पूर्णम् ॥

विशेष – इस प्रयोग का अनुष्ठान करने पर एक पण्डित रुद्री–कार्तिक व गणेश के जप करे, एक विद्वान दुर्गा पाठ करे। पश्चात् प्रधान आचार्य इस स्तोत्र के ३–४ पाठ नित्य कर बाद में शान्ति पाठ, रक्षा कवच पुनः करे।

॥ शत्रुनाश एवं पीड़ा ॥

श्री दुरगाय नमः। हाते काम्ये काम्ये देवगन हर्म्मन हर्म्मन आई महादेवर गर्जन लोक कांपी। दुर्गा माओ तोहोर काहीनि तो होर हूनो कानपाति तोहोर विरागन आसे कोन थाने गासे आसेने आकाहे आसेने भया मे आसे ने भारस्ते आसे ने आसे थाई थाई ईहार देखी धरीवि रवि धरनिया आमुकीक काति भांगीवि (अमुक स्त्री व पुरुष के अंग भंग) **दूई सक्षु** (दोनों नेत्र) **दूई हाथ ईहार सक्षुत लीवि दूई कूम धरीवि ताली आमुकीक पलाईवि मारी जदी ना मारीव न धरीवि हर माहादेवर माथा खावी (फूः)।**

विधिः – भूमी कंपरं व माती, मसानर माती बाहमरलीर पात।

भूकंप के दिन की मिट्टी, मसान की मिट्टी एवं बाहमर के पत्ते (एक विशेष बंगाली पेड़) इनको एक मिट्टी की हांडी में इकट्टा करके जमीन में गाड़ देवे। तीन दिन तक हवन समय काम आये, पेड़ के पत्तों पर बलि देवे।

यदि ठीक करना हो तो आक के पेड़ की जड़, नाहरकांटा की जड़ से स्नान करायें।

॥ रक्षा कवच मन्त्र ॥

इस मन्त्र में क्षेत्र देवताओं का बंधन है।

खेत्रक बांधो नमता देव, खेत्रक बांधो हालीयाक देव, बान्धू हा हा मेखी हूकर क बांधो, सथालीक बांधो, नादपास (नागपाश) **क बांधो, हातोया बान्धो, वातोया बांधो, वाटधरा बान्धु, चक्षुटेला बान्धु, दातकामुरा बांधो, सनीमोन बांधो, जियाहे माखे यही ताक बान्धु, ब्रह्मार नागपखि** (नागपाश) **वठ वाक्य लरुयक सखरु मारु नोकत कोठार मार अं हं कं कं स्वाहा** (फूः)।

विधि : किसी अन्य बड़े रक्षा कवच से बंधन करना हो तो रक्षा डोरे के आदि व अंत में ३–३ बार यह कवच पढ़कर गांठे लगायें। इससे आपके गण्डे ताबीज की शक्ति क्षेत्र के देवताओं से सुरक्षित रहेगी।

हुदरशन चक्रो

(सुदर्शन चक्र)

इस मन्त्र के प्रयोग से दूसरे मन्त्र की लाग, दैत्य बाधा का काट होता है।

श्रीकृष्णाय नमो सीवाये नमो हूदरसन चक्र प्रनाम करो हो जुरी जोर कर प्रनाम करो हो जगत र रीही केहे वरातोय अपराध खेमी वाहा मीर अथर्ववेदर परम गोपीत हरस्वती माओ तोमी उवोक गत श्रीकृष्ण नमः वय कोन्थ भवन राखी आसा नारायण ताहक प्रकाह करा सक्र हदाखन जगत कराखा प्रभु तोमी सक्रधरी मनत गेनिला प्रभु हाते सक्रधरी मनुष्यक धरी देवे करे थान थाप वर मनुष्यक प्रभु रक्षा जान गोखई वेले सक्र मनुष्यक जाव दैत्य दानव क कातीया (दैत्य दानव को काट देवे) **पोला ओ गोखाईर गोखाईर आदेहे सक्र ले गला थाई तदख देवता भागीया पलाल पृथ्वी लरिल मेरु गीरत हीला कंपी-यला स्वर्ग मध्य पटाल भुवनत हागर कंपीयला मन्दर लरीला कंपीयला हूर्ज मन्दर स्वर्ग सली गेला कमेय स्वर्गखन्द जत देओगन सक्रलाग पाईला खन्द खन्द करी कातीया पेलाईला तेरे परा सक्र पटाल क** (पताल क) **गैली देखी नागगने पलाई वाक गैला** (नाग गन पलायमान हो जाये) **हूद्रखन सक्र महाकोप करी नाग नागिनीक कातीला धरी** (नाग नागनी को काट दिया) **तेरे परा हागर क गैला। जलर जक्षर कातीया** (इसके बाद समुद्र पर वार किया, जलके रक्षक को काट दिया) **पेलाईला तेवे विष्ठोर सक्र पतालक गैला कातीया पेलाईला लगे हख देवक पर्वत देवक कातीया पेलाई तेवे विस्नुर सक्र** (विष्णु चक्र) **पूर्वर दिखे** (पूर्व दिशा में) **गैला पूर्वर देवक कातीया पेलाईला। विस्येर सक्र** (विष्णु चक्र) **गैला वरूनर थई कातीला वरुनवान खन्द खन्द करी** (वरुण के वान को खण्ड खण्ड कर दिया)। **उत्तर कुबेर क सली गैला वान विखवारी कातीया पेलाईला तेवे सक्र पाटालाभो के सलीगैला** (तव चक्र पाताल लोक को गया)

महात्राहे त्राहे माचे बर्म्मा लरीया पलाईला (देवता ब्रह्मा के पास गये) **आखीला** (सभी) **असक्र र अगवे वन्द पास करीला, अनेक स्तूति करीला** (सभी चक्र के पास वन्दना स्तुति करने लगे) **अनेक सके बोले मोक्र पसीला हरी देवतार कुग्यान कुमन्त्र दिया वाज करी सक्र आगत दिला आनी धरी सक्रे कातीला खन्द खन्द करी। तेवे विश्नोर सक्र कैलाहे गैला** (तब विष्णु का चक्र कैलास पर गया) **हूनि महेस्वरर भय भैला आठ वेठ करे** (सुनकर महादेव को भय हुआ आदर सत्कार किया) **आहीला लरी महेस्वरर हेगे आहीला गौरी विस्नो सक्रर दिला अग करी कातीला सक्रेखन्द खन्द करी माहातेज सक्रे दहन्ट वेग तिरदह देवटा पलाईला** (चक्र के महातेज से त्रिलोक के देवता भाग गये) **भवरी पलाई देउ नाई थीटी थान विस्नोर सक्र खेदिलवे पान तृदह देवे नाई थाई कोटीक माहा उरी भीक्षामांगी खाई** (त्रिलोक के देवताओं ने चक्र से रक्षा हेतु भीख मांगी) **सक्रर प्रभावे लोक कंपीय वाक लैला कंपीयला, मन्दर कंपेय, हेमगीरी, वर्म्मा, महेस्वरर कंपेय थर थरी कंपेय** (चक्र के प्रभाव से सभी लोक, हिमालय ब्रह्मा महेश कांपने लगे)।

सौद्धव भोवन (चौदह भुवन) **पृथीविक जिनी जिनिला पटाल** (पताल) **अवे नष्टकरी** (सभी नष्ट करी)

कूग्याने कूवान वैकुण्ठ क लागी करी लापयान हेई वेला ब्रह्मा वोले वाक हीघ्रकरी आहामोर थान हनि सक्रत थाकीला रही विस्नोर पाहक हीघ्र पाईला (ब्रह्मा ने कहा शिघ्र करे मेरा स्थान नष्ट होगा विष्णो के पास चलो)। **गई निरंजनपुरी हाटे सक्रधरी वामुनक हूहील नरके आहीला हरी उथीधाइला गन कंधे हरी करीला निरमुरल देखी नारायन हाते सक्रधारी प्रहार करीला** (चक्र निरंजन पुरी वामन के पास से नरक में गया वहां निर्मूल किया तब विष्णु ने चक्र हाथ में लिया एवं प्रहार किया) **हरी हूंकार करी विस्नोसक्रे खेदि लागपाईला नरकर हीर गोर कातीया पेलाईला, अस्वर वध हूनि पासे जतविर आहि लेके खेदि जो कारीया हीर हाटेहूल धरी माही लेक थाई हवाके काती क्रे लाम लाग पाई माहाकाल आदीकाल माया कातो, हूं हूंकार सक्र, पहारन करे** (चक्र के प्रहार से महाकाल आदिकाल की माया काटो) **वरहो जाई हर हो जाई मुख्य करी उन्वकुटि देवटार माथा कातो** (उन्नीस करोड़ देवता का माथा काटो) **हूं हूंकार सक्र प्रहारन करो वरपानी पुलीक हरुपानी पुलीक तेर लक्ष पसातीया देवतार माथा कातो हूं हूंकार सक्र प्रहारन करो।**

वरहे हनाक मुख्य करी अथर कुटि देवक माया मारो हूं हूंकार सक्र प्रहारन करो हूंकार प्रहारन सक्र जेतोमार हूंकार हूं हूंकार जखीनि (यक्षिणी) **जोगिनी दाईनि** (डाकिनी) **भूतीनी पीसाखीनि जखीनि विराजिनि कूबैर दैत्यनि अलक्षनी सविलक्षनि हाहल हाली आन करागी के आदी करी हमेष्ठ देवर मायास मारो** (सभी देवताओं की माया नष्ट करो) **हूं हूंकार हूदरखन सक्र तोमार माहावीर हूं हूंकार नमो नमो माधवर सक्र हूद्रखन हूं हूंकार कातो हंपारर मत्रगन वलीया गोपाल अजपाल आदी कती कातो हाट** (अजयपाल राजा की माया को नष्ट करने का नाम आया है अतः कुछ शब्द ३००-४०० वर्ष पहले जुड़े प्रतीत होते हैं) **जाय नरहींघ मन्त्र धरी आदया नरहींघ कंपील हूं नरहींघ काम्प** (चक्र से नरसिंहजी भी कांप गये) **नरहींघ आतका विकट देव दैत्य धन ओसय यमर वानर रख काले सक्रे खानी हूंकारी सक्रे खान खान हाटक सरीक हूनि ओक कथा माधवर सक्र आही कयेले खा वेद वर्मा रुद्र विस्नोवान मन्त्रे हूज्ये सौधा रीने हारी हंहारी** (संसारी) **आती है रामचन्द्र भैला करती** (संसार का रामचन्द्र भला करे)

अनुपान सक्रर हूंकारे हात जात करती सक्रम भैला नाम हूंकारी सक्र माधवक स्वरी कातो मन्त्र गनम हम करी हरा गंधवक् आदी करी वानगन सक्रर हूंकारे तिल कात भैलानाख यूह पत्र महावान हधाखन वख सक्रर सरने तिलकते भैला नाखा सक्रर हूंकारे करीलोहो सन विरुभद्र आदीकरी विंध भद्र हय धन्नतरी (धनवन्तरी) **आदी करी कार नाख करो। महासक्र माधव क स्वरी देवाहूर गन** (देवासुरगण) **राईख हरवान गन सक्रर हरने मई करीलो हो** (सब चक्र के शरण में गये)। **हूद्रसन अनन्टक मुखत् कती पटालर वानगन महामन्त्र हूद्रखन कातीलो हो** (अनन्त नाग का मुख सुदर्शन चक्र ने पाताल देवता के वान व मन्त्रों को काट दिया) **हून निजने हूं हूंकार हमस्टरे** (समस्त) **वान काती करो वुन्दमान (फूः)।**

प्रनामोहो माधवर सक्रमन्त्र हति हवे वान हरा काती खन्द खन्द करी जरवान पोरा वान जामा पाना खतांका वराही अग्नीवान काती करे खान खान (अग्नी के वान प्रहार को नष्ट करो)। **आरु हरा हठ साग पक्ष मक्ष काती करो खान खान हलवान जीकिरी मन्द अर्जान हे कातीउगार वान कातो** (कार्तिक का वान काटो) **जे ही खान महामन्त्रे सक्रे काती पस्त करीलो हमस्त हूं हूं स्वहा। विस्नोर सक्र हूद्रसन कुग्यान कुमन्त्र काती करी लो हो** (खोटे मन्त्र व खोटी क्रिया को विष्णु का सुदर्शन चक्र काटे)। **स्वन वान विख आदी करी व्याधी**

जत तेजहार जलहर देहा होरे आदी हमस्त जखोवा आदीकरी काख (समस्त जलहारी देवों को राख कर दो।) **पिन दिहा हूलव गुन उदरी वेस नारी वल होवो काथी हमस्त थादी कती व्याधी हमस्तय करीलीहो सक्रे हवाको निसय महामंत्र सक्रक सरना करो हमस्त व्याधी पानी करी** (समस्त प्रेतादि हवा, महामन्त्र चक्र के अधीन हो, समस्त व्याधि नष्ट होवे)। **मारो माधवर सक्र आती परम प्रसर हमस्त व्याधी कातो करोहो निमोल (फूः)** (समस्त व्याधि निर्मूल करो)।

नमो नमो हूद्रखन सक्र महामंत्र कातीलो हमस्त वान व्याधी मनुष्यर कुमन्त्र हूद्रसन महामंत्र हरो हो (फूः) (हे सुदर्शन आपको नमस्कार है मनुष्य की समस्त व्याधि, मूठ, टोना, महामन्त्र को हरण करो।)

आजी मई सक्रर प्रहारे हते पलाई (आज ही चक्र के प्रहार से दैत्य एवं व्याधि पलायन करे)। **जगतर ईश्वर तुमी जगतर स्वामी तोमार सृजन वर्म्मा आदि करी मई जगतर ईश्वर प्रभु तुमी हे गोखाई नरक क मारीला हे** (हे सृष्टि कर्ता ब्रह्मा, ईश्वर तुम्ही गोसाई रक्षक हो बाधा को नरक में डालकर मारो)।

महारं भैला एखनी (इसी क्षण) **गोसर करी वाक आईला पूर्वे वैकुण्ठक गैलो तजु पासे अथर्ववेद का मई खुजीलो निहेख तुमी दीला मई पालो** (जिन्होने वैकुण्ठ का रास्ता छोड़ अथर्ववेद की षट्कर्म क्रिया को खोजा है उनसे तुमही पालना, रक्षा करो)।

अथर्ववेद जत सक्र निदीला हे प्रभु किवा अभ्यागत ही कारने सक्र प्रभु खुजीते आहीलो, तोमार प्रहारे आजी हे सीनि पाईलो हेन हूनि कृष्णे हाहीले मुसकाई निसचय दिलोहो सक्रव सीनिपाई एई वुली कृष्णे हूद्रसन सीहरक ही काईला मात करी रगखन सक्रपाई महादेवे महाभूत भेला कृष्ण का आहा करी कैलास क गैला कहीलो सक्रर आदी अन्तकथा जत हरा वान कुज्ञात जत जत कुमन्त्र काती करो वुन्दामार (फूः) (चक्र की आदी अन्त कथा, कुमन्त्र, टोना, मूठ, जादू का निवारण करें)

हूद्रखन महादेवे पाई कुज्ञान कुमन्त्र स्वरष्ठे नष्ट जाई, हूं हूंकार सक्रर हानो महादेउर प्रसादत हमस्त हंहरील सक्रक हरीट जेतिक्षने सक्र महादेवे पाईला तट हागरर वर्म्मार सक्र काती करो खाने खाने हातो कुतालें कातो (सातो रसातल पाताल काटो)। **आमुकार गार गरभर सक्र मन्त्र वेत्य उसवरीवा** (अमुक रोगी के शरीर व गर्भ की यह चक्र मन्त्र रक्षा करे)।

सौखस्ती कुटी रोग व्याधी काती करो (सरस्वती कुटिल रोग व्याधी को काटो) **खय सक्रे केहर काह लेत पतलै कातो** (हे बाधा तू चक्र के कहर को क्यो लेती है तेरा अंग अंग काटता हूं)। **आमुकार गावर तेले किया ले कातो** (अमुक के शरीर को स्नान कराया या तेल मंत्र कर शरीर पर लगाया उसकी व्याधि काटे)।

जदी वाक्य लरसर हीता गोखानीर आन गेधर गोवध कर 'फू'' (यदि वचन लौटे तो सीतासति की आन तथा गौ हत्या का पाप लगे)॥

॥ अस्य विधानम् ॥

कुवांरी कन्या के द्वारा (यदि उपलब्ध नही हो तो अन्य किसी बच्चे से) बहते हुये नाला की विपरीत दिशा में मुहं करके कलश मे पानी लावे.कलश में कांसी की कटोरी, दोव व चावल डाले । विष्णु व देवी की पूजा कलश में करे

। घास वाले छप्पर की पश्चिम दिशा में से तीन तीली निकाल लावे (आजकल छप्पर कम होते है अतः डाभ की मोटी तीन तिलाये लेवे या अन्य कोई तृण लेवे) तीनो तीलियो को बराबर कर लेवे । रोगी को पास बैठाकर यह मंत्र ३या ५ बार पढे तीलियो से जल को हिलाते रहे। रोगी पर ऊपरी बाधा होगी तो तीलिया छोटी बडी हो जायेगी। उस जल से रोगी को नहलावे तो रोग व प्रेत बाधा कटे।

उस जल में किसी अन्य व्यक्ति का पैर व अन्य अगं स्पर्श न हो वर्ना बाधा अन्य को हो सकती है अतः एकान्त मे स्नान कराये । वस्त्रो को शुद्द जल से बिना स्पर्श करे धोकर त्याग करे । नहाने की जगह शुद्द जल डाल देवे। कलश को एकान्त में विसर्जन करे । जिसके घर में कलश डाल देवे उसके यहां बाधा चली जायेगी। रोगी को दूसरे वस्त्र पहनावे।

॥ गावयनी ॥

(शरीर व घर बांधना)

जय जय नरहींगस्थी गमन आकाखोत वनीले चोधो भवन पातालो तो नागेस्वरी ठूल ठूल माटी कूकूरा तेजील्ये राउकोर फूर बांधी लो आमुकार (अमुक का) **घर पूर्व ब्रह्मा पश्चिमे श्री हंकर गुरु** (शंकर गुरु) **उत्तर माधो** (माधव) **दक्षिन गोपाल चारी पीन चारी हीन तोइते रोइला मद्धे श्री हंकर गुरु मुख नाम लोला धरनी बांधो दूरींगा धरनी बांधो विरींगा धरनि बांधो कूवरी, पारवति थाक थाक देवता काती होई थाक खोई थोलो माटीत ''आमुकार गात''** (अमुक का शरीर) **दीलो वज्र गाथी हीत गुरु पाओ** (सिद्ध गुरु पाया) **जदी करु उलट कुठार वुकोत घाव** ।फूः॥ (यदि कहा नहीं माने उलटा होवे तो कुठार याने तलवार का घाव होवे)।

गुरु मान गुरुमान गुरु क कोर प्रनाम (गुरु के करु प्रनाम) **चन्द्रो बांधो हूर्जो बांधो** (सूर्य को बांधो) **पूर्व बांधो पश्चिम बांधो उत्तर बांधो दक्षिण बांधो बांधु अमुकार घरवारी गाव** (अमुक के घर- परिवार की रक्षा) **हीत गुरुपाओ रक्षा करा कामरूपी कमक्षा माओ** ॥ फूः॥

इकास कासीले विकास कासीलु कासीलु जमोर दूत कासनी मंत्र जेई थाई पर मेरु मण्डल फाती सोउ फाल हुव (यम के दूत को बांधो मंत्र जब मेरु मण्डल पर्वत पर जावे तो उसके सो टुकुड़े हो जावे)।

एही कासनी मन्त्रो जेई जमकर धाव आप कालीकार मुरोत मलसई दूई पाओ (यह कासनी मंत्र यम की तरह दौड़े कालिका की तरह मारे दोनों शक्ति चले)।

हितगुरु पाओ रक्षाकरा कामरूपी कमक्षा देवि चण्डिका माओ ॥ फूः॥

उरान उरान हार उरान बान्धिलो दस द्वार वानोख वान पिय पानी उरान ''मंत्रोर गाथी'' (मंत्र का पाठ) **वारो माहोर वारो फाल भूंजीवो** (मेरे वार से टुकड़े हो

जावे) उपार जी उरान मंत्रो गाथी मेलिवो पार ही हित गुरु पाओ रक्षा पाओ कामरूपि कमख्या दस शिर माओ ॥ फूः॥

विधि – इस मन्त्र से सरसों मंत्र कर बिखेरें। घर में सभी दिशाओं में कीलें मंत्र कर गाड़ देवें। कपड़े के टुकड़ों पर मन्त्र कर उनको दिशाओं में बांध देवे तो घर की रक्षा होवे। यदि कपड़े के टुकड़े को मंत्रित कर ताबीज में भरकर पहने तो खुद या व्यक्ति की रक्षा होवे। डोरा बनाते समय मंत्र पढ़कर गांठें लगावें।

॥ अथ कवचम् ॥

उलटा कवचोर पुलटा भाग तृदह देवता खलखली हाह (कवच के प्रहार से सब उलटा पुलटा हो गया, तीन लोक के देवताओं में खलबली मच गई)। **भेद करु कवच मंत्रों आग भैला थीओ तृदह देवता उरी गैला** (कवच मंत्रों से आग निकली जिससे तीनों लोकों के देवता उड़कर भाग गये)।

जीवो तलोत बांधो "जख्य जख्यनि" (यक्ष यक्षिणी) **उपरोत बांधो हाख्य हाख्यीनी 'एही गांडीव धनु प्रहार करु'** (इसी तरह मैं गाण्डीव धनुष का प्रहार करता हुं) **हूं हूंकार आमुकार गाववारी उसर न आहीवि हीमा हंचार** ॥ फूः॥ (हूं हूंकार करके अमुक के शरीर की रक्षा करता हुं, कोई खोटा असर नहीं होवे, मैं सीमा को भी बांधता हूं)।

विधि – इस मंत्र से डोरा बनायें, यात्रा या अन्य प्रयोग समय खुद के वस्त्र को गांठ लगावें तो खुद की रक्षा होवे। अन्य विधि उपरोक्त मंत्र की तरह है।

॥ अथ ब्रह्म कवचम् ॥

श्री कृष्णाय नमः ब्रह्म देव क प्रहार करू तृदह देव क निवारन करूं पाताल पुरत आसे जत माने ब्रह्मार नागपासे बांधी आनु (ब्रह्मा के नागपाश मे पाताल व तीन लोक के देवता को बांधता हूं) **जेने मुर वाक्य न कर** (यदि वाक्य लौटे) **दुरासार ब्रह्मार नागपासे दिवि बर्म्मार रामर मन्त्र हनुमंत्र वुने जाकते ओ बन्दी भैला** (तो ब्रह्मा के नागपाश से बांध देवे ,ब्रह्मा,राम व हनुमान के मंत्र से बन्दी हो जाये)।

हखागर विथवित सगे मध्य पातालत परील ब्रह्मार वान तिदख देव वन्दी भैल (सागर ,स्वर्ग,मध्य पाताल में ब्रह्मा का वान पडे ,तीनो लोक के देव बंदी हो गये)। **आनेस धरमर आगा अनादिर पाव ईश्वर आगाये बान्ध परीथाक आगाये तीदह देव बांधी थैलु चक्षु भरी बांधु लक बान्धु पाओ बांधो मुख बान्धु** (पाव बांधो मुख बांधो) **मोर मुख चाईन कोरीवि राव जेखानि मनु मन्त ब्रह्म कवच अवतार**

भैला तेख्यानि ब्रह्मकवच उतपति भैला कवच खानि ब्रह्म विष्णु महेश्वर दैह्ल पाईला आई घुखानि कवचर ब्रह्म धरीले हाते (ब्रह्मकवच का अवतार हुआ जिससे ब्रह्मा विष्णु महेश भयभीत हुये, कवच को ब्रह्मा ने हाथ में धारण किया)।

अमुकार अमुकार रक्षा करालु भूत प्रेत पीसाच नाहाहीवि अमुकार पासे (मैं अमुक अमुक की रक्षा करता हुं भूत प्रेत पिशाच पास में नहीं आवे) **मुर कवच बांध कर चौधाभुवन सहीपार ब्रह्म कवच बान्धीलु हाते आनीवे भेमुर ककलेत बान्धीलु आनी तृदख आदि अनादि चन्द्र हूर्य बांध भैला प्रथक ब्रह्म कवच वन्दो आनीरी दवक करी बांधीलो तानीह अच खन्द माहाखन्द परवत खन्द** (खण्ड) **जात खन्त आदी अनादी गैला कवनियान मन्त्र वान भैला तनजीया तयेखने** (उसी क्षण) **देव दानवर अखुर हरो मन्द करा** (देव दानव का अक्षर याने भाग्य मंद करा) **पान्द हूर काल जिनित पाले हरे मातख गुची तेजीते धरीया अन्द धरि बान्धो मन्द सो मनभद्र** (मणिभद्र) **वाक्य मारीले मत्र आन्तो जेवे मोर आज्ञा लोरे माहा देवर जन्ता सीगी परे** (मेरा वचन टाले तो महादेवजी की जटा पड़े)।

जेवे मोर अज्ञा मोरे पार्वती आई खन धरे हागर खुवाई मोरो गीरी पर्वत लोवाई (यदि मेरा वचन लौटे तो पार्वती का स्तन लजे समुद्र सूख जाये मेरु पर्वत उलट पड़े)। **तेवे होमेरु वान्ध मोक लाई मोर हाक गुरुर दाक जेई मते बान्धीलु हेई मते थाक ।।फूः।।**

(सुमेरु को बांधता हूं मेरा हुकम गुरु की शक्ति जिस तरह बांधू उसी तरह बंधे)

विधि – पूर्व के कवच मन्त्रों की तरह है।

।। देवहारा ।।

(देव, प्रेत नष्ट करना)

देवहारा भैला विद्यमान वर होजाई हरु होजाई बडवानी हरुपानी प्रीनिया जडदन्तीय हम रे दन्तिया मारो हूतिक ब्रह्मार नागपासे बान्धो रामर आज्ञाये मारो वान गुराई विरा कुबेर सामन जाखीनि दाईनि खेत्रखेतरी भूत प्रेत पिसाच दैत दानव असुर देवतागनर मायामारो करो निजान ओं ही कं हों हां हें फत स्वाहा।

नारायन के राम लक्ष्मन के आदी गुरु अनादी गुरु धनन्तरी (धन्वन्तरी) **दह दिक्कपाल क देवता इन्द्र सन्द्र** (चन्द्र) **स्वर्य** (सूर्य) **वायो बांधी कोवेर जम वरुन लक्ष्मी हरस्वति** (सरस्वती) **कमक्षा भगवति धरो राधा हीता माव क** (सीता माता

****

के) कालीका हंसरज कालीक ब्रह्माई विष्णु महेश्वर कूर्म अनन्त गुहाई कहवारे चरनत परी कुटि कुटि वार (करोड़ करोड़ बार) **नमस्कार करो धन तोलु श्रीराम क स्वरी मन्त्र पढ़ो गनपति क करो प्रनाम कातर करो कारन पूर्वक करो तोमाक** (तुमको प्रनाम करो)। **दक्षपति जक्षपति माहादेवर आज्ञा गोरक्षर वानी प्रीथविर तलर धनगने लगात कमात मोहोर वचन कहा** (मेरा वचन कहा) **जारेक कैलाह क** (कैलास के) **पातालर अनन्त गोहईर** (अनन्त गौसाई) **चरनत करो हेवे आठ गोता दिगज क करे हेओ प्रीथवी तलर घने हत्ये हत्ये भगाल मात जेवे एतेकट आज्ञाई घने मात न लगाई जेवे महादेवर आज्ञा भंग करा तेवे महादेवर जन तात पांव मल सह तेवे देवी माई क वाम भोरी थैला तवे हून रे कुबेर वेलो तोक जदी उठी मनत लगो आहा क बोलो हाकातो होक निन्दा वचन प्रीथवीर तलर जत नागगन मुण्डे मारो** (पृथ्वी तल के जितने नागगन हैं उनके सिर के टुकड़े करो)।

लाथी जगत तोक जदी हहन्ति आसे जदि दर विस्त वचने तोक कोली खण्डन (वचन खण्डन) **कोरीवा आमार आज्ञा भंगा न करीवा "तवर सर पातालो लाथीर जाक"** (तेरा सिर पाताल में जाय पड़े) **सोता पावनि हारी जात रजस्वला तिरी ब्रह्म वध मद पान मात्री गमन इस्कर पातक** (तेरा पुण्य नष्ट होवे, रजस्वला स्त्री, मातृ गमन इश्क, ब्रह्महत्या का पाप लगे)। **तोमाक निपोसर्प थालीर परा श्री परम अस्त्रत परीमरह ब्रह्म वध कराह ॥ फूः॥** (तेरा निज सिर परम अस्त्र से थाली में पड़े, ब्रह्म हत्या लगे – अतः हे प्रेत तू नष्ट हो जा)।

विधि – पहले कवच मंत्रों से स्वयं की व निवास की रक्षा करें पश्चात् ९-११ आवृति से सरसों फेंके व सरसों से हवन करें, प्रेत नष्ट होवे।

॥ राज मोहिनी ॥

मुहनी मुहनी वर मुहनी मोर मुहनी नाऊ राजा गइसे (अब राजा के पास जाता हुं) **काल सक्र धरिवले** (कालचक्र धरिले) **तार मुहीवे जावो** (तुम मोहने जावो)।

राजा क मोही प्रजा क मोहो मोहन तान हले मुरेक मोहि वाहि आसि "हमाजर माझोत" (समाज के मध्य) **फीक धान पारे धोने हिद्ध गुरु र पाओ रक्षा करा कामरूपी कमाख्या माओ।**

विधि – शनिवार के दिन तेली के जाकर पहली घाणी का तेल की पहली धार ग्रहण कर तेल लावें उस तेल को इस मंत्र से सिद्ध करो पश्चात् जब काम होवे तब इस मंत्र से तेल मुह पर लगाकर राज दरबार में जावें।

॥ फूल मोहिनी ॥

फुलोर उखरी फुलोर पुखरी पुखरी पारोर फूल फूल फूली आसं चमत्कार करी "मारोक तजीवि" (मेरे के तजे तो)**वापोक तजीवी तजिवी हून्दर भाई** (वो अपने सुन्दर भाई को तजे) **मोर वचन गुरुर दाक** (मेरा वचन गुरु की शक्ति) **अमुकी मोक न देखीले देह प्रान दि थाक** ॥फूः॥ (मेरे को नहीं देखे तो उसके प्राण चले जाय)।

विधि – फूल अभिमंत्रित कर स्त्री को देवे, वशी होवे।

॥ धूल मोहिनी ॥

(धूली वान)

धुली आहन धुली वाहन ए धूली सारी मारीलो छातिनी एडीवा कुलोर जाती मारो क तजीवी वापोक तजीवा तजीवा हुनुर भाई कुलार स्वामी छाडिवि (धूली मंत्र सीने पर मारता हुं, अगर मेरे को तजे तो अपने सुन्दर भाई व कुल के पति को भी छोड़ देवे)।

आहीवि मोर ठाई (मेरे स्थान पर आवे) **मोर वचन गुरुर दाक मोक न देखी अमुकी देह प्रान दि थाक** ॥फूः॥ (मेरा वचन गुरु की शक्ति अमुकी मेरे को नहीं देखे तो उसके प्रान चले जायें)।

विधि – बायें पैर की मिट्टी की धूल को मंत्र कर स्त्री के कपड़े पर मारे तो वशी होवे।
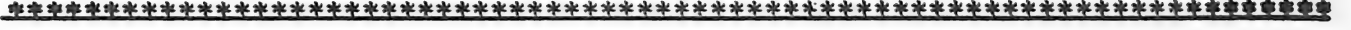
द्वितीय भाग

शाबर मन्त्र

अथ घण्टाकर्ण कल्प

प्रस्तुत प्रयोग जैन साधक की संवत १६६१ की पाण्डुलिपि में से श्रीकृष्णगोपाल शर्मा खण्डार (राज०) द्वारा प्राप्त हुआ। उनके स्वयं के द्वारा भी कई प्रयोगों को अनुभूत किया गया है।

प्रयोग शुभ मास, शुक्ल पक्ष तथा ५-१०-१५ तिथि सोम, बुध व गुरूवार में करें। रवि पुष्य, हस्त व मूल नक्षत्र में हो या अन्य कोई अमृत सिद्धि योग बने तब प्रयोग करे। प्रयोग देवस्थान, नदी तालाब के पास या घर में एकान्त में करे।

प्रयोग हेतु कम से कम ३३००० जप नियम पूर्वक ४२ दिन में करे। प्रातः मध्याह्न, सायं एक एक माला करे मध्य रात्रि में १ माला का होम करे। शत्रुनाश हेतु सरसों, कालीमिर्च व गुग्गल से होम करें।

पुरूषाकार यंत्र बनाये। कण्ठ में **श्रीनमः** लिखे। दक्षिण भुजा में **सर्वे ह्रीं नमः** नाम भुजा में **शत्रु नाशने नमः**, **शिर के ऊपर अग्नि चौर भयं नास्ति ह्रीं घण्टकर्णो नमोस्तुते** ठःठः स्वाहा लिखे।

हृदय व उदर में १२ कोष्ठक बनाकर उनमें **ॐ ह्रीं श्री क्लीं सर्वदुष्टनाशनेभ्य** १२ अक्षरों को लिखे।

दक्षिण पैर में **रां रीं खं** लिखे एवं बांये पैर में **हां ह्रीं हूं नमः** लिखे।

इस पुरूषाकार के चारों ओर घण्टाकर्ण मंत्र लिखे।

ॐ घण्टाकर्णो महावीर सर्वव्याधि विनाशकः ।
विस्फोटकं भयं प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल ॥१॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव लिखितोऽक्षर पंक्तिभिः ।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति वातपित्त कफोद्भवा ॥२॥
तत्र राजभयं नास्ति यांति कर्णे जपातऽक्षयं ।
शाकिनी भूत वैताला राक्षसा प्रभवन्ति न ॥३॥
नाऽकाले मरणं तस्य न च सर्पेण डस्यते ।
अग्नि चौर भयं नास्ति ह्रीं ॐ घण्टाकर्णो नमोस्तु ते ॥४॥
ठः ठः ठः स्वाहा ॥४॥

अन्य विधि- दीपावली रात्री, नवरात्र में अथवा सूर्य चन्द्र ग्रहण से तीन दिन तक उपवास पूर्वक १२५०० जप करे, पृथ्वी पर शयन करे। घृत, तिल, गुगल, सहदेवी राई, सरसों, काकडे रूई के (बिलोने) दूध, दही शहद सबको मिलाकर दशांश होम करें। अर्धरात्रि में ५०० बार होम करे उस समय गुगल, नारियल का बूरा, छुआरा २१, किशमिश २१, बादाम २१, पान २१ तथा मिश्री लाल चन्दन, सहदेवी, अगर, घृत, दूध, दही शहद के साथ बील व पीपल की समिधा से हवन करे।

मंत्र सिद्धि होने बाद प्रयोग करे।

असाध्य रोगों में जहां डाक्टर जवाब दे चुके हो उन रोगियों के लिये यह प्रयोग रामबाण है।

प्रयोग समय स्नान करते समय गंगादि तीर्थो का स्मरण करें। मंत्र – **ह्रीं ह्रीं गंगायै नमः।**

वस्त्र पहनते समय **ॐ ह्रीं क्लीं आनंद देवाय नमः** मंत्र पढे ।

जप करते समय भूमि व आसन की पूजा करे।

पुरुषाकार घण्टाकर्ण यन्त्र

****
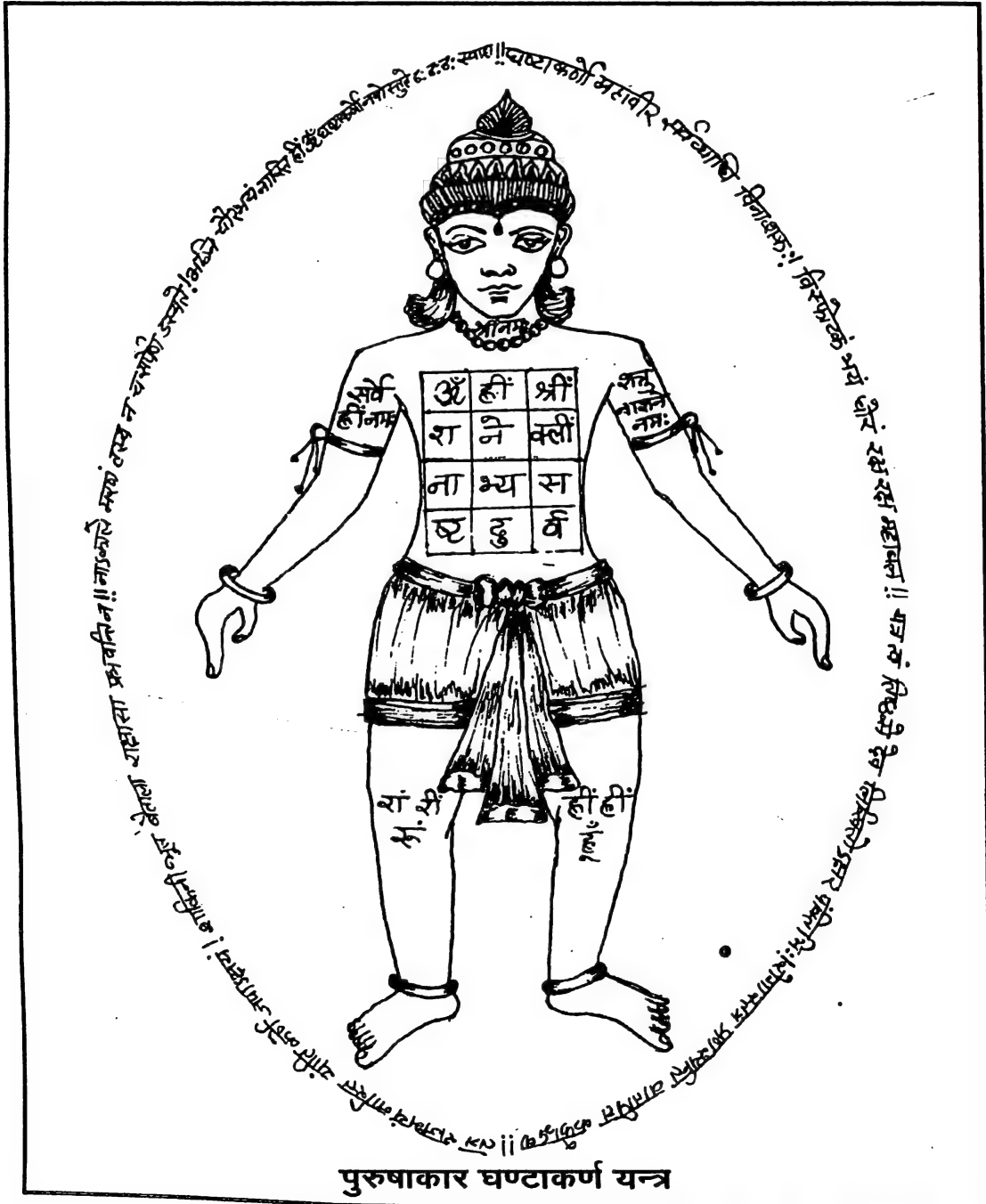
॥ अस्य प्रयोग विधानम् ॥

१. असाध्य रोगों में इस मंत्र का अनुष्ठान करें, मंत्र से अभिमंत्रित जल रोगी को पिलाये लाभ होगा।

२. प्रातः काल ४ बजे उठकर २१ बार मंत्र पढ़े फिर राज दरबार में जावे सम्मान मिले।

३. २१ बार मंत्र कर पान, सुपारी, लौंग, इलायची जिसे खिलाये वशी होवे।

४. यात्रा पूर्व २१ बार मंत्र जपे यात्रा सुखद होवे तथा चोर भय नहीं होवे जहां जावे वहां सम्मान मिले।

५. रात्रि में सोते समय जप करे चोर सर्पादि भय नहीं होवे।

६. गुगल धूप करने से भूत बाधा दूर होवे। २१-५१ बार गुगल होम करे।

७. अपने वस्त्र पर मंत्र बोलकर गांठ लगाकर जावे तो बाहर सम्मान मिले।

८. हींग मिरच साबुत लाल, अफीम डोडा बराबर बांटकर २१ बार मंत्र कर रोगी के नेत्र में अंजन करे, १०८ बार गुगल होम करे तो भूत प्रेत रोगी का उत्पात नष्ट होवे।

९. केसर, कस्तूरी, कपूर, गोरोचन, हींगलू इन सबको मिलाकर भोजपत्र या कागज पर मंत्र लिख अपने पास रखे, रक्षा होवे तथा सर्वजन वशी होवे, लक्ष्मी का लाभ व्यवसाय में होवे।

१०. स्याही व पेन से कागज पर लिखकर हाथ में बांधे तो सर्वज्वर जाये।

११. बड़े जैन मंदिरों में जहां घण्टाकर्ण की मूर्ति होवे वहां अथवा बद्रीनाथधाम में भी घण्टाकर्ण मूर्ति है। वहां मूर्ति पर मोटा लच्छा चढावे, पुजारी को दक्षिणा देकर लच्छा प्राप्त करे। उसका डोरा बनाकर रोगी को पहनावे तो ज्वर उतर जायेगा। पुनः यह लच्छा दूसरे तीसरे रोगी पर भी काम करेगा।

१२. कुंवारी कन्या के हाथ से काता सूत ७ बार लपेटे तथा उसमें घोड़े का बाल मिलाकर ७ गांठे २१ बार मंत्र बोलते हुये लगाये तो चौरासी बाय जाये।

शर्माजी ने अपने अनुभव में लिखा है जो रोगी २-३ वर्ष से खाट पर थे वे रोगी भी ठीक हुये है।

१३. गुड़ को २१ बार अभिमंत्रित कर खिलावे रोगी ठीक होवे।

१४. यदि गर्भवती कष्ट पर रही हो पानी मंतर कर पिलावे तो १० मिनट में सुख प्रसव होवे।

१५. गुगल गोली १०८, नमक की डली १०८, लाल सनेर १०८, बिनोले १०८, रतनजोत १०८, राई १०८, सरसों दान १०८ उड़द १०८ को एकत्रित करे, चौराहे की मिट्टी, दुश्मन के पैरों की मिट्टी, शिर का बाल, सबको मिलाकर होम करे, हवन की राख शत्रु के घर डाल देवे उसको लांघने पर शत्रु रोगी होवे। यदि ठीक करना हो तो अष्टगंध से मंत्र लिखकर सिर या गले में बांधे या प्रातः -सायं गाय के दूध में घोल कर पिलाये।

१६. नागकेसर ३ तोला, सौठ ३ तोला, मूलहेटी ३ तोला, हनुबेर (हजराती बेर) ३ तोला, अश्वगंधा ३ तोला सभी औषधी मिलाये, एक रंग की गाय हो तथा बछड़े की माँ हो, उसके दूध से सूर्य के सम्मुख खड़ी होकर पुत्र कामना वाली स्त्री रजोदर्शन के प्रथम दिन प्रातः तथा चौथे दिन पीयें, पुत्र होवे।

शर्मा जी ने तीन औरतों पर प्रयोग किया जिनको विवाह के १५-२० वर्ष में भी संतान नहीं हुई, केवल नाग

केसर का प्रयोग अभिमंत्रित करके किया तथा घण्टाकर्ण यंत्र का डोरा गले में बांधा सिर्फ २ बार में सफलता मिली।

१७. यदि लड़कियां अधिक हो रही है तो नाल परिवर्तन की कामना से नारेल को १०८ बार मंत्र कर ७२, ७३ या ७४ दिन सिराहने रखे नाल परिवर्तन होवे।

१८. पुरुष के सिर का बाल, पहने वस्त्र का टुकड़ा, गाय के घी के साथ कज्जल करे, दीपावली, हस्त, पुष्य या मूल नक्षत्र का सूर्य व सिद्धि योग हो उस दिन करे। कज्जल करते समय १०८ बार जप करे। उस काजल को पुनः १०८ बार जप कर लगावे पुरुष वशी होवे।

१९. घोड़े की पूंछ के २१ बाल लेवे उनको ७ बार मंत्रकर डोरा बनाकर बांधे फोड़ा ठीक होवे।

२०. लाल सूत का डोरा के १४ धागे लेवे १४ गांठे लगावे २१ बार मंतरे उस डोरे को बांधने से बवासीर ठीक होवे।

२१. डोरा के २१ गांठे लगावे ७ बार मंतरे तथा सात बार भाड़ा देवे ज्वर ठीक होवे।

२२. सोते समय ७ बार मंत्र पढ कर सोवे, दिग्रक्षण करे दुःस्वप्न नहीं आवे, चोर सर्प भय मिटे।

२३. एक हाथ से कुआ का जल निकाले १०८ बार मंतर कर चारो दिशाओं छींटा देवे, मरी-सूखा रोग दूर होवे उस जल से रोगी को नहलावे।

२४. डोरा में यंत्र बनाकर बांधे तथा १४ बार बोलकर १४ गांठे लगावे वृद्ध रोगी के बांधे, पीड़ा दूर होवें।

२५. **लक्ष्मी प्राप्ति प्रयोग** - षट्कोण में **ॐ क्लीं ह्रीं ह्रीं ह्रौं नमः** लिखे चारों ओर घण्टा कर्ण मंत्र के चारों श्लोक लिखें।
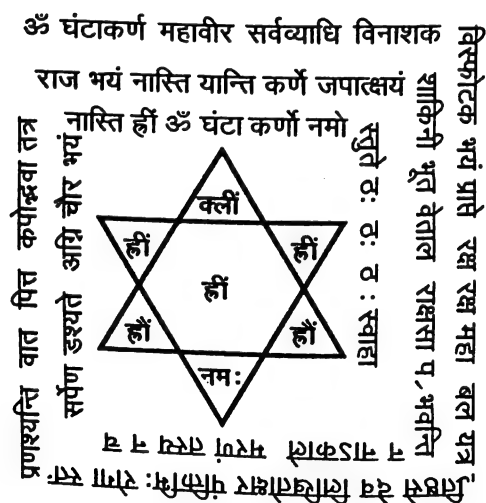
घण्टाकर्ण लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

प्रयोग करते समय पूर्व में मुंह करे सफेद वस्त्र, सफेद आसन, सफेद माला पर ७२ दिन में सवालाख जप करके बादाम, छोंआरा, खोपरा बूरा से हवन करे एक समय भोजन करे, छः महिने में लक्ष्मी प्राप्त होवे। सर्व सुखी होवे।

लेवे उनके टींकी लगावें या इनकी लकड़ी पत्ते लेकर कलश में रखे घण्टा कर्ण मंत्र से पूजा करे। फिर डोरा बनाकर स्त्री के बांधे तो बंधन खुलकर स्त्री को संतान होवे।

३४. भोज पत्र पर अष्टगंध में मंत्र लिखे पूजा करे। अपने पास रखे, रोगी के बांधे तो चौराहे की ठोकर से लगा रोग दूर होवे। सर्व रक्षा होवे। १०८ बार जप कर दूध, दही, किशमिश से होम करे तो रोग दूर होवे लक्ष्मी प्राप्त होवे।

चौराहा मसान दोष नाशक घण्टाकर्ण यन्त्र

३५. निम्न यंत्र को केसर, कस्तुरी, सफेद चंदन, लाल चन्दन, हिंगलू, कपूर, गौरोचन, अगर से लिखना, दूध, दही, घी, शक्कर, शहद, किशमिश, बादाम, चारोली से १०८ बार आहुति देना। यंत्र बांधने पर सर्व प्रकार के उपद्रव नष्ट होवे ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होवे।

सर्वविघ्न नाशक घण्टाकर्ण यन्त्र

३६. उपरोक्त यंत्र का पानी खोलकर पिलावे तो स्त्री की प्रसव पीड़ा दूर होवे।

३७. इस यंत्र के पानी को पिलाने से जहर भी उतर जाता है।

३८. घंटा बजाते हुये मंत्र पढे तो जहां तक घण्टे की आवाज जावे उसको रोगी सुने तो उसका कष्ट कटे।

३९. उपरोक्त मंत्र को एक हाथ से निकाले पानी में डुबोवे १०८ बार मंत्र पढे और अग्नि पर छींटा देवे तो अग्नि बुझ जायेगी।

४०. **पुत्र प्राप्ति प्रयोग** – नाग केसर, चूर्ण को बारीक पीसे। मिश्री सवा तोला, १ तोला चूर्ण को गाय के घी में मिलाकर खावे। रजस्वला स्त्री दूसरे दिन से ५वें दिन तक लेवे। गाय का दूध पीवे। यंत्र बनाकर गले या कमर में बांधे। चार मास तक प्रयोग करे तो गर्भ प्राप्त होवे।

६९९२	६९९९	२	७
६	३	६९९६	६९९५
६९९८	६९९३	८	१
४	५	६९९४	६९९७

गर्भ धारण यन्त्र

अथ अल्लोपनिषत्

प्राचीन काल में प्रसिद्ध साधु संतों व पीर पैगंबरों ने एक दूसरे के धर्म का आदर किया है। शाबर मंत्रों में हिन्दु मंत्रों में मुस्लिम देवताओं की आन व मुस्लिम शाबर मंत्र में हिन्दु देवताओं की आन युक्त कई मंत्र मिलते है।

इसी तरह मुगल सम्राटों में कई विद्वान संस्कृत व साहित्य के अच्छे ज्ञाता हुये है। उन्हीं मे से किसी के समय संस्कृत लिपि में मुस्लिम व हिन्दु देवताओं सम्मिलित रूप से सूक्त बनाया गया है।

ग्रंथ की रचनां का नाम अथर्वण शाखांतर्गत प्रयोग लिखा है। भीलवाडा में कहीं से केवल एक पेज ही हमें प्रिन्ट हुआ प्राप्त हुआ है।

हरि ॐ वरुणनुदिव्यानुदात्त इल्लल्ले मित्रा ह्रीं अस्मल्लां इल्लल्ले मित्रा वरुणा दिव्यानि धत्ते इल्लल्ले वरुणो राजापुनर्ददुः। हयामि मित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरुणो मित्रो तेजकामः ॥१ ॥

हूं होतारमिन्द्रो होताइन्द्रोरामाहासुरिन्द्राः। अल्लोज्येष्ठं श्रेष्ठं परमपूर्ण ब्रह्मण अल्लाम् ॥२ ॥

द्रां अल्लोरसुलमहंमदरकबरस्य अल्लो अल्लां आदलाबुमेककं तिखातकम् ॥३ ॥

अल्लोयज्ञेनहुत्वः अल्लासूर्य चन्द्र सर्वनक्षत्राः।

अल्लो ऋषीणां सर्वार्थव्या इन्द्राय पूर्वमाया परमं अंतरीक्षाः ॥४ ॥

अल्लोपृथिव्यानिधत्ते इल्लल्ले वरुणोराजा पुनर्ददुः।

इल्लेल्ले कबर इल्लांकबर-इल्लांइल्लेति इल्लल्ले ॥५ ॥

हरि ॐ अस्य इल्लां इल्लल्ले मित्रा वरूणोराजा पूर्णदध्युः हयामिमित्रो इल्लांकबर इल्लांरसूल-महंमदरकबरस्य अल्ले अल्लोपूर्णदध्युः ॥६ ॥

हरि ॐ अल्लाइल्लल्ला अनादिस्वरूपाय अथर्वणीं शाखां ह्रीं जनानां पशुसिद्धान् जलचरान् अद्दष्टं कुरु करु फट्। असुरसंहारिणीं हं अल्लो रसुलमहंमदरकबरस्मल्ले अल्लो इल्लल्लेतिल्लल्ला ॥७ ॥

इस सूक्त के अनुसार अल्ला मित्र वरूण इत्यादि स्वरूप व पूर्ण ब्रह्म है। इसका प्रयोग नजर टोक, शत्रु संहार हेतु किया जाता है

॥ इति अथर्वणशाखायां अल्लोपतिषत्संपूर्णः ॥

अथ सर्वकार्य साधक गणेश मंत्रा:

(१) ॐ गुरुजी समरुं गुणपति साधूं, लाण डाकण मारुं, चार सीकोत्तरे पांए लगाडूं, गुणपति राजा घोडे चडीया, भूत पलीत मे विघन हमेशा होंकारा, पीछा फरे तो माई पार्वती जी का दूध हराम करे।

(२) ॐ गुरुजी गणेश बोले भोले सवा सेर लाडूं खावें, होंकारा सो कोस जावे, हमेश होंकारा, पीछा फरे तो माई पार्वती जी का दूध हराम करे।

(३) ॐ गुरुजी बोडाया वीर, तू बलीयो वीर, जब लग तारी सेवा करुं लीलाथई शिरधरुं, माथे मांडू पलाण, गसाण, मांथी मुठी करुं, कहोने सन्तो राम राम।

(४) ॐ गुरु जी तम गणेश गौरी का पूत, ज्यां समरुं त्यां आयो जीत, तमारा पिताजी ईश्वर महादेव साची तमारी सेवा करुं, हमेश कामे पधारो और लाडू, सिन्दूर नी पड़ी, लवींग सोपारी पान बीडू, श्री गुणपतिनां उर मां धरु।

(५) ॐ गुरुजी सोधबाई से चला आय, राजा प्रजा लागे पाई, वाटे घाटे, न मारी ओजवाई, ज्यां समरुं त्यां आगेवान।

॥ अस्य विधानम् ॥

गणेश चतुर्थी के दिन लाल लंगोट पहन कर जप करें। लाल कपड़े के आसन पर चावल व दूर्वा रखकर उस पर गणेशजी की मूर्ति रखें। मूर्ति को दूध दही पंञ्चामृत से स्नान करा कर शुद्ध जल से स्नान कराये। स्नान कराते समय **ॐ गुरुजी गं गणपतये नमः, ह्रीं गं गणपतये नमः** मंत्र का स्मरण करें। सिन्दूर लगायें, लाल पुष्प चढायें। चूरमे के लड्डू का भोग लागकर लौंग इलायची पान का बीड़ा दक्षिणा चढायें। गुग्गल धूप देकर आरती करें फिर ५-५ माला जप करें। पश्चात् प्रसाद के लड्डू का भोजन करें जो शेष बचे उसे जमीन में गाड़ देवें। चावल को अपने पास संभाल कर रखें। कार्य प्रयोजन जाते समय उन में से कुछ चावल ले जाए। गुगल धूप देकर मन्त्र जप करें, अक्षत पास में रखते हुये कार्य का चिन्तन करें ।

॥ विजय गणपति मंत्र॥

मंत्र :- ॐ वर वरदाय विजय गणपतये नमः ।

इस मंत्र के सवा लाख जप करे। गणेश के लाल पुष्प, लाल कनेर के पुष्प चढ़ावे। ५ कन्या भोजन कराये। कार्य पर जाते समय रक्त पुष्प से पूजा करे एवं एक पुष्प साथ ले लाये।

लक्ष्मी मंत्र, धन प्राप्ति व व्यापार वृद्धि प्रयोगा:

॥ लक्ष्मी मंत्र व धन प्राप्ति प्रयोग॥

(१)

आवो लक्ष्मी बैठो पास, आंगन रोरी तिलक चढाऊं, गले में हार पहनाऊं, बचनों की बांधी, आवो हमारे पास। पहला वचन श्रीराम का, दूजा वचन ब्रह्मा का, तीजा वचन महादेव का, वचन चूके तो नरक पडे, सकल पञ्च में पाठ करूं, वरदान नहीं देवे तो महादेव की शक्ति की आन।

दीपावली की रात्रि को १० माला करें, लक्ष्मी का पूजन करे तो वर्षभर आनन्द रहे।

(२)

ॐ श्री शुक्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे श्रीमहालक्ष्म्यै नमो नमः। लक्ष्मीमाई सबकी सवाई, आओ चेतो करो भलाई, ना करो तो सात समुद्रों की दुहाई, ऋद्धि सिद्धि ना देवो तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

कार्य व्यापार में दुकान में एक माला नित्य करे तो शुभ रहे।

(३)

विष्णुप्रिया लक्ष्मी, शिवप्रिया सती से प्रकट हुई कामेक्षा भगवती, आदि शक्ति युगलमूर्ति महिमा अपार, दोनो की प्रीति अमर जाने संसार, दुहाई कामाक्षा की, आय बढा व्यय घटा, दया कर माई, ॐ नमः विष्णुप्रियाय, ॐ नमः शिव प्रियाय, ॐ नमः कामाक्षाय ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

विशेष लाभ हेतु सवा लाख जप करे।

(४)

ॐ क्रीं श्रीं चामुण्डा सिंहवाहिनी बीस हस्ती भगवती रत्नमण्डित सोनल की माल, उत्तर पथ में आप बैठी, हाथ सिद्ध वाचा, ऋद्धि सिद्धि धन धान्य देहि देहि कुरु कुरु स्वाहा।

सवा लाख जपने से विशेष लाभ होवे।

(५)

वाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड के प्रत्येक श्लोक की आहुति देवे। तथा सर्ग समाप्ति पर निम्न मंत्र पढे-

ॐ रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम् ।
भो दशास्यान्तकास्माकं रक्षां देहि श्रियं च ते ॥

पश्चात्- **ॐ श्रीं श्रियै नमः मह्यं श्रियं देहि देहि दापय दापय स्वाहा।**

इस अनुष्ठान में ८ दिनों तक प्रतिदिन ७ सर्ग व नवें दिन १२ सर्ग का पाठ करके समापन करें।

(६)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रियै नमो भगवति मम समृद्धौ उज्वल उज्वल मां सर्वसम्पदं देहि देहि ममाऽलक्ष्मीं नाशय नाशय हूं फट् स्वाहा।

यह मंत्र में मम अलक्ष्मीं(ममाऽलक्ष्मीं) नाशय नाशय को ध्यान पूर्वक पढे उच्चारण शुद्ध करे।

ममा लक्ष्मी अलग अलग नहीं एक साथ पढें। दिपावली व ग्रहण के दिन सिद्ध करके नित्य एक माला करे।

(७)

ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावती ॐ ह्रीं ॐ ॐ पूर्वाय दक्षिणाय उत्तराय पश्चिमाय सर्वजन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र की दिपावली कि रात को सिद्ध कर प्रातः काल बिस्तर छोडने से पूर्व १०८ बार मंत्र जाप कर चारों दिशाओं के कोणों में २१ - २१ बार फूंकने से सभी दिशाओं से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

(८)

॥ सिद्धलक्ष्मी मंत्र ॥

गोरा सुत गुरु करै सहाई, सुख बरकत घर-आंगन आई। कहां-कहां से आई? राजदरबार से, खेत-खलियान से जमीन- आसमान से। देव दनुज मानव से सकल दिवस से, नौ नाथ चौरासी सिद्ध खींच घसीट-घसीट, पछीट-पछीट कर लावे। दुख दलिद्दर भागे, कौन भगाए, राजा कुबेर भगाए, राजारामचन्द्रजी भगाए। हनुमान को घोटा भैंरो को सोटा, नाहरसिंह की हुंकार काली कलकत्ते वाली की जयकार। दुहाई गिरनार के बाल अवधूत की, नाथन के नाथ शंकर की। मेरी भगत गुरु की शक्ति मंत्र सांचा।

साधक इस मंत्र का दिपावली की रात को प्रयोग करे। चने के आटे बेसन से एक पिण्ड तैयार करें व चार पिण्ड उबले हुए चावल के हाथों से बनावे। एकान्त स्थान में एक चौकी लेकर उस पर एक सफेद कपड़ा बिछावे। चौकी के बीच में एक मुठ्ठी चावल की ढेरी बनावे उस पर चांदी का सर्प स्थापित करे। इसके दाहिनी ओर बेसन का व बाँयी ओर चावल के दो पिण्ड रखे पिण्डों के पास चार नागफनी की कीले रखे। चूने के सात कंकड लेकर चौकी पर दाहिनी तरफ चार कंकड रखे व बाँयी ओर चूने के तीन कंकड़ रखे। सर्प को पंचामृत व गंगाजल से स्नान कराये। चौकी पर सर्प को रखकर सभी की पंचोपचार पूजा करनी चाहिए। मंत्र जप से पहले प्रार्थना करनी चाहिए की हे लक्ष्मी देवी आप हमारे घर में स्थायी रूप से रहे आप हमारे व्यापार की उन्नति करे आपकी कृपा हमारे पर सदा बनी

रहे। तत्पश्चात् मंत्र का जप करना चाहिए। मंत्र जाप होन के बाद चांदी के सर्प व नागफनीयों को निकाल लेवे व बची हुई सामग्री को चौकी पर रखे सफेद वस्त्र में रखकर उसकी पोटली बनावे और उसको किसी जलाशय में विसर्जित कर देवे। इस मंत्र से लक्ष्मीजी की कृपा सदा बनी रहती है और घर की सुख समृद्धि में वृद्धि होती है।

॥ रिद्धि सिद्धि दायक मन्त्र ॥

(१)

ॐ नमो आदेश गुरू को गणपति वीर वसे मसाण जो मांगू सो आण पांच लाडू सिर सिन्दूर हाटि की मांटि मसाण की खेप ऋद्धि सिद्धि मेरे पास ल्यावे शब्द सांचा पिण्ड कांचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

यह मन्त्र भण्डारे के समय करें। ५ लड्डू के सिन्दूर लगाकर कुये पर जायें। एक लड्डू एक लोटे में ड़ालकर कुये में लटकायें जब जल भर जाये तो २ लड्डू कुए में ड़ाल देवें। लोटे को लाकर भण्डारे के सामान के पास स्थापित करें, तथा २ लड्डू देवता के चढ़ावें तो सामान की कमी नहीं आवे।

(२)

॥ रिद्धि सिद्धि का मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश श्रीगुरु को, गजानन वीर बसे मसान, अब दो ऋद्धि का वरदान, जो जो मांगू सो सो आन, पांच लड्डू शिर सिन्दूर हाट बाट की, माटी मसान की, शेष रिद्धि सिद्धि हमारे पास पठेव, शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

भण्डारा के दिन पांच लड्डू लेकर उनके सिन्दूर लगावे, कुए के पास जाकर वरुण पूजा करे तथा चार लड्डू कुए में डाल देवे एक लड्डू कलश में रखे उसमें कुए का जल भर देवे तथा उस कलश को भण्डार गृह में रख देवे।

॥ पंद्रह यंत्र लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग: ॥

मन्त्र – ॐ नमो एक पांच नौ जोवन वारी, छः सात दूज की रखवारी, आठ तीज चौथ की जाई, सिंह भवानी लक्ष्मी घर आई शब्द सांचा लक्ष्मण जति का यही वाचा।

१	६	८
५	७	३
९	२	४

उपरोक्त विधि के अनुसार यन्त्र लेखन के समय पहले १, ५, ९ लिखें फिर ६, ७, २ लिखकर ८, ३, ४ लिखें मन्त्र पढ़ते जायें व लिखते जायें। मन्त्र १० हजार जपकर गुगल होम करें लक्ष्मी वृद्धि होवे।

इस यन्त्र में पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण का योग ही १५ आता है, तिर्यक रेखाओं का योग १५ से कम-अधिक होता है। अतः प्रचलित १५ यंत्र से भिन्न है, या प्रचलित पंद्रह यन्त्र में लिखने की विधि उपरोक्त क्रम से लिखें।

॥ अथ पन्द्रह यन्त्र प्रयोगः॥

पन्द्रह यन्त्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चारवर्ण के है।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

ब्राह्मण वर्ण यन्त्र

८	३	४
१	५	९
६	७	२

क्षत्रिय वर्ण यन्त्र

४	९	२
३	५	७
८	१	६

वैश्य वर्ण यन्त्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

शूद्र वर्ण यन्त्र

८, १, ६,।३, ५, ७,।४, ९, २ ब्राह्मण वर्ण, ८, ३, ४।१, ५, ९, ६, ७, २, क्षत्रिय वर्ण, ४, ९, २,।३, ५, ७।८, १, ६ वैश्य वर्ण तथा २, ७, ६।९, ५, १। ४, ३, ८ शूद्र वर्ण के है।

यन्त्र लिखने की कई विधियां है।

(१)

अंकों को १-२-३-४ नवदुर्गा के नामानुसार लिखें।

(२)

ग्रहों के अनुसार १ सूर्य, २ चन्द्र, ३ मंगल, ४ बुध, ५ बृहस्पति, ६ शुक्र, ७ शनि, ८ राहु, ९ केतु लिखें। उसी क्रमानुसार पूजा करें।

(३)

८, १, ६ के अनुसार अंक लिखें यथा - अष्टकला (८) परमेश्वरी, एको (१) पुरुष प्रधान, षड (६) दर्शन को सेविए। तीनों (३) भए सुजान, पंच भुवा (५) मैं सिद्ध करु, सत्य (७) धर्म की बात। चार द्वीप (४), नवखण्ड (९), दो (२) चन्द्र सूरज की साख।

(४)

एक विधि पूर्व में प्रयोग के प्रारंभ समय में बतादी गई है।

॥ पूजा विधि ॥

इस यन्त्र की विविध रूपों में उपासना की जाती है।

(१) नवग्रह स्वरूप में है, तथा अगल **अलग ग्रहों के अनुसार** यह यन्त्र नौरूपों में भेद क्रम से लिखा जाता है।

(२) नवदुर्गा स्वरूप में मानने वाले इस यन्त्र के सामने **चामुण्डा का मन्त्र** जप करें।

(३) हरिहर ब्रह्मात्मक भी इसे माना जाता है। अत: '**ॐ हरिहर ब्रह्मात्मने नम:**' इस मंत्र को मान कर जप करें।

(४) शिव शिवात्मक मानने से '**ॐ नम: शिवाय**' मन्त्र के जप करें।

(५) आम या फरास के पट्टे पर कुमकुम बिछा देवें उस पर अनार की कलम से यन्त्र लिखें। यन्त्र की पूजा करें लापसी का भोग लगावें थोड़ा थोड़ा भोग यन्त्र के दांए बांए रखें। चावल कुमकुम चढ़ावें। सवापाव लापसी, १० पूरी २१ पान २१ सुपारी पट्टे पर रखें। लिखते समय मन्त्र पढ़ें।

ॐ नमो चामुण्डा माई, आई धाई मूआ मरा, लिया उठाई, बाल रखें बालनी, कपाल रखे कालिका, दाहीं भुजा नरसिंह वीर, बांई हनुमन्त वीर राखे, वीरों का वीर खेलता आवता, वीर लगावे जो यह घट पिण्ड की रक्षा करे, न करे तो उलट देव वाही पर पड़े। चलो मंत्र ईश्वरी वाचा।

इस मंत्र के प्रयोग से सर्वबाधा दूर होवे। इस यंत्र को १५ यंत्र के साथ या स्वतंत्र भी कर सकते है।

(६) आम या फरास के पट्टे पर कुमकुम बिछा देवें उस पर अनार की कलम से यन्त्र लिखें। बार-बार यन्त्र लिखें और मिटायें। इस तरह ५०० बार यन्त्र नित्य लिखें, उनकी पूजा करें एवं भोग लगायें। २१ दिन तक लगातार करने से सर्व कार्य सिद्ध होवे।

(७) संक्रमण रोग निवारण - मुँह पर या शरीर के अन्य भाग पर संक्रमण रोग या चेप हो जाने पर पीपल के पत्ते पर ब्राह्मण यन्त्र लिखें तथा दूसरे पत्ते पर उलटी मातृका लिखें -

क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं ....ङं घं गं खं कं अ: अं औं ओं........ अं आं लिखें।

पश्चात् उस पत्ते पर लिखें कि अमुक का चेप रोग उसरणी व चर्मरोग संक्रमण रोग दूर होवे। पीपल के डण्ठल को मोली से बांध देवें धूप अगरबत्ती कर रोगी पर वारे और दरवाजे पर बांध देवे। जैसे जैसे पत्ता सूखेगा रोग सूख जायेगा। सैकड़ों बार परिक्षित प्रयोग है। प्रयोग शनि मंगल या रविवार को करें। सिद्ध करने की जरुरत नहीं है। स्वयं सिद्ध प्रयोग है। मन्त्र पेन व काली स्याही से भी लिख सकते हैं।

(८) इय यंत्र के मारण, मूठ, स्तंभन, वशीकरण कई प्रयोग प्रचलित हैं। जो हमने पुस्तक **अनुष्ठान प्रकाशः भाग २ 'देवखण्ड'** में दिये हैं।

॥ धन प्राप्ति कुबेर मंत्र ॥

कुबेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमलास्थिता । तां देवी प्रेशयाशु त्वं मद्गृहे ते नमो नमः ॥

इस मंत्र की श्वेत कमल के पुष्प, गूगल, श्वेत दूब घास आदि द्रव्यों के साथ २१ दिन तक नियम पूर्वक ११ मालाऐं

****

जपे। जप पूरे होने के बाद इसका दशांश हवन करे। इससे दारिद्रता दूर होकर संपन्नता बढ़ती है।

॥ भण्डारा अन्नपूर्णा मंत्र ॥

(१)

ॐ नमो अन्नपूर्णा अन्नपूरै घृतपूरै गणेश देवता बाकी पूरे ब्रह्मा विष्णु महेश तीनो देवता, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति गुरु गोरखनाथ की वाचा फुरे।

अन्नपूर्णा देवी के इस मंत्र से अकाल में भी अन्न धन की प्राप्ति होती है, एवं सभी प्रकार की सुख सुविधाऐं प्राप्त होती है। वैसे तो अन्नपूर्णा देवी के कई मंत्र है लेकिन यह मंत्र भी चमत्कारी है। इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए इस मंत्र का सवा लाख जप करें। पूर्ण विधान से अन्नपूर्णा देवी का पूजन करे। मंत्र सिद्धि के बाद यदि आवश्यकता पडे तो सामुहिक भोजन के समय में भोज्य पदार्थो पर इस मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित जल छिड़कें तो अन्नपूर्णा देवी की कृपा से भण्डारे में किसी प्रकार की कमी नही रहेगी।

(२)

आए देवि दक्षिणि, तिन वर्ण की लक्ष्मी, गे लक्ष्मी, ब्रह्मा का माय, रिद्ध सिद्ध हमारे हाथ, आव लक्ष्मी कर जाप, जन्म जन्म के हर पाप, अन्न पुरावे अन्नपूर्णा, घ्रीत पुरावे महेश, नीलेश्वर के नेउँ ता दिन्हा, दस पावे पञ्च दूह होए जाए, दोहाई सिद्ध पुरुष काहा लक्ष्मी का।

(३)

ॐ नमः अन्नपूर्णा अन्न पूरे, घृत पूरे गणेशजी, पाती पूरे, ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों देवतन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, श्रीगुरुगोरखनाथ की दुहाई, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को सवा लाख जप कर सिद्ध करे। भण्डारे के दिन अन्नपूर्णा देवी के भोग लगावें। एक भाग लेकर जल कूप की ओर जाये वरुण पूजा कर प्रसाद भोग कुए में छोडे। वहाँ से जल लेकर आये उस पात्र को भण्डार गृह में अन्नपूर्णा देवी के स्थान के पास रखे एवं दीपक जलाये।

॥ व्यापार वृद्धि व रोजगार प्राप्ति मंत्र ॥

१. (भंवर वीर) **भंवरा भंवर करे मन मेरा, डण्डी खोल व्यापार बडेरा। व्यापार बढा और कारज कर नहीं करे तो काली मैल काल (काढ) कालजो फोड़ खावे ठं ठं फट्।**

२.

भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा ।
उठै जो डण्डी बिके जो माल, भंवरवीर सोखे नहीं जाय ॥

दोनों प्रयोगों में नियम पूर्वक रविवार से १० दिन १० माला रोज करे। रविवार के दिन से ४ रविवार तक रोज प्रयोग करे। ११ बार मन्त्र पढ़कर दुकान में उड़द बिखेरे, सोमवार को उन उड़दों को उठाकर चौराहे पर बिना टोके डाल देवे तो ४ रविवार में बिक्री बढ़े।

३. ३ गोमती चक्र ३ मुट्ठी, काली मिर्च को लाला कपड़े में बांधकर पोटली बनाये। ३ मुट्ठी उड़द की ढेरी पर दीपक जलावें। १ माला जपकर गुगल धूप देवे। रविवार को दुकान को गंगाजल गोमूत्र का छींटा देवे। गोमती चक्र एवं काली मिर्च की पोटली मंत्र कर दरवाजे पर बांध देवे। उड़द के दानें दीपक की ढेरी वाले लेवे उन्हे मंत्र कर हर रविवार को दुकान में चारों ओर छोड़ देवे। तो व्यापार वृद्धि होवे।

४. **विष्णु प्रिया लक्ष्मी, शिव प्रिया सती से प्रकट हुई कामाक्षा भगवती, आदि शक्ति युगलमूर्ति महिमा अपार, दोनों की प्रीति अमर जाने संसार। दोहाई कामाक्षा की, दोहाई दोहाई। आय बढा व्यय घटा दया कर माई। ॐ नमः विष्णुप्रियायै, ॐ नमः शिवप्रियायै। ॐ नमः कामाक्षायै ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।**

नित्य प्रयोग से आय वृद्धि होवे।

५. **ॐ नमः काली कंकाली महाकाली मुख सुन्दर जिए व्याली, चार वीर भैरों चौरासी, बीतती पूजूं पान ए मिठाई। अब बोलो काली की दोहाई।**

४५ दिन ४५ जप करे आजिविका प्राप्त होवे।

६. **ॐ नमो आदेश गुरु को, धरती में बैठ्या लोहे का पिण्ड, राख लगाता गुरु गोरखनाथ, आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक देत, धार धार मार मार शब्द सांचा पिण्डकाचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।**

मंत्र जप कर १०८ बार खीर से आहुती देवे। आजिविका प्राप्त होवे।

७. **कीड़ी नगरी सींचना–** ४१ दिन तक प्रातः काल बिना बोले घर से निकले और चीटियों के बिल के आसपास दाना ड़ाले। बाजरा, गेहू, चांवल का कुछ मोटा आटा लेवे, उसमें थोड़ा तेल या घी एवं शक्कर मिलावें, उस मिश्रण को चीटियों को ड़ाले। मन ही मन मंत्र पढ़े। स्वप्न में प्रश्न का जबाव भी मिलता है या अनायास पास से कोई बच्चा या स्त्री किसी को कहती हुई निकले तो उस वार्ता से अपने प्रश्न का हल निकाले। **योजन गंधा योगिनी** नाम से भी अन्य शाबर मंत्र है।

मंत्र :- ॐ नमो नगन चींटी महावीर हूं पूरो तोरी आश तूं पूरो मोरी आश।

इस प्रयोग से शनि राहु की पीड़ा भी शांत होती है।

८. **योजन गंधा जोगिनी ऋद्धि सिद्धि में भरपूर मैं आयो तोय जाचणो करजो कारज जरूर॥**

उपरोक्त विधि से प्रयोग करे।

****

॥ व्यापार वृद्धि हेतु मंत्र ॥

९. ॐ हनुमन्त वीर, रखो हद थीर, करो यह काम, वैपार बढ़े, तंतर दूर हो, टूणा टूटे। ग्राहक बढ़े, कारज सिद्ध होय, न होय तो अंजनी की दुहाई।

व्यापारिक प्रतिस्पर्धा या आपसी वैर भाव के कारण दुश्मन या मिलने वालो के द्वारा व्यापार (दुकान) का बँधन करा दिया जाता है या किसी कारण व्यवसाय में बाधा आती है तो इस मंत्र का प्रयोग करना चाहिये। यह प्रयोग होली या दिपावली के दिन विशेष प्रभावशाली होता है। एक मीटर सूती लाल कपड़ा लेवे उसमें एक मुठ्ठी काले तिल रखें और उस पर दीपक रखे। दीपक में सियारसिंगी इस प्रकार रखे की वह डुबी रहे। हनुमानजी की मूर्ति या तस्वीर की गंधाक्षत्, फल-फूल नैवेद्य से पूजा अर्चना करे। दीपक के सामने सात लौंग, सात लालमिर्च, सात इलायची रख देवे एवं प्रार्थना करे कि मेरा व्यवसायिक बंधन दूर करो और मेरे व्यापार की वृद्धि एवं उन्नति होवे कैसा भी संकट हो हनुमानजी महाराज आप दूर करे। इस मंत्र का १००८ बार जप करे तत्पश्चात् दीपक बुझा देवे लाल कपडे में दीपक, दीपक तेल, सियारसिंगी आदि वस्तुओं की पोटली बाँध देवे। पोटली को चौराहे अर्थात् जहां दो रास्ते आपस में मिलते हो वहाँ रख घर आ जावे। स्नानादि कर लेवे। इस प्रयोग से व्यापार में लाभ होता है और सभी प्रकार की बाधायें दूर होती है

॥ व्यापर बाधा दूर करने का मंत्र ॥

१०. ॐ दक्षिण भैरवाय भूत- प्रेत बन्ध, तन्त्र बन्ध, निग्रहनी सर्व शत्रुसंहारिणी कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र को २१ दिन १००८ बार जप कर सिद्ध कर लेवे। भैरव की पूजा करे। गुलाल, छारछबीला, गोरोचन एवं कपूर काचरी को बराबर मात्रा में लेकर उसका चूर्ण कर लेवे। चूर्ण को उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर अपनी दूकान के सामने बिखेर देवे। यह प्रयोग ५ दिन नियमित करे। इस मंत्र के प्रयोग से व्यापार बंधन खुल जाता है एवं सभी शत्रुओं का नाश होता है। व्यापार में लाभ व उन्नति होती है।

११. याअववाविरिंज्कु ल्फ़तहदूकान अमुकस्य वसतन अमुकस्य जारीगद्दी वहक याफताहो यावासितो। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्-शुक्ल पक्ष की पहले बृहस्पतिवार को सात यंत्र लिखें। पंचोपचार पूजन करें। लोबान की धूप देवें। मंत्र को एकसौ आठ बार पढ़ें। फिर प्रतिदिन एक यंत्र की बत्ती बनाकर मीठे तेल के साथ दुकान पर जलावें। तो सात ही दिन में बंद हुई बिक्री पुनः शुरु हो जायेगी इसमें संदेह नहीं, बन्धन भी खुल जायेगा।

विविध शाबर मन्त्र प्रयोगा:

॥ शाबर मंत्र सिद्ध करने की विधि॥

शाबर मंत्र में गुरु की शक्ति का प्रयोग अधिक है। नवनाथों में गोरखनाथ के मंत्र अधिक प्रचलित हैं, जिनमें उनकी आन है। बीजासनी, आसवरी तथा खोड़ियार माता, कामाख्या, एवं हनुमान, भैरव तथा काली की आन अधिक है अत: इन देवताओं को इष्ट मानना चाहिये, गोरखनाथ की पूजा करें। मंत्र को कासी की थाली में केशर, चन्दन से लिखे उसमें पानी भरे मंत्र जपते रहे थाली को टंकारते रहे। फिर उस पानी को पीवें। शेष पानी को नदी में प्रवाहित करे।

गोरख चालीसा, गोरख मन्त्र, गोरख गायत्री पढ़ें। गोरखनाथ की आज्ञा लेकर कार्य करें।

शाबर मन्त्र सिद्ध करने की विशेष विधियाँ बंगाल के सिद्ध प्रयोगों से पूर्व दी गई है।

॥ गोरखी गायत्री ॥

(१) ॐ गुरु जी सत नाम आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐकार शिवरूपी मध्याह्ने हंसरूपी संध्यायां साधुरूपी हंस परमहंस दो अक्षर गुरु तो गोरख काया तो गायत्री। ॐ ब्रह्म, सोहं शक्ति, शून्य माता, अवगत पिता, विहङ्गम जात, अभय पन्थ, सूक्ष्म वेद, असंख्या शाखा अनन्त प्रवर , निरञ्जन गौत्र, त्रिकुटी क्षेत्र, जुगति जोग जल स्वरूप, रुद्र वर्ण सर्व देव: ध्यायते। आये श्री शुम्भुजति गुरु गोरखनाथ। ॐ सो ऽहं तत्पुरुषाय विद्महे शिव गोरक्षाय धीमहि तन्नो गोरक्ष: प्रचोदयात्। ॐ इतना गोरख गायत्री जाप संपूर्ण भया। गंगा गोदावरी त्र्यम्बक क्षेत्र कोलांचल अनुपान शिला पर सिद्धासन बैठ, नवनाथ चौरासी सिद्ध अनन्त कोटि सिद्ध मध्ये श्री शंभुजति गुरु गोरखनाथजी कथ, पढ, जप के सुनाया। सिद्धो गुरुवरो आदेश आदेश।

इस मंत्र के जप से सभी विघ्न दूर होते है। गोरखनाथ कृपा से मंत्र जागृत हो जाते है।

(२) गुरु सठ गुरु सठ गुरु है वीर, गुरु साहब सुमरेरौं बडी भांत, सिंगी टोरों बन कहां, मन नाऊँ करतार, सकल गुरु की हर भजे घट्टा पाकर उठ जाग, चेत सम्हार श्री परमहंस।

॥ पञ्चमुखी हनुमान ॥

(१) काली काली महाकाली इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की साली, हांक पड़े महादेव के पूजा देहुं रक्त के, भूत प्रेत मरीमसान, आवत हे पञ्चमुखी हनुमान, गदा ला

चलाही, तोर गोदी ला खाही, सत के महादेव होवें तो मसान ला भगावें। दुहाई गौरी पार्वती के।

एक मुट्ठी पीली सरसों को २१ बार मन्त्रित कर रोगी के सिर पर घुमाकर आग में डालें, यदि मांस जलने जैसी गंध आये तो समझे मसान प्रेत बाधा जल गई।

(२) भाग भाग भूत भाग भाग मसान, आवत है पञ्चमुखी हनुमान, गदा ला चलाहि, तोर करेजा ला खाही, आगी में जलाही, तेल में पकाही, मन के राव, मन का दुआ, करे। भूत प्रेत के पीरा ला हरे। सत् के महादेव होवे तो अमुक के रक्षा करवें, मोर अरजी विनती ला सुनवे, दुहाई पारबती दाई के।

विधि पूर्ववत्।।

॥ हनुमान शाबर मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु के अंजनी बुद्धिमानी तेजवन्ती ब्रजवन्ती हिया मोड़ सांखला तोड़ आओ हनुमन्त वीर गाजन्ता बाजन्ता धड़ धड़ाता अंजनी का पुत्र श्री राम का बाण सीता सति का जण छेली बलराम की इक्यासी कलिका इठ्यासी कलुवा की चौसठ जोगिनी की हुंकार बाजे मारकर रार दुश्मन गले लागे गीत फांस नारसिंह वीर काल का काल रावण को लागे मेरा हुंकारिया काल सदाफिरे नहि फिरे तो माता अंजनी का दूध पिया हराम करे सीता माता की सेज पर पांव धरे श्रीराम के सिर घाम घाले मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

१०८ बार नित्य जप करें। हनुमानजी स्वप्न में दर्शन देवें। गुगल की धूप देवें। नहीं देवे तो गुगल सिन्दूर माली पन्ना का होम करें। ध्यान रहे सिन्दूर माली पन्ना हनुमानजी के वस्त्र हैं, उनको जलाने से हनुमानजी क्रोधित होते हैं। अतः श्रीराम मंत्र का जप करें वटुक भोजन भी करायें।

॥ भैरव शाबर मन्त्र ॥

(१)

ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरुं, हुकुम हाजिर रहे, मेरा भेजा काल करे, मेरा भेजा रक्षा करे, आन बाँधू वान बाधूँ चलत फिरते औसान बाँधू, दसौ सुर बाँधू नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बाँधू, फल में भेजू फल में जाय, कोठे जो पड़े थर थर काँपे हल हल हले गिर गिर पड़े, उठ उठ भागे वक वक वके मेरा भेजा सवा घडी सवा पहर सवा दिन सवा मास सवा वरस कूं वावला न करे तो माता काली की शय्या पर पग धरे, वाचा चूके तो उमा सूखे, वाचा छोड कुवाचा करे तो धोबी की नाद चमार के कुंड में पड़े, मेरा भेजा वावला न करे तो रुद्र के नेत्र की ज्वाला कढे शिर की लटा टूटि भूमि में गिरे माता पारवती के

चीर पर चोट पड़े, विना हुकुम नहीं मारना हो तो काली के पुत्र कंकाल भैरुं फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। सत्यनाम आदेश गुरु का।

(२)

ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरव हुकुम हाजिर रहे, मेरा भेजा काल करै, मेरा भेजा रक्षा करै, आन बाँधू वान बाधूँ चलते फूल में जाय कोठे जी पड़े थर थर काँपे हल हल हलै गिरि गिरि परै, उठ उठ भगै बक बक बकै मेरा भेजा सवा घडी सवा पहर सवा दिन सवा मास सवा बरस को बावला न करै तो माता काली की शैय्या पै पग धरै, वाचा चूकै तो उमा सूखै, वाचा छोड कुवाचा करै तो धोबी की नाद चमार के कुंड में परै, मेरा भेजा बावला न करे तौ रुद्र के नेत्र के आग की ज्वाला कढे सिर की लटा टूट भूमि में गिरै माता पारवती के चीर पै चोट पड़ै, बिना हुकुम नहीं मारना हो तो काली के पुत्र कंकाल भैरव फुरो मंत्र ईश्वरो वाच। सत्यनाम आदेश गुरु का।

(३)

ॐ नमो काली कंकाली महाकाली के पुत कंकाली भैरव हुक्मे हाजिर रहै, मेरा भेजा तुरत करे रक्षा करे, आन बाँधू बान बाधूँ चलते फिरते को औसान बाँधू, दशो दिशा बाँधू नौ नाड़ी बहत्तर कोण बाँधू फूल में भेजू फूल में जाय, कोठेजी पड़े थर थर काँपै हल हल हलै गिर गिर परै, उठ उठ भगै वक वक बकै मेरा भेजा सवा घडी सवा पहर सवा दिन सवा मास सवा बरस का बावला न करे तो काली माता की सय्या पर पाँव धरे, बचन जो चूकै तो समुद्र सूखै, वाचा छोड़ कुवाचा करै तो धोबी की नाद चमार के कुंड में परै, मेरा भेजा बावला न करे तो रुद्र के नेत्र से अग्नि ज्वाला कढ़ै सिर की जटा टूटि भूमि पर गिरै माता पार्वती के चीर पै चोट पड़ै, बिना हुकुम नहीं मारना हो, काली के पुत्र कंकाल भैरव फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधिः- ग्रहणकाल या कालरात्रि को त्रिखुंटा चौका लगावें। एकान्त स्थान में इस मंत्र का जप करें। कन्हैर के फल, लड्डू, पान, पुष्प माला, सिन्दूर, लौंग का जोड़ा, लेवें। धूपादि देकर वहाँ चौमुखा दीपक जलावें। आसन लगाकर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठे। इस मंत्र की दस मालाए जप कर दशांश हवन करें। भैरव साक्षात् अपने भयंकर स्वरूप में प्रकट होंगें तब डरे नहीं और तुरन्त हीं भैरव के गले में माला डाल देवें। उससे वचन लेवें की आप जब चाहूं तब हाजिर होगें, जो कहूं करेगें।

॥ मणिभद्र क्षेत्रपाल ॥

ॐ ह्रीं श्रीं चिंति चिंतामणि पूरी, पूरी लक्ष्मी आनय। ॐ ह्रीं श्रीं गणेशाय नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों क्ष्वीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ॐ नमो भगवते मणिभद्राय क्षेत्रपालाय

कृष्णारूपाय चतुरभुजाय, जिनशासन भक्ताय, हिलि हिलि, मिलि मिलि, कलि कलि चक्षुमायु स्वाहा।

इस मन्त्र का जप सात हजार लाल पुष्पों से करें। प्रयोग समय २४ श्वेत पुष्प, १०८ रक्त कण्डील के साथ जप करें। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष में देवता शुभाशुभ वार्ता कहे। इस मन्त्र से रक्तकण्डील पुष्प को मन्त्र कर सिरहाने रखकर सोवें। स्वप्न में वार्ता कहें।

मणिभद्र क्षेत्रपाल की ऐरावत सवारी मानी है। इन्हें क्षेत्रपाल भी माना है। तथा मणिभद्र जी गुजरात में कुशल व्यापारी भी माने जाते हैं जो कुबेर के अवतार गिने जाते हैं।

॥ धूमावती विद्या ॥

धूम धूम धूमावती, मसान में रहती, मरघट जगाती, सूप छानती, जोगनियों के संग नाचती, डाकनियों के संग मांस खाती, मेरे बैरी अमुक का भी तु मांस खायै, कलेजा खायै, लहू पिए, प्यास बुझाये, मेरे बैरी को तड़पा तडपा मारै, ना मारै तो तोहुं को माता पारबती के सिन्दूर की दुहाई, कनीपा औघड़ की आन।

तिनकों से एक छोटा सूप (छाजला) बनायें। थोडी शराब व बकरे का कच्चा मांस का टुकड़ा ले जायें। अमावस्या की रात्रि में जलती चिता के पास बैठकर १० माला जप करें। वहीं से एक कफन का टुकड़ा प्राप्त करें, श्मशान भस्म में शराब मिलाकर उस घोल से अपनी तर्जनी अंगुली से यह मन्त्र लिखें। अमुक की जगह वैरी का नाम लिखें। कपड़े के चार तह कर ले बीच में मांस का टुकड़ा रखें। सूप में मांस का टुकड़ा शराब रखें, उनकी सूप से चिता में आहुति देवें। कपन भस्म को लाकर शत्रु के यहां डालें तो उसका नाश होवे।

॥ बगलामुखी शाबर मन्त्र ॥

मलया बगला भगवती महाक्रूरी महाकराली, राजमुख बंधनं, ग्राममुखबंधनं, कालमुख बंधनं, चोरमुख बंधनं, व्याघ्रमुख बंधनं, सर्वदुष्टग्रह बंधनं, सर्वजन बंधनं, वशी कुरु हुं फट स्वाहा।

॥ भैरवी शाबर मन्त्र ॥

ॐ रों भैरवी भूतप्रेत की माई, सब रिद्धि की सांई, नगर मोहू नगर नायक मोहू, देव मोहू, दैत्य मोहू, धरीत्री मोहू, पाताल फोड़ो, आकास तोड़ो, श्रीभैरवी की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

॥ त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र ॥

ॐ आदेश गुरु को, कावंरु देश, कमक्षा देवी, तहां बसे त्रिपुरा राणी, कएईल ह्रीं वेद पुराण की कहाणी, हसकहल ह्रीं, तीनि लोक तू करै पयानी, सकलह्रीं सब देव क्लीं क्लीं जाणी, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

॥ हेलकी देवी मन्त्र ॥

ऐं ॐ अमाये, हेलकी लं घं तुं वं हविजा गोण गत फेर, षमि जड़मति हं ण ण ल मीह विह लंघ, लं मन्नियोगं वा हलयो वाचुच्चां बराबपिता ये नुद् गुरुं, द्रुतालये ऽम्भे हेलक्रिये स्वाहा।

॥ कुण्डल धारिणी साधना ॥

क्लीं क्लीं ह्रीं ह्रीं फट् फट् कुण्डलधारिणी नमः।

तीन महिने तक ८० माला रोज जपे। रुधिर से अर्घ देने पर देवी सन्तुष्ट होती है। १०५ दिन में सर्वसिद्धि प्राप्त कर सर्वत्र विजयी होवे।

॥ सिन्दूर हारिणी साधना ॥

मन्त्र - क्रूं क्रूं फट् फट् सिन्दूर हारिणी हूं हूं हूं।

ध्यानम्

स्वर्णालडकृतिहारिणी चलदलव्यालोल शाखाम्बरा ।
सोत्कण्ठीकृत गात्रकर्म सुभगा शुभ्रांशुचन्द्र प्रभा ॥
अन्तः संततकान्ति दन्तमलिना त्रैलोक्य शोभास्पदा ।
पायादूर्धनवांशु शूल लतिका सिन्दूरहारिण्यसौ ॥

शून्य देवालय में २५ दिन तक ८० माला नित्य करें तो देवि भार्या भाव से आकर वस्त्रालङ्कार प्रदान करती है।

॥ अजयपाल मन्त्र ॥

ॐ अजमेरी दूढ अजयपाल राजा अजा देवराणी, अजा देवराणी ना सात पुत्र, कौन कौन पुत्र, हडंजय , रणेरा, तनेरा, डठेरा, एकन्तरा, दुतीया, तृतीया, चौथिया, जजारे सात वाणी ना तर ए पिण्ड छोड़ि वीजे पिण्ड जाइने, पडि उभो रहे, तो अजैपालनी सात आन, जो उभो रहे तो जती सती नी आन, जो उभो रहे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

वीजे पिण्ड का अर्थ है दूसरे शरीर का पिण्ड। यह मन्त्र एकान्तरादि ज्वर में काम करता है। तथा तर्जनी अंगुली से झाड़ने पर दांत का दर्द कम होवे। अजयपाल मंत्र के लिये गांजा की चिलम रख साधना करे। पुआ, पकोडी का भोग लगावे।

अजयपाल अजमेर के राजा थे ख्वाजा साहब के समय में उनका राज्य था। वे बहुत बड़े तान्त्रिक थे।

॥ शुभाशुभ प्रश्न ज्ञानम् ॥

शुभाशुभ का ज्ञान चक्रेश्वरी, सरस्वती, सूर्य, अरहंत मन्त्र, कमला, सिकोतरी, ऋषभनाथ, पद्मावति, वस्त्राचलवृद्धि, यक्षराज, ज्वालामुखि, मणिभद्र, रुद्रपिशाच आदि प्रयोग पुस्तक के जैन मत खण्ड में दिये गये हैं।

॥ घट भ्रामण द्वारा शुभाशुभ ज्ञान ॥

शुद्ध स्थान पर कलश स्थापित कर उसमें देवता का आवाह्न करें। पश्चात् दो व्यक्ति कलश का स्पर्श करें। कलश भारी लगे या हिलने लगे तब देवता से कलश को वाम या दक्षिण घूमने की प्रार्थना करें। तब दिशा भ्रमण के अनुसार शुभ या अशुभ का ज्ञान जानें। इस विषय में जैन मत खण्ड में चक्रेश्वरी, प्रत्यंगिरा, चामुण्डा आदि का विधान देखें।

घट में स्वयं के पितरों का आवाहन करके यह प्रयोग किया जाता है। समापन समय देवता को विदा करें और जल के छींटें देवें।

॥ अन्य विशेष विद्यायें ॥

अपराजिता, प्रत्यंगिरा, परविद्या स्तंभन, कुष्माण्डा, तारा, चामुण्डा, कामाख्या, सुन्दरी, वज्रेश्वरि, रक्ताक्षी, श्रीमुखि, नित्या, काली, सरस्वती आदि के आगम प्रयोगों के अलावा प्राकृत ग्रन्थों में भी कई प्रयोग हैं, जिनका वर्णन जैन मत प्रयोगमाला में दिया गया है।

॥ स्वप्न साधना प्रयोगाः ॥

(१)

मंत्र सिद्ध करने हेतु एक मिट्टी का कलश (करवा) लेवें। उसमें जल भरे तथा आम के पत्ते या पंचपल्लव (आम, बड़, पीपल, गूलर, पलाश) रखें। उस पर नारेल रखे। शिव पार्वती का उस पर आवाहन कर मंत्र पढ़े। मंत्र जप करें। कलश को सिराहने रखकर सोयें।

सपन सलोनी सुन्दर लोनी, गगन मगन पे चांद बरोनी। राजा प्रजा सबहि पुकारे, दोऊ कर जोरे वन्दे सारे। रात रात में हाल दिखावे, सपन में लीला सब आवे। आगल पाछल सकल बताये। लूना जोगन दरश करावे। न बतलाए हमार मनोरथ, गिर शूकर मैला में जावे। दुहाई शिवशंकर की मनसा पूरन की।

(२)

॥ स्वप्न वार्ता मंत्र ॥

मंत्रः- ॐ ह्रीं विचित्रवीर्यं स्वप्ने इष्ट दर्शय नमः।

पूर्व दिशा में सफेद सूती आसन पर बैठकर स्वप्नेश्वरी देवी की पंचोपचार पूजा करे। जप किसी भी रविवार में शुभ

मुहुर्त्त से आरम्भ करे। जप संख्या इक्यावन हजार। मंत्र सिद्ध होने पर रात्रि में इस मंत्र का २१ बार मंत्र जप कर सो जाये तो साधक को स्वप्न में अपने इष्ट देवता से वार्ता होती है एवं अपने प्रश्न का उत्तर प्राप्त कर सकता है।

॥ स्वप्न विद्या ॥

(३)

ॐ नमो स्वप्न मातंगिनी सत्य भासिणी सुप्नं दर्शय दर्शय स्वाहा।

विधि – गुप्त वार्ता या प्रश्नोत्तर के लिये २१ माला २१ दिन तक नित्य करके पुष्प, तिलादि से होम करें।

(४)

श्रीं ओं ह्रीं श्रीं स्वप्नेश्वरी देवी मम चिन्तक वार्ता कथय कथय स्वाहा।

विधि – ५ माला नित्य, ५५ दिन तक जपें अक्षर ज्ञान व गुप्त वार्त्ता जानें।

॥ भूत भविष्य का मंत्र ॥

(१)

कोट कोट पे खेले डाल डाल पर झूले ताल, ताल को सुखाये भूत भविष्य को बताये, तीर पे तीर चलाय चलाय के पूर्व जन्म को न बताये तो नजर पिशाच न कहाय, बन्द खुली आंखन से बताये, सहीं गांव संवत जात धर्म गैल को नेत्रन से न बताये तो अपनी मां की शैय्या तोडे वाके चीर पे चोट करे आन कालिका की बानगी काल शंकरकी, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति मंत्र सांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

मंत्र कृष्ण पक्ष में चतुर्दशी या अमावस को करे। नव कन्या भोजन कराये। मंत्र रात्रि में एक महिने तक करे। कर्ण पिशाचिनी की तरह प्रश्न का जवाब प्राप्त होता है अन्यथा मन में भावना पैदा होती है। अथवा दृष्टि बंद कर ध्यान लगाने से कुछ अनुमान लग जाता है।

॥ भविष्य दर्शन मंत्र ॥

(२)

ॐ नमो वीर हनुमान हाथ बताशा मुख में पान। आओ हनुमान बताओ हाल, कालरथी का चेला अंजनी को लाल। अमुक मनुज का पीछा आगा, भविष्य सब ऊंचा नीचा। पाप-पुण्य सब चोखा चोखा, तुरतहि बताओ न बताओ तो माता अंजनी का दूध हराम। गुरु गोरख उच्चारे, अंजनी का जाया हनुमान म्हारो काज संवारे। मेरी भगति गुरु की शक्ति मंत्र सांचा॥

इस मंत्र से साधक को सामने वाले व्यक्ति का भूत भविष्य वर्तमान तीनो कालों का ज्ञान हो जाता है, और चमत्कारिक रूप से वह व्यक्ति को उसका सम्पूर्ण हाल सुना देता है। इस मंत्र का जप नवरात्रा से प्रारम्भ करे छः माह में यह मंत्र सिद्ध हो जाता हैं। मंत्र जप अधिक से अधिक करने चाहिए क्योंकि जितना मंत्र बल होगा उतना ही भविष्य

देखने की क्षमता बढेगी। मंत्र जाप विषम संख्या में ही करे। साधक हनुमानजी पर पूर्ण आस्था रखें। भक्ति भाव फल फूल आदि से उनकी पूजा करे। हनुमानजी के हर मंगलवार, शनिवार के दिन सिन्दूर, नारियल, ध्वजा, चोला अवश्य चढ़ावे। चना, गुड़ व रोट का भोग लगावें। मंत्र जब सिद्ध होने लगता है तो साधक की ध्यानावस्था में कई तरह की आवाजें या स्वप्न आते है, इसलिये भयभीत नही होवे। मंत्र सिद्ध होने के बाद जब कोई व्यक्ति भविष्य पूछने आये तो उससे उसका नाम पता पूछ लेवे साधक को हनुमान का ध्यान करना चाहिए व इस मंत्र का ११ बार जंप कर ध्यानावस्था में बैठे तो उसका सम्पूर्ण हाल मालूम हो जायेगा।

॥ गुप्त बात जानने का मन्त्र ॥

मंत्र :- गायब का पीर, अगम की बात बताओ, न बताओ तो माँ का दूध पिया हराम, बहन के साथ करे हराम।

॥ प्रश्न का भेद जानना ॥

मंत्र :- स्वरासाती स्वरासाती स्वरासती मेरी मां। सतगुरु बन्धो पार, जसना देव राढ़ा। गौरी गणेश गौरा पार्वती महादेव ढुण्ढराज, विश्वनाथ कालभैरव कोतवाल, भीम नकुल सहदेव अरजुन धर्मराजा राजा रामचन्द्र, महावीर ज्वालामुखी, हिंगलाज, दूरंगा, महाकाली, गुरु का वचन न जाय खाली। श्री गंगा राजा रामचन्द्र जी, पांचों पण्डवा, छठे नारायणा निरंकार, महादेव जी, गौरा पार्वती महावीर हनुमान जी। कउने वरन का अक्षत दोख भाल, डांड दइवी, चउवा चारपाया का नुकसान मनई दुखी कि लड़का जनाना, कि घर लुटगा, कि चोरी होइ गई, जगदंबा मूल अक्षर दया बताई।

मंत्र को सिद्ध करें। रोगी का हाथ पकड़ कर मंत्र स्मरण करें तो मन में प्रश्नोत्तर की भावना पैदा होगी। चौपाया जानवर, या वस्तु की चोरी, किसी के गमन पर उस स्थान की मिट्टी मंगायें तथा पृच्छक के घर से गेहू या चावल ७ मुट्ठी सात बार घुमाकर मंगायें। मिट्टी को अक्षत या गेहूं में ड़ाल देवे, फिर मंत्र जप कर प्रश्नोत्तर हेतु सम या विषम अंक सोच कर गेहू या चावल उठायें तो उनको सम या विषम गिनकर उसका फलादेश जाने।

॥ अक्षर लिखा प्रश्नोत्तर जवाब मांगना ॥

(१)

ॐ श्री श्री श्री ५ श्री पार्वती की सिद्धि शंकर का वाचा पार्वती का अक्षर सांचा आदेश गुरु को ॐ तत् और सत्।

इस मंत्र को सोमवार से प्रारंभ कर अगले सोमवार तक १० हजार जप करे। कन्या भोजन कराये, खोपरा, बूराशक्कर, गुगल से होम करे। प्रश्न का हल जानना हो तो एक कागज लेवे, उसके चारों कोनों में प्रत्येक में पृच्छक का नाम व गांव का नाम लिखे। बीच में प्रश्न लिखे। कागज को अभिमंत्रित करे। साफ जगह पर अंगारे रखे उस पर कागज को घुमावें तो प्रश्न का जवाब उभर कर कागज में आ जायेगा। यह प्रयोग सिद्ध व्यक्ति से लिया है आजमाईस किया हुआ

है। परन्तु मैने देखा है यदि टोटका भारी किया हुआ है तो पूरी बात नहीं आती है।

(२)

इस तरह के कई प्रयोग प्रचलित है एवं उनके नाम पर ठगी भी काफी है। एक व्यक्ति आनेवाले व्यक्ति से प्रश्न पेपर पर लिखाता पेन पेंसिल के साथ बांधकर किसी अन्य कापी फाइल में रख देता २-३ दिन बाद जाने पर प्रश्न का उत्तर लिखा हुआ मिलता है। ऐसे प्रश्नो में भूतकाल अधिक मिलता है भविष्य कम मिलता है। एक बार ऐसे व्यक्ति के कारनामे देखने को मिले कि वह व्यक्ति आपके हाथ से प्रश्न खाली पेपर लिखाता फिर पानी में डुबाकर सुखाता तो प्रश्नोत्तर लिखा हुआ प्राप्त होता परन्तु मैनें यह महसूस किया कि उस व्यक्ति के पास कोई जिंद सिद्ध था और वह जिंद उस साधक के कहे अनुसार उसकी महिमा के शब्द भी लिख देता है। जैसे यह बाबा चमत्कारी है, सिद्ध पुरुष है, इसकी बात का विश्वास करना वर्ना ऐसा वेसा हो जायेगा इस तरह कुछ बात सही बताकर भय दिखाकर हजारों रुपये ऐठंता था।

परन्तु मैं जो प्रयोग लिख रहा हुं वह सात्विक एवं सत्य है, क्यों कि थोड़ा परिक्षण करके मैंने भी करके देखा है एवं सिद्ध व्यक्ति से प्राप्त किया है।

मंत्र- ॐ श्री श्री श्री ५ श्री पार्वती की सिद्धि शंकर का वाचा पार्वती का अक्षर साचा फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा तत् और सत्।

विधि- एक सफेद कागज लेवे उस पर चारों कोने पर पृश्च्छक को नाम व गांव का नाम लिखे बीच में प्रश्न लिखे। यह सब पृच्छक से ही लिखावे। अथवा दूरस्थ रोगी हो तो उसके हाथ से लिखवाकर कागज मंगवा लेवे।

कुछ अंगारे करे, अगरबत्ती से उपरोक्त मंत्र पढता हुआ कागज का अभिमंत्रित कर धूपित करे पश्चात् अंगारे हल्के होने से उन पर कागज रख देवे तो कागज में प्रश्नोत्तर उभर कर आयेगा। यह प्रयोग दिन में ३ बार सुबह शाम एवं दोपहर को कर सकते है तथा एक बार में ३ प्रश्न ही पूछ सकते है।

शुभ दिन व सोमवार से प्रयोग प्रारंभ करे। शाम को नित्य मंत्र जाप करे १० हजार जप एक सप्ताह तक कर लेवे अगले सोमवार को नारेल से होम करे ९ कन्या भोजन करावे।

कभी प्रमादवश जलते चूल्हे पर यह कागज नहीं रखे अन्यथा सिद्धि समाप्त हो जायेगी। अंगारे शुद्ध जगह पर शुद्ध पात्र में रखने चाहिये।

(३)

कागद कोरो कोरे पे हाथ वीर बताये मन की बात, कौन कौन की बताये, भूत की, पलीत की, अखने की, मखने की, रोग की, भोग की, मूढ की, दीढ की, चौकी की, मौकी की, मशान की, मन्तर की, एक एक की मन की बात कोरे कागद पर लिख कर न बताये तो वीर न कहाये, बजरंग का घोटा खाय, आखिर में चमार की नांद में जाय, माता हिंगलाज राखे मेरी लाज।

रविवार से रविवार तक आक के पौधे में पानी ड़ालें। फिर उसकी जड़ ले आयें। नवरात्र में या गुरुपुष्य अथवा रविपुष्य योग में पूजा प्रारंभ करे। आटे से शुद्ध जगह पर स्वस्तिक या अष्टदल बनायें। उस पर चौकी रखे उस पर आक

****

की जड़ रखें। उसकी वीर के नाम से पूजा करे। पान, पुष्प, नैवेद्य चढाये, कपूर जलायें। मंगलवार को सिन्दूर से टींकी लगाकर ५ माला जप करे। ५ माला रोज ४० दिन तक करे। प्रश्नोत्तर जानने हेतु सफेद कागज के चारों कोनों मे व्यक्ति का नाम तथा बीच में प्रश्न लिखे फिर शुद्ध जगह अंगारे पर उस कागज को अभिमंत्रित कर रखे तो प्रश्नोत्तर प्राप्त होगा।

॥ आसन सिद्धि मंत्र ॥

कई संत महात्मा स्थान नहीं छोड़ते है। जो भी खर्च खाते हेतु रकम की जरुरत हो तो आसन के नीचे से निकालकर दे देते है। सामान्य व्यक्ति इतना नहीं कर सकता है परन्तु इस मंत्र के प्रभाव से मान प्रतिष्ठा बढे, मन का उच्चाटन नष्ट होवे रोजगार व धन प्राप्ति के साधन बढे।

ॐ नमो आदेश, गुरु को आदेश आ आसन पूजूं सिंहासन पूजूं, पूजूं गुरु के पांव। मन मारे मिट्टी करुं, करुं चकनाचूर। पांच भूत आज्ञा दो, तो आसन करुं भरपूर।

पंचतत्वों पर अधिकार से मन की स्थिति मजबूत होवे, काम में मन लगे प्रतिष्ठा बढे। नित्य ७ बार मंत्र का आसन या कुर्सी पर फूंक देवे।

॥ विद्या प्राप्ति मंत्र ॥

ॐ नमो देवी कामाक्षा। त्रिशूल, खड्ग हस्त पाधा पाती गरुड, सर्वलखी तू। प्रीतये समागम तत्त्व चिंतामणि नरसिंह , चल चल तीन कोटी कात्यानी, तालव प्रसाद के। ॐ ह्रीं ह्रीं क्रूं त्रिभुवन चालिय चालिया स्वाहा।

मंत्र का जप शुक्ल पक्ष रोहिणी नक्षत्र से अगले रोहिणी नक्षत्र तक करे। ७ या १४ तुलसी के पत्तों को १०८ बार मंत्रकर, उन पत्तियों को निगल जाये चबाये नहीं, तो विद्या प्राप्ति होवे स्मरण शक्ति की वृद्धि होवे।

॥ मेधा वृद्धि हेतु मंत्र ॥

(१) **ॐ नमो देवी कामाक्षा, त्रिशूल रव, हस्त, पाधा, पाती, गरुड़ सर्व लखी तु प्रीतये, समांगन सत्त्व चिन्तामणि, नरसिंह, चल, चल, क्षीनकोटीकात्थानी तालव प्रसाद के ओं हों ह्रीं क्रूं त्रिभवन चालिया, चालिया स्वाहा**

इस मंत्र का जप प्रारम्भ रोहिणी नक्षत्र के दिन से अगले रोहिणी नक्षत्र के दिन तक करे। प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर साधक तुलसी को प्रणाम कर उसके ५१ पत्तों को ले आवे एवं उन पत्तों को दस मंत्र से अभिमंत्रित करे ततपश्चात् साधक उन्हे खा लेवे। इस मंत्र से साधक की मेधावृद्धि आश्चर्य रूप से होती है।

(२) **ॐ क्रीं क्रीं क्रीं।**

(३) **ॐ सच्चिदा एकी ब्रह्म ह्रीं सच्चिदी क्रीं ब्रह्म।**

इन मंत्रों के सवा लाख जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है, इन मंत्रों के प्रभाव से बुद्धि तीव्र होती है एवं चमत्कारिक

रूप से विद्या प्राप्ति होती है।

॥ वाचा सिद्धि मंत्र ॥

मंत्रः- **ॐ गणेश देवि वाग् देवी मम वाक्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मंत्र के प्रभाव से साधक को वाणी सिद्धि प्राप्त होती है। इस मंत्र का जप शुभ मुहुर्त्त में प्रातः ब्रह्मवेला में करे।

॥ सर्वसिद्धि मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ठं ठं ठं नमो भगवते मम कार्य कार्याणि साधय साधय मां रक्ष रक्ष, शीघ्रनां धनिनं कुरु कुरु हुं फट्, श्रियं देहि, प्रज्ञां देहि, ममापत्तिं निवारय निवारय स्वाहा।

प्रति १०८ बार जप करें। शिव जी की पूजा कर बिल्व पत्र चढ़ावे तो धन, बुद्धि बल प्राप्त होवे, आपत्ति का निवारण होवे।

॥ कार्य सिद्धि मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं मसान ओं टं लीं ह्रीं श्रीं ॐ शत्रु ॐ टं लीं टं लौं टं लीं राजवश्य ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ लक्ष्म्यै ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ॐ पुत्र हेतोः ओं ह्रीं श्रीं टं लीं।

इस मंत्र का जप कर चौराहे या मसान पर ७ रविवार बलि (दही, उडद, नमकीन, सिन्दूर, दीपबत्ती) प्रदान करे। पीपल के पत्ते पर लिखकर जल में प्रवाहित करे, कन्या भोजन कराये फिर चमेली या अनार की कलम व केसर से भोजनपत्र पर लिखकर धारण करे।

॥ सर्वकार्य सिद्ध मन्त्र ॥

ॐ पीर बजरंगी राम लक्ष्मण के संगी , जहां जहां जाए, फतह के डंके बजाये, दुहाई माता अञ्जनि की आन।

विशेष कार्य हेतु जाए तब इस मन्त्र का स्मरण करते हुये जायें।

॥ कार्यसिद्धि हनुमान मंत्र ॥

पर्वत व्यापी अंजनी पुत्र जने हनुमन्त, रोठ लंगोट दरियाही भुजा लौंग सुपारी जायफल पान का बीड़ा कोने लिया या साहब जो लिया या किसको पूजा तेल हनुमान को पूजा सिन्दूर चढ़ाया किस अर्थ मूठा बंध वार बंध घोर बंध इष्ट बंध तुष्ट बंधमणी बंध मसाणी बन्धाकाली भैरो कलेजा बन्ध कालू देध दरवाजा बंध इतने को बबंध माता अंजनी पिंड काचा शब्द साचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। वाचे से टले खारे समुद्र में गले, खारे समुद्र में टले, कुम्भी पाक नर्क में गले, लोना चमारी के कुंड में गले।

****

इस मंत्र से सभी कार्य सिद्ध होते हैं। इसका वशीकरण, मारण, मोहन उच्चाटन, व्यापारिक लाभ में प्रयोग होता है। साधक को इकतालीस दिनों तक नियमित रूप से यह प्रयोग करना चाहिये। रात्रि के १२ बजे जंगल के चौराहे पर जाकर जल से गोल घेरा बनावे उसमे चारमुख का दीपक जलावे और उसके पास ही पानी डाल देवे। हनुमानजी का पूजन करे। दीपक के तेल के पास जायफल, पान, सुपारी, सिन्दूर, तैल, लौंग आदि रख देवे। फिर आसन बिछाकर इस मंत्र का ११०० बार जप करे। तत्पश्चात् घर आकर सो जाये। साधक ४१ दिन तक ब्रह्मचर्य से रहे एवं जमीन पर सोवे। इस प्रकार ४१दिन में मंत्र सिद्ध हो जायेगा। २१ बार मंत्र पढ़कर जो भी कार्य कहोगे हनुमानजी की कृपा से वह कार्य होगा इसमें सन्देह नहीं है।

॥ अभिष्ट सिद्धि मंत्र ॥

ॐ हर त्रिपुर हरभवानी बाला राजा प्रजा मोहिनी सर्वशत्रु विध्वंसिनी मन चिन्तितं फलं देहि देहि भुवनेश्वरी स्वाहा।

रक्त कनेर, गुलाब से अर्चन तथा बिल्वफल एवं गुगुल होम से सर्व कार्य सिद्धि होवे।

॥ पितर दोष निवारण मंत्राः॥

(१)

सतगुरु गोरख भाखे बानी, देव पितर हम देवत पानी। सत गवाही सूरज करे, पूनम चन्दा मावस सरे। पितर हो शुकर मनावें, गंगा मैया सुरग पठावें। कौन कौनसे पितर सुरग गए परसन्न भए, बाल बिरमचारी निपुतरी नाग पितर गिरस्त ब्याए ढयाए। रंडुआ मडुआ छोटे बड़े खोटे खरे, ऊँचे नीचे आगले पीछले पितर परसन्न भए। बिरामन छतरी परसन्न भए। वनिक चण्डाल परसन्न भए। सबन को सुरग पठावे, लोना जोगन विमान चढ़ावे। जाओ जाओ पितरदेव सुरग सुख भोगो, हमे न सताओ जो सताओ तो हनुमान का घोटा खाओ। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, मंत्र सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इसका प्रयोग पितृपक्ष में किया जाता है। पूर्णिमा के दिन चूने के पांच-सात कंकड ले आवे यदि चूने के कंकड नहीं मिले तो चांदी के सर्प बना लावे। उन्हे लकडी की चौकी पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछाकर स्थापित कर देवें। फिर उन्हे दूध दही से स्नान करावें। तत्पश्चात् शुद्ध जल व गंगाजल से स्नान करायें। दीप-धूपादि से पूजा कर पितरों को चावल की खीर अर्पित करे। पूजा काल में सफेद वस्त्र पहनना चाहिए श्वेत पुष्प चढाने चाहिए और सफेद ही आसन होना चाहिए। पितरो का तर्पण करते हुए इस मंत्र का जप करते रहना चाहिए। इस प्रयोग से पितर देव प्रसन्न होते है।

(२)

पितर परम पर्वता विराजे, हम कर जोड़े खडे सकारे। होम धूप की होय अग्यारी, पितर देव दरबार तुम्हारी। पितर मनावे हरद्वार में बरकत बरषे, बार-बार मैं फलां मनुज के पितर मनाऊं। सातों सातहि सिर ही झुकाऊं, जो न माने मेरी बात,

नरसिंह को झुकाऊं माथ। वीर नरसिंह दहाडता आवे, मूंछे पूंछ कोप हिलावे, हन हन हुम करे हुंकार, प्रेत पितर पीड़ा फटकार। कोड़ा मारे श्री हनुमान, सिद्ध होय सब पूरन काज। दुहाई-दुहाई राजा रामचन्दर महाराज की।

इस मंत्र को अमावस्या के दिन सिद्ध किया जाता है। साधक को पहले अपनी सुरक्षा आत्मरक्षा मंत्रो कर लेनी चाहिए क्यों कि सिद्धी समय साधक को कई प्रकार की आवाजे या भयभीत करदेने वाले दृश्य दिखायी पड सकते है। अमावस्या के दिन भगवान नृसिंह व हनुमानजी के निमित्त धूप-दीपादि से पूजन करे। प्रसाद में मिठाई पीली होनी चाहिए। एकान्त स्थान पर इसका जप करे। मंत्र सिद्ध होने के पश्चात् पितर दोष से ग्रस्त व्यक्ति के घर अमावस्या की मध्य रात्रि में जाकर लकडी की चौकी पर एक सफेद रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर पितरो को स्थापित कर देवे। उनकी पूजा कर उन्हे लापसी, पूरी, चावल के पिण्ड, उड़द का बाकाला चढ़ावे। यजमान व धर्मपत्नि को उस पितरो से युक्त चौकी को उठाने के लिए कहे व घर की सीमा की परिक्रमा करावे, परिक्रमा करते समय इस मंत्र का जप करते जावे पीछे पीछे मांत्रिक इस मंत्र से अभिमिंत्रत जल को भूमि पर छोडता जावे। इस प्रकार परिक्रमा करते समय पितरो से युक्त चौकी का भार बड़ता जायेगा। यदि किसी कारण वश चौकी हाथ से छूट जावे तो यह प्रक्रिया पुनः शुरु से करे। तत्पश्चात् चौकी को पुनः उस स्थान पर ले आवे जहां पर इसका पूजन किया गया वहा नारियल का बलिदान कर चौकी पर रखी सामग्री को घड़े के खप्पर में भर लेवे। घर के मुख्य द्वार पर सात बार घड़े को उठाकर यजमान उस सामग्री युक्त घड़े के खप्पर को किसी एकान्त स्थान पर जाकर दफना आवे। लौटते समस पीछे मुडकर नही देखे। दुसरे दिन यजमान से तर्पण, ब्राह्मण भोज, दानादि करावे। इससे पितर प्रसन्न होते है घर में सुख शांति होती है।

॥ विविध देवाकर्षण मन्त्राः॥

॥ अभिष्ट देवता का आकर्षण॥

ॐ हुं स्वाहा। ॐ वं स्वाहा। ॐ अमुक देवतायै नमः। ॐ ह्रीं क्लीं भैरवाय। ॐ फट् फट् स्वाहा।

अमुक के स्थान पर अपने अभीष्ट देवता का नाम लेवें। भैरव की कृपा से अभीष्ठ देव की प्रसन्नता प्राप्त होगी।

॥ देवाकर्षण मंत्र॥

ॐ नमो रुद्राय नमः। अनाथाय बलवीर्य पराक्रम प्रभव कपट कपाट कीट मार मार हन हन पच पच स्वाहा।

प्रयत्न करने पर भी इष्ट कृपा नहीं हो रही हो तो शिव के इस मंत्र का जप करें।

॥ कुलदेवताकर्षण मंत्र ॥

ॐ नमो कामद काली कामाक्षा देवी तेरे सुमरे बेड़ा पार, पढि पढि मारूं गिन गिन फूल, जाहि बुलाई सोई आये, हांक मार हनुमान वीर पकड़ ला जल्दी, दुहाई तोय सीता सती, अंजनी माता की। मेरा मंत्र सांचा पिण्ड कांचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

यह मंत्र हनुमानजी के मन्दिर में ४१ दिन तक यम नियम से करें। एक हजार मंत्र रोज करें। ४२ वें दिन २१ गुलाब के फूल लेकर मंदिर में जायें। उन फूलों पर २१ बार मंत्र पढ़ें। मन में यह संकल्प करें कि मेरे घर में कौनसी देव बाधा या पितर बाधा है। जिसके कारण मुझे संकट प्राप्त हो रहे है। ऐसा सोच कर फूल सभी दिशाओं में फेंक देवें फिर हनुमानजी का ध्यान कर मंत्र पढ़ें। यदि ध्यान में कोई व्यक्ति दिखाई देवे या ध्वनि सुनाई देवे तो उसका दोष जाने। यदि कुछ सुनाई दिखाई नहीं देवे तो घर आकर सो जाये रात्रि को स्वप्न में सब वृत्तान्त मालूम होगा। यदि स्वप्न भी नहीं आवे तो कोई दोष नहीं है।

॥ हनुमानजी का आकर्षण मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेस गुरु का। हनुमान का ध्यान जाने, सारे रामचन्द्र के काज, भूत को वश करे, प्रेत को वश करे, वादी को मारे, धारे तेल और सिन्दूर, जासे भागे वैरी दूर, सत्य वीर हनुमान, बारह बरस का जवान, हाथ में लड्डू मुख में पान, हनुमान गुणवन्ता गजवन्ता धारे तार, गद्दी बैठे राज करन्ता, अंजनी की दुहाई, पवन पिता की दुहाई, सीता सती की दुहाई, तेरी शक्ति गुरु की भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

जब विशाखा नक्षत्र में, चन्द्र ग्रहण हो उस समय जप प्रारंभ करें। ४१ दिन में ४१ हजार जप करे। गुगल धूप दीप लड्डू व पान चढ़ावें। हनुमानजी प्रसन्न होकर सब कार्य सम्पन्न करें।

॥ मनचाही वस्तु मंगाने के मन्त्र ॥

(१) ॐ नमो थ्री रूम चलूं स्वाहा। तत् और सत् ॥

(२) बल और बुद्धि गंगा और यमुना, गुटका और गुटकी द द द शब्द सांचा लक्ष्मण जाति का वाचा तत् और सत्।

सिद्धि योग में दिन को १२ बजे सवा घंटा, होली को सवा घंटा तथा अक्षय तृतीया को रात्रि में१२ बजे सवा घंटा प्रयोग कर नियमित जप करें। तो स्मरण मात्र प्रयोग से मनचाही वस्तु मंगा सकते हैं। यह प्रयोग सिद्ध व्यक्ति से लिया गया है, उसने कई बार सफल प्रयोग कर दिखाया है।

(३) ॐ रूम चलूं सः।

इस मन्त्र को ७५ हजार जप कर होम कर कन्या भोजन करायें। ग्रहण के दिन होली दीपावली व दशहरे को जप कर जागृत करें।

इस मंत्र के द्वारा एक पण्डितजी किसी भी वस्तु को मंगा लेते थे। किसी व्यक्ति से कहीं खर्चा कराना होता तो उसे भ्रमित करने के लिये भूमि मे निधि दर्शन भी करा देते थे। अपनी अन्य साधना मंत्रों के द्वारा स्पर्श करने पर व्यक्ति को पात्र की गर्मी व जलन महसूस करा देते पश्चात् कहते है कि अमुक कर्म व अमुक धर्म करने पर ही वस्तु प्राप्त होगी।

कर्म समाप्त होने पर फिर गर्म पात्र का स्पर्श निधि दर्शन करा कर कह देते कि इस वस्तु को ग्राह्य करने पर तुम्हारा अनिष्ट हो जायेगा। यह जो धर्म कर्म किया है वही तुम्हारी रक्षा करेगा। मुझे पण्डितजी ने बताया कि वे ऐसा कभी

कभी धन खर्च की आवश्यकता होने पर ही करते थे।

॥ देव से दूरस्थ इच्छित वस्तु मंगाना ॥

शाबर मंत्रो का गूढ रहस्य अर्थ नहीं बनता है परन्तु उस मंत्र के प्रणेता की मानसिक शक्ति से पुटित होकर मंत्र कार्य करता है। कोई भी वस्तु द्रव्य मंगानी हो तो इस मंत्र को सिद्ध करने बाद प्रयोग करके दिखा सकते हो चाहे वह दूरस्थ हो, अंतरिक्ष से वस्तु आपको प्राप्त होगी।

(४) ॐ नमो थ्रीं रूम चलूं स्वाहा। तत और सत। बल और बुद्धि गंगा और यमुना गुटका और गुटकी द द द शब्द सांचा लक्ष्मण जाति का वाचा तत और सत्।

इस मंत्र के सवा लाख जप करे। गुगल, दशांश धूप नारेल से होम करे तो मंत्र सिद्ध होवे। सोमवार गुरुवार से प्रारंभ करे। होली दिपावली एवं दशहरा अक्षय तृतीया पर मंत्र जाग्रत अवश्य करते रहे। यह मंत्र जिससे प्राप्त किया था उसको इसकी सिद्धि प्राप्त थी बैठे बैठे ही इच्छित वस्तु मंगा सकता था। अत: प्रयोग सत्य है।

(५) सिर पे साफा हाथ में सांग कसे है बख्तर कसी लगा बैठी उड़तो आता है जिन्दवीर रणधीर धर्मध्वज फहराती आवे जिन्दवीर बलखातो आवे। जहां बुलाऊं वहीं पधारे कलदारन के ढेर लगा रे लौग से बुलाऊं, लोबान से बुलाऊं, फूल से बुलाऊं फूल में आवे जो जो मांगू सो लाये एक पलक न देर लगाये, बुलाये बुलाये न आये, फलानी चीज न लाये तो किले का जिन्द वीर न कहाये, बजरंगी की सेवा में खटक लगावे, काली मैय्या को रुलावे, चाण्डाल की शराब में नहावे, मेरा बुलाया न आये तो गुरु भोला की आन, शाबर बाबा को आदेश, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति मंत्र सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यह जिन्न का मंत्र है कब्रिस्तान में कब्र के पास सिद्ध किया जाता है। इसके मुवक्किल तथा कच्चे कलवे की साधना से भी यह कार्य मनचाही वस्तु का किया जा सकता है। **अजमेर में डिग्गीबाजार में श्रीमान ढढ्ढा को यह क्रिया सिद्ध थी उसने नेहरु जी को बेमौसम में तरबूज खिलाया था।** परन्तु उसका घर साफ सुथरा नहीं रहता, गंदगी प्रिय स्थान था। जिन्न नाराज होकर कहीं अनिष्ट नहीं कर देवे, इसलिये बार-बार उससे कार्य नहीं कराये। रक्षा के लिये सूअर दांत या हड्डी पास रखे।

(६) ॐ नमो देवलोक देवख्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी छप्पन भैरुं हनुमन्त वीर भूत प्रेत देव्य कूं सारा मुगावे पराई माया लावे लाडू पेड़ा बरफी सेंव सिंघाड़ा ढांहव का पत्ता मां मिश्री घेवर लौंग डोढ़ा इलायची दाणा तले देवी किलकिले ऊपर हनुमत गाजे इतनी वस्तु चाही न लावे तो तेतीस कोटी देवता लाजे मिर्च जावित्री जायफल हरड़ बहड़ बादाम छुआरा मुर्फरे रामवीर तो बता देव से लक्ष्मण वीर पकड़ावे हाथ भूत प्रेत को चलावे हाथ, हनुमन्त वीर लंका कूं धाया भूत प्रेत को साथ चलाया चाही वस्तु चली आवे हनुमन्त वीर को सब कोई गावे सौ कोसां की वस्तु लादे न लावे तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर लजावे।

विधान – गांव के बाहर जो कुआँ हो वहां हनुमानजी की मूर्ति बनायें। धूप दीप करें। ७ दिन तक अढाई पाव तथा २१ दिन तक सवा पाव रोट का शक्कर के साथ भोग लगावे। बाद में स्वयं उसे खावें। जब कोई आवाज आवे तो वर मांग लेवें।

॥ इच्छित वस्तु मंगाने का मंत्र ॥

(७) नमो देवलोक देवख्या देवी, जहां बसे इस्माइल जोगी छप्पन भैरों, हनुमन्त वीर, भूतप्रेत दैत्य कूं सारा मंगावे, पाराई माया लावे, लड्डू पेड़ा बर्फी सेव सिंघाडा, पाक पतासा, मिश्री घेवर, लौंग जोड़ा, इलायची दाना, तले देवी, किल किले, ऊपर हनुमन्त गाजे, इतनी वस्तु मैं चाही, वस्तु न लाए तो तैतीस कोटि देवता लाजे, मिर्च जावित्री, जायफल हरड़ बाहड़, बादाम, छुआरा, मुकरै रामवीर तो बता देव देव से बतां वस्त्रो लक्ष्मण वीर पकडावे हाथ, भूत प्रेत को चलावे, साधि हनुमन्त वीर, लंका कु धाया, भूतप्रेत को संग चलाया, चाही वस्तु चलो आवे। हनुमन्त वीर को सब कोई गावै, सौ कोषों की वस्तु लावे, न लावे तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैंगम्बर लाजै।

विधि– गांव के बाहर कुए पर जहां हनुमान जी की मूर्ति हो वहां जाए, धूप दीपक देकर नित्य १०८ बार जपे। प्रथम सात दिन ढाई पाव का उसके बाद २१ दिन तक सवा पाव का रोट का खाण्ड (शर्करा) सहित भोग लगावे। बाद में स्वयं उसे खाये। फिर आकाशवाणी होने पर वरदान मांगे। जब खाने पीने की वस्तु मंगानी होतो पात्र साथ में रखे, उस पात्र में आयी वस्तु को स्वयं न खावे दुसरों को खिलावे।

(८) ॐ नमो दामोदर गणेश, जनक मवडी पगे पावडी बांए हाथे फरशी, दांए हाथे अंगीठी, अरथ लाओ, गरथ लाओ, आसन बैठा जोगी लाओ, हमारी मंगावी वस्तु लाओ, न लाओ तो माता पार्वती की दुहाई फिरे, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। सत्य गुरु का मंत्र सांचा।

विधि – चतुर्थी मंगलवार के दिन यह प्रयोग करे। २१ माला रोज करे एवं गणेश जी का पंचोपचार पूजन, पंचामृत स्नान पूर्वक करें। ४ मंगलवार तक करे। मंत्र सिद्ध होने पर इच्छित वस्तु मांग सकते है।

॥ वस्तु व अनाज राशि उड़ाना ॥

(१)

पुराने जमाने में यति लोग अनाज राशि ही नहीं बल्कि मंदिर तक उड़ा लाते थे। राजस्थान में ब्यावर के पास मांगलियावास गांव में इसका उदाहरण मौजूद है। हजार साल पहले कोई यति एक शिव लिंग उसके पीछे कल्पवृक्ष का पेड़ उसके पीछे शिव लिंग इस तरह उडाकर ले जा रहा था। एक शिव लिंग तो आगे निकल गया, मांगलियावास गांव में एक संत ने कल्पवृक्ष को उड़ते हुये देखा तो उसने उसे नीचे उतार दिया। ऐसा होने पर शिवलिंग व कल्पवृक्ष वहीं स्थिर हो गये। आगे वाले शिवलिंग ने तब पीछे मुडकर देखा तो वह भी पीछे वाले की तरफ देखता हुआ स्थिर हो गया। कल्पवृक्ष के ये वृक्ष राजा व रानी के नाम से है। पुरातत्व विभाग के अनुसार ये वृक्ष एक हजार वर्ष के है।

ॐ नमो हंकोलो चौसठ योगिनी हंकालो बावन वीर कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊं, आगे चौसठ वीर जलबांधि बलबन्धि आकाश बन्धि पवन बन्धि तीन देश की दिशा बन्धि उत्तर को अर्जुन राजा दक्षिण तो कार्तिक विराजे आसमान लो वीर गाजे नीचे चौसठ योगिनी विराजे पीर तो पास चलि आवे छप्पन भैरो राशि उड़ावे एक बन्ध आसमान में लगाया दूजे बान्धि राशि घर में लाया।

दीपावली की रात्रि को बकरी की मींगणी लावें। उसको ७ बार मंत्र कर धान पर रख आवे तो धान राशि उठकर घर आ जावे।

(२)

यह प्रयोग गांवों में अक्सर यति व नाथ जाति के लोग करते थे।

ॐ नमो हंकालूं चौसठ योगिनी हंकालूं बावन वीर कार्तवीर्य अर्जुन कीर बुलाऊँ आगे चौसठ वीर जलबंध बलबंध आकाश बंध पौनबंध तीन देश की दिशाबंध उतरे तो अर्जुन राजा दक्षिणे तो कार्तवीर्यराजा आसमान तो बावन वीर गाजे नाचे तो चौसठ चौसठ जोगिनी विराजें पीर तो पासि चलावे छपन्या भैंरूं रासि उठावे एक बंध आसमान में लगाया दूजा बंध रास घर में ल्याया शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

॥ रक्षा कारक मन्त्राः ॥

॥ दिग्रक्षण मन्त्र ॥

(१)

बार राखै बारका, शीश राखै सोखा वीर, नारी राखै नाहरसिंह, कपाल राखै जोगनी, आगा राखै इन्द्रसिंह, पाछा राखै भीमसिंह, बरा कोस अगाडू राख, बारह कोस पिछाड़ राख, तू जो गोरा कहै, मेरा प्रण न राखै तो माता अंजनी वीर हनुमान की दुहाई।

सरसों मंत्र कर दिग् रक्षण करें। तथा झाड़ा देने से दोष दूर होवे।

(२)

॥ जगह बांधना ॥

अरघट जाऊं मरघट जाऊं, मरघट बैठ के लड्डू खाऊं। लोहे की कील वज्र का ताला तहां बैठा हनुमन्त रखवाला।

भूतप्रेत जादू टोना सबको जेर कर बांधने वाला। जिस जगह को बांधना हो वहां चाकू से मंत्र द्वारा रेखा खींच देवे। मकान पर मन्त्र कर चारों ओर जल की धारा देवे।

(३)

॥ घर बांधना ॥

उत्तरा खण्ड की काली उत्तर को बांध, पूरब को बांध, पश्चिम को बांध, दक्षिण को बांध, आग बांध, पीछा बांध, घर के चारों कोना बांध, मेरी बांधे न बंधे तो काली माई की फिरै दुहाई।

एक मिट्टी की करी, सिकोरा या कोई बरतन लेवें, उसमें शराब, दूध और गौमूत्र भरे बरतन के पेंदे में छोटा सा सुराग करें। मंत्र पढ़ते हुये मकान की छत पर चारों ओर चक्कर लगावे। द्रव्य टपकता रहेगा तथा चारों कोनों में नींबू रखें एवं कीला ठोकते जायें।

(४)

॥ ताबीज बनाने व झाड़े देने का मन्त्र ॥

लोना सलोना योगिनी बांधे, टोना आबहु सखि मिलि जादू कवन कवनु देश कवनु फिरि आदि अफूल फूलवाई ज्यों ज्यों आवै बास त्यौं त्यों फलानी आवें

हमरे पास, कवरु जादू कामण दूर करे। देवी की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मोहिनी ईश्वरो वाचा।

किसी डाकिनी शाकिनी औरत का बहम हो तो फलानी की जगह उसका नाम लेवें।

(५)

॥ ताबीज व झाड़े का मन्त्र ॥

सोम शनिचर भौम अगारो, कहा चललि देई अघारी चारि जटा वज्र केवार दीनहि बांधो सोम द्वार। उत्तर बांधो कोइला दानव दक्षिण बांधो क्षेत्रपाल चारि विद्या बांधि के देउ विशेष मवर भंवर दिधिल भंवर गये चलु, उत्तरापथ योगिनी चलु पाताल से वासुकी चलु रामचन्द्र के पायक अंजनी के चीर लागे ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की दुहाई जो टोना रहैं एहि पिण्ड मन्त्र पढि फूंके टोना कइल न रहे।

(६)

या हिसार या हिसार या हिसार परी जबर कुपफार, एक खाई दूसरी अग्निपसार गिर्द व गिर्द मलायक असवार दायां दस्त रखे जिब्राइल, बायां दस्त रखे मीकाईल, पीठ रखे इश्राफील, पेट रखे इज्राइल, दस्त चयहसन दस्तरास्त हुसैन पेशवा मुहम्मद गिर्द व गिर्द अली लाइलाह का कोट इल्लिल्लाह की खाई, हजरत अली की चौकी बैठी मुहेम्मद रसूल्लिला की दुहाई।

मार्ग में या श्मशान में या अन्य कोई भूतादिक भय हो तो ७ बार पढकर चुटकी बजायें अपने चारों ओर रक्षा रेखा खींच लेवें।

(७)

छोटी मोटी थमंत बार को बार बांधे पार को पार बांधे मराघमा हांण बांधे जादूवीर बांधे टोना टम्बर बांधे दीठ मूठ बांधे चोरी द्वार बांधे भिड़िया और बाघ बांधे, बीछू और सांप बांधे, लाइलाह का कोट इल्लिल्लाह की खाई मुहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी हजरत अली की दुहाई।

प्रयोग शुक्रवार से शुक्रवार १०८ बार नित्य करें लौबान की धूप करें।

(८)

छोटी मोटी थमन्त बार को बार पार को पार बांधे मरा घमासाण बांधे जादू वीर बांधे, टोना टम्बर बांधे, दीठ मूठ बांधे, चोरी छार बांधे, चिडिया और बाघ बांधे, लाइलाइ का कोट इल्लिल्लाह की खाई मुहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी हजरत अली की दुहाई।

प्रयोग गुरुवार या शुक्रवार से १०८ बार करें। लोबान की धूप करें।

(९)

ॐ नमः वज्र का कोठा जिसमें पिण्ड हमारा पैठा। ईश्वर कुञ्जी ब्रह्मा ताला मेरे आठों याम का बली हनुमन्त रखवाला।

हनुमानजी की पंचोपचार से पूजा करें। १०८ बार ४१ दिन तक करें। मंगल शनि को गुगल धूप करें। प्रयोग हेतु रक्षा कर्म करें। गण्डा ताबीज बनायें।

(१०)

सीख राखै सांइया श्रवण सिरजनहार, नैन राखे नरहरि नासा अपरगपार, मुख राखा माधवे, कण्ठा राखा करतार, हृदये हरि रक्षा करे, नाभि त्रिभुवनसार, जंघा राखा जगदीश करे, पिण्डी पालनहार, शिर राखा गोविन्द पगतली परमउदार, आगे राखे रामजी, पीछे रावणहार, वाम दाहिणे राखिले, करगृही करतार, जमडङ्क लागे नहीं विघ्न काल ते दूर, राम रक्षा जन की करे, बाजे अनहद तूर। कलेजो राखे केसवो, जिभ्या को जगदीश, आतम कै अलख राखे, जीव को जोतिश, राख राख शरणागति जीव कूं ऐके बार, संतो की रक्षा करे शिव, गुरु गोरखनाथ सतगुरु सृजनहार।

मंत्र का २१ बार जप नित्य करने से रक्षा होवे।

(११)

ॐ नमो आदेश गुरुन को ईश्वर वाचा, अजरी बजरी बाड़ा बजरी मैं बजरी बांधा दशों दुवार, छवा और के घालों तो पलट हनुमन्त वीर उसी को मारे, पहली चौकी गणपती, दूजी चौकी हनुमानजी की, तीजी चौकी में भैरों, चौथी चौकी देत, रक्षाकरन को आवे श्री नरसिंहदेवजी, शब्द सांचा पिण्ड कांचा चले मन्त्र ईश्वरो वाचा।

यह मन्त्र शरीर व स्थान की रक्षा करता है। अनेकानेक संकट हो, परिवार या मकान, दुकान जैसे अभिशिप्त व बंधित होकर अनेक आपदा नुकसान होवे तो इस मन्त्र का प्रयोग करें। भय नुकसान के कारण स्थान छोड़ने की आशंका बने तो भी इस प्रयोग को करें।

मकान की रक्षा व बंधन करना हो तो पहले मकान के खिड़की दरवाजे गिन लेवें, उतनी ही कीलें लेवें। एक एक कील के साथ कुछ उड़द के दाने लेवें। अलग अलग ५-५ मंत्र पढकर फूंक देवे। फिर मकान के आखरी कमरे की आखरी खिड़की पर मन्त्र पढ़कर कील ठोक देवें। उड़द के दाने बिखेरें, फिर दरवाजे पर कील ठोकें। फिर आगे के कमरे पर रक्षा करे इस तरह प्रत्येक कमरे के खिड़की दरवाजों पर कील ठोकते हुये व उड़द बिखेरते हुये बाहर के दरवाजे पर कील ठोकें व उड़द ड़ालें तो अभिशिप्त आत्मा चली जायेगी।

किसी को अधिक वहम हो तो मकान के ऊपर चारों कोनों में या आठों दिशाओं एवं मकान के चौक के चारों कोनों में भी कीलें ठोंक देवे।

मन्त्र हनुमानजी की प्रतिमा के आगे सिद्ध करें। पंचोपचार से पूजन कर गुगल धूप देवें। रक्षा करने के बाद ५ बच्चों को भोजन करायें।

(१२)

ॐ नमो नारायण भगवते वासुदेवाय नमः। जल में मत्स्यावतार से रक्षा करे, पाताल में बावन अवतार रक्षक हो, किला व जंगल है वहां नरसिंहजी रक्षा करे, मार्ग में यज्ञ भगवान रक्षा करे, विदेश में व पर्वत पर रामचन्द्रजी रक्षक हो, योग मारग में दत्तात्रेयजी रक्षक हो, देवता के अपराध में सनतकुमार रक्षा करे, पूजा के विधान में नारदजी सहायक हो, कुपथ्य में धनवन्तरि वैद से रक्षा करे, अज्ञान से वेदव्यासजी, अधर्म से कलंकी भगवान रक्षा करे, गोविन्द नारायण, बलभद्र, मधुसुदन हृषिकेश, पद्मनाथ, गोपीनाथ, दामोदर, ईश्वर, परमेश्वर जो भगवान के नाम हैं वे आठ पहर सब अंगों की इन्द्रियों की रक्षा करे।, बैकुण्ठनाथ का शंख चक्र गदा पद्म, गरुड़ अनेक भय से रक्षा करे।

भगवान विष्णु व हनुमानजी की प्रतिमा के सामने सिद्ध करें, गुगल होम करे। इस मन्त्र से झाड़ा देने व ताबीज बनाने से रक्षा होवे।

(१३)

बाघ बिजली सर्प चौर चारों बांधो एक ठौर, धरतीमाता, आकाश पिता रक्ष रक्ष श्री परमेश्वरी वाचा दुहाई महादेव की।

घर बाहर परदेश में इस मंत्र को सोने से पहले स्मरण करें। सब तरह से रक्षा होवे।

(१४)

॥ देह रक्षा का मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ अपर केस विकट भेस खम्ब पत प्रहलाद राखे पाताल राखे पाय देवी जंघा राखे कालिका मस्तक राखे महादेवीजी जो कोई इह पिण्ड प्राण को छेड़े छेदे तो देव दाना भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी गण्ड ताप तिजारी जूड़ी एक पहरु द्वे पहरु सांझ को संवारा को कोजा को कराया को उलट वाही पिण्ड पर पड़े इस पिण्ड की रक्षा श्रीनरसिंहजी करे शब्द सांचा पिण्ड कांचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र से गण्डा बनाकर गले में या बांह में बांधे। रोगी को ७ बार अभिमन्त्रित कर जल पिलावें तो ठीक होवे।

॥ आत्म रक्षा मन्त्रः॥

(१५)

ॐ नमो आदेश गुरु कूं, सवामण लोह का कोठा घड़िया, जिसमें पिण्ड हमारा धरिया। तला धरती ऊपर आकाश, भूतप्रेत का काडू सांस, तांबे क़ा कोट, कथीर की खाई, जहां बैठी जती हनुवन्त की माई, ब्रह्मा की कूंची, ईश्वर का ताला, म्हारा जीव का गुरु गोरखनाथ रखवाला। गुरु की सगत हमारी भगत फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र से फूंक मारकर अपने हाथों को सब अंग पर फेरे।

(१६)

ॐ नमो आदेश गुरु कूं, कपाल राखे कुमारिका, भुवनेश्वरी, त्रिपुरा, बाला, कामराजा, पार्वती, प्राणनाथ, छत्रपति, नवकोटि, कात्यायनी, त्रिपुरसुन्दरी, ज्वालामुखी, तारा, तोमरी, देवी कालिका, भवानी, पञ्चों बैठे ललाट, चन्दन केरा तिलक करो। वीरी हमारी लात, बाऊ वीर हनुमन्त, जे तज्यो मन चिन्त्यो सो साजे हिवाऊं, तेहि मोकू गुरु की सगत, हमारी भगत, चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा, शब्द सांचा पिण्ड कांचा।

२१ बार पढ़कर अपने शरीर पर फूंक मारे, फिर निम्न मन्त्र से २१ बार अपने शरीर पर फूंके।

ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सर्वं रक्ष रक्ष स्वाहा।

(१७)

॥ शरीर रक्षा मंत्र॥

सोम शनैश्चर भौम अगारी कहा चललि देई अंधारी चारि जटा वज्र के वार दीनहिं बांधो सोम दुआर उत्तर बांधो कोडला दानव दक्षिण बांधो क्षेत्रपाल चारि विद्या बांधि के देह विशेष भवर भवर दिधिल भवर गये चलु उत्तरापथ योगिनी चलु पाताल से वासुकि चलु रामचन्द्र के पायक अंजनी के वीर लागे ईश्वर महादेव गोरा पार्वती की दुहाई जो टोना रहे एहि पिण्ड मंत्र पढि फूंके तोना काइल न रहे।

होली, दीपावली व ग्रहण में मंत्र सिद्ध करे। झाडा देने व अभिमंत्रित जल पिलाने से रोगी ठीक होवे।

(१८)

॥ अथ कालभैरव वटुकभैरव प्रयोग:॥

यह प्रयोग भैरव की प्रसन्नता व शत्रूनाश एवं दिग्बंधन हेतु विशेष है अत: भैरव का पूजन, बलिप्रदान कर्म पूजा पूर्णरूप से विधिवत् करें। स्वयं की रक्षा हेतु मन्त्र पढ़कर मुंह व अंगों पर हाथ फेरें। ताबीज बनाकर देने से रोगी की रक्षा होवे तथा अभिमंत्रित कीलें घर में सभी दिशाओं में ठोकने से घर की रक्षा होवे।

विनियोग: - **अथ वटुकभैरव स्तोत्रस्य सप्तऋषि: मात्रिका छन्द: श्री वटुक -काल भैरवो देवता ममेप्सित सिद्ध्यर्थं जपे विनियोग:।**

ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्। शोकदु:ख क्षयकरं निरंजनं निराकारं नारायणं भक्तिपूर्ण त्वं महेशं सर्वकाम सिद्धिर्भवेत्। कालभैरव भूषण वाहनं कालहंता रूपं च भैरव गुनी महात्मन: योगीनां महादेव स्वरूपं सर्व सिद्धयेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरो महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ त्वं ज्ञानं त्वं ध्यानं त्वं योगं त्वं तत्वं त्वं वीजं महात्मानं त्वं शक्ति शक्तिधारणं त्वं महादेव स्वरूपं सर्वसिद्धिर्भवेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरो महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं नागेश्वरं नागहारं च त्वं वन्दे परमेश्वरं, ब्रह्मज्ञानं ब्रह्मध्यानं ब्रह्मयोगं ब्रह्मतत्वं ब्रह्मवीजं महात्मन:। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

त्रिशूलचक्र गदापाणिं शूलपाणि पिनाकधृक्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं विनागन्धं विनाधूपं विनादीपं सर्वशत्रुविनाशनं सर्वसिद्धिर्भवेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धर्भवेत्।

विभूति भूति नाशाय दुष्टक्षयकारकं महाभैरवे नम: सर्वदुष्ट विनाशनं सेवक सर्वसिद्धिं कुरु। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं महाज्ञानी महाध्यानी महायोगी महाबली तपेश्वरी देहि मे सिद्धिं सर्वं त्वं भैरवं भीमनादं च नादनम्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अमुकं मारय मारय उच्चाटय उच्चाटय मोहय मोहय वशं कुरु कुरु सर्वार्थकस्य सिद्धिरूपं त्वं महाकाल काल भक्षणं महादेव स्वरूप त्वं सर्व सिद्धियेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं गोविन्द गोकुलानन्द गोपालं गोवर्द्धनम् धारणं त्वं वन्दे परमेश्वरं नारायणं नमस्कृत्य त्वं धामशिवरूपं च साधकं सर्व सिद्धयेत्॥ ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं राम लक्ष्मणं त्वं श्रीपति सुन्दरं त्वं गरुड वाहनं त्वं शत्रुहंता च त्वं यमस्य रूपं सर्वकार्य सिद्धिं कुरु। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं ब्रह्मा विष्णु महेश्वरं त्वं जगत्कारणं सृष्टि स्थिति संहारकारकं रक्तबीज महासैन्यं महाविद्या महाभयविनाशनम्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं आहार मद्य मांसं च सर्व दुष्ट विनाशनं साधकं सर्वसिद्धप्रदा। ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अघोर अघोर महाअघोर सर्वअघोर भैरव काल। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ आं क्लीं क्लीं क्लीं ॐ आं क्रीं क्रीं क्रीं ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं रुं रुं रुं क्रूं क्रूं क्रूं मोहन सर्व सिद्धिं कुरु कुरु ॐ आं ह्रीं ह्रीं ह्रीं अमुकं उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय प्रूं प्रूं प्रें प्रें खं खं दुष्टान् हन हन अमुकं फट् स्वाहा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ वटुक वटुक योगं च वटुकनाथ महेश्वरः वटुकं वटवृक्षे वटुकं प्रत्यक्ष सिद्धियेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव श्मशान भैरव कालरूप कालभैरव मेरो वैरी तेरो आहार रे काढि करेजा चखन करो कटकट। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ नमो हंकारी वीर ज्वालामुखी तूं दुष्टन वधकरो विना अपराध जो मोहि सतावे तेकर करेजा छिदिपरै मुखवाट लोहू आवे को जाने चन्द्र सूर्य जाने की आदि पुरुष जाने कामरूप कामाक्षा देवी त्रिवाचा सत्यफुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं डाकिनी शाकिनी भूत पिशाचश्च सर्वदुष्ट निवारणं कुरु कुरु साधकानां रक्ष रक्ष देहि मे हृदये सर्व सिद्धिं त्वं भैरव भैरवीभ्यो त्वं महाभय विनाशनं कुरु। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं पच्छिम दिशा में सोने का मठ सोने का किवाड सोने का ताला सोने की कुंजी सोने का घण्टा सोने की सांकुली पहिली सांकुली अठारह कुल नाग के बाँधों दूसरी साँकुली अठारह कुल जाति के बौधों तीसरी सांकुली वैरि दुष्टन को बाँधों चौथी साँकुली डाकिनी शाकिनी के बाँधों पाँचवी सांकुली भूतप्रेत को बाँधो जरती अगिन बाँधों जरता मसान बांधों थल जल बांधो बांधो अम्मरताई जहां भेजूं तहां जाई जेहि का वांधि लावो वो तेहि का वांध लावो वाचा चूकै उमा सूखे श्री बावन वीर ले जाय सात समुन्दर तीर त्रिवाचा सत्य मन्त्र फुरो ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं उत्तर दिशा में रूपे का मठ रूपे का किवार रूपे का ताला रूपे की कुंजी रूपे का घण्टा रूपे की सांकुली पहिली सांकुली अठारह कुल नाग बाँधों दूसरी साँकुली अठारह कुल जाति को बांधूं तीसरी

सांकुली वैरि दुश्मन को बाँधों चौथी साँकुली डाकिनी शाकिनी को बाँधों पाँचवी सांकुली भूतप्रेत को बांधो जलत अग्नि बौधों जलत मसान बाँधो जल बाँधो थल बाँधो बाँधो अम्बरताई जहां भेजूं तहां जाई जेहि का वांधि मंगावो तेहि का वांधि लावो वाचा चूकै उमा सूखै श्री बावन वीर ले जाय सात समुन्दर तीर त्रिवाचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं पूरब दिशा में तामे का मठ तामे का किवार तामे का ताला तामे की कुंजी तामे का घण्टा तामे की सांकुली पहिली सांकुली अठारह कुल नाग को बाँधूँ दूसरी साँकुली अठारह कुल जाति को बांधू तीसरी सांकुली वैरि दुष्टन को बाँधूं चौथी साँकुली डाकिनी शाकिनी को बाँधूं पाँचवी सांकुली भूतप्रेत को बाँधूं जलत अग्नि बाँधूं जलत मसान बांधूं जल बाँधो थल बाँधो बाँधो अम्बरताई जहां भेजूं तहां जाई जेहि का वांधि मंगावो तेहि वांधि लावो वाचा चूकै उमा सूखै श्री बावन वीर ले जाय सात समुन्दर तीर त्रिवाचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ आं ह्रीं दक्षिण दिशा में अस्थि का मठ अस्थि का किवार अस्थि का ताला अस्थि की कुंजी अस्थि का घण्टा अस्थि की सांकुली पहिली सांकुली अठारह कुल नाग को बाँधो दूसरी साँकुली अठारह कुल जाति को बांधो तीसरी सांकुली वैरि दुष्टन को बाँधो चौथी साँकुली डाकिनी शाकिनी को बाँधो पाँचवीं सांकुली भूतप्रेत को बाँधो जलत अग्नि बांधो जलत मसान बांधो जल बाँधो थल बाँधो बाँधो अम्बरताई जहां भेजूं तहां जाई जेहि वांधि मंगावो तेहि का वांधि लावो वाचा चूकै उमा सूखे श्री बावन वीर ले जाय सात समुन्दर तीर त्रिवाचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं आकाशं त्वं पातालं त्वं मृत्युलोकं चतुर्भुजं चतुर्मुखं चतुर्बाहु शत्रुहन्ताश्च त्वं भैरव भक्तिपूर्ण कलेवरम्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं सहस्त्रमुख सहस्त्र-जिह्वा सहस्त्र-वाहनं सहस्त्र-दुष्ट- भक्षितं त्वं सेवकस्य सहस्त्र कामना सिद्धि करोसि। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव तुम जहाँ जाहु जहाँ दुश्मन बैठा होय तो बैठे को मारो चलत होय तो चलते को मारो सोवत होय तो सोते को मारो पूजा करत होय तो पूजा में मारो जहां होय तहां मारो ब्याघ्र लै भैरव दुष्ट को भक्षौ सर्प लै भैरव दुष्ट को डसो खड्ग से मारो भैरव दुष्ट को शिर गिरैबान से मारो दुष्टन करेजा फटै त्रिशूल से मारो शत्रुछिदि पैर मुख वाट लोहू आवे को जाने चन्द्र सूरज जाने आदि पुरुष जानै कामरूप कामाक्षा देवी त्रिवाचा सत्य फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं वाचा चूकै उमा सूखै दुश्मन मरै अपने घर में दुहाई कालभैरव की जोह मार वचन झूठा होय तो ब्रह्मा के कपाल टूटै शिवजी के तीनों नेत्र फूटै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं भूतस्य भूतनाथश्च भूतात्म भूत भावनः त्वं भैरव सर्व सिद्धिं कुरु कुरु। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं ज्ञानी त्वं ध्यानी त्वं योगी त्वं जंगम स्थावरं त्वं सेवित सर्वकाम सिद्धिर्भवेत्। ॐ कालभैरौ वटुकभैरौ भूतभैरौ महाभैरव महाभयविनाशनं देवता सर्वसिद्धिर्भवेत्।

ॐ कालभैरव त्वं वन्दे परमेश्वरं ब्रह्मरूपं प्रसन्नो भव गुनि महात्मानां महादेव स्वरूपं सर्वसिद्धिर्भवेत्॥

(ॐ कालभैरव वटुकभैरव योग विख्यातः गोपालेन संकीर्तितम्। गोरखनाथ स्वयं श्रुतं सर्व कार्येषु कामदम्)॥ इति॥

॥ सर्वदेव, सर्वोपद्रव कीलन॥

(घरवार, गांव, देव, पितर, भैरव, प्रेतोपद्रव जनित आग का कीलन)

ॐ नमो पांच कोस पूर्व बांधू, पांच कोस पश्चिम बांधू, पांच कोस उत्तर बांधू, पांच कोण दक्षिण बांधू, पांच कोस जल और थल बांधू, पेट पाताल राजा वासुकि को बांधू, आकाश का आकाश बांधू, पाताल का पाताल बांधू, सित्तर तो नाड़ी बांधू, बहत्तर कोठा बांधू, सृष्टि की सृष्टि बांधू, मूठ की मूठ बांधू, आगिया बेताल बांधू, डोक का मसान बांधू, मंडिया मसान बांधू, गांव खेडा का देव और भूत बांधू, डंकिनि शंखिनि बांधू, भूतनी पलीतणी बांधू, करणी कौटवाल को बांधू, अडवाई बांधू, अग्नि वायु बांधू, पांच पीर तुरकन का बांधू, आंवता जांवता बांधू, बैठता उठता बांधू, राव भाट की विद्या बांधू, घरबार बांधू, आसन और बासण बांधू, आन साहिब कबीर धरमीदास चार गुरु बयालीस पंथ क बांध्या बंधे सत साहिब कबीर।

होली, दीपावली, ग्रहण में सिद्ध करें। इस मंत्र से गांव, क्षेत्र व घर तथा रोगी का कीलन करे। रक्षा चौकी बनाकर पहनावे।

लोहे के चीमटे को आग में गर्म कर खुद को मारे, रोगी को सामने बैठाये, तो रोगी के शरीर स्थित प्रेत को पीडा होवे।

यह प्रयोग भी सिद्ध व्यक्ति से प्राप्त किया गया है।

॥ सर्वविघ्न निवारण रक्षामंत्र॥

ॐ नमो आदेश गुरु को, घर बांधू, घर कोने बांधू और बांधू, बांधू मैं चौबारा। फिर बांधू मैली मुसाण को और कीलूं पिछवाड़ा, आगे पीछे डाकन कीलूं आगन और पनाड़ा। कोप करत कुल देवी कीलूं पितरों पतराड़ा। कीलूं भूत भवन की भंगन, कीलूं कील कील नरसिंग। जय बोलूं ओम नमो नरसिहां

भगवान करो सहाई। या घर को रोग शोक दुःख दलिहर भूत परेत शाकिनी डाकिनी मैली मसाण नजर टोना न भगाओ तो लाख लाख आन खाओ। मेरी भगति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र सांचा। ईश्वर वाचा ॐ नमो गुरु को।

होली, दिवाली, ग्रहण या शुभ दिन सिद्ध योग में मंत्र सिद्ध करे।

॥ सर्व बाधा निवारण मंत्र ॥

ॐ ह्रीं चामुण्डे भ्रकुटि अट्टहासे भीमदर्शने रक्ष रक्ष चोरेभ्यः वजुर्वेभ्यः अग्निभ्यः श्वापदेभ्यः दुष्टजनेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः चण्डी ह्रीं ह्रीं ठः ठः।

इस मंत्र के प्रभाव से चौर, डाकू, भूत-प्रेत, दुष्ट आत्माये, तथा हिंसक जन्तुओ का व अग्नि का भय नही रहता है। यह माता चामुण्डा देवी का मंत्र है १०००० बार जप करने से सिद्ध हो जाता है। आवश्यता पड़ने १०८ बार जप कर जिस घर के चारो ओर रेखा खींच दी जाये वह मकान सभी प्रकार की बाधाओं से सुरक्षित हो जायेगा।

॥ सर्वबाधानिवारक भैरव मंत्र ॥

ॐ ह्रीं बटुक भैरव बालक केश, भगवान वेश, सब आपद को काल भक्त जनहट को पाल, करधरे शिरकपाल दूजे करवाल त्रिशक्ति देवी को बाल भक्तजन मानस को भाल तैंतीस कोटि मंत्र को जाल प्रत्यक्ष बटुक भैरव जानिये मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

विधि:- होली, ग्रहण या दिपावली की रात्रि में उडद के बडे बनाकर भैरव के भोग लगावे। गुग्गल धूपादि देकर इस मंत्र की १० मालाए जपे तो सभी प्रकार की बाधाओं का निवारण होता है। भूत प्रेत पिशाचादि आत्माये वहाँ से भाग जाती है। साधक की मनोकामना पूर्ण होती हैं शत्रुओ का नाश होता है।

॥ पद्‌मावती पार्श्वनाथ मंत्र ॥

प्राकृतग्रंथे- **ॐ पद्मावति स्वाहा ॥ इति सप्ताक्षरो मंत्रः ॥**

अस्य विधानम् - अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः॥ पञ्चमे वा दशांशतो होमः। तदा अष्टमहासिद्धीर्ददाति॥

मतांतरे - **नानाचरणपद्मावति स्वाहा ॥** इत्येकादशाक्षरो मन्त्रः॥

अस्य विधानम् - दशलक्षजपः घृतगुग्गलयतसेवंतीपुष्पेण दशांशतो होमः तदा प्रसन्ना भवति अष्टभोगान प्रतिदिनं ददाति॥ तंडुलमाषन्नकलशमापूर्य तदग्रे जपं कुर्य्यात्॥ यद्दिने कलशेऽन्नं न दृश्यते तदा प्रसन्ना भूत्वा सिद्धिं ददाति॥

मतांतरे - **ॐ नमो धरणीन्द्रे पद्मावति आगच्छागच्छ कार्यं कुरु कुरु** (जहां भेजूं बहां जांवो जो मंगाऊँ सो आन देवो न आने देवो तो श्रीपार्श्वनाथकी आन) **सत्यमेव कुरु कुरु स्वाहा ॥** इति त्र्यधिक षष्ठयक्षरो मंत्रः॥

अस्य विधानम् - पूर्वाग्निकोणे मुखं वा कार्यम्॥ कार्तिककृष्णत्रयोदशीमारभ्य कार्तिकशुक्ला प्रतिपदा यावत् दिनत्रयं प्रतिदिनं सहस्रं जपेत् तदा सिद्धा भवति मनसेप्सितं पदार्थं समानीय साधकाय ददाति॥

इन्द्रजाले – **ॐ पद्मावति पद्मकोशे वज्रवज्रांकुशे प्रत्यक्षा भवति** ॥ इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः ॥

अस्य विधानम् – अर्द्धरात्रे मुक्तिकामालया अष्टोत्तरसहस्रं जपेत्। मृत्तिकापात्रे घृतदीपं प्रज्वाल्य च यवोपरि संस्थाप्य तदग्रे जपेत्। एवं कृते एकविंशतितमे दिने दर्शनं ददाति ॥ इति पद्मिनिसाधनम् ॥

॥ बंदी मोक्ष मंत्राः ॥

जैन प्राकृत गंथों में कई मंत्र है-

(१) **ॐ चक्रेश्वरि चक्रधारिणी शंख गदा प्रहारिणी अमुकस्य बन्दी खलास।**

चक्रेश्वरी वैष्णवी देवी का ही एक रूप है। नित्य तीन या ५ माला रोज जप करे। पहले दस हजार जप एक साथ कर लेवे।

(२) **गजगते मकुरते दाम डं डं स्त के फे फत्कार फोरे विशिष ज्वालामालाकरालं हो हो होनिहान्तं हसि हसि मनि सभा सपाटा रहा। सहकारणा नौ दोस्ति खन कुरुते सर्वतु मुख जति।**

इसके प्रयोग से शत्रु के सहकार्य करने वालों में विद्वेषण हो जाता है, तथा विद्वान वकील सभा के लोग जड़ हो जाते है।

॥ बन्दी मोक्ष हनुमान मंत्र ॥

(३) **ॐ हनुमन्त वीर, वेग आवो अमुक बन्दी को बन्धन से छुडाओ। बेडी तोड़ो, ताला तोडो, सारे बन्धन तोड़ो, मोड़ो अमुक बन्दी को बन्ध से छुडाओ। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।**

इस मंत्र के प्रभाव से कारागार में बन्द व्यक्ति कैद से छुट जाता है। सर्वप्रथम इस मंत्र को लाल रंग की मूंगे की माला से जपकर सिद्ध करे। इसका जप रात्रि में लाल रंग के असान पर बैठकर किया जाता है। अपना मुख दक्षिण दिशा की ओर करके बैठे। प्रयोग करने हेतु पुआ (**जल में गुड को मिलाकर उस पानी को आटे में मिलाकर कढाही में तले**) बनावे उसके बाद उस पुअे पर उस साध्य व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए जो बन्दी हो। रात्रिकाल में एक पात्र में उस पुअे को रख कर गंधाक्षत् पुष्प से पूजन करें। फिर मंत्र जप करे रात्रि में ही पुअे को चौराहे रख आवे। इस प्रकार नित्य पूजा करे जब सवा लाख जप पुरे हो जाये तब ११ कन्याओं को पुअे का भोजन व दक्षिणा देकर प्रसन्न करे।

॥ वाद विवाद में विजय के मंत्र ॥

(१) **ॐ क्रां क्रां क्रां धूम्रसारी वदाक्षं विजयति जयति ॐ स्वाहा।**

धूमावती की धूम्रवाराही की तरह उपविद्या है। सियारी के चर्मासन पर त्रयोदशी पुनर्वसु पर जल की तीर पर मूंगे की लाल माला पर जप करे। मंत्र पढकर अधिकारी व न्यायाधीश के सामने जावे तो वह आपके अनुकूल होवे। कृष्ण

वर्ण के ऊन के आसन पर भी यह प्रयोग कर सकते हैं।

(२) ॐ आदेश गुरु जी को आदेश, आशा मनसा मन में वसे घी सिन्दूर मस्तक चढ़े। इस मंत्र को हनुमान वीर करे, भैरों गाजी गज्जे। मैनूं लाज लगाए तो माता अञ्जनी की दुहाई। राजा रामचन्द्र की आन। लक्ष्मण जती की आन।

मंत्र के दस हजार जप करे। गाय के घी या चमेली के तेल, सिन्दूर, मालीपन्ना से हनुमान जी के चोला चढ़ायें, गुगल व जायफल होम करे। राजकार्य या शास्त्रार्थ में जाते समय घी-सिन्दूर की टींकी ७ बार मंत्र कर लगाकर जाये।

॥ विजयप्रद सिन्दूर मंत्र ॥

ॐ नमो आदेश, गुरु जी को आदेश। ॐ सिन्दूर सिन्दूर महासिन्दूर कहौ सिन्दूर कहां से आया, गिरिपर्वत से आया। कहौ सिन्दूर कौन ले आया, गौरी का पुत्र गणेश ले आया। ह्दय तो हनुमन्त बसे, भैरों बसे कपाल। माथे बिन्दा सिन्दूर का शत्रु गया पताल। ॐ सिन्दूर देवाय विधमही महासिन्दूर देवाय धीमहि तन्नो पर्मसिन्दूर देवाय प्रचोदयात्।

मंत्र सिद्ध करने हेतु १० हजार जप करे। हनुमान जी के घी, चमेली के तेल, सिन्दूर से चौला चढ़ाये, गुगल होम करे। विवाद, शास्त्रार्थ व राजपक्ष में विजय कामना हेतु जाते समय अभिमंत्रित सिन्दूर की टींकी लगाकर जाये।

अथ षट्कर्म प्रयोगाः

॥ आकर्षण मन्त्राः॥

(१)

॥ खोए हुए व्यक्ति हेतु आकर्षण॥

ॐ ह्रीं क्लीं चामुण्डे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल फट् हुं हुं हुं स्वाहा।

यह प्रयोग वट वृक्ष के नीचे या देव मंदिर में करें। खोये हुये पुत्र व व्यक्ति के निमित्त संकल्प करके ४१ दिन में सवा लक्ष जप करें। पंचोपचार पूजन करें, भाग्यवश विलंब हो जाये तो कुछ दिन और करें। दशांश होम करें तो व्यक्ति का पता समाचार अवश्य मिलेगा।

(२)

॥ खोई हुई स्त्री का आकर्षण॥

ॐ नमो कणक्षाय देवी (कमक्षाय देवी) कखलाई भारत, जहां बैठे हनुमान वीर, काल बली रक्षा करे, बस कर लेवें देर न लगावें, आवे फिर आवे, भागी आवे, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। सत्यनाम आदेस गुरु का।

तुलसी के पौधे के पास बैठकर ६०००० जप ६० दिन करें फिर प्रयोग करें। ११ दिन या २१ दिन तक प्रयोग करें। कार्य सिद्ध होने पर हनुमानजी के प्रसादी करें।

जपकाल में शनिवार के दिन बेसन के लड्डू का भोग लगावें। तेल सिन्दूर चढ़ावें।

(३)

॥ आकर्षण मंत्र ॥

मंत्र :- **ॐ नमो त्रिजट लंबोदर वद वद अमुकी आकर्षय आकर्षय स्वाहा।**

जल को १०८ बार मंत्र पढ़कर सिरहाने रखे। मध्य रात्रि में स्त्री का नाम स्मरण कर जल पीवे। सात दिन ऐसा करने से वह आपके पास चली आयेगी।

॥ वशीकरण मन्त्राः॥

(स्त्री पुरूष व राजवशीकरण)

(१)

कहे कमिख्या सुनहु ललजार जर, पेड़ पात सब तुमरो मलिनौ, पाल पात जराय के भस्मत कीनो, पुन वह क्षार महादेव न लई, अबं तुमको प्रतिष्ठा भई, ग्रह विचार बेगे तुम आए, जिभि क्षार लगावो धाए, छिन इक में बस होय हमारे तन मन ते पग परत विचारे मेरी भगत, गुरु की सकत, फुरै मंत्र ईश्वरो वाचा।

शुभ नक्षत्र तिथी में लाजवन्ती का पौधा लाकर सुखायें। शुभ दिन नक्षत्र में ही इसे जलावें, उस समय मंत्र पढ़ते जायें। इस भस्म को ७ बार मंत्र पढ़कर जिसे लगा देवे वह वशी होवे।

(२)

ॐ निरङ्कार भवानी, इन्दर की बेटी, ब्रह्मा की साली, दोनों हाथ बजावे ताली, जा बैठी पीपल की डाली, इन्द्र मोहू, ब्रह्मा मोहूं, मोहूं सारी दुनिया, दुहाई हनुमानजी की, दुहाई हिङ्गलाज, दुहाई गरुड़ नारायण की, वीर धनञ्जय, दुहाई लोना चमारिन की।

१२१ बार जप करें। आम की लकड़ी के काष्ठ से गुड़, लौंग, कपूर, बेलपत्र, तुलसीपत्र, गाय का दूध, घी के हव्य से हवन करे। इस मंत्र के प्रयोग से झाड़ा देने से प्रेत बाधा दूर होवे, ११ बार पढ़कर स्वयं के ऊपर हाथ फेरने से रक्षा होवे तथा प्रतिपक्षि व्यक्ति अनुकूल होवे।

(३)

ऐं भग भुगे भगनि भगोदरि भगमाले योनि भगनिपातिनी, सर्वभग वशङ्करि, भगरूपे, नित्यक्लिन्यै, भग स्वरूपे, सर्वभगानि मे वशमानय वरदे, रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लीं न द्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविधे क्षभ क्षोभय सर्व सत्त्वान् भगेश्वरि ऐं क्लं जं ब्लूं भैं ब्लूं मों ब्लूं हे हे क्लिन्ने सर्वाणि भगानि तस्मै स्वाहा।

भगवती कामाख्या का ध्यान कर मंत्र जपे। पंचोपचार पूजन करें। गुग्गल होम करे।

(४)

॥ स्त्री वशीकरण मंत्र॥

मंत्र :- **ॐ कामिनी रंजनि स्वाहा।**

ग्रहण समय १०००० जप करें। रवि गुरु भौम को यह मंत्र स्त्री की हथेली पर लिखें, वशी होय।

(५)

ॐ ह्रां अघोरे ह्रीं अघोरे हूं घोर घोरतरे सर्व सर्वे नमस्ते रूपे हः ऐं ह्रीं क्लीं

चामुण्डायै विच्चे विच्चे।

ग्रहण समय दस हजार जप करें। इस मंत्र से मंत्र कर साध्या को भोजन करायें वशी होवे।

(६)

मंत्र :- ॐ नमः क्षिप्र कामिनी अमुकीं मे वशमानय स्वाहा।

ग्रहण में १०००० जप करें। प्रातःकाल दन्तधावन करके, एक लोटे में पानी भरे उसे ७ बार मंत्र कर पी जायें। ७ दिन तक लगातार करें तो साध्या का वशीकरण होय।

(७)

ॐ नमो कालाभैंरु कालीरात, काला चाला आधी रात काला रे तू मेरा वीर परनारी ते राखे सीर, बेगी जा छाती धरल्याव सूती होय तो जगाय ल्याव, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

दीपावली या होली के दिन लाल अरण्ड का पेड़ एक झटके में तोड़ लावें। उसे जलाकर काजल बनावे॥ उस काजल को साध्या की आंखों में लगावे वशी होवे।

(८)

॥ स्त्री वशीकरण मंत्र॥

मंत्रः- ॐ नमो कट विकट घोररूपिणी अमुक मे वशमानय स्वाहा।

इस मंत्र को दिपावली या ग्रहण काल में २१ हजार बार जप कर सिद्ध कर लेवे। इस मंत्र से स्त्री का वशीकरण होता है। मंत्र में जहाँ पर अमुक शब्द आया है वहा उस स्त्री का नाम लेवे जिस साधक अपने वश में करना चाहता है। प्रयोग के लिये रविवार के दिन जब साधक भोजन करे तो इस मंत्र से भोजन को १२१ बार अभिमंत्रित कर लेवें। भोजन करते हुए उस स्त्री का लगातार ध्यान करते रहना चाहिए। इस प्रयोग से वह स्त्री साधक की तरफ आकर्षित होकर वश में हो जायेगी।

(९)

॥ पति वशीकरण मंत्र॥

मंत्रः- मात कामच्छा नजर घुमाई, अमार मनुज को दूसर अरुरत से छोड़ाई। कऊन कऊन से छोड़ाव, वेश बण्डीसे छोड़ाव। छोनाल चोण्डाल से छोड़ाव, ओकली बोकली से छोड़ाव। ओलाय बोलाय से छोड़ाव, नोटनी कोटनी से छोड़ाव। जो न छोड़ाव तो वासी चोण्डाल की सेज पर जाव, लूणा चमारी को हूकुम भयो, अमार पुरुष अमार भग को भयो। दोहाई दोहाई हज्जार दोहाई, कामच्छा माई लूना जोगणी को सबद सांचो। (बंगला भाषी मंत्र)

नवरात्रों में प्रत्येक दिन इस मंत्र की ११ मालाए जपे तो इस मंत्र की सिद्धि होती है। इस मंत्र के प्रभाव से स्त्री अपने पति को वश में कर सकती है। सहवास के समय स्त्री इस मंत्र का मन ही मन जप करे तो भी पुरूष उसके वश में हो जायेगा।

(१०)

॥ पति वशीकरण मन्त्र॥

मंत्र :- **ॐ काममालिनी ठः ठः स्वाहा।**

उक्त मंत्र से गोरोचन से तिलक कर पति के साथ व्यवहार करें।

(११)

॥ पति वशीकरण मन्त्र॥

मंत्र :- **ॐ नमो महायक्षिणी पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।**

लौंग और अपनी जिह्वा का मल इन दोनों को मिलाकर ७ बार मंत्रे फिर पति को खिलायें। सुपारी वाला प्रयोग भी इस मंत्र से कर सकते हैं।

(१२)

ॐ ह्रीं महामातंगीश्वरी चाण्डालिनि अमुकीं (अमुकं) पच पच दह दह मथ मथ स्वाहा।

पहले शुभ योग व ग्रहण में १०००० जप करें। रविवार के दिन साध्या के नाम से घी, दूध, शर्करा से होम करें तो वश में होय।

(१३)

॥ शत्रु वशीकरण मंत्र॥

ॐ हर त्रिपुर हर भवानी बाला राजा प्रजा मोहिनी सर्व शत्रु विध्वंसिनी मम चिन्तित फलं देहि देहि भुवनेश्वरी स्वाहा।

यह मन्त्र प्रतिवादी को अनुकूल करता है।

(१४)

॥ शत्रु वशीकरण मंत्र॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेश्वरी ज्वालामुखी जृंभिनी स्तंभिनी मोहिनी वशीकरणी परमन क्षोभिणी सर्व शत्रु निवारिणी ॐ औं क्रौं ह्रीं चाहि चाहि अक्षोभय अक्षोभय सर्वजनं अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

२५००० जपकर एक हजार बार होम करें। ब्राह्मण भोजन करायें। प्रयोग समय १०८ बार होम करें, सर्व विघ्न दूर होवे शत्रु वशी होवे।

(१५)

॥ राजावशीकरण मंत्र॥

ॐ नमो आदेस गुरु को जल बांधू, जलहर बांधू, आणी बांधूं, बार बार बांधूं, शिवपूत प्रचण्ड बांधू, रुठा राजा कांई करसी, आसण छोड़ मन्ने बैसण देसी,

आसन टीको चंदन ललाट, टीको काढि सिंह वर्ण कहाऊं और करुं सइया तले में बंध्यान गौरा पार्वती बंध्याने, मैं बंध्याया, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शनिवार से २१ दिन तक करें। पार्वतीजी का ध्यान कर १२१ बार नित्य जपें। फिर कुमकुम चंदन गोरोचन को गाय के दूध में घोलकर टीका लगाकर राजा के पास जायें सम्मान करे।

(१६)

॥ अथ राजवशीकरण मंत्र प्रयोगः॥

हथेली में हनुमंत बसे, भैरू बसे कपाल। नारसिंह की मोहिनी मोहा सब संसार। मोहन रे मोहंता वीर सब वीरन में तेरा सीर, सब की दृष्टि बांधि दे तोहि तेल सिंदूर चढाऊ, तेल सिंदूर कहां से आया कैलास पर्वत सेआया कौन लाया अंजनी का हनुमंत गौरी का गणेश लाया, काला गोरा तोतला तीने बसै कपाल। बिंदा तेल सिंदूर का दुश्मन गया पताल। दुहाई कामियां सिंदूर की हमें देख शीतल हो जाय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

रविवार को नृसिंह का पूजन कर १२१ बार मंत्र को पढें। इसी प्रकार सात रविवार तक करे तेल का दीपक जलाकर लोबान की धूप देवें। लड्डू चढ़ावें तो सिद्ध हो फिर सिंदूर को अभिमंत्रित करके मस्तक पर बिंदी लगा कर जायें तो राजा का क्रोध शांत हो, प्रसन्न हो।

(१७)

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

ऊंगाका पुष्प रविवार को लाकर मंत्र से अभिमंत्रित कर राजा को खिलायें तो वह वश में हो जायगा॥

(१८)

॥ राजवशीकरण मंत्र॥

हथेली तो हनुमान बसे भैंरु बसे कपार नारसिंह की मोहिनी मोहो सब संसार मोहन रे मोहन्ता वीर सब वीरन में तेरा सीर सबकी दृष्टि बांध दे मोहि, तेल सिन्दूर चढ़ाऊं तोहि तेल सिन्दूर कहां से आया कैलास पर्वत से आया कौन लाया अंजनी का हनुमन्त गौरी का गणेश काला गोरा तोतला तीनों बसे कपाल विन्दा तेल से दूर का दुश्मन गया पाताल दुहाई कामिया सिन्दूर की हमें देख सीतल होय मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

१४ रविवार हनुमान व नृसिंह का पूजन कर १२१ बार पाठ करे। फिर ७ रविवार तक दीपक तेल लोबान धूप एवं लड्डू रख कर १२१ बार मंत्र जप करे सिद्ध होय।

(१९)

॥ मंत्रिवशीकरण मंत्र प्रयोग॥

बिस्मिल्ला हदाना कुलू अल्ला हयगाना दिल है सख तुम हो दाना हमारे बीच फलाने को करो दिवाना। इति मंत्रः।

२१ बिनौले लेकर हर एक बिनौले पर इक्कीस मंत्र पढ़कर अग्नि मे होमे, इक्कीस दिन में सिद्ध हो। फिर ४१ बिनौले लेकर हर एक बिनौले पर ४१ मंत्र पढ़कर अर्द्ध रात्रि में होमे तो तीन ही दिन में राजा का कामदार वश हो जाता है।

(२०)

नगर वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भगवति पुर पुर वेशनि पुराधिपतये सर्वजगद् भयंकरि छीं भैं ऊं रां रां रं रीं क्लीं वालौ सः वंच कामवाण सर्व श्री समस्त नरनारीगणं मम वशमानय वशमानय स्वाहा।

पहले १०००० बार जप कर सिद्ध करें। फिर सभा में जाये तब २१ बार मंत्र पढ़कर अपने मुंह पर हाथ फेरे सर्वजन वशी होवे।

(२१)

॥ सर्व वशीकरण मन्त्र॥

ॐ नमो भगवते ईशानाय सोमभद्राय वशमानय स्वाहा।

ग्रहण काल में १०००० जप करें। रविपुष्य के दिन सफेद घुंघची की जड़ लावें, उसे पान में रखें मंत्र कर साध्या को खिलावें वशी होवे।

(२२)

॥ सर्वजन वशीकरण मन्त्र॥

ॐ नमः कामाय सर्वजन प्रियाय सर्वजन संमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्वजनस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

१० हजार जप करें। गुग्गल का धूप करें। प्रयोग के दिन १०८ बार जप करें।

(२३)

॥ सर्वलोक वशीकरण मन्त्र॥

ॐ नमो भगवति मातंगेश्वरि सर्वमुख रंजनि सर्वेषां महामाये मातंगे कुमारिके नन्द नन्द जिह्वे सर्वलोक वश्यंकरि स्वाहा।

शुभ दिन में १० हजार जप करें। सादा पान व गोरोचन को पीस कर ७ बार मंत्रित कर उसका टीका लगायें जिसके पास जाये वह वशी होवे। मंत्रित किये हुये गोरोचन को पान या भोजन में मिलाकर खिलावें तो भी वशी होवे।

****

(२४)

॥ सर्व वशीकरण मन्त्र ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके सर्वान् मम वश्यं कुरु कुरु सर्वान् कामान् मे साधय साधय स्वाहा।

ग्रहण में १० हजार जप कर मंत्र सिद्ध करें। प्रयोग समय इस मन्त्र से जल अभिमंत्रित कर जिसे पिलावें वह वशी होवे। २१ बार मंत्र कर उस जल से जिस व्यक्ति के नाम से अपना मुंह धोये उसके सामने जाने पर वह वशी होगा

(२५)

॥ वशीकरण मंत्र ॥

ॐ नमः श्वेत देवी आथमजा, आश्रगष्टा सुसिद्धा भजाहि, राजा मोहूं, प्रजा मोहूं, सभनगरी की जीव जन्तु मोहूं, चौबारे बैठी राणी मोहूं, हात लेइ दण्ड ई निगड करो पलंग, श्री सूर्यदेव तुम शरण तुहन तरण, तर बतर पल बियाई, जरी फुरु फुरु, श्वेत देवी ईश्वरो वाचा, पाताल बांधो, ज्या खांडे की धार बांधो, देखो शक्ति कामाक्षा देवी, वार कण्ठ, हिन हिन हि ॐ खण्ड खण्ड धारिणि स्वाहा।

(२६)

॥ सर्व वशीकरण ॥

मंत्र :- ॐ चण्डी महाचण्डी दुरिताप हारिणि सर्वशत्रु विनाशिनी खिलणी मोहणी स्तंभिनि उच्चाटिनी त्रैलोक्य स्वामिनी मायामोहं बंधिनी राजा प्रजा वशीकरणी सर्वजन वशीकरणी ऐं क्लीं ह्रीं ह्रीं स्वः ॐ फट् स्वाहा।

प्रातः काल बिना किसी से बाले २१ बार मंत्र पढकर हथेलियों पर फूंक देकर मुंह पर फेरे तो दिन अच्छा जाय। २१ बार मंत्र पढकर अपने थूंक से तिलक करे तो जिस पर प्रथम दृष्टि पडे वह वशी होवे।

(२७)

॥ वश्य गणपति मंत्र ॥

मंत्र :- ॐ नमो जगत गणेश कनक कुमार कामण माला जडि सेवन्ते छटसार कर मोदक आहार राजमोह प्रजामोह सभामोह नरनारी मोह पशु पक्षी मोह जीव जन्तु मोह कीट पतंग मोह नारी मोहिजे श्रीगणेशसरदार की दुहाई गुरु की शक्ति हमारी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

गणेश चतुर्थी का व्रत कर पूजन करे। प्रति मंत्र १-१ कर २१ लडडू चढ़ावे तो जिनको प्रसाद देवे वे सभी वशी होवे।

(२८)

॥ वशीकरण प्रयोग ॥

मंत्र :- ॐ नमः भगवती मातंगी सर्व ब्रतेश्वरी सर्व मनमोहिनी सर्वलोक वशकरणी सुख रंजिनी महामाये लघु-लघु वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

साधक को मंत्र सिद्धि के लिये कृष्णाष्टमी के दिन व्रत रखना चाहिये। दूसरे दिन साधक प्रातः वेला में सहदेई को नमस्कार कर, उखाड लावे। रात्रि में ईशान दिशा की ओर अपना मुख करके बैठे एवं भगवती मातंगी देवी का धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पंचोपचार पूजन कर इस मंत्र का १००८ बार जप करे। यह साधना नियमित १५ दिन तक करे। अवधि पूर्ण होने के पश्चात् सहदेई को बारीक पीस का चूर्ण बना लेवे एवं प्रयोग करने के समय २१ बार अभिमंत्रित करे। इस के प्रभाव से वन्ध्या स्त्री को संतान की प्राप्ति होती है। इसका तिलक लगाने से वशीकरण होता है।

(२९)

॥ सर्वजन वशीकरण मंत्र ॥

मंत्रः- मोहकम मोहकम कहां से आया, यह किसका संदेश लाया। किसको रोली किसको चन्दन, किसको फूल बतासा अंजन। काल को भेरूं जोगनि छोडूं। काल को मोडूं मुख को जोडूं। सत्य वचन आदेश गुरु गोरखनाथ का।

इस मंत्र को सिद्ध करने से पूर्व साधक अपने अनुकूल राशि की अंगुठी बनवा लेवे। इस मंत्र का जप करते समय साधक पीले वस्त्र पहने एवं दक्षिण दिशा की ओर मुख करे। जप करते समय साधक को अपना ध्यान अंगुठी पर केन्द्रित रखना चाहिए। ग्यारह दिन तक यह जप करे। मंत्र सिद्ध होने के बाद अंगुठी को पहन लेवे प्रयोग करते समय एक कागज लेकर उस पर जिसे वश में करना है उस साध्य पुरुष-स्त्री का नाम लिखे तत्पश्चात् उस अंगुठी को उस कागज पर स्थापित कर इस मंत्र का जप करना चाहिए। इससे उक्त साध्य पुरूष-स्त्री साधक के वश में हो जायेगे।

(३०)

ॐ भैरवो देवो! नगर मोहू, राजा मोहू, नगर नायक मोहू, देव मोहू। श्री भैरव की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधिः- इस मंत्र का जप श्मशान में जाकर करें। रात्रि में भैरव की पूजा बलि देकर पूजन करें ऐसा नित्य २१ दिन तक करें तो सभी वश में हो जावें।

(३१)

॥ नमक वशीकरण मंत्र ॥

ॐ लूण लूणी गुरु मीठानो सागर मानीजे राजलोक झूपडे रावले कोठरी अमुकान् दोष अमुकानु रोष तिम करे जिस लूण पाणी गलै तिम गल जाओ। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंत्र को नमक की २१ डली पर रविवार को जपें। फिर जिस व्यक्ति को वशी करना है उसकी सब्जी या शिकंजी

में नमक डाल कर पिला देवें। वशी होवे। **लवण दुर्गा** के नाम से इस मंत्र के मारण प्रयोग भी है। नमक जितनी देर में गले उतनी में देर शत्रु मर जावे। (अमुक के स्थान पर साध्य का नाम लेवें)

(३२)

॥ अथ वेश्यावशीकरण मंत्र प्रयोग ॥

मंत्र :- **ॐ द्राविणी स्वाहा। ॐ हामिले स्वाहा।** इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- ओंगा की कील सात अंगुली की सात मंत्रो से अभिमंत्रित करके वेश्या के घर में डाले तो वेश्या वश्य हो।

(३३)

॥ रुठे व्यक्ति को बुलाने का मंत्र ॥

ॐ नमो आली कालिका काकुडी का अमुका (अमुकी) आकर्षय २ बडे वेग आकर्षय जिण वाटै जाई सोई वाट खीलू ॐ श्रीं ह्रीं आकर्षय आकर्षय स्वाहा।

मधुत्रय (घी, शहद, शक्कर) से दस हजार आहुति देवे।

॥ स्त्री वशीकरण मंत्र ॥

(३४)

प्रेम कजला प्रेम सलाइ, प्रेम जोगन बन बन मोहन आइ। मुई मिट्टी कीजिए गुलाम, पड़ी बैठां करे सलाम। भगत कबीर भक्त चलाई, खेडदी खोड़दी पकड़ मँगाई। पर हाँ, जादू लिख्खा तावीझ, चरकयुं लावे, लाईला आनिस ईल्लाह आन मलीस। महम्मदुर्रसुल्लाह मे बाझ, फलानी शख्सानी को घडी पल आराम नवीस।

विधिः- नौचन्दी मङ्गलवार की रात्रि में कब्रिस्तान में जावें फिर किसी कब्र के पास जाकर वहाँ गुलाब के फूल रखें। उस कब्र के पास बैठकर इस मंत्र का १४१ बार जाप करे। इस प्रकार नित्य ४१ दिनों तक करे घबराये नहीं। इस प्रकार करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। फिर श्मशान में जावे और उस चिता के पास जावे जो ताजा जली हुई हो एवं उस पर पानी नहीं गिरा हो। उस चिता की राख को इस मंत्र से ४१ बार अभिमंत्रित करे । इस मंत्र में जहाँ पर फलानी शब्द आया है वहाँ पर जिस स्त्री-पुरूष को वश में करना हो उसका नाम लेना चाहिए। इस चिता की राख को जिसके नाम से अभिमंत्रित कर उसके सिर पर थोडीसी भी डाल देवें तो वह वश में हो जायेगा।

(३५)

ॐ नमो कैलाश पर्वत पर गौरा देई। जे मन माने चाहूँ, ते आवै धाई। मेरी भक्ति, गुरु गोरखनाथ की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधिः- जिस स्त्री को वश में करना हो उसकी तस्वीर रखें या मन में उसका ध्यान कर मंत्र जपे तो मनचाही स्त्री का वशीकरण होता है।

****

(३६)

ॐ नमो काली भैरव निशि राती काल आया आधा राती चलती कतार बंधे तू बावन बार पर नारौ से राखे गीर मन पकरि वाको लावे सोवति को जगाय लावे, बैठी को उठाय लावे, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधिः- होली या दिपावली के पहले दिन यह देखें कि लाल एरण्ड का वृक्ष कहाँ है? फिर दिपावली के दिन नग्न होकर लाल एरण्ड के वृक्ष को या डाल को इस मंत्र का जप करते हुए एक ही झटके में तोड लावें। फिर उसी रात्रि में उस डाल की भस्म बना लेवें। आवश्यकता होने पर इस भस्म को २१ बार उक्त मंत्र से अभिमंत्रित करे। फिर उस भस्म को बडी चतुराई से उस स्त्री के शिर पर डाल देवें जिसे वश में करना हो, इससे वह स्त्री मोहित होकर साधक के पास चली आवेगी।

(३७)

॥ शैतानी वशीकरण मंत्र॥

इन्ना आत्वेना शैताना, मेरी शकल बन अमुकी के पास आना। उसे मेरे पास लाना, न लावे तो, तेरी बहिन-भानजी पर तीन सौ तीन तलाक।

विधिः- इस मंत्र का जप शनिवार की रात्रि में करे। एकान्त कमरें में चारपाई लगावें, लोबान की धूप देवें दीपक जलावें। नग्न होकर चारपाई पर बैठकर हाथ में गुड लेवें। १०८ बार इस मंत्र का जप करे, फिर गुड को चारपाई के नीचे रखकर सो जावें। सुबह गुड को बच्चों बाँट देवें। ऐसा २१ दिनों तक करे तो साधक जिसे चाहे वश में कर सकता है। जहाँ अमुकी शब्द आया है वहाँ ज़िस स्त्री-पुरूष को वश में करना हो उसका नाम लेवें। जप समय व सोते समय में साध्य को नग्नावस्था में रहना आवयश्यक है।

॥ मोहन मन्त्र प्रयोगाः॥

॥ पान मोहनी॥

(१)

हाथ पसारुं मुख मलूं काची मछली खाऊं, आठ पहर जग मोह घर जाऊं।

शनिवार, रविवार से ७ शनिवार या रविवार तक १०८ बार नित्य करें। फिर इस मन्त्र से मंत्रित पान जिसे खिलावे वह वश में होगा।

(२)

कामरु देश कामाख्या देवी तहां बसे इस्माइल जोगी। अस्माइल जोगी के दोनों बीड़ा पहला बीड़ा आती जाती, दूजा बीड़ा दिखावे छाती, तीजा बीड़ा अंग लिपटाय फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

(३)

ॐ कामरु देस कामाख्या देवी तहां बसै इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी दिये चार पान। एक पान से राती माती, दूजे पान सों विरह संजोती, तीजे पान सो अङ्ग

मरोड़े, चोथे पान सो दोऊ कर जोड़े। चारों पान जो मेरे खाय मेरे पास से कहूं न जाये। ठाढ़े सुख न बैठे सुख, फिर फिर देखे मेरा मुख। कामरु कामाख्या की आज्ञा फिरै इन वचनों की सिद्धि पड़े। ॐ ठः ठः ठः ठः ठः ठः।

२१ दिन तक १०८ बार जपे रविवार को ४ पान लेकर ३-३ बार पढ़े और चारों पानों का एक बीड़ा बनाकर साध्या को खिला देवें। अगर बीड़ा बड़ा हो जाये तो ३ टुकड़े बिना अस्त्र के हाथ से करे, चौथा टुकड़ा साबुत पान का बनायें।

(४)

॥ पान मोहिनी मन्त्र॥

ॐ आदेश गुरु को, काऊंरु देश, कामाक्षा देवी, तहां बसे इस्माइल योगी, इस्माइल योगि ने दिये चारि पान, पहिले पान रति, दूसरे पान विरह अवगुति, तिसरे पान आलस मोर चौथे पान, दोउ कर जोर महेसरी, वर महेर पान, चण्डांकेरी पुरोहनि, जा देउए चारों पान, न उठते कूल, न बैठते बल, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

(५)

॥ पान मोहिनी उच्छिष्टा मन्त्र॥

ॐ आदेश गरु को, कांउरु देश का कामाक्षा देवी, तहां बैठे इस्माइल योगी, इस्माइल योगी ने दियो चारि पान, एक पान जो मेरा चबाती, दूजे पान शिरमो ज्योती, तीजे पान, आल स मोर, चौथे पान दोऊ कर जोर, चारिपान, जो मेरा खाए, मेरे पास ते कहुं न जाए, न बैठे, सुखनगडे, सुख फिरि फिरि देखे, मेरो मुख, कांउरु कामाक्षा देवी आज्ञा फुरे, इन वचन की सिद्धि फुरे, ॐ घटा घटा घटा घटा घटा स्वाहा।

यह मन्त्र भी पान मोहिनी मन्त्र है।

(६)

पान पढि खिलावे, त्रिया जोरि बिसरावे, क्षीरे त्रिया तोरा साथ नहि जाएवे नाग वाटे, नागिन फेन काढे, तोर मुख नहि जाएवो, रे नागा, दोहाई गुरु नानक शाही की, दोहाई डाकिन की।

इस मन्त्र से पान मंत्र कर खिलायें।

(७)

॥ पान वशीकरण मंत्र॥

हरे पान, हरियाले पान। चिकनी सुपारी, श्वेत खैर। दाहिने कर चूना, मोही लेय

पान। हाथ में दे हाथ, रस ले ये पेट। पेट रस ले श्री नरसिंह वीर। तेरी शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। दुहाई महादेव की।

(८)

श्रीराम नाम खेली अकन कबीरी, सुनिए नारी! बात हमारी। एक पान संग मंगाय, एक पान सेज सौं लावै। एक पान मुख बुलावै, हमको छोड़ और को देखें, तो तेरा कलेजा मुहम्मद वीर चक्खे।

(९)

कच्ची सुपारी, बँगला पान। कत्था-चूना, वीर मसान। जै तू खाए हमारे हाथ का पान, कटे कलेजा, तजे प्राण। दोहाई हो चमारिन की, छू।

विधिः- ग्रहण या होली, दिपावली की महानिशा में इस मंत्र को सिद्ध करे। जिस को वश में करना हो उसे एक पान का बीडा लेकर उसे इस मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर खिला देवें तो वह वश में हो जायेगा।

॥ लौंग मोहिनी ॥

(१)

ॐ सत्त नाम अदिस गुरु को लौंगा लौंगा मेरा भाई इनही लौंगा ने शक्ति चलाई पहली लौंग राती मती दूजी लौंग जीवन मती तीजी लौंग अन्न मरोड़े चौथी लौंग दोऊ कर जोड़े। चारों लौंग जो मेरी खाय अमुक के पास सों फलानी आ जाये मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। (अमुक अर्थात् स्वयं, फलानी अर्थात् साध्या स्त्री)

(२)

सत्य नाम आदेश गुरु को लौंग लौंग मेरा भाई इन्हीं लौंग ने शक्ति चलाई पहली लौंग राती माती दूजी लौंग जोबन माती तीजी लौंग अंग मरोडे चौथी लौंग दोऊ कर जोड़े चारों लौंग जो मेरी खाय फलाने के पास से फलाने कने आ जाय गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- शनिवार से प्रारंभ करके खिलावें तो हाजिर हो, सत्यम् ॥

(३)

ॐ आदेश गुरु को, लवङ्ग सराई लवङ्गा भैरव, तहां जो जाइ पढ़िके लवङ्ग, देउगा हाथ पाइ परै, डिठी लागे सात घर, तन पीठी लवङ्ग डीठी, चतौल लैनाभरि, तुरन्त परे लवङ्ग, भैरोप्रकट फुरै, मेरी भक्ति आदेश गुरु को अ क्षा भू टां हुं फट्।

भैरव प्रतिमा के पास मंत्र सिद्ध करे, लोबान गुगल धूप देवे। लौंग अभिमंत्रित कर सिद्ध करें। फिर प्रयोग समय २१ बार पढ़कर साध्या स्त्री को पान में लगाकर खिला देवें।

(४)

नमो जल की जोगिनी, पाताल का नाग जिस पर भेजूँ तिस के लाग। सोने न पावै, सुख से बैठन न पावै, फिर-फिर ताके मेरा मुख। जो बाँधी छूटे, तो बाबा नरसिंह की जटा टूटे।

विधिः- सर्वप्रथम इस मंत्र को सिद्ध कर लेवें। फिर चार लौंग एक पत्ते में लपेट कर, गुग्गलादि कि धूप देवें। तत्पश्चात् तालाब या नदी में डूबकी लगाते हुए इस मंत्र का २१ बार जाप करे। बाहर आकर पत्ते में से लौंग निकाल लेवे और गुग्गलादि की धूप देवें। फिर आवश्यकता होने पर लौंग को अभिमंत्रित कर जिस स्त्री को खिला देवें वहीं साध्य के वशीभूत हो जायेगी।

॥ फूल मोहिनी ॥

(१)

कामरु खण्ड कामाक्षा देवी जहां बसै इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी फूल चढ़ावे, एक फूल हंसे एक फूल विहंसे, एक फूल बैहा नारसिंह बसै, जो लेय इस फूल की बास सो उठ चले हमारे साथ, जो ना उठ चले हमारे साथ आधी रात कलेजा फटे। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

(२)

ॐ कामरु देश कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी की लगी फुलवारी, जे के फूल चुने लोना चमारिन, जो लेय इस फूल की बास उसकी जान हमारे पास, घर छोड़ आंगन छोड़ छोड़ै कुटुम्ब मोह लाज। दुहाई लोना चमारिन की।

(३)

फूल फूले फूलों की डाल वो फूल बीने लोना चमारिन, एक हंसे, एक फूल बैह्या नारसिंह के बसे। जो कोई ले फूल की बास वो आवे हमारे पास। डगर कुआँ पनघट बैठी हो उठा ला। सोवत हो तो जगा ला, ठाढ हो चला ला, मोह के मेरे पास न लाए तो सच्ची मोहिनी न कहाय। दोहाई लोना चमारिन की आन वीर मसान की।

इस मन्त्र से ७ बार मंत्र कर जिस स्त्री पर फूल मार दे या सुंघा दे वह वशी होवे।

प्रयोग सिद्ध करते समय १ नारेल, ५ छुआरे, लोना चमारिन के नाम से धरें फिर प्रयोग करें।

(४)

ॐ नमो आदेश गुरु को एक फूल, फूल भर दोना, चौसठ जोगिनी ने मिल किया टोना, फूल फूल वह फूल न जानी, हनुमन्त वीर घेर घेर दे आनी, जो सूंघे

इस फूल की बास उसका जी प्राण रहे हमारे पास सूती हो तो जगाइ लाव। बैठी हो तो उठाइ लाव, और देखे जरे बरे, मोहे देख मेरे पायन परे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईष्वरो वाचा, वाचा वाची से टरे कुंभी नरक में परे।

दीपक, पुष्पादि हनुमानजी के चढ़ाकर शनिवार से २१ दिन तक १४४ बार नित्य करें। फिर प्रयोग करें।

(५)

ॐ कामरु देस कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी ने बोई बारी, फूल उतारे लोना चमारी। एक फूल हंसे, दूजा फूल बिगसे, तीजे फूल में छोटा बड़ा नाहरसिंह बसे, जो सूंघे इस फूल की बास सो आवे हमारे पास और के पास जाय हियो काट मर जाय, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शुद्ध होकर रविवार से २१ दिन तक नित्य माला करें। लौंग, सुपारी, पान, फूल, मिठाई देवी के अर्पण करें। मन्त्र बोलते हुये १०६ फूल को घी में भिगो कर होम करें। उत्तरार्ध में ब्राह्मण भोजन करायें। प्रयोग समय फूल को ७ बार अभिमंत्रित करें।

(६)

ॐ नमो आदेश गुरु को कामरु देश कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी। जिसने लगाई फुलवारी, फूल तोड़े कोना, हमवारी, एक फूल हंसे, दूजा फूल मुस्कुराय, तीसरे फूल में छोटे बड़े नारसिंह आए। जो सूंघे इस फूल की बास चले आवो हमारे पास, दुश्मन की फटे छाती। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविपुष्य योग में मंत्र प्रारंभ करें। घृत मिश्रित लवङ्ग, पान, सुपारी, पुष्प एवं नैवेद्य से १०८ बार आहुति देवें। २१ दिन तक नित्य १०८ बार जप करें। मोगरे के फूल पर यह प्रयोग शीघ्र कार्य करता है। ७ बार मंत्र कर साध्य को फूल सुंघावे या पुष्प उस पर फेंक देवे।

(७)

ॐ नमो फूल फूल की बारी बारी, चौसठि नारि दरबार यारी, नारसिंह शक्ति तुम्हारी, यो फूल सूंघै सो दास हमारी, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधिः- इस मंत्र से फूल को अभिमंत्रित कर साध्या को देवें।

(८)

ॐ मोर मोहनी मोर मोहनी, रानी मोहै, राजा मोहै, ऊपर के इन्द्रौ मोहै, तरी के वासुकि नाग मोहै, मोर मोहनी, मोहिजा ओकर मोहनी, उडसि जा आधी नदिया,

रङ्ग बहै आधी नदिया तङ्ग बहै, जे लेय फूलन का वास ते आवे मेरे पास, दोहाई ईश्वर महादेव की।

इस मन्त्र को दीपावली की रात सिद्ध करें। फिर फूल अभिमंत्रित कर साध्या को देवें।

(९)

ॐ मूठीमाता गूठीरानी, गूठी लगावे आग, अमुका के चटक लगाव, बेधड़क कलह मचावें, मुख न बोले, सुख न सोवे, कहत मंत्र उठाय मारयो उरझ, ज्यों काचा सूत की आटी उरझ, अब देखूं नारसिंह वीर तेरे मन्त्र की शक्ति शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

यह प्रयोग लाल कनेर पर किया जाता है। शनिवार के दिन लाल कनेर की डाली के लाल रंग का डोरा बांधकर उसे न्योता देवें। रविवार सुबह उस डाली को तोड़ लावें। रात्रि को दीपक जलाकर १२१ बार पाठ नित्य २१ दिन तक करें। प्रयोग करते समय २१ बार मन्त्र पढकर लाल कनेर जिसे देवे वह वशी होय।

(१०)

ॐ कामरु देस कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी ने लगाई बारी, फूल चुने लोना चमारी, फूल राता फूल माता फूल हांसा फूल बिगसा, तहां बसे चम्पा का पेड़, चंपा के पेड़ में रहे कालभैरुं भूतप्रेत मरे मसान पै आवे, किसके काम ये आवे, टोना टामन के काम, भेजूं काल भैरुं को लावे मुशके बा ंध, बैठी हो तो वेगो लावे, सोती हो तो उठा लाव, वह सोवे राजा के महलों, प्रजा के महलों मुझ से होनी, राणी फूल दूं उसी के हाथ, वह उठ लागे मेरे साथ, हमको छांडि पर घर जाय, छाती फार वहीं मर जाय, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, वाचा चूके उमा हसूके, लोना चमारी बहरे जोगी के कुण्ड में पड़े, वाचा छोड़ कुवाचा जाय तो नरक में पड़े।

लाल कनेर फूल की विधि की तरह चम्पा फूल की डाली गुग्गल धूप देकर लायें। काले भैरूं का पूजन करें। गुगल धूप देवे। २१ दिन तक पाठ करें। भोग में शराब, तैल, गुड़ व उड़द के बड़े चढ़ावें।

(११)

फूलर से फूल बसै, अदूल फूल में, नरसिंह बसे, वाही फूल, फूल कचनार छोड़ह तिरिया माय बाप के चल हमारा सङ्ग दोहाई महत मानी कै।

अदूल (गुडहल) फूल की कली पर १२ बार मंत्र पढ़कर जिसे देवे वह वशी होवे।

(१२)

ॐ कामरू देश। तेकर फूल बिनै लोना चमारिन। यो वास फूल की आवै वास, तो अमुकी आवे हमारे पास। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंत्र को सिद्ध करे। फूल लेकर उसे इस मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर जिसे सुंघा देवें वहीं वश में हो। अमुकी की जगह जिस स्त्री को वश में करना हो उसका नाम लेवें।

(१३)

आ चन्दा की चाँदनी, होकर उन्मादिनी। सतगुरु की है पुकार। मान-मान मानिनी। तुझे कामाक्षा की आन, छोड़ हठः चीर घटा-पट। आ जा नदी के किनार, गा ले प्रीति रागिनी। ॐ नमः कामाक्षाय अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा

विधिः- एकान्त स्थान में नदी के किनारे पूर्णिमा की रात्रि को साधक पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठे। १०८ बार यह मंत्र पढ़कर एक एक फूल १०८ बार नदी में डाल देवें। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जावेगा। आवश्यकता होने पर किसी भी प्रकार से स्त्री को फूल अथवा इत्रादि सुंगधित द्रव्यों को अभिमंत्रित कर स्त्री को देवें तो स्त्री मोहित होकर साध्य के वश में हो जायेगी।

॥ सुपारी मोहिनी ॥

(१)

मन्त्र - **ॐ नमो देव हराय ठः ठः स्वाहा॥**

सूर्य ग्रहण समय या रविपुष्य के दिन तालाब में कमर तक के पानी में खड़े होकर २१ दिन तक यह मंत्र १०८ बार नित्य पढ़ें। शुद्ध ७ सुपारी लेकर उनकी धूप दीपादि से पूजा, पश्चात् २१ बार मंत्र नित्य उन पर पढ़ें। प्रयोग समय १०८ बार पढ़कर उनमें से १ सुपारी को जिसे खिलावें वह आपके अनुकूल होगा।

(२)

खरी सुपारी टामनगारी राजा प्रजा खरी पियारी मंत्र पढ़ लगाऊं तो रही या कलेजा लावे तोड़ जीवत चाटे पगथली धूये, सेवे मसान या शब्द की मारी न लावै तो जती हनुमन्त की आज्ञा न मानै, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि पूर्व मंत्र की तरह करें। तालाब में जप करने की आवश्यकता नहीं है। गुगल धूप करें, दीप जलावें।

(३)

ॐ नमः उर्वशी सुपारी काम निगारी, शुचि राजा प्रजा रहे सब पियारी, अमुकी को अमुक को मन्त्र पढ़ हृदय लगाऊं उठता बैठता निज दास दासी बनाऊं, मरे पर उसकी जान जाए मशान, वश न होवे तो हनुमान की आन।

साधक अमुक की जगह अपना नाम पढें। अमुकी के स्थान पर साध्या का नाम पढ़ें। रविपुष्य या सूर्यग्रहण में एक हजार बार जपें, फिर ७ सुपारियां लेकर उनकी पूजा करें, १०८ बार मंत्र पढ़ें। जब प्रयोग करना हो एक सुपारी पर २१ बार मंत्र पढ़ें।

****

(४)

पीर मैं नाथ पीर तू नाथ जिसे खिलाऊं तिसे बस करना फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

सूर्यग्रहण या रविपुष्य के दिन नाभि पर्यन्त जल में खड़े होकर २१८ बार जप करें। फिर सुपारी को ७ बार अभिमंत्रित कर निगल जायें। (सुपारी छोटी लेवें) दूसरे दिन पाखाने जाते समय सुपारी को निकाल शुद्ध जल व गंगाजल से धोयें। ७ बार अभिमंत्रित कर साध्य व्यक्ति को खिलायें वशी होय।

(५)

ॐ मोहिनी मोहिनी कहाँ चली, हरखु राई कां मचली। फलानी के पास चली। औरों के देखे जल बले, मुझे देखें पाँव पड़े। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। बे माता की आज्ञा।

विधिः- एकान्त स्थान में इस मंत्र का जप करें। साधक को ऊनी आसन पर बैठना चाहिए एवं मूंगे की माला से जप करे। किसी भी कृष्ण पक्ष में रविवार के दिन उपवास करें। रात्रि में एकान्त स्थान में जाने से पूर्व साधक को गुड़ का शर्बत बनाकर पिना चाहिए। वृक्ष के नीचे बैठकर इस मंत्र की १० माला जप करें। लकड़ी के पाटे पर एक एक पान का बीड़ा, मिठाई, एक सुपारी, ७ इलायची, ७ लौंग भोग लगावें। एवं १० माला जप करें। जप पूर्ण होने पर मिठाई एवं पान स्वयं ग्रहण करें व लौंग, इलायची व सुपारी लेकर आ जावें। उनका चूर्ण बनाकर फिर २१ बार चूर्ण को अभिमंत्रित कर, स्त्री को खिलावें तो वशीभूत होवें। मंत्र में जहाँ फलानी शब्द आया है वहाँ पर उस स्त्री का नाम लेना चाहिए जिसे वश में करना हो।

॥ इलायची मोहिनी ॥

(१)

ॐ नमो काला कलुवा काली रात, तिसकी पुतली मांजी रात। काला कलुवा घाट बाट, सोती को जगा लाव, बैठी का उठा लाव, खडी को चला लाव, वेगी घर या लाव। मोहनी जोहनी चल राजा की ठांव, अमुकी के तन में चटपटी लगाव। जीया ले तोड़ जो कोई खाय हमारी इलायची, कभी न छोड़े हमारा साथ। घर तजे, बाहर को तजे, घर के साईं को तजे। हमें तज और कने जाय तो छाटी फाट तुरन्त मर जाय। सत्य गुरु, आदेश गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। ईश्वर महादेव का वाचा। वाचा से टरे तो कुंभी नरक में पड़े।

अस्य विधानम्- २१ दिन में सिद्ध कर लें पीछे इलायची अभिमंत्रित करके खिलावे तो वश में होवें सत्य।

(२)

अमुक गुरु गुफतार, जाग जाग अल्लाउद्दीन शैतान। सात बार अमुक के जिया आन। जो न माने, तो तेरी अम्मा की तलाक, हमशीरा की तलाक।

विधिः- इस मंत्र को सिद्ध कर, सुपारी को इस मंत्र से अभिमंत्रित कर जिस साध्या को खिला देवे वही वश में हो।

॥ गुड़ मोहिनी ॥

(१)

ॐ नमो आदेस गुरु को या गुड़ राती या गुड़माती या गुड़ आवै पायां पड़ती, जो मांगू श्यो जन पाऊं सूती तिरिया जगायर ल्याऊं, चलिरे आगिया बेताल, फलानी के पेट चलावे झाल, रात्रि को चैन न दिन को सुख फिर फिर जोवे हमारा मुख, जै मकड़ी मकड़ी सैट ले, सीस फाट दो टूक हो पड़ै, काला कलुआ काली रात कलुआ चाला आधी रात चाल चाल रे काला कलुआ सोधन चाटे हमारा तलुआ आक के पान बसे कवारी, धन जोवन सो खरी पियारी, रेतरगत गुड़ करे गिरास, अमुकी आवे फलाना पास, हनुवन्त जती की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

दो तोला गुड़ लेवे उसमें अपनी अनामिका अंगुली का रक्त मिला दो। उसे २१ बार पढ़कर साध्या स्त्री को खिलावे या उसका शरबत बनाकर पिला देवे। यदि उस गुड़ को कुये में ड़ाल देवे और साध्या उस कुए का पानी पिये तो भी वशी होय।

प्रयोग से पहले १००० जप शनिवार से प्रारंभ कर सिद्ध कर लेवें।

(२)

ॐ नमो आदेश गुरु को, गुगल की धूप को धूवां धार, देखूं पलमा तेरी शक्ति, तेरस रात्रि को टूटा तारा, ऐसा टूटे भैंरों बाबा का मन गाये गुड़ मंत्र पढ़ उसको दे, घर में चक्क न बाहर चक्क, फिर फिर देखे मेरा मुख, जीव न सेवे, जीव को मूवे सेवे मसाण, हम से आकुल व्याकुल हो तों जती हनुमन्त की आन, हमें छोड़ और के पास जाय पेडू काट तुरत मर जाय, सत्यनाम आदेस गुरु को।

शनिवार से आरंभ कर ७ शनिवार तक करें। १२५ बार नित्य जप करें। भोग में शराब लपसी कलेजी धरे तो शीघ्र मंत्र सिद्ध होय।

॥ मिठाई मोहिनी ॥

(१)

जल मोहूं थल मोहूं जंगल की हिरणी मोहूं बाट चलत बटोही मोहूं, कचेहरी बैठा राजा मोहूं, पीढ़ी बैठी रानी मोहूं, मोहनी मेरा नाम, मोहूं जग संसार, तरा तरीला तोतला तीनों बसे कपाल दस्तक दे दी मात के दुश्मन करुं पामाल, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

शनिवार से प्रारंभ कर ११ दिन नित्य १४४ बार जपें। गुगल से होम करें, दीपक जलायें, फल मिठाई बतासे चढ़ावें, २१ बार मंत्र कर मिठाई खिलावें। साध्य व्यक्ति वशी होय।

(२)

मोहन मोहनी दोऊ बहनी, दोनों पनिया जाए, इन्द्र मोहे इन्द्रासन मोहे, बैठ पाताल वासुकी कन्या मोहे, हाथ धरे हाथ जस पावे, पेटे जाए तो सब ही रस खावे, मोह के मेरे पास न आवे लाए तो राजा वासुकि की कन्या न कहाए, मेरी आन गुरु की आन, ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।

॥ अञ्जन मोहिनी ॥

(१)

ॐ नमः पदमनी अंजन मेरा नाम। इस नगरी जाय मोहूं सब, गांव मोहूं, राज करत राजा मोहूं, फर्स में बैठा पञ्च मोहूं, पनघट की पनिहारी मोहूं, इस नगरी में छत्तीस पवनियां मोहूं, जो ही कोई मार मार करता आवे, नारसिंह वाम पद अगुंष्ठ तट धरे और घर लावे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।

नृसिंह भगवान की पूजा करें। यदि प्रतिमा नहीं हो तो एक कलश पर नारियल रख कर आवाहन करे। गुगल, पान, सुपारी, शर्करा, घृत मिश्रित हव्य से ७ दिन तक १०८ बार नित्य होम करें।

(२)

॥ सभामोहिनी (अंजन) मंत्र ॥

कालूं मुख धोये करूं सलाम मेरी आंखों में सुरमा बसै जो देखै सो पायन परै दुहाई गौ सूल आदम दस्तगीर की छ। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- सवा किलो गेहूं पर मंत्र पढ़े, फिर आटा पिसाकर घृत, शक्कर, मिलाकर हलुवा तैयार करें। गौसुल आदम दस्तगीर की नियाज दिलावें। फिर उस हलवे को आप खायें, सिद्ध हो। पीछे जब दरबार में जाने का काम पड़े सुरमे को अभिमंत्रित करके नेत्रों में लगाकर जायें तो सारी सभा वश में हो हांजी हांजी करे।

(३)

॥ अथ नग्नमोहिनी (अंजन) मंत्र प्रयोगः ॥

पद्मनी अंजन मेरा नाम ईस नगरी मे पैस के मोहे सगरा गाम राज करंता राजा मोहूं फरस बैठा पंच मोहूं पनघट की पनिहार मोहूं इस नगरी में पसके छत्तीस पवना मोहूं जो कोई मार मार करता आवे ताहि नारसिंह बांये पग के अगुंठा तरे घरे घरे लावे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

अस्य विधानम्- रविवार, शनिवार की रात्रि को धूप, दीप, चन्दन, पुष्प, रोली, चावल, गूगल, पान, सुपारी, लौंग से नारसिंह पूजन करें, और एक सौ आठ बार मंत्र का जप करें, प्रत्येक मंत्र से पान, सुपारी, शक्कर, घृत, गूगल का हवन करें, सिद्ध हो। फिर नादन वन कपासकी रुई में ओंगा की जड़ लपेटकर बत्ती बनावें और तेल के साथ काजल पाड़े। उस काजल को सात बार अभिमंत्रित करके नेत्रों में लगावे तो सम्पूर्ण स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध, तरुण, वश्य हो, जिस

ग्राम में जायें सब ग्रामवासी सेवा में रहें, पंडितों के लिये श्रेष्ठ हैं ॥

॥ प्रयोग विधियाँ ॥

(१) चन्दन का बुरादा जीरे का चूर्ण मिलाकर रुई की बत्ती बनायें उसका अंजन बनायें। मंत्र का स्मरण कर अंजन लगायें तो सभी को सम्मोहित करें।

(२) शुद्ध रुई की बत्ती में उंगा की जड़ को लपेट काजल पाड़ें। काजल वाला बर्तन अपने पास रखें। अंजन को लगायें या काजल वाले बरतन में जल भरकर साध्या के नाम से स्वयं पीयें तो उसे संमोहित करें।

॥ तैल मोहिनी ॥

तैल मोहिनी कई प्रकार की होती है। जो विशिष्ट साधकों को ही ज्ञात है। अगर मंत्रित तेल विशेष जागृत है तो तेल शीशी में चक्कर लगाने लग जायेगा। इसी तरह का प्रयोग किसी साधु ने भानुमती रानी पर किया था। उसने भेजे हुये इस तैल को पहिचान लिया तो रानी ने उसे शिला पर दे मारा। वह शिला उड़कर साधु पर जा पड़ी। इससे महसूस होता है कि पहले किस तरह के विशिष्ट साधक व विशिष्ट मंत्र प्रचलित थे। कहीं चमेली का तैल प्रयोग करते है तो कोई कच्ची घाणी का पहला एक धारिया तेल (पहली धार का तैल)।

(१)

ॐ नमो मन मोहनी, रानी चली सैर को मस्तक धर तेल का दीप, स्थल मोहूं, सब जगत् मोहूं, और मोहूं मोहिनी जो शैया बैठी गौहरे दरबार, गौरी पार्वती की दुहाई, लोना चमारी की दुहाई फिरे नहीं तो हनुमन्त की आन फिरे, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति चलो मंत्र ईश्वरी वाचा।

दीपावली की रात या उससे पहली रात चमेली का तैल लेकर नदी या सागर तट जावें। अपनी दृष्टि तेल पर रखते हुये २२० बार जप कर तेल पर फूंके फिर घर आ जाये। किसी अधिकारी से मिलते समय या सभा में प्रवचन देते समय इस तैल का टीका लगावें तो सभी वशी होय।

(२)

मोहना राणी, मोहना राणी चली सैर को, सिर पर धरे तेल की दोहनी, जल मोहूं थल मोहूं, मोहूं सब संसार, मोहना राणी पलंग चढ़ बैठी, मोह रहा दरबार, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति दुहाई गौरा पारवती की, दुहाई बजरंग बली की।

इत्र, मिठाई, दीपक चढ़ावें लोबान धूप करें। दीपावली रात को २१ माला जपें। फिर प्रयोग समय तेल का टीका मंत्र पढकर लगावें। दीपावली को चमेली का तैल मंत्र कर तैयार करें।

॥ इतर मोहिनी ॥

(१)

अलहम्दोगवानीवो मेरे पर हो दीवानी जो न हो दीवानी तो सैयद अब्दुलं जलानी चुट्टा पकड़ करो दीवानी।

बढ़िया इत्र लगाकर शीशी पर १०८ बार पढ़ें। फिर १००० पढ़कर पुनः इत्तर की शीशी पर ढक्कन खोल कर १० पढ़ें। बाद में बन्द कर दें। २१ दिन करने पर इत्र यदि चक्कर लगरकर घूमता दिखे तो मंत्र सिद्ध हो। यह इत्र जिसको सुंघावें वह वशी होवे।

(२)

ॐ नमो मोहना रानी पलँग चढ़ी बैठी, मोह रहा दरबार। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। दुहाई लोना चमारी की, दुहाई गौरा पार्वती की। दुहाई बजरंग बली की।

विधिः- दिपावली की रात्रि में किसी भी एक मंत्र २१ माला जप करे। फिर इस मंत्र की लोबान के साथ मंत्रोच्चारण करते हुए १०८ आहुतियाँ देवें। किसी को माहित करने के लिये इत्र अथवा तेल को २१ बार अभिमंत्रित करते हुए शरीर पर लगावें। इस प्रयोग से साधक देखने वालों को मोहित कर लेता है।

॥ सिन्दूर मोहिनी ॥

ऐसा सेन्दुर बीज विसौध, सेन्दूर की आवै बास, चलै हमारे पास, घर छौड़े, बखरी छौड़े, पिया परेका पलंगा छोड़ै, आन का देखि जर मरै। मोरे अङ्ग कइति चितवै, मोहि लावै नारसिंह, दोहाई नारसिंह कै।

विधिः- सिन्दूर साध्या के वस्त्र पर लगावे। टीका लगाकर सभा में जाये सब वशी होय।

॥ तिलक मोहिनी मंत्र ॥

(१)

ॐ नमो आदेश गुरु को। राजा मोहूँ, प्रजा मोहूँ, मोहूँ पण्डित बनिया। हनुमन्त नामे जगत मोहूँ, तो रामचन्द्र मणि मशिया। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। हृदय बिराजी आज। हूँ निर्बल शिष्य तुम्हारो, सफल बनाओ काज।

विधिः- इस मंत्र की प्रतिदिन १० माला जप करें। श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करते हुए पंचोपचार पूजन करे इस प्रकार २१ दिनों तक करते रहने से इस मंत्र की सिद्धि होती है। जब आवश्यकता हो तब चौराहे की मिट्टी को इस मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक लगावे तो जो साधक को देखे वही वश में होगा।

(२)

ॐ नमो आदेश गुरु को। राजा मोहूँ, परजा मोहूँ। मोहूँ ब्राह्मण बणिया। हनुमन्त रूप में जगत् मोहूँ, जो रामचन्द्र पर मणिया। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो

मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधिः- जप काल में श्रीरामचन्द्र जी का पूजन कर, धूप दीपादि व नैवेद्य चढ़ावें। इस मंत्र का २१ दिनों तक नित्य दस माला जप करे। फिर प्रतिदिन १ माला जप करें। ऐसा करने से मंत्र की सिद्धी होती है। आवश्यकता होने पर चौराहे मिट्टी उठा लावें उसे इस मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर मस्तक पर तिलक या टीका लगावें तो सभी वश में होवे।

(३)

ॐ नमो मन मोहिनी रानी सिंहासन बैठी मोह रही दरबार। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति दुहाई गौरा पार्वती, बजरंग बली की आन। नहीं तो लोना चमारिन की आन लगे।

चमेली के तेल को इस मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक लगाने से सभी मोहित हो जाते है पहले मंत्र को सिद्ध कर लेवें।

॥ सरसों मोहिनी ॥

कामरु देश कामाक्षा देवी जहां बसे इस्माइल जोगी, चल रे सरसों कामरु जाई, जहां बैठी बुढिया छुतारी माई, भेजूं सरसों उसके खप्पर, कर रे सरसों अमुकी को वश कर, न करे तो गुरु गोरखनाथ बङ्गालखण्ड कामरु कामाक्षा देवी, इस्माइल योगी लजाए।

प्रयोग सिद्ध करके २१ बार सरसों अभिमंत्रित कर मारे वशी होय।

॥ लवण मोहिनी ॥

ॐ नमो हय लूण सूहावय लूण अईसा लूण मसाणां हमां पाया अमुकादिद अमुक खाय तरुवा चाटत जन्म जाय। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- इस मंत्र से लवण (नमक) को २१ बार अभिमंत्रित कर खिलावे तो वश हो। अमुकादिद के स्थान पर स्वयं का व अमुक के स्थान पर स्त्री का नाम लेवें।

॥ धूल मोहिनी ॥

(१)

धूल धूल तू धूल की रानी, जग मोहन सुन मेरी बानी, जल से धुला आन पढ़ूं तब पारवती के वरदान, धूलि पढ दूं, अमुकी अङ्ग आकर रहें, फलाने सङ्ग, मेरी आन, मेरे गुरु की आन, ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।

विधिः- साध्या के बाँये पैर की मिट्टी पर प्रयोग करे।

(२)

सोहनी मोहनी दोऊ बहनी, अगली छोड़ पिछली को धावे, ठग मोहे ठाकुर मोहे, मोहे पूरे पनिहार, राजा मोहे दरबार मोहे, पांय पड़ी जञ्जीर यह त्रिया हमें मोहे, दुहाई वीर मसान की, आन कामरु कामाक्षा देवी की।

साध्या के बायें पैर की मिट्टी व श्मशान की धूल को ७ बार मंत्रकर साध्या के शिर पर फेंके तो वशी होय।

(३)

काला कलुवा चौसठ वीर ताल भागी तोर जहां को भेजूं वही को जाये मांस-मज्जा को शब्द बन जाये अपना मारा, आप दिखावे चलत बाण मारूं उलट मूठ मारुं मार मार कलुवा तेरी आस चार चौमुखा दीया मार बादी की छाती इतना काम मेरा न करे तो तुझे माता का दूध पिया हराम।

इस मंत्र का प्रयोग स्त्री को वश में करने के लिये किया जाता है। मंत्र सिद्धि के बाद जिस स्त्री को वशीभूत करना हो उस स्त्री की मंगलवार के दिन बाँये पैर की मिट्टी ले आवे, उस मिट्टी को २१ बार अभिमंत्रित कर उस स्त्री के सिर पर डाल देवें, तो इसके प्रभाव से वह स्त्री साधक की तरफ आकर्षित एवं वश में रहेगी।

(४)

धूली धूली विकट चंदनी पट मारूं धूली, फिरे दीवानी, घर तजे, बाहर तजे, ठाडो भरतार तजे, देवी दिवानी एक सठी कलुवा न तू नारहसिंह वीर अमुकी ने उठाय ल्याव, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शनिवार के दिन जो स्त्री मरी हो उसके पैर तले के अंगारे को लेकर एक कोरी हांडी में रखकर ७ बार मंत्र पढ़े, वह हांडी जिस स्त्री को स्पर्श करा देवे वह वशी होवे।

(५)

धूल-धूल- तू धूल की रानी, जगमोहन सुन मोर बानी। जल से धुला आन पढ़ूँ, तब पार्वती वरदान धूलि पड़ि। दू अमुकी अङ्ग, जो जलती आती उमङ्ग, उसका मन लावे निकाल, हमारी वश्यता करे स्वीकार।

(६)

ॐ नमो आदेश गुरु का, धूली -धूली विकट चाँदनी पर मारु धूली। फिर दिवाना महल तजे, घर-दुआर तजे, ठाठा भरतार तजे। देवी-दिवानी एक सठी फलवान, तू नरसिंह वीर! अमुकी को उठाय ला। फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा॥

विधिः- इस मंत्र का जाप शनिवार से प्रारम्भ कर नित्य २१ दिन तक करें। तत्पश्चात् जिस स्त्री (युवती) की मृत्यु शनिवार को हुई हो, शनिवार को हि उसका दाह कर्म हुआ हो, उस चिता के पैर की ओर का अंगार अर्थात् कोयला लेकर आवें पीछे मुडकर नहीं देखें। कोयले का चूर्ण बना लेवें उसमें चौराहे की थोडी सी मिट्टी मिलावें फिर उक्त

मंत्र से उसे २१ बार अभिमंत्रित कर जिस स्त्री के सिर पर डाल देवें वही वशीभूत हो जाती है। मंत्र में जहां पर फलानी शब्द आया है वहां जिस स्त्री को वश में करना हो उसका नाम लेना चाहिए।

(७)

ॐ धूली धूलेश्वरी, धूली माता परमेश्वरी। जहाँ लगाँव मोर बदन लागे। मोर ऊपर जान वारे। न लागे तो रामचन्द्र की आन।

विधिः- ग्रहणादि काल में इस मंत्र को सिद्ध कर लेवें। फिर शनिवार के दिन जिस स्त्री को वश में करना हो उस स्त्री के बाँयें पाँव की मिट्टी यदि पुरूष है तो दाहिने पाँव की मिट्टी ले आवें। रविवार के दिन शाम को चौराहे की मिट्टी लेकर आवें। उनको आपस में मिलाकर गुग्गलादि की धूप देकर इस मंत्र से अभिमंत्रित करें। फिर उस स्त्री-पुरूष के सिर पर उस धूल को डाल देवें इससे वह साध्य के वशीभूत हो जायेगा।

॥ अथ शत्रुमोहिनी मंत्र प्रयोगाः ॥

(१)

मंत्रो यथा- **ॐ नमो उच्छिष्ट चांडालिनि कंकाल मालाधारिणि साधु साधु त्रैलोक्य मोहिनि प्रकांडक्षोभिणि शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुं फट् स्वाहा।** इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- यह मंत्र मातंगी क्षोभिणी देवी का है। इसका जप तथा हवन करने से शत्रुओं को क्षोभ होता है। अगर वट और शमीवृक्ष की समिध घृत सहित नित्य एक हजार हवन करें तो स्त्री वशीभूत होती है इसमें कुछ संदेह नहीं॥

(२)

ॐ अघोरे अघोरे कर्म कराले हुँ फट् स्वाहा। नेत्रमाया वौषट्। ॐ फट् स्वाहा। अस्त्राय फट् स्वाहा।

रविवार या सोमवार के दिन शत्रु के बाँये पैर की मिट्टी लेकर आवे फिर उस मिट्टी को कागज में रखकर पुड़िया बना लेवे। पुडिया पर एक काला कपड़ा डाल देवें और उस पर शत्रु का नाम लिख देवे। नाम को अपने आँखो के सामने रखकर व्याघ्रचर्म पर बैठकर स्फटिक कि माला से इस मंत्र का जाप करें तो शत्रु अपनी दुश्मनी को भुलकर मित्र बना जाता है। वह आपकी बात का समर्थन करेगा आपके विरुद्ध नही बोल सकेगा।

(३)

ॐ आदि काली युगादि काली, ब्रह्मा की बेटी इन्द्र की साली, साहस की काली माथे दी जटा बावरी वाली, चलाई चलै न बोलाई आवे। त्या कारण गुरु गोरख भावै। मोहनमुद्रा वशीकरु। मोहूं सगरो गांउ, मोहू सगरी जाति, बांवे हाथ खड्ग, दाहिने हाथ खपरिया, नगर में पैठत बोरो सब मंत्री। मांस की डली गुगल की बास। जब सुमिरो तब कालिका खड़ी मेरे पास। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

॥ अन्य मोहन मन्त्रा:॥

(१)

मोहनी जोहनी दोनों बहिन, चलगे मोहनी कबरु के देश चलत में, हाट में, वाट में मोहै कुवना पनिहारिन, मोहै, सिंहासन चढि कै राजा, मोहै डोला चढिकै रानी, मोहै से मोहन मोहनी, अमुक को अमुकी के वशकर (या अमुकी को अमुक के वशकर) मोहनी रोम रोम भीजि जाय, दोहाई ईश्वर महादेव की, दोहाई गौरा पार्वती की दोहाई, नैना जोगिन की, दोहाई सतगुरु के वन्दी पाउ।

(२)

ॐ भैरवो देवो, नगर मोहु, राजा मोहु, नगर नायक मोहु, देव मोहु, श्री भैरव की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

(३)

ॐ आदेश गुरु को, संमोह भैरव मोहनी वेश हाथ पाश सिद्ध सिद्ध को आदेश, राजा मोहु, प्रजा मोहु, ब्राह्मण वाणियों चारों खूंट, पृथ्वी मोहु, समीप संमोह, भैरव जानिए मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

(४)

ॐ दक्षिण देश वीर हनुमन्त चला, एक जटा आकाश, एक जटा पाताल, बाऐं हाथ गदा दाहिने हाथ छड़ी, गर्जन्ता चलै, धीरन्ता चलै, नदी नाला सोखन्ता चलै, चलै भोहड़ा नारसिंह, आदिभैरव, कालाभैरव, भूराभैरव, सेतभैरव, सवा लक्ष लैकै वीर चलै, चौसठि योगिनी चले, तुरत चले, तुरत न चलै तो सती सीतानी सेज पग देई, रामचन्द्र की पूजा पाई करि ठेले, जो तुरत न चलै तो, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र से शत्रु अनुकूल हो जाता है, गुगल धूप करें।

(५)

ॐ नमो राधा रुकमण थारे, सतगुरु है म्हारे, मैं मैं मैं मैं मैं पांचा में पच्चीस सतगुरा में तीस श्री श्री श्री ॐ तत् और सत् मन मोहनी सत् और तत् शब्द सांचा बंसुरी कांचा, एक पर कृष्ण आजा गुरु गोरखनाथ का वाचा।

संध्या समय ५४ बार पढ़ें। एक हाथ पर कृष्ण लिखें दूसरे पर रा (राधा), रु (रुक्मण) लिखें। फिर हाथ जोड़कर मन्त्र जप करें।

(६)

मोहन मोहन क्या करे, मोहन मेरा नाम, भीत पर तो देवी खड़ी, मोहों सारा गांव, राजा मोहों, प्रजा मोहों, मोहों गणपत राय, तैंतीस कोटि देवता मोहों, नर लोग

कहां जायें, दुहाई ईश्वर महादेव गौरा पार्वती, नैना योगिनी, कामरु कमक्षा की।

दशहरे के दिन से १ माला नित्य करें। जप समय घी गुग्गल कपूर की धूप देवें, फिर दीपावली को पुनः सिद्ध करें।

यह मन्त्र सभा मोहित करता है। इस मन्त्र से गोरोचन का तिलक करें, साध्या स्त्री को इस मंत्र से पढ़कर फूल सुंघायें, वशी होवे।

॥ अथ उच्चाटन प्रयोगा:॥

(१)

ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरालाय अमुकं सपुत्र बांधवै सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् स्वाहा।

होली, दीपावली व ग्रहण के दिन १०००० जप कर मंत्र सिद्ध करें। जिस स्थान पर गधा लौटा हो वहां की मिट्टी बांये पैर में उठावें, मंगलवार दोपहर को १०८ बार मंत्र जपकर शत्रु के घर डाल देवे तो उसका उच्चाटन होवे। सरसों शिव पिण्ड पर चढ़ावे। फल फूल मिठाई को उक्त मंत्र से मंत्र कर शत्रु के घर गाड देवे तो शत्रु का उच्चाटन होवे। कौए के पंख को इस मंत्र से १०८ बार मंत्र कर शत्रु के घर में गाड़ देवें तो भी उच्चाटन होवे।

(२)

ॐ नमो भीमास्याय अमुक गृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि - पहले दस हजार जप करें। फिर दोपहर के समय जहां गधा लेटा हो वहां की मिट्टी पूर्व या पश्चिम की ओर मुंह करके उठा लाये। फिर उसे १०८ बार मंत्र कर शत्रु के घर में सात दिन तक फेंकते रहे तो शत्रु का उच्चाटन होवे।

(३)

॥ शत्रुनाश उच्चाटन मंत्र॥

ॐ हंकाली, झंकाली, पुलकित स्त्री पुरुष राजाकर्षिणि, मम वश करतु वर स्वाहा। ॐ कंकाली काली नव नाड़ी बहत्तर जाली माहो शत्रु ताहो भक्ष्य, गृह्ण गृह्ण फट् स्वाहा। ॐ कालिका देवी कालरूपिणी महाकाल दमनी अमुकोच्चाटनार्थं अदृष्टं मार्णयां महाभयंकरी ममा भय हरं हरि स्वाहा।

॥ अथ विद्वेषण प्रयोगा:॥

(१)

राई हेतु चट चटाई गरे मशाने तू फिरि आई जरिहैं जरि बार होई छाई, अमुका अमुक से होई लराई।

इस मंत्र से राई की आहुति दे तो उच्चाटन कलह होवे।

(२)

सत्यनाम आदेस गुरु को आक ढाक दोनों बन राई, अमुका अमुकी ऐसी करें, जैसे कूकर और बिलाई।

शनिवार से आरंभ कर सात दिन तक आक के पत्तों पर मन्त्र लिखकर उन्हें ढाक की लकड़ी के अंगारों में जलावें तो जिनके बीच विद्वेषण चाहते हों उनमें विद्वेषण होवे।

(३)

ॐ नमो नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

मन्त्र एक लाख जप करने से सिद्ध होता है। इस मन्त्र से मन्त्र कर सेही जानवर का कांटा जिस घर में गाड़े वहां विद्वेषण होवे। घोड़े का बाल व भैंसे का बाल इस मन्त्र से मंत्रें उसे यदि किसी सभा में जला दिया जाये तो वहां विद्वेषण हो जायेगा।

(४)

बारा सरसों तेरा राई, पाट की मांटी मसान की छाई, पढ़कर मारूं करद तलवार, अमुका कदे न देखे अमुकी का द्वार, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सतनाम आदेस गुरु का।

सरसों, राई और राख समान मात्रा में लेवें। आक व ढाक की लकड़ी में इन तीनों की १०८ आहुति देवें। यह प्रयोग मंगलवार को करे तथा इस होम की राख जिस घर के दरवाजे पर ड़ालें वहां विद्वेषण होवे।

(५)

ॐ काकतुण्डी धवलामुखी अमुक गृहे विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

(६)

ॐ धूं धूं धवलामुखी काकतुण्डी अमुकस्य अमुकी सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

(७)

बारा सरसों तेरा राई, पाट की माटी मशान की छाई। पटक मारु, कल दलवार। अमुक टुटे, न देखे अमुक का द्वार। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा।

विधिः- इस मंत्र में जहाँ अमुक शब्द आया है वहाँ पहले व्यक्ति या स्त्री का नाम व जहाँ दुसरी बार अमुक शब्द आया है वहाँ पर दुसरे व्यक्ति या स्त्री का नाम लेना चाहिए जिनमें विद्वेषण कराना है। सरसों, आक की लकड़ी एवं श्मशान की चिता की राख को १०८ बार इस मंत्र को पढ़कर आहुतियाँ देवें। आवयश्यकता होने पर कृष्णपक्ष के अन्तिम मंगलवार को उक्त हवन की राख को उस स्थान, दुकान, मकान के दरवाजे के आगे डाले जहाँ से गुजरते हो या उस स्थान पर डाले जहाँ पर वे दोनो बैठते हो। ऐसा करने पर दोनो में विद्वेषण होगा।

॥ अथ स्तंभन प्रयोगा:॥

(१)

॥ शत्रु व जादू टोना का स्तंभन॥

ॐ अङ्ग आसो मेहतरानी, आट बांधे, खाट बांधे, मैलिया मसान बांधे, गैल घाट को बांधे, जादू टोना को बांधे, चोट मूठ को बांधे, जमीन आसमान को बांधे, नौ नारी बहत्तर कोठा बांधे, आकाश पाताल वायुमण्डल को बांधे, तैंतीस कोटि देवी देवताओं को बांध, बांध वाचा मे राखें तो बङ्गाले की आसो मेहतरानी कहावे, वाचा चूके कुवाचा करे तो बगूदिया धोबन की नांद में पड़े।

कार्तिक शुक्ला ११ को रात्रि में अण्डे व शराब से पूजन करें, सुअर का नवजात बच्चा जिसकी आंखें नहीं खुली हो उसकी बलि देवें। इस मंत्र से झाड़ा व गण्डा देने से प्रेत बाधा का स्तंभन होता है।

(२)

॥ शत्रु व भूत प्रेत स्तंभन॥

सात समुद्र आडे, सात समुद्र ठाड़े, समुन्दर में टापू जे पै बनी कांच की मढ़ी, जे मे रहे आसो रानी। काहे की डलिया काहे की झाड़ू, सोने की डलिया रूपे का झाड़ू, रोम रोम हड्डी हड्डी चाम चाम नौ नारी बहत्तर कोठा में से भूत परीत उड़ैल चुडैल अब्बीस खब्बीस नजर मन दीठ को बांध बांध। वाचा में ल्यावे तो बङ्गाले की आसो मेहतरानी कहलावे, वाचा चूके कुवाचा चले तो बगूदिया धोबन की नांद में पड़े। मेरी भगत गुरु की सकत फुरै मन्त्र ईश्वरी वाचा।

गोबर का गोल चौका लगाकर अण्डा शराब छोटी छोटी पूडियां, गुलाब का इत्र, पांच प्रकार की मिठाई से आसो मेहतरानी का पूजा आवाहन करें। १ फूल पर १ बार मंत्र पढ़ें। एक महीने तक जप करें तो आसो रानी भूत प्रेत को बांध कर लाती है, बात कराती है, उनका स्तंभन भी करती है। झाड़ा देवे व गण्डा बनावें।

(३)

॥ प्रेत व शत्रु कीलन॥

ॐ नमो आदेश गुरुजी को आदेश, ॐ गुरुजी जहां गङ्गा जहां जमुना जहां बसन्ते जोगी। गाय बहन्ते गावा लागै, त्रिया बहन्ती मोहनी जिसके पीछे मरी मसान चैतै, ईश्वरो वाचा, कील चले कीलन्ती किली चले, घट चलै, कुम्भकरण का चक्र चलै, द्रोपदी का खप्पर चलै, शेषनाग की खोपड़ी चलै, नागा बांध चोट्टा, तीनों दिये बताय, गोरख गोदावरी कर पीताम्बर भेष, शेर का मुख कीलौं, सर्पकर दर कीलौं, उठी बैठी को कीलौं, मरी किलौं, मसान कीलौं, भूत कीलौं, प्रेत कीलौं, डङ्कनी सङ्कनी कीलौं, सार की कोठी वज्र का ताला जहां

बसे जीव हमारा, पांच वीर ले बैठे कील, कील के दरवाजे मेरो सिरजनहार पिण्ड पुरान, नरसिंह कीलौं, अंजनी के पूत, वीर विक्रमाजीत आवते, सांझा सिरहाने की सुई कीलौं, पैर की मिर्ची कीलौं, तीन कुली बिच्छु की कीलौं पांच कुली शेषनाग की कीलौं, मरी कीलौं, मसान कीलौं, डङ्कनी सङ्कनी को कीलौं, भूत कीलौं, प्रेत कीलौं, राड़ी के पूत वीर महमदा पीर गोरक्ष कील कलयुग चल, लण्डी का पुट्ठा कीलौं, ईश्वरो वाचा फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से मिलता जुलता हुआ मन्त्र सपेरों को बाज विद्या में व सर्प कीलन हेतु प्रयोग करते देखा है। शत्रु मुख स्तंभन हेतु पुत्तल में इस मन्त्र से उसके मुंह में व अंगों में कील ठोंक देते है। इस मन्त्र से गण्डा देने व झाड़ा देने से भी रक्षा होवे।

(४)

॥ शत्रु स्तंभन मंत्र॥

ॐ नमो नमो नमो चामुण्डा माई, कालिया भेंरुआ सूकिया समूकिया, इन्ही बैरि बला को बांध बांधू यांको मुख बांध चित्त बांध, बुद्धी बांध हाथ बांध पांव बांध। चीरा चिरमरी बांध, आंख नाक कांख अंग-अंग बांध। जो न बांधे तो चमार को चमरोद चण्डाली की कुण्डी में गिर। लोना चमारी की अरज सौ - सौ महाकाल की आन। अलख निरंजन फू फू करे, मेरा बैरी को बैर जरे, मंत्र सांचा पिण्ड कांचा गुरु की शक्ति।

नवरात्रों में चामुण्डा माई का विधि विधान से पूजन करे, इस मंत्र की सिद्धिदात्रि चामुण्डा माई है। भोग में मदीरा चढ़ावे या गुड़ व दही का मिश्रण, मांस या उड़उ के उबले दानों का प्रयोग करें। नवरात्रों में प्रत्येक दिन इस मंत्र का ११०० बार जप करे तो मंत्र सिद्ध हो जायेगा। किसी पर प्रयोग करने से पूर्व नागरमोथा की जड़ को पूर्ण विधि-विधान से ले आवे। फिर उस जड़ को चांदी के तार से आच्छादित कर देवे। उस जड को मध्यरात्रि में सामने रख कर इस मंत्र का जप करे। बाद में इस जड़ को अपने मुख में रखकर जब भी शत्रु के सामने जावे तो उसका मुख स्तम्भित हो जायेगा।

॥ शत्रु मुख स्तंभन मंत्राः ॥

(१)

कामरु देस ते आइल चण्डी, ते दीन्ह बेल कै खण्डी, बेल कै खण्डी, मुंह लावो तु बांधो, नारसिंह दुवारे पै सौ शत्रु करो विलार। मोहि सिद्ध गुरु कै पाउ॥

(२)

अलफ अलफ दुध्मन के मुंह में कुलफ मेरे हाथ कुंजी रूपा रेत कर दुश्मन को जेर कर।

शनिवार के दिन इस मंत्र का जप आरम्भ करके अगले शनिवार तक अखण्ड घी का दीपक जलावे। कर्पूर के सात

हजार टुकडे लेवे। प्रतिदिन फूल-बताशे चढ़ाकर कर्पूर के टुकडों को इस मंत्र से अभिमंत्रित कर अग्नि में समर्पित करे। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जायेगा। आवश्यकता पडने पर शत्रु के सामने जाने से पूर्व इस मंत्र का १०८ बार जप करे तो शत्रु का मुख स्तम्भित हो जायेगा आपके विरुद्ध नहीं बोलेगा।

(३)

मंत्रः- ॐ ह्रीं श्रीं खेतल वीर चौसठ जोगनी प्रति हार मम शत्रून् (अमुकस्य) मुख बन्धनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र को होली दिपावली की रात्रि को सिद्ध कर शहद व घी की आहुतियां अग्नि को देवे। एक चार अंगुल की कील लेकर उसे इस मंत्र से अभिमंत्रित कर लेवे। तत्पश्चात् उस कील को श्मशान में जाकर गाड़ आवें। गाड़ते समय इस मंत्र का जप करते रहें, आते समय पीछे मुडकर नही देखें। इस प्रयोग करने से शत्रु का मुख स्तम्भित हो जायेगा आपके खिलाफ नहीं बोलेगा।

(४)

ॐ श्री आदिपुराण पुरुष एक अलख एक ही समर्थ एक ही धणी एक ही आधार एक ताहरी रक्षा एक परमेश्वर एक नु जय हो परमेश्वर अमुकशत्रुमुख स्तंभि स्तंभि दुश्मन ने पय मार घाली घाली वैरी ने संहारी संहारी बाबाजी परमेश्वर नु नाम सत्य।

भोजपत्र पर मंत्र लिखें। मोम के साथ उसकी गोली बना लेवें। ३ ज्वार व उडद के दाने पर मंत्र पढ़कर डालें, फिर उसको शत्रु के मकान के पास गाड़ देवे तो वह निंदा करना बंद कर देवे।

(५)

॥ मुख स्तंभन मंत्र॥

ॐ ह्रीं श्रीं खेतल वीर चौसठ जोगिनी प्रतिहार मम शत्रु अमुकस्य मुख बंधनं कुरु कुरु स्वाहा।

गुगल घृत व शहद से होम करें। श्मशान में वैरी का नाम लिखकर अभिमंत्रित करके ४ अंगुल की लोहे की कील गाड़ देवें। बलि आदि प्रदान करें।

॥ मारण एवं अभिचार मंत्र प्रयोगा:॥

॥ अभिचार कर्म॥

कारो करुवा कारी रात तोय चलाऊं काली रात। कारो पहने चोलना, कारी बांधे ढाल, कारी ओढे कासनी, लए लुहांगी हाथ। हांको देव सनीचरा फेरत आवे सांग, पेट फूले आंत सड़ै, हुड़क लगावै नार सवा हाथ धरती खून में बोर के आवे, तो सच्चा वीर बङ्गालिया अगवान कहावै।

जब श्मशान में शव ले जा रहे हो तो मार्ग में ही पीले चावल से शव को न्यौता दे देवें, जब श्मशान से सब लोग लौट आवे तो वहां एक अण्डा व मदिरा ७ बार मंत्र पढ़कर अर्पित करें। एक सफेद कोरे कपड़े में हल्दी, सुपारी व चिता के बुझे कोयले का एक टुकड़ा बांध कर चिता के समीप गाड़ देवें। उसी दिन रात को चौथे पहर पुन: श्मशान में जाए पुन: अण्डे व मदिरा को ७ बार मंत्र पढ़कर अर्पित करें। फिर गाड़े हुये बर्तन को निकालें, कपड़े में बंधी सारी वस्तुयें फेंक देवे। उस चिता की एक मुट्ठी राख उस कपड़े में बांध कर ले आए तथा घर के अलावा अन्यत्र रखें।

एक चुटकी राख ७ बार मंत्रित कर जहां डालें वहां उत्पात होने लगेंगे। कार्यकर्ता को रक्षा विधान अवश्य अपना करना चाहिये।

॥ शत्रुनिग्रह मंत्र ॥

(१)

जे भुज ते महिषासुर मारो, शुंभ निशुंभ हत्यो बलथम्बा, सेवक को प्रण राख ले मात, भई पर मन्त्र तु ही अवलम्बा, आरत होय पुकारत हों, कर ते तरवार गहो जगदंबा, आनि तुम्हे शिव विष्णु की जनि शत्रु बधे बिन सोवहु अम्बा।

सायंकाल दक्षिणाभिमुख होकर पीपल की डाल हाथ में लेकर, हाथ ऊंचा उठाकर नित्य २१ बार पढ़ने से शत्रु नाश होवे। पहले नवरात्र में इस मंत्र की सिद्धि कर लेवें।

(२)

ॐ वीर वैताल पैठि पताल खेलन्त चालि वायु बंबूल फेरि लंगूर चीन चाहु, हांकि बकि देउ, यांको वीर जार पुरुष की पास जालि, पातसाह की तखत जालि, राजा को सिंहासन जालि, पालकी, बैठी राणी जालि, उमराव के हवेली जालि, पर्वत पहार जारि के भस्म करि, न जारे तो हनुमन्त नी की आन, हनुमन्तवीर में मन्त मारि करै भस्म, भूक माया मारे धीरे, गाय बाछी खाय। ब्रह्म को आले सुरा पिए जहां, भेजो तहां जाइ, शिव वाचा, ब्रह्मवाचा, रुद्रवाचा, चूके उमा सूके सीस काल फारि मरे। वाचा छोडि कुवाचा करे, तो लोना चमारी को छोरि परे। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। देखो हनुमन्त वीर तेरी मंत्र की शक्ति ॐ।

वेताल साधना श्मशान साधना के समान मद्यमांसादि से पूजन करें।

॥ शत्रु संहार एवं शान्ति मंत्र ॥

(१)

ॐ श्लीं गभस्ति भैरवाय सकल शत्रु संहारकाय वरदाय, अशेष शक्तिदायने शृंखला चूर्णि करणाय भक्तानन्ददाय नवकोटि सिद्धि भैरवाय प्रज्वलिताच्र्चि स्वरूप हुं मम शुभं कुरु स्वाहा।

गभस्ति नाम सूर्यदेव का भी है। अतः प्रातः काल से दोपहर तक सूर्य के सम्मुख प्रयोग करें। सर्वशांति होवे।

(२)

ॐ या भुज ते महिषासुर मारि औ शुम्भ निशुम्भ बल थम्बा। आरत हेतु पुकारत हो जाइ कहां बैठी जगदंबा। खड्ग टूटो कि खप्पर फूटो कि सिंह थको तुमरो जगदंबा। आज तोहे माता भक्त शपथ बिनु शांति दिए जनि सोवहु अम्बा।

रात्रि को पश्चिमाभिमुख एवं सुबह पूर्वाभिमुख होकर २१ पाठ करने से शान्ति प्राप्त होती है।

॥ अथ मारण प्रयोगा:॥

(काली, भैरव, हनुमान, क्षेत्रपाल के प्रयोग)

(१)

ॐ नमो हाथ फाउड़ी कांधे मारा भैरुं वीर मसाने खडा, लोहे की धनी वज्र का वाण, वेग ना मारे तो देवी कालका की आण, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सतनाम आदेश गुरु का।

दीपावली की रात्रि को दीप जला गुगल की धूप करें। उड़दों को अभिमंत्रित कर दीपक की लौ पर मारते जाये जाप १०८ बार उड़द मारकर पुनः १२ बार मारे। फिर काले कुत्ते के खून को उड़दों पर लगाकर उन्हे राख में मिलाकर रखें। प्रयोग हेतु ३ उड़द मंत्र पढ़कर शत्रु पर मारे तो पीड़ा होवे।

(२)

॥ शत्रुनाश मंत्र॥

ॐकार भैरव कलिमानी, लोहे की धन की सार कवानी, आठ कोश की करे पयानी, वेगि वेगि न मारे तो गौरा पार्वती की आन। दुहाई नोना योगिनी की आन, दुहाई बाबा अजयपाल की, वाचा छोडि कुवाचा करे तो कुंभी नरक में पड़े। दुहाई तैंतीस कोटि देवता की। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

(३)

॥ शत्रुनाश॥

ॐ आदेश गुरु को, यां कांवरु देश कमक्षा राणी तहां बैठे वज्र योगिनी शत्रु रक्त की प्यासी, भक्त सो करे सदा हांसी, जाप की दासी, तैतीस कोटि देवता की मांसी, पातसाह की मा मारी, सर्वसिद्धी की क्यारी। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, यां स्वाहा।

इस मन्त्र को चेटकी सिद्धि की तरह सिद्ध करें। इनके प्रयोग पूर्व में दिये गये हैं।

(४)

॥ शत्रुनाश भैरव मन्त्र ॥

ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र, कंकाल भैंरू, हुकम हाजिर रहे, मेरा भेजा काल करे, मेरा भेजा तुरंत रक्षा करे, आन बांधू दशो सुर बांधू, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बांधू, फूल में भेजूं, फल में जाइ, कोठे जो पड़े धर धर कंपे हलहले गिर गिर पड़े उठ उठ भागे बक बक बकै मेरा भेजा सवा घड़ी सवा पहर कूं वाउला न करे तो माता काली की सज्या पर पग धरे, जे वाचा चूके तो उमा सूके वाचा छोडि, कुवाचा करे तो धोबी नांद चमार के कूंड में पड़े, मेरा भेजा वाउला न करे तो महादेव की लटा टूट भूम में पड़े, माता पार्वती के चीर पै चोट करे, बिना हुकुम नहीं मारना हो काली के पुत्र कंकाल भैरूं फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। सत्यनाम आदेश गुरु को।

एक मिट्टी के बर्तन में लौंग जोडा, बताशे, पान सुपारी, मोली, लोबान धूप कपूर रखें। त्रिशूल सिन्दूर से **बनायें। ७ टींकी** लगावें। मन्त्र पढ़कर लोबान कपूर लोंग बताशे से होम करें। चौराहे पर बलि देवे। यह भैरव **प्रयोग है। विधिवत्** पूजा प्रयोग करें।

(५)

॥ शत्रुनाश क्षेत्रपाल मन्त्र ॥

ॐ आदेश गुरु को क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल हाथ लिये नरकपाल दूजे हाथ सिद्ध कराल, नाचे कूदे खाजपाल, सेवक सो खेलै जैसो बाल, ब्रह्मा को पुत्र दुष्ट का शत्रु, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। वाचा छोडि कुवाचा करे तो कुंभी नरक में पड़े। उमासूकि सड़े फट् स्वाहा।

क्षेत्रपाल, वटुक साधना की तरह मंत्र सिद्ध करे।

(६)

॥ शत्रुनाश मंत्र ॥

ॐ त्रिपुरा सुन्दरी जपो तोहि, तू जग मोहिनी माउ पूत परारे वश करै, वैरी रकत लहाउ, जल थंभो थल थंभो, थंभो आपनिकाया, पाण्ड पृथिवी थांभो त्रिपुर माया। जिन्ह मेरी पुरा त्रिपुरासुन्दरी की सरण, यौ वैरी घहराइ परै वेगि दे।

(७)

॥ शत्रुनाश मंत्र ॥

ॐ काली काली महाकाली, मेदमांसे करे दिवाली, ब्रह्मा की पुत्री इन्द्र की साली, घोडे की पीठ बजावे ताली, चाम की कोथली, हाड़ की जपमाली।

पाताल की सर्पिणी उडूमण्डल की बिजुली, जहां पठाऊं, तहां जाईह, रिद्धि सिद्धि ल्याहूं। दश कोश बांए, दश कोश दाहिने, दश कोश आगे, दश कोश पाछे, मेरा वैरी तेरा भक्ष्य। मैं दिया तरूसि ले चूसि ले। क्रीं काली महाकाली, फुरो मंत्र अन्नठ चाण्डाली। न फुरे तो ब्रह्मा विष्णु महेश वाचा पावु पखा ले। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

(८)

ॐ तारा तारा महातारा ब्रह्मा विष्णु महेश उधारा, चौदह भुवन आपद हारा, जहां भेजो तहां जाहि, बुद्धि ऋद्धि ल्याव, तीनि लोक उखाल डार डार न उखाले तो अक्षोम्य की आन, सब सौ कोस चहूं ओर, मेरा शत्रु तेरा बलि, खः फट् फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

(९)

एक चिड़िया उड़ी आसमान में, हनुमान वीर दीन ललकार तुरंत गई मरघट के पास, मरघट से बोले मुरदे मसान, काट कर बहुत किटकिटान, मेरा वाचा काटे तो माता अंजनी का पूत पवनसुत न कहावे। तेरी माता का दूध हराम।

(१०)

बैरी जोते एक, मै जोतो बारा, पड़ा के ताकत देना, भूरी भैंसासुर काला मुंह कर देवेगा, मार दे, फेंक दे, गिरा दे, जब मैं जानों ठीक, गुरु की दुहाई।

नारेल, ढाई पाव आटे का रोट, चूरमा, गांजे की चिलम व अण्डा चढ़ावें तथा मुर्गे की बलि देवे।

(११)

रूप को पलंग, सोने की खील, जी में छाए जमराज वीर, चार जम बारा काल, मेड़ो बांध, मड़इया बांध, घर बांध, घर के चारो कोने बांध, बाड़ न गुनी को गुन बांध, जा तइ देहों मुरगा लौटत मद की धार, पहुंचो जमराज, तेरे आखिरी मन्त्र की दुहाई, फुरै वाचा।

मन्त्र के अनुसार मुर्गा व मदिरा चढ़ावें। विशेष मारण में पुत्तल प्रयोग करें।

(१२)

॥ शत्रु मारण मंत्र॥

ॐ नमो काली का पूत भैरव चाल्यो, काला कूकर बैठ चाल्यो। भौं भौं करैं भैंरू का साटा बैरी के माथे पड़े, नस नाड्या फटें लोहू निकसे, मैली मुशाणी चाटे चटकारा करे। दिन उनारी बैरी मरे, आसो मैरानी को वाचा सिद्ध हो।

****

इस मंत्र के प्रयोग शत्रु मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए भैरव का मदिरा आदि से पूजन करना चाहिए मंत्र जप प्रारम्भ किसी शुभ मुहुर्त्त मंगलवार, शनिवार या नवरात्रों अथवा दिपावली के दिन करे। भैरव के बाकला का प्रसाद चढ़ावे। ग्यारह दिनों तक नियमित ११००० बार जप करने से मंत्र सिद्ध होवे। तत्पश्चात् एक आटे का पुतला बनावे उस पुतले में शत्रु की प्राण प्रतिष्ठा करे फिर यदि अमावस्या की रात्रि में साधक नग्नावस्था में श्मशान में जाकर चिताग्नि में इस पुतले को डाल देवे तो शत्रु की यमलोक पहुँच जावेगा। यदि इसी अभिमंत्रित पुतले को श्मशान में जहां चिता जलती हो उस स्थान पर गड्डा खोद कर उसमे दबा दिया जाये तो शत्रु गंभीर रूप से बीमार होजाता है और मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि इस पुतले को खैर के अंगारे अथवा श्मशान में चिता के अंगारों में तपाये तो शत्रु गंभीर रूप से ज्वर को प्राप्त होता है यदि शत्रु को वापिस ठीक करना होतो उस पुतले को ठण्ड़े पानी में डाल देना चाहिए जिससे उसका ज्वर शांत हो जाता है।

(१३)

॥ शत्रुमारण मंत्र ॥

ॐ नमो नरसिंहाय कपिलजटाय अमोघ बीचा सत् वृताय महादोग्र चण्डरूपाय ॐ ह्रीं ह्रीं छां छां छीं छीं फट्।

यह मंत्र ११००० बार जप करने पर सिद्ध होता है, तथा जप का दशांश पुष्प व घी मिलाकर हवन करने से शत्रु मृत्यु को प्राप्त होता है। प्रयोग में लेने से पूर्व मांत्रिक को जिस व्यक्ति पर यह क्रिया करनी है उसका संकल्प करना चाहिए। जप काल में उक्त शत्रु का ध्यान करना चाहिए अथवा उसकी कोई फोटो होवे तो उत्तम रहता है।

(१४)

॥ प्रेत व शत्रुनाश ॥

हनुमान हठीले लोहे की खीले, वज्रै ओढै, वज्रै दाशै वज्रै करे वियारी, हनुमान की मयान्नवहा कातै सूत, सूत कात के जाल विनित, विकजाल विनिन डारिन माझ पहार, भूतै फांसे, चुरेल फांसे, वैजही फांसे, ब्रह्मराक्षस फांसे, पिशाच फांसे, सर्व घातक वैरी फांसे, हांक परत है भैंसासुर कै, भाग भाग भूत बचहि न कोनो लोक दोहाई वीर हनुमान की।

(१५)

॥ शत्रु पर प्रेत चढ़ाने का मन्त्र ॥

अल्प गुरु अल्प रहमान, उसकी (अमुक अमुकी) छाती चढ शैतान, उसकी छाती न चढै तो मां बहिन की सेज पर पग धरै, अली की दुहाई।

शुक्रवार को आंगन में चौका लगाकर, तिल तथा तेल का दीपक उत्तर में जलावें, स्वयं उसके पास दक्षिणाभिमुख होकर १७००० जप करें। सफेद फूल व रेवड़ी का प्रसाद चढ़ावें, लोबान की धूप देवें। रेवड़िया किसी कुंवारे लड़के को दे देवें। नित्य १०८ बार जप करें। जप समाप्ति पर 'या अली' तीन बार कहें। रोगी पर से शैतान को उतारना हो तो गेहूं की रोटी को घी से चूपड़ें तथा गुड़ रखकर नाम लेकर नदी में बहा देवें।

(१६)

॥ शत्रुसंहाराष्टक भैरव स्तोत्रम् ॥

यह स्तोत्र प्रबल शत्रुसंहार कारक है। जिस महात्मा ने इसकी रचना अपने शत्रुओं के नाश हेतु की उसका प्रबल प्रभाव आज भी १५० वर्षों से है। शत्रुओं का नाश हुआ एवं आज तक वह गाँव वीरान है। यह स्तोत्र बहुत उग्र है अतः दीपदान, बलिदान प्रयोग करके नित्य शांति पाठ करना चाहियें।

हन-हन दुष्टन को, प्राणनाथ हाथ गहि, पटकि मही-तल मिटाओ सब शोक को ।
हमें जो सतावे जन, काम-मन-वाक्यन ते , बार बार तिनको पठाओ यमलोक को ।
वाकोघर मसान करौ संसत श्रृगाल रोवैं, रुधिर कपाल भरो उर शूल चोक को ।
भैरो महाराज! मम काज आज एही करौ, शरण तिहारो वेग माफ करो चूक को ॥१॥

भल-भल करे ओ विपक्षी पक्ष, आपनो टरे न टारे, काहू के त्रिशूल दण्ड रावरो ।
घेरि-घेरि छलिन छकाओ, छिति छल माहिं बचै नाहीं, नाती-पूत सहित स पाँवरो ।
हेरि-हेरि निन्दक सकल निरमूल करो, चूसि लेहु रुधिर रस धारो शत्रु सागरो ।
झपटि-झपटि झूमि-झूमि काल दण्ड मारो, जाहि यमलोक वैरि वृन्द को विदा करो ॥२॥

झपटि के सारमेय पीठ पै सवार होहु, दपटि दबाओ तिरशूल, देर ना करो ।
रपटि-रपटि रहपट एक मारो, नाथ! नाक से रुधिर गिरै, मुण्ड से व्यथा करो ।
हरषि निरखि यह काम मेरो, जल्दी करो सुनि के कृपानिधान भैरोजी! कृपा करो ।
हरो धन-दार-परिवार, मारो पकरिके, बचे सौ बहि जाइ नदी नार जा मरो ॥३॥

जाहि जर-मूर से रहे न वाके बंस कोई, रोइ-रोइ छाती पीटै, करै हाइ-हाइ के ।
रोग अरु दोष कर, प्राणी विललाइ, वाके कोई न सहाइ लागै, मरै धाइ-धाइ के ।
खलन खधारि, दण्ड देहु दीनानाथ! मैं तो परम अनाथ, दया करो आइ-आइ के ।
जनम-जनम गुन गाइ के बितैहों दिन, भैरो महाराज! वैरी मारो, जाइ-जाइ के ॥४॥

रात-दिन पीरा उठै, लोहू कटि-कटि गिरे, फारि के करेजा ताके बंस में समाइ जा ।
रिरिकि-रिरिकि मरे, काहू को उपाय कछू लागै नाहीं एको जुक्ति, हाड़ माँस खाइ जा ।
फिरत-फिरत फिरि आवै, चाहे चारों ओर यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र को प्रभाव विनसाइ जा ।
भैरो महाराज! मम काज आज एहि करौ, शत्रुन के मारि दुःख दुसह बढ़ाइ जा ॥५॥

झट-झट पेट चीर,चीर के बहाइ देह, भूत औ पिशाच पीवैं रुधिर अघाइ कै ।
रटि-रटि कहत सुनत नाहीं, भूतनाथ!, तुम बिनु कवन सहाय करै आइ कै ।
भभकि -भभकि रिपु तन से रुधिर गिरे, चभकि-चभकि पिओ कुकुर लिआइ कै ।
हहरि-हहरि हिआ फाटै सब शत्रुन को, सुनहु सवाल हाल कासो कहैं जाइ कै ॥६॥

जरै ज्वर-जाल-काल भृकुटि कराल करो, शत्रुन की सेखि देखि जात नहीं नेक हूँ ।

तेरो है विश्वास, त्रास एको नहीं काहू केर लागत हमारे, कृपा-दृष्टि कर देख हूँ ।
भैरो! उनमत्त ताहि कीजिए, उनमत्त आज गिरै जम-ज्वाल-नदी जल्दी से फेंक हूँ ।
यम कर दूत जहाँ भूत-सम दण्ड मारै, फूटे शिर, टूटे हाड़, बचै नाहिं एक हूँ ॥७॥

हवकि-हवकि मांस काटि दाँतन से , बोटि-बोटि वीरन के, नवो नाथ खाइ जा ।
भूत-वेताल ववकारत, पुकार करै, आज नर-रुधिर पर वहै आइ जा ।
डाकिनी अनेक डडकारैं, सब शत्रुन के रुधिर कपाल भरि-भरि के पिआइ जा ।
भैरो भूतनाथ! मेरो काज आज एहि करो, दुर्जन के तन-धन अबहीं नसाइ जा ॥८॥

शत्रुन संहार आज, अष्टक बनाए आज, षट-जुग ग्रह शशि सम्वत में सजि कै ।
फागुन अजोरे पाख, वाण तिथि, सोमवार, पढ़त जो प्रातः काल उठि नींद तजि कै ।
शत्रुन संहार होत, आपन सब काज होत, सन्तन सुतार होत, नाती-पूत रजि कै ।
कहै गुरुदत्त तीनि मास, तीनि साल महँ, शत्रु जमलोक जैहै बचिहै न भजि कै ॥९॥

॥ शत्रुनाश व शत्रु को दण्ड देना ॥

(काली, कामाख्या, रक्तिया वीर, भैरव, हनुमान, कलुआ व मुस्लिम मन्त्र)

(१)

पर चले परवत चले, खास डालूं तो पत्थर चले, अल्लाह मोहम्मद का अलीफ चले, सैयद अहमेद का धुका चले, ख्वाजा खीजर की तस्वीर चले, गोरा आझम का गोरा चले, इझराईल का तमाचा चले, रुढ मूढ जुल जलाल पकड़ मुण्डी घड़ पछाड़ आधीरात को मुक्का मार या कहार या कहार, आऊ अक्कहार जुल जलाल पकड़ चोटी घर पछाड़ मार मार डण्डा मार आधीरात मार न मारे तो फिस्वहू मुहम्मद रसूलिल्ला की आन।

यह प्रयोग दिपावली के ४-५ दिन पहले किसी नीम के नीचे शुरु करें। वृक्ष की एक ड़ाली ऐसी चुन लें जिसका डण्डा बन सके पेड़ के नीचे पीले चावल रखें। दीपक जलावें, १२१ बार पाठ करे, प्रत्येक आवृति पर पेड़ के फूंक मारे, दीपावली की रात लोबान, नारेल, खीर, पूड़ी, चिरौंजी पेड़ के पास रखें। नङ्गे होकर उस ड़ाल को तोडे, ध्यान रहे कि डाल नीचे नहीं गिरे। फिर उसे छीलकर डण्डा बनालें, उक्त सामग्री से डण्डे की पूजा करें, कपड़े पहन लेवे। १२१ बार पाठ करें। लोबान की धूप देवें। मंत्र से डण्डे पर फूंक मारे। जब कभी प्रयोग करना हो नगर के बाहर आकर जमीन पर शत्रु का नाम लिखें, मन्त्र पढ़कर सातबार उस नाम पर डण्डा मारें तो शत्रु को पीड़ा होगी।

(२)

अजैपाल की धनु ही परसराम को बान खेंच के मारे राजा दशरथ वैरी तुरतै तजे प्राण।

अजमेर को बसाने वाले बाबा अजयपाल के कई मन्त्र प्रचलित है। यह मन्त्र श्मशान में या कब्र के पास बैठकर

सिद्ध करें। मन्त्र के १००० जप करें। १०८ बार सिन्दूर से लिखकर सिद्ध करें। बेसन की एक बड़ी पूड़ी बनाये उस पर यह मन्त्र लाल चन्दन से लिखें, श्मशान की भस्म से लिखने पर अधिक कष्ट देने वाला होता है। लोबान व गांजे की धूप देवे उड़द के बड़े की बलि देवे। एक अण्डे पर पुतली बनाये उसमें शत्रु के नाम की प्रतिष्ठा करें। पूडी पर लिखे मंत्रों की पूजा करें अण्डे को श्मशान में गाड़कर १०८ बार मन्त्र का जाप करें। ४० दिन में बैरी नष्ट होवे।

(३)

कारो कलुआ काली रात, कलुआ उपजै अमावस की रात कुन्द की लकड़ी वीर मसान, अमुक का धुंआ देख मेरा बैरी तेरे मुख में दिया, तेंई ले चूस सीसे की धनुही चाम के बान, खैंच के मारै छूट जाये प्रान। मेरी भगत गुरु की सकत देखों रे कलुवा तेरे मन्त्र की शकत॥

(४)

कलुआ वीर तोतला मार मांझ कपार, मरघट देऊं बोकरा ऊपर मद की घार अमुक की नाली चला कलुआ चाण्डाल नाक चला मुंह चला इत्ते चला के न आवे तो अपनी मां के साथ हराम करे।

कलुआ को छोटे बालक रूप में प्रेत संज्ञा को मानते हैं, अतः श्मशान व छोटे बच्चे की कब्र के पास साधना करें। बकरे की कलेजी व मद की धार देवे।

प्रयोग करते समय शत्रु की पुतली बनाकर कलुवे को अर्पण कर श्मशान में गाड़ देवे। नींबू की बलि देवे।

(५)

अहोवीर काला ओढे मृगछाला हाथ लये मोहनी मोहन संसार गौरा कंकार महादेव बंकार चौसठ जोगनी नचत आवे, वीर काला ढांक बजावै हाड़ की धनुही सीस के बान खैंच मारे वीर काला, बैरी तजै प्रान। गुरु की शकत मेरी भगत फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

वीर साधना श्मशान में की जाती है। कालावीर सिद्धि हेतु एक पत्थर पर सिन्दूर लगा कर उसमें कालावीर के नाम से पूजा करें, काला कपड़ा मद्य मांस चढ़ावे। नीबू नमकीन व सात तरह की मिठाई चढावें। प्रयोग विधि उपरोक्त मन्त्रों की तरह है।

(६)

॥ भैंसासुर प्रयोग॥

आंझ बांझ की ईमली अैठ बैठ गई डार तरकतर है मेंतिया ऊपर भैंसा रखवार वे भैंसा जिन जानो जीतें तेली कलार मैं भैंसासुर दानों (दानव) सांकर (संकट) टोरो सार की फोरों वज्र किवार, करिया टोरों मुरगा ऊपर मद की धार, मेरी भगत गुरु की शकत फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

****

शनिवार के दिन तीखे सींग वाले भैंसे की पूंछ के बाल लावे। श्मशान में काली की मूर्ति के नीचे बाल रखें। पूजा करे मन्त्र सिद्ध करें।

बलि मांसादि अर्पण करें। शत्रु पर प्रयोग पुतली बनाकर करें।

(७)

काली काली महाकाली इन्द्र की बेटी ब्रह्मा की साली जा बैठी पीपर की डारी हाली हिलाव घाली घलाव मेरा चोर हराम खोर हार की थैली सीस को पसारा माथे जटा कारे महाकाली। मेरी भगत गुरु की शकत देखों महाकाली तेरे मन्त्र की शकत फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

(८)

काली काली महाकाली इन्द्र की बेटी ब्रह्मा की साली एक ऊपर नौ सै जादू साथधरै ब्रह्मातन (सब भूतन) की लाडली मरघट बीच बजावै ताली गन चले गणपत चले माची बैठ रावन चले। टोरत करेजो फारत दरवाजा। कुकरा लैहे बुकरा ऊपर मद की धार जातै लेय करेजो बैरी डारै मार।

दोनों शत्रु निग्रह प्रयोगों में गुगल, मद, मांस कलेजी का प्रयोग है। शत्रु पीड़ा हेतु गुगल, सरसों होम व पुत्तल प्रयोग करें।

(९)

॥ कलह कारक मन्त्र ॥

खम खम नींबू हसला घोडा पाटका डोर देखों रे नींबू तेरी आन, नौ नाथ चौरासी सिद्ध की आन फुरै मन्त्र ईश्वरी वाचा।

शनिवार को इस मन्त्र का प्रयोग गोरखनाथ को स्मरण करके करे। रात्रि को खुले मैदान में तारों की छाँव में इस मन्त्र को सिद्ध करे। गुगल धूप देवे। प्रयोग में नींबू प्रधान है अत: इसकी पूजा करें। सेही जानवर का कांटा यदि बिना मन्त्रे भी किसी के घर में ड़ाल देवे तो कलह पैदा कर देता है। अत: मंत्र पढ़ते हुये नींबू को सेही के कांटे से छेदे। २१वीं बार मन्त्र पढ़कर कांटें को नींबू में शत्रु का नाम (अमुक को कहल पीड़ा होवे) लेकर गाड़ देवे। नींबू पर सिन्दूर चढ़ा कर पूजा करें। लोबान की धूप देकर कब्र में गाड़ देवे तो शत्रु का अनिष्ट होवे।

(१०)

ॐ त्रिपुरा सुंदरित जौ तोहि तुजगे मानि जाउ पूत रारे वैरी रक्त नहाउं अलथांमौ थलथांमौ आपति काया खड पृथिवी थांमौ त्रिपुरामाया थांमौ तिन्हम त्रिपुरसुन्दरी की शरण जौ अमुका के विष प्रान हरय परो वेगि देई।

अमुका की जगह शत्रु का नाम पढ़ें। अमुका के विष का अर्थ है अमुक के विषय में। ५१ हजार जप करें मंत्र सिद्ध करें। अर्क निम्ब समिध से होम करें तथा गुगल सरसों का प्रयोग भी होम में करें।

(११)

ॐ कालभैरुं कंकाल का वीर मार तोड़ दुश्मन की छाती घोट हाथ कालजो काढ, बत्तीस दांत तोड, यह शब्द ना चले तो खरी जोगिनी का तीर छूटे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

मन्त्र कालाभैरव की साधनानुसार करें। होली दीपावली या ग्रहण में १० हजार जप करें। प्रयोग समय २१ कनेर के फूल लेवें उनको मन्त्रित कर २१ गोली बना लेवें। उन गोलियों को सरसों के तेलमें डुबोकर पुनः २१ बार मंत्रित करके होम करे। २१ दिन प्रयोग करने से शत्रु को पीड़ा होवे।

(१२)

ॐ नमो आदेश गुरु को लाल पलंग नौरंगी छाया काढ कलेजा तू ही चख।

यह मन्त्र हनुमानजी को स्मरण कर करें। रक्षा रेखा खीचें। ''**आओ कलुवा वीर रणधीर**'' तीन बार कहें। गूगल की धूणी देकर हनुमानजी व कलुआ भोग अलग अलग रखें। प्रतिदिन ९००० जप ११ दिन तक करें। जपांत में घृत में लौंग इलायची सुपारी जायफल गुगल मिश्रि का चूर्ण बनाकर १२५ बार होम करें। ब्राह्मण भोजन करायें।

नित्य १ माला करने से अन्यायी वैरि पुरुष को दण्ड मिले।

(१३)

ॐ नमो हनुमंत बलवंत माता अंजनी पुत्र हल हलंत आओ चलंत आओ गढ किला तोडंत आओ लंका जाल बाल भस्मि करि आओ ले लंका लंगूरतें लपिटाय सुमेर तें पटिकाओ चन्द्रा चन्द्रावलि भवानी मिलि गावें मंगलाचार] जीते राम लक्ष्मण हनुमानजी आओजी तुम आओ सात पान का बीड़ा चर्वन्त मस्तक सिन्दूर चढावो आओ मन्दोदरी के सिंहासन डुलता आओ, यहां आओ हनुमान मोया जागते नृसिंह मोया आगे भैरु किल्किाय ऊपर हनुमन्त गाजे दुर्जन को वार दुष्ट को मार सिंहारए जा, हमारे सत्तगुरु हम सत्तगुरु के बालक मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

हनुमानजी की प्रतिमा के आगे प्रयोग ४१ दिन तक करें। रोज धूप दीप नैवेद्य बतासे पान का बीड़ा चढ़ावें। मंगलवार को लड्डू गुड़ चना भी चढ़ावें।

प्रयोग समय शत्रु की पुतली बनाकर हृदय में शत्रु का नाम लिखें। सिर हाथ पैरों पर ''**हूं हूं हूं**'' लिखें। मुर्दे की हड्डी की कील पुतली की छाती या मस्तक में ठोक दें मंत्र पढते जायें। फिर उसे श्मशान में गाड़ देवें तो शत्रु का उच्चाटन होवे, अथवा शत्रु के पुत्तल पर मंत्र पढते हुये २१ जूते मारे तो शत्रु की बुद्धि नष्ट होवे।

(१४)

॥ रकतिया वीर का मंत्र॥

रकतिया वीर कहां चले वैरी के घर चले वैरी को मारने लगे। वैरी की छाती पर बैठने लगे, मूड़ फोर गूदा खाने लगे, छाती छोड़ कलेजा खाने लगे। जीमन का

धुवां आकास को लगन लगे। जार खोर मट्टी करन लगे। रकतिया वीर दुश्मन को मार के आवेगा तो तेरे को एक काला बच्चा दे देऊंगा। फिरकें जा रे रकतिया मसान दुश्मन के अण्डा पै बैठन लगे। चारों कोने पै बैठने लगे, फिरके आवे तो तेरे को सेन्दूर की पूरी देऊंगा।

रकतिया भैरुं बालकों की रक्षा अधिष्ठाता कारक है। जन्म के समय छोटे बच्चों को उसके नाम का ताबीज भी बांधते हैं।

रींगस के पास जीणमाता के पास उसका साधना स्थल था। रकतिया भैरुं तांत्रिक था जिसने जीणमाता की साधना में कई विघ्न दिये। जीण तो देवी के नाम से पूजे जाने लगी व रकतिया भैंरु का बालकों पर अधिकार हो गया।

अत: रकतिया मसान, रकतियावीर, रकतिया भैरुं के विषय प्रयोग में काले बकरे की बलि देवें।

मंत्र के अनुसार सिन्दूर लगी पूड़ी व मिष्ठान अर्पण करें।

(१५)

भीला खेरी री लट बसै हनुमत बसै पहाड़, चौड़ा चौराहे बसै कलुआ काली रात। जैतमाल हाथी चले, भौरवीर (भंवर वीर) अगुवान। चन्दन काठ की पीढई चिकचिकी धरी मरघटा जाय बैठ बाबा भीलट सब भूत करै किलकार गुरु की शकत मेरी भगत फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंत्र के अनुसार श्मशान में बाबा भीलट व कलुआवीर की पूजा कर बलि आदि प्रदान करें। फिर शत्रु के नाम का संकल्प कर प्रयोग, होम करें व पुत्तल प्रयोग करें।

(१६)

ॐ कामरु देश कामाक्षा देवी जहां बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी लौंग चढ़ावें, चुनै लोना चमारिन, लोहे काटे राजा काटे वज्र ले दुश्मन को काटे। ॐ कामाक्षा देवी धर मार पटकमार जहां भेजो तहांमार सांचो जोगी का हुकम वाजब, गुरु की शकत मेरी भगत जिहे मार तिहे लै आव, फुरै मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि हवन प्रयोग अथवा पुत्तल प्रयोग।

(१७)

ॐ हाथ लगे हथनिया बांह लागे करतार, बीर चार छाती लगे भैरों मांझ लिलार, कील कालादेव किलकिल करै, रकतमांस के भोजन बैरी मरघट में धरै। तीनपहर तीसरी घडी मारै मरघट मे डारे। मेरा बैरी तेरा भख, तीन पहर में कलेजा चख। मेरी शकत मेरी भगत फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यह प्रयोग श्मशान व पुत्तल प्रयोग विधि से संबंध रखता है।

(१८)

ॐ हनुमत वीर काटो शरीर जहां भेजो जाय, करो पीरा काया बार अमल कर वार अंजनी के दुलारे वज्र लै मार गदामार जो मोसे खोटी करै तेहीमार, भगवान के पूत सिला ले के मार, वज्र ले मार, हरदम हुकुम बजाव, सांचे गुरु का हुकुम बजाव। जिहै कहों तिहै मार लै आव। गुरु की शकत मेरी भगत दुहाई गौरा पार्वती की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

हनुमानजी की प्रतिमा को पंचोपचार से पूजा कर मंत्र जप करें। गुगल व जायफल व लौंग का हवन करें। पान का बीड़ा चढ़ाये। अगर माली पन्ना का होम करें तो हनुमानजी अधिक क्रोधित होते हैं। अत: रामनाम का जप अवश्य करना चाहिये।

(१९)

ॐ बारा भैरों बावन वीर सबके पैरों पड़ी जञ्जीर चौसठ जोगन खील दिया जूठ मूठ का गर्दन तोड़ा परीरात के गर्दन मोडा, जन्तर मंतर पढे कोई वैताल राखनवारा बन्द किया, रामचन्द के पायक वीर, ऐसा दो दण्ड जैसे दोड़े तीर फाट जाय वैरी की छाती, ना छोड़ पुत्र ना छोड़ नाती जल्दी जाव, आम की कोंपल काढ कलेजा लोहू चख, मर जाय वैरी मरघटवास। जैसा हम कहें वैसा दण्ड दो न दो तो माता अंजनी की आन।

महावीर के सिर पर दिया रखो। फिर उठाकर सामने रख दो। महावीर की १२१ उल्टी परिक्रमा करो मंत्र पढता जाये। आम की कोंपल पर मंत्र पढ़कर जहां डाले उसके पीड़ा होवे।

(२०)

खत की करूं पूजा, रकत का बहे पवन, उलट देखिया बैठ वीर, फलां का कलेजा चीर, नारसिंह वीर न चीरै तो हजरत सुलेमान पैगम्बर के तख्त में जकड़ा जावे। दुहाई नारसिंह महावीर की।

प्रयोग में नरसिंह पूजा प्रधान है। एक नारेल, एक नींबू, ५ तरह की मिठाई, चन्दन का बुरादा, फूलमाला अगरबत्ती सब लेकर जलावें, नदी के किनारे जाये। मंत्र को जप करे। चन्दन का बुरादा व अगरबत्ती जलावें। नींबू के अलावा सब सामान अर्पित करें। १२१ बार नींबू को मंत्रित करें, फिर घर आवे। उस समय नींबू को साथ लेते आवे। इस नींबू को जिसके नाम से जिसके घर दरवाजे पर डालेंगे वह व्यक्ति बाहर दरवाजे पर जैसे ही आयेगा दण्डित होगा।

(२१)

जाग रे मसान मेरे सुरति करि करि फलाने का बेटा फलाने के घर जाय जो न जाय तो तेरी मां बहिन की तीन तलाक।

जहां फलाने का बेटा फलाने के घर का अर्थ अमुक (पिता का नाम) बेटा अमुक (शत्रु का नाम) के घर जाय ऐसा पढ़ें।

प्रयोग करते समय एक शूकर दांत कब्र में गाड़ देवें, फिर रात्रि के समय २१ दिनों तक जप करें। इत्र तेल फुलेल चढ़ावें तो शत्रु अपने घर से बाहर नहीं निकलेगा। यदि दांत को वापस निकाल देवें तो व्यक्ति सामान्य हो जायेगा।

इस प्रयोग को सात्विक भले के लिये रुठी स्त्री के लिये भी कर सकते हैं। जैसे अमुक की बेटी अमुक नाम वाली अमुक नाम पति के घर जाय ऐसा पढ़ें।

(२२)

भीमसेन बलवारो कुन्ती मां को पूत हाथ खड्ग माथे तिरसूल जिसकी हांक पड़ी बड़ी दूर, हाय हाय कर लायै भूतन के खरवार, मेरी आन मेरे गुरु की आन, मेरी भगत, गुरु की शकत अब पहुचो रे बाबा भीमसेनजी को कहों उसको ले के आव, अब कहूं मुकरै तो जी ने जायो ती की आन, अब मुकरै तो गुरु की मांस खाये।

कष्णपक्ष में शनिवार रविवार को एकान्त में दीपजलाकर रात्रि में पान लौंग बतासा चढ़ाकर जप करें। तो शत्रु नाश ७ दिन प्रयोग में निश्चय होवे।

(२३)

ॐ दादू वीर दादू चौधरी चौदह विद्या का भण्डार, ऊपर जहमत जमाय तेरी ढीमरी, न ओ पतेरो चमड़ा, आठ मन की पन ही, नौमन का सूजा, मांगे बत्तीस पूजा। सुपरी चमरने नैता धोबी, ऊपर बाजा बाजे, मेरी आन गुरु की आन, ईश्वर गौरा पार्वती की आन। नरसिंह पाण्डे की आन, जा रे नारसिंह वीर दुश्मन को मार के आवेगा तो तेरे को सिन्दूर की पूरी देव।

दादू महाराज ने जयपुर जिले के नरेना गांव में अपनी गद्दी स्थापित की थी। वे निर्गुण संत थे, परन्तु तंत्र चमत्कारी के युग में उनके शिष्यों ने भण्डारा के, रसायन विद्या के, रक्षा कारक, शत्रु नाशक कई मंत्र दादू की आन व शपथ के आधार पर बनाये। दादू की पूजा में रोट चढ़ाया जावे तो उत्तम रहे। नारसिंह पूजा में पूड़ी, पकोड़ी, आदि चढ़ावें पुओं पर सिन्दूर अवश्य लगावें।

(२४)

॥ मूंठ चलाने का मंत्र ॥

ॐ नमो काला भैरों मसान वाला चौसठ योगिनी करे तमाशा रक्त बाण चलि रे भैरों कचिया मसान मैं कहूं तो सों समझाय सवापहर में धुनी दिखाय मूवा मुर्दा मरघटवास, माता छोडे पुत्र की आस, जलती लकडी धुके मसान भैरों मेरा वैरी तेरी खान सेलीसींगी रुद्रबाण मेरे वैरी को नहीं मारो तो राजा रामचन्द्र लक्ष्मण जति की आन।

किसी मुर्दे की हांडी जो मसान में ले जाते है उसको मसाण की अग्नि में लाल करे उसमे मुटठी भर उडद डाल कर उतार देवे। जो उडद फूल जावे उन्हे अलग करे तथा जो जल जावे उन्हे अलग करे। जले हुये उड़द को उठा लावें।

प्रातः काल बासे मुंह २१ बार पढ़कर जिसको मारे उसको खून की उल्टी होवे। तड़पने लगे। परीक्षा की तौर पर उड़द को किसी वृक्ष या पौधे पर डाले। पौधा मुरझा जाये तो मंत्र सिद्ध है अन्यथा नहीं।

॥ चौकी चढ़ाने का मंत्र ॥

(१)

ॐ नमो आं हां कंत जुगराज फटंत काया जिस कारन जुगराज मैं तो कूं ध्याया हांक मारता जुगराज आया गाजंत आया घोरंत आया सिरस के फूल लेता उड़ता आया और की चौकी उठाता आया आपकी चौकी बिठाता आया और का किवाड़ तोड़ता आया अपना किवाड़ मांडता आया बांध बांध किसको बांध भूत को बांध प्रेत को बांध उडंत को बांध राडंत को बांध जोगिनी को बांध देव को बांध आकाश की परी को बांध धरती को बांध डाकिनी को बांध खेचरी को बांध नो नाटक को बांध छल को बांध छिद्र को बांध कीया को बांध अपनी को बांध पराई को बांध मैली को बांध कुंचैली को बांध स्याह को बांध सफेद को बांध काली को बांध पीली को बांध रे गढ गजनी महम्मदा वीर विसर जाय मदखाय तेरा तीसों रोजा हलाल उलटि मार पटकि पछाड़ कब्जा चढाय मुख बुलाय शशि वाय शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधानम् - शुभ दिन प्रारंभ करें। गुगल, शहर व मुर्गे की कलंगी (विकल्प - केसर) का थोडा टुकड़ा होम करें, पान का बीड़ा, लौंग, इलायची, सुपारी नारेल ५ पताशे का भोग लगायें। ४१ दिन १०८ बार रोज जपें।

(२)

ॐ नमो नाहरसिंह नारी का जाया याद किया सो जल्दी आया पांच पान का बीड़ा मध की धार चाल चाल नाहरसिंह कहां लगाए ऐती बार देसू केसर कूं मुर्गा कीताज कड़ो देसूं मध की धार आराधो आयो नहीं कहां लगाई एती बार। देखूं नाहरसिंह वीर तेरा कोया अमुकी का घट पिण्ड बांध मेरे हाथ दीया मारता का हाथ बांध बोलता की जीभ बांध झांकता का नैन बांध हीया बूका बकडो बांध बोटी बोटी बांध पकड़ लटी पछाड़ मेरा पग तले ला पछाड़ चढतो देसूं केसर कूकड़ो उतरतां देसूं मधकी धार इतना दूं जब उतर जो खोल जो धोरे धार हमारा उतारा उतरजो और का उतारा उतरे तो नारसिंह तू सही चिण्डाल शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधानम् - प्रयोग समय अमुकी के स्थान पर साध्य का नाम लेवें।

उपरोक्त मन्त्र की है। मन्त्र के अनुसार मद्य की धार देनी है। ठीक करना हो तब उतारा उतार कर मद्य की धार देवे तथा मिठाई, मुर्गा, नारेल, लौंग, इलायची, सुपारी पान का बीड़ा अर्पण करें।

॥ विविध उच्चाटन, मारण, स्तंभन, विद्वेषण मंत्राः॥

(१)

ॐ नमो महाबल महापराक्रम शस्त्र विद्या विशारद अमुकस्य भुजबलं बंधय दृष्टिं स्तंभय स्तंभय अङ्गानि धूनय धूनय पातय पातय महीतले हुं फट्।

पहले १० हजार बार जप करें। फिर लटजीरा के वृक्ष की पत्तियों का रस निकाल कर अपने अस्त्र शस्त्र पर लगावें। युद्ध भूमि में शत्रु परास्त होवे। मलयुद्ध में जाते समय तेल अभिमंत्रित कर अपने अङ्ग में लगावें तो शत्रु परास्त होवे।

(२)

ॐ चण्डालिनी कामाख्या वासिनि वनदुर्गे क्लीं क्लीं ठः स्वाहा।

१० हजार जप कर मंत्र सिद्ध करें। फिर शनिवार के दिन भोजपत्र पर गोरोचन व कुमकुम से षट्कोण बनायें। बीच में शत्रु का नाम लिखें। चारों ओर 'स्वाहा मारय ह्रीं फट्' लिखें। फिर मंत्र का जप कर। यंत्रको अपने गले में डालें तो धीरे धीरे शत्रु का पराभव होगा।

(३)

ॐ ऐं ह्रीं महा महा विकराल भैरवाय ज्वालाक्ताय मम शत्रु दह दह हन हन पच पच उन्मूलय उन्मूलय स्वाहा।

श्मशान में जाकर भैंसे के चर्मासन पर बैठकर ७ रात्रि तक २१ माला नित्य करें। बाद में सवा किलो सरसों से होम करें तो शत्रु का मारण होगा।

(४)

ॐ कालरूप भैरव वहां कर चले वज्र कपाट, तो उत चले सार की कत्ती, लोहे की कमान, तहां बैठा कालिका पुत्र, भैरव बाण चल चल, भैरव कालिका माता की आन, ब्रह्मवाचा, विष्णुवाचा, शिववाचा, छोडि कुवाचा करै तो धोबी के कुण्ड में परै, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

१० हजार जप करें बलि देवें। साध्य की पुतली बनाकर मूंज की लकड़ी के धनुष बाण से उसे बींधे तो साध्य को पीड़ा होवे।

(५)

तेइस जवा खत्र भैरों करिया भैरव भूरे जटा, रुण्ड मुण्ड खेले मरघटा, कांसे का धनुआ, बांस का तीर, चल चल रे मसान, पांजर के पीर, सोलह अठारह नारे, जहां कालभैरव रखवारे, राम राम कह भैरव चले, तुरन्त काल की बैरी को करे, बैरी मारे भूमा डारे, फोड़ करेजो खाय, लास भूंज क्योरा करै, धुंआ देख घर आवे, इतनी करनी जो करे तो वीर भैरव बङ्गालिया सांचो कहावै। बिना करै फिर आवे तो मां का दूध पिया हराम करे।

कांस का धनुष व बांस का तीर बनायें। उसकी पूजा करें। सरसों के तेल का दीपक करें। शनिवार से नित्य २१ दिन तक १०८ बार मंत्र का जप करें। जौ तिलादि से होम करें।

शत्रु का मारण होय। पहली विधि की तरह पुतली प्रयोग करें तो और ठीक रहे ।

(६)

॥ उपद्रव पैदा करना॥

रविवार को जो मनुष्य मर जावे उसके पीछे श्मशान जावे। जहां मुर्दे को विश्राम देवे वहां की मिट्टी, तालाब मिट्टी एवं गधे के पेशाब से गीली कर गोली बनावे। उस गोली को जहां फेंके उसके घर में प्रेतोपद्रव से ईट पत्थर की वर्षा होवे। मुर्दे को पहले निमंत्रण देकर मिट्टी लावें, उसे घर में नहीं रखें।

॥ अन्य स्तंभन प्रयोगा:॥

॥ अग्नि स्तंभन मंत्रा:॥

(१)

मन्त्र - **उत्तरस्यां च दिक्भागे मारीचो नाम राक्षसः । तस्य मूत्र पुरीषाभ्यां हुतो वह्निं स्तंभय स्वाहा।**

विधि - अग्नि व वायु की गति जिस ओर हो, उस ओर खड़े होकर जिस नासिका से स्वर चल रहा हो उससे वायु खींचकर नासिका द्वारा जल पीना चाहिये। फिर जल अभिमंत्रित (अपने चुल्लु में या पात्र में) करें अग्नि में छोडें तो अग्निकाण्ड बन्द हो जायेगा। अग्नि शमन के साधन शीघ्र उपलब्ध हो जायेंगे।

(२)

मंत्रः- **ॐ शङ्कर हर हर अग्निं स्तंभय स्तंभय।**

७ बार पढ़कर फूंक मारने से या धूल पर पढ़कर मारने से अग्नि का स्तंभन होगा। अग्नि तो जलती रहेगी परन्तु वस्तु गर्म नही होगी। कढाई को धोकर लीपकर पुनः चढाने से वस्तु गर्म होगी।

(३)

आना बांधू, बाना बांधूं, बांधूं तुन्नक ताई, अस्सी कोस का गोला बांधूं, बांधूं ऐरन कडाही, इतनी बांध के मेरी टेक न राखो तो माता अंजनी की दुहाई।

हनुमानजी की मूर्ति के सामने धूप दीप देकर मन्त्र सिद्ध करें। १-२ कंकडों पर ७ बार पढ़कर मारने से कुम्हार का, आवा व कड़ाही व चूल्हा आदि गर्म नहीं होगा।

(४)

अगिनी थामो, अगिनी थामो, सेतवान रामेश्वर, थामो कालि काल थामो, वीरं का थामो, वार हनुमान का थामो, दोहाई विष्णु की दोहाई ब्रह्मा की।

विधि उपरोक्त है।

(५)

॥ अग्नि स्तंभन मंत्र ॥ (कडाही बांधना)

ॐ तैल थम्भो, ताई थम्थो, अग्निपूत वैश्वानर थम्भो, पार्वती का वार थम्भो, महादेवर खर्पर थम्भो, थम्भो मोरी सिद्धि, गुरु कै पावु शरण, कांउरु तोरी विद्या, नोना चमारनि पावु शरण, हात में फोरा न आवै सो मन्त्र, तेल थम्भो, तेल ताइ वैसन्दर थम्भो, जरहि ते कटाभार तेल बांधो, न उड़े जौ पाकै सो बैठे।

इस मन्त्र की सिद्धि से गर्म तेल में पूरी पकौड़ी हाथ से निकाल सकते हैं, फोड़ा नहीं होगा।

(६)

॥ कडाही बांधने का मंत्र॥

अगर कढाही बांधनी हो तो निम्न मंत्र करे-

ॐ नमो आदेश गुरु कूं सोना की हांडी रूपा का पात तले भेरु सहल करे ऊपर हनुमंत वीर गाजे, जलती बांधु बलती बांधु बांधु कडा तवाई हमारी बांधी नहीं बन्धे तो लाख लाख मेहमदा पीर की दुहाई।

सवा हाथ की पीर की चादर बनाये। इत्र, गुलाब व बतासे चढाये। लोबान का धूप करे। २१ माला ११ दिन तक करे। सात कंकरी मंत्र कर कढाही पर मारे तो वस्तु गर्म नहीं होवे।

(७)

॥ अग्नि स्तंभन प्रयोगः॥

मंत्रः- ॐ ह्रीं महिषमर्दिनी लह लह कठ कठ स्तंभन अग्नि स्वाहा।

कई बार आपने ऐसे लोगो को देखा होगा जिन पर आग का कोई प्रभाव नहीं पडता है। आग के कई तरह के खेल जैसे आग पर चलना जलते अंगारे मुँह में लेना शरीर पर आग लगा लेना दिखाते है।

इस मंत्र को १००० बार जप कर सिद्ध कर लेवे। आवश्यकता पडने पर कत्थे की लकड़ी को इस मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर हाथ में लेकर आग में प्रवेश करने से जलने का भय नहीं रहता है

॥ कढाही खोलने का मंत्र॥

ॐ नमो आदेश गुरु को जल छोडू जलवाई छोडू छोडू कडा तवाई शेष भट्टी की जाल छोडूं, आकाश ने पाताल छोडूं, सौ सौ चाडु चूको हमारी छोडी नहीं छूटे तो वीर हनुमार लाजै माता अञ्जनी का दूध पिया हराम करे।

॥ आगिया वैताल का मन्त्र ॥

ॐ नमो आगिया वैताल वीर वेताल। पैठी सातवें पाताल, लांव अग्नि की जलती झाल। बैठ ब्रह्मा के कपाल, मछली-चील-कागली गूगल हरताल। इन बस्तां लै, चोलि न चले तो माता कालिका की आन। शब्द सांचा पण्डि कांचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

होली की रात्रि में एक लक्ष्य जप करें। गूगल व हरताल से धूप देवें। चील, कागली तथा मछली का भोग लगाकर मन्त्र को सिद्ध करें। पश्चात् २१ कंकर को अथिमंत्रित कर जहां भी ड़ालें अग्नि प्रज्वलित होवे।

॥ जल स्तंभन मंत्र ॥

मंत्र:- **ॐ नमो भगवते रूद्राय जलस्तंभय ठः ठः ठः।**

जिस तरह व्यक्ति आग को स्तंभित करके उस पर से ऐसे गुजरते है जैसे पानी से निकल रहे हो उसी प्रकार कई ऐसे साधु महात्माओं को देखा गया है व सुना गया है कि वे पानी पर चलते है या चलते थे। वे जल को स्तंभित कर लेते थे जिसके कारण इस प्रकार चलते थे जैसे पृथ्वी पर चल रहे हो।

इस मंत्र को सर्वप्रथम एक लाख बार जप कर सिद्ध कर लेवे। उसके बाद साँप, नेवला, व घड़ियाल की चर्बी व डुण्डुम पक्षी की खोपड़ी को लेकर आपस में अच्छी तरह से पीसे व भिलाने के तेल में पकावें। इस तेल को लौह पात्र में रखकर कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि के दिन भगवान शंकर की पूजा करके उसमें १००८ बार घी की आहुति देवं फिर तेल को अपने शरीर पर लेप करें। लेप करने के बाद व्यक्ति जल पर इस प्रकार घुमेगा कि जैसे पृथ्वी पर टहल रहा हो।

॥ वर्षा स्तंभन प्रयोग: ॥

इस प्रयोग को अति आवश्यकता में ही करना चाहिये। क्यों कि प्रकृति के कार्य में अवरोध करने से देव दोष होता है। यज्ञ कार्य में विघ्न व विवाहादि में विघ्न की आशंका में इस प्रयोग को करना चाहिये। गायों को चारा, ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें।

विधि - एक पत्थर की शिला लेवें, उस पर कोयले से षट्कोण बनायें उसके मध्य में **'मेघ'** लिखें। खड्डा खोदकर शिला को उल्टी रख देवे उस पर अन्य पत्थर रखकर खड्डा भर देवें।

यदि बादल गहरे हो या वर्षा चालू हो गई हो तो आकाश में बादलों की ओर देखते हुये मन्त्र पढ़ें, कुछ समय में जिधर देखे उस दिशाओं से बादल फटने लगेंगें।

मन्त्र - **ॐ ह्लीं बगलामुखी समरुद्गणानां इन्द्रस्य वाचं मुखं पदं गतिं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।**

सकुशल कार्य होने पर शिला को निकालकर उसे दूध दही से धोकर शांति धारा देवे। दान संकल्प पूर्ण करायें। एक बार यज्ञ समय इस आधार पर शिला स्थापित कर, उसे निकाल दिया गया परन्तु गायों को चारा व कबूतरों का

अन्न का संकल्प गांव वालों ने पूरा नहीं किया। ३ वर्ष तक गांव के पास बादल आते परन्तु वर्षा नहीं हुई।

१० जून १९९८ को मेरी पुत्री का विवाह था। गुजरात से भयंकर तुफान उठा था। विघ्न की आशंका से हमारी धर्मपत्नि ने कहा कि विघ्न कम होने का कोई उपाय होतो करें, मैने कहा कि यह साधारण विघ्न नहीं है जो सभी मनुष्यों में होगा वही हमारे साथ होगा। फिर मैने घर के आंगन की कच्ची जमीन में इस प्रयोग को किया। तूफान का रुख जैसलमेर से ही कुछ परिवर्तित होने लगा, गति धीमी होने लगी और संकट टल गया। दूसरे दिन उस शिला को निकाला गया तो डेढ-दो इंच मोटी मार्बल की शिला, दो टुकडो में खण्डित मिली। विघ्न जैसी आशंका थी वैसा नगण्य रहा। अतः ऐसे कार्य में प्रायश्चित्त हेतु जप दान अवश्य करना चाहिये।

॥ मेघ स्तंभन मंत्र ॥

मंत्रः- ॐ नमो भगवते रुद्राय जल स्तम्भय स्तम्भय णः णः स्वाहा !

इस मंत्र का प्रयोग आवश्यकता होने पर ही करे क्योंकि बरसात को रोकना प्रकृति के विरुद्ध है। होली, दिपावली के दिन इस मंत्र को १०००० बार जप कर सिद्ध कर लेवे। प्रयोग करते समय चिता की लकड़ी का कोयला ले आवे। आवश्यकता होने पर इस कोयले को सुलगाकर इस मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर उसे ईट पर रख देवे। ऐसा करने से मेघ स्तम्भित हो जाते है बरसात रुक जाती है।

॥ औला पत्थर निवारण मन्त्राः ॥

(१)

ये आदल चलै, बादल चलै, जाय परा सीता के वारी, सीता दीहिन शाप, जाय पर समुद्र के पार, वाचे महुआ, वाचे चार हांके हनू, वरावै भीम, ओर न परे हमारे सीम, ईश्वर महादेव की दोहाई। ॐ नमः शिवाय।

(२)

सामनि मन भावनि कुवां का पानी, जाय सिर कै, गागरि फुटिगें, बाती कहत लजाय, पत्थर कै पानी, पानी कै धूरि, घोरि धारि वरषा वै इन्द्र, हांके हनू बरावै भीम, ओर न परे हमारे सीम, ईश्वर महादेव की दुहाई ॐ नमः शिवाय।

(३)

उत्तर दिशा मोहिनी वारी, जहां रहै हेम कैठारी, हांकै हनू, बरावै भीम, और न परे हमारे सीम, ईश्वर महादेव की दुहाई, ॐ नमः शिवाय।

जब ओले गिरने ही वाले हो तो इन मन्त्रों को आकाश की ओर देखते हुये जोर जोर से पढ़ें।

पहले दिवाली की रात मंत्र पढ़कर सिद्ध करें, लौंग लोबान की धूनी देवे।

॥ रक्त स्तम्भन मंत्र ॥

मंत्रः- वज्रयोगिनी वज्र किवाड़, बजरी बांधू दसों द्वार। झाड़ो झडे न लिंगी, करे

तो वज्रयोगिनी का वाचा फुरे।

शुभ मुहुर्त्त या होली दिपावली को इस मंत्र को १०००० बार जप कर सिद्ध कर लेवे। सिद्ध होने के बाद कुंवारी कन्या के हाथ से काता गये सूत की ढाई पूनी का डोरा लेवे उस डोरे पर सात गांठे इस मंत्र से अभिमंत्रित कर लगावे। फिर जिस स्त्री का मासिक स्त्राव नही रुक रहा हो उसके कमर इस डोरे को बांध देवे तो मासिकस्त्राव रूक जाता है।

॥ रजोस्राव बन्द करना ॥

मंत्रः- ठिम ठिम अमुकी श्रोणितं एषि एषि धूतं ह्रीं स्वाहा।

लाल रंग के कच्चे सूत के १४ तागों में २१ गांठ मन्त्र पढकर बांधे, असामयिक रक्तस्राव बन्द हो जायेगा।

॥ शस्त्र स्तम्भन मंत्र ॥

मंत्रः- ॐ धार धरा अधर धार धार, बांधूं सात बार। कटे न रोम ना भीजे चीर, खांडा की धार ले गयो हनुमन्त वीर। शब्द सांचा पिण्ड़ कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

होली दिपावली या ग्रहणकाल में इस मंत्र को १०००० बार जप कर सिद्ध कर लेवे। थोडी मिट्‌टी लेकर इस मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर इस मिट्‌टी को अपने शरीर पर लगावे। यदि किसी भी धार युक्त शस्त्र या तलवार से उसके शरीर पर वार किया तो साधक के शरीर को किसी भी प्रकार की क्षति नही होती है शस्त्र की धार स्तम्भित हो जाती है।

अथ विविध मन्त्र साधना प्रयोगाः

॥ अथ प्रेतसाधनम् ॥

मंत्रः- **ॐ श्रीं वं वं भुं भूतेश्वरि मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।** इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- शौचका बचा हुआ जल मूलनक्षत्र से प्रारंभ करके बबूल के वृक्ष में डाला करे। उस वृक्ष के नीचे बैठकर अष्टोत्तरशत मंत्र प्रतिदिन जपे इस प्रकार छः मास तक करे पीछे एक दिन केवल मंत्र जपे और जल नहीं डाले तो प्रेत सम्मुख आकर पानी का मांगेगा उस वक्त तीन वचन लेवे कि याद किये पर आकर जो काम पड़े सो करे पीछे जल देवे तो भूत सेवा में रहे सत्यमेव॥

अन्य मंत्र - **सूनसान सोखता मसान जागे भूत नाचे शैतान।** इत्येकोनविंशत्यक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- श्मशान से मनुष्य का हाड़ लावे पीछे एकांत स्थान में शिवजी के मंदिर के भीतर बैठ उस हाड़को आसन के नीचे देवे। अर्द्ध रात्रि में मंत्र का पांच हजार जप करे तो पाँच सात दिन में ही चरित्र दीखने लगेगा मद्य मांसादिक बलि के वास्ते सदैव पास रख लिया करें नहीं मालूम किस दिन आकर मांग बैठे जब चालीस दिन में प्रेत सम्मुख आवे और बलि मांगे तब तीन वचन लेकर बुलाने पर हाजिर होऊंगा अथवा उसकी शिखा लेकर मद्य मांस की बलि देवे तो सदैव पास रहे जो काम हो सब करे। इस मंत्र की सिद्धि एक ब्राह्मण को थी उसके बड़े बड़े आश्चर्य कारक काम देखे गये उसने कृपा पूर्वक प्रदान किया है॥

॥ वेताल साधनम् ॥

प्राकृतग्रंथे मंत्रो यथा- **ॐ क्षाँ क्षाँ ह्रीं ह्रीं फट्।** इति षडक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- श्मशाने लक्षं जपेत् वेतालसिद्धिः, बलिं दद्यात्।

॥ अथ डाकिनी साधनम् ॥

ॐ नमो चढौ चढौ सूरवीर धरती चढ्या पाताल चढ पग पाली चढ्या कुण कुण वीर हनुमंत वीर चढ्या धरती चढ पगपान चढी एडी चढी मुरचै चढी मुरचै चढी पिंडी चढी पिंडी चढी गोंडा चढी गोडां चढी जांघ चढी जांघ चढी कटि चढी कटि चढी पेट चढी पेटसूं धरणी चढी धरणी सूं पांसली चढी पांसलीसूं हिये चढी हियासूं छाती चढी छातीसूं खवा चढी खवासूं कंठ चढी कंठसूं मुख चढी मुखसूं जिह्वा चढी जिह्वासूं कान चढी कानसूं आंख चढी आंखसूं ललाठ चढी ललाटसूं सीस चढी सीससूं कपाल चढी कपालसूं चोटी चढी हनुमान नारसिंह चले वीर समदवीर दीठ वीर आज्ञावीर सोसंतावीर ये वीर चढे। इति मंत्र।

अस्य विधानम्- ग्रहण की रात्रि को चौका लगाकर घृतका दीपक जलाये। एक पैर से खड़ा होकर एक सौ आठ **मंत्र पढ़े** तो डाकिनी आवे उसका देखकर डरे नहीं तो सम्मुख बात करे पीछे जो जो काम कहोगे सो करेगी॥

॥ क्षोभिणी पिशाचि ॥

मंत्रः- **ॐ नमः उच्छिष्ट चाण्डालिनि क्षोभिणी दह दह द्रव द्रव आनापूरी श्रीभास्करी नमः स्वाहा।**

विधिः- २२ हजार एक सौ तेईस मंत्र जप कर होम करे तो शत्रु का क्षोभण होवें पैरों में पड़े।

॥ अथ श्मशानोत्थापन प्रयोगः॥

(प्राकृत ग्रंथे मंत्रो यथा)- **ॐ नमो आठ काठ की लाकड़ी मंजबानी बान। मुवा मुरदा बोले नहीं तो माया महावीर की आन। शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।** इति चतुष्पंचाशदक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- मद्य सेर जातीपुष्प, लोबान की धूप, बालछड़, छड़ीला, कपूर काचरी, अगर लेकर मसाण में **जावे**। मुरदे को देखकर दारूकी धर दे धूप खेवे फल बिखेर देवे। सुगंध द्रव्य चढ़ावे पीछे दूर आकर मंत्र पढे मद्य **की धार देवे**। मसाण जागे हाहाकार मचे सिद्ध हो सही।

॥ बावन वीर का मन्त्र ॥

(भूत को बोतल में बन्द करने का मंत्र)

ॐ नमो पैठाण पुर पैठण देव, अंगजित मानव अंगजित वैरी दलन घरद वैरी तणे उतारै मरद तिण नगरी राज सालवाहन राज करे, तेह गणो पञ्चास वीर कुण कुण। वायलो, खुदियउ, तलपहर, नोडितोड, सूलभञ्जन, मुसाण लोटन, गढपाडन, समुद्रतारण, समुद्र सोखन, लोहभञ्जन, सांकल तोड़न, विषखापरियो, रुण्डमाल, आगियो, वायखील, यमघण्ट, काल, अकाल, अग्निकांति, विषकांति, रगनिया, कोहलो, कालियो, कालवेल, कारघरट्ट, इन्द्रवार, यमवार, देवारी, दुरतारी, हरारी, झापड़ो, माणभद्र, कापडिया, केदारो, नारसिंह, गोरलो, घरट, कण्टक, बग, महाबग, संतोष, महासंतोष, भमर, महाभमर, सहस्त्रार, सातसङ्ग, क्षेत्रपाल, भूतवाण, शाकिनीमार, वेदरति भंजन, इत्येवमादिक, पचास वीर, एकसमुराजा शालिवाहन, बावनुमुराजा आद्रकुमार, अहो बावन वीर, एह पात्र के पिण्ड पीड़ाकर, न करे तो बावन वीर की आज्ञा फुरै, एक पात्र में बन्द डाकिनी, बन्द शाकिनी, बन्द भूत प्रेत, बंद पिशाच, बन्द झाड़ झोटङ्ग बंध, दुश्मन घाव घाले, मार मार तोड़ तोड़, त्रिशूल से तोड़, अघे बावन वीर ए पात्र को पीड़ा कर, पीड़ा न करे तो बावन वीरा की री आज्ञा फुरै, जः जः जः ठः ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र से भूत प्रेत को बोतल में बंदकर निम्न मन्त्र से ढक्कन लगायें -

ॐ हनुमान रगत्या भैरुं, चोसठ जोगणी, बावन वीर चौकी हनुमान की, ज्वाला माई की चौकी सही।

॥ गुहिया वेताल मंत्र ॥

मन्त्र - ॐ गुहिया वैतालाय नमः।

रविवार को काली गाय का गोबर भूमि पर नहीं पड़ने से पहले उठावे, जंगल में एकान्त में जाकर उसके ४ कण्डे बनायें। गाय का दूध पीवें, बिना नमक का खाना खावें, ब्रह्मचर्य से रहें। जब शौच लगे जंगल में जहां कण्डे थे वहां एक कण्डे पर दाहिना पैर दूसरे पर बाँया पैर रखे एक कण्डे पर शौच करें, एक पर पेशाब करें। तीन रविवार तक करें। तीसरे रविवार को श्मशान की अग्नि लाकर पाखाने व पेशाब वाले कण्डे को जलाकर भस्म अलग रखें। शत्रु के घर में विष्ठा वाले कण्डे की राख डालने से उसे विष्ठा ही विष्ठा दिखाई देगी। जब ठीक करना हो उस समय पेशाब वाले कण्डे की राख ड़ाल देवें।

॥ कलवा मंत्र प्रयोगाः ॥

(१)

ॐ काला कलवा कालीरात भैंसासुर पठाऊं आधी रात जेरुन आवे आधीरात तालमेलु करे सगलरात वाप हो काला कलवा वीर अमुकी स्त्री बैठाकूं उठाय लाय सूता कूं जगाय ल्याव खड़ी कूं चलाव ल्याव पवन वेग आणि मिलाय आपणि बलि मुक्ति लीगै अमुकी स्त्री आणि दीजै आवै तो जीवै नहीं तो उर्द्ध फाटि मरै।

भैंसा गुगल की गोली घृत के साथ १०८ बार बैर की लकड़ी के साथ जला कर होम करें तो वशीकरण होवे।

(२)

ॐ नमो काला भैरुं कलवा वीर मैं तोहि भेजु समुद्रा तीर अंग चटपटी माथै तेल काला भैरुं किया खेल कलवा किलकिला भैरुं गज गजाधर में रहे न काम सवारे रात्रि दिन रोव तो फिरे तो जती मसान जहारै लोह का कोट समुद्र सी खाई रात्रिदिन रौवता न फिरै तो जती हणमंत की दुहाई शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

श्मशान की राख को मंत्र कर जिसके सिर पर डाल देवे उसका उच्चाटन हो जाता है।

(३)

कारो कलुआ काली रात जा बैठ वैरी की खाट मारो बैरी करो बैरनी रांड, आंगू बैरी पांछू खाट, ओदी तीती लकड़ी बार, धुंवा देख घर आव, हाथ में जीव लै

आव गुरु के पास, मेरी भगत गुरु की सकत अब देखो रे अजैपाल ये ना जाय तो बहन भांनजी की आन।

पीपल के पत्ते पर पुतरिया लिखकर १०० बार मंत्र पढ़ें। काली फरिया तथा नारियल से पूजा करें। फिर उड़द पर मंत्र पढ़कर पीपल के पत्ते पर रखें और शत्रु के दरवाजे में खोंस दे तो शत्रु को पीड़ा होये। अजैपाल के गांजा चढ़ावें।

(४)

ॐ कारो कलुआ कारी रात जा बैठ वैरी की खाट मारो बैरी करो बैरनी रांड, आगूं लकड़ी पाछूं खाट, ओदी तोदी लकड़ी बार धुंआं देखकर घर आव हाथ में जी लै आव गुरु के पास, मेरी भगत गुरु की शकत अब देखो बाबा अजैपाल पूजा लै ना जाय तो बहन भानजी की आन। खटोला न मुकरै (मुरकै)

विधि – झाड़ू के तिनकों से खटोला बनावें और कुवारी कन्या द्वारा काते सूत से उसे बुने एक अण्डे पर पुतरिया बनायें और एक मूर्ति बेसन की बनायें इसे खटोले में रखें। अर्धरात्रि में श्मशान में पूजा करें। पूजन वास्ते सूजी, सुपारी, ५ हल्दी की गांठे, कोयले का टुकड़ा, १ चूड़ी, काला कपड़ा, ईगुर, ४ ध्वजा, १५ नीबूं, सिन्दूर, लौंग जोड़ा, पान १ तथा उड़द की दाल अर्पित करें और जप करें।

जब खटोला हिलने लगे तो मद की धार देवें, मुर्गा काट दें। यह खटोला उड़कर शत्रु के घर पर जाकर शत्रु का मारण करेगा।

ध्यान रहें यह क्रिया मूठ चलाने की है। अगर शत्रु जानकार हो तो उसे वापस लौटा सकता है अतः स्वयं की रक्षा का प्रयोग अवश्य करें।

॥ वीर साधना मंत्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को सेंदुरिया चलै ऐसा वीर नरसिंह चले ऐसे वीर हनुमन्त चले लट छोड़ मरे पाय परै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंगल के दिन अपने शरीर पर उबटन करें। उस उबटन से मनुष्य की पुतली बनायें। १६ बार मंत्र बोल कर १६ टींकी सिन्दूर की लगावै १६ दिन तक रोज करें। १०८ बार मंत्र रोज जपे। ऐसा करने से यक्ष प्रकट होता है। उससे वचन ले लेवें।

॥ कालाभैरव मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरु कूं काला भैरुं कपिला जटा भैरु फिरे चारों दिशा का भैरु तेरा कैसा भेष काने कुण्डल भगवा हाथ अंगोछी ने माथे ममड़ो मरे मशाने भैरुं खड़ो जहं जहं पठउ तहं तहं जाय हाथ भी जी खड़ खड़ खाय मेरा वैरी तेरा भख काढ़ कलेजा वेगा चख डाकिनी का चख शाकिनी का चख भूत का चख विगर चख्या रहे तो काली माता की सेजा पर पांव धरे। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

२१ दिन तक काली माला से जप कर बलि देवें।

॥ अथ भूतक्षिणीप्रसन्नता कारकं यंत्रम्॥

तं	तं	तं	तं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

भूत प्रसन्नता यन्त्र

इस यंत्र को सिरस पेड़ के नीचे बैठकर एक लक्ष लिखने से भूत प्रेत देवी यक्षादि अत्यंत प्रसन्न होते है इसमें संदेह नहीं

॥ अथ स्वप्ने भूतदर्शकं यंत्रम्॥

इस यंत्र को गिलोय के रस से भोज पत्र अथवा कागज पर लिखकर गूगल की धूप देवे पीछे सिरहाने धरकर सो जावे तो स्वप्न में भूत दीखेंगे इसमें संदेह नहीं॥

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	८	९	१
४	६	९	१२

स्वप्ने भूत दर्शक यन्त्र

॥ अथ देवी प्रसन्न यंत्रम्॥

।।।	=	।।।	≡
।।।।	≡	।।।।	।।
≡	।।	१	।
।।।	=	–	=

देवी प्रसन्नता यन्त्र

इस यंत्र को आम्रवृक्ष के नीचे सवा लक्ष लिखे तो देवी प्रसन्न हो दर्शन देवे मनचिंतित कार्य करे॥

॥ अथ पीर विरहना मंत्र प्रयोग॥

(मंत्रो यथा प्राकृत ग्रंथे)- **पीर विरहना फूल विरहना धुधुंकारै सवा सेर का तोसा खाय अस्सी कोस का धावा करे सात सै कुतक आगे चले सातसै कुतक पाछे चले छप्पन से छूरी चलें बावनसै वीर चलें जिसमें गढ़ गजनी का पीर चले और की ध्वजा उखाड़ता चले अपनी ध्वजा टेकता चले सोते को जगावता चले बैठे को उठाता चले हांथों में हथकड़ी गेरे पैरों में पैरकड़ी गेरे हलालमाहीं दीठ करे मुरदार मांहीं पीठ करे कलवाननवीकूं याद करे ॐ ॐ ॐ नमः ठः ठः स्वाहा।** इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- ग्रहण की रात्रि से प्रारंभ करके नित्य १०८ मंत्र जपे चिमेली पुष्प चढ़ावे सवा सेर हलवे का भोग धरे तो चालीस दिन में पीर विरहना हाजिर होगा उस वक्त डरे नहीं तो जो काम कहोगे सो करेगा सदा पास में हाजिर रहेगा॥

॥ अथ महम्मदा पीर साधनम् ॥

मंत्रो यथा- **विस्मिल्लाहिर रहेमानिरहीम पांय घूघरा कोट जंजीर जिस पर खेले मुहम्मदा पीर सवा मनका तीर जिस पर खेलता आवे मुहम्मदावीर मार मार करता आवे बांध बांध करता आवे डाकिनी को बांध पलीत को बांध नौ नरसिंह को बांध बावन भैरो बांध जातका मसाण बांध गूंगिया पीतिया धौलिया कालिया मसाण बांध बांध कुंआ बावड़ी लावो सोती को लावो पीसती को लावो पकाती को लावो जल्द जावो हजरत इमाम हुसेन की जांघ से निकाल कर ल्यावो बीबी फातमाके दामन सू खोलकर ल्यावो नहीं लावे तो माता का चूखा दूध हराम कहलावे शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।** इति मंत्रः।

इस मंत्र को नौचंदी जुमे रात की संध्या से प्रारंभ करके प्रतिदिन दस दफे पढ़े लोबान की धूप देता जावे तो इक्कीस जुमे रातों में हाजिर होगा जो काम कहोगे सो करेगा किसी रोगी के ऊपर पढ़कर फेक देवे तो आराम हो जायेगा॥

॥ अथ प्रेतदर्शक तंत्रम् ॥

(प्राकृते ग्रंथे)- वागल को लाकर उसको पारा पिलावें। जब विष्ठा के साथ पारा बाहर आ जावे, तब उसके बराबर शीशा मिला काजल करके नेत्र में आंजने से भूत प्रेतो का दर्शन होता है। वह प्रेतादिक उसके कहे हुए काम को करेंगे और सौ कोस तक की बात पूंछोगे सो सच्ची सच्ची बतावेंगे।

(अन्यत्)- **सूरमां राखे योनि में, एक दिवस रजमाहि। ताको होम अग्नि में भूत दृष्टि आहि।**

अन्यत्- **चिरमीरस आंखन में आंजे। दीखे भूत भयंकर साजे।**

****

॥ पितृदर्शक तंत्रम् ॥

रविवार के दिन गधे का मूत्र लावे पृथ्वी में पड़ने देवे नहीं उसको गूगल की धूप देकर रात्रि के समय नेत्रों में अंजन करे तो पितृ देव दिखाई पड़ेग।

(अन्यत्) – **बेलपत्र रस पीसिये, गुंजामूल मंगाय। आँज आंख में देखिये, आवे भूत लखाय।**

अन्यत्– **अंकोलस्य तु तैलेन दीपं प्रज्वालयेन्नरः। दृश्यंते निशि भूतानि खेचाराणि महीतले॥**

॥ अथ देवी देवता दर्शक तंत्रम् ॥

(प्राकृत ग्रंथे) – **अंकोल के फलका तेल निकाल के तगरके फलका चूर्ण मिलावे, पीछे नेत्रों में आंजने से जहां दृष्टि पड़ेगी वहां ही देवी देवता दीखेंगे। पश्चात् केवल तगर के तेल का अंजन करने से पुनः मानुषी दृष्टि को प्राप्त हो जाता है॥**

॥ अथ भैरव दर्शक तंत्रम् ॥

अमावस्या की रात्रि को अपना वीर्य निकालकर सुखावे। सूखने पर पीसकर रख लेवे जब दूसरी अमावस्या आवे उस दिन संध्या समय जहां भेड़ बकरियां आती हों वहां जाकर अंजन करे तो भैरव बकरे पर सवार हुआ दीखेगा। तब उसी वक्त उसकी कुलह (टोपी) उतार लेने से भैरव पास आकर अपनी कुलह को मांगता है इस वास्ते उस कुलह को छिपा लेवे और देवे नहीं जब तक वह टोपी साधक के पास रहेगी वह वशीभूत होकर साधक के पास रहेगा जो काम कहोगे तुरंत कर लावेगा अगर तीन वचन देवे कि याद करते ही आऊंगा तब टोपी को दे देवे।

(अन्यत्) – रवि शनिवार को जब तारा टूटे उस वक्त पगड़ी में गांठ दे इसी तरह सात तारा टूटने तक सात गांठ देवे पीछे गूगल की धूप दे कुएं पर जावे जब पनहारी घड़ा लेकर चले तब एक गांठ खोलने से उस पनहारी की मटकी फूट जायेगी इसी तरह करता रहे जो मटकी न फूटे अथवा जिसका गिरगिना फूटने से बाकी रह जावे उसको लाकर संध्या के समय जहां भेड़ बकरियां आती हों वहां जाकर उस घड़े के गिरगिने के भीतर से दृष्टि करके देखे तो भैरव बकरे पर सवार नजर पड़ेगा उस वक्त गिरगिने के भीतर हाथ डालकर उसकी टोपी उतार ले और गिरगिने को फोड़ दे भैरव टोपी मांगे तो न देवे। सदा पास रहेगा जो काम कहोगे सो करेगा ऐसा तीन वचन लेने से टोपी दे देवे तो हरज नहीं।

॥ पूर्वजन्म दर्शक तंत्रम् ॥

अंकोल बीज के तेल में घृत मिलाकर पुष्य नक्षत्र में काजल पाड़े इस काजल को नेत्रों में लगाकर ध्यान करने से पूर्व जन्म दीखता है।

अभिचार निवारक, टोटका नाशक मन्त्र

(१)

ॐ हनुमान बारा वर्ष का ज्वान हाथ में लड्डू मुख में पान हांक मारता आय बाबा हनुमान मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

(२)

ॐ जय हनुमान पहलवान बारा वर्ष का ज्वान हाथ में लड्डू मुख में पान डाकिनी शाकिनी चण्डी चुड़ैल को मार जादुगर की जुबान को बांध बारह बारह चौबीस कोस की हद में कोई जादू टोना मूठ आई बलाई को मारकर दूर नहीं करेगा तो माता अंजनी का पुत्र नहीं कहलायेगा हरि ॐ मरकट मरकटाय अंजनी नन्दनाय पवन पुत्राय मम कार्य करणाय ठः ठः ठः स्वाहा।

मंगलवार, शनिवार रविवार से हनुमानजी के पास रोज ५१ या १०१ पाठ २१ दिन करें। लौंग गुगल का धूप करें। पताशा व लड्डू का भोग लगाये पान का बीड़ा चढ़ावें।

(३)

हाथ में बसे हनुमान भैरों बसे लिलार जो हनुमन्त को टीका करे मोहे जग संसार जो आवै छाती पांव धरै बजरंग वीर रक्षा करे महम्मदा बीर छाती टोर जुगुनियां बीर सिर फोर उगुनिया बीर मार मार भास्वन्त करे भैरों बीर की आन फिरती रहे बजरंग वीर रक्षा करे जो हमारे ऊपर घात डाले तो पलट हनुमान वीर उसी को मारे जल बांधे थल बांधे आर्या आसमान बांधे कुदवा औ कलवा बांधे चक चक्की आसमान बांधे वाचा साहिब साहिब के पूत धर्म के नाती आसरा तुम्हारा है।

यह मंत्र रक्षा कारक तथा शत्रु नाशक है।

(४)

आगे दो झिलमिली पीछे दो नन्द रक्षा सीताराम की रखवारे हनुमन्त हनुमान हनुमन्ता आवतमूठ करौ चौखण्डा सांकर टोरो लौह, की फारो बजर किवार अज्जर कीलें बज्जर कीलें ऐसे कीलें रोग हाथ से ढीलें, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो मंत्र।

(५)

ॐ ह्रीं ब्रीं विकट वीर हनुमन्त वीर मन्त्र को मारो उलट दो पाताल काल जाल

संघारो जो धन जहां से आवे वहीं को जावे, टोनहिन का टोना, ओझा को दण्ड द्रोही शत्रु को मारो, न मारो तो माता अंजनी के बत्तीस धार का दूध हराम करो सीता के सिर चोट पड़े हुं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से झाड़ा देने व सरसों मंत्र पर रोगी पर मारने से लाभ होवे।

(६)

ॐ काला भैरों कपिलो जटा रात दिन खेलै चौपटा काला भैरुं भस्म मुसाण जेहि मांगू सो पकडी आन डाकिनी शङ्खिनी परसिहारी जराव चढन्ती गोरखमारी छोडि छोडि रे पापिणी बालक पराया गोरखनाथ का परवाना आया।

इस मन्त्र से जल पिलाने व झाड़ा देने से बालक को आराम होवे।

(७)

अंजनीकुमार लाल मंत्र से आवाहन करो डाकिनी औ टोना जादू मंत्र बांधि ले लंगूर सो, अंजनी तिहारी मैया यती हनुमान लाल आओ सुनत बेग में नशावो मंत्र ब्रह्मसों, कायाबांधो छाया बांधो, माया बांधो ब्रह्म भूत बेग में लंगूर फहरात आवो आजु सों मंत्र सत्य राम सदगुरु को बन्दो पांव श्रवण देव अंजनि अकासाहु को कामिनी सों।

(८)

ॐ नमो बजर में कोठा बजर में ताला बजर में बांधू दशो दुआर बजर की चोकड़ दुवार जहां से आया जहां ही जाये जिसने भेजा उस पे चढ़ जाये। इस पिण्ड की मुठी लोना चमारी वीर वेताल इस पिण्ड को पूछ करे तो पिता महादेव का आदेश श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरे।

शनिवार के दिन २१ पेड़ों के पत्ते, २१ कुये या हेण्डपम्प का जल चौराहे की धूल तथा घानी का तेल एक कलश में इकट्ठा करें। उस पर १०८ बार मंत्र पढ़ें। सूर्यास्त पहले जल रोगी के सिरहाने रखें। सोते समय पत्तों से ७ बार मंत्र पढ कर छींटें देवे, आई बलाई, बांधा दूर होवे।

(९)

ॐ काकलद कपाट वज्र परबत लङ्क अलक पलङ्का फलक फलीक यती की वाचा। गुरु की सोचा सत्यों। सब मारकाट दरूं खेत खरिहान। तेरे नजर से भागे भूत ले जान आदेश देवी कामरु कामाक्षा माई आज्ञा हाण्डी दासी चण्डी दोहाई।

मंत्र से सरसों मारे तथा सरसों का होम ७ दिन तक करें।

(१०)

ॐ गर्जन्ता घोरन्ता इतनी छिन कहां लगाई सांझ की बेला लौंग सुपारी पान फूल

इलायची धूप दीप रोट लंगोट फल फलाहार मो पै मांगे, अंजनी पुत्र प्रताप रक्षा कारण बेगि चलौ लोहे की गदा कील चं चं गटका चक कील बावन भैंरो कील मरी कील मसान कील प्रेत ब्रह्मराक्षस कील दानव कील नागकील साढ बारह तापकील तिजारी कील छल कील छिद्र कील डाकिनी कील साकिनी कील दुष्ट कील मुष्ट कील तन कील काल भैंरो कील मंत्र कील कामरु देश के दोनों दरवाजा कील बावन वीर कील चौसठ जोगिनी कील मारते का हाथ कील देखते के नयन कील बोलते की जिह्वा कील स्वर्ग कील पाताल कील पृथ्वी कील तारा कील कील बे कील नहीं तो अंजनी माई की दोहाई फिरती रहे जो करे वज्र की घात उलटे वज्र उसी पैं परे, छात फार के मरै।

ॐ खं खं खं जं जं जं वं वं वं रं रं रं लं लं लं टं टं टं मं मं मं महारुद्राय नमः। अंजनी पुत्राय नमः हनुमताय नमः वायु पुत्राय नमः रामदूताय नमः।

हनुमान की तस्वीर के आगे पान फल फूल मिठाई लौंग इलायची लाल लंगोट चढ़ावे। १००० पाठ करें। गुगल धूप करें। शत्रुनाश तथा टोना टोटका का दमन करे।

(११)

ॐ नमो महावीर हनुमंत वीर शूरवीर धाय धाय चलो वीर मूठ मारि चलावो तीर मुक्का मार करेजा फार दो, दोहाई भगवान की जय बजरङ्ग बली की।

(१२)

ॐ नमो याशा असरफ सबजा निशान गुरु ज्ञान के बदले से जादू किहा तमाम, नान्हक हुये है जब से मुरशत कलप से जान उरदी किचे मसान से कहते हैं राम राम हनुमत का दुम लपेट दे भैंरों का कान बांध जिन्नात वीर देव के खिजमत मदे मुदाम मुन्दरा को बन्द किया बस भागा नान्हक बड़े मुछन्दर गोरख में क्या सकस रख दिया सुरुवां को आसुन्दर अरजुन बरान पांडे का हाथ दुत परस्त मारे जबर ठोकर जावे जमीन में धंस। ऐसा जरब लगाइए के बाजे धमस राम का बान लक्ष्मन सीता का बान ध्यान तीर बांध कमान बांध दोहाई गुरु गोरखनाथ की।

इस मन्त्र में हिन्दु मुस्लिम तंत्र देवताओं का संगम है। पहले तो मुस्लिम देव की बड़ाई कर दी गोरखनाथ को छोटा बता दिया फिर गोरखनाथ जी की दुहाई दे दी गई है। अर्जुन पाण्डे के गीत लोकोचार में हरियाणा में गाये जाते हैं। अतः मन्त्र पर ही श्रद्धा रखें तर्क वितर्क में नहीं जायें। (अर्जुन पाण्डव को भी अर्जुन पाण्डे नाम से कहा जाता है।)

(१३)

कलुई कलुई कलुई राति मैं किलकारौं आधीरात कालूवीर आवै, कालू वीर जाय थै कलेज (अमुक नाम) की खाय दोहाई काल भैरों की दोहाई नारसिंह

भैरों की दोहाई नारसिंह भैरों की।

९ दिन तक १ माला रोज जपे ५० ग्राम लोहबान का धूप नित्य करें। एक नींबू की नित्य बलि देवे। यह बाबा नीलकण्ड मैहर का अपनी धूणी का लोकिक प्रयोग है, अतः उनके निमित्त १ चिलम गांजा रोज देवे। घी गुड़ का हवन करें। सभी सामान्य कार्यों हेतु यह प्रयोग सही है।

(१४)

ॐ बाबा बनखण्डी साहेब जी मात्रा। ॐ बाबा बनखण्डी बन के राय चोर ना मूसे बाघा ना खाए। अमरा किला अमर के खाए पेट फाड़ बाघ मरि जाए छिन्न दाहिने छिन्न छिन्न आगे होय अचल गोसाईं सुमिरिए काया विघ्न ना होय, ए बन छोड़ि दूजे बन जाओ सूजा साबर मार बन खाओ। हाथ हनुमन्ते मेहर कर भैसा की थान बांधो भील बांधो भीलनी बांधो भूत बांधो प्रेत बांधो किन्नर बांधो डाकिनी बांधो साकिनी बांधो हाथी के दांत बांधो घोड़ा की पीठ बांधो एक कोस बांधो बारह दूनी चौबीस कोस बांधो जैसे राजा रामचन्द्रजी सेतु बांधे नरसिंह छूटे महन्थ मोहनदासजी बनखण्डी साहेब के चरणों नमस्ते नमस्ते।

प्रयोग विधि पूर्व मन्त्र के समान है। इस प्रयोग के पहले पूर्व का मन्त्र सिद्ध कर लें। फिर गुगल, हवन सामग्री व गाय के घी से होम करें तो अरण्य में हिंसक पशु, चोर, मार्गवासी तथा भूत प्रेत से रक्षा होवे।

(१५)

ॐ नमो हनुमानजी आया, कांई कांई लाया, डाकिनी शाकिनी आन आन कुरु कुरु स्वाहा।

जिस रोगी के ऊपर प्रेत दोष होवे उसकी माता उल्टी चक्की से सप्तधान को पीसे। उस अनाज का एक पुतला बनायें तथा एक पुतला रोगी की माता के लहंगे की लान का बनायें इस पुतले को तिली के सवा पाव तेल में भिगोयें। पश्चात् कपड़े वाले पुतले को तकुए में पिरोकर रोगी पर ७ बार उतार कर जलायें। सवापाव उड़द मंगाकर रखलें। फिर मन्त्र पढ़कर पुतले पर उड़द मारें, पानी के छींटें देवें (तब पुतला रोगी के सिर की तरफ होवे) अब दूसरे सप्तधान से निर्मित पुतले को थाली में खड़ा करें और थाली को पानी से भर देवें।

इस पुतले को डाकिनी समझ कर दूसरे पुतले का गर्म तेल डाले तो डाकिनी को पीड़ा होगी वह आकर बतायेगी। परन्तु डाकिनी क्रोधित होकर कोई अनिष्ट नहीं कर देवे इसके लिये स्वयं व रोगी के परिवार की रक्षा करें। स्थान का बंधन करें।

(१६)

ॐ नमो आदेश गुरु को हनुमंत वीर बजरंगी बज्रधार डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत जिंद खईस को ठोक ठोक मार मार नहीं मारे तो निरंजन निराकार की दुहाई।

शनिवार से प्रारंभ करें १२१ बार २१ दिन जपें। पान का बीड़ा चढ़ावें। गुड़ पताशा मिठाई चढ़ावें गुगल का धूप करें। प्रयोग के समय उड़द के दाने या चौराहे की कंकरी को मंत्र पर मारे तो प्रेत के मार पड़ेगी।

(१७)

ॐ काकलक कपाल वज्र पर्वत लङ्क अलक पलङ्का ।
फलक फलीक यती की वाचा गुरुकी सोचा सत्यों ॥

यह प्रयोग नजर टोकार टोना टोटका निवारक है। एक नया वस्त्र लेवें उसको अरंडी के तेल या सरसों के तेल में भिगोकर उसको जलावें। एक कांसी की थाली में पानी भरे चिमटे से कपड़े को पकड़े । कपड़े को थाली के ऊपर इस प्रकार से पकड़े की उससे गिरने वाली तेल की बूंदें थाली में गिरे। रोगी को सामने बिठाये उसे कहें पानी में जो तेल की बूंदे गिरे उन्हे देखें। ज्यों ज्यों झम झम की आवाज होवे त्यों त्यों नजर उतरे। २१ बार मंत्र पढ़े। तेल खत्म हो जाये तब कपड़ा पानी में डूबो देवे। थाली का पानी उस जगह फेंकें जहां दूसरों का पैर नहीं पड़े तथा गंदा नाला नहीं होवे।

(१८)

बैर बैर चुड़ैल पिशाचिनी बैर निवासी कहूं तुझे सुनु सर्वनासी मेरी मांसी वर बैल करे तूं कितना गुमान काहे नहीं छोड़ती यह जन स्थान जो चाहे तू देखना आपन मान पल में भाग कैलाश लै अपनो सान आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई आदेसी हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

होली दीपावली दशहरा को १०८ बार जपे २१ बार लोबान से आहुति देवे। इस मन्त्र से फूंक मारने व झाड़ा देने से डाकिनी बांधा दूर होवे।

(१९)

सूत्र बनावें बन बीच आनन्दकन्द रघुवीर लिखे सिय सम्मुख मँह होय धीर मतिधीर तेही समय लखन तहँ आये पूछहिं रामलखन बुलाए बोले हरि कवन कारण तुम भाई इत आवन बहु विलंब लगाई लखन बोले गयऊं दूर पहारा देखेउ तहां भूतदल झारा तहां एकौ मानुज न दिखाये निज आश्रम को छोड़ पराये इतना हरि सुन वान चलायेऊ भागे भूत आनन्द गिरि भयेऊ (अमुक) के अङ्ग नहीं भूत भार राम के नाम से भयो समुद्र पार आदेश श्री श्रीसीताराम की दोहाई।

उपरोक्त विधि से प्रयोग सिद्ध करें।

(२०)

ॐ नमो नरसिंहाय हिरण्यकशिपु वक्ष विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूतपिशाच शाकिनी डाकिनी कीलनोन्मूलनाय स्यंवाद भव समस्त दोषान् हन हन सर सर चल चल कम्प कम्प मथ मथ हुं फट् हुं फट् ठः ठः महारुद्र जापियत स्वाहा।

प्रयोग मंगल या शनि के दिन से प्रारंभ करें। ११००० जप कर गुगल धूप देवें। गुड पुआ का भोग लगावे। मोरपंखी से रोगी को झाड़ा देवें।

(२१)

ॐ नमो ॐ ह्मं ह्रीं ह्रूं नमो भूतनायक समस्त भुवन भूतानि साधय साधय हूं हूं हूं।

शनिवार के दिन से प्रयोग क़रें। ५ माला रोज २१ दिन करे। गुड़ पताशा व पुष्प चढ़ावें, गुगल की धूनी देवें। पश्चात् प्रयोग समय गुगल की धूप देकर झाड़ा देवें।

(२२)

बन्ध बन्ध शिव बन्ध बन्ध।

५१ हजार जप कर मंत्र सिद्ध करें। गुगल लोबान की २१ बार धूप करें। रवि मंगल से प्रयोग प्रारंभ करें। इस मंत्र से रोगी पर उड़द मंत्र कर मारने से प्रेत का बंधन होकर शिथिल हो जाता है।

(२३)

ॐ बगलामुखि प्रतिङ्गिरा उपराजित सरस्वती अंबिका जु मंत्रान् आकाश में कामिनी मंत्र स रूपक एक सौ आठ जो भूम्य प्रमानु अंजनी एक सौ आठ धरे तनु वंश विध्वंस कंस जहानू। शक्ति अनन्त त्रिलोक सो तन्त्र में अञ्जनि जै जगदम्ब महानूं। ॐ नमो उपदेश गुरुजी को अंजनी बेगि में श्रवण ब्रवानु।

(२४)

अञ्जनिकुमार लाल मन्त्र से आवाहन करो डायिनी औ जादू टोना मंत्र बांधि लंगूर सो। अंजनि तिहारी मैया यती हनुमान लाल आवो सुनत बेग में नशावो मन्त्र ब्रह्मा सों। काया बांधो छाया बांधो माया बांधो ब्रह्मभूत वेग में लंगूर फहरात आवो आजु सो। मन्त्र गुरु सत्य राम सद्गुरु को बन्दो पांव श्रवण देव अंजनि अकासहु को कामिनी सों।

(२५)

ॐ काली काली महाकाली इन्द्र की बेटी ब्रह्मा की साली कूचे पान बजावे ताली चल काली कलकत्ते वाली आल बांधू ताल बांधू और बांधू तलैया शिवजी का मंदिर बांधू हनुमानजी की दुहैया।

नदी किनारे जाकर एक फूल माला को कुण्डली बनाकर उसमें दीपक जलावें। अगरबत्ती चन्दन बुरादा जलाकर गुड़ का भोग लगावें। लोबान की धूप करें, १२१ बार जपें। तीन, सात अथवा नौ दिन में देवी अपना हक मांगेगी उस समय एक पान उल्टा उस पर दूसरा पान सीधा (चिकना वाला हिस्सा ऊपर) रखकर कपूर जला दें। दाहिने हाथ की अनामिका से खून निकाल कर जमीन पर गिरा देवें, फिर देवी से वचन लेवें।

(२६)

हनुमान हठीले लौहे की लाट वज्र का ताला सिंह का घोड़ा लोहे की लगाम ता पै बैठे हनुमंत जती। भूत को बांध परीत को बांध घर को बांध बाहर को बांध

डीठ को बांध मूठ को बांध इतने बांध के जेर, न करे तो माता अंजनी की आन।

७ मंगलवार को १०८ बार रोज जप करे, गुगल धूप देवें। फिर मोर पंख या शस्त्र से झाड़ा देवे रोगी ठीक होवे।

(२७)

बाबा आज बालक कहां चले सवा लाख पर्वत पै चले, सवा लाख पर्वत से का लाए, लोहा का लक्कड, का मारो माथे से मारो, ताप तिजारी बेल जुरा नहरुवा टहरुवा आंधा सीसी रींगन बाय ताप तिल्ली इसी वक्त से भसम कर ना करे तो मार हुंकार नीलकण्ठ बाबा अजयपाल की दुहाई।

अमावस और पूर्णिमा को गांजे का होम कर १२१ बार जपें एवं झाड़ा देवें।

[अजयपाल बाबा ने अजमेर नगर बसाया था वे सिद्ध तांत्रिक थे उनके नाम से जादू टोना, मारण, रोगहरण कई प्रयोग हैं।]

(२८)

ॐ नमो आदेश गुरु का हनुमान का ध्यान जाने, सारे रामचन्द्र के काज भूत को वशी कर प्रेत को वशीकर गधा को मारे, डारे तैल और सिन्दूर जा से बैरी भागे दूर, सत्य वीर हनुमान बारह बरस के जवान हाथ में लड्डू मुंह में पान गजवन्ता गुणवन्ता धारे ताड़ गढी बैठे रजकन्ता सीता की दुहाई पवन पिता की दुहाई माता अंजनी की दुहाई मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

सात मंगलवार को १०८ बार जपें, पान का बीड़ा, लड्डू चढ़ावें, ९ बच्चों को भोजन करायें। उड़द पर मन्त्र पढ़कर रोगी पर मारने से प्रेत बाधा भाग जाये।

(२९)

ॐ चामुण्डाय मसान वीरमान भूत प्रेत के औसान भस्मी कुरु स्वाहा।

सवा लाख जप से मन्त्र सिद्ध होवे। एक आटे का पुतला बनाकर सिन्दूर की सात टींकी लगायें। रोगी को बैठाकर पुतला ७ बार रोगी पर उतारा उतारे। १०८ बार मंत्र पढ़कर रोगी के फूंक मारे। फिर चाकू से पुतले के चार टुकड़े करे तो रोगी बेहोश हो जायेगा। फिर पान लौंग इलायची मिठाई सहित पुतले को चौराहे पर रखें तो रोगी ठीक हो जायेगा।

(३०)

ॐ नमो आदेश गुरुजी को आदेश गुरुजी काला भैरों कपिलाकेश काने कुण्डल भगवा भेष हाथ खप्पर जटा धरा पहिले कील लङ्क पर मारी, मार मार काली के पूत सौ कोस को कीलूं भूत, हाथ कुल्हाड़ी बांधे मढ़हा, सब सुमरू जती भैरों अवधूत आगे खड़ा शब्द सांचा पिण्ड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

२१ बार फूल मारने से बाधा दूर होवे।

****

॥ मूठ की काट के मंत्र ॥

(१)

॥ मूठ वापस करने का मंत्र ॥

काला कलुवा चौसठ वीर मेरा कलुवा मारा तीर जहां को भेजूं वहां जाय मांस मच्छी को छुवन न जाय अपना मारा आप ही खाय चलत बाण मारूं उलट मूंठ मारुं मार मार कलुवा तेरी आस चार चौमुखा दिया न बाती जहां मारूं वांही की छाती इतना काम मेरा न करे तो तुझे अपनी मां का दूध पिया हराम है।

सात मंगलवार तक (४९ दिन) २१ बार नित्य मंत्र जप करें गुगल का धूप करें, लौंग फल मिठाई चढ़ावें। आकर्षण मारण वशीकरण व मूठ उल्टी भेजने आदि सभी कार्यों में यह मन्त्र सहायक है।

(२)

कांवरी खण्ड कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी के चार चक्र, लोहे की गड़ी कारी कुत्ती मच्छी झेल, मूठ झेल तीन सौ आठ अग्गम की अग्गम झेल पच्छम की पच्छम झेल जिसने करा उस पै पड़े, इसके शरीर की रक्षा बैहर नारसिंह करे।

विधि- गुगल का धूप गुलनार या गुलाब के फूल देकर ७ दिन तक १२१ बार रोज जपे। फिर किसी अस्त्र से झाड़ा देवें।

(३)

अरघट्टी झन खा, मरघट्टी झन खा, झन खा पर के पूत कारी पीरी चाऊर मूठ झन मार, मूंठ मां ठेस लगांव, नदिया पार नहकांव, जाकर चलाए, वही ला खाए, उलट मूठ पलट टोना, काकर कहे, पारवती के कहे, सच के पारवती के मन्त्रा होवे, तो जा रे मूठ पलट जा।

एक मुट्ठी काले एवं पीले चावल लेकर सात बार मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करें। ७ बार सिर पर घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंके तो मूठ पलट कर चलाने वाले पर जायेगी।

उड़द व पीली सरसों का भी प्रयोग कर सकते है। विशिष्ट साधकों को मूठ की आवाज 'घूं घूं' व दीपक लौ, पुतला घूमता हुआ दिखाई दे जाता है वे साधक यकायक मिट्टी उठाकर मन्त्र पढ़कर भी मूठ पर मार देते हैं तो मूठ वापस लौट जाती है।

(४)

॥ मूठ निवारण मंत्र ॥

मंत्रः- होहि होहि की लगाई, जड जड खड खड उलट पलट, लूका को भूका को मूंठ घुमाई। पेड़ पर्वत पे गिराई, सिद्ध यति की दुहाई मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।

कई व्यक्ति शत्रुता के कारण तांत्रिक के द्वारा मूठ चलवा देते है। यह मूठ निवारण का चमत्कारी मंत्र है। इस मंत्र को सिद्ध करते समय पाव भर उड़द अपने पास रखें। यह उड़द साधक की रक्षा करते है। जब कोई मूठ साधक के पास आये तो इन उड़दों के प्रभाव से साधक की नींद अपने आप उड़ जायेगी। अतः साधक को तुरन्त ही सिद्ध उड़द के दानों को २१ बार अभिमंत्रित करते हुये उस मूठ की तरफ फेंके। ऐसा करने से मूठ वापस लौट जायेगी।

(५)

॥ मूठ की काट का मंत्र॥

कई बार किसी जानकार ओझा पर भी कोई मूठ आ जाती है तो या तो उसे किसी वृक्ष पर उतरने का आदेश देगा या उलट कर उसी पर जाने का आदेश देगा तो उसी पर जायेगी। मूठ के प्रवेश करने बाद लौटाना भारी होता है, वह धीरे धीरे ही कटती है। अपने शरीर की रक्षा करना जरुरी है। मूठ के आने पर किसी चीज या जानवर के आकाश में उड़ने की, चक्कर लगाने की आवाज महसूस होवे या दीपक की लौ जलती या पुतली आकृति दिखाई देगी।

लोहे के कोठला वज्र के किंवार तेहि पर नावो बारंबार तेते नहि पहिनहि एकहू बार एक पठा अनंडा बांधू डीठी मूठ बांधू, तीरा बांधू स्वर्गे इन्द्र बांधू, पाताले वासुकी नाग बांधू, सैय्यद पांव शरण षोद की भक्ति नारसिंह वादिकार खेलु खेलु शंकनी डंकनी सात सेतर के संकरी बारह मन के पहार तेहि ऊपर बैठू, अब देवी चौतकराय आन जंभाई जंभाई गोरख की दुहाई, नोना चमारी की दुहाई, तैतीस कोटि देवताओं की दोहाई, हनुमान की दुहाई, काशी कोतवाल भैंरो की दुहाई, अपने गुरुहि कटारी मारूं देवता खेल सब अप लेइ काशीकादि कादी काशीकार पाप तेहि देवता के कंध चढाइ काट जो मन मंह क्षोभ राखे।

(६)

॥ अभिचार नाशक मन्त्र॥

अग्नि का घोड़ा, बिजली की लगाम, जहां चढ़े हनुमान वीर, पठान लालखान जवान, क्या करता आया, भन्न के भसूडी, कढ के कलेजा, उस दुश्मन का खाया जिसने फलाने पर वार चलाया। सवा घड़ी में उसका स्यापा पाया। देखा हनुमान वीर पठान लालखान जवान, तेरे इल्म चोट का तमाशा। गुरों की सगत मेरी भगत, जहां पुकारु तहां खड़क, हिल्लिल्लाह विशमिल्लाह हप हप हप।

इस मन्त्र को सिद्ध कर रोगी को भभूत लगाने से व खिलाने से अभिचार दूर होवे।

(७)

॥ ख्वाजा पीर का अभिचार नाशक मन्त्र॥

ख्वाजा खिज्र पीर, बाबा जन हाजीत पीरान पीर, मैं बालक तेरा तू पीर मेरा, भर भर छालियां, वहांदा नीर, लौंग सुपारी जायफले दोहरी पूजा लै, गढ़ अजमेर का राजा, हिन्द का बादशाह, सजमी कलीफ, हाकी सो मलङ्ग चले, खाकी सो

मलङ्ग चले, रोडू सो मलङ्ग चले, हके हकाए को, खाऐ खुआए को, लगे लगाए को, चौसठ डायन जोगन को भस्म करे। चले मन्त्र फुरे वाचा, देखूं ख्वाजा खिज्र पीर तेरे इल्म का तमाशा॥

(८)

॥ पर प्रयोग की काट का मंत्र॥

फजले बिस्मिल्ला रहमान, अटलखुरजी तेज खुरान, घड़ी घड़ी निकलै बान, लाली लाल कमान, राखवाले की जबान, खाक माता खाक पिता, त्रिलोकी की मिसैली, राजा प्रजा पड़े मोहिनी, जत देखै जलकतरै, थल देखै, थल कतरै, राजा इन्द्र की आसन कतरै, तलवार की धार कतरै, आकाश पाताल वायुमण्डल को कतरै, तैतीस कोटि देवी देवताओं को कतरै, शिव शङ्कर को कतरै, भीमसेन की गदा को कतरै, अर्जुन की वाण कतरै, कृष्ण को सुदर्शन कतरै, सोला हंसा को कतरै, पेट में के बावरे को कतरै, दौलतपुर के डोमा को कतरै, ब्राह्मण के ब्रह्मराक्षस को कतरै, धोबी के जिन को कतरै, भङ्गी के जिन को कतरै, रमाने के जिन को कतरै, मसान के जिन को कतरै, मेरे नरसिंह से कतरै, गुरु के नरसिंह से कतरै, बोलातन चुड़ैल को कतरै, जहां खुरी, नौखण्ड बारह बङ्गाले की विद्या जा पहुंचे, अंजनी के पूत हनुमान, तोहे एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बरों की दुहाई दुहाई दुहाई।

विधिः- हनुमान जी का पूजन कर १०८ बार जप करें। २१ दिन तक जप करें। २१ वें दिन हनुमानजी को सिन्दूर लङ्गोट, सवासेर का रोट, नारेल चढ़ावें।

इस विद्या से अभिमन्त्रित कर नींबू लटकाने से विघ्न दूर होवे। अभिमन्त्रित जल पिलाने से भूतोन्माद दूर होवे।

(९)

॥ शत्रु की काट का मंत्र॥

एक ठो सरसों सोला राई, मोरो पटवल को रोजाई खाय खाय पडे मार, जे करे ते मेरे, उलट विद्या उही पर परे, शब्द सांचा पिण्ड काचा ता हनुमान का मंत्र सांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

नजर, टोक, टोटका के दोष निवारण हेतु सरसों अथवा राई के साथ नमक मिर्च रोगी पर घुमाकर अग्नि में डाले तो नजर टोक कटे। यदि मिर्च जलने की बदबू नहीं आवे तो जाने निश्चित कोई टोटका है।

(१०)

॥ मसान पीड़ा निवारण॥

सफेदा मसान गुरु गोरख की आन, यमदण्ड मसान कालभैरव की आन, सुकिया

मसान लोना चमारी की आन, फुलिया मसान गौरे भैरव की आन, हलदिया मसान ककोड़ा भैरव की आन, केसरिया मसान नाकोड़ा भैरव की आन, पीलिया मसान दिल्ली की जोगिनी की आन, कमोदिया मसान कालका की आन, कीकड़िया मसान रामचन्द्र की आन, मिचमिचिया मसान शिव शंकर की आन, सिलसिलिया वीर मुहमदा पीर की आन।

बंगाल देश में कमोदिया, मिचमिचिया, मलमलिया, घटमटिया इत्यादि कई क्षेत्रक मसान देवताओं के नाम के प्रयोग बंगला भाषा में प्रचलित हैं। पहले प्रयोग सिद्ध कर लेवें फिर बाधा पीड़ित व्यक्ति के लोबान की धूनी करते हुये झाड़ा देवें। नाकोडा भैरव जैन सम्प्रदाय से है तथा उदयुर क्षेत्र में है।

॥ नजर उतारने के मंत्र ॥

(१)

ॐ नमो आदेश तू ज्या नावे भूत पले प्रेत पले। खबीस पले, अरिष्टपले सब पले, न पले, तर गुरु की, गोरखनाथ की, नीव यां ही चले, गुरु संगत, मेरी भगत, चले मंत्र, ईश्वरी वाचा।

इस मंत्र से झाडा देने से ठीक होवे।

(२)

आकाश बांधो पाताला बांधो, बांधो आपन काया। तीन डेग की पृथ्वी बांधो, गुरुजी की दाया। जितना गुनिया गुन भेजे, उतना गुनिया गुन बांधे। टोना टोनगत जादू, दोहाई, कोरु कमच्छा के, नोनाऊ चमाइन की। दोहाई गौरा पार्वती की, ॐ ह्री फट् स्वाहा।

अभिमंत्रित नमक का जल पिलाने से नजर दूर होवे।

(३)

ॐ ह्रीं ब्रीं विकट वीर हनुमन्त। वीर मंत्र को मारो, उलट दो पाताल, कालजाल संघारो। जो धन जहाँ से आवे, वहीं को जाये। टोनहिन का टोना, ओझा को दण्ड। द्रोही शत्रु को मारो, न मारो तो माता अञ्जनी के बत्तीस धार का दूध हराम करो। सीता के शिर चोट पडे हुं फट् स्वाहा।

झाड़ा देने व अभिमंत्रित सरसों रोगी पर फेंकने से प्रेत बाधा नष्ट होवे।

(४)

ॐ नमो कामरू देश कामक्षा देवी को आदेश नजर काटौ बजर काटौ मुहुर्त्त में देकर पाय रक्षा करें दुर्गा माई नरसिंह ओना होना होय । अमुक रोग सागर पार

चला जाय अल्ला हाड़ी दासी डण्डी की दुहाई।

इस मंत्र को सर्वप्रथम किसी शुभ मुहुर्त्त में १००० बार जप कर सिद्ध कर लेवे। किसी कि नजर उतारने हेतु रोगी को इस मंत्र का तीन बार पढ़ कर झाड़ा देना चाहिए। इस प्रकार तीन दिन तक झाड़ना चाहिए । इस मंत्र के प्रभाव से रोगी पर से बुरी नजर का प्रभाव नष्ट हो जाता है व टोने टोटके का प्रभाव भी समाप्त हो जाता है।

॥ घरों में ईट पत्थर की वर्षा रोकना ॥

(१) घंटा कर्ण मंत्र को कोयले से मिट्‌टी के बरतन पर लिखे, या भोज पत्र पर लिखे उनको मकान के चारों कोनों में गाडने से प्रेतोपद्रव बंद होवे।

अथवा घंटाकर्ण मंत्र-

ॐ घण्टाकर्ण महावीर सर्व व्याधि विनाशक। विस्फोटक भयं घोरं रक्ष रक्ष महाबल॥

इस मंत्र को तांबे की प्लेट पर खुदवाकर घर के चारों कोनों में दिखता हुआ लगा देवे तो उपद्रव बन्द होवे।

(२) **कहि गेला गडिया क्षेत्रपाल ताल विताल सिधा चाली, शीघ्र गति रवि शशि चलिया जाईस। पवनेर ढोक डम्बर बाजाइया जादस मानिंद्रा कतो प्रेतो प्रेती ब्रह्ममुखी दानवेर मां हय कुडी, छय दूत लईसा, नाविया पूजा खा महादेवरि संतोष, भस्म होये, अमुकार छापनीय मारकर गिया। कार आज्ञर शिव शंकरेर आज्ञाय।**

यह हिन्दी बंगला भाषी मंत्र है। नई ईंट, पत्थर पर मंत्र लिखकर वहां गाड देवे तो कच्चा कलवा व प्रेतादि उपद्रव नष्ट होवे। ईंट पत्थर बरसना बंद होवे।

॥ उतारा उतारने व डाकिनी बकराने के मंत्र॥

(१)

ॐ नमो आदेश गुरु को नारी जाया नाहरसिंह अंजनी जाया हनुमंत वाने जारी बीज भवंता वा तोड़ी गढ लंका तेरी पाखरि कौन भरे। नाहरसिंह बलवंत बन में फिरे अकेलड़ा भंवर खिलाये केस बारो भाटी (बाठी) मध की पीवे बारा बकरा वाय न धाये तो नाहरसिंह तू दौड़ मसाणाजाय पांच सात न मार खाय सात पांच न चख खाई, देखूं नाहरसिंह वीर तेरे मंत्र की शक्ति, हाड़ा हाड़ मे सूं चाम चाम में सूं नख नख में सूं बार बार में सूं अमुकी के नौ नारी बहत्तर कोठा में सो खेद को पकड़ आणि हाजिर ना करे तो माता नाहरी का चूखा दूध हराम करे, राजा रामचन्द्र की पौड़ी फाट भै पड़े शब्द सांचा पिण्ड काँचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण दीपावली की रात १००० बार जपे। गुगल,नीम की पत्ती, सर्प की केंचुली का गाय के घी से हवन करें। उड़द पढ़कर रोगी के मारने से भूत बकरता है।

(२)

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय किल किल तर वाय रुद्र दंष्ट्राकराल वक्त्राय त्रिनयन भीषणाय धग धागंत पिशंग ललाट नेत्राय तीव्र कोपानलायामित तेजसे पाश शूल खड्ग डमरुक धनुर्वाण मुद्गर भूपदण्ड त्रास मुद्रा वेग दश दोर्दण्ड मण्डिताय कपिल जटाजूट कूरटार्द्धधचन्द्रधारिणे भस्मिराग रंजित विग्रहाय उग्रफणपति घटाटोप मण्डित कण्ठदेशाय जय जय भूत डामरस आत्म रूपं दर्शे दर्शे निरते निरते सर सर चल चल पाशेन बंध बंध हुंकारेन त्रासय त्रासय वज्रदण्डेन हन् हन् निशति खड्गेन छिन्ध छिन्ध शूलाग्रे भिन्ध भिन्ध मुद्गरेण चूर्णय चूर्णय सर्वग्रहाणां आवेशय आवेशय।

विधि उपरोक्त है।

(३)

बांधो भूत जहां तू उपजो छाड़ो गिरे पर्वत चढाई सर्ग दुहेली पृथिवी तुजभि झिलि मिलाहि हुंकारे हनुमन्त पचारहू सीमा जारि जारि भस्म करे जो चांपे सींउ।

शुभ पर्व व रवि मंगल को सिद्ध करें। आम की लकड़ी की आग में लोबान से होम करें। रोगी को बिठाकर धूप करें, धुंआ उसके लगे फूंक मारे या जल पिलावे झाड़ा देवे।

(४)

ॐ नमो आदेश गुरु का धरती में बैठ्या लोहे का पिण्ड राख लगाता गुरु गोरखनाथ आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक दे धार धार मार मार शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शुभ दिन व मंगलवार को मृगासन पर बैठ कर सिद्ध करें। आम की लकड़ी की आग में खीर से होम कर आहुति देवे।

उतारा उतारने से ग्रह पीड़ा सब उपद्रव नष्ट होवे।

(५)

ॐ नमो आदेश गुरु को डाकिनी सिहारी किले मारी जती हनुमान ने मारी, कहां जाये दबकी किन देखी जती हनुमन्त ने देखी सातवें पाताल गई सातवें पाताल सूं कौन पकड़ ल्याया जती हनुमन्त पकड़ ल्याया। एक ताल दे एक कोठा तोड्या दो ताल दे दो कोठा तोड्या, तीन ताल दे तीन कोठा तोड्या चार ताल दे चार कोठा तोड्या पांच ताल दे पांच कोठा तोड्या छः ताल दे छः कोठा तोड्या

सात ताले सातवीं कोठी खोल देखे तो कौन खड़ी छै डाकिनी सिहारी भूत प्रेत चलै जती हनुमन्त सेरे झाड़े सुं चलै। ॐ नमो आदेश गुरु को गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

(६)

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय घोर रुद्र महिषासुर रूपाय त्रैलोक्य आडम्बराय रौद्र क्षेत्रपालाय ह्लीं ह्लीं क्रीं क्रीं क्रीं मिति ताड़य ताड़य मोहय मोहय द्रम्भि द्रम्भि क्षोभय क्षोभय आभि आभि साधय साधय ह्लीं हृदये आं शक्तये प्रीति ललाटे बंधय बंधय ह्लीं हृदये स्तंभय स्तंभय किलि किलि हूं ह्लीं डाकिनी प्रच्छादय प्रच्छादय शाकिनी प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रभूतं प्रच्छादय प्रभूतं प्रच्छादय राक्षसं प्रच्छादय राक्षसं प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय सिंहनी पुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय डाकिनी ग्रह साधय साधय शाकिनीग्रह साधय साधय अनेन मंत्रेण डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत पिशाचाद्येकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पञ्च वातिक पैत्तिक श्लेष्मिक सन्निपात केसरि डाकिनी ग्रहादीन् मुञ्च मुञ्च स्वाहा। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

लोहे के अस्त्र, सलाई या छप्पर के बांये कोने की ३ तीली से २१ बार झाड़ा देवे।

(७)

बांधो कि रानी कि सिंह बुढ़ानी कि ध्यान धरे शिव को जपतो हो सङ्कट में हम तोहि पुकारत बेर भई जगदम्ब विलम्ब कहां करती हो नवकोटि में तु ही भवानी तीन लोक में डङ्का बाजै, महिमा अमित न जात बखानी। लंगूर वीर गहे अगवानी जय जय जगदम्ब भवानी अन्नपूरणा हे जगपाली महिषासुर को मारि गिराया रक्तबीज का किया संहारा जय हंकारमती जय संहारमती पहाड़ी देव जिरिया बङ्गालिन बुद्धउस्ताद बङ्गाले की जादू एक कड़ी जादू की छोड़, बङ्गाले की जबान पर बैठ, जादूगर की जुबान बांध खोल पलक देख दुनियां की झलक नीचे पृथ्वी ऊपर आसमान पंच परमेश्वर एक समान दोहाई कामरु की देवी की, दुहाई इस्माइल जोगी जिरिया बङ्गालिनी नैना जोगिनी लोना चमारिन की।

(८)

वज्र का कोठा वज्र का ताला वज्र में बन्ध्या दस्ते द्वारा तहां वज्र का लग्या किवाड़ा वज्र में चौखट वज्र में कील जहां सूं आया तहां ही जाय जाने भेजा जाकूं खाय हम कूं फेर न सूरत दिखाय हाथ कूं नाक कूं सिर कूं पीठ कूं कमर कूं कूंख कूं जो जोखो पहुंचावे तो श्री गोरखनाथ की आज्ञा फिरे मेरी भक्ति

छाती गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

गोरखनाथ की तस्वीर के आगे धूप दीप, नैवेद्य, गंधाक्षत, पुष्प से पूजा करें। १ माला रोज करें, गुगल व गांजे का होम करें। मंत्र प्रयोग करने के समय ७ कुओं का जल मंगाये या बहते नाले के विपरीत दिशा में मुंह करके जल भरे। छप्पर के बाये कोने की ३ तीली से मंत्रते हुये जल को हिलायें। उस जल से रोगी को स्नान करायें। उन वस्त्रों को दान करें, दूसरे कपड़े पहने। स्नान कराते समय बाधा बोलेगी चिल्लायेगी। जरुरत पड़ने पर ३ बार प्रयोग करें।

पात्र को दूसरी जगह फेंक देवे।

अगर मंत्र के समय तीलियां छोटी बड़ी हो जाये तो निश्चय ही रोगी ऊपरी बाधा से पीड़ित जाने।

(९)

ॐ नमो आदेश गुरु को गढ राज इतने चलै कौन वीर महमदा पीर कहां लै चले सवामन लोहे कर वज्राङ्ग कौन बांधे देव बांधे दानव बांधे भूत बांधे प्रेत बांधे पिशाच बांधे नवोनारसिंह बांधे बारह भैरव बांधे चौसठि योगिनी बांधे चौरासी चूरइल बांधे चौरासी टोना बांधे टामर बांधे पेट की पीर बांधे पेट मिरोर बांधे गांठी मूगरो बांधे शिर की पीर बांधे धरती आकाश को बांधे रुख विरुख को बांधे जान विजोन को बांधे यंत्र बांधे तंत्र बांधे मंत्र बांधे मरी बांधे मारुका बांधे फूलमती बांधे कुल का रोग दोष बांधे ब्रह्म बांधे गोत्र बांधे चमर दोष बांधे जहां को अखै तहां को बांधे जेकर होय तेकर बांधे न बांधे तो कोटि खप्पर की खाय छोड़ि कुवाचा चलै तो तीस रोज हिन्दु का हाथ धरै धोबि के सौन्दनी में परै चमार के चाम में परै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

शुभ मुहुर्त्त व गुरुवार, शुक्रवार से ४१ दिन का प्रयोग करें।

उतारे के समय रोगी के सामने उतारे का सामान पुआ पूड़ी मद्य मांस या उड़द नमकीन सिन्दूर दही मिठाई एक जौड़ा पान में लौंग ऊपर से रोपे। इत्र को एक मिट्टी के बरतन या पत्तल में रखें। एक चौमुखा दीपक भी रखें, नींबू काटकर उसमें रखें, फिर ७ बार उतारा उतार कर किसी पीपल के पेड़ की जड़ में या एकान्त में रखें। पीछे मुड़कर नहीं देखें। हाथ मुह धो कर पुन: रक्षा मन्त्र पढें व रोगी व स्वयं की रक्षा करे।

(१०)

दुहाई खोदाय की दुहाई, रसूल की दुहाई, सुलेमान की दुहाई, पैगम्बर की दुहाई, हजरत अली की दुहाई, असीर की दुहाई, अमीर की दुहाई, मुहम्मद हनीफ की दुहाई, एकासी हजार पैगम्बर की दुहाई, बावन वीर की दुहाई, चौसठि जोगिनी की दुहाई, चौरासी सिद्ध नवनाथ की दुहाई, साहपरी, खूवा परी, तकतपरी, हूरा परी, नूरा परी, लालपरी, सफेदपरी, सार की दुहाई। कौन कौन पकड़ने चले, आगे कलुवा वीर चले पीछे मुहम्मद चले नारसिंह वीर चले, अङ्गद चलै बावन वीर, चौरासी सिद्ध नवनाथ हजरत सहि, भीम के बाण नदी

नाव का पूर देव भूत जिन खवीस, देवनी पूतनी खबीसनी, चुड़ैल के कलेजे लागे तीर रुठा मनाऊं मणी मसाणी, सूखे विरख पकड़ ले जाऊं सिध करसी बालाजती डोढा जती सुकरजती हनुमानजती भैरवजती खेतरपाल कालका मांई का पूत चढी भट्ठी का जैतवार ऐसा चलो जैसा नदी नाव का तीर जिन को भूत को पलीत को खवीस को हाकड़ को डाकड़ को सियारी को चार कूंट से हकार ले जावो। बन्द करे सिर चढ खेले, मुख चढ बोले, गुरु की शकत हमारी भगत ईश्वर महादेव तेरा वाचा चले।

रविवार मंगलवार से २१ दिन तक १०८ पाठ नित्य करें। धूप दीप अगरबत्ती बतासे गुलाब का इत्र पुष्प चढ़ावें। लोबान की धूप करें। रोगी पर प्रयोग करते समय ७ कालीमिर्च मंत्र कर रोगी को खिलावें। तथा उड़द मंत्र कर रोगी पर मारे। लोबान व गुगल धूप सुंघावे तो बाधा उतरे व बाधा अपनी हकीकत कहेगी।

उतारा उतार कर पूर्वोक्त विधि की तरह अन्यत्र एकान्त में रखें।

॥ प्रेत बकराने व झाड़ने के मन्त्र ॥

(१)

ॐ रिं रिक्तिया भैरों दर्शय स्वाहा, ॐ कं कं काल प्रकटय प्रकटय स्वाहा, रिं रिक्तिया भैरउं रक्त जटा, दर्शे वर्षे रक्त घटा आदि शक्ति, सब मंत्र यंत्र तंत्र, सिद्धि परायण रह रह रुद्र रह रह विष्णु रह रह ब्रह्म रह रह, बेताल रह रह, कङ्काल रह रह, रं रण रण रिक्तिया सब भक्षण हुं। फुरो मन्त्र महेश वाचा की आज्ञा फट्, कङ्काल माई की आज्ञा।

(२)

ॐ हुं चौहरिया वीर म्हारो शत्रु थारो भक्ष्य मेदि आ तू चूरि फारि, तो क्रोधाश भैरव फारि तौरि डारै, फुरो मन्त्र कङ्काल चण्डी की आज्ञा, रिं रिक्तिया संहार कर्म कर्त्ता महासंहार पुत्र, अमुकं गृह्ण गृह्ण भक्ष भक्ष हुं मोहनी मोहनी बोलसि, माई मोहिनी मेरे चउआन के डारउ माई, मोहू सगरो गांउ, राजा मोहू, प्रजा मोहु मोहु मन्दं गहिग, मोहनी जाहि माथ नवइ, पाहि सिद्ध गुरु के बन्द पाई, जस दे कालिका माई।

राजस्थान में रक्तिया भैरु की उत्पत्ति के बारे में तथा उसका बालकों पर अधिकार हेतु पूर्व में बताया जा चुका है। यह मन्त्र झाड़ा देने व मोहनी कार्य में भी काम आता है।

(३)

भज भैरव गोपाल गज, भैरव गोपाल, काशी के कोतवाल, रक्षा करो, गौरी जलन सच्चा है, कुरान कोरा, घट घट मटका गरा सब धवला है, गदाम फनन

पड़े पाव आधे, गुरु की मत्री छोडी या गोरी क कलेजा काढ़ी, दुहाई ईश्वर महादेव गौरा पार्वती क दुहाई।

इस मन्त्र से रोगी पर अक्षत फेंके।

(४)

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय किल किल तर वाय, रुद्र दृंष्ट्राकराल वक्त्राय, तिनयन भीषणाय, धनगांगत पिशंग ललाट नेत्राय तीव्र कोपानलायामित तेजसे पाश शूल खड्ग डमरुक धनुर्बाण मुद्गर भूपदण्ड त्रास मुद्रावेग दश दोर्दण्ड मण्डिताय, कपिल जटाजूट कूटार्द्धचन्द्रधारिणे भस्मिराग रंजित विग्रहाय, उग्र फणपति घटाटोप मंडित कण्ठ देशाय जय जय भूत डामरस आत्मरूप दर्शे दर्शे निरते निरते सर सर चल चल पाशेन बंध बंध हुंकारेन त्रासय त्रासय वज्रदण्डेन हन हन निशिति खंडेन छिंधि छिंधि शूलाग्रे भिंध भिंध मद्गरेण चूर्णय चूर्णय सर्व ग्रहाणां आवेशय आवेशय स्वाहा।

इस मंत्र को ११००० बार जप कर सिद्ध कर लेवे। रोगी पर प्रयोग करते समय सर्प की केंचुली, नीम की पत्ती, गुग्गल व गाय का घी लेकर आपस में मिलाकर उन्हे इस मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप देवे। साबूत उड़द लेकर उन पर इस मंत्र को पढ़ते हुए रोगी के मारे तो भूत-प्रेत अपने बारे में बताने लगता है।

(५)

ॐ नमो हनुमन्त वीर वज्रधारी, डाकिनी शाकिनी घेरी मारी। गंगा जमुना हमारा बाण बोले, बकरे नही तो राजा रामचन्दर लक्ष्मण कुमार गोरखनाथ की आन। शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

यह भूत प्रेत बकराने का हनुमानजी का मंत्र है। इसके प्रयोग से बाधा ग्रस्त व्यक्ति का प्रेत अपने बारे में सब कुछ बता देता है। चमेली के चार अधखिले पुष्पों को लेवें, तत्पश्चात् हीना का इत्र लाकर उस इस मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करे। इन अभिमंत्रित पुष्पों को प्रेतबाधा ग्रस्त रोगी को सात बार सुंघावे। उन पुष्पों को रोगी के चारों ओर रख देवे। इस प्रयोग करने से भूत प्रेत सभी बाते बताने लगते है। और भूत प्रेत निवारण मंत्र से रोगी को मुक्ति दी जा सकती है।

प्रेत बाधा नाशक मंत्राः

(१)

॥ प्रेत को बांधने का मंत्र ॥

जहां आए जो प्रेता जो जादो वहां उल्टे उल्टे जाओ, विद्या पलटे जाय ॐ ॐ ॐ दुहाई कामाक्षा की मेरी मन्त्र फुर होय, नोना चमारी कि दुहाई, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति शती वन्दौ गुरु के पांव, इतनी बेर में जादो न रहे, घीले आवो, मोही दुहाई, ईश्वर महादेव गौरा पार्वती कि दुहाई।

इस मन्त्र को सिद्ध करें, एक हजार बासठ बार झाड़े। कैसा भी भूत होगा बंध जायेगा। उससे वचन लेकर शीशी या मटके में फूंकवा कर मुंह बन्द कर देवे, एवं उस पात्र को जमीन में गाड़ देवे तो भूत पात्र में ही बन्द रहेगा।

(२)

॥ भूत को बोतल में बन्द करने का मंत्र ॥

(बावन वीर का मन्त्र)

ॐ नमो पैठाण पुर पैठण देव, अंगजित मानव अंगजित वैरी दलन घरद वैरी तणे उतारै मरद तिण नगरी राज सालवाहन राज करे, तेह गणो पञ्चास वीर कुण कुण। वायलो, खुदियउ, तलपहर, नोडितोड, सूलभञ्जन, मुसाण लोटन, गढपाडन, समुद्रतारण, समुद्र सोखन, लोहभञ्जन, सांकल तोड़न, विषखापरियो, रुण्डमाल, आगियो, वायखील, यमघण्ट, काल, अकाल, अग्निकांति, विषकांति, रगनिया, कोहलो, कालियो, कालवेल, कारघरट्ट, इन्द्रवार, यमवार, देवारी, दुरतारी, हरारी, झापड़ो, माणभद्र, कापडिया, केदारो, नारसिंह, गोरलो, घरट, कण्टक, बग, महाबग, संतोष, महासंतोष, भमर, महाभमर, सहस्त्रार, सातसङ्ग, क्षेत्रपाल, भूतवाण, शाकिनीमार, वेदरति भंजन, इत्येवमादिक, पचास वीर, एकसमुराजा शालिवाहन, बावनुमुराजा आद्रकुमार, अहो बावन वीर, एह पात्र के पिण्ड पीड़ाकर, न करे तो बावन वीर की आज्ञा फुरै, एक पात्र में बन्द डाकिनी, बन्द शाकिनी, बन्द भूत प्रेत, बंद पिशाच, बन्द झाड़ झोटङ्ग बंध, दुश्मन घाव घाले, मार मार तोड़ तोड़, त्रिशूल से तोड़, अघे बावन वीर ए पात्र को पीड़ा कर, पीड़ा न करे तो बावन वीरा की री आज्ञा फुरै, जः जः जः ठः ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र से भूत प्रेत को बंदकर निम्न मन्त्र से ढक्कन लगायें -

ॐ हनुमान रगत्या भैरुं, चोसठ जोगणी, बावन वीर चौकी हनुमान की, ज्वाला माई की चौकी सही।

(३)

॥ भूत को मारने का मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरुजी को, वीर बली हनुमन्तजी, मुद्‌गर दाहिने हाथ, मार मार पछाड़िये पर्वत बांए हाथ, भूत प्रेत अख, डाकिनी, जिन्द खईस मसाण, इनसे बचे न एक हूं निरञ्जन निराकार की आन।

(४)

॥ प्रेत बाधा नाशक मंत्र ॥

ॐ नमो दीपसोहे दीप जागे पवन चले पानी चले शाकिनी चले डाकिनी चले भूत चले प्रेत चले नौ सौ निन्यानवे नदी चले, हनुमन्त वीर की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

मंत्र को तेल का दीपक जलाकर हनुमार मंदिर में सवालाख जप करे। फिर इससे झाड़ा देने व चौकी बांधने से बाधा दूर होवे।

(५)

॥ भूत प्रेत बाधा निवारण जीरा मंत्र ॥

जीरा जीरा महाजीरा जिरीया चलाय। जिरीया की शक्ति से फलानी चलि जाय। जीये तो रमटले मोहे तो मशान टले। हमरे जीरा मंत्र से अमुक भूत चले जाय हुक्म पाडुआ पीर की दुहाई ॥

इस मंत्र को प्रयोग में लने से पूर्व इसकी सिद्धि करे। इस मंत्र को शुभ मुहुर्त्त में नियमित ११ दिन तक १००८ बार जपने से यह मंत्र सिद्ध होता है। फलानी शब्द की जगह रोगी का नाम लेवे। थोड़ा सा जीरा लेवे और इस मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित करके रोगी से जीरे को स्पर्श करावे और हवन की अग्नि में डाल देवे। भूत प्रेत बाधा ग्रस्त रोगी को इस तरह बिठाना चाहिये की हवन से जो धुंआ निकले वह रोगी के मुख की ओर आवे। इससे रोगी को लाभ होता है।

(६)

हल्दी-बाण बाण को लिया हाथ उठाय, हल्दी -बाण से निलगिरि पहाड़ थर्राय। यह सब देखत बोलत गोरखनाथ, डाइन-योगिनी, भूत-प्रेत मुण्ड काटो तान।

सर्वप्रथम इस मंत्र को ११ हजार बार जप कर सिद्ध कर लेवें। प्रयोग समय कच्ची हल्दी की चार गांठे लेकर उन्हे इस मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करे। फिर रोगी के सिर से लेकर पाँव तक फिराऐं। फिराते समय इस मंत्र का जप करते रहें। बाद में रोगी का उतारा करें। उसमें इन हल्दी की गांठो को रख देवें, और उतारे को किसी चौराहे पर रख

****

आवे तो रोगी को भूत प्रेत से मुक्ति मिलती है।

(७)

बांधो भूत जहां तू उपजो छाड़ो गिरे पर्वत चढाइ सर्ग दुहनेली पृथिवी तुजभि झिलिमिलाहि हुंकारे हनुवंत पचारह भीमा जारि जारि जारि भस्म करे जो चांपे सींड।

हनुमानजी की पूजा कर इस मंत्र को सिद्ध करे। भूत प्रेत ग्रस्त व्यक्ति को मोर पंखी से झाड़ा देवे तो रोगी को इस बाधा से मुक्ति मिलती है। ग्रहण समय में मंत्र जल्दी सिद्ध होता है।

(८)

ओम नमो आदेश गुरु को गिरहबाज नटनी का जाया, चलती बेर कबूतर खाया। पीए दारू खाए जो मांस, रोग दोष को लावे फांस। कहां कहां से लावेगा, गुदगुद में सबलावेगा बोटी बोटी में से लावेगा, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा में लावेगा। मार-मार बन्दी कर लावेगा, ना लावेगा तो अपनी माता की सेज पर पग धरेगा। मेरा भाई मेरा देखा दिखलाय तो, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को होली दिपावली में सिद्ध कर लेवें। इस मंत्र का रोगी को मोर पंख से झाड़ा देवें, या रोगी को अभिमंत्रित किया हुआ जल पिलावे तो रोगी को आराम मिलता है।

(९)

॥ भूत नाशक मंत्र ॥

तेली नीर तेल पसार चौरासी सहस्त्र डाकिनी हेल ऐत नेर भार मुँह तेल पढ़िया देई अमुकार अंग अमुकार भर अड़-दल शूले यक्षा यक्षिनी दैत्या दैत्यानी भूता-भूती, प्रेता- प्रेती, दानव- दानवी निशाचरा सूचमुखा, गाभर डलन बात भाइया नाड़ी मोगाई चामू पिशाचा अमुकार अंगेधा काल जटार माया खाउ ह्रीं फट् स्वाहा, सिद्ध गुरूर चरण राटेर कालिका चण्डीर आज्ञा। (बंगाली में अमुकार की जगह रोगी का नाम लेवे)

इस मंत्र को होली दिपावली की रात्रि को जप कर सिद्ध कर लेवें, आवश्यकता पड़ने पर सरसों के तेल को १०८ बार अभिमंत्रित कर भूत-प्रेत बाधाग्रस्त व्यक्ति के शरीर पर लगावे तो रोगी को शीघ्रातिशीघ्र भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति मिलती है।

(१०)

॥ भूत प्रेत निवारण मंत्र ॥

ओम नमो आदेश गुरु को घोर घोर इन घोर काजी की किताब घोर, मुल्ला की बांग घोर रैगर को कुण्ड घोर। धोबी को कुण्ड घोर पीपल का पान घोर। देवी

की दिवाल घोर आपकी घोर। बिखेरता चल पट की घोर बैठाता चल, वज्र का किवाड़ तोडता चल सार का किवाड़ तोड़ता चल। कुन कुन सो बंद करता चल पट को घोर बैठता चल। भूत को पलीत को देव को दानव को, दुष्ट को मुष्ट को चोट को फेंट को। घरेले को उलमे को बुलमे को हिड़के को, भिड़के को ओपरी को पराई को डंकिनी को। स्यारी को भूचरी को खेचरी को कलुए को, ऊन की मथवाय को तिजारी को माथा की मथवाय को मंगरा की पीड़ा को पेट की पीड़ा को, सांस की कांस को मरे को मुशाण को । कुण कुण सा मुशाण कचिया मुशाण। भुकिया मुशाण किटिया मुशाण, चीड़ी चोपटा का मुशाण नुह्या मुशाण, इन्ही को बन्द कर एड़ी की एड़ी बंद करि। पीड़ा की पीड़ा बंद करि जांघ की जाड़ी बंद करि, कट्या की कड़ी बंद करि पेट की पीड़ा बंद करि। छाती को शूल बंद करि सिर की सीस बंद करि। चोटी की चोटि बंद करि नौ नाड़ी बहत्तर कोठा, रोम रोम में घर पिंड में दखल कर। देश बंगाला का मनसाराम सेवड़ा मेरा कारज सिद्ध न करे तो गुरु उस्ताद से लाजे, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र की साधना एकांत स्थान जहां पीपल का वृक्ष हो वहाँ करें। सात रविवार लगातार शाम के समय पीपल के वृक्ष के पास जावें। वहां शाबर मंत्र सिद्ध गुरु मनसाराम सेवड़ा का स्मरण करें, और उनका पूजन करते हुए नैवेद्या मांस, मदिरा, आदि उनको अर्पण करे। पीपल के पास ही तेल का दीपक जलावे। इत्र का फाहा बनाकर वहां रख देवे। भांग व गांजे की चिलम सुलगाकर चढ़ावे और छार-छबीला की धूप देवे। इसके बाद ही इस मंत्र का जप करे। यदि एकान्त स्थान पर पीपल का वृक्ष नहीं मिले तो एकान्त कमरे में भी इस मंत्र को सिद्ध किया जा सकता है। मंत्र जप करने से पूर्व आत्मरक्षा मंत्र से अपने चारों और घेरा बनाकर अपनी सुरक्षा कर लेवे।

इस मंत्र के प्रभाव से भूत प्रेत बाधाग्रस्त रोगी को आराम एवं संकट का निवारण हो जाता है। जोडो के दर्द, पेट दर्द, सिर दर्द, आदि में भी यह मंत्र प्रभावशाली है।

(११)

॥ डाकिनी शाकिनी को दण्ड देने का मंत्र ॥

(प्राकृत ग्रंथे) मंत्र :- **ॐ नमो माणकाय योगिनी संस्थापः शाकिनी कल्पवृक्षाय चौसठ योगिनी संधि रुद्रकालदण्डेन साध्य साध्य मारय मारय अपि रहस्य रहस्य शाकिनी नश्य वारान उग्रंगा उग्रंगा ॐ हिं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं हुर स्वाहा।**

इस मंत्र से गुगल को अभिमंत्रित करे उसे ऊखल में डालें। मूसल से उसको कूटे एवं मंत्र पढे-

(१२)

शाकिनी प्रहार लागति घोडो मुकिये, शाकिनी मस्तक मुडाय ॐ इट्टी मिट्टी स्वाहा।

२१ बार पढ़ने व चोट करने से डाकिनी को चोट पंहुचे व चिल्लाने लगेगी।

(१३)

॥ डाकिनी को सजा देने का मंत्र ॥

ॐ नमो नारसिंह वीर भैरव मंत्र जागे ग्रहदोष बांधल्याव आमली डाल मुख वाट लाडो आवे। नारसिंह वीर भंवर भोला कालो छेडो रम रम करती बाले सात समुन्दर सोखतो एक काम हमारो करिजे अरे नारसिंह वीर की छुरि, डाकण का नाक काट ल्याव, न काट लावे तो ईश्वर महादेव रानी पार्वती की चूड़ी चुके, गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मोम का पुतला बनावे। उस पर उड़द चढावें। १०८ बार मंत्र बोलें, पुतले को डंडा मारें। छूरे से जिस अंग को वेधें वहां उसे पीड़ा होवे। पुतली का नाक काटे तो डाकिनी के नाक से रुधिर बहे।

(१४)

॥ डायन चुडैल भगाने का मंत्र॥

बैर बैर चुडैल पिशाचनी बैर निवासी। कहुं तुझे सुनु सवं नासी मेरी मांसी। वर बैल करे तूं कितना गुमान। काहे नाहीं छोडती यह जान स्थान। यदि चाहे तूं रखना अपना मान। पल मे भाग कैलाश लै अपनो प्रान। आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई ॥

सर्वप्रथम इस मंत्र को ११००० बार जप कर सिद्ध करे। दशहरे, दिपावली या होली के दिन ११००बार जपने से मंत्र सिद्ध होवे। प्रयोग के समय इसका २१ बार जप कर रोगी के फूंक मारे। इस मंत्र के प्रभाव से डायन चुडैल भाग जाती है और रोगी को लाभ होता है।

(१५)

॥ चुडैल भगाने का मंत्र॥

ॐ रुनुं झुनुं इमृत मारातं देवी ओरम्पर तारा वीर मान्यो वीर तान्यो हांक-डांक महिमथन करण जोग भोग जोग धर छत्तीस नक्षत्र धर सर्पपति वासुकि धर सप्तब्रह्माण्डे पति ब्रह्मो के छायाधौ देवीधौ देवताधौ डाइनिधौ गुरुरार्णाधौ भूतधौ प्रेतधौ धर-धर मां चण्डी बीन करुवालषण्डी धौर्यवागुटिनां य दाददलीं इमान को चलन्ते केके जाते आर रे वीर भैरवी कामरूप कामचण्डी घर घर वाकी महाकाव्य करे मडरूमारौ कुकी घर वारण धौरवलीते ते कामरू कामचण्डी इटमाया प्रसरणि कोटि कोटि आज्ञादेवी रामचण्डी बीजे चलिषण्डी चौपिगे ऐरल देवी वसिलाकि मांडि चण्डीचन्द्र चमेमिले सूर्यटरिल ऐरलदेवी हराहरांपरि सुखिला कोटरे जीवो परांद्रिवाहन्ते खप्पर दाहिने हाथे छुरि ऐरलादेवी अवरतारि

डाइनि बांधो चुरइलि बांधूं गुनी बांधूं मीरा बांधूं मसानी बांधूं गुनिया नासुनी आवे गरजि आबु लावे राण्डे माला डांडे जीवतांडै हसै खेलै भारिवन झारोवलिते ते ते कामरू कामचण्डि कोटिश आज्ञा।

दिपावली या होली की रात को इस मंत्र को सिद्ध कर लेवे। रोगी को इस मंत्र का झाड़ा देने से डायन–चुडैल भाग जाती है।

(१६)

॥ डायन का कीलन मंत्र ॥

ॐ नमो आदेश गुरां न आदेश जहां गंगा जहां जमना जहां बसंता जोगी गऊ चरंता गवाला गा तिरया दूध। मोहिनी बांधू, बांके आगे मडा मसान, तो की लोह की, लंबी धार, धार चले धरार चले कुंभकरण की खोपडीचले,परशुराम का परसा चले, द्रोपदी का खप्पर चले, चले तो ऐसा चले नागा भूका चोरटा तीनों दीजे फोड, शब्द सांचा, चलो मंत्र ईश्वर का वाचा। अगं संग कील गुरू गोरखनाथ चले गोदावरी अक्षर भिक्षा मांग सांप का घर कीलूं, चोर का घर कीलूं, सुअर का घर कीलूं, खडग कीलू, चाप कीलूं, छल कीलू, छेदर कीलूं, उष्टकीलूं मुष्टि कीलूं मडिया मसान कीलूं, गांव खेडा का देव और भूत कीलूं, डंकिणी शंखिणी कील भूतनी पलीतणी कीलूं करणी कोटवाल कीलूं, सिरहणां की सुई कीलूं, पैर तले की मिर्चा कीलूं, घाट का मसान कीलूं चौपट्या का भैरू कीलूं नजर कीलूं वज्र कीलूं दैत्य कीलूं, जिंद कीलूं, जिन्नात कीलूं, मेरा कील्या नहीं कीलिजे तो करोड सिद्धि में बैठ श्री गोरखनाथ जी कीले, चलो मंत्र ईश्वर का वाचा।

सूर्य ग्रहण में एक पैर पर खड़ा होकर जप करे। शनिवार से शनिवार आठ दिन जप करे। मंत्र अनुभवी व्यक्ति से लिया गया है।

गृह शांति, विवाह के उपाय, गर्भ रक्षा, सुख प्रसव के मंत्र

॥ गृह शांति हेतु मंत्र ॥

(१)

ओं नमो आदेश गुरु को। घर बांधू घर कोने बांधू और बांधू सब द्वारा, जगह-जमीन को संकट बांधू बांधू मैं चौबारा। फिर बांधू मैली मुशाण को और कीलूं पिछवाडा, आगे-पीछे डाकन कीलूं आंगन और पनाड़ा। कोप करत कुलदेवी कीलूं पितरों का पतराड़ा। किलूं भूत भवन की भंगन, कीलूं कील कील नरसिंग। जय बोलूं ओम नमो नरसिंहा भगवान करो सहाई, या घर को रोग-शोक, दुःख दलिद्दर, भूत-परेत, शाकिनी-डाकिनी मैली मशाण नजर-टोना न भगाओ तो लाख-लाख आन खाओ। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र सांचा। ईश्वर उवाचा ओम् नमो आदेश गुरु को।

गृह क्लेश या किसी भी प्रकार की गृहबाधा दूर करने के लिये इस मंत्र का प्रयोग करना चाहिये। इस मंत्र को होलिका दहन या शुक्ल पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी की रात्रि में सिद्ध करे। साधना एकान्त स्थान पर करे वहां एक दीपक जलायें, व एक चौकी पर लाल रंग का रेशमी कपडा बिछा लेवे उस पर पुओ को रखे उनको गुड़ हल्दी धूपादि से पूजा करे। इस मंत्र के १००८ बार जप कर सिद्ध कर लेवे तत्पश्चात् उन पुओं का किसी जलाशय में विसर्जन कर देवे।

किसी कि गृहशांति करने हेतु लौहे की नौ नागफनीया लेवे और एकान्त कमरे में एक चौकी पर लाल रंग का रेशमी कपड़ा बिछाकर उस पर सात मुठ्ठी धान की अलग-अलग जगह रख देवे। एक दीपक प्रज्ज्वलित करे चौकी के चारों कोनों में एवं सातों मुठ्ठी के ढेर पर हलवा लगी पुरी रख देवें। धूप दीप करे। नौ नागफनिया व नौ नीम्बू लेकर को इस मंत्र से १०८ जप कर अभिमंत्रित करे उसके बाद नागफनियों को नीम्बू में गाड़ देवे इनमे से चार नीम्बुओं को घर के चारों कोनों में गाड देवें। एक नीम्बू प्रवेश द्वार पर एक जल रखने की जगह पर लटका देवे। एक नीम्बू घर के आगे व पीछे, शेष नीम्बू घर की जमीन के नीचे गाड़ देवे। उसके बाद चौकी पर रखे सभी समान को लाल रंग के कपडें में रखकर चौराहे पर रख आवे, पीछे मुडकर नहीं देखे। इसके बाद ब्राह्मण भोजन व दान पुण्य अवश्य करे।

(२)

॥ गृह बाधा निवारण मंत्र ॥

ॐ ह्रीं चामुण्डे भ्रकुटि अट्टहासे भीमदशने रक्ष रक्ष चोरेभ्यः वजुर्वेभ्यः अग्निभयः श्वापदेभ्यः दुष्टजनेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः चण्डी ह्रीं ह्रीं ठः ठः।

१० हजार जप कर गुगल धूप देवे। इस मंत्र से कीलन करे या रेखा खीचे तो घर की सब तरह से रक्षा होवे।

(३)

॥ अथ कलहनाशनं दत्तात्रेय तंत्रे ॥

तालकं तक्रपिष्टेन मृत्तिकायुक्तपुत्तलीम्। निखनेद्यद्गुहे भूमौ कलहो नाशमाप्नुयात् ॥

हरताल, छाछ, मिट्टी की पुतली बनाकर घर में गाड़ देवें तो कलह नाश होवे।

॥ विवाह कार्य हेतु प्रयोगा:॥

(१)

गौरी आवे, शिव जी ल्यावै, अमुक को विवाह तुरन्त सिद्ध करे, देर न करे, जो देर होए तो शिव को त्रिशूल पड़े, गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरे।

विधानम् - शुभ दिन मिट्टी का कोरा बर्तन लायें, उसमें एक लाल वस्त्र, सातकाली मिर्च एवं सात नमक की साबुत कंकरी रखें, हंडिया का मुंह भी लाल कपड़े से बांध देवें। कुमकुम की सात टींकी लगावें। फिर ५ माला मंत्र की करें। मिट्टी के बर्तन को (हंडिया) चौराहे पर रखवा देवें।

इससे विवाह की समस्त बाँधाए दूर होती है। उत्तम जगह विवाह होते है। परन्तु मैने देखा है करीब दस हजार जप करने पर कार्य सिद्धि होती है।

(२)

मखनो हाथी जर्द अम्बारी, उस पर बैठी कमाल खां की सवारी, कमाल खां कमाल खां मुगल पठान, बैठे चबूतरे, पढे कुरान, हजार काम दुनियाँ का करे, एक काम मेरा कर, ना करे तो तीन लाख तैंतीस हजार पैगम्बरों की दुहाई।

यह प्रयोग अत्यधिक उम्र की कन्या स्वयं करें। सूती आसन पर बैठकर पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके १० माला रोज २१ दिन तक करें।

जप शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से प्रारंभ करें, कमलगट्टे की माला काम में लेवें, गुलाब की अगरबत्ती जलावें, जप एकान्त या कमरे में दिन या रात्रि को करें। समय ग्रह योग भारी हो तो ४१ दिन तक प्रयोग करना पड़ सकता है।

॥ पति प्राप्ति व विवाह के मंत्र ॥

(३)

ॐ मातंग्यै विद्महे उच्छिष्ट चाण्डालिन्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

१०८ बार मंत्र ६ महिने तक जपे। जवा पुष्प या चंपा के पुष्प से होम करे, तो अच्छा पति मिले।

(४)

गमले में केले का पौधा लगायें। पौधा बड़ा होने पर उसका पूजन करें। कच्चे सूत से ११ बार लपेटे। पौधे के पास बैठें तथा शिव पार्वती के चित्र के सामने ३-३ माला रोज ३ महिने करें। लाजा से (चांवल की फूली) होम करे तो अच्छा पति मिले।

ॐ शं शंकराय सकलजन्माजित पापविध्वंसनाय। पुरुषार्थ चतुष्टय लाभाय च पति सुखं मे देहि देहि कुरु कुरु स्वाहा।

(५)

॥ मनोवाञ्छित पति प्राप्ति हेतु मंत्र॥

मंत्रः- ॐ गौरीपति महादेवाय मन इच्छित वर शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त्यर्थे गौर्ये नमः।

इस मंत्र का जप सोमवार से करे। एक पात्र में स्फटिक शिवलिंग को स्थापित करे एवं लघु नारियल पर कलावा चढ़ाकर उसे गौरी का स्वरूप मानते हुए शिवलिंग के बाँयी तरफ स्थापित कर देवें। फिर उसकी विधि पूर्वक पूजा कर जप प्रारम्भ करे। जप रुद्राक्ष या स्फटिक की माला से करे अपना मुख पूर्व की तरफ रखे और आसन सूती होवे। जप संख्या सवा लक्ष है। जब मंत्र संख्या पूर्ण हो जाये तो ग्यारह कन्याओ का भोजन करावे तत्पश्चात् शिवलिंग एवं गौरी (नारियल) को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर देवें। इस मंत्र के प्रभाव से कन्या को मनोवाञ्छित पति मिलता है।

(६)

॥ कन्यायाः पतिगृहे वासोपायः॥

ॐ नमो भोगराज भयंकर परिभूय उत उधरइं जोइ जोइ देखे मारकर तासो सो दीखे पाव परंता ॐ नमो ठः ठः स्वाहा। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- स्त्री को साबुत नमक की एक सौ आठ डली मंत्रित करके खिलायें तो वह स्त्री ससुराल में रहे रूठकर नहीं आवे।

॥ पुत्र प्राप्ति हेतु मंत्र॥

प्राकृत ग्रन्थे - **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं असिआउसा चुलु हुलु हुलु मुलु मुलु इच्छिय मे कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मंत्र से पुत्र प्राप्ति होती है। २१०० फूल लेवे एवं हर फूल को लेकर मंत्र जपते जाये । इस प्रकार २१ दिन तक यह प्रयोग करे । इस प्रयोग को करने से निःसंदेह पुत्र प्राप्ति होवे।

॥ स्त्री की कोख खोलना ॥

ॐ नमो नील नील महानील दृष्टि देख कोख खोल, फले फूले, बेल बढे चतुराई चले इन (स्त्री का नाम) पेड़ रे फल फूल की जो हानि होवे, हनुमन्त की दुहाई गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

कुंवारी कन्या से काते सूत को केसर में रंगे। मंत्र से सात गांठ लगावें। स्त्री की कमर में बांधे तो कोख चालू होवे।

॥ कोख बांधने का मंत्र॥

आसो मेहतरानी कहां चली, चलती कोख को बांधन चली, कोख बांधू, करवाई बांधू, पेट का फूल बांधू, इत्तै पै गर्भ रहै तो माता अंजनी, आसो मेहतरानी की

दुहाई।

आसो मेहतरानी के दारु का धूप देकर १२१ बार जप करें, फिर किसी फूल पर ७ बार मन्त्र पढकर जिस स्त्री को खिलावें, उसका रजो धर्म बन्द हो जाये तथा गर्भ भी नहीं रहें।

॥ स्त्री की कोख बांधना ॥

ॐ नमो नील महानील दृष्टि देख कोख खोल फल मरे फल सूखे पत्थर काटि रेख इन (स्त्री का नाम) पेड़ रे फल फूल होवे तो जती हनुमन्त की दुहाई, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

रविवार को कुंवारी कन्या से सूत कतावे, उसकी सात लड़ी कर डोरा बनावे। नीले रंग में भिगोकर २१ बार मंत्र पढ़कर नौ गांठ लगावे। काले कपडे में सूत को लपेट कर उसे स्त्री के नाम से गाड़ देवे तो कोख बंद होवे।

॥ अथ गर्भ रक्षा मन्त्रा :॥

(१)

समन्द समन्द में टापू, टापू में द्वीप, द्वीप में कुवांरी कन्या, कुंवारी कन्या काते सूत, गण्डा बनावे अंजनी का पूत, जौ लौ गण्डा गोद में रहै, तौ लौं गर्भ गिरन नहीं कहैं, गिरे तो वासुदेव की आन, गिरे तो ब्रह्मा की आन, गिरे तो नरसिंह की आन, गिरे तो महादेव की जटा पै, गिरे तो पारवती के चीर पै, देखो महावीर स्वामी तेरे मन्त्र की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

कच्चा सूत या कुंवारी कन्या द्वारा काता सूत लेवें, गर्भवती स्त्री के पैर के अंगूठे से हाथ ऊपर करने तक जो लंबाई हो उसको नापें, उसका ७ गुना सूत लेकर ७ लर बनाकर एक धागा बनायें। जितने महिने का गर्भ हो उतने नौ महिने में कम करके उतनी गांठें मन्त्र पढ़कर लगावें। सवा पाव मिठाई नारेल हनुमानजी के चढ़ावें। प्रसव के दिन डोरा खोल देवें।

(२)

उलटन्त दीप पलटन्त धारा, पलटन्त बांधी दसो द्वारा, जो गङ्गा उल्टी बहै अर्जुन चूकै बान, अरे गर्भ तो है फिर गिरै तो गोरा पार्वती महादेव की आन।

विधि उपरोक्त मन्त्र के समान है।

(३)

ॐ नमो आदेश गुरु को हनुमंत वीर गंभीर धूजे धरती बंधावे धीर बांध बांध हनुमंता वीर मास एक बांधू, मास दोइ बांधो, मास तीन बांधो, मास चार बांधू, मास पांच बांधू, मास छै बांधू, मास सात बांधू, मास आठ बांधू, मास नौ बांधू अमुकी को गर्भ गिरे नहीं ठांह को ठांह रहे, ठांह को ठांह न रहे, मेरा बांधा बंध

छूटे तो ईश्वर महादेव गुरु गोरखनाथ जती हनुमन्त वीर लाजे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

पूर्व मन्त्र की तरह गण्डा बनाकर कमर में बाँधे प्रसव समय खोल देवें।

(४)

गौरी गण्डा दे गई ईश्वर दे गया वाचा। महादेव थापा घर गया हुआ शब्द यह सांचा। इस त्रिया की चिंता मेटो दस मास। दस मास बांधू, बीस पाख बांधू, इसका पैर खिसे, तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरे। ईश्वर गौरा दिया ताला या घट पिण्ड का गुरु गोरखनाथ रखवाला। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, फुरो मन्त्र ईष्वरो वाचा, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। सत्य नाम आदेश गुरु को।

विधि मन्त्र प्रथम के समान है।

(५)

॥ औषध उपचार ॥

जिस दिन चन्द्र ग्रहण हो उस दिन शाम को धत्तूरे के पेड़ के पास जाकर उसका पंचोपचार से पूजन करें। पेड़ को निमन्त्रण देकर कहें '**हे महा औषधि हम तुम्हें गर्भ रक्षा के लिये ले चलेंगे।**' पूजन के बाद पेड़ की जड़ में पानी ड़ालकर जड़ की जगह को कच्चा कर देवें। ग्रहण लगने लगे तब पहले पेड़ को उखाड़ लावें एवं उसके एक-एक अंगुल जितने छोटे छोटे टुकड़े कर रख लेवें। उसे गर्भिणी के गले में प्रसव समय तक बांधे रखें, गर्भ रक्षा होवे प्रसव समय खोल देवें।

(६)

॥ गर्भ रक्षा मंत्र ॥

हिमवतः उत्तरे कुले कीदृशी नाम राक्षसी तस्या स्मरण मात्रेण गर्भो भवति अक्षयः ॐ थो थो मोथो मेरा कहा कीजियै अमुकी का गर्भ जाते राखि लीजिये, गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

मंत्र से ताबीज बनाकर स्त्री को पहनावे गर्भ रक्षा होवे।

(७)

ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ नमो आदेश गुरु को बांझिनि पुत्रिनि एक बांझ मराक्ष जाती चौथी गर्भपातिनी चारि उन्हि एक मत भय चलि चलि गई कामरु देश कामाख्यान रानी ते इस्माइल योगी बरवानी तुह जाहु योगी के पास पूरहि तो हरि मन के आस इसमाइल के संग उन्ह रति कइ आंतर भेंट, नो नाव मां इनी से भई नोने कहा तहु चारिहु छिनारि कोखित निति कीन्हन देह गारि कोखि निति

कुन्ती पांच संग खेलि एक द्रोपदी पांच के सहेली सूरज देवता साखी होहु, मोरे जिव में भा सन्ताप मोहि तजि लागे पर पुरुष के पाप एक बूंद निति अकरम कीन्ह तेहि ते हैं वंशकर चीन्ह शिव वाचा ब्रह्मवाचा लेहु जमाउ टोना टमाना भूत प्रेत दोष रोग जो लाख होहि तेहि जग चण्डी जाऊ हरि जुं बार।

इस मंत्र से रोग एवं कोख का बंधन, ऊपरी बाधा दूर होवे, गर्भ रक्षा होवे। कुंवारी कन्या के हाथ से काते हुये सूत कर स्त्री के प्रमाण का सतलडा डोरा बनावे फिर उसे दो लडा मोड कर, नौ गांठे १०८ बार मंत्र पढ़कर लगावे फिर गर्भिणी की कमर में बांधे। अथवा केसर से लिखकर ताबीज धारण कराये।

(८)

॥ गर्भ स्तंभन ॥

ॐ नारसिंह वीर एक पुत्र माड मर्द गर्भ जातो रहे एक मासियों दो मासियों तीन मासियों चौमासियों पंचमासियों छठमासियों सतमासियों अठमासियों नवमासियों दसमासियों मान मर्द तेरी शक्ति फुरे।

जिस स्त्री के बच्चे अधूरे जाये उसके लिये कच्चेसूत के धागे से उसके प्रमाण का सतलडी धागा बनावे। पुनः दो लडा कर १४ लडी बनाये। मंत्र कर ९ नौ गांठे लगावे। १०८ बार मंत्र कर कमर में बांधे तो ठीक रहे।

(९)

॥ गर्भस्राव बन्द होने का मंत्र ॥

प्रसव समय पूर्व अनायास गर्भस्राव होने से, रक्तस्राव होवे तो गर्भ खण्डन भय रहता है।

मन्त्र - **ऊँचो पर्वत नहचो बिलाऊ तहां महादेव के बैठ के पास गौरी काते ईश्वर ताने, वैच पांच यो पिण्डा करे, गाऊ के कैवडे तरिया बहै, अर्जुन सहदेव खेंचे बान, जो ये पिण्डा भूमा पड़ै तो गुरु गोरखनाथ की आन। मेरी भगत गुरु की सकत, अब देखों बाबा तेरे मन्त्र की शक्ति फुरै मन्त्र ईश्वरो वाचा।**

विधि - कुम्हार के चक्के की मिट्टी या शुद्ध जल को सात बार मन्त्र कर पिलावें। गर्भस्राव रुके।

(१०)

॥ रजोस्राव बन्द करने का मंत्र ॥

ठिम ठिम अमुकी श्रोणितं एषि एषि धूतं ह्रीं स्वाहा।

लाल रंग के कच्चे सूत के १४ तागों में २१ गांठ मन्त्र पढकर बांधे, असामयिक रक्तस्राव बन्द हो जायेगा।

॥ अथ सुख प्रसव मन्त्राः॥

(१)

पसर कटाली की जड़ पुष्य नक्षत्र में लावें। यह पौधा अधिकांशतः रेगिस्तान (राजस्थान) में होता है। उसको गीला करके प्रसव कष्ट वाली औरत की चोटी में बांध देवें। प्रसव होते ही जड़ को तुरन्त खोल देवे अन्यथा बच्चादानी भी बाहर आ सकती है।

(२)

यदि प्रसव समय आपरेशन क्रिया की आवश्यकता आ जाये तो इस नुक्से का प्रयोग करें। यह आनुभविक है। गाय का ताजा गोबर लेवें। (देसी गाय होवे तो उत्तम रहे) उस गोबर को पानी में घोलकर कपड़े से छान लेवें एवं कष्टा प्रसूता को पिला देवें। १० मिनिट में सुख पूर्वक प्रसव होवे।

एक महिला डॉक्टर एक प्रसूता पर ऑपरेशन के लिये बार-बार दबाव डाल रही थी। प्रसूता एवं उसकी सास दोनों परेशानी में थी। तथी उन्हें बाहर एक गाय दिखाई दी, जो कि गोबर कर रही थी। सास ने तुरन्त उसका प्रयोग किया, १० मिनिट में सुख पूर्वक प्रसव होने पर डॉक्टर आश्चर्य से पूछने लगी कि आपने कौनसी दवाई दी, जिससे सारी जटिलतायें समाप्त हो गई।

(३)

प्राकृत ग्रन्थे – **ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लंबोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा। आं मुक्तापाशा विपाशश्च मुक्ता सूर्येण रश्मयः।**

मुक्ता सर्ध्व भयागर्भ एहि मारिच स्वाहा। एतेन मन्त्रेणाष्ट वार जयन्नभि मनय पितम तत्क्षणात् सुख प्रसवो भवति।

विधानम् – केवल एक हाथ से खींचे हुये कुए के जल को ८ बार मन्त्र कर पिलाने से सुख प्रसव होवे। कुए से खींचे हुये जल को जमीन पर रखने से महत्व कम हो जाता है। इस मन्त्र को कांसी की थाली में लिखकर उसका जल पिलाने से भी सुख प्रसव होवे।

(४)

चक्रव्यूह यंत्र को थाली में गंध चंदन से लिखे उसके जल को पिलाने से भी सुख प्रसव होवे।

(५)

ॐ नमो वीर निचला गर्भ मुञ्च मुञ्च स्वाहा।

विधि – तेल या गुड को २१ बार मन्त्र कर गर्भवती के कमरे में रखें, सुख से प्रसव होवे।

(६)

मन्त्र – **'ॐ मन्मथ, मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा'।**

(७)

मन्त्र – 'ॐ मुक्ता: पाशा विपाशाश्च, मुक्ता सूर्येण रश्मय:। मुक्त: सर्वभयाद् गर्भ, एह्येहि मारीच स्वाहा'।

मन्त्र ६-७ में से किसी एक मन्त्र द्वारा आठ बार जल को अभिमन्त्रित कर उस जल को गर्भिणी को पिलाने से शीघ्र ही सुख पूर्वक प्रसव होता है।

(८)

॥ सुख प्रसव हेतु मंत्र॥

लंका खोलो रावण बांधो दुश्मन मुख आग लगावो सब देही के बांध खिलांऊ जैसे मातु कौशिल्या पुत्र रामचन्द्र जन्माया। देवी कामरू कामाख्या गुरु काली माई की दुहाई।

इस मंत्र का प्रयोग प्रसव में सुविधा के लिये किया जाता है। इस मंत्र को होली दिपावली या ग्रहणादि समय में सिद्ध करे। सर्वप्रथम मंत्र सिद्ध करे, तत्पश्चात् कुए का जल लावे उस जल को १२१ बार जप कर अभिमंत्रित करे एवं गर्भवती स्त्री को पिलावे। इस अभिमंत्रित जल से गर्भिणी स्त्री की आंखो को भी धुलावे। इससे प्रसव सुविधाजनक होता है।

(९)

॥ सुख प्रसव यन्त्रम्॥

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

सुख प्रसव यन्त्र

इस यन्त्र को कांसी की थाली में प्रसवा स्त्री को दिखावे, सुख पूर्वक प्रसव होवे।

(क)

१६	६	८
२	१०	१८
१२	४१	४

इय यन्त्र को केसर या गोरोचन कांसी की थाली या कागज पर लिखकर जल खोल कर पिलावें। कष्ट दूर हो,, सुख प्रसव होवे।

(ख)

च	क्र
व्यू	ह

अन्यत्- इस चक्रव्यूह यंत्र (ख)को कांसी की थाली में लिख धोकर पिलायें तो कष्टित स्त्री प्रसव वेदना समाप्त हो। तीस के यंत्र (क) को लिखकर स्त्री को दिखाने से तत्काल बालक उत्पन्न हो जाता है।

॥ सुखप्रसव मंत्राः॥

(१०)

प्राकृत ग्रन्थे - **ॐ मुक्ताः पाशा विमुक्ताशा मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद्गर्भ एहि माचिर माचिर स्वाहा।** इति मंत्रः।

अस्य विधानाम्- इस मंत्र से आठ बार जल को अभिमंत्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलायें तो सुख से बालक पैदा हो जायेगा।

(११)

अन्यत्- **ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनि चल चल भ्रामय पुष्पं विकासय विकासय स्वाहा।**

(१२)

अन्यत्- **ॐ नमो भगवते मकर केतवे पुष्पधन्वने प्रति चालित सकलसुरासुरचित्ताय युवतीभगवासिने ह्रीं गर्भ चालय चालय स्वाहा।** इति मंत्रः।

इन दोनों मंत्रो में से किसी एक के द्वारा दूध को अभिमंत्रित करके स्त्री को पिलायें तो बालक का जन्म सुखपूर्वक हो।

अथ रोग निवारण मन्त्रा:

॥ सर्ववेदना हर मंत्र ॥

ॐ नमो कोतकी ज्वालामुखी काली दोबर रंग पीडा दूर कर सात समुद्र पार कर आदेश कामरु देश कामाक्षा माई हाडी दासी चण्डी की दुहाई।

२१ बार झाडा देने से वेदना दूर होवे।

॥ सर्वव्याधिनाशक मंत्र ॥

पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत ऊपर फटिक शिला, फटिक शिला ऊपर अंजनी जिन जाया हनुमन्त, नेहला टेहला कांख की कखलाई पीछे की आदटी कान की कनफटे रान की बद कंठमाला घूट अने का डहरु दाढ की दढ़शूल, पेट की ताप, तिल्ली किया इतने को दूर करे, मस्तन्त नातर तुझे माता का दूध पिया हराम, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र में जो लिखी है वे सब बिमारीयाँ झाड़ा देने से व अभिमंत्रित भभूत लगाने से ठीक हो जाती है। पश्चात् हनुमान के निमित्त सादी भोग लगाना चाहिये।

॥ सर्वरोग नाशक मन्त्र ॥

बन में बैठी वानरी, अंजनी जायो हनुमन्त, बाला ढेहरु, बाघिनी बिलारी आंख की पीड़ा, मस्तक की पीड़ा, चौरासी वाय, बलि बलि भस्म हो जाय। पके न फटे, पीड़ा करे तो, गोरख जति जी रक्षा करें। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

॥ असाध्य रोग निवारण मंत्र ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं काली कंकाली महाकाली स्त्ल खप्पर वाली अमुकस्य अमुक व्याधि नाशय नाशय शमनय स्वाहा।

इस मंत्र में जहां पर अमुकस्य शब्द आया है वहाँ रोगी का नाम लेना चाहिए व जहाँ पर अमुक शब्द आया है वहाँ पर रोग का नाम उच्चारण करना चाहिए। इस मंत्र को ११००० बार जप कर सिद्ध कर लेवे। मंत्र सिद्धि के बाद रोगी को तीन दिन तक १०८ बार अभिमंत्रित किया हुआ जल पिलाना चाहिए या जल छिड़कना चाहिए। इस मंत्र से असाध्य से भी असाध्य रोग शांत हो जाता है।

॥ अथ ज्वर निवारण तन्त्रम्॥

॥ अथ मंथरज्वर निवारण तंत्रम् ॥
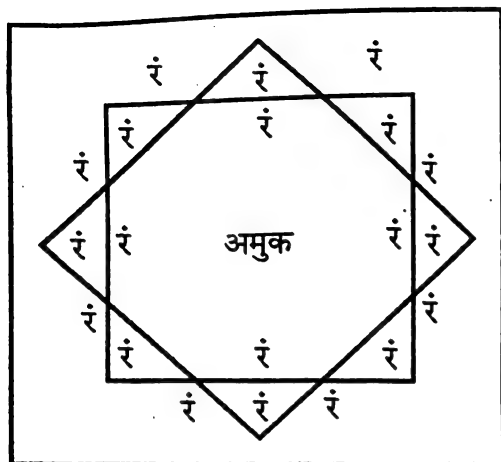
ॐ नमो अंजनीपूत ब्रह्मचारी वाचा अविचलस्वामी उन काज सारिवां क्षां क्षः मगधदेशराय वडस्थान कितिहां मुसलीकंद ब्राह्मण तिणे मधुरो कियो।

करवा समेत गागर तीन पानी से भरें, उसमें चंदन घिसकर डालें, अगर की धूप दें, सफेद फूल चढ़ायें फिर मंत्र को एक सो आठ बार पढ़ें। इस प्रकार सात दिन करें। रोगी को हनुमानजी के प्रसाद की भागी दाल, गुड़, चने आदि खिलावें तो आराम हो।

॥ अथ संततज्वर तंत्रम् ॥

कुत्ते के मूत्र में मट्टी की गोली बनाकर घाम में सुखायें। इस गोली को गले में बांधने से ज्वर उतर कर दुबारा नहीं चढता है, और तंत्रांतरो में लिखा है कि मकड़ी के जाले को गले मे लटकाने से बुखार छूट जाता है।
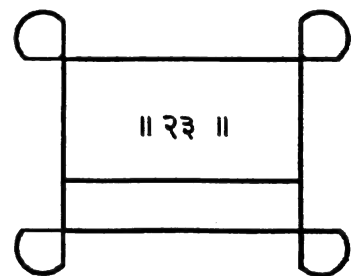
॥ अथ शीतज्वर तंत्रम् ॥

सफेद कनैल की जड़ को दाहिने हाथ में बांधने से शीतज्वर छूट जाता है।

॥ द्युष्कज्वरनिवारण तंत्रम्॥

(१) ॐ वज्रहस्तो महाकायो वज्रपाणिर्महेश्वरः। ताडितो वज्रदण्डेन भूम्यां गच्छ महाज्वर।

इस मंत्र से पान के बीड़े को एक सो आठ बार अभिमंत्रित करके खिलायें तो एक ही दिन में एकांतर ज्वार जाता रहेगा।

(२) ॐ गंगाया उत्तरे तीरे अपुत्रस्तापसो मृतः। तस्मै तिलोदक दद्यान्मुंचत्वैकाहिको ज्वरः। इति मंत्र।

इस मंत्र को पीपल का पत्ता लेकर उसमें तिल डालकर जल से तर्पण करें तो ऐकाहिक ज्वर छोड़ देवे।

(३) ॐ बाणबुद्धे महाघोरे द्वादशार्कसमप्रभे। जातोऽसौ सुमहावीर्यो मुंचत्वैकाहिको ज्वरः। इति मंत्रः।

इस मंत्र को पीपल के पत्ते पर लिखकर धारण करने से ऐकाहिक ज्वर छोड देता है।

(४) औलकं दक्षिणं पक्षं सितसूत्रेण वेष्टयेत्। बध्नाति वामकर्णे तु हरत्यैकाहिकज्वरम्। इति।

(५) कर्कटस्य बिलोद्धूतमृदा तत्तिलकं कृतम्। ऐकाहिकज्वरं हंति नात्र कार्या विचारणा।

॥ ज्वर निवारण यंत्रम् ॥
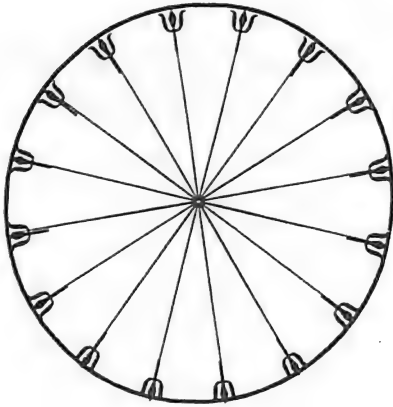
इस सोलह त्रिशूलवाले यंत्र को शनिवार के दिन डंड़ी सहित नीचे पड़े हुए पीपल के पत्ते पर स्याही से लिखकर तीन तार के लाल सूत से गले में बांधे तो एकांतर ज्वर छोड देता है। इसमें संदेह नहीं हमारा सहस्त्रों बार परीक्षा किया हुआ है।

अन्यत्- इस षट्कोण यंत्र को हल्दी द्वारा पान पर बबूल के कांटे से लिखें, पूजन करके रोगी को खिलावें तो एकांतर ज्वर दूर हो जायेगा।

६	१४	५३
६	१६	४
४१	४५	८

॥ तृतीयज्वर निवारणम् ॥

अपामार्ग जटाः कट्यां लोहितैः सततंतुभिः।
बद्धा वारे रवेस्तूर्णं ज्वरं हंति तृतीयकम्।

यंत्र- इस यंत्र को लिखकर गले में बांधने से तिजारी दूर हो जाती है। इस नव कोष्ठ के यंत्र को लिखकर बांधे तो तिजारी दूर हो।

****

॥ चातुर्थिकज्वर निवारण तंत्रम् ॥

सहदेई की जड़ को नग्न होकर लायें। इसको कान में बांधने से चौथिया ज्वर दूर हो जाता है।

॥ रात्रिज्वर निवारण तंत्रम् ॥

काकमाचीभवं मूलं कर्णे बद्धं निशिज्वरम्। निहंति नात्र संदेहो यथा सूर्योदयस्तमः।

अथवा भृंगरे की जड डोरे सहित कान में बांधे तो रात्रिज्वर दूर हो ॥

॥ मस्तक पीड़ा नाशक मंत्र ॥

मंत्र :- ॐ नमः आज्ञा गुरु की, केश में कपाल, कपाल में भेजा, बसै भेजी में कीडा करै न पीडा, कंचन की छेनी, रूपे का हथौडा, पिता ईश्वर ने गाडा, इनको थापे श्री महादेव, तोडे शब्द सांचा मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को ग्रहण में सिद्ध करे। मस्तिष्क में कीड़े होवे तो नाक से बाहर आ जायेंगे।

॥ आधासीसी निवारक मंत्र ॥

(१) ॐ नमो वन में ब्याई वानरी, उछल वृक्षपै जाय। कूद कूद शाखानपै, कच्चे वनफल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े, आध देय गिराय। हंकारत हनुमानजी आधाशीसी जाय। इति मंत्रः।

(२) वन में ब्याई अंजनी, कच्चे वनफल खाय, हांक मारी हनुमंत ने, इस पिंडसे आधासीसी उतर जाय। इति मंत्रः।

(३) ॐ नमो दुघटा तो बन में बसे, तिपटो बसे कवाय। शीश पकड़ि करि चलाए, आधा शीशी जाए। शब्द साँचा, पिण्ड़ काँचा। फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा।

(४) ॐ नमो वन में बसी बानरी, उछल पेड़ पर जाय। कूद- कूद डालन पर कच्चे फल खाय। आधी तोड़े-फोड़े, आधा शीशी जाय।

(५) बन में जाई बान्दरी, जो आधा फल खाए । खड़े मुहम्मद हाँक दे, आधा शीशी जाए

विधिः- उक्त मंत्रों में से किसी को भी ग्रहण, होली या दिपावली की महारात्रि में जप कर सिद्ध कर लेवें। बाद में मंत्र जपते हुए भूमि पर चाकू से एक सीधी रेखा खींचे। उस रेखा पर आडी रेखाऐं खींचकर काटते जावें। सातवी बार काटने से पहले चाकू को रोगी के सिर पर फिरा कर काटे अथवा इस मंत्र का चाकू से झाडा देने से भी रोगी को लाभ मिलेगा।

९९	१	४४
२०	३८	४९
२८	६२	१४

५३	४२
३११	७०

आधा सीसी यंत्र

विभूतिसे झाड़ दे तो आधासीसी दूर हो। इस चार कोठे वाले यंत्र को स्याही से कागज पर लिखकर माथे में बांधे तो निश्चयपूर्वक आधासीसी नष्ट हो जाती है। यह यंत्र गुप्त है।

॥ रतोन्धी नाशक मंत्र ॥

मंत्र :- ॐ भाट भटिनी निकली कहे चलि जाई उस पार जाइव हम जाऊँ समुद्र, भटिनी बोली हम बिछाई हम उपसमाशि पर मुण्डा मुण्डा अण्डा

मंत्र का जप का अभिमंत्रित पानी से मुंह के छींटे देवे। २१ दिन प्रयोग करे।

॥ नेत्रपीड़ा निवारण मंत्र ॥

(१) **ॐ नमो श्रीराम की धनु लक्ष्मण का बाण आंख दर्द करे तो लक्ष्मण कुमार की आन। इति मंत्रः।**

नीम की ड़ाली से इक्कीस बार झाड़ दें तो तीन दिन में आंख की पीड़ा दूर हो जायेगी इसमें संदेह नहीं, अनुभूतमेतत्।

(२) **ॐ नमो झलमलजहर भरी तलाई अस्ताचल पर्वत से आई जहां बैठा हनुमंता जाई फूटे न पाकै करै न पीडा जती हनुमंत हरे पीडा मेंरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को। इति मंत्रः।**

यह मंत्र पढ़ नीम की डाली से झाड़ दें तो दर्द मिटे।

॥ कर्ण रोग का मन्त्र ॥

वनरा गांठि वनरी तो डांट, हनुमान अकण्टा, विलारी वाधिनी, थनैला, कणशूल जाई, श्रीरामचन्द्र वानी जल पथ होई।

सात बार विभूति से झारे।

॥ डाढ़ पीड़ा नाशक मन्त्र ॥

(१) **ॐ नमो कामरु देश कामाक्षा देवी जहां बसे इस्माइल योगी, इस्माइल योगी ने पाली गाय, नित उठ चरबा बन में जाय, बन में चरे सूखा घास खाय, पियके पानी गोबर किया, जामें निपज्या कीड़ा, सात सुताला पूंछ पूंछाला, धड़ पीला, मुंह काला, डाढ़ दांत गालै मसूढ़ा गालै, मसूढ़ा करे पीड़ा, तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई, शब्द सांचा पिण्ड कांचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।**

****

(२) ॐ नमो आदेश गुरू को वन में ब्याई अंजनी जिन जाया हनुमंत। कीडा मकड़ा माकडा ए तीनो भस्मत। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- दिवाली की रात से एक लक्ष जपें तो सिद्ध हो। फिर नीम की ड़ाली से झाड़ दे तो दर्द तत्काल दूर करे। अगर इस मंत्र से कटाई (कटैला) के बीजों को धूवा डाढ़ों में पहुँचायें तो सब कीड़े पानी मे जा पडेगें।

(३) ॐ नमो कीडरे तू कुंडकुंडाला, लाल पूंछ तेरामुख काला, मै तोहि पूंछूं कहां ते आया, तोड मांस सब को क्यों खाया, अब तू जाय भसम हो जाय, गोरखनाथ के लागूं पाय, शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

नीम की ड़ाली से सात बार झाड़ दें तो सर्व जाति के कीड़े मरे।

॥ दांत दर्द दूर करने का मन्त्र॥

काहे रिसियाए हम तो अकेला, तुम हो बत्तीस वीर हमजोला, हम लावें तुम बैठे खाव, अन्तकाल संगहि जाव।

विधिः- मुख धोते समय ७ बार मन्त्र पढ़कर कुल्ला करने से दांत दर्द दूर होवे। दांत मजबूत भी होवे।

॥ मंत्र कंठबेल का ॥

(१)

ॐ नमो कंठबेल तु द्रुमद्रुमाली सिरपर जकड़ी वज्र की ताली गोरखनाथ जागता आया बढ़ती बेल को तुरत घटाया जो कुछ बची ताहि मुरझाया घट गई बेल बढ़न नहिं पावे बैठी तहां उठन नहिं पावे फूटे और पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई सत्य नाम आदेश गुरु का मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

सात दिन चाकू की नोक से झाड़े २१ बार धरती पर लकीर निकाले तो कंठबेल मिटे।

(२)

राजस्थान में ओसवाल जाति में बाफना परिवार जाति को इस रोग का आशीर्वाद है। छोटा बडा या कोई बच्चा गुगल धूप देकर रोगी पर हाथ फेरे तो बीमारी दूर होवे।

मंत्र :- ॐ नमो कण्ठबेल तू द्रूम द्रुमाली सिर पर जकड़ी वज्र की ताली। गोरखनाथ जागता आया। बढ़ती बेल को तुरन्त घटाया। जो कुछ बची ताहि मुरझाया। घट गई बेल बढ़त नहीं बैठी। वहां उठत नांहि। पके फूटे पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई। ॐ नमो आदेश गुरु को। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंत्र ग्रहण में सिद्ध कर चाकू से झाड़ा देवे। १-१ बार मंत्र पढ़ते हुये २१ बार तक पृथ्वी पर लकीरे खींचते जाये।

॥ हिचकी का मंत्र ॥

ॐ नमो सारकी छूरो धारका बान हूक न चले रे महम्मदा ज्वानकी आन शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- इक्कीस बार पढ़ते हुये पैनी छूरी से पृथ्वी पर लकीर खिंचते जाये तो हिचकी बंद हो ॥

॥ कखलाई दूर करने का मंत्र ॥

(१)

नाथ जाति में यह मंत्र अधिक प्रचलित है।

मंत्र :- ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहां बैठा हनुमन्ता वीर। पके न फूटे चले न पीडा। रक्षा करे हनुमन्त वीरा। दुहाई गोरखनाथ की। शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंत्र सिद्ध कर २१ बार नीम की डाली से झाड़ा देवे। जमीन की उस मिट्टी को रोग पर लगावे।

(२)

ॐ नमो कखलाई भरत लाइ, यहां बैठा हनुमन्ता आई, पके न फूटे चल बाल, जति रक्षा करे, गुरु गोरख बाल, शब्द सांचा पिण्ड कांचा, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, सत्यनाम आदेश गुरु को।

नीम की डाली से झाड़ा देवें तथा मन्त्रकर भूमि की मिट्टी कखलाई पर लगावें।

(३)

ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहां बैठा हनुमंता आई पके न फूटे चले न पीडा रक्षा करे हनुमंत वीर दुहाई गुरू गोरखनाथ की शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु को। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- नीम की ड़ाली से २१ बार झाड़ कर उस पर की मिट्टी लगा दें तो तीन ही दिन में बैठ जायगी।

॥ मंत्र रींघनवायका ॥

ॐ नमो आदेश गुरू को ॐ नमो कामरूदेश कामाक्षा देवी जहां बसे इसमायल जोगी के पुत्री तीन एक तोड़े एक पिछोड़े एक रींघनवाय तोड़े शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

मंगल और शनिवार को मनिहारी की मोगरी से झाड़ दें।

****

॥ धरण ठीक करने का मन्त्र ॥

(१) ऊंची नीची धरणी श्रीमहादेव की सिरनी टली धरन आनूं ठौर सतसत भाखै श्रीगोरखराव। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- झाड़ कर सवा तीन मासा की मूंदड़ी पहनावें तो धरन ठिकाने आवे।

(२) ॐ नमो नाड़ी नाड़ी नौसे नाड़ी बहत्तर सो कोठा चले अगाडी डिगे न कोठा चले न नाड़ी रक्षा करे जती हनुमंत की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

नौ गांठ सूत में लगाकर छल्ले के आकार का बना लें। उसको नाभिपर रख के मंत्र पढ़ें, उसके भीतर फूंक मारें तो थोड़ी देर में धरन ठिकाने आ जायेगी।

(३) वन में संखाहूली फूले उसको हल्दी रंगे चांवलो से शनिवार को न्योता दे आयें, रविवार के दिन प्रातःकाल जाकर सात प्रदक्षिणा करें, हाथ जोड़ें, शिर नवायें, सूर्य की तरफ मुख करके स्तुति करें, फिर उसकी जड़ में दूध डालें, फिर उसे खोदकर ले लायें। इसको कमर में बांधते ही धरण ठिकाने आ जाती है इसमें संदेह नहीं।

॥ अथ दर्द और थनयलका मंत्र ॥

ॐ नमो वन में जाई वानरी, जिन जाया हनुमंत। सज्जा खधा ठाकिया हो गया भस्मीभूत। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- स्त्री का दाहिना स्तन दूखे तो अपना बायां, अगर स्त्री का बायां, स्तन दूखे तो अपना दाहिना स्तन छाने की राख से सात बार झाड़े तो उस स्त्री का स्तन दर्द ठीक हो जायगा ॥

॥ जामोगा का मंत्र ॥

सुन रे जामोगे मतिकर अभिमान तेरा नहीं दुनिया में ठिकाना बालक दिया है श्रीभगवान। बचोगे नहीं तू जिमी आसमान दुहाई औघड़की छू खेद के मारता हूं॥

रामसर के पौधे का तीर कमान बनायें और मंत्र पढ़ कर तीर बालक के मारे तो जंभूवे की पीडा से छूट जाये।

॥ डब्बा पसली झाड़ने का मंत्र ॥

सत्य नाम आदेश गुरु का उंखंखारी खंखारा कहां गया सवालाख पर्वतो गया सवा लाख पर्वतो जाय कहा करेगा सवा भार कोइला करेगा सवाभार कोइला कर कहा करैगा हनुमंत वीर नव चन्द्रहासखड्ग गढ़ेगा नव चन्द्हासखड्ग गढ कहा करेगा जानवा डौरू पांसलीवाय काटकूट खारी समुद्र नाखेगा जगद्गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

तिलका तेल और सिंदूर से झाड़ दे तो आराम होये।

॥ कमर दर्द निवारण मंत्र॥

चलता आवे उछलता जाय, भस्म करता उह उह जाए। सिद्ध गुरु की आन। मंत्र साँचा, पिण्ड़ काँचा। स्फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधिः- पहले नित्य २१ दिनों तक इस मंत्र का १०८ बार जप करें। धूपादि देकर नैवेद्य चढावें। फिर कुँवारी कन्या के द्वारा काते गये सूत से रोगी के कमर का नाप लेकर सूत पर ११ गाँठे इस मंत्र को पढ़ते हुए लगावे। फिर धागे को रोगी के कमर में बाँध देवे तो रोगी को लाभ होगा।

॥ पीलिया झाड़ने के मंत्र॥

(१)

ॐ नमो वेताल, पीलिया को मिटावे, काटे, झारे, रहे न नेंक, रहे कहूं तो डारूं छेद छेद काटे, आन गुरु गोरखनाथ हन हन पच पच फट् स्वाहा।

विधानम् - सूर्यग्रहण के दिन मन्त्र सिद्ध करें। फिर शुक्रवार या शनिवार को कांसे की कटोरी में एक छटांग तिलों का तेल भरकर रोगी के सिर पर रखें, कुए की दोब से तेल को चलाते रहें तथा मंत्र पढते रहें जब तक तेल पीला नहीं पड़े। फिर तेल को एकांत मे डाल देवें। २-३ बार करने से रोग ठीक होवे।

(२)

ॐ नमो आदेश गुरु को, श्री राम सर साधा, लक्ष्मण साधा त्राण, पीला रीता, नीली थोथा पीली पीला पीली चारों गिर चहिं, तो श्रीरामचन्द्रजी रहे नाम, हमारी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

सात शनिवार पीतल के कटोरे में पानी लेवें, सूई से सात बार झाड़ें, कटोरे में दाने उभरने लगे या पानी पीला पड़ने लगे तो असर कम होगा।

(३)

ॐ नमो वीरवैताल असराल नारसिंहदेव खादी तुषादी पीलियाकूं भिदाती कारै झारे पीलिया रहै न नेकनिशान जो कहीं रह जाय तो हनुमंत की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

काँसे की कटोरी में तेल भरकर रोगी के सिर पर रखें। मंत्र पढ़कर कुशासे तेल को चलाते जावें। तेल पीला हो जाये तब उतार लेवें तो सब पीलिया तीन दिन में उतर आयेगा।

(४)

ॐ नमो वीर वेताल कराल नारसिंह देव नार कहे तूं देव खादी तू बादी पीलिया कूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहै न एक निशान जो कहीं रह जाये तो हनुमंत जति की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

****

॥ अस्य विधानम् ॥

(१) रोगी के सामने कांसे की कटोरी पानी भरे उसमें सात बूंद तेल की डाल तथा नीम की डाली से झाड़ा देवे, रोगी उस बरतन में देखता रहे तो पीलिया उतरे। उस जल को जहां पैर नहीं पड़े वहां डाल देवे।

(२) कांसी की कटोरी में तिल्लि (तिल) या मूंगफली का तेल डाले डाभ (कुशा) से उस तेल को हिलाये, कटोरी रोगी के सिर पर रखे। ७ या २१ बार पढे। तेल के पीला पड़ने से रोग उतरता है, ऐसा ३ दिन करे।

॥ अथ प्लीह (तिल्ली) निवारण मंत्र ॥

ॐ नमो हुताश पर्वत जहां सुरह गाय सुरहगाय के पेट में बच्छा बच्छा क पेट में तिल्ली दबा दबा कर तिल्ली कटे सरकंडा बढे फीहा कटे हरो फुरो। इति मंत्रः।

छूरी से पृथ्वी में लकीर कर कर काटते जायें। मंत्र पढ़ते जायें तो तिल्ली कटे।

॥ अदीठ मंत्राः॥

(१)

ॐ नमो सिर कटा नख कटा विष कटा अस्थिमेदमजागत फोडा फुनसी अदीठ दुंबल दूखना रैत्यावरोगरींघणबायजाय चौंसठ जोगनी बावन वीर छप्पन भैरूं रक्षा कीजे आय शब्द सांचा पिड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

अस्य विधानम्- मोरपंख से पृथ्वी साफ करके सात बार मंत्र पढ़ें, और चुटकी धूल की उठाकर फोड़े के चारों तरफ लगा देवें ऐसे सात दिन करे तो अदीठ जाय।

(२)

यह फोड़ा अधिकतर पीठ में नारियल के आकार का हो जाता है। डाक्टरों के चक्कर में तो मरीज के बहुत बडा घाव ऑपरेशन से हो जायेगा तथा २ महिने पट्टी का इलाज चलेगा। कुछ परिवारों में वंशानुगत आशीर्वाद है। फुलेरा जंक्शन जिला जयपुर में गोपालपुरा गांव में एक जाट परिवार को आशीर्वाद है उसके परिवार का छोटा बडा कोई भी बच्चा रोग स्थान पर थूंक देता है रोगी बिना बोले वापस आजाये। नीम के पत्तों के गर्म पानी से दिन में २ बार धोवे फोडा अपने आप फूट जाता है घाव भी अपने आप भर जाता है चाहे उस व्यक्ति के मधुमेह ३००-४०० तक होवे।

ॐ नमो सिरकटा नखफटा विषकटा अस्थिमेदमत् जागत फोड़ा फनसो अदीठ हुंबल रैल्या व रोग रींघण वाय जाये। चौसठ जोगनी बावन वीर छप्पन भैरव रक्षा कीजे आय। शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंत्र को ग्रहण में सिद्ध करे। मोर पंख से पृथ्वी पर झाडा देवे। उस धूल को फोड़े पर लगावे। ७ दिन तक करने से फोडा ठीक होवे।

॥ अथ बवाशीर निवारण मन्त्र॥

(१)

ईसा ईसा ईसा, कांच कपूर चोर के शीशा, अलिफ अक्षर जाने नहीं कोई, खूनी बादी दोनों न होई, दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।

एक लोटा पानी मंत्रित कर उससे शौच साफ करें तो ठीक होवे।

(२)

ॐ काकाकता क्रोरीकर्ता ॐकरतासे होय य रसना दशहूंस प्रकटे खूनी बादी बवासीर न होया मंत्र जानके न बतावे द्वादश ब्रह्महत्या का पाप होय लाख जप करे तो उसके वंश में न होय शब्द सांचा पिंड काचा तो हनुमान का मंत्र साचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

इस मंत्र से बासी पानी को इक्कीस बार अभिमंत्रित करके आबदस्त ले तो बवासीर की पीड़ा दूर होकर कभी नहीं होगी और जो कोई इस मंत्र को एक लाख जप करता है उसके वंश में कभी बवासीर रोग नहीं होता है। इस मंत्र जानकर अर्शरोगी को जल पढ़ा ले जाने के लिये नहीं कहता, उस मंत्री को बारह ब्रह्मण मारने की हत्या लगती है। इस लिये जल पढ़ा ले जाने की सूचना अवश्य कर देनी चाहिये। कहने पर यदि रोगी पढ़ाकर नहीं ले जावें तो मंत्री दोष भागी नहीं होता है। यह मंत्र कई बार अनुभव किया हुआ है।

(३)

ॐ उमती चल चल स्वाहा। इति मंत्रः।

इस मंत्र को २१ बार पढ़कर लाल सूत में गांठ देवें। इसी तरह तीन गाठ देकर दाहिने पैर के अँगूठे में बांधे तो खूनी बवासीर की पीडा दूर हो जायेगी। अनुभूतमेतत्।

॥ लकवा का मंत्र ॥

झाड़ा देने वाला व्यक्ति निर्लोभ कार्य करे तो ही मंत्र सफल होवे। रोगी से धर्मादा हेतु दान अवश्य करावे। लगातार ३ दिन तक दिन में ३-३ बार झाड़ा लगवाये। दूध दही शक्कर व सफेद वस्तु का त्याग करे। दूध में हल्दी केशर से रंग बदल देवे। मीठा नहीं खावे। तेल नहीं खावे। देशी घी कम मात्रा में प्रयोग करें।

ॐ नमो गुरुदेवाय नमः। ॐ नमो उस्ताद गुरु कूं, ॐ नमो आदेश गुरु कूं, जमीन आसमान कूं, आदेश पवन पाणी कूं, आदेश चन्द्र सूरज कूं, आदेश नवनाथ चौरासी सिद्ध कूं। आदेशी गूंगीदेवी, बहरीदेवी, लूलीदेवी, पांगुली देवी, आकाश देवी पाताल देवी उलूकणी देवी पूंकणी देवी, टुंकटुंकी देवी आटी देवी, चन्द्रगेहली देवी, हनुमान जति अञ्जनी का पूत पवन का न्याती, वज्र का कांच, वज्र का लंगोटा ज्यूं चले ज्यूं चल, हनुमान जति की गदा चले ज्यूं चल, राजा रामचन्द्रं का बाण चले ज्यूं चल। गंगा जमना का नीर चले ज्यूं चल।

दिल्ली आगरा को गैलो चले ज्यूं चल, कुम्हार को चाक ज्यूं चल गुरु की शक्ति हमारी भक्ति चलो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र की उपासना में बीजासनी देवी, सात वहिने, बायामहारानी देवी, आसावरी देवी या खोड्यार माता एवं हनुमान जी की उपासना की जाती है। आशापुरी धूप देकर २१ बार झाड़ा देवे। दिन में ३ बार २१ दिन तक झाड़ा देवे। रोगी २१ दिन तक खेजड़ी मे जल सींचे। अथवा सातों बहने, बीजासनी, बायादेवी के नाम से पानी के स्थान परिण्डे में आशापुरी गुगल व लाख की धूप देवे।

॥ मृगी रोग ठीक करने के मंत्र॥

(१) ॐ हाल हलं स्मगत मंडिका पुडिया श्रीराम फूंकै मृगी वायु सुखे। ॐ ठः ठः स्वाहा।

(२) ॐ हलाहल सरगत मंड़िया पुड़िया श्रीरामजी फूंकै मृगी बाई सुखे सुख होई। ॐ ठः ठः स्वाहा।

मृगी के रोगी को जब इसका दौरा पड़ता है तो उसकी हालत दयनीय हो जाती है। लोग रोगी के नाक पर जूता सूंघाने लगते है। इस मंत्र को सिद्ध कर आवश्यकता पड़ने पर मंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर ताम्बे के ताबीज में भरकर रोगी को गले में पहना देवे। इसके प्रभाव से मृगी रोग का प्रभाव दूर हो जाता है।

(३) ॐ हलाहल सरगत मंडिया पुरिया श्रीरामजी फूंके। मृगीबाई सूखे सुख होई ॐ ठः ठः स्वाहा।

भोजपत्र पर मंत्र की लिखकर गले में धारण करे।

॥ दादनाशकमंत्र ॥

ॐ गुरुभ्यो नमः देव दंब पूरी दिशा मोरुनाथ दलक्ष नामरे विशाहतो राजा वैराधन (वैरोचन) आज्ञा राजा वासुकी के आन हाथ वेगे चलाया।

नीम की डाली से झाड़ा देवे। नीम के पत्ते के वपानी को मंत्रकर धोवे तथा पीने से रोग निवारण होवे।

॥ कुत्ता झारने का मन्त्र॥

(१) ॐ वासुदेवाय नमो नमः, विष झारन मन्त्र कुकुर रक्ष।

शनिवार, मंगलवार, रविवार को कुम्हार के चाक की मिट्टी लेकर कुत्ते के काटने के स्थान पर लगावें।

(२) ॐ नमो कामरु देश कामाक्षा देवी, जहां बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने पाली कुत्ती, दस काली दस काबरी, दस पीली, दस लाल, रंग बिरंगी दस खड़ी, दस टीकों दे भाल, इनका विष हनुमन्त हरे, रक्षा करे गुरु गोरख बाल, सत्यनाम आदेश गुरु को।

ग्रहण के दिन मन्त्र सिद्ध करे। उपले की राख को मन्त्र कर कुत्ते के काटने के स्थान पर लगावें।

(३) ॐ कामरू देश कामाक्षा देवी जहां बसै इसमायल जोगी इसमायल जोगी का झामरा कुत्ता सोना की डाढ़ रूपा का कूंडा बंदर नाचे रीछ बजावे सीता बैठी औषध बांटे कूकर का विष भाजे शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

इस मंत्र से झाड़ दें तो पागल कुत्ते का विष उतर जायगा फिर किसी तरह की पीड़ा नहीं होगी।

(४) ॐ नमो आदेश गुरूको आदेश कामरू देश का झबरा कुत्ता हुकनबुके सुषपसुसे शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- मोर पंख से १०१ बार झाड़ दें, और शनिवार के दिन ३ तोले चावल भिगोयें। रविवार को पीसकर दो गोली बनायें। फिर आंगन को लीपकर रोगी को बिठावें और सूर्य की तरफ मुख करके गोली फेरे मंत्र पढ़ते रहें तो कुत्ते के दंशके बाल गोली में निकलेंगे फिर मंत्र पढ़कर दूसरी गोली फेरें तो उसमें भी बाल निकलेंगे। इसी प्रकार रविवार से ३ दिन झाड़ देवें। वर्ष दिन पर्यन्त दर्पण न देखें, उड़द, तेल की वस्तु, खटाई, अचार न खायें पानी में मुख न देखें।

॥ पशु रोग निवारक मन्त्र ॥

ॐ नमो कीड़ा रे, तु कुण्ड कुण्डाला, लाल पूंछ तेरा मुंह काला, मैं तोहि बूझूं कहां ते आया, तोड़ि मांस तै सबकूं खाया। अब तू जाय भस्म हो जाय। गुरु गोरखनाथ करे सहाय। शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र से नीम की डाली से पशु को झाड़ें तो उसके कीड़े दूर होवे।

॥ नेहरुवा का मन्त्र ॥

बने बिआई अंजनि जायो सुत हनुवन्त नेहरुवा देहरुवा जरि होइ भस्मन्त गुरु की शक्ति।

१० हजार बार जप करें ७ तीली की सींको से झाड़ा देवे।

॥ वृश्चक दंश के मन्त्र ॥

(१)

काली कुकडी पाय पकडी सौन्दडी च पान । उतर उतर विंचवा तेच तुझ रान।

सूर्य ग्रहण में मन्त्र सिद्ध करें, गीले कपड़े से जप करें। जिस अङ्ग पर बिच्छु काटा है, उसको स्पर्श करते हुये जमीन तक हाथ फेरे मन्त्र जप करें। फिर धीरे धीरे रोगी के अंग व अपने हाथ को जमीन पर पटके ऐसा लगेगा कि विष का प्रभाव कम हो रहा है। ६-७ बार करने पर विष का दर्द ऊपर से कम होता हुआ दंश स्थान तक आ जायेगा। दंश स्थान पर मिट्टी का तेल लगावें धीरे धीरे सूजन कम हो जायेगी।

(२)

ॐ नमो आदेश गुरु को कालो बिच्छु कांकरवालो उत्तर बिच्छू न कर टालो

उतरै तो उतारूं चढ़े तो मारूं गरुडमोरपंख हकालूं शब्द साचा पिंड काचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

इस मंत्र से झाड़ दे तो बिच्छू का विष उतरे।

(३)

काला बिच्छू कंकरवाला हरी पूंछ भैंराला सोना का झाडू रूपेका पतनाला आठ गांठ नौ कोर नीचे बिच्छू ऊपर मोर कौन मोरा रेतो भकभकार बिच्छू रेतो बावन वीर नीड निकोर के कौन वैद मानुष पर गया खाते जाते लगी बार उतर रे बिच्छू तुझे ख्वाज ममंदीनचिरागतृष्टि की आन। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- जहां तक विष चढा हो उस स्थान को पकड़कर बुहारी से झाड़ दें, जैसे जैसे विष उतरे आप भी नीचे से पकडते रहें, काटने की जगह पर आवे तब झाड़ना बंद करके डंक के ऊपर तेलिया मोहरा पानी में घिसकर लगावे तो डंक भी अच्छा होवे।

(४)

ॐ नमो आदेश गुरु का काला बिच्छु कंकरीयाला सोना डंक रूपे का भाला जो उतरे तो उतारूं चढ़े तो मारूं, नीलकंठ मोर, गरुड का आयेगा। मोर खायेगा तोड, जा रे बिच्छु डंक छोड मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

(५)

ॐ नमो काहरकबरी गंटीयाली पर्वत चरईनिपनी बिच्छु द्रोहा काला बिच्छु धवला बिच्छु, मार्गरी बिच्छु इत उतारु नहीं तर नीलकण्ठ मोर हकारू, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

नीम की डाली से झाड़ा देवे। जहर स्थान पर राख लगावे।

॥ सर्प विष झाड़ने के मंत्र ॥

(१)

मन्त्र - **खं खं** । इति द्वयक्षरो मंत्रः।

अस्य विधानम्- सर्प काटने की खबर मिलने पर पानी को एक सौ आठ बार अभिमंत्रित करके खबर देने वाले मनुष्य को देदें। और कहें कि जाकर पिलादे इस पानी के पीने से सर्प का जहर उतर जाता है।

(२)

ॐ नमो भगवति वज्रमये हन हन ॐ भक्ष भक्ष खादय खादय ॐ अरिरक्तं पिब कपालेन रक्ताक्षि रक्तपटे भस्माङ्गि भस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रकरांचिते पूर्वां दिशं बंध बंध दक्षिणां दिशं बंध बंध पश्चिमां दिशं बन्ध बन्ध उत्तरादिशं बंध बंध

ॐ नागान् बंध बंध नागपत्नीं बंध बंध ॐ असुरान् बंध बंध ॐ यक्ष राक्षस पिशाचान् बंध बंध ॐ भूत प्रेत गंधर्वादियो ये केचिद् उपद्रवास्तेभ्यो रक्ष रक्ष ॐ उर्ध्वं रक्ष रक्ष ॐ अधो रक्ष रक्ष ॐ क्षुरिके बंध बंध ॐ ज्वल महाबले घट घट ॐ मोटि मोटि सटावलि वज्रांगि वज्रप्रकारे हुं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फट् ह्रीं हः फूं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यो ह्रीं अशेषेभ्यो रक्ष रक्ष विषं नाशय अमुकस्य सर्वाङ्गानि रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- जल को तीन बार अभिमंत्रित करके पिलायें तो विष उतरे।

(३)

ॐ हुँ सं ॐ नालकांतिदंष्ट्रिणि भीमलोचने उग्ररूपे उग्रतारिणि छिलि किलि रक्तलोचने किलि किलि धोरनिःस्वने कुलु कुलु ॐ तडिज्जिह्वे निर्मांसे जटामुंडे कट कट हन हन महोज्ज्वले चिलि चिलि मुंडमालाधारिणी स्फोटय स्फोटय मारय मारय स्थावरं विषं जंगमं विषं नाशय नाशय ॐ महारौद्रि पाषाणमयि विषनाशिनि वनवासिनि पर्वतविचारिणि कह कह ॐ हस हस नम नम दह दह क्रुध क्रुध ॐ नीलजीमूतवर्णे विस्फुर विसफुर ॐ घंटानादिनि ललज्जिह्वे महाकाये क्षुं हुं आकर्ष आकर्ष विषं धन धन हेहरयं ज्वालामुखि वज्रिणि महाकाये अमुकस्य स्थावरजंगमविषं छिन्धि छिन्धि किटि किटि सर्वविषनिवारिणि हुं फट्।

अस्य विधानम्- पहाड़ के पत्थर का एक नीलवर्ण टुकड़ा अभिमंत्रित करके सर्प के डंक पर चिपका देवें और मंत्र को पढ़ते रहें, जब तक विष रहेगा तब तक पत्थर वहीं चिपका रहेगा। विष निःशेष होने पर पत्थर अलग हो जायेगा। इसमें संदेह नहीं।

अन्यत्- इस मंत्र को कागज पर स्याही से लिखकर धोयें और सर्प के काटे हुए मनुष्य को पिलायें तो सर्प का विष तत्काल उतर जायगा, चढ़ेगा नहीं।

(४)

ॐ नमो पर्वताग्रे रथो आन्ति विट बडा कोटि तन्य वीरडर पंचनशपनं पुरमरी अंसडी तनय तक्षक नागिनी आण, रुद्रनी आण, गरुड की आण, शेषनागकी आण विष उडन्ती फुरु फुरु फुरु ॐ फुरु डाकू रड़ती भरड़ा भरड़ती विष तु दन्ती उदकान।

कुछ श्वेताम्बर साधु इस मंत्र का प्रयोग रक्षा हेतु करते है। नागपंचमी को मंत्र सिद्ध करना। देशी घी काली मिर्च रोगी जितनी खा सके खिलावे। कई व्यक्ति पाव भर काली मिर्च भी इस अवस्था में आसानी से खा जाते है। इससे रोगी को मूर्च्छा कम आती है जहर का मस्तिष्क केन्द्र पर असर नहीं होता है। काली मिर्च अभिमंत्रित कर खिलावे तथा अभिमंत्रित पानी पिलावे। पानी के छींटे देवे।

(५)

॥ नगाडा बजाकर विष उतारना ॥

मंत्र को लिखकर नगाड़े पर चिपकाये। साथ में लिखे अमुक का विष उतरे फिर मंत्र पढते हुये नगाड़े पर चोट करे। अभिमंत्रित जल पिलाने से मूर्च्छा दूर होवे।

ॐ टामक शब्द यू भम्पउ आला विष उ खाऊ। चन्दन रूप ही जग भमऊ, तू छोडि विषऊ हरि जाऊ ॥

राजस्थान में जाट जाति के वीर तेजा एवं गुर्जर जाति के वीर गोगा का नगाडे बजाकर आवाहन करते है।

(६)

॥ थप्पड मारकर विष उतारना ॥

नागौर, मारवाड, बांसवाडा जिले में इस विद्या के जानकार थे।

धर पटक धसनि धसनि सार, उपरे धसनि विष नीचे जाय। काहे विष तू इतना रिसाय, क्रोध तो तोर होय पानी। हमरे थप्पड तोर नहीं ठिकाना, आज्ञा देवी मनसा माई, आज्ञा विषहरि राई दुहाई।

राजस्थान में कालबेलिया जाती सर्प विष निवारण में प्रवीण होती है। इस मंत्र को गुगल लोबान धूप देकर, होली, दीपावली, दशहरा, अमावस्या शनिवार रात्रि या ग्रहण में सिद्ध करे। सर्प विष की सूचना देने वाले को तत्काल थप्पड मारे तो रागी का विष हल्का होवे। रोगी को नीम, काली मिर्च घी खिलावे बाद में झाड़ा भी देवे।

(७)

॥ सर्प दंश दोष का मन्त्र ॥

काली दह के तीर पे कृष्ण जी पहुंचे जाय। बांसुरी राखि के कूदि पड़े जल में जाय। कालिया नाग बसै वह जल में मंझार, श्रीकृष्ण को देखि धाए छोड़ फुफकार, यह देख कृष्णचन्द्र ने तुरन्त बंधकर दीन्ह, पशु पक्षी अरु जीव सङ्कट हरि दीन्ह। श्रीकृष्ण के स्मरण ते अमुक अङ्ग विषझर जाई, आदेश विष हर राई की दुहाई।

॥ सर्पकीलन, खोलने व भगाने के मंत्र ॥

(१)

ॐ नमो सर्पा रे तू थूलमथूला मुख तेरा बना कमल का फूला सर्पा रे सर्प्पा बांधू तेरी दादीभुवा जिनने तोकूं गोद खिलाया सर्पा रे सर्पा बांधू तेरा रतन कटोरा जामें तोकूं दूध पिलाया सर्पा रे सर्पा बीज कीलनी बिजपान मेरा कीला करै जो घाव तेरी डाढ़ भस्म हो जाय गुरु गोरख भी जाय जलाय ॐ नमो आदेश गुरु को मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्र:।

इस मंत्र को शिवरात्रि से प्रारंभ करके वर्ष दिन पर्यंत सवा प्रहर तक असंख्य जपें तो सिद्ध हो। फिर आरने कि भस्म सातबार मंत्रित कर सर्प पर ड़ालें तो सर्प की डाढ़ बंद हो जायेगी फिर खिलौने के समान उसे उठा लेवें।

(२)

बजरी बजरी बजरकिवाड़ बजरी कीलूं आस पास मरे साप होय खाख मेरा कीला पत्थर कीले पत्थर फूटे न मेरा कीला छूटे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

इस मंत्र से सांप के एक कांकरी मारे तो सांप कील ज़ाये।

(३)

॥ बिच्छु व सर्प को बांधना ॥

या खालिस या मुखालिस या खल्लास काम अवेरा सहम को मुवक्किल, तुमको ख्वाजा तुमको मुईउद्दीन लिये, मोर कांटा चोहरा नाहर सर्पा बिच्छु अमां चोर चाड बंधाय। सत्यनाम आदेश गुरु को शब्द सांचा ईश्वरो वाचा।

नौचन्दी जुमेरात को ११०१ मंत्र का जप नदी किनारे करे। लोबान की धुनी देकर मंत्र सिद्ध करे। मार्ग में जाने पर, जंगल या वीरान जगह सोने पर मंत्र स्मरण से शेर, सर्प बिच्छु का भय नहीं रहे।

॥ सांप खोलने के मंत्र ॥

(१)

कीलन भई कुकीलनि, वाचा भया कुवाच। जाहु सर्प घर आपने, चुग फिर चारों मास। इति मंत्रः।

(२)

पहरे भगवे कपड़े कर मरदाना। भेस बंधीबंधी पन छुटगई फिरिआ चारो देश मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मंत्रः।

इस मंत्र को पढ़ कांकरी मारे तो कीला हुआ सांप छूट जाये।

(३)

सर्प को ओझा के बंधन से मुक्त करने के लिये उसका कीलन खोले एवं मंत्र पढ़ कर सरसों व उड़द फेंके।

काला कपड़ा पहरिया भगवा किया भेष। मैं तो सर्पा छोडिया फिर चर त्यारै देश॥

मंत्र पढ़ने से कीलक खुलकर साप मुक्त होकर जंगल में चला जाता है एवं किसी के नुकसान नहीं देता।

॥ सर्पो को भगाने के मंत्र॥

(१)

ॐ प्लः सर्पकुलाय स्वाहा अशेषकुलसर्पकुलाय स्वाहा। इति मंत्रः।

****

इस मंत्र से सात बार् मृतिका को अभिमंत्रित करके घर में ड़ालें तो सर्प भाग जायेगें।

(२)

सर्पाय सर्प भद्रं ते दूर गच्छ महाविष ।
जन्मेजयस्य यज्ञान्ते आस्तिक्य वचनं स्मर ॥
आस्तिक्य वचनं स्मृत्वा यः सर्पो न निवर्त्तते ।
सप्तधाभिद्यते मूर्ध्नि वृक्षात्पक्व फलं यथा ॥

सर्प दिखने पर इस मन्त्र को पढ़ें तो सर्प दूर चला जाता है। रात्रि को सोते समय मन्त्र पढ़कर तीन ताली या चुटकी बजाकर सोने से रात्रि में सर्प भय नहीं रहता है।

॥ सांप बाहर निकालने का मंत्र ॥

(हिन्दी बंगला भाषी) मंत्र :- **कोथा चण्डि विष हरि विषवृक्षमूले, एक बारे एखाने आसे सन्ताने, दा देखिले एड आसे एड आसे गरुड आसने, नाच्छि योगिनी जतो मनसार भासाने। जरतकारु छिलो जानि ए महि मण्डले। वोस्ताद् बधिया फैले सागरेर जले। कुज्ञान विज्ञान काटी करी खान खान। भये सापा बापा बोले करे अगुवान। माथा जु जु मुडि धीरे धीरे आसे। बेहुला कान्दिया निजेर चोखेर जले भासे। सार सार मालं साठ गरुडेर फुस। काल नागिनी चौसिट्टि योगिनी नाई होस आम आय आय हरि हरि विषहरि झरि। गरुड मनसार दोहाई। सिद्धि चण्डीर दोहाई शीघ्र आय।**

पहले आत्मरक्षा का मंत्र एवं विष निवारण मंत्र पढ़े फिर मंत्र पढ़कर बांबी पर धूल फेंके। फिर भी सर्प बाहर नहीं आवे तो निम्न मंत्र से प्रयोग करे।

(१) **सूर्य अग्नि उठे रुद्र बरने कौडी चले, सर्प दर्शने कान हवते जोभ हवते सर्व आन विद्यमानै।**

हमने कालविकाल प्रयोग हिन्दी बंगला भाषी दिया है उसमें करीब ५० तरह की नाग नागनी का बंधन लिखा है।

(२) **आनकार आतू मानकारे आत ओंमाद रेखा मानकार आत।**

चैत्र में मीन संक्रांति के दिन सरसों का तेल एक धारिया प्राप्त हो सके तो उत्तम अन्यथा बाजार से लेवे। एक धारिया तेल का मतलब है घाणी से जो प्रथम बार में तेल निकले वह पहली धारा। शुक्रवार को तेल पीतल के घड़े में भरें। बाहर रास्ते में चित्त पडी कोडिया मिले तो उत्तम अन्यथा कोडी को चित्त करके घडे में ३-३ कौडी रोज रखे। शाम को दीपक जलाये। मीन की संक्राति को सूर्य आवे उस दिन मंत्र जप कर कौडी सिद्ध करे। कौडीया अपने पास रखे फिर जरुरत पडने पर उन कोडियों को मंत्रकर चारों दिशाओं में फेंके तो सर्प आयेगा। रोगीी को यथा स्थान पर जहां काटा था सुला देवे। सर्प आने पर उससे विष हरने की प्रार्थना करे तो सर्प रोगी का विष चूंस लेगा।

सन् १९५० के आसपास की बात है कुचामन (जिला नागौर) रेलवे स्टेशन पर एक व्यक्ति को सर्प काटाा था।

संयोग से एक होशियार कालबेलिया आ गया उसने सर्प आवाहन किया तो सर्प नहीं आया। फिर आटे का सर्प बनाकर उसमें प्राण का आवाहन कर तवे पर गर्म किया, तब जिस सर्प ने काटा था वह सर्प आया। किन्तु उसने रोगी का विष नहीं चूसा। तब कालबेलिया ने सर्प की आत्मा को एक छोटे बच्चे में बुलाकर कारण पूछा तो उसने पूर्व जन्म का दृष्टान्त बताया, कि मै पूर्व जन्म में इस बच्चे के सामने सिर झुकाकर ऋण हेतु क्षमा मांग रहा था उस समय इस व्यक्ति ने मुझे मार दिया था। अब वह ऋण बालक के माता पिता को दिलाये तो मैं विष का हरण करुं। फिर प्रायश्चित करने पर सर्प ने विष चूंस लिया ।

॥ वाहन रक्षा यंत्र ॥
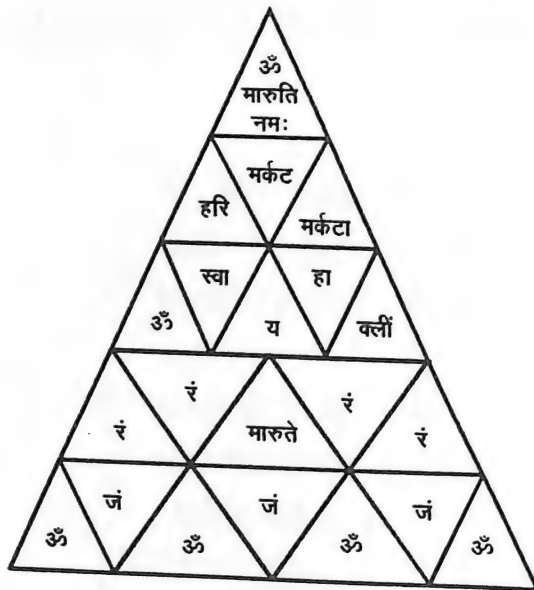
यंत्र को लिखकर हनुमान जी के नाम से पूजन कर वाहन में लगाने से वाहन की दुर्घटना से रक्षा होवे। जैसे की अर्जुन के रथ पर बैठ कर हनुमानजी ने की थी।

॥ यान दुर्घटना हेतु रक्षा मंत्र व यंत्र॥

१६	११	७
७	८	२९
१९	९	५

ॐ नमो हनुमन्त ब्रिज का कोठी जिसमें पिण्ड हमारा बैठा, ईश्वरी कुञ्जी ब्रह्म का ताला उस घर पिण्ड का धनी हनुमान रखवाला।

विज्ञान के इस युग में हवाई दुर्घटना से बचने के लिए इसका प्रयोग करना चाहिए। शुभ मुहुर्त्त में इस मंत्र को सिद्ध कर लेवे। चील आदि पक्षि का पंख लेकर प्रातःकाल सरोवर में स्नान करें, साथ ही पंख को भी प्रक्षालन कर पीढ़ी पर रख देना चाहिए। इस पंख पर केवल गुलाल लगाकर धूप, अगरबत्ती जलावे फिर पंख को हाथ में लेकर इस मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित करे फिर सफेद कागज पर इस यंत्र को लिखकर पंख को इस कागज में लपेट कर कपड़े में बांध कर पहन लेवे। यात्रा समय में यंत्र अपने पास रखें ।

॥ सडक दुर्घटना निवारण हेतु मंत्र व यंत्र॥

मंत्र- अञ्जनी सुत हनुमान रक्षतु रक्षतु स्वस्ति।

७	९	८
९	८	७
८	७	९

आज के युग में वाहन दुर्घटना होना प्रायः आम बात हो गयी, वाहन दुर्घटना से बचने के लिए इसका प्रयोग करना चाहिए। इस यंत्र को एक कागज पर लिख लेवें और हनुमानजी का ध्यान करते हुए इस यंत्र के नौ खाने में से एक पर अंगुली फिराते हुए अपनी अंगुली रखें। खाने पर जो अंक आये उस खाने पर अंगुली रखते हुए उतनी ही बार इस मंत्र का जप करे इस प्रकार नौ बार करे। तत्पश्चात् चौकोण पर हरित की पत्ति घिस कर चन्दन की तरह लगाना चाहिए। अगरबत्ती व आक के सूखे पत्तों की धूप देवे। इस यंत्र को लाल रंग के कपड़े में रखकर ताबीज की तरह हाथ में बांध लेना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से व्यक्ति को दुर्घटना होने का भय नहीं रहता है व दुर्घटना से रक्षा होती है। यह यंत्र एक माह तक प्रभावी रहता है इस प्रकार दूसरे माह में दूसरा यंत्र पहने।

॥ जुँआ जीतने के मंत्र ॥

(१)

दीपावली की अर्धरात्रि में पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर कादम्बरी के फूल अथवा श्वेत चंपा के फूल से हवन करे। जुआ खेलते समय फूल को मंत्र कर दाहिने हाथ के बांध लेवे।

मंत्र :-ॐ नमः ठुं ठुं ठुं ठुं क्लीं वानरी विजयपति स्वाहा।

(२)

॥ अथ द्यूते विजयकरणं दत्तात्रेयतंत्रे॥

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतागुंजां च मूलकम्। धारयेद्दक्षिणे हस्ते द्यूताकार्ये जयो भवेत्।

(३)

धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम्। हरितालसमायुक्तं तिलकं सुदिने कृतम्।
अजाक्षीरेण संपेष्य क्षणे राजकुले जयी। विरोधे द्यूतकार्ये च नान्यथा शंकरोदितम्।

(४)

हस्त नक्षत्र होय रवि ता दिन ऐसा करै उपाय। न्योतै पेड़ पवाड़का दिन पहले ही जाय।
रविदिन ताको लायके बांध दाहिनी बांह। खेले जूवा जो कोई जीतै संशय नाहि।

(५)

'मेखैरकंदयेरूपाकजिजनंदनीचतः छदावींमंत्रतेषहेष्ठिावामोक्षिणपात्रम् ॥'

इस बत्तीस अक्षर के मंत्र को अनुलोम और विलोम रीति से लिखकर भुजा में धारण करें। फिर जुवा खेलें तो जीत हो। इस सोलह कोठे के यंत्र को अष्ट गंध से भोजपत्र पर लिखकर धूप देकर भुजा पर बांधे। फिर जुवा खेलें तो कभी हारे नहीं जीते ही जीते।

(६)

निम्नोक्त यंत्र को अरंड के पत्ते पर कौवे के पंख से स्याही द्वारा शुद्ध होकर रात्रि के समय लिखें। इस चौसठ कोठे के यंत्र को सिद्ध करके धारण करने से विजय प्राप्ज होती है।

मे	खै	र	कं	द	यै	रू	पा
क	जि	ज	तं	द	नी	च	तः
छ	दा	वीं	य	मं	त्रं	ते	प
हें	ष्ठि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्ठि	हे
य	ते	त्रं	मं	य	वी	दा	छ
तः	च	नी	द	तं	ज	जी	क
पा	रू	ये	द	कं	र	खै	गे

द्यूत विजय

(७)

१	२५।	२३।	२३।
३२।।।	२७।।	३५।।	३६।।
१।।	९।।	२४।।	१९।।
२६।	९।।।	५।।।	४।।।

द्यूत विजय

इस १६ कोष्ठक के यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर धूप देवें एवं भुजा में बांधें। फिर जुआ खेलें तो कभी हारे नहीं।

॥ चौर ज्ञानम् ॥

(१)

ॐ नमो किष्किन्धा पर्वत पर कदलीवन को फल दण्ड ताल कुञ्ज देवी नून प्रसाद अगल पावली, पारी साध, बूंटी चोर तेरे कुञ्जन को देवी तनी आज्ञा फुरो।

विधि – दीपावली व ग्रहण के दिन दस हजार जप करें। कागज के टुकड़ों पर जिन जिन लोगों पर वहम होवे उनके नाम लिखकर आटे की गोलियां बनाकर २१ बार मंत्र पढ़ें, एक घड़े में पानी भरे उसमें गोलियां डालते जायें, जो गोली ऊपर तिरे उसमें लिखा चोर का नाम जाने।

(२)

ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्रधारिणी, चक्र वेगि कौटि भ्रामी भ्रामी गृहणि स्वाहा।

विधि – पूर्वमन्त्र के समान है। तथा इस मन्त्र से आगे लिखें कटोरी चालन प्रयोग भी कर सकते हैं।

(३)

ॐ नाहरसिंह वीर हरे कपडे, ॐ नाहरसिंह वीर चांवल चुपेड़ सरसों के फक फक करे, शाह को छोड़े चोर को पकड़े, आदेश गुरु को।

विधि – होली दीवाली या ग्रहण के दिन दस हजार बार जप करें। एक चौकोर रुपया जिसमें छेद नहीं हो मंगाकर दूध मे धोयें लोबान की धूनी देवें, फिर सवा पाव चांवल मंगाकर उन्हें पानी से धोकर गोमूत्र में भिगोकर सुखावें। शनिवार को प्रातःकाल धरती को लीपकर उस पर सफेद कपड़ा बिछावें, उस पर चावलों को रखें, लोबान गुगल धूप करें, चावलों को ७-२१ बार मन्त्रित करें। फिर रुपये के बराबर चांवल तौल तौलकर लोगों को खिलावें, जिसके मुंह से खून आवे उसे चोर जाने।

(४)

ओं नमः किष्किन्धा गिरि पर कदली बन में फल-फूल दंड तल कुंज देवी नून प्रसाद देवी अलग पावली पारम माघ बूटी चोर तेरे कुंज को देवी तेरी आज्ञा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का २१ दिन में एक लाख मंत्र जप सिद्ध कर लेवे। चोरी होने के बाद यदि किन्ही व्यक्तियों पर सन्देह होतो एक कागज लेवे उसके अलग-अलग टुकडे कर लेवे और उन टुकडो पर उन व्यक्तियों का नाम लिखे जिन पर आपको संदेह हो। थोडा सा आटा लेवे और उन टुकड़ों की गोली बनाते जाये। गोली बनाते समय प्रत्येक गोली को २१ बार इस मंत्र से अभिमंत्रित करे। किसी तालाब या पात्र के जल में उन गोलीयों को डुबो देवे। जो गोली पानी पर तैरती नजर आये उस गोली को खोलकर देखें वही चौर का नाम होगा।

(५)

ॐ नमो नाहरसिंह वीर, जन जन तू चाले, पवन चाले पानी चाले, चोर का चित्त चाले, चोर मुह लोही चाले, काया थम वै माया परा करे, वीर या नाथ की पूजा पाई, टले, गोरखनाथ की आज्ञा मेरे नौनाथ चौरासी सिद्ध की आज्ञा।

पूर्वोक्त मन्त्र सिद्धि के अनुसार कटोरा व मन्त्र सिद्ध करें। चावलों का प्रयोग करें। कटोरी को दूध से धोकर रखें उस पर १०८ बार चांवल पढ़कर मारते जायें। जब तक कटोरी चले तब तक मारे, कटोरी चोर को स्पर्श अवश्य करेगी।

(६)

हाथ चलावै, हाथ बांधो, पांव चलावे पांव बांधौं, चीत्तवारी की नजर बांधौं, पूर्व देश की कामारु विद्या, जहां बैठी जाग जोगिनी जाग, जोगिनी बेटी फूलमती, या नीच भोगिनी, उत्तर सै सिंहनी दबर, धूप कै बिल खोदें, सिन्हिया मुण्ड बरारै होत विहान, पकड़ मंगाओ, दुहाई लोना चमारिन की दुहाई छत्तीस कोटि देवतन की।

दीपावली की रात को मंत्र सिद्ध करें। रविवार या मंगलवार को गौ के गोबर से चौका लगाकर कांसी का कटोरा रखें। मन्त्र पढ़कर कटोरे पर फूंके, तब दो आदमी को कटोरा पकडावें, तो कटोरा चोर की पीठ पर चिपक जायेगा।

॥ गड़े धन को देखना ॥

(१)

सीता सति लक्ष्मण जति ठः ठः ठः शब्द सांचा लक्ष्मण जति का यही वाचा ॐ तत् और सत् ।

ग्रहण में जप करे। शुक्रवार से शुक्रवार ८ दिन रात्रि ९ से १०.३० तक डेढ घंटा कपड़े से आंखे बंद कर जप करे। नवे दिन १०८ बार गुगल से होम करे। सिद्ध व्यक्ति से यह प्रयोग लिया गया है।

(२)

हरि भरी हरियाली माता, धरती कोख से सम्पत नाता। डूड़े कूड़े महल अटारी, टूटे फूटे खडेरा हारी। गर्भ छिपी क्यों री महतारी, निकर दिखे हम सुखारी। तो को इच्छक कौन करां, हमें सब गुपत बता। सुपने में सब ग्यान करोवे, नेम टेक को सब बतलावे। दुहाई कुबेर के कुबेर की, आदेश शाबर बाबा को। जयकारा माता हिंगलाज को।

मंत्र को सिद्ध करे। गुगल होम करे। कन्या भोजन कराये। मंत्र सिद्ध करे उस स्थान पर सात चौराहे की मिट्टी लाकर रखे। बाद में उसे विसर्जन कर। निधि स्थान में धूप दीप कर मंत्र पढ़े और वहीं सो जाये। या अन्यत्र सोये तो उस स्थान की मिट्टी लाकर १ माला मंत्र से अभिमंत्रित सिराहने रख कर सो जाये। रात में स्वप्न में निधि स्थान, पात्र वस्तु व उस पर किसी का पहरा होवे तो मालूम पड़ेगा।

(३)

॥ गुप्त धन का ज्ञान ॥

ॐ सत्तरा से पीर चौसठ सै जोगनी, बावन सै वीर बहत्तर सै भैरुं, तेरा सै तन्त्र, चौदह सै मन्त्र, अठारा सै परबत, सत्तरा से पहाड़, नौ सै नदी, निन्नानवे सै नाला, हनुवन्त जती गोरख वाला, कांसी की कटोरी, अंगुल चार चौड़ी, कहो वीर कहां सों चलाई, गिरनारी परबत सों चलाई, अठारा भार बनासपती चली, लोना चमारी की वाचा फुरी, कहां कहां फुरी, चोर के जाय, चांडाल के जाइ, कहां कहां लावे, चोर के लावे, गढा धन जाई बतावे, चाल चाल रे हनुवन्त वीर, जहां हो चले, जहां है रहे, न चलै तो जमुना उल्टी बहै, शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा, सत्यनाम आदेश गुरु का।

विधानम् - दीपावली की रात्रि में एक हल्की तथा चार अंगुल चौड़ी कांसी की कटोरी बनवायें। उक्त मन्त्र से १००८ बार मंत्र पढ़कर उड़द के दाने कटोरी में डालते जायें। कटोरी की पूजा कर उसे सिद्ध करें।

प्रयोग के दिन उस कटोरी को शुद्ध जगह पर रख कर उड़द के दाने मंत्र पढ़कर मारते जायें। जहां धन होगा वहीं पर कटोरी जाकर रुकेगी, जब तक कटोरी चले उड़द फेंकते जायें। इससे चोर ने जो धन दबाया हो उसका पता

लगेगा। जहाँ भूमि में धन होने का सन्देह हो उसका पता भी इसी विधि से चलेगाा।

॥ कुश्ती जीतने का मन्त्र ॥

ॐ नमो आदेश कामरु कामाक्षा देवी, अंग पहरु भुजंगा पहरु, लोहे शरीर, आवत हाथ तोडूं, पांव तोडूं, सहाय हनुमन्त वीर उठ, अब नृसिंह वीर तेरो सौलह सौ श्रृंगार मेरी पीठ लगे, नांही तो वीर हनुमन्त लजावे, तू लेहु पूजा पान सुपारी नारियल सिन्दूर, अपनी देहु सबल मोही पर देहु भक्ति, गुरु शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि – मंगलवार से ४० दिन प्रयोग करें रोज लड्डू का भोग लगावें, पान सुपारी चढावें। लंगोट लगाकर मूर्ति के सामने १०८ बार नित्य जप करें। गुगल होम नारियल होम उत्तरार्ध में करें। दंगल में जाने से पूर्व १०८ बार मन्त्र स्मरण करें।

॥ टिड्डी भगाने का मन्त्र ॥

ॐ नमः आदेश कामाक्षा देवी को अज्र बांधूं, वज्र बांधूं, बांधूं दशों दुवार, लोहे का कोड़ा, हनुमान ठोके, गिरे धरती लागे घाव, सब टिड्डी भस्म हो जाए, बांधूं नाला, ठोकूं वज्र का ताला, नीचे भैरों किलकिलाय, ऊपर हनुमान गाजै, हमारी सींव में दाना पानी खावे तो गुरु गोरखनाथ लजावै।

होली की रात को मन्त्र सिद्ध करें। मन्त्र से कीले मन्त्र कर खेत के चारों कोनों में गाड़े तथा चांवल मन्त्र कर खेत में बिखेरें तो नुकसान नहीं होवे।

॥ टिड्डियों को सीमा से बाहर करने का मन्त्र ॥

ॐ नमो पश्चिम देश में अस्तावल हुआ, जहां अजैपाल दे खुदाया कूवा। जा कूवा में निकला नीर, जहां भेला हुवा बावन वीर, जाने मिलकर मता उपाया, हाथ पकड़ टीडी कूं लाया, सुमेर टीडो बांधूं डाढ, जमीं आस्मान बीच रहस्यो गाढ़। उतरे तो तेरी परले बांधू, चढ़े आस्मान तो सर ले बांधू, तीजा तेरा जाया पाऊं बारा कोस में काम कराऊं। इहि विधि विचरे बावन वीर, जा डारा समुद्र के तीर। मेरी सीम पर हनुमत गाजे, किसी की चलाई ते चले, मेरा डंका चारों कूट में बाजे, इहि विधि चलाई न चलेगी, तो एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर लाजै, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि – होली दिवाली की रात दस माला करें। जब देखे की टिड्डि दल आ रहा है तब एक ठीकरा लेकर उस पर ३ बार मंत्र पढ़कर कनिष्ठा अंगुली का रक्त उस पर लगावें, फिर घौडे, पैदल या अन्य वाहन से ठीकरे को सीमा बाहर डाल देवे तो टिड्डि दल सीमा बाहर ही रुकेगा। अपनी सीमा खेत में नुकसान नहीं करेगा।

॥ टिड्डि की ढ़ाढ बांधना ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को अजर बांधू बजर बांधू, बांधू दसों द्वार, लोहे का कोड़ा

हनुमन्त ठोक्या धरती घाले घाव, तेरा टीड्डी भस्मन्त हो जाइ। कोली टीड्डी कीलूं नाला, ऊपर ठोकूं वज्र का ताला। नीचे भैरुं किलकिले उपर हनुमत गाजे, हमारी सींव में अन्नपाणी भखे तो गुरु गोरखनाथ लाजे, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

होली दिवाली व ग्रहण के दिन १० माला कर सिद्ध करें। इस मन्त्र से ठीकरी पर ७ बार मन्त्र पढ़कर उस खेत में फेंक देवे जहां टिड्डी दल बैठा है तो वे फसल का नुकसान नहीं करेगी।

॥ टिड्डी का बंधन ॥

ॐ नमो आदेश गुरु को अजर कीलनी वज्र का ताला, कीलूं टीड्डी धरुं मसान धर मार धरती सों मार सवा अंगुल पांख धरती में गड़े, ऊपर मोहम्मद वीर की चौकी चढ़े, पथ धरती चाटे खाइ, बाऐं हाथ में ल्हे, हाथ में उठाव, मेरा गुरु उठावे तो उठजे और चक्रसों उठे तो दुहाई गोरखनाथ की फिरे आदेश गुरु को।

विधि – उपरोक्त। इस मन्त्र से या तो टिड्डी दल आकाश से उतरेगा नहीं अगर उतर गया तो टिड्डी दल निष्प्राण सा जमीन पर बैठा रहेगा, अधिक हानि नहीं करेगा।

॥ बीन मुंह में घुसेडने का मन्त्र ॥

मर गई टैंग सड़ गया पित्ता, दुहाई गुरु गोरखनाथ की आन, मुंह में घुस जा तूमड़ी तुझको गुरु उस्ताद की आन।

॥ बीन खोलने का मन्त्र ॥

घट घट की तूमड़ी, मरघट का वान, खुल जा (निकल जा) तूमड़ी (वीन) तुझको गुरु गोरखनाथ की आन॥

॥ बरैया लगाने का मन्त्र ॥

आताल बांधू पाताल बांधू, बांधू छत्तीसों द्वार लग जा, छत्तीसों बासे की बरैया, दोहाई कामरु कामाक्षा की आन।

॥ बरैया छुडाने का मन्त्र ॥

आताल खोलूं पाताल खोलूं, खोलूं छत्तीसों द्वार, खुल जा छत्तीसों बासे की बरैया, दोहाई कामरु कमक्षा की आन।

॥ कृषि विनाशक मंत्र ॥

मंत्र- ॐ नमो वज्रपातीय सुरपति राक्षपयति हुँ फट् स्वाहा।

यह मंत्र गोपनीय है इस मंत्र का प्रयोग अतिआवश्यकता होने पर ही करना चाहिए। इस मंत्र की सिद्धि के लिए जप संख्या १०००० है। प्रयोग करने के समय उस स्थान की मिट्टी लावे जहाँ पर आकाशीय बिजली गिरी हो फिर उस मिट्टी से एक वज्रमूर्ति बनावे। उस मूर्ति को इस मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर मध्य रात्रि में जिसके खेत में गाड़

****

दिया जाये तो उस खेत की पूरी फसल नष्ट हो जाती है। आने वाली फसल भी खराब हो जाती है।

॥ अधिक अन्न उपजाऊ मंत्र॥

मंत्र- ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा।

किसी शुभ मुहुर्त्त में इस मंत्र को ११००० बार जप कर सिद्ध कर लेवें। फिर पूर्वाषाढा नक्षत्र में बहेड़ा के वृक्ष उगे बाँदे को ले आवें। फिर बान्दे को इस मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर जिस खेत में गाड़ दिया जाये उस खेत में आश्चर्यजनक ऊपज होने लगती है।

॥ अथ गोमहिषीणां दुग्धवर्धनोपाये ॥

(वीरभद्रोड्डीशतंत्रे) - ॐ ह्रीं करालिनि पुरुष सुखं मुखं ठं ठः। इति पंचदशाक्षरो मंत्र।

अस्य विधानम्- अनेन मंत्रेण तृणादिकं अष्टोत्तरशतमभिमंत्र्य गोमहिष्यादीनां दातव्यं अतिक्षीरदास्ता भवति।

इस मन्त्र से मन्त्रित चारा पशु को खिलाने पर दुग्ध वृद्धि होवे।

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

दुग्ध वृद्धि यन्त्रम्

अथास्य यंत्रम्- इस यंत्र को केसर अथवा गोरोचन अथवा कुंकुम से भोजपत्र पर लिखकर, गूगल की धूप देकर, गौ के गले में और भैंस के सींग में बांधें तो वह बच्छा लगाने लगेगी और दूध बहुत देवेगी॥

॥ अथ फलवृद्धि यंत्रम् ॥

इस यंत्र को जंभीरी नींबू के रस से भोजपत्र पर या कागज पर लिखकर अनार के पेड़ में बांधे तो उसमें अनार बहुत लगेंगे अथवा जिस वृक्ष पर बांध दोगे उस वृक्ष में फल बहुत आवेंगे।

८७	९४	२	४
७	३	९१	९१
९३	८८	९०	१
४	६	८६	९२

फल वृद्धि यन्त्रम्

॥ अथ अनावृष्टिकाले वृष्टिकरणं ॥

वीरभद्रोड्डीश तंत्रे मंत्रः:- ॐ काली काली स्वाहा। इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- अनेनाश्वत्थसमिधं घृताक्तां जुहुयात् सहस्राहुतिहोमेन महावृष्टिर्भवति।

॥ अन्न की राशि उड़ाने का मन्त्र॥

यह प्रयोग गांवों में अक्सर यति व नाथ जाति के लोग करते थे।

ॐ नमो हंकालूं चौसठ योगिनी हंकालूं बावन वीर कार्तवीर्य अर्जुन कीर बुलाऊँ

आगे चौसठ वीर जलबंध बलबंध आकाश बंध पौनबंध तीन देश की दिशाबंध

उतरे तो अर्जुन राजा दक्षिणे तो कार्तवीर्यराजा आसमान तो बावन वीर गाजे नाचे तो चौसठ चौसठ जोगिनी विराजें पीर तो पासि चलावे छपन्या भैंरू रासि उठावे एक बंध आसमान में लगाया दूजा बंध रास घर में ल्याया शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

॥ दृष्टि बांधने का मंत्र ॥

ॐ नमो काला भैरो घूंघरा वाला हाथ खड्ग फूलों की माला, चौसठ योगिनी संग में चाला, देखो खोलि नजर का ताला राजा प्रजा ध्यावे तोहि, सब की दृष्टि बांध दे मोहि, मैं पूजो तुमको नित ध्याय राजा प्रजा मेरे पाय लगाय, भरी अथाई सुमरो तोय मेरा किया सब कुछ होय देखूं भैरों तेरी शक्ति शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

रविवार रात्रि में श्मशान या भैरव मंदिर में हजार जप करे। धूप करे, उसकी भस्म ले आवे। प्रयोग समय मंत्र पढकर भस्म के फूंक मारे तो सबका दृष्टि बंधन होवे।

॥ अदृश्य होने का मन्त्र ॥

अर्क (आकन्द) शाल्मलि कापसि पद्म सूत्र और पट्ट सूत्र द्वारा पाँच बत्तियाँ बनाकर पाँच नर कपालों में नर तैल द्वारा पाँच दीपक जलावे। इन पाँच दीपकों की शिखा से पाँच प्रकार का काजल प्राप्त करे। यह कार्य किसी शिव मन्दिर में करे। फिर उक्त पाँचों काजलों को एकत्र कर उसे

मन्त्रः- **'ॐ हूं फट् कालि, कालि महाकालि मांस शोणितं खादय खादय देवि मा पश्यतु मानुष हूं फट् स्वाहा'।**

इस मन्त्र का अष्टोत्तर सहस्त्र बार जप कर अभिमन्त्रित करे। इस काजल को आँखों में लगाने से साधक तीनों लोकों में अदृश्य होता है।

॥ अथ नीलाम के वास्ते पीर का कलमा ॥

मंत्रो यथा- **याजरव्वाजखिज्रमैतेराइलियास-लिंल्लमकादिलचित्तमेरेपास।** इति मंत्रः।

अस्य विधानम्- कूए के ढाणे पर रात्रि के समय एकांत स्थान में लोहाबानकी धूप देते हुए १०८ बार उलटी माला जपें। २१ दिन के भीतर प्रत्यक्ष आकर उत्तर देता है इसमें संदेह नहीं।

प्राकृत मन्त्र खण्ड

जैन धर्मेण

विविध

मन्त्र प्रयोग

****
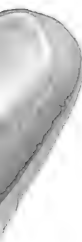
अथ घण्टा कर्ण मन्त्र प्रयोगाः

प्राकृत ग्रन्थे

घण्टाकर्ण के विशेष प्रयोग पुस्तक के शाबर मन्त्र खण्ड भाग (१) घण्टाकर्ण कल्प में दिये गये हैं।

॥ लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र ॥

(१)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठैं । ॐ घण्टाकर्ण महावीर लक्ष्मी पूरय पूरय सुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

धन तेरस को ४० माला, चौदस को ४२ तथा दीपावली के दिन ४३ माला उत्तर दिशा में मुख कर करके, लाल वस्त्र पहन कर, लाल माला पर जपे। लक्ष्मी की प्राप्ति होवे।

(२)

ॐ घण्टाकर्णो महावीरः सर्व व्याधि विनाशकः विस्फोटकं भयं प्राप्तं मां रक्ष रक्ष महाबल यत्र त्वं तिष्ठसे देव लिखितो विंशदाक्षरैः तत्र दोषानुपशामि सर्वज्ञ वचने यथाः।

कन्या के द्वारा काते हुये सूत के ७ गांठे लगाये तथा २१ बार मंत्र पढ़े फिर उस डोरे को कमर में बांधे तो सब दोष दूर होवे।

(३)

ॐ घण्टाकर्ण महावीर सर्व व्याधि विनाशनः ।
चतुष्पादानां मले जाते रक्ष रक्ष महाबलः ॥

इस मन्त्र को सुगंधित द्रव्यों से भोजपत्र पर लिखकर घण्टे के बांधें फिर उस घण्टे को बजायें जितनी दूर आवाज जावे उतनी दूर की सर्व व्याधि व मल दोष दूर हो जायेंगे।

(४)

ॐ घण्टाकर्णो महावीर सर्वव्याधि विनाशकः ।
विस्फोटकं भयं प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल ॥१॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव लिखितोऽक्षर पंक्तिभिः ।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति वातपित्त कफोद्भवा ॥२॥
तत्र राजभयं नास्ति यांति कर्णे जपाऽक्षयं ।

शाकिनी भूत वैताला राक्षसा प्रभवन्ति न ॥३॥

नाऽकाले मरणं तस्य न च सर्पेण डस्यते ।
अग्नि चौर भयं नास्ति ॐ घण्टाकर्णो नमोस्तु ते ॥४॥

रविपुष्य या रविमूल नक्षत्र या अन्य शुभ दिन से श्वेत वस्त्र पहन कर महावीर स्वामी के आगे दीप जलायें, नैवेद्य चढावें, ७ या ८ धान की ढेरी अलग अलग रखें। १४ दिन या २१ दिन १२ हजार जप रोज करें। पश्चात् दशांश होम करें तो घर में बाधा नहीं आवे। त्रिकाल पढ़ें तो सब शांति होवे। एक वर्ण की गाय के दूध को २१ बार मन्त्र पढ़ कर अग्नि पर फेंके तो अग्निभय दूर हो, अथवा शुद्ध पानी से छीटें अभिमंत्रित जल से देवे। कन्या के काते सूत का डोरा बनाकर बांधे तो रोग दोष नष्ट होवे।

दीपावली की रात्रि तथा शुभ मुहुर्त्त मे महावीर स्वामी के सामने साढे बारह हजार जप करे। लाल चंदन की माला से गुग्गल, अढाई पाव, लालचंदन, घृत, बिनौला, तिल, राई, सरसों, दूध, दही, गुड़, रक्तकनेर के पुष्पों को मिलाकर साढे बारह हजार गोली बनाकर होम करने से सिद्धि होवे।

(५)

॥ घण्टाकर्ण मन्त्र ॥

मंत्र- ॐ ह्रीं ठः श्री वीस पारा उल केरी आज्ञा श्री घंट्टाकर्णकेरी आज्ञा फुरई।

मन्त्र जप से विघ्ननाश होवे, ताबीज या डोरा बनायें।

अथ शुभाशुभ प्रश्न ज्ञानम्

(क) ॐ नमो चक्रेश्वरि चिंतित कार्यकारिणी मम स्वप्ने शुभाशुभं कथय कथय दर्शय दर्शय स्वाहा।

(ख) ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्रीं श्रीं क्षीं अवतर अवतर स्वाहा।

१००८ बार जप करे पश्चात् शयन के समय १०८ बार जप करे स्वप्न में शुभाशुभ ज्ञात होवे।

(ग) ॐ ह्रीं हंसः सूर्याय असत्यं सत्यं वद वद स्वाहा।

इस मंत्र को २१ बार स्मरण करने पर आग का तेज नहीं लगता। मन्त्र सिद्धि होने के बाद स्वप्न वार्ता हेतु रात्रि को प्रयोग करें।

(घ) ॐ ह्रीं अर्हंशासन देवते सिद्धायके सत्यं दर्शय दर्शय कथय कथय स्वाहा।

यदि प्रस्थान करते समय अच्छे शकुन नहीं हो तो भी ७ पांव इस मन्त्र को पढ़कर चले तो कार्य शुभ होवे।

(ङ) ॐ नमो भगवति अप्रतिचक्रे रत्नत्रय तेजोज्वलित सुवदने कमले विमले अवतर देवि अवतर विवुध्या ॐ सत्यं मा दर्शय स्वाहा।

(सिकोतरी यक्षिणी)

(च) ॐ ऐं छीं श्रीं क्लीं सिकोतरी मम चिंतितं कथय कथय सत्यं ब्रूहि ब्रूहि स्वाहा।

(छ) ॐ णमो अरहंताणं ॐ नमो भगवऊ पास जिणंदसज अलवेसर अलवेसर आगच्छ आगच्छ मम स्वप्ने शुभाशुभं दर्शय दर्शय स्वाहा।

पूर्वमुख होकर १९००८ जपे। पश्चात् प्रयोग समय १०८ बार जपे।

(ज) ॐ नमो वृषभनाथाय मृत्युञ्जयाय सर्वजीव शरणाय परमत्रयी पुरुषाय चतुर्वेदाननाय अष्टादश दोष रहिताय श्री समवशरणे द्वादश परीषह वेष्टिताय ग्रहनाम भूत यक्ष भूतराक्षस सर्वशांति कराय स्वाहा।

(झ) ॐ रक्तोत्पलधारिणि मझ हाजर रिपु विध्वंसिनि सदा सप्त समुद्राभ्यंतरे पद्मावती तत्सर्वं मम कर्णे कथय कथय शीघ्र शब्दं कुरु कुरु ॐ ह्रीं ह्रां हूं कर्ण पिशाचिनिके स्वाहा।

(ञ) ॐ नमो अरहंताणं अप्पडिबहय वरनाणं दसणं धराणं विउट्ठ छडमाणं ऐं स्वाहा।

निरन्तर जप करने से रात्रि में शुभाशुभ कहें।

(ट) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं वस्त्रांचल वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

रात्रि को १०८ बार जप कर अपने नाप की चादर या मोली डोरा सिराहने रखे सुबह नापे बढें तो शुभ घटे तो अशुभ।

(ठ) ॐ नमो महेश्वराय उमापतये सर्वसिद्धाय नमो रेवार्चनाय यक्षसेनाधिपतये इदं कार्यं निवेदय तद्यथा कहि कहि ठः ठः।

१०८ बार क्षेत्रपाल जप पूजा करें। २१ बार गुगल से धूप देवे उसको अपने ऊपर धूप ग्रहण करें रात्रि को स्वप्न आवे।

(ड) ॐ विद्युज्जिहवे ज्वालामुखी ज्वालिनी ज्वल ज्वल प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल धग धग धूमांधकारिथि (धूमांधकारिणी) देवि पुरक्षोभं कुरु कुरु मम मनश्चिंतितं मन्त्रार्थं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को चंदन कपूर से थाली में लिखकर सफेद पुष्पों से अर्चन कर मंत्र जपे। नित्य जप करने से प्रश्नोत्तर हेतु मन में प्रेरणा मिले।

(ढ) ॐ नमो ह्रां श्रीं ह्रीं ऐं त्वं चक्रेश्वरि चक्रधारिणि शंख चक्र गदा धारिणि मम स्वप्न दर्शनं कुरु कुरु स्वाहा।

(ण) ॐ मणिभद्राय चेटकाय स्वाहा।

इस मंत्र को जप कर सिद्ध करे। लालकनेर पर १०८ बार मंत्र पढ़कर सिरहाने रखकर सो जाये तो स्वप्न में शुभाशुभ कहे।

(त) ॐ नमो भगवति महाविद्ये चक्रेश्वरि एहि एहि शीघ्रं द्रां भ्रू गृह्ण गृह्ण ॐ सहस्त्रवदने कुमारि शिखिण्डवाहने शुक्ले शुक्लगात्रे ह्रीं सत्यवादिनी नमः।

७ बार जल अभिमंत्रित करके जल पीवे, ज्ञान वृद्धि होवे। रात्रि को स्वप्न में वार्ता कहे।

॥ दोष ज्ञानम् ॥

मंत्रः- ॐ अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

सरसों के आठ दाने लेकर धोये एवं सुखायें। एक कटोरे में पानी डालें १०८ बार मन्त्र कर दाने पानी में डालें। एक दाना तिरे तो भूत दोष, दो दाने तिरे तो क्षेत्रपाल दोष, तीन तिरे तो शाकिनी दोष, चार तिरे तो भूतनी दोष, पांच तिरे तो आकाश देवी का दोष, छः तिरे तो जल देवता का दोष, सात तिरे तो कुलदेव का दोष, आठ तिरे तो गोत्र का अपना दोष। सभी दाने डूबे तो कोई दोष नहीं।

अथ घट भ्रामण मन्त्रा:

(शुभाशुभ प्रश्न ज्ञानम)

घट को चौकोर गोबर के शुद्ध चौके पर अक्षत के ऊपर रखते हैं तथा उसमें देवी की पूजा की जाती है। घट को मंत्र से अभिमंत्रित करें दो व्यक्ति हल्का सा स्पर्श करे पश्चात् कामना करें, कामनानुसार दक्षिण या वाम घट का भ्रमण शुभाशुभ के अनुसार होगा।

दा व्यक्ति अपने हाथ की अञ्जलि मिलाये, अंजलि मध्य में घट को रखें। जब घट भारी लगें तब देवि से प्रश्नानुसार दक्षिणस, वाम की ओर घट के झुकने के अनुसार प्रश्न का फल जाने। कर्म समापन पश्चात् देवता का विसर्जन करें, जल के छींटें देवें।

प्रत्यंगिरा, चक्रेश्वरि, पद्मावति व घण्टाकर्ण के प्रयोग भी इस विधि हेतु किये जाते है।

(१) ॐ चकेश्वरी चक्रांकी चक्रवेगेन घटं भ्रामय भ्रामय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः जः जः ॐ चक्रवेगेन घटो भ्रामय भ्रामय स्वाहा। ॐ भ्रकुटिमुखी स्वाहा ॐ हिमलर्वर्ज स्वाहा।

(२) ॐ नमो चक्रेश्वरी चक्रवेगेण शंख वेगेन घटं भ्रामय भ्रामय स्वाहा हों ही होरीसणरीसो अदमदपुरी सोडग मएवर्याइउ दिउ दक्षिण दिशा हागी लगा महादेवी किली किली शब्दं जकार रूपी अदमद चक्रि छिन्नी छिन्नी मडाशिनी छिन्नि छिन्नि कंवोडती छिन्नि छिन्नि अदमद सामिणि छिन्नि हो ही होरी सणरी सो परपुरुष दिवायर भंजइ मुद्रयसयाइं तिहिं बारि हिपइं संताइं कंपइं बहुविह सायरत्ते कम्मइं परिहरहुं रायकं पार्वती चिगि चिगाइं कंवोडी डाइणि फाडइ सिहोही होरी सणरी सो विष नासणि हर चक्रि छिन्नि सुदरशणि स्वाहा।

इस मन्त्र से पूर्व विधि के अनुसार घट चालन करें। गुगल से धूप देने से बाधा जो होवे प्रकट होगी। अगर भूतबाधा होगी तो गुगल धूप से कडवी बदबू चमड़ा जलने जैसी गंध आवे तो शाकिनी बाधा षुसरभि की गंध से योगिनी बाधा जाने।

(३) ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्ररूपेण घटं भ्रामय भ्रामय मम दर्शय दर्शय ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

यंत्र को चंदन से लिखकर घट में डालें, धट की पूजा करें, अक्षत लेकर घड़े पर छोड़ें, घट को हल्का सा स्पर्श करे तो घट का चालन होकर शुभाशुभ कहे।

(४) ॐ नमो चक्रेश्वरी चक्रवेगेन वाम हस्तेन अचलं चालय चालय घटं भ्रामय भ्रामय श्रीचक्रनाथ केरी आज्ञा ह्रीं आवर्तय स्वाहा।

विधि – उपरोक्त मंत्र जैसी।

॥ घट फेरण प्रत्यंगिरा मंत्र ॥

(५) ॐ ह्रीं कृष्णवाससे सुध्म सिंहवाहने सहस्त्रवदने महाबले प्रत्यंगिरे सर्वसैन्यकर्म विध्वंसिनी परमंत्र छेदनी सर्वदेवाणाणी सर्वदेवाणाणी बंधि बांधि निकृतंय निकृतंय ज्वलाजिह्वे कराल चक्रे ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे स्वाहा स्वाहा स्वाहा शेषाणंद देवकरी आज्ञाफुरइ ४ ।

यह विद्या पर मन्त्र-तन्त्र को काटती है। घट में देवी का आवाहन करें। दो व्यक्ति घट का स्पर्श करें, मन में प्रश्न का विचार करें, तो घट का शुभ व अशुभ भ्रमण होवे।

(६) ॐ क्रीं ह्रीं रक्ते रक्ते स्वरा इदं कटोरकं भ्रामय भ्रामय स्वाहा।

विधि- श्रावक गृहानीत भस्मना बार ७ परिमार्जयित्वा मंडले स्थाप्यत्ते पूजादिकं विधियते। कलश का पूजन कर दो व्यक्ति उसका स्पर्श करे। प्रश्न के शुभाऽशुभ के अनुसार घट घूमेगा।

॥ चौर ज्ञानम् ॥

(१) ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी कटोरे चालय चालय चोरं ग्रहण ग्रहण स्वाहा। चिट्ठी जुवा नाम।

मन्त्र लिखकर २१ बार मन्त्र पढकर जिस नाम से कटोरे पर रखें यदि वह चोर होगा तो कटोरा चालन होगा, या इस मन्त्र से लिखी चिट्ठी को जलावें जो चोर होगा उस नाम की चिट्ठी नहीं जले।

(२) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ज्वां ज्वीं ज्वालामालिनी चोर कण्ठं ग्रहण ग्रहण स्वाहा।

शनिवार रात्री चावल धो कर २१ बार मन्त्र कर कोरी हांडी में डालिये। रविवार को प्रभात में गुहली दे कर २१ बार मन्त्र एवं चांवल खिलायें जो चोर हो उसके मुंह से खून बहे।

॥ स्वप्न में प्रश्नोत्तर के मन्त्र ॥

॥ चक्रेश्वरी देवी का स्वप्न मंत्र ॥

(१) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रेश्वरी मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- सोते समय ५ माला जपना चाहिये।

(२) ॐ नमो चक्रेश्वरी चिन्तितकार्य कारिणी मम स्वप्ने शुभाशुभं कथय कथय दर्शय दर्शय स्वाहा।

विधि- शुभ योग चन्द्रमा, तिथि वार से शुरु कर साढ़े बारह हजार जाप करे। स्वप्न में शुभाऽशुभ मालूम पड़ेगा।

|| स्वप्न प्राप्ति सरस्वति मन्त्र ||

(३)   ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्रीं श्रीं क्षीं अवतर अवतर स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को १००८ बार जाप करके सिद्ध करें। प्रयोग समय सोने से पूर्व १०८ बार जाप करके सो जावे तो स्वप्न में शुभाशुभ मालूम होता है।

|| पद्मावती स्वप्न प्रत्यक्ष मंत्र ||

(४)   ॐ आं क्रौ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौ पद्मावत्यै नमः।

विधि- सवा लाख जाप करने से प्रत्यक्ष दर्शन होते है या साढ़े बारह हजार जप करने से स्वप्न में दर्शन होते है।

अथ विविध देवोपासना मन्त्राः

॥ पार्श्वनाथ मंत्र प्रयोगाः ॥

(१)

॥ पार्श्वनाथ मंत्र ॥

ॐ आं क्रों प्रों ह्रीं सर्व पुरजनं राजानं क्षोभय क्षोभय आनय आनय ममपादयोः पातय पातय आकर्षिणी स्वाहा ॐ नमो सिद्ध चामुंडे अजिते अपराजिते किली किली रक्ष रक्ष ठः ठः ठः स्वाहा ॐ नमो पार्श्वनाथ ॐ णमो अरिहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियांणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ नमो णाणाय ॐ नमो दंसणाय ॐ नमो चरिताय ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवंशकरी ॐ ह्रीं स्वाहा जइतः।

इस मन्त्र से वाद विवाद में जय, राज दरबार में सम्मान प्राप्त होता है।

(२)

ॐ नमो भगवऊ वर्द्धमाणस्य जस्सेयं चक्कं जलंतं गच्छइ संयलं महिमंडलं पयासंत्तं लोयाणं भूयाणं भूवणाणं जूए वारणे वारायं गणे वा जंभणे थंभणे मोहणे सव्वसत्ताणं अपराजिऊ भवामि स्वाहा। ॐ नमो ओहिजिणाणं नमो परमोहिजिणाणं नमो खेलोसहि जिणाणं णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्राय श्री पद्मावति सहिताय ॐ मां रक्ष मां रक्षं महावल स्वाहा। ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथ शिरोमणि विद्रावकाय स्वाहा।

विधि- पुरषस्य दक्षिणेन स्त्रियावामेन वाहनीया शिरोर्त्ति मंत्रः। रोगी के शरीर के नाप का डोरा लेकर, डोरा बनाकर के देवें। स्त्री के वाम भाग में व पुरुष के दक्षिण भुजा में बांधें। रक्षा होवे।

(३)

॥ विषहर पार्श्वनाथ मंन्त्र ॥

मंत्र- ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अष्टादशवृश्चिकाणां विषं हर हर आं क्रूं ह्रां स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को पढ़ते जाएं और बिच्छु के काटे हुए स्थान पर झाड़ा देते जाएं, तो बिच्छू का जहर उतर जाता है।

(४)

॥ ज्वर नाशक पार्श्वनाथ मन्त्र॥

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय वज्र स्फोटनाय वज्र वज्र एकाहिक रक्ष रक्ष द्वयाहिक रक्ष रक्ष त्र्याहिकं रक्ष रक्ष चातुर्थिकं रक्ष रक्ष वात ज्वरं पित्त ज्वरं श्लेष्म ज्वरं संन्निपात्र ज्वरं हर हर आत्म चक्षु परचक्षु भूतचक्षु पिशाच चक्षु शाकिनि चक्षु डाकिनी चक्षु माता चक्षु पिता चक्षु ठठारिच मारि व रुडिकल्लालि वेसिणि, छीपिणि वाणिणि, वाणिणि, खत्रिणि, वंभणि, सु नारिं सर्वेषां दृष्टिं वंधि वंधि गतिं बंधि बंधि ऊडोसिणि पाडोसिणि, घरवासिणि, वृद्धियुवाणि, शाकिणिनां हन हन दह दह ताडय ताडय भंजय भंजय मुखं स्तंभय स्तंभय इलि मिलि ते पार्श्वनाथाय स्वाहा।

विधि- अनेन प्रत्येक गुणणां पूर्व पंचसप्तवा ग्रन्थयो वध्यन्ते। सात बार पढ़कर डोरा बनाकर देवें।

(५)

॥ ज्वर नाशक पार्श्वनाथ मंत्र॥

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथ पद्मावती सहिताय हिली हिली मिलि मिलि चिली चिली किली किली ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः क्रौ क्रौं यां यां हंस हंस हूं फट् स्वाहा।

विधि- सर्व ज्वर नाशन मंत्रः ज्वरानंतरं देव कुल दर्शनायाह।

(६)

॥ व्याधि नाशक पार्श्वनाथ मंत्र॥

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथ धरणेन्द्रयपद्मावति सहिताय किंनर किंपुरूषाय गरुड गंधर्व महोरग यक्षराक्षस भूत पिशाच शाकिनीनां सर्वमूल व्याधि विनाशय काला दुष्ट विनाशाय वज्रसकल भेदनाय वज्रमुष्टि संचूर्णनाय महावीर्य पराक्रमाय सर्वमंत्र रक्षंकराय सर्वभूत वशंकराय ॐ हन हन दह दह पच पच छिन्नय छिन्नय भिन्नय भिन्नय मुंच्चय मुच्चय धरणेन्द्र पद्मावति स्वाहा ॐ नमो भगवते हनुमताय कपिल पिंगल लोचनाय वज्राँगमुष्टि उद्दीपन लंकापुरी दहन वालि सुग्रीव अंजणकुक्षि भूषण आकाश दोषं बंधि बंधि पाताल दोषं बंधि बंधि मुद्गल दोषं बाँधि एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक नित्य ज्वर वात ज्वर धातु ज्वर प्रेत ज्वर श्लेष्म ज्वर सर्व ज्वरान् सर्वेदह सर्वेदह सर्वेहन सर्वेहन ह्रीं स्वाहा कोइलउ कंट ग्रलउ पुञ्जित्तउ फुल्लं वंवालु आवणो शक्ति आंगलो खेलावइ हीमवेत्तालु चाल्लावइ एक जाति चालि छत्र चालि प्रकट चालि जर उत्रोडि त्रीउ त्तोडि चउरासी दोष कोइलउ हणउ वापुशक्ति कोइलावी रत्तणी रत्तणी रत्तणी ॥

विधि- एभिस्त्रिभिमंत्रे: प्रत्येकं कलपानीये कृते पायित्ते सर्वेदोषा उपशाम्यंसि, एकैकेन वार ७ अभिमंत्र्यतया **खटिकया** नव शरावे, ठ, कारे लिखिते ऊसीसाधोतं च निद्रा समायाति ॐ संयुक्तं नमस्कार पद पंचकं लिखित्वा **चिष्टिका** वद्धा नवर क्षति मातृकां नमस्कार वाचक्रं लिखित्वा तच्चिष्टि काउ छीर्ष के धृतारातौ सुप्तस्य सर्वोप द्रवान्नाशयति। **खारस्य** वासित्त जलेण लेपे सर्वमपि साडं निवर्त्तयति, सुवग्र माक्षिकं केलरस पली हरियाल मणसिल गंधक **निंबु या रस** पलि अभ्यंगेनद भून निवृति:।

इस मन्त्र के छीटें देने से दोष्ष शान्त होते हैं। नये पात्र में **'ठ ठ ठ'** लिखें, उसे धोकर पिलावें। निद्रा आवे। **'ॐ नम:'** ५ बार लिखें। चारों ओर **'अं आं इं..... कं खं गं.... क्षं त्रं ज्ञं'** मातृका लिखें फिर जल ड़ालकर मन्त्रकर पिलावें **लाभ होवे**। शहद, केलारस, हरताल, मेनसिल, गन्धक, नींबू रस का लेपन करने से लाभ होवे।

(७)

॥ नजर का पार्श्वनथ मन्त्र॥

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथ ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं नम: ॐ तक्षक्काय नम: उत्कट विकटदाढ़ा रुद्राकराय नम: हन हन दहि दहि पचि पचि सर्व ग्रहाणां बंधि बंधि भूतानां राशिं राशिं ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि शोषि शोषि भक्षि भक्षि य: य: ज्वलि ज्वलि प्रज्वलि प्रज्वलि वायु वीरु ॐ नीलसूया कंता आया का हु जाणइ आखु जाणइ आपद्रेट्ठि परद्रेट्ठि माय बाप केरी द्रट्ठि आडासी पाडासी की द्रेट्ठि नाट्ठ केरी द्रेट्ठि शिहरीउ मूलु अजीर्ण व्याधि हणुमंत तणी लातभस मांते हो जिउ ॐ वीर हनोवतां अतुलबल पराक्रमा सर्वव्याधि छिनि छिनि भिनि भिनि त्राशय त्राशय नाशय नाशय त्रोटय त्रोटय स्फोटय स्फोटय बांधय बांधय बंधइ बंधेण लंकादहि तेण हुणूएण हूं फट् स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को ७ बार जपने से व्याधि बंध होती है। मन्त्रित पानी पिलाने से व झाड़ा देने से नजर, रोग दूर होवे।

(८)

॥ उपद्रव शान्ति कारक पार्श्वनाथ मंत्र॥

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथ सर्वभूत वशंकराय किनर किंपुरुष गरुड गंधर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच शाकिनी डाकिनीनां आवेशय आवेशय कट्टय कट्टय घुर्मय घुर्मय पात्रय पात्रय शीघ्रं शीघ्रं ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: फट् य: य: य: य: य: वज्रतुंडोमहाकार्ये वज्रज्वलित लोचन व्रजदंड निपातेन् चन्द्रहास खड्गेन भूभ्यांगच्छ महाज्वर स्वाहा

(९)

॥ नेत्रपीड़ा नाशक पार्श्वनाथ मंत्र॥

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय आत्म चक्षु पर भूत चक्षु पिश्रुन चक्षु चक्षु डाकिनि चक्षु

चक्षु साकिनी चक्षु सर्वलोक चक्षु माता चक्षु पिता चक्षु अमुकस्य चक्षु रोग दह दह पच पच हन हन हुं फट् स्वाहाः।

विधि- यह मंत्र २१ बार जपे (कलवाणी मंत्र)।

(१०)

॥ पार्श्वनाथ वश्य मंत्र ॥

ॐ नमो भगवतो पार्श्वचंद्राय गौरी गांधारी सर्ववशंकरी स्वाहा। ॐ नमो सुमति मुख मंडये स्वाहा।

॥ सर्वाबाधा निवारण महावीर मन्त्र ॥

ॐ वीर वीर महावीर अजिते अपराजित अतुलबल पराक्रमाय त्रैलोक्य रण रंग मल्ल गजित भवारि मल्ल ॐ दुष्ट निग्रहं कुरु कुरु मूर्द्धान् आक्रम्य सर्वदुष्ट ग्रह भूतपिशाच शाकिनी योगिनी रिपुक्षय राक्षस गंधर्व नर किन्नर महोरग दुष्ट व्याल गोत्रप क्षेत्रप दुष्ट सत्व ग्रहानि ग्रहाण निग्रन्हीया निग्रन्हीया ॐ चुरु चुरु मुरु मुरु दह दह पच पच मर्दय मर्दय त्राडय त्राडय सर्वदुष्टग्रहं ॐ अर्हं भगवत् वीरो अतुलबलवीरो निन्हियादत्र स्वाहा।

॥ उपद्रव नाशक वर्द्धमान महावीर ॥

ॐ नमो अरहो वीरे महावीरे सेणवीरे वर्द्धमानवीरे जयंते अपराजिए भगवउ अरहस्स जिणिंद वरवीर आसणस्य कुसमय मयप्पणा सणस्स भगवउ समण संघर्ष मे सिद्धा सिद्धाइया सासण देविनि विग्घं कुणउ सानिष्यं स्वाहा।

नित्य स्मरण करने से उपद्रव नहीं होते।

॥ यक्षराज ॥

ॐ ह्रीं क्लीं ह्रूं श्री गजमुख यक्षराज आगच्छ मम कार्यसिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रां क्रों क्ष्वीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं हम्ल्व्र्यूं भम्ल्व्र्यूं सम्ल्व्र्यूं टम्ल्व्र्यूं रम्ल्व्र्यूं हम्ल्व्र्यूं छम्ल्व्र्यूं स्म्लव्र्यूं खल्व्र्यूं बल्व्र्यूं ड्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी सर्वकार्याणि कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र के स्मरण मात्र से उपद्रव नष्ट होते हैं। मन्त्र के अनुसार ज्वालामालिनी की आन के साथ यक्षराज का आवाहन है।

॥ अथ सुग्रीव मन्त्र प्रयोगाः॥

(१)

(क) ॐ नमो सुग्रीव अनंतयोग सहस्राय आरवारणा आविया हनुं हनुं दहुं दहुं जलुं जलुं प्रज्वलुं प्रज्वलुं भेदउं भेदउं छेदउं छेदउं सोसउं सोसउं आप विद्या राखउं परविद्या छेदउं प्रत्यंगिरा नमोस्तु सुग्रीव तणी आज्ञा फुरइ ठः ठः स्वाहा।

२१ बार मंत्र कर अक्षत फेंके तो विजय होवे।

(ख) ॐ मातंगाय प्रेतरूपाय विहंगमाय धून धून ग्रस ग्रस आकर्षय आकर्षय हूं फट् सिरि शूल चण्डा धर प्रचण्ड सुग्रीवो आज्ञापयति स्वाहा।

कनेर के फूल, धत्तुरे के फूल, अश्वगंध, अपामार्ग के होम व धूप से प्रेतबाधा दूर होवे। १०८ बार सरसों मन्त्र कर फैंकने से भूत प्रेत दूर होवे।

(ग) ॐ सुग्रीवाय वानर राजाय अतुलबल वीर्य पराक्रमाय स्वाहा।

इस मन्त्र से सुपारी या फल खिलाने से ज्वर नाश होवे।

(घ) ॐ सुग्रीवाय जने वह तराय स्वाहा। डाकिनी दिशा बंध पुत्र रक्षा च प्रवश्य प्रवश्य।

(ङ) ॐ नमः सुग्रीवाय नमः चामुण्डो तक्षिकालोग्रह विसत् हन हन भंज भंज मोहय मोहय रोषिणी देवी सुस्वाय स्वाहा।

(२)

॥ पर विद्या निवारण सुग्रीव मन्त्र॥

(च) ॐ नमो सुग्रीवाय परम सिद्ध सर्वशाकिनीनां प्रमर्दनाय कुंट कुंट आकर्षय आकर्षय वामदेव देव प्रेतान् दह दह ममाहली रहि रहि उसग्रत उसग्रत यसि यसि ॐ फट् शूल चण्डायनी विजयामाम हन् प्रचण्ड सुग्रीवो सासपति स्वाहा।

(छ) ॐ नमो सुग्रीवाय वार्षिके सौम्ये वचनाय गौरीमुखी देवी शूलिनी ज्जं ज्जं चामुण्डे स्वाहा।

(ज) ॐ नमो सुग्रीवाय ह्रीं खट्वांग त्रिशूल डमरु हस्ते तीस्तीक्ष्णक कराले वटेलानल कपोले लुचितं केश कपाल वरदे। अमृत शिरभाले गण्डे सर्वडाकिनीनां वशंकराय सर्वमंत्र छेदनी निरवये आगच्छ भवति त्रिशूलं लोलय लोलय इ अरा डाकिनी डाकिनी डाकिनी।

इस तरह सरसों मन्त्रकर फेंकने से शाकिनी दोष दूर होवे।

(झ) ॐ नमो भगवते सुग्रीवाय कपिल पिंगल जटाय मुकुट सहस्त्र योजनाय आकर्षणाय सर्वशाकिनीनां विध्वंसनाय सर्वभूत विध्वंशनाय हणि हणि दहि दहि पचि पचि छेदि छेदि दारि दारि मारि मारि भक्षि भक्षि शोषि शोषि ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि स्वगिं इन्द्र पाताली अहट्ट कोडि भूतावलि जोहि जोहि मोहि मोहि उच्चाटि उच्चाटि स्तंभि स्तंभि बंधि बंधि हूं फट् स्वाहा।

(३)

॥ प्रेत नाशक सुग्रीव मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवते सुग्रिवाय कपिल पिंगलजटाय मुकुट सहस्त्र योजनाय आकर्षणाय सर्वशाकिनिनां विध्वंशनाय सर्वभूत विध्वंशनाय हणि हणि दहि दहि पचि पचि छेदि छेदि दारि दारि मारि मारि भक्षि भक्षि शोषि शोषि ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि स्वगिं इंदु पाताली वासुगि अहट्ट कोडि भूतावलि जोहि जोहि मोहि मोहि उच्चाटि उच्चाटि स्तिंभि स्तिभि वंधि वंधि हूं फट् स्वाहा।

७ बार स्मरण करने से आशान प्रभवति। प्रेत बाधा नाश होवे।

(४)

॥ डाकिनी नाशक सुग्रीव मन्त्र ॥

मंत्र- ॐ क्रां श्रां ह्रीं सों नमो सुग्रीवाय परम सिद्धि कराय सवं डाकिनी गृहीतस्य।

विधि- पाटे पर यंत्र लिखकर अन्दर नाम लिखें। फिर सरसों उड़द, नमक से ताड़न करें तो डाकिनी आदि से आक्रंदित हुआ रोगी का रोग नाश होता है। चोकोर यंत्र के चारों ओर प्रत्येक दिशा में २२२, ड ड ड लिखें।

॥ अथ मणिभद्र क्षेत्रपाल मन्त्र प्रयोगा:॥

(१)

॥ व्यापार वृद्धि मन्त्र ॥

कुछ लोगों के अनुमान से मणिभद्रजी कुबेर के अवतार थे। महाराष्ट्र में व्यापार से अक्षय धन भण्डार के स्वामि हुये थे। इन्द्र समान सुखी थे, इसलिये इनकी सवारी सात सूण्ड वाले हाथी पर मानी गई है।

मन्त्र - ॐ मणिभद्राय रत्नशोभिताय ऐरावत वाहनाय मम गृहे व्यापारे ऋद्धि वृद्धि सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

(२)

॥ सर्वबाधा नाश हेतु मंत्र ॥

ॐ नमो भगवते ह्म्ल्व्र्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मणिभद्र देवाय भैरवाय कृष्णवर्णाय रक्तोष्ठाय उग्रदंष्ट्राय त्रिनेत्राय चतुर्भुजाय पाशांकुश फल वरद हस्ताय नागकर्ण

कुण्डलाय शिखा यज्ञोपवीत मण्डिताय ॐ ह्रीं भ्रां भ्रां कुरु कुरु ह्रीं ह्रीं आवेशय आवेशय ह्रौं स्तोभय स्तोभय हर हर शीघ्रं शीघ्रं आगच्छ आगच्छ खलु खलु अवतर अवतर क्ष्मलव्र्यूं हम्लव्र्यूं भम्लव्र्यूं चन्द्रनाथ ज्वालामालिनि चण्डोग्रपार्श्वनाथ तीर्थङ्कर धरणेन्द्र पद्मावती आज्ञादेव नाग यक्ष गंधर्व ब्रह्मराक्षस राक्षस रणभूतादीन रतिकाम बलिकाम हंतुकाम ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र भवांतर स्नेह वैर संबंधी सर्वग्रहान्नाशय सर्वग्रहान्नाशय नागग्रहान नाशय नाशय गंधर्वग्रहान नाशय नाशय आकर्षय आकर्षय व्यंतरग्रहान आकर्षय आकर्षय ब्रह्मराक्षसग्रहान आकर्षय आकर्षय चेटकग्रहान आकर्षय आकर्षय सहस्रकोटि पिशाचग्रहानाकर्षय पिशाचग्रहानाकर्षय अवतर अवतर शीघ्रं शीघ्रं धुनु धुनु कम्पय कम्पय कंपावय कंपावय लीलय लीलय लालय लालय नेत्रं चालय चालय गात्रं चालय चालय सर्वाङ्गं चालय चालय ओं क्रों ह्रीं गगन गमनाय आगच्छ आगच्छ कार्य सिद्धिं कुरु कुरु दुष्टानां मुखं स्तंभय स्तंभय सर्वग्रह भूतवेताल व्यंतर शाकिनी डाकिनीनां सर्वदोष निवारय निवारय सर्व परकृतविद्या नाशय नाशय हूं फट् धे धे ठः ठः वषट् नमः स्वाहा।

इस मन्त्र को सिद्ध करने से मणिभद्र दर्शन देवे। मन्त्र से झाड़ने पर भूतप्रेतादिक दोष दूर होवे।

(३)

॥ मणिभद्र मंत्र ॥

मन्त्र – ॐ नमो रत्नत्रयाय मणिभद्राय महायक्ष सेनापतये ॐ कलि कलि स्वाहा।

विधि- अनेन दंतकाष्टं सप्त कृत्वोऽभि मंत्र्यं प्रत्युषे भक्षयेत् अयाचित भोजनं लभते। दंतवन दातून के सात टुकड़े करके इस मंत्र से २१ बार मंत्रित करके प्रातः दातुन करे तो अनमांगे भोजन मिलता है। याने भोजन के लिये याचना नहीं करनी पड़ती है।

(४)

॥ श्रीमणिभद्र क्षेत्रपाल का मंत्र ॥

ॐ नमो भगवते मणिभद्राय क्षेत्रपालाय कृष्णरूपाय चतुर्भुजाय जिन शासन भक्ताय नवनाग सहस्त्र वाल्राय किन्नर किं पुरुष गंधर्व, राक्षस, भूत , प्रेत, पिशाच सर्व शाकिनीनां निग्रह कुरु कुरु स्वाहा मां रक्ष रक्ष स्वाहाः।

(५)

॥ क्षेत्रपालनो मंत्र ॥

मंत्रः- ॐ क्षां श्रीं क्षूँ क्षः क्षौ क्षः क्षेत्रपालायनमः।

****

॥ वटुक भैरव मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं क्लीं क्रौं क्रौं वटुकाय आपद् उद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं हम्ल्व्र्यूं नमः।

॥ पद्मावती मन्त्र प्रयोगाः ॥

पद्मावति के विविध मन्त्र प्रयोग हमारी पुस्तक सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाश भाग (४) के अर्न्तगत दिये गये हैं।

(१)

॥ पद्मावती स्वप्न प्रत्यक्ष मंत्र ॥

मंत्रः- ॐ आं क्रौ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौ पद्मावत्यै नमः।

विधि- सवा लाख जाप करने से प्रत्यक्ष दर्शन होते है या साढ़े बारह हजार जप करने से स्वप्न में दर्शन होते है।

(२)

॥ पद्ममावति वशीकरण मन्त्र ॥

ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं हसौं देवि पद्मे मे सर्व जगद्वशं कुरु सर्व विघ्नान् नाशय नाशय पुरक्षोभं कुरु कुरु ह्रीं संवौषट्।

विधि- इस मंत्र को लाल कनेर के फूलों से १२००० जाप करें। फिर मधु मिश्रित गुगुल की चने के बराबर १२००० गोली बनाकर होम करने से मंत्र सिद्ध हो जायगा। इस मंत्र के प्रभाव से राजादिक वश में होते हैं।

(३)

॥ पद्मावती राजवशीकरण मंत्र ॥

ॐ ह्रीं क्लीं पद्मे पद्मावति पद्म हस्तेपुरं क्षोभय क्षोभय राजानं क्षोभय क्षोभय मंत्रींणं क्षोभय क्षोभय हूं फट् स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को भी लाल कनेर के फूलों से और लाल रंग में रंगे हुए चावल से १२००० जाप करके मंत्र को सिद्ध करें। यह मंत्र भी वशीकरण मंत्र है।

(४)

॥ सर्ववश्य पद्मावती मंत्र ॥

ऐं क्लीं ह् सौः रक्त पद्मावतिं नमः सर्वं मम वशीं कुरु कुरु स्वाहा ॐ अलू मलू ललू नगर लोकूराजा सर्व मम वशीं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से लाल कनेर के पुष्प २१ बार मंत्रीत करके नगर के प्रवेश के समय अथवा राजा के सम्मुख अथवा प्रजा के सम्मुख ड़ालें तो राजा, प्रजा, नगरवासी सब वश में होते है।

(५)

॥ सर्वसिद्धि पद्मावती मंत्र ॥

मंत्र-: ॐ हां आं क्रों क्षां ह्रीं क्लीं ब्लूं ह्रां ह्रीं पद्मावती नमः।

विधि- इस मंत्र के सफेद पुष्पों से १००८ जप दस दिन तक करें तो सर्व सिद्धि करने वाला होता है।

(६)

॥ दुष्ट स्तंभन पद्मावती मंत्र ॥

ॐ धनु धनु महाधनु महाधनु सर्वधनु धीरी पद्मावती सर्वदुष्ट निर्दल स्तंभनीनि मोहनी सर्वासु नामिराजा धीनामि सर्वासुनामि राजाधि नामि आउ बंधउ दृष्टि बंधउ मुख स्तंभउ ॐ किरि किरि स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को दक्षिण हस्त से धनुष बाण चलाने की मुद्रा से जप करे, सर्व प्रकार से दुष्ट जनो के मुख का स्तंभन करने वाला यह मन्त्र सर्व उपद्रव दूर करता है।

॥ प्रत्यंगिरा मंत्र प्रयोगाः ॥

(प्रत्यंगिरा मंत्र घट भ्रामण में भी दिया गया है। यह पर मंत्र- तंत्र का नाश करता है)

(१)

ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये येनकेन चिन्ममोपरि पापं चिंतितं कृतं कारितं अनुमतं वातत्पापं तस्य वै मस्तके निपत्तउ मम शांति कुरु कुरु पुष्टिं कुरुं शरीर रक्षां कुरु कुरु ह्री प्रत्यंगिरे स्वाहा।

प्रत्यङ्गिरा के इस मन्त्र प्रयोग से शत्रु की क्रिया तन्त्र मन्त्र उसी पर लौट जाते हैं।

(२)

॥ प्रत्यंगिरा मंत्र ॥

मंत्रः- ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे ममस्वस्ति शांति कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- यह मंत्र मात्र स्मरण करने से सर्व प्रकार की शांति होती है।

(३)

॥ रोग नाशक प्रत्यंगिरा मंत्र ॥

ॐ ह्रीं अर्ह श्री शांतिजिनः शांतिकरः श्री सर्वसंघ शांति विदध्यात् अर्हं स्वाहा ॐ ह्रीं शांते शांतेये स्वाहा ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये।

विधि- वार १०८ दिन ७ यस्य कार्यणादि दोषैः संस्मारणीयः ततोयेन दोषः कृतः स्यात्तस्यैव पतति राजप्रशाद वैरिश्मः तन्नास्ति यदि तो नस्यात् परं प्रत्यंगिरादि यंत्राग्रतः कार्य- हिंगु भाग १ वाचा भाग २ पिप्पली भाग ३ सूंठि भाग ४ यवानी भाग ५ हरितकी भाग ६ चित्रिक भाग ७ उपलोठ भाग ८ एत च्चूर्ण प्रात रूथा योष्णोदकेन २१ पेयं कास, श्वास, क्षय रोग, मन्दाग्नि दोष प्रशमः कार्मणं चैत दौषः धात् प्रशमति।

इसउ मन्त्र से ऊपरी बाधा दूर होवे। ८ द्रयों को उबाल कर लेने से श्वास, खांसी आदि दूर होवे।

(४)

ॐ ह्रीं कृष्णवाससे सुध्म सिंहवाहने सहस्त्रवदने महाबले प्रत्यंगिरे सर्वसैन्यकर्म विध्वंसिनी परमंत्र छेदनी सर्वदेवाणाणी सर्वदेवाणाणी बंधि बांधि निकृतंय निकृतंय ज्वलाजिह्वे कराल चक्रे ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे स्वाहा स्वाहा स्वाहा शेषाणंद देवकरी आज्ञाफुरइ ४ ।

यह विद्या पर मन्त्र-तन्त्र को काटती है। घट में देवी का आवाहन करें। दो व्यक्ति घट का स्पर्श करें, मन में प्रश्न का विचार करें, तो घट का शुभ व अशुभ भ्रमण होवे।

॥ मातंगी मन्त्र ॥

मंत्रः- **ॐ नमो कृष्णस्य मातंगस्य चिनि अहि अहि अहिणि स्वाहा।** (अंगुल्यागृरचते भूतं नाश्यति)

इस मातंग मन्त्र से सभी विघ्नों का नाश होता है

॥ अपराजिता मंत्र ॥

मंत्रः- **ॐ अजिते अपराजिते किलि किलि स्वाहा।**

विधि- ऐषा विद्या वैर, व्याघ्र दंष्ट्रिणां वधं करोति कंकरिकां सप्ताभिभंत्रतां कृत्वा दिक्षु विदीक्षु क्षिपेत्। इस मंत्र से कंकरियों को ७ बार या २१ बार मंत्रीत करके दिशा विदिशाओं में फेंकने से वैर, व्याघ्र, दांत वाले जीवों को बंद कर देता है। याने इनका उपद्रव नहीं होता है।

॥ सिद्ध चामुण्डा मंत्र ॥

पनरस सयता वसाणं दिखुं दिंतस्स गोयम मुनिस्स उवगरणं वहु देइ धणऊ धन्नाण भव्वाणं ॐ नमो सिद्ध चामुंडे अजिते अपराजिते किल कलेश्वरी हूं फट् स्वाहा (या फुं फट् स्वाहाः) इत्यस्य स्थाने "स्फुट् विकट करी ठः ठः स्वाहा।"

विधि- इस मंत्र का स्मरण करने से मार्ग का श्रम दूर होता है।

॥ चामुंडा मंत्र ॥

मंत्र - **ॐ ह्रीं चामुंडे वज्रपाणे हुं फट् ठः ठः।**

विधि- गुप्ति मोक्ष विषये मासु १ सहस्त्रं उभय संध्यं गुणनीयः ग्रह विग्रहा दौच।

॥ अथ मेधा वृद्धि मन्त्राः ॥

(१)

॥ सरस्वती मेधा वृद्धि मन्त्राः ॥

(१) ॐ ऐं श्रीं क्लीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं सरस्वत्यै नमः।

विधि-बाह्य मूहूर्त में रोज ५ माला जपने से बुद्धिमान होय।

(२) ॐ ज्रौ ज्रो शुद्ध बुद्धि प्रदेहि श्रुत देवी मर्हतं तुभ्यं नमः।

(२)

॥ ऋषभनाथ मेधावृद्धि मन्त्र ॥

मंत्र- ॐ नमो भगवते ऋषभाय जैनमति मोनमति रोदनमति स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से सात वच को मंत्रीत करके खावें तो महा बुद्धिमान, निरोगी होता है।

(३)

॥ वाचा सिद्धि रुद्र मंत्र ॥

ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि मे वाचा सिद्धि बिना पर्वतं गते द्रां द्रीं द्रूं द्रें द्रौं द्रः।

मस्तक पर बायां हाथ रखकर सवा लाख जप करें वाचा सिद्धि होय।

(४)

॥ सारस्वत मंत्र ॥

मन्त्र - ॐ ह्रीं मायांगे सरस्वत्यै नमः।

विधि- बोध सारस्वत मंत्रः। चंद्रा ननां स्वरां भोधौ वाङ्मयी च सरस्वती ह्रं च्वंद्र मंडल गताध्याये त्सारस्वतं महत्। चन्दमण्डल में देवी का ध्यान करें एवं बायां स्वर जब साफ चले तब जप करना चाहिये।

॥ तारिणी दुर्गा मंत्र ॥

ॐ तारे तु तारे वीरे वीरे दुर्गा दुत्तारय दुत्तारय मां हुं सर्व दुःख विमोचिनी दुर्गोत्तारीणी महायोगेश्वरी ह्रीं नमोस्तुते ॐ ह्रां ह्रीं हुं हूं सरसुं सः हर हुं हः स्वाहा।

विधि- इस मंत्र का १०८ बार स्मरण करने से सर्व शांति होती है। सर्व उपद्रव का नाश होता है।

॥ तारा मंत्र ॥

मंत्रः- ॐ प्रसन्न तारे पसन्ने प्रसन्ने प्रसन्न कारिणि ह्रीं स्वाहा।

विधि- इस मंत्र का जाप करने से शांति मिलती है।

॥ कुष्माण्डा मंत्र ॥

(१)

मंत्रः- ॐ ह्रीं श्रीं कुष्मांडिदेवि मम् सर्व शत्रुन् वशं कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं क्लीं सर्वदुष्टेभ्यो मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

विधि- अश्वनी नक्षत्र में ४ अंगुल प्रमाण की घोड़े के पाँव की हड्डी इस मंत्र से मंत्रीत करके शत्रु के गृह में डालने से शत्रु के सर्व कुल का उच्चाटन हो जाता है। स्वयं की रक्षा हेतु जपकर धूपादि देवें।

॥ सत्यवार्ता कुष्माण्डा मंत्र ॥

(२)

मंत्र:- ॐ ह्रीं अग्रे कुष्मांडिनी कनकप्रभे सिंहमस्तक समारुढ़े अवतर अवतर अमोघ वागेश्वरी सत्यवादिनी संत्यं कथय कथय ॐ ह्रीं स्वाहा।

विधि- मासमेकं दशमी मारभ्य १०८ जपित्वा पंचमी दशम्योर्विशेषत: तप: कार्य यामिन्यर्द्धि अविचलेन वार ७ जाप्य।

अयं यंत्र लेखन विधि

बसन्तु १ ग्रीष्म २ प्रावृट ३ शरद ४ हेमन्तु ५ शिंशिर ६ एक दिन मध्ये षट् रितवो भवंति दश दश घटिकां: प्रत्येकं ऋतु प्रमाणं अहोरात्रि मध्ये षट् भवंति घटिका: ६० आदित्योदयात् बसंत ऋतु घटिका: १० तत्राकर्षणं १ ग्रीष्मे, द्वेषण २ प्रावृटे, अपरान्हे उच्चाटणं ३ लिखेत् सर्वत्र योज्यं शिशिरे मारणं लिखेत् ४ शरदे शांतिकं लिखेत् ५ हेमंते पौष्टिकं लिखेत् ६ पन्नगाधिम शेषरा विपुलारूणां वुजविष्ट रांकुकुटोरग वाहनां अरुणं प्रभां कलला ननांत्र्य बिकां वरदां कुशायतप शादिव्यं फलांकित्ताचिंतयेत् पद्मावती जपतां सतां फलादायिनी दिक्काल मुद्रासन पल्लवानां भेद परित्ताय जपेत्समंत्री न चान्यथा सिध्यति तस्यमंत्र:। कुर्वन् सदा तिष्ठति जाप्य होमं।

४-४ घण्टे के अनुसार दिन में ६ ऋतुऐं होती है। अलग-अलग कार्यों में उनका समय है। पद्मावति देवी के साथ पूजन करें सभी कार्य सिद्ध होवे।

॥ उपद्रव नाशक, शान्ति कारक मन्त्राः ॥

(१)

॥ उपद्रव नाशक बाहुवलि मंत्र ॥

ॐ नमो भगवऊ बाहुवलि स्सेहपगह सवणिस्सं ॐ वग्गुं वग्गुं निवग्गु मग्गंगयस्स सया सोमेविय सोमण सेम हम हुरे जिन वरे नमं सामि इरिकालि पिरिकाली सिरिकाली तह महाकाली किरियाए हिरियाएय संग एतिविह कलियंविरए सुहुमाहण्पे सव्वे सांहते साहुणो वंदे ॐ किरि किरि कालिं पिरि पिरि कालिं चसिरि चसिरि सकालिं हिरि हिरि कालिपयं पिय सरिध सरे आयरिय कालिं ८ किरिमेरिं पिरिमेरिं सिरि मेरिं ॥

धनुष की आकृति बनाकर उसमें यह मन्त्र लिखें। फिर बायें पैर से ताड़न कर गमन करें। मार्ग भय नहीं रहे।

(२)

॥ उपद्रव शान्ति मन्त्र ॥

ॐ समरि समरि सिद्धी समरी आतुरि आतुरि पूरि पूरि नाग वासिणि तं अन्थि वासिणी आकासु वंध पातालु वंधु दिशि वंधु अवदिशि वंधु डाकिणि वंधु शाकिणि

वंध बंध वंधेण लंकादही तेण हणु एण लोहेन।

विधि- इस मंत्र को २१ बार जपने से सर्व उपद्रव शान्त होते है। (कलवाणी मन्त्र)

(३)

॥ शांति कारक शांतिनाथ मंत्र ॥

ॐ वल्व्यूँ क्लीं क्लें शिनि सर्वदुष्ट दुरित निवारिणि हूं फट् स्वाहा। ॐ अमृते अमृत्तोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृतं वाहिनी अमृतं श्रावय श्रावय सं सं ह्रं ह्रं क्लीं क्लीं ब्लुं ब्लुं द्रां द्रीं दुष्टान् द्रावय द्रावय मम शांति कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु दुःखमपनय २ श्री शांतिनाथ चक्रेन अमृतवर्षिणी स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को २१ बार जपे। (कलवाणी मन्त्र)

॥ सर्वकार्य सिद्धि ज्वालिनी मंत्र ॥

ॐ विधुजिह्वे ज्वालामुखी ज्वालिनी ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल धग धग धूमांध कारिणिं देवी पुरक्षोभं कुरु कुरु मम मनश्चितितं मंत्रार्थं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को कपूर चंदनादि से थाली मे लिखकर सफेद पुष्प अक्षतादि (ग्रहण के मोक्ष से पूर्व) से पूजन कर १००० बार जाप कर सिद्ध करें। फिर नित्य प्रति स्मरण मात्र से सर्व कार्य सिद्ध होती है।

अथ व्यापार वृद्धि, धन प्राप्ति प्रयोगाः

॥ विक्रीवृद्धि प्रयोगाः॥

(१) **ॐ नमो भगवउ गोयमस्स सिद्धस्म बुद्धस्य अक्खीण महाणसस्य अवतर अवतर स्वाहा।**

५०० बार मन्त्र कर अक्षत पर बिक्री वाले माल पर डालें शीघ्र बिक्री होवे।

(२) **ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे जगत्संमोहिनि जगदुन्मादिनी नयन मनोहरी हे हे आनन्द परमानन्दे परम निर्वाणकारिणि क्लीं कल्याण देवी ह्रीं अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।**

(३) **ॐ नमो अरहंताणं नमो सिद्धाणं अणंत जिणाणां सिद्ध योग धाराणं सव्वेसिं विज्जाहर पूत्राणं कयंजली इमं विज्जारायं पउंजामि इमामे विज्जापसिष्यउ आर कालि बाल कालि दुस खररेउ आवतवो चण्डि स्वाहा।**

७ कंकर लेकर २१ या १०८ बार मंत्र बोलकर बिकने वाले माल पर फेंके सामान बिक्री होय।

(४) **ॐ ह्रीं श्रीं श्रीकरी धनकरी धान्यकरी मम सौभाग्यकरी शत्रुक्षयंकरि स्वाहा।**

अगर, तगर, कृष्णागर, चंदन, कर्पूर, देवदारु के चूर्ण से होम करें नौकरी व्यापार में वृद्धि होवे।

(५) **ॐ भंवरवीर तू चेला मेरा खोल दुकान कहाकर मेरा। उठे जो डण्डी बिके जो माल भंवरवीर सोखे नहीं साल।** इस मन्त्र से उड़द मंत्र कर फेंके बिक्री बढ़े।

(६) **ॐ नमो अरहंताण नमो सिद्धाणं नमो अणंत जिणाणं सिद्धयोग धाराणं सव्वेसिं विज्जाहर पूत्ताणं कयंजली इमं विज्जारायं पउंजामि इमामे विज्जापसिष्यउ आर कालि बालकालि पुंस खररेउ आवतवो चडि स्वाहा।**

विधि- पृथ्वी पर सात कंकर लेकर इस मंत्र से २१ बार या १०८ बार मंत्रीत कर बिकने वाली दूकान की चीजों पर डाल देने से शीघ्र ही उस सामान की बिक्री हो जाती है।

॥ धनवृद्धि प्रयोगाः॥

(१)

(१) **ॐ नमो गोमय स्वामी भगवउ ऋद्धि समो वृद्धि समो अक्खीण समो आठ आठ भरि भरि पुरि पुरि कुरु कुरु ठः ठः ठः स्वाहा।**

इस मन्त्र से सुपारी चांवल मंत्र कर डाले वह वस्तु अक्षय रहे।

(२) ॐ नमो आदि योगिनी परममाया महोदेवी शत्रुटालनी दैत्यमारनी मन वांछित पूरणी धनवृद्धि मानवृद्धि आन जस सौभाग्य आन न आने तो आदि भैरवि तेरी आज्ञा न फुटे गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

१०८ बार नित्य जप करे तो लक्ष्मी धन वृद्धि होवे। चावल सुपारी अभिमंत्रित कर जिस वस्तु में रखें वह अक्षय होवें।

(३) ॐ नमो भगवते विरूपाय कामख्याय सर्वचिंतितं प्रदाय मम लक्ष्मी प्राप्त कराय स्वाहा।

(४) ॐ नमो ह्रीं श्रीं धनधान्यकरि महाविद्ये अवतर अवतर मम गृहे धन धान्यं कुरु कुरु स्वाहा।

(५) ॐ नमो ह्रीं श्रीं धनधान्यकरि महाविद्ये अवतर अवतर मम गृहे धन धान्यं कुरु कुरु ठः ठः स्वाहा।

(६) ॐ ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा।

इस मन्त्र को ३ दिन १०८ पुष्पों से पार्श्वनाथ के सामने जप करे सर्वकार्यसिद्धि होवे।

(७) ॐ लक्ष्मीं आगच्छ आगच्छ ह्रीं नमः अरे ॐ नमः सोषा महाप्रचण्डवीर भूतान् हन हन शाकिनी हन हन मुंच मुंच हुं फट् स्वाहा।

नजर टोकार दूर होकर विक्री बढ़े धनवृद्धि होवे।

॥ कुबेर मंत्र॥

(८) ॐ महाकुबेरेश्वरी सिद्धिं देहि देहि ह्रीं नमः।

एकान्त में तीन दिन भूखा प्यासा होकर जप करें। मल मूत्र संज्ञा हो तो भी आजपाजप करें। मुरदे की खोपड़ी को सिन्दूर का तिलक लगायें उसके सामने जप करें। चौथे दिन देवी प्रसन्न होवे तथा सुवर्ण प्रदान करेगी। प्रसन्न रहने पर नित्य सुवर्ण प्रदान करे।

॥ लक्ष्मी मंत्र॥

(९) ॐ लक्ष्मीं आगछ आगछ ह्रीं नमः अरे ॐ नमः सोषा महाप्रचंड वीर भूतान् हन हन शाकिनी हन हन मुंच मुंच हुं फट् स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से जाप करे तो सर्व दोष की शान्ति होती है।

॥ धनवृद्धि मंत्र॥

(१०) ॐ ह्रीं श्रीं धनधान्यकरि महाविद्ये अवतर मम गृहे धनधान्यं कुरु कुरु ठः ठः

स्वाहा।

विधि- २१ बार स्मरणीया। किसी पोटली में सात धान मन्त्रकर भण्डार में रखें। धन, भण्डार वृद्धि होवे।

॥ श्रीवृद्धि मंत्र॥

(११) ॐ ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को ३ दिन में १०८ पुष्पों से श्री पार्श्वनाथ भगवान के सामने जप करें तो सर्व सम्पदादिक होता है। तीनों दिन १०८-१०८ पुष्प होने चाहिये।

॥ निधि दर्शन मंत्राः॥

(१) ॐ ह्रीं णमो महायम्मा पत्ताणं जिणाणं।

१२ हजार जप करें तो लक्ष्मी निधि का स्थान बता देगी।

(२) ॐ अम्बेअम्बाले भूतान् क्रूरान् सर्पान् दूरी कुरु कुरु निधिं दर्शय दर्शय श्रीं झ्रौं स्वाहा।

इस मन्त्र के जप से निधि का स्थान मालूम होवे तथा उस पर सर्प होतो वह भी जगह छोड़ देवे।

॥ निधि दर्शन रुद्रमंत्र॥

(३) ॐ नमो भगवतेन कृताय व्याघ्र चर्म परिवर्त्तित शरीराय यो यो वा जपेयो भवति सोऽस्मिन्पात्रे प्रवेशय प्रवेशय सर सर प्रसर प्रसर चल चल चालय चालय भ्रम भ्रम भ्रामय भ्रामय यत्र स्थाने द्रव्यं स्थापितं तत्र तत्र गच्छ गच्छ स्वाहा।

पात्र में रुद्र का आवाहन कर स्पर्श करें। जहां द्रव्य होगा वहां पात्र सरकता हुआ चला जायेगा।

॥ सौभाग्य वृद्धि मन्त्राः॥

(१) ॐ नमो भगवति अप्रतिचक्रे जगत्संमोहिनी जगत् उन्मादिनि नयन मनोहरी हे हे आनन्दे परमानन्दे परम निर्वाण कारिणी क्लीं कल्याण देवी ह्रीं अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

॥ सौभाग्य वृद्धि कुण्डलिनी मंत्र॥

(२) ऐं क्लीं ह् सौः कुडलिनी नमः।

विधि- इस मंत्र का त्रिकाल १०८ बार जपने से कुभाग्य भी सौभाग्य हो जाता है।

अथ शीघ्रविवाह, गर्भरक्षा एवं सुखप्रसव मन्त्राः

॥ विवाह हेतु गंधर्वराज मंत्र ॥

ॐ विश्वावसु नाम गंधर्व कन्यानामधिपति सरूपा सलक्षान्त देहि मे नमस्तस्यै विश्वावसवे स्वाहा।

नित्य १०८ बार जपे ६ मास में संबंध हो जाये।

अथ गर्भ स्तंभन मन्त्राः

(१)

लाल डोरे को निम्नोक्त मन्त्रों से अभिमंत्रित करके गर्भवति स्त्री की कमर में बांधें। प्रसव के समय उस डोरे को खोल देवें।

ॐ ह्रीं श्रीं अचले प्रबलौ चल चल अमुकी गर्भ चाल चाल स्तंभय स्तंभय स्वाहा।

(२)

ॐ द्रोण पर्वतं यथा वद्धं सीतार्थे राघवेण उतं तथा बंधयिष्यामि अमुकस्य गर्भमापत उमाविशीर्यउ स्वाहा। ॐ तद्यथाधर धारिणी गर्भ रक्षिणी आकाश मात्रिके हुं फट् स्वाहा।

लाल डोरे को २१ बार मंत्र कर २१ गांठें लगाकर कमर में बांधे तथा नवें महिने डोरा खोल देवें।

(३)

ॐ नमो लोहित्त पिंगलाय लघु लघु हलु हलु बिलु बिलु ह्रीं स्वाहा।

विधि उपरोक्त।

(४)

ॐ ह्रीं कललोचने ल ल भी क्लीं प्लीं प्लीं अमुकस्या गर्भ स्तंभय स्तंभय क्लां क्लीं क्लूं ठः ठः स्वाहा।

(५)

ॐ चामुण्डे एष कोस्थथं भामि वज्रकीलके न ठः ठः स्वाहा।

मूल या ज्येष्ठा या मूल नक्षत्र में काले डोरे में मंत्र से ७ गाठें लगाकर कमर में बांधे नवें महिने डोरा खोले तो प्रसव होवे।

****

(६)

मंत्र- ॐ तद्यथा आधारे गर्भ रक्षणे आसभात्रिके हूं फट् ठः ठः ठः ठः ठः।

स्त्री के नाप का डोरा लेवे लाल रंग का मंत्र कर ७ गांठे लगाकर डोरा बांधे। गर्भ अधूरा नहीं जावे।

(७)

ॐ अमृतं वरे वर वर प्रवर विशुद्धे हुं फट् स्वाहा। ॐ अमृत विलोकिनि गर्भ संरक्षिणि आकर्षिणि हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ विमले जयवरे अमृते हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ भर भर संभर सं इन्द्रियवल विशोधिनि हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ मणिधरि वजिणी महाप्रतिसरे हुं हुं फुट् फट् स्वाहा

विधि- इन पाँच मंत्रों को चन्दन, कस्तूरी, कुंकुम, अलकुक के रस से भोजपत्र पर लिखकर इस विद्या का जाप करे। फिर गले में बाँधें या हाथ में बांधने से शाकिनी, प्रेत, राक्षसी या अन्य किये हुए यंत्र मंत्र तंत्र प्रयोगादि का नाश होता है। विशेष क्या कहें, विष भक्षण भी किया हो तो भी उस विष का नाश होता है। स्त्री का गर्भ सुरक्ष्ज्ञित रहता है।

(८)

द्रोणपर्वतं यथा वद्धं शीतार्थे राघवेण उतं तथा वंघयिष्यामि अमुकस्य गर्भमापत उमा विशीर्यउ स्वाहा। ॐ त्तद्यथाधर धारिणी गर्भ रक्षिणी आकाशमात्रके हुं फट् स्वाहा।

विधि- लाल डोरे को इस मंत्र से २१ बार जपकर २१ गांठ देवें, फिर गर्भिणी के कमर में बांध देने से गर्भ पतन नहीं होता है, किन्तु नो मास पूरे होन पर उस डोरे को खोल देना चाहिए।

(९)

एडा पिंगला सुखमिना जडा वीया नाडी रामु गतु सेतु वंधि सुख वंधि मुखा खारु वंधि नव मास थंभू दशमइ मुक्ति स्तंभू स्तंभू स्तंभू।

विधि- कन्या कत्रित सुत्र को स्त्री के बराबर नाप कर लें। फिर ९ लड़ करके २१ बार मंत्रीत करके उस डोरे को स्त्री की कमर में बांधे तो गर्भ का स्तंभन होता है, और नो मास की पूर्ति हो जाने पर कमर में बंधा डोरे को खोल देने से तुरन्त प्रसव हो जाता है।

(१०)

ॐ अमृतं वरे वर वर प्रवर विशुद्धे हुं फट् स्वाहा। ॐ अमृत विलोकिनि गर्भ संरक्षिणि आकर्षिणि हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ विमले जयवरे अमृते हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ भर भर संभर संइन्द्रियवल विशोधिनि हुं हुं फट् स्वाहा। ॐ मणिधरि वज्रिणि महाप्रतिसरे हुं हुं फट् स्वाहा।

केसर, गोरोचन से यंत्र भोजपत्र पर लिखकर गले या हाथ में बांधे परमन्त्र दोष दूर होकर गर्भ रक्षा होय।

॥ गर्भनाश का मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं कलिकुण्ड स्वामिने अप्रति चक्रे जये जये अजिते अपराजिते स्तंभे मोहे स्वाहा।

कन्या द्वारा काते हुये सूत को १०८ बार मंत्रें उसके टुकड़े कर करके खावे तो संतान नहीं होवे।

॥ गर्भरक्षा मंत्र ॥

ॐ नमो लोहित्तापिंगलाय लघु लघु हलु हलु विलु विलु ह्रीं स्वाहा।

॥ पुत्र प्राप्ति व सुख प्रसव मन्त्र प्रयोगा: ॥

(१) ॐ ह्रीं श्रीं सिद्ध बुद्ध माला अंबिके मम सर्वां सिद्धिं देहि देहि ह्रीं नमः।

पुत्र कामना वाले व्यक्ति को नित्य १०८ बार जपना चाहिये।

(२) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं द्रौं द्रः द्रावय द्रावय हुं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से तैल मन्त्र कर लगावें व चावल खिलावे सुख पूर्वक प्रसव होवे।

(३) आवइ हणवतु गाजउं गुडडंउ वाजामोगरिंउ कंदरखंउ हाथ मोडउ पायमोडंउ चउथि काटइ चउथि उतारइ रक्त सूल मुख शूल सर्वे शूल समेटि घालिवापु प्रचण्ड़ हनुमत की शक्तिः।

इस मंत्र से अभिमंत्रित पानी देने से आजीर्ण विशूचिका शूल दूर तथा स्त्री को पिलाने से सुख पूर्वक प्रसव होवे।

(४) ॐ भौमाय भूमिपुत्राय मम गर्भ देहि देहि स्थिर स्थिर माचल माचल ॐ क्रां क्रीं क्रौं ॐ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को मंगलवार से प्रारंभ करें उस दिन कुमारी कन्या को भोजन करायें।५० हजार जप करें फिर नित्य एक माला करें।

(५) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुण्ड स्वामिन् अमुकस्य गर्भं मुंच मुंच स्वाहा।

इस मन्त्र से तैल मंत्र कर लगायें सुख प्रसव होवे।

(६) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुण्ड स्वामिन आगच्छ आगच्छ परविद्यां छेदं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि उपरोक्त।

(७) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असि आ उसा नमः।

सूर्योदय से १० मिनिट पूर्वादि आठों दिशाओं में क्रमशः २१-२१ बार जपें। १०-१० माला सुबह दोपहर शाम को करें। मयूरपंख २ तोला, शिवलिंगि का बीज १ ग्राम दोनों को मिलाकर खरल करें ३ ग्राम गुड़ में मिलाकर रजोधर्म

शुद्धि पर खिलावें। शीघ्र संतान योग बने।

॥ सुखप्रसव हनुमान मंत्र ॥

(८) आवइ हणवंतु गाजंउ गुड डंउ वाजामोगरिंउ आछा कंद रखंउ हाथमोडंउ पायमोडउ चउथि काटइ चउथि उतारइ रक्त श्रुल मुख श्रुल सवे श्रुल (सर्व शूल) समेटि घालिवा पुप्रचंड हणुमंत की शक्तिः।

विधि– इस मंत्र से पानी २१ बार मंत्रीत करके पिलाने से और शूल प्रदेश में लगाने से अजीर्ण विश्रूचिका शूलादि की शांति होती है। स्त्री के प्रसव काल में इस मंत्र से मंत्रीत पानी पिलाने से तत्क्षण प्रसव होता है।

॥ पुत्रप्राप्ति भौम मंत्र ॥

(९) ॐ भोमाय भूमि पुत्राय मम् गर्भं देहि देहि स्थिर स्थिर माचल माचल ॐ क्रां क्रीं क्रौ उँ फट् स्वाहा।

विधि– मंगलवार के दिन कुमारी कन्या को भोजनादि वस्त्रालंकार से सन्तुष्ट करें, फिर इस मंत्र के १ महिने में ५०,००० जाप पूरे करें, किन्तु मंगलवार को ही जप शुरू करना चाहिये और याव जीवं जीवन पर्यन्त प्रत्येक मंगलवार को ब्रह्मचर्य व्रत पाले और एक समय भोजन करें तो निःसन्देह सन्तान उन्पन्न होती है।

अथ षट्कर्म प्रयोगा:

॥ आकर्षण मंत्र प्रयोगा:।

(१) ॐ नमो राई रावै धनि आधावै खारी नोन चटपटी लावे मिरचै मारि दुश्मनै जलावे अमुक मेरे पांव पड़ता आवै बैठा होय तो उठावै सूता होय तो मार जगावै लटगहि सौटी मार मारे बांये पांये तले आनि घाल दषों हनुमंत वीर तेरी आज्ञा फुरै ॐ ठः ठः ठः स्वाहा।

राई, धनिया, मिर्च नमक से १०८ होम करे तो इच्छित व्यक्ति पैरों में पड़े।

(२) ॐ कामदेवाय कामवशंकराय अमुकस्य हृदयं स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय वशमानय वशमानय स्वाहा।

(३) ॐ सम्मोहिनी महाविद्यै जंभय स्तंभय मोहय आकर्षय पातय महा संमोहिनी ठः।

(४) ॐ भगवती विद्यामोहिनी ह्रीं हृदये हर हर आउ आउ आणि जोहि जोहि मोहि मोहि फ्रे फ्रे फ्रे आकर्षि आकर्षि भैरवरूपिणि मम वशमानय वशमानय स्वाहा।

उपरोक्त मंत्रों का राई, नमक व गूगल से होम करने पर आकर्षण होवे।

॥ पान मोहिनी मंत्र॥

(५) ॐ चंदा मोहन चंदा वेली नगरी माहि पान की चेली नागर वेली की रंग चढ़ै प्रजा मेरे पाय पड़ै।

जिसके नाम से करना हो प्रजा की जगह उसका नाम पढ़कर पान खिलावे स्त्री वशीभूत होवे।

॥ वशीकरण मंत्र प्रयोगा:॥

(१) ॐ नमो भगवति महामोहिनी जंभिनि स्त्रं स्तंभिनि वशीकरणी पुरक्षोभिणि सर्वशत्रु विद्राविणि ॐ आं क्रों ह्रां ह्रीं प्रों जोहि जोहि मोहि मोहि क्षुभ क्षुभ क्षोभय क्षोभय अमुकं वशी कुरु कुरु स्वाहा।

सोते समय निर्वस्त्र होकर ३०८ बार जप करे ७ दिन तक महावशी होय।

(२) ॐ काली आवी काला कपड़ा काला आभरण कालांकनि ताड़वन्न केशकरी मोकला आवी चउ वाहए कहाथि प्रज्जलंतो छाणी एक हाथी कुत्ता चाक हिग हिल्ली तहिं नगहिल्ली जहिं अच्छइ मत्तविलासिणि घरु फोड़ि पुर मोड़ि घरु जालि

धरुवालिदा घुता पुसो सु अंगिलाइ अमुकी मारइ पाइ पाडि।

२१ बार मंत्र कर जल पिलावें जब तक नींद नहीं आवे वशी होवे।

(३) ॐ नमो रत्नत्रयाय नमोचार्यावलोकिते ईश्वराय बोधिसच्चाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय चन्द्रेन सूर्यमति पूतेन महा महापूतेण सिद्ध पराक्रमे स्वाहा।

२१ बार मंत्र कर अपने कपड़े के गांठ देकर क्रोधी व्यक्ति के सामने जाये तो वशी होय।

(४) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अमुकं अमुकीं वा स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय वशमानय स्वाहा।

(५) ॐ देवी रुद्रकेशी मन्त्रसेसी देवी ज्वालामुखि सूति जागा विसिवइट्ठी लेयाविसी हाथ जोडंति पाय लागंति ठं ठली वायंति सांकल मोडंति ले आउ कान्हड नारसिंह वीर प्रचण्ड।

जिसके नाम से हो ७ दिन तक जप करें।

(६) ॐ नमो भगवतो रुद्राय ॐ चामुण्डे अमुकस्य हृदयं पिवामि चामुण्डिनी स्वाहा।

जिसके नाम से १०८ मन्त्र कर पानी पिवे वह वशी होवें।

(७) ॐ सुगंधवती सुगंधवदना कामिनी कामेश्वराय स्वाहा अमुक स्त्री वशमानय वशमानय स्वाहा।

(८) ॐ तारे तु तारे तुरे मम कृते सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां भंजय स्तंभय मोहय हुं फट् फट् फट् सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां स्तंभय तारे स्वाहा।

(९) ॐ आकाश स्फाटिनी पाताल स्फोटिनी मद्य मांस भक्षणी अमुका हृदय जीभ खिलि खिलि स्वाहा॥

दक्षिण दिशा में जाकर पत्थर लेवे, श्मशान के कोयले से आक के पत्ते पर मन्त्र लिखे फिर जमीन में गाड़ देवे ऊपर पत्थर रखें। गोरोचन के तिलक को मंत्रकर कनिष्ठा अंगुली से तिलक करे देखने पर वशी होवे।

(१०) ॐ नमो ह्रां ह्रीं श्रीं चामुण्ड चण्डालिनी अमुक मम नामेण आलिंगय आलिंगय चूंचय चूंचय संचय भग संचय ॐ क्रौं ह्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वं फट् फट् स्वाहा।

शनिवार से प्रारंभ करे २९ दिन तक १०८ बार मंत्र कर पानी पीकर सो जावे ३० दिन में वशी होय।

(११) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नरसिंह चेटकी ह्रां ह्रीं दृष्टया प्रत्यक्ष अमुकीं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

रात्रि को १०८ नित्य जपें।

(१२) ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी सप्त पाताल भेदिनि सर्वराज मोहिनी अमुकं (सर्वजनं) मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

नित्य १०८ बार जपे सभा में सभी श्रोता मुग्ध रहे।

(१३) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लौं कलिकुण्ड स्वामिन् सिद्धिं श्रियं जगद् वशमानय स्वाहा।

कपूर केसर से १०८ बार २१ दिन तक पाटे पर लिखें। यह मन्त्र चिंतामणी है।

(१४) ॐ नमो भगवतो पार्श्वचन्द्राय गौरी गांधारी सर्ववशंकरि स्वाहा।

१०८ बार मंत्र कर मुख धोकर जाये। देखने से वशी होवे।

(१५) ॐ नमो भगवते पार्श्वचंद्राय गोरी गंधारी सर्व वशंकरी स्वाहाः।

विधि- १०८ बार मन्त्र पढ़कर मुंह पर हाथ फेरे सर्व वशी होवे।

(१५) ऐं क्लीं ह् सौ

(योनी, नाभि, हृदय, स्थाने वामा नां वश्यं ललाट मुख वक्षसि नृणां वश्यं)

इस मन्त्र के न्यास से सब वशी होवे।

॥ पद्ममावति वशीकरण मन्त्र ॥

(१६) ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं ह्सौं देवि पद्मे मे सर्व जगद्वशं कुरु सर्व विघ्नान् नाशय नाशय पुरक्षोभं कुरु कुरु ह्रीं संवौषट्।

विधि- इस मंत्र को लाल कनेर के फूलों से १२००० जाप करें। फिर मधु मिश्रित गुगुल की चने के बराबर १२००० गोली बनाकर होम करने से मंत्र सिद्ध हो जायगा। इस मंत्र के प्रभाव से राजादिक वश में होते हैं।

॥ नमक वशीकरण मन्त्र ॥

(१७) लूण लूणा गरिहि उप्पन्नउं जोगिणिहिउपायउ जाहि गलिनि उरत्ताविकलिजमष्यु देखिन सक्कइ सुवामिय पातालि।

विधि- इस मंत्र को ७ बार मंत्रीत करके साबुत नमक की डली जिसके नाम से खावे, खिलावें (द्रव्य में डालकर भी दे सकते हैं) वह वशी होता है।

॥ भगमालिनी वशीकरण मन्त्र ॥

(१८) ॐ भगमालिनी भगवते ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा।

विधि- वस्त्र, पुष्प, पान आदि को मंत्रीत कर देवे तो वश में होता है।

॥ सभावश्य मन्त्र ॥

(१९) ॐ श्रीं ह्रीं कीर्तिमुख मंदिरे स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को उपदेश देने के समय में प्रथम स्मरण करे तो श्रोतागण का आकर्षण होते है।

****

॥ वश्य मंत्र ॥

(२०) ॐ गगनधर मट्टी सयलिं संसारि आंवट्टी धरि ध्यानु ध्यायउ जुमग्रउ सुपावउ आपणी भक्ति गुरु की शक्ति धरपुर पाटण खोमतु राजा प्रजाखोभंतु डाइणि कुकुरु खोभंतुवादी कुवादी खोभंतु आपणी शक्ति गुरु की शक्ति ऊँ ठः ठः ठः।

॥ मैत्री कारक मन्त्र ॥

(१) ॐ नमो बोहि बुद्धाणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

५ माला रोज २५ दिन करें।

(२) ॐ ऐं ह्रीं (ह्सौं) झ्रीं झ्रीं सुविहिं च पुष्पदन्तं सोयलं सिज्झं सवा सुपुंज च विमलनणंत च छम्मं सन्ति च वंदामि कुंथुं अरं चमल्लिं वन्दे मुणि सुव्वयं (च) स्वाहा।

पंचामृत, घी, खीर, अष्टांग धूप से हवन करने पर मैत्री होवे।

॥ स्तंभन मन्त्राः ॥

॥ अग्नि स्तंभन मन्त्राः ॥

अग्नि स्तंभन हनुमान मंत्र

(१) ॐ श्रीवीर हनुमंत मेघ घर त्रय त्रावय सा नर नागगण देवगण भेदगण जलंततो सावय सानर लहरि हिमाल जसुपाउदिय उतसु कछ मीथार जलं थाह सीतलं जलत श्री हनुवंत केरी आज्ञा वापु वीर।

अग्नि की ओर देखते हुये २१ बार मन्त्र कर राख फेंके।

(२) ॐ सिद्धिर्ज्वालामती मोघामती कालाग्नीरुद्र शीतलं जलत श्री हनुवंत पय मय वज्रलोहमयी तिल्ल नास्ति अग्निः।

१०८ मंत्र कर गोलाकार रेखा से अग्नि को बांधे।

(३) मंत्र- ॐ ह्रीं ठः।

इस मन्त्र से छींटें देवे तो ताप कम होवे।

॥ अग्नि स्तंभन मन्त्र ॥

(४) ॐ पद्मे महापद्मे अग्निं विध्यापय विध्यापय स्वाहा।

(५) ॐ नमः विद्याधर पूजिताय इलि मिलि स्तंभयामि स्वाहा।

मंत्र पढ़कर चोटि के गांठ लगाकर अग्नि प्रवेश करे तो जले नहीं।

(६) ॐ गंग बहंती को धरई कोकवलिं विसुखाइ एणिदिं विंदिहि विंदउ वेसं नरुऊल्हाइ। ॐ शीतले शीतले शीतलेस्ये शीतल कुरु कुरु स्वाहा।

(७) ॐ विद्युज्जिह्वे ज्वालामुखी ज्वालिनी ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल धग धग धूमांधकारिणी देवी पुरक्षोमं कुरु कुरु मनश्चिंतिंतं मत्रार्थं कुरु कुरु स्वाहा।

अग्नि साधक का अहित नहीं करे।

॥ अग्नि प्रज्जवल मन्त्र ॥

ॐ ज्वल ज्वल प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल श्री लंकानाथ की आज्ञा फुरइ।

॥ मेघ स्तंभन मंत्र ॥

(१) ॐ ह्रीं क्ष्रीं सों क्षं क्षं क्षं मेघकुमारकेभ्यो वृष्टिं स्तंभय स्तंभय स्वाहा। श्मशान मे प्यासो जाय, मंत्र जपे। मेघस्तंभन होय।

(२) एक शिला पर कोयले से षट्कोण लिखें बीच में मेघ लिखकर जमीन में उल्टा गाड़ देवें। वर्षा निश्चित रुके मौसम खराब हो तो साफ होने लगे। आवश्यक कार्य विवाहादि उत्सव में विघ्न निवारण हेतु ही प्रयोग करें, गायों को चारा ब्राह्मण भोजन का संकल्प करायें। पश्चात् यंत्र को निकाल कर दूध दही पंचामृत से धोये जलधारा देवे। कई बार मैने देखा है कि विघ्न भारी हो तो शिला के टुकड़े भी हो जाते हैं।

मन्त्र - ॐ ह्लीं बगलामुखी मेघानां स्तंभय स्तंभय ह्लीं स्वाहा।

इस मन्त्र का जप आकाश की ओर देखते हुये करें।

॥ मेघवृष्टि मंत्र ॥

मंत्रः- ॐ नमो स्म्ल्व्र्यूं मेघकुमाराणां ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं मेघ कुमाराणां वृष्टिं कुरु कुरु ह्रीं सं वौषट्।

प्रथम १ लाख बार जप करें। जब वर्षा की कामना हो तो उपवास कर पाटा पर यंत्र लिख कर पूजा व जप करें।

॥ वर्षाज्ञान का मन्त्र ॥

मंत्र- ॐ नमो ब्रह्मदेवश्वराय अरे हीहि महि पुंडति ठः ठः।

विधि- इस मंत्र को १०८ बार जप कर (उबले हुये चावल, घी, शहद) मिश्रित करके तीन पिण्ड स्थापन करें। फिर प्रथम डंभ, द्वितिय मृदु, तृतीये अंगारा कल्पनीया। प्रथमे काक पाते शीघ्र वर्षति, द्वितीय पक्षेण, तृतीये न वर्षति। इस प्रकार कौआ जिस पिण्ड को ग्रहण करें, उसके अनुसार फल जानें।

॥ रक्त स्तंभन मंत्राः ॥

(१) ॐ रक्ते रक्तावते हुं फट् स्वाहा।

कुमारी के काते सूत पर १०८ बार जपे रक्त पुष्प से पूजा करें ७ गांठे लगाकर स्त्री की कमर के बांधे रक्त बंद होवे।

(२) ॐ नमो लोहित पिंगलाय मातंग राजानो स्त्रीणां रक्तं स्तंभय स्तंभय ॐ तद्यथा

हुसु हुसु लघु लघु तिलि तिलि मिलि मिलि स्वाहा।

(३) **ॐ मातंग राजायचिलि चिलि मिलि मितक्ली अमुकस्य रक्तं स्तंभय स्तंभय स्वाहा।**

सफेद रंग के डोरे पर २१ बार मंत्रकर ७ गांठे देवें उसको कमर में बांधे ठीक रहे

(४) **ॐ तद्यथा गर्भधर धारिणी गर्भरक्षिणि आकाशमात्रिके हुं फट् स्वाहा।**

लाल डोरे को मंत्रकर बांधे।

(५) **ॐ रक्ते रक्ते वस्त्रे पुफु रक्ते वाक्ते स्वाहा।**

कुसुम्भ पुष्प (रक्त) से पूजा कर डोरा बांधे।

(६) **ॐ रक्ते रक्तावते हुं फट् स्वाहा।**

विधि- कन्या कत्रीत सूत्र गांठ देकर, लाल कनेर के फूलों से १०८ बार मंत्रीत करके, स्त्री के कमर में बांधने से रक्त प्रवाह का नाश होता है।

(७) **ॐ तद्यथा गर्भधर धारिणी गर्भरक्षिणि आकाशमात्रीके हुं फट् स्वाहा।**

विधि- इस मंत्र से लाल डोरे को २१ बार मंत्रीत करके स्त्री के कमर में बाँधने से रक्त स्त्राव रुक जाता है।

(८) **ॐ नमो लोहित पिंगलायः मातंगराजानो स्त्रीणां रक्तं स्तंभय स्तंभय ॐ तद्यथा हु सुरलघु सुरलघु तिलि तिलि मिलि मिलि स्वाहा।**

विधि- इस मंत्र से लाल डोरे को २१ बार मंत्रीत कर ७ गांठ लगाकर स्त्रियों के वाम पांव के अँगुठे में बांधने से रक्त स्त्राव रुक जाता है।

(९) **ॐ रक्ते रक्ते वस्त्रे पु फु रक्ते वाक्ते स्वाहा।**

विधि- अनेन कसुंभ रक्त सूत्रेण अन्हट्ठ हस्त दवरकं वटित्वा अघा घाड़ा मूलं बंधित्वा बार ७ अभिमंत्र्यते रक्त वाहकं नश्यति।

(१०) **ॐ मातंग राजाय चिलि चिलि मिलि मिलि मितक्ली अमुकस्य रक्तं स्तंभय स्तंभय स्वाहा।**

विधि- शुक्ल (श्वेत) रंग के डोरे को इस मंत्र से २१ बार मंत्रीत करें, फिर उस डोरे को बांधे तो स्त्रियों का रक्त स्त्राव बंध होता है।

॥ शुक्र स्तंभन मन्त्र ॥

मन्त्र – **ॐ जेष्ठ शुक्र वारिणि स्वाहा।**

कन्या के काते सूत के मंत्र से ७ गांठे लगाकर कमर में बांधे वीर्य स्तंभन होवे।

॥ शत्रु स्तंभन मन्त्राः॥

(१) **ॐ ह्रां ह्रीं लां ह्रीं लीं ह्रीं लौं ह्रीं लः हीं अमुकं ठं ठः।**

इस मंत्र से सरसों मंत्र कर शत्रु के घर में डाले उसके हाथ का स्तंभन हो जाता है।

(२) **ॐ नमो भयंकराय परम भय धारिणे मम शत्रु सैन्य पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।**

भोजपत्र पर यंत्र लिखें गले में बांधे मंगलवार को काले कौवे व उल्लू पंख लायें, शत्रु सेना में जाते समय उन्हे साथ रखें तो शत्रु का स्तंभन होवे।

(३) **ॐ दिशा बंध भगवान बंध वाहंतां चक्षुबंधः सर्वमुख बंध क्लीं मुखः ॐ वार्ताली वार्ताली वाराही वाराही वाराहमुखी वाराहमुखी सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां क्रोधं स्तंभय स्तंभय जिह्वां स्तंभय स्तंभय दृष्टिं स्तंभय स्तंभय महि (मतिं) स्तंभय स्तंभय सर्वदुष्टान् प्रदुष्टे ॐ ठः ठः ठः ठः ठः ठः ठः क्लीं गुरु प्रसादे।**

॥ उच्चाटन मंत्र प्रयोगाः॥

(१) **ॐ भगवती रक्ताक्षी रक्तमुखी रक्तखशी रक्त मांस बलि ए ए अमुकं उच्चाटय उच्चाटय ॐ हूं हूं फट् स्वाहा।**

केसर से भोजपत्र पर लिखकर शत्रु के द्वार पर गाड़ने से उच्चाटन होवे।

(२) **ॐ जं जां जिं जूं ठं ठः स्वाहा।**

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में काक की सात अंगुल की हड्डी जिसके घर में डाले उसका उच्चाटन होवे।

(३) **ॐ खं डुं खः अमुकं ठं ठः।**

इस मन्त्र से होम कर राख शत्रु के घर में ड़ालें।

(४) **ॐ ठं ठां ठिं ठीं ठुं ठूं ठें ठैं ठों ठौं ठं ठः अमुकं गृह्ण गृह्ण पिशाच हुं ठं ठः ।**

शाखोटक की कील को १००० बार मन्त्र कर चौराहे पर रखे साथ ही मद्य मांस बलिद्रव्य रक्तपुष्प रखें तो पिशाच शत्रु के लग कर पीड़ा देगा।

(५) **मंत्र- ॐ भद्र यटा मल धरति सु ठः ठः स्वाहा।**

विधि- ५ धतुरा क्कुली, मसाण धूलि इन दोनों को लेकर सूक्ष्म चूर्ण कर इस मंत्र से मंत्रीत कर शत्रु के घर मे डालने से उच्चाटन हो जायेगा। आर्द्रा नक्षत्र में लाल कनेर की कील अंगुल ४ प्रमाण की लेकर इस मंत्र से ७ बार मंत्रीत करके जिसके घर में डाल दी जाय वह वश में हो जाता है।

॥ उच्चाटन हेतु काकचांडाली मंत्र॥

(६) **ॐ नमो भगवइ कालि कालि मरुलि काक चंडाति ठः ठः।**

विधि- इस मंत्र को ७ बार जप करके गोबर से मंडल करे। धूप करें तो घर से भूत प्रेत का उच्चाटन हो जाता है।

शत्रू के घर कील गाड़ें तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

॥ मारण मंत्र प्रयोगाः॥

(१) ॐ मरे धर मुह मुह ठः ठः स्वाहा।

विशाखा नक्षत्र में विषकाष्ठ की लकड़ी १ या ३ अंगुल की सात बार जिसके घर में ड़ालें उसका सर्वनाश होवे।

(२) स्याही के कांटे को कालिका के मन्त्र से मंत्रित जिसके घर में ड़ाले उसका विनाश होवे।

(३) ॐ नमो उज्जैन नगरी सीपरा नदी सिद्धवड़ गंधरप मसान तहां बसे जापरो जापराणै बैवेठा भूतिया मेलिया अहो भूतिया अहो मलिया अमुकाने घर पाखान नाख नाख ॐ महो मलिया आमुकाने धर विष्ठा नाख नाख ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा।

भंगी के श्मशान में से ईटों को लायें एकान्त में उनका चबुतरा चौका बनाये उस पर बैठकर एकान्त में जप करें। एक बरतन में कनेर के फूलों व भैंसा गुगुल से १०८ आहुति देवे। पूर्व दिशा में बैठकर रात्री में करे तो दक्षिण की ओर मुंह करके जप करे ७ दिन में भूतिया मसान प्रकट होवे उसे बलि देवे तो शत्रु के घर उपद्रव होवे। २१ दिन भी करना पड़ सकता है।

(४) ॐ ह्रीं लूीं क्ष्रीं म्रीं श्रीं हे हे हर हर अमुकं महाभूतेन गृह्णाय गृह्णाय लय लय शीघ्रं भक्ष भक्ष खाहि खाहि हुं फटौ।

मसान के कपड़े पर विष व खून से शत्रुनाम सहित लिखे तथा चौराहे पर गाड़ने से शत्रु को पीड़ा होवे।

॥ शत्रुनाश रुद्र मंत्र॥

(५) ॐ नमो भगवते क्रोधरुद्राय हन हन दह दह पच पच हहः सवज्रकेण अमुकस्य गृहं नाशय स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से डोरे को २१ बार मंत्रित करके ५ गांठ लगावे फिर उस डोरे को हाथ में बांधे तो सर्व उपद्रव नाश हो जाते है। स्वयं की रक्षा के लिये **मम गृहे सर्व दोष नाशय स्वाहा** पढ़ें। शत्रु नाश के लिये नाम सहित सरसों से हवन करें।

(६) ॐ दशा देवी केरउ आडउ अणंत देवी केरउ आडउ ॐ विद्धं विद्वेण विजाहरी विजा।

विधि- गो घृतेन हस्ते चोपडयित्वाविद्वगडोपरि हस्तो मंत्र भणित्वा बार २१ भ्राम्यते त्ततो विद्वं उपशाम्यति, यदा एत्ता वतापिन निवर्त्तते तदा गोमय पुत्तलकमधोमुखम व लंब्य श्रुलाभि विंध्यते ततो निवर्त्तते ॥ शत्रुनाश हेतु पुत्तल बनाकर प्रयोग करें।

भूतप्रेत व नजर दोष नाशक मंत्र प्रयोगाः

॥ भूतप्रेत नाशक मंत्राः॥

(१) ॐ नमो भगवते सुग्रीवाय कपिल पिंगल जटाय मुकुट सहस्त्र योजनाय आकर्षणाय सर्व शाकिनिनां विध्वंशनाय सर्वभूत विध्वंशनाय हणि हणि दहि दहि पचि पचि छेदि छेदि दारि दारि मारि मारि भक्षि भक्षि शोषि शोषि ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि स्वगिं इन्दु पाताली वासुगि अहट्ठ कोटि भूतावलि जोहि जोहि मोहि मोहि उच्चाटि उच्चाटि स्तंभि स्तंभि बंधि बंधि हूं फट् स्वाहा।

(२) ॐ आत्मचक्षु षरचक्षु भूतचक्षु शाकिनीचक्षु डाकिनी चक्षु पिसुन चक्षु सर्वचक्षु ह्रीं फट् स्वाहा।

(३) ॐ क्रां क्रीं क्रौं क्षः हः रः फट् स्वाहा

मन्त्र पढ़ते हुये रोगी पर सरसों फेंके भूत बाधा दूर होवें।

इस मन्त्र से डोरा बांधने से भूतादि ज्वर नष्ट होवे।

(४) ॐ मातंगाय प्रेतरूपाय विहंगमाय धून धून ग्रसग्रस आकर्षय आकर्षय हुं फट् सिरि शूल चण्डाधर प्रचण्ड सुग्रीवो आज्ञापयति स्वाहा।

कनेर के फूल, धतूरे के फूल, अश्वगंध अपामार्ग की धूप करने से व झाड़ा देने से प्रेत बाधा दूर होवे।

(५) ॐ ह्रीं सर्वकार्य प्रसाधिके भट्टारिके सर्वान् वयणर तस्य सम सव्याउ रिद्धिउ संपज्जन्तु ह्रां हूं क्रौं नमः सर्वार्थ साधिनी सौभाग्य मुद्रयास्म ॐ नमो भगवती यामये महरौद्र कालजिह्वे चल चल भर भर धर धर क्रां क्रां ब्रीं ब्रीं हुं हुं य मालेनी हर हर ज्वीं हुं फट् स्वाहा।

(६) ॐ ह्रीं श्रीं चंद्रवदनी माहेश्वरी चंडिका भूतप्रेत पिशाच विद्रापय विद्रापय वज्रद्रंडेन महेश्वर त्रिशूलेनादी वीर खड्गेन चूरय चूरय पात्र प्रवेशे प्रवेशे ॐ छां छीं छूं छः फट् स्वाहा।

विधि- प्रथम १०८ बार इस मंत्र का जाप्य करे, फिर डोरा को २१ बार मंत्रीत करके बांध देने से सर्व प्रकार के ज्वर एवं प्रेत का नाश होता है। इस मंत्र से प्रेत को पात्र में बन्द भी कर सकते है

(७) ॐ क्रां क्रीं क्रौं क्षः हः रः फट् स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से सरसों लेकर पढ़ता जावे और रोगी के ऊपर सरसों डालता जावे तो भूतादिक रोगी को छोड़कर निश्चिन ही भाग जाते है।

(८) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं सेयउ घोडउ ब्राह्मणी कउ घोडउल कारे लागइ जकारे जाइ भूत बांधि प्रेत बांधि राक्षस बांधि मेक्षस बांधि डाकिनि बांधि शाकिनी बांधि डाउ बांधि वपालउ बांधि लहुडउ गरुडु वडउ गरुडु आसनि भेदु भेदु सुबांधिकसु बांधि सकसु बांधि सकसु बांधि जइने मेरउ वुतउ करहि परिग्रह स चक्कु भीडी धरि मारि बापु प्रचंड वीर नारस्यंघ वीर की शक्ति धरी मारि बापु पूत प्रचंड सीह।

विधि- इस मंत्र को धूप से मंत्रीत करके जलाने से औरा रोगी पर हाथ फेरने से भूतादि उपशमति। देवी एवं नृसिंह का पूजन करें।

॥ प्रेत नाशक सुग्रीव मन्त्र ॥

(९) ॐ नमो भगवते सुग्रिवाय कपिल पिंगलजटाय मुकुट सहस्त्र योजनाय आकर्षणाय सर्वशाकिनिनां विध्वंशनाय सर्वभूत विध्वंशनाय हणि हणि दहि दहि पचि पचि छेदि छेदि दारि दारि मारि मारि भक्षि भक्षि शोषि शोषि ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि स्वर्गि इंदु पाताली वासुगि अहट्ठ कोडि भूतावलि जोहि जोहि मोहि मोहि उच्चाटि उच्चाटि स्तिंभि स्तिभि वंधि वंधि हूं फट् स्वाहा।

विधि- ७ बार स्मरण करने से आशान प्रभवति। प्रेत बाधा नाश होवे।

॥ नजर दोष निवारक मन्त्राः ॥

(१)

मंत्र- ॐ ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा। (सर्व कर्म झरा मंत्र)

विधि- विशेषतः शाकिनी गृहीतस्य सर्षापान् गृहीत्वा शाकिन्या कर्षयेत्। एकैकं सर्षपं सप्ताभिमंत्रीत कृत्वा जलभृत कटोरक मध्ये क्षिपेत् ये तंरति ते शाकिन्यः समेन शाकिन्यः विषमेण भूत अथ न तदा भूत शाकिनी मध्याद् एकोपि ना अनेन मंत्रेण सप्ताभि मंत्रीत कृत्वा उदुषलं ताडयेत् यथा यथा ताडेयत् तथा तथा आक्रंदंति। एतेन् चीवनं सप्ताभि मत्रितं कृत्वा उद्धी कृत्य स्फोटयत् रुपिण्यो नश्यंति अनेन् मंत्रेण युग्मंगृहीत्वा सप्ताभि मंत्रीता क्रित्वा उद्धीकृत्य स्फोटयेत् रुपिण्यो नश्यंति। अनेन मंत्रेण अजा लिंडि कामे काकी विंध्यात् शाकिन्या गृहोतस्य खट्वाधः शराव सं पुट धारयेत् शाकिन्यां नश्यंति रक्षा वंधयेत्।

(२)

मन्त्र – ॐ नमो आर्यावलोकिते स्वराय पद्मे फुः पद्मवदने फुः पद्मलोचने स्वाहा।

२१ बार मन्त्र कर भस्म लगाने से नजर व दोष दूर होवे।

(३)

॥ नजर दोष का मन्त्र ॥

ॐ आत्म चक्षु पर चक्षु भूत चक्षु शाकिनी चक्षु डाकिनी चक्षु पिसुन चक्षु सर्व चक्षु ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से झाड़ा देने से नजर लगने वाले का दृष्टि दोष दूर होता है।

(४)

ॐ दीट्ठि विसुअ ढीट्ठि विसुथावरु विसु जंगम विसु विसु विसु उपविसु उपविसु गुरु की आज्ञा परमगुरु की आज्ञा स्फुरत्तउ आज्ञा स्फुरत्तर आज्ञा तीव्र आज्ञा तीव्रतर आज्ञा खर आज्ञा खरतर आज्ञा श्रीकाजलनाथ देव की आज्ञा स्फरउ स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से दृष्टि दोष उतारा जाता है।

अथ रक्षा व शान्ति कारक मन्त्राः

॥ रक्षा कारक मन्त्र प्रयोगाः॥

(१) तद्यथा ॐ हन हन दह दह पच पच मथ मथ प्रमथ प्रमथ विध्वंसय विध्वंसय विद्रावय विद्रावय छेदय छेदय अन्य सीमां ज्वरं गच्छ गच्छ शत्रून् गच्छ गच्छ पलावय पलावय हनुमंत लांगूल प्रहारेण भेदय भेदय ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः रक्ष रक्ष स्वाहा।

विष्णु चक्रेण छिन्न छिन्न रुद्रशूलेन भिन्द भिन्द ब्रह्म कमलेन हन हन स्वाहा।

(२) ॐ नमो भगवते अपहयत शासनाय संसारचक्र परिमर्दनाय आत्ममंत्र रक्षणाय परमन्त्र छेदनाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सर्वज्वरं विषम ज्वरं महाज्वरं ब्रह्मग्रहकं नागग्रहकं भूतग्रहकं प्रेतग्रहकं पिशाचग्रहकं सर्वग्रह सर्वदुष्टग्रह सहस्त्रशूल विनाशाय अमृत राई केसर की पीड़ा ज्वर विनाशाय यक्ष राक्षस भूत पिशाचादि भवनादि दोषं नाशय नाशय हिलि हिलि हल हल दह दह पच पच मर्दय मर्दय विध्वंसय विध्वंसय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वग्रह उच्चाटनं ह्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं ख्म्ल्व्र्यूं ॐ हूं फट् स्वाहा।

॥ रक्षा कारक पांचाली मंत्र॥

(३) ॐ ह्रीं पांचाली पांचाली जो इमं विजं कंठे धरिइ सो जाव जीवं अहिणा नड सिझइति स्वाहा। वार २१ गुण सुप्पते।

डोरा बनाकर गले में बांधे। सोते समय मन्त्र का २१ बार स्मरण करें। स्वप्न में वार्ता प्राप्त होवे।

॥ चक्रेश्वरी रक्षा का मन्त्र॥

(४) ॐ ह्रीं अप्रति चक्रेश्वरी नखाग्रह शिखाग्रह रक्षं रक्षं हुं फट् स्वाहा।

विधि- कलवाणी मंत्र।

॥ ध्यान्य रक्षा॥

(५) ॐ नमो भुजंनायाय तद्यथा हर हर ससि ससि मिलि मिलि सर्वेपां प्राणिनां मुण्डं बंध करोमि स्वाहा।

सरसों मन्त्रकर सिर पर डालें।

॥ दिशाबंध का मंत्र ॥

(६) ॐ ह्रीं णमो आइरियाणां भ्म्ल्व्र्यूं पश्चिम द्वारं बंधय बंधय। ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं म्ल्व्र्यूं उत्तर द्वारं बंधय बंधय। ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं व्म्ल्व्र्यूं दक्षिणद्वारं अधोद्वारं बंधय बंधय। ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं र्म्ल्व्र्यूं अग्रद्वारं पूर्वद्वारं बंधय बंधय। ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्म्ल्व्र्यूं नैऋत्य द्वार बंधय बंधय। ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं म्ल्व्र्यूं पवनद्वारं बंबधय बंधय। ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं क्ल्व्र्यूं ईशानद्वारं बंधय बंधय। ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ग्म्ल्व्र्यूं उत्तरद्वारं बंधय बंधय आत्मविद्यां रक्ष रक्ष स्वाहा।

सरसों मन्त्र कर सभी दिशाओं में फेंके।

॥ वज्रसेन मंत्र ॥

(७) ॐ वज्रसेणाय महाविद्याय देव लोकाउ आगयाय मइंघति उं इंद जालु दिशि बंधं विदिशि बंधं आया संबंधं पायालं बंधं सर्व दिशाउ बंधं पंथे दुप्पय बंधं, पंथे बंधं चउप्पयं घोरं आसोविसं वंधं, जावं गंथी न छुटइ ताव ह्रीं स्वाहा।

विधि- वार ७ जपित्वा विपनितं ग्रंथी वध्वा वामदिशि कुर्यात तांचल धुनित्पादौ वर्जयेत्। अपने वस्त्र के बायीं ओर ७ गांठें मन्त्र पढ़कर लगावें मार्ग में रक्षा होवे।

॥ कृत्या नाशक मन्त्राः ॥

(पद्मवती प्रत्यंगिरा, चक्रेश्वरी, अपराजिता, पार्श्वनाथ, कुष्माण्डा, चामुण्डा, मंत्र भी कृत्या नाशक है)

(१) ॐ नमो चामुडा फट्टे फट्टेश्वरी।

विधि- अनैनतै लं, सुटंठी च वार ७ प्रदक्षिणा वर्त ७ वामा वर्त्तचामि मंत्र्यत्तत स्तैलेन टिक्कं करणीयं सुठयां चूर्णि कृत्यान नस्युर्देया।

॥ परविद्या स्तंभन मन्त्र ॥

(२) धुणसि चंचुलीलवं कुली पर विद्या फट् स्वाहा हूँ फट् स्वाहा।

विधि- इस मंत्र का स्मरण करने से पर विद्या का स्तंभन होता है।

॥ परविद्या छेदन मंत्र ॥

(३) ॐ रक्त जट्ट रक्त मुकुटधारिणि परवेध संहारिणी उदलवेधवंती सल्लुहणि विसल्लुचूरी फटु पूर्वहि आचार्य की आज्ञा ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि- इस मंत्र का जप करने से परविद्या का छेदन होता है।

॥ रुद्र पिशाच मन्त्र ॥

ॐ नमो भगवते पिशाच रुद्राय कुरु कुरु कुरु यः भंज भंज हर हर दह दह पच

पच गृहन गृहन् माचिरं कुरु कुरु रुद्रो आज्ञापयाति स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से गुगुल, हिंगु सर्षप (सरसों) सांप की केचुलि इन सब को मिलाकर मंत्र से १०८ बार या २१ बार मंत्रीत करे फिर रोगी के सामने इन चीजों की धूणी देवे तो तत्क्षण शाकिन्यादि दुष्ट व्यंतरादि, रोगी को छोड़कर भाग जाते है और रोगी निरोगी हो जाता है।

॥ कोकिल वीर मन्त्र ॥

काम रूपी विपइ संताडावइ परवइ अछइ कोकिलउ भइखु अजिउ सुकोकिलंउ भइखु पहिरइ पाऊचडइ हांसि चडइ कहां जाइ श्री उजेणी नगरी जाइ उजेणी नगरीछइ गंध वाम सणुता हंछइ सिद्धवटु सिद्धवटु हे द्विवल इछइ चिहाचिहां दाडइ मडउं महाहाथि छइ कपालु कपालियंतु यंत्रि मंत्रु मन्त्रि कामंतु कामइं नामतुं नामइ ऐं क्लीं शिरु धूणय धूणय कटिकंपय कटिकंपय नाभि चालय चालय दोषतणा आठ इ महादेवी तणें वाणे हणि हणि खिलि खिलि मारि मारि भांजि भांति वायु प्रचंडु वीरु कोकिल उभइर वु जः जः ह्रः ह्रः।

विधि- इस मंत्र को सात बार जपने से दोष बाधा नष्ट होती है।

॥ सर्वशान्ति कलिकुण्ड मन्त्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंडे कलिकुंडे अमुकस्य आपात्त रक्षणे अप्रतिहत चक्रे ॐ ह्रीं वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे जयवीरे वढ़माणे वीरे जयंते अपाराजितए हूं फट् स्वाहा ॐ ह्रीं महाविद्ये आर्हति भागवति पारमेश्वरी शांते प्रशांते सर्वक्षुद्रोपशमेनि सर्वभयं सर्वरोगं सर्वक्षुद्रोपद्रवं सर्ववेला ज्वलं प्रणाशय प्राणाशय उपशमय उपशमय सर्व संघस्य अमुकस्य वा स्वाहा ॐ नमो भगवऊ संतिस्स सिष्यउ में भगवइ महाविद्या संत्ति संत्ति पसंत्ति पसंत्ति उवसंत्ति सव्वपावंपसमेउ सव्वसंत्ताणं दुपय चउप्पयाणं संति देश गामा नगर नगर पट्टण खेडेवा रोगियाणं पुरिसाणं इत्थीणं न पुस्याणं अट्ठसयाभि मंतिएणं धूप पुष्प ग्रध मालालंकारेणं संति। कायव्वा निरुवसग्रंहवइ निरुवसग्रंहवइ निरुवसग्रंहवइ।

विधि- ऐते स्त्रिभिरपिवासा जलं च प्रत्येक मष्टोत्तर शतं वारान् अभिमंत्र्याः प्रदा त्वत्फत्सुकं भवति तदा प्रत्येक **बार २१** अभिमंत्र्यः हस्तावाहनं च। १०८ बार जपकर ३ बार जल पिलावें, रोग नाश होवे। गांव में उपद्रव, रोग शांत होते हैं।

॥ सुख पूर्वक ग्रामवास ॥

(१) ॐ नमो भगवते गोमयस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीणस्स ह्रीं गौतम स्वामिने नमः।

इस मन्त्र से ७ या २१ बार मन्त्रकर कंकर दक्षिण दिशा में दूध वाले वृक्ष पर फेंके पीछे ग्राम व नगर में **प्रवेश करे**

वाञ्छीत लाभ होवे।

(२) ॐ नमो भगवते वज्रस्वामिने सर्वार्थ लब्धि सम्पन्नाय वस्तार्थं स्थानं भोजनं लाभ दे ह्रीं समोहितं कुरु कुरु स्वाहा।

(३) ॐ नमो वज्रस्वामिने सर्वार्थ लब्धि सम्पन्नाय स्नानं भोजनं वस्त्रार्थः लाभं देहि देहि स्वाहा।

॥ विघ्ननाश मंत्रा:॥

(१) ॐ ह्रीं श्रीं ब्रह्मशांते श्रीमदम्बिके श्री अछुप्ते श्रीसर्वदेवता मम वांछितान् कुर्वन्तु सर्व विघ्नान् नश्यन्तु सर्वदुष्टान् वारयन्तु ह्रीं अर्हं श्रीं स्वाहा।

(२) ॐ ह्रीं श्रीं ब्रह्मशांते श्रीमदंबिके श्री सिद्धायके श्री अछुप्ते श्री सर्वदेवता मम् वांछितान् कुर्वन्तु सर्व विघ्नान्निशंतु सर्व दुष्टान् वारयंतु ह्रीं अर्ह श्रीं स्वाहा।

विघ्न नाश वर्धमान मंत्र

(३) ॐ अरहऊ नमो भगवऊ महइ महावर्द्धमाण सामिस्सपणय सुरासुर से हर वियलिय कुसुमुच्चिय कमस्स जस्स वर धम्म चक्कं दिणय रविं वं व भासुर छांय ते एण पज्जलं तं गच्छइ पुरुऊ जिणिंदस्स जिणिंदस्स आयसं पायालं सयलं महि मंडलं पयासं तं मिछत मोह तिमिरं हरेइति एहं पिलोयाणं सयलं भिविते लिुक्के चिंतिय सितो करेइ सत्ताणं रक्खं रक्खस डाइणि पिसाय गह जक्ख भूयाणं लहइ विवाए वाए ववहारे भावउ सरं तोउ जुएय रणेरायं गणेय विजयं विसुद्धप्पा।

विधि- इस वर्द्धमान विद्या स्त्रोत का पाठ करने वाले के रोग शोक आपदा शांत होता है।

॥ मातंगी मन्त्र॥

(४) ॐ नमो कृष्णस्य मातंगस्य चिनि अहि अहि अहिणि स्वाहा। (अंगुल्यागृरचते भूतं नाश्यति)

इस मातंग मन्त्र से सभी विघ्नों का नाश होता है

॥ भयनाशक मंत्र॥

ॐ ह्रीं अछुप्ते मम श्रियं कुरु कुरु स्वाहा ह्रीं मम दुष्ट वातादि रोगान् सर्वोपद्रवान वृहतो नु भावात् ठः ठः ठः मक्षिका फुंसिका गुरुपादुके अमृतं भयं ठः ठः ठः स्वाहा।

॥ नवग्रह शांति मन्त्र प्रयोगा:॥

(१) ॐ अरहंत सिद्ध सयोगि केवलि स्वाहा। ॐ आइच्चु सोमु मंगल बुद्ध गुरु सुक्को शनिछरो राहु केतु सव्वे विगहा हरन्तु ममविग्यरोग चयं ॐ ह्रीं अछुत्ते मम श्रियं कुरु कुरु स्वाहा आहिय सराहिया हः म्हः यः यों हु वः ऊहः।

इस मन्त्र से ग्रह शान्ति होवे। ५ बार मंत्र जपकर मिट्टी दुष्ट के सामने डाले तो वह भी शांत हो जाये।

(२) ॐ ह्रीं सर्वेग्रहा सोमसूर्यांगारक बुध वृहस्पति शुक्र शनिश्चर राहु केतु सहिता सानुग्रहा मे भवन्तु। ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा स्वाहा।

(३) ॐ अरहंत सिद्ध सयोगि केवलि स्वाहा। ॐ आइच्चु सोमु मंगल बुद्ध गुरु सुक्को शनिछरो राहु केतु सव्वे विगहा हरंतु ममविग्यरोग चयं ॐ ह्रीं अछुत्ते मम श्रियं कुरु कुरु स्वाहा आहिय सराहिया हः म्हः यः यों हु वः ऊहः।

विधि- इस मंत्र से धूली मिट्टी को ५ या ७ बार मंत्रीत करके, दुष्ट के सामने डालने से दुष्ट उपशम हो जाता है और वश में हो जाता है। मन्त्र से घर में जल के छींटें देने से नवग्रह पीड़ा शान्त होती है।

(४) ॐ ह्रीं सर्वेग्रहाः सोम सूर्यांगारक बुध वृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहित्ताः सानु ग्रहा मे भवंतु ॐ ह्रीं असि आउसा स्वाहा।

विधि- इस मंत्र का स्मरण करने से प्रतिकूल ग्रह भी अनुकूल हो जाते है।

॥ शनि पीड़ा नाशक मन्त्र॥

मंत्र- **ॐ अतिशनैश्चराय।**

विधि- इस मंत्र का जाप करने से शनि की पीड़ा दूर होती है।

॥ कलवाणि मंत्र॥

मंत्र -**ॐ चलमाउ एया चिटि चिटि स्वाहा ।**

विधि- इस मंत्र को जपने से शान्ति होवे।

अथ बंदी मोक्ष व कार्यसिद्धि मंत्रा:

॥ अथ बंदी मोक्ष मन्त्र प्रयोगा:॥

राजकाज बंधन मोक्ष हेतु इस विद्या का प्रयोग किया जाता है।

(१) ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख चक्र गदा प्रहरिणी अमुक बंध मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

(२) ॐ णमो जिणाणं जावयाणं मुत्ताणं मोयगाणं असि आ उ सा यै नमः बंदि मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

(३) ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कलिकुण्ड दण्डस्वामिने मम बंदि मोक्षं कुरु रक्षीं ह्रीं क्लीं स्वाहा।

(४) ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कलिकुण्ड दण्डस्वामिने मम बंदि मोक्षं कुरु कुरु श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा।

संध्या समय नित्य जप करें।

(५) ॐ ह्रीं चक्रेश्वरि चक्रधारिणी शंख गदा हस्त प्रहरणी अमुकस्य बंदि मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

(६) ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं फे नमः ।

सवा लाख जप करें।

(७) ॐ ह्रीं श्रीं झ्रौं झ्रां कोदण्डस्वामिनि मम बंदि मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

सुबह शाम रौद्र भाव से १०८ बार नित्य जप करें।

(८) ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं फे नमः।

विधि- लक्ष जापेन बंधनात्मुच्यते।

(९) ॐ ह्रीं श्रीं झ्रौ झ्रां कोदंड स्वामिनि मम (अमुक) वंदि मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- रोज सवेरे दोनों समय दक्षिण की तरफ मुख करके रौद्र भाव से १०८ बार इस मंत्र को जपे तो बंदि मोक्ष होवे।

॥ सभाजित मंत्र ॥

ॐ तटमर्टय स्वाहा ॐ व्याघ्रवदने वज्रदेवी सप्तपाताल भेदिनी यज्ञक्षस प्रतिक्षोभिणी राजामोहिनी त्रैलोक्य वशंकरणी परसभा जय जय ॐ ह्रः ह्रीं फट् स्वाहा।

॥ सभाजित मंत्र ॥

ॐ तटमर्टय स्वाहा ॐ व्याघ्रवदने व्रजदेवी सप्तपाताल भेदिनी यक्षस प्रतिक्षोभिणी राजामोहिनी त्रैलोक्य वशं करणी परसभा जय जय ॐ ह्रां ह्रीं फट् स्वाहा।

मन्त्र जप कर तिलक करें। पूजा का पुष्प अपने पास रखें।

॥ वादविवाद में विजय ॥

(१) ॐ नमो नमो पत्तेय बुद्धाणं।

(२) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रेश्वरी मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

सोते समय ५ माला नित्य करें।

॥ जुआ जीतने को मंत्र

मंत्र- ॐ प्रांजलि महातेजे स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को गौरोचन से भोजपत्र पर लिखकर मस्तक पर धारण करने से जुँआ में जीत होती है।

॥ फौजदारी दीवानी दावा आदि निवारण मंत्र ॥

मंत्र- ॐ ऋषभाय नमः।

विधि- श्री आदीश्वर भगवान के समक्ष स्तोत्र १०८ बार प्रतिदिन जाप करें। साढ़े बारह हजार जाप करे मूल मंत्र का।

॥ विजय मन्त्र ॥

मंत्र- ॐ काली रौद्री कपाल पिंडिनी मोरा दुरित्त निवारिणी राजा वंधउ शक्तिका बंधउ नीलकंठ कंठेहि बंधउ जिह्वादेवी सरस्वती बंधउ चक्षुर्भ्या पार्वती बांधउ सिद्धिर्मम गुरु प्रसादेन।

विधि- इस मंत्र का सदैव स्मरण करना चाहिए। क्षुद्रोपद्रव का नाश होता है, विशेष पंडितों की सभा में स्मरण करे, चोरों का भय हो तो स्मरण करे, या राजद्वारे स्मरण करे।

॥ सर्वकार्यसिद्धि मंत्रा ॥

(१) ॐ पद्मपादीव ह्रीं ह्रां ह्रः फटु जिह्वा बंधय बंधय सवसवे वसमानय स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से वच मंत्रीत करके मुँह में रखने से सर्व कार्य की सिद्धि होती है।

(२) ॐ अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

विधि- इस मंत्र का स्मरण करने से सर्व कार्य सिद्ध होता है।

(३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं कलिकुण्डनाथाय सौं ह्रीं नमः।

विधि- इस मंत्र का ६ महीने तक एकासन पूर्वक १०८ बार जाप करे तो सौ योजन तक के पदार्थ का ज्ञान होता है। उसके बारे में भूत, भविष्य, वर्तमान का हाल मालूम पड़ता है इस मंत्र का कलिकुंड यंत्र के सामने बैठकर जाइ के पुष्पों से १ लाख बार जाप करे और दशांस होम करें, मंत्र सिद्ध हो जायेगा।

(४) ॐ हुँ हुँ हे हे कूँ चूँ टूँ तूँ पूँ यूँ शूँ ह्रॉं हू (झाँ हूँ) फट्

विधि- इस मंत्र का एक लाख जाप करने से कार्य सिद्ध होता है। इस मंत्र के प्रभाव से राज दरबार में, कचेरी में, वाद विवाद में, उपदेश के समय, पर विद्या का छेदन करने में, वशीकरण में, विद्वेषणादि कर्मो में, धर्म प्रभावना के कार्यो में अति उत्तम कार्य करने वाला है।

॥ मोक्ष का मन्त्र ॥

मंत्र- हूं खे रक्षे खः स्त्रीक्षे हूं फट्।

विधि- लक्ष जाप्यान् मोक्षः।

अथ रोग नाशक मन्त्र प्रयोगाः

॥ रोग नाशक मंत्राः॥

(१) ॐ ह्रां ह्रीं ह्ग्लां जिन चंन्द्राचार्य नाम गृहणेण अष्टोत्तरशत व्याधीः क्षयं यान्तु स्वाहा।

मन्त्र से १०८ मंत्रकर पानी पिलाते रहें।

(२) ॐ चन्द्रमुखि दुष्ट व्यंतर रोगं ह्रीं नाशय नाशय स्वाहा।

चावल मंत्र कर खिलावें।

(३) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः लूह लूह लक्ष्मी स्वाहा।

चना मन्त्र कर खिलाने से कमला रोग दूर होवे।

(४) ॐ वीर नारसिंहाय प्रचण्ड वातग्रह भंजनाय सर्वदोष प्रहरणाय ॐ ह्रीं अम्ल व लूं श्रीं स्फीं त्रोटय त्रोटय हुं फट् स्वाहा।

वात रोग दूर होय।

(५) ॐ सिद्धि ॐ शंकरु महादेव देहि सिद्धि।

१०८ मन्त्र कर तैल लगाने से गण्ड माला दूर होवे।

(६) ॐ नमो अरहऊ भगवऊ मुखरोगान् कंठरोगान् जिह्वा रोगान तालु रोगान् दंत रोगान् ॐ प्रां प्रीं प्रूं प्रौं प्रः सर्व रोगान् निवर्त्तय निवर्त्तय स्वाहा।

मंत्रे हुये पानी में कुल्ला करने से मुख के रोग दूर होवें।

(७) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः महादुष्ट लूता दुष्ट फोडी व्रण ॐ ह्रां ह्रीं सर्वं नाशय नाशय पुलिं त खड्गेन छिन्न भिन्न भिन्न हुं फट् स्वाहा।

राख मन्त्र कर लगाने से फोड़ा फुंसी रोग दूर होवे।

(८) ॐ ह्रीं महाविद्ये आर्हति भगवति परमेश्वरी शांते प्रशांते सर्वक्षुद्रोप शामिनि सर्वभयं सर्वरोगं क्षुद्रोपद्रवं सर्ववेला ज्वरं प्रणाशय प्रणाशय उपशमय उपशमय अमुकस्य स्वाहा।

(९) ॐ नमो भगवते काश्यप पस्ताप वासुकिं सुवर्ण पक्षाय वज्रतुण्डाय महागरुडाय

नमः सर्वलोकान् खांतर्गताय तद्यथा हन हन हनि हनि मन मन मनि मनि सर्वलूतान् ग्रस ग्रस चर चर चिरि चिरि कुरु कुरु घोड़ासान गुह्ण गुह्ण लोह लिंग छिंद छिंद भिंद भिंद गण्डमाल कीटान् भक्षे स्वाहा।

लोह के अस्त्र से झाड़ा देवे। ज्वर एवं फोड़ा-फुंसी, गण्डमाला रोग दूर होवे।

(१०) ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय पद्मावती सहिताय शशांक गोक्षीर धवलाय अष्टकर्म निर्मूलनाय तत्पादपंकज निषेविनि देवी गोत्र देवत्ति जलदेवति क्षेत्रदेवति पाद्रदेवति गुप्त प्रकट सहज कुलिश अंतरिक्ष यत्र स्थाने मठे आरा में नदी कुल संकटे भूम्यां आगच्छ आगच्छ आणि आणि बांधि बांधि भूतप्रेत पिशाच मद्‌गर जोटिंग व्यंतर एकाहिक द्वयाहिक त्राहिक चातुर्थिक मासिक वरस्ति शीत ज्वर श्लेष्म ज्वर सर्वाणि प्रवेशय प्रवेशय गात्रिणी भंज भंज पात्राणि पूरय पूरय आत्ममण्डल मध्ये प्रवेशय प्रवेशय अवतर अवतर स्वाहा।

इस मंत्र से मुद्‌गलादि दोष दूर होते है।

(११) ॐ कालि महाकालि अवतरि अवतरि स्वाहा लुंचि मुंचि स्वाहा।

(१२) ॐ ह्रीं चन्द्रमुखी दुष्ट व्यंतर कृतं रोगोपद्रवं नाशय नाशय ह्रीं स्वाहा।

॥ रोगनाशक चन्द्रमुखि मन्त्र ॥

(१३) ॐ ह्रीं चंद्रमुखि दुष्ट व्यंतर रोगं ह्रीं नाशय नाशय स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से २१ बार अक्षत तन्दूल श्वेत मंत्रीत करे दुष्ट व्यंतर कृत रोग शांत होता है।

॥ सर्वरोग नाशक ऋषभ मंत्र ॥

(१४) ॐ ऐं ह्रीं अंबिके आं क्रां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ह्मक्लीं नमः ॐ ह्रीं ह्रः श्रीं स्वाहा ॐ हूं मम सर्वदुष्टजनं वशी कुरु कुरु स्वाहा। ॐ नमो भगवत्तेरिषभाय हनि हनि ते।

विधि- इस मंत्र को प्रातः १०८ बार स्मरण करने से सुन्यतादि सर्व रोग शांत होत है।

॥ सर्वरोग नाशक मंत्र ॥

(१५) ॐ ऐं ह्रीं अंबे अंबिके आं क्रां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ह्यक्लीं नमः ॐ ह्रीं ह्रः श्रीं स्वाहा ॐ हूं मम सर्वदुष्टजन वशी कुरु कुरु स्वाहा। ॐ नमो भगवत्तेरिषभाय हनि हनि ते।

(१६) ॐ ऋषभाय हनि हनि हना हनि स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को २१ बार या १०८ बार जपने से कषायेन्द्रिय का उपशम होता है, विशेष तो निद्रा, तंद्रा का नाश

****

करने वाला है।

॥ रोग नाशक प्रत्यंगिरा मंत्र॥

(१७) ॐ ह्रीं अर्ह श्री शांतिजिनः शांतिकरः श्री सर्वसंघ शांति विदध्यात् अर्हं स्वाहा ॐ ह्रीं शांते शांतेये स्वाहा ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये।

विधि- वार १०८ दिन ७ यस्य कार्यणादि दोषैः संस्मारणीयः ततोयेन दोषः कृतः स्यात्तस्यैव पतति राजप्रशाद वैरिशमः त्तन्नास्ति यदि तो नस्यात् परं प्रत्यंगिरादि यंत्राग्रतः कार्य- हिंगु भाग १ वाचा भाग २ पिप्पली भाग ३ सूंठि भाग ४ यवानी भाग ५ हरितकी भाग ६ चित्रिक भाग ७ उपलोठ भाग ८ एत च्चूर्ण प्रात रूथा योष्णोदकेन २१ पेयं कास, श्वास, क्षय रोग, मन्दाग्नि दोष प्रशमः कार्मणं चैत दौषः धात् प्रशमति।

इस मन्त्र से ऊपरी बाधा दूर होवे। ८ द्रव्यों को उबाल कर लेने से श्वास, खांसी आदि दूर होवे।

॥ रोग नाशक मंत्र॥

(१८) ॐ अंगे फुमंगे फुअंगे मंगें फु स्वाहा (बार २१ जलमभि मंत्र्यपिवेत् शुलं नाश्यति)

विधि- इस मंत्र से जल २१ बार मन्त्रित करके उस जल को पी जावे तो शूल रोग नाश होता है।

॥ रोगनाश मंत्र॥

(१९) ॐ ह्रीं महाविद्ये आर्हति भगवति परमेश्वरी शांते प्रशांते सर्वक्षुद्रोप शामिनि सर्वभयं सर्वरोगं सर्वक्षुद्रोपद्रवं सर्व वेलाज्वरं प्रणाशाय प्रणाशाय उपशमय उपशमय अमुकस्य स्वाहा।

मन्त्र से झाड़ा देवें तथा जल पिलावें, रोग नाश होवे।

॥ आंधासीसी व शिरपीड़ा नाशक मंत्राः॥

(१) ॐ महादेव नीलग्रीव जटाधर ठः ठः स्वाहा। इस मंत्र से शिर की वेदना दूर होवें।

(२) ॐ क्षं क्षूं शिरोवेदनां नाशय नाशय स्वाहा।

(३) ॐ अधभेदकं सिरती नाशय नाशय स्वाहा।

मन्त्र को केसर से भोजपत्र पर लिखकर कान में बांधने से आंधासीसी दूर होवे।

(४) ॐ पूं पूं हः हः दुं दुः स्वाहा॥

विधि उपरोक्त है।

(५) ॐ सरल विषात् सिरकती नाशय नाशय अर्द्धशिरोती सिरकती स्थाने अर्द्धसिरकती।

(६) ॐ नमो आदित्या भगदीन सूर्य संज्ञय स वृषलोचन श्रीशक्र प्रसादेन आधा सीसी सूर्य नाशय नाशय स्वाहा।

॥ आंधासीसी मंत्र ॥

(७) ॐ सरल विषात् सिरकती नाशय नाशय अर्द्ध शिरोतौं सिरकती स्थाने अर्द्ध सिरकति।

विधि- आदित्य शुक्र वारयोरिमं अर्द्ध वट्टिकायां लिखित्वा कुमारी सूत्रेण वे ष्टियित्वा पक्का अक्षर संयुक्त मर्द्ध श्रुनोदियते अन्यदर्द्ध शिरोर्तिमान् भक्षयति।

रविवार, शुक्रवार को पान लाकर उसके दो टुकड़े करें। एक टुकड़े पर मन्त्र लिखकर कन्या के काते हुये सूत मे लपेट कर सिर पर रखें। दूसरे टुकड़े पर मन्त्र लिखकर भक्षण करें रोग दूर होवे।

॥ नेत्र पीड़ा नाशक मंत्रा: ॥

(१) ॐ नमो भगवते आदित्यरूपाय आगच्छ आगच्छ अमुकस्य अक्षिरोगं अक्षिपीड़ा नाशय स्वाहा।

१४ बार आंख पर जपे पीड़ा दूर होवे।

(२) ॐ नमो भगवते आदित्याय सर सर आगच्छ आगच्छ इमं चक्षुरोगं नाशय नाशय स्वाहा।

मयूर पंख के कन्या के द्वारा काते डोरे से बांधे।

(३) ॐ सिद्धिः चटकि धाउ पटकी फूटइ फूजन वंधइ रकुन वहइ वाट घाट ठः ठः स्वाहा। त्रिम्मादेवी चंडिका लिशिखरु लोही पूकु सुकि जाइ हरो हरः देवी कामाक्षा की आज्ञा फुरै जइ इहिं पिंडिरहइ पीडा करहिं।

विधि- इस मंत्र को अरणी कंडों की राख को १०८ बार मंत्रीत कर आँख पर लगाने से आँख की पीड़ा शांत होती है।

(४) ॐ चन्द्रमीलि सुर्यमिलि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से झाड़ा अथवा पानी मंत्रित कर देता जावे तो दृष्टि दोष दूर होता है

(५) ॐ चन्द्रमीलि सूर्यमीलि स्वाहा।

॥ कर्णरोगोप्रशमन मंत्र ॥

मंत्र- **ॐ क्षः क्षः।**

इस मन्त्र से जल पिलावें तो पीड़ा कम होवे।

॥ डाढ के दर्द के मन्त्र ॥

(१) ॐ इलवियक्ष ॐ सिरलवियक्ष।

इस मन्त्र से लोहे की कील ७ बार मन्त्र कर पूर्वाभिमुख होकर लकड़ी के खंभे में ठोकें।

****

(२) समुंद्र समुंद्र मांहि दीपु दीम माहिँ धनाढयु जी दाढ़ की डउखाउ दाढ़ कीडउ नरवाहित अमुक तणइ पापी लीजउ।

विधि- इस मंत्र से ७ बार या २१ बार (उंजने) मंत्रीत करने से दाढ़ पीड़ा दूर होती है। अमुक के स्थान पर रोगी का नाम लेवें।

(३) ॐ इलवियक्ष ॐ सिलवियक्ष।

विधि- इस मंत्र से लोहे की कील ७ बार मंत्रीत करके पूर्वाभिमुख लकड़ी के खंभे में ठोके, स्वयं पश्चमाभिमुखेन् दाढ़ रोगिणः सकाशात् कीलिका खोटनं च आनाय्यते स्तोकं निक्षिप्य पुनर्वार ७ जपित्वा निक्षिप्यते पुनर्वार ७ सकलानिक्षिप्यते तत्पार्श्वाद्धस्तु १ परिहार्यते। इस प्रकार करने से दाढ़ पीड़ा नष्ट होती है।

॥ दंतपीड़ा नाश मंत्र ॥

मंत्र- निरु मुनि स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से झाड़ा देने से दांत की वेदना शांत होती है।

॥ मुखरोग मंत्र ॥

ॐ नमो अरहऊ भगवऊ मुखरोगान् कंठरोगान् जिह्वा रोगान् तालु रोगान् दंत्त रोगान् ॐ प्रां प्रीं प्रूं प्रः सर्व रोगान् निवर्त्तय निवर्त्तय स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से पानी मंत्रित करके कुल्ला करने से सर्व प्रकार के मुख रोग शांत होते है।

॥ गण्डमाला नाशक मंत्र ॥

(१) ॐ नमो भगवते काश्यपपस्ताय वासुंकि सुवर्णपक्षाय वज्रतुंडाय महागुरुडाय नमः सर्वलोकन खांतर्गताय तद्यथा हन हन हनि हनि मन मन मनि मनि सर्वलूतान ग्रस ग्रस चर चर चिरि चिरि कुरु कुरु घोड़ासान गृन्ह गृन्ह लोह लिंग छिंद भिंद भिंद गंडमाल कीटां भक्षे स्वाहा।

विधि- तीक्ष्ण शस्त्रेण उंजयेत गंडमाला नश्यति। छुरि से झाड़ा लगावें।

(२) ॐ सिद्धि ॐ संकरु महादेव देहि सिद्धि।

विधि- इस मंत्र सै तैल १०८ बार मंत्रीत करके गंडमाल के ऊपर लगाने से गंडमाल अच्छा होता है।

॥ मन्त्र रींगण बाय का ॥

मंत्र- **ॐ चन्द्र परिश्रय परिश्रय स्वाहा।** इस मंत्र से झाडा देवें।

॥ स्तन पीड़ा नाशक मन्त्र ॥

सप्तपातालु सप्त पाताल प्रमाणु छर वालु ॐ चालिरे वालु जउ लगि राम लाखन के वाणु छीनि घातिय हिलउ।

इस मन्त्र से चावल व कण्डे की राख मन्त्र कर देने से स्तन पीड़ा दूर होवे।

॥ कांख बिलाई का मन्त्र ॥

ॐ गुरु जी मेरुगिरि पर्वत जहां बसै हणमंत वीर कांख बिलाई अंग थण मुरड तीनों भस्मा गुरु की हांक फुरो मन्त्र।

॥ विलाई पीड़ा का मन्त्र ॥

मंत्र- ॐ इति तिटि स्वाहा।

विधि- १०८ बार भणित्वा त्रिकालं हस्त वाहनं कार्य कारव विलाइ पीडा नाशयति।

॥ पेट पीड़ा नाशक मन्त्राः ॥

॥ पेट दर्द व ज्वर का मन्त्र ॥

(१) **ॐ ह्रीं वातापिर्भक्षितोयेन पीतोयेन महोदधिः समेपीतं च भुक्तं च अगस्तिर्जरयिष्यति ह्रीं ॐ कारे प्रथमं रूपं निराकारे प्रसूतं शिवशक्ति समं रूपं विन्न कालभैरव कालउ गोरउ क्षेत्रपालु जक्ख वइज नाथु कलि सुग्रीव करी आज्ञा फुरइ जाहो महाज्वर महाज्वर जाल जलंती देवी पद्मावण वेगिव हंति देवि सहर मारि पइट्ठी देवी इक्कुविंसु इक्कवीस विस वावीस मं वाघ विसुत हमहु वद्धी सिद्धि गंठिलं कह हुं तउ नीसरइ गडयडं तु गाजं तुटं जाहो महाज्वर महाज्वर।**

विधि- नागवल्ली पत्रंपरि जप्य क्षरि तस्यदेय कर्णे वा दुष्ट प्रत्ययः। पान के पत्ते पर जप कर उसे कान के स्पर्श करायें।

(२) **पार्श्वोपर्वउ त्रिशुलधारी श्रुल भंजइ श्रुल (शूल) फोडइ तासुलय जय।**

विधि- इस मंत्र से पेट पीड़ा का नाश होता है।

(३) **ॐ इटिमिटि भस्सं करि स्वाहा।**

विधि- इस मंत्र से पानी १०८ बार मंत्रीत करके पिलाने से पेट का दर्द शांत होता है।

॥ धरण का मन्त्र ॥

(४) **ॐ नमो काली वज्रांकुशा की आणै जो अमुका की खिसै कब ही देवी कालि आणं।**

२१-१०८ बार मंत्रे धरण ठिकाने आवे।

॥ गोला का दर्द ॥

(५) **ॐ नमो इन्द्रपूत इन्द्राणी हणई राधणी हणइ वायसूल हणइ हर्षा हणई फीहा गोला अंतगलि वायगोला हणई नहीं तर इन्द्र महाराजा नी आज्ञा।**

साढे तीन आंटा की अंगुठी मन्त्र कर पहनावें। चावल से लाल रंग के सवागज कपड़े पर यन्त्र लिखना। गोला ठीक होवे।

॥ प्रदरनाशक मंत्र ॥

ॐ चण्डिनि चले चले चित्ते चपले चित्ते रेतः स्तंभय स्तंभय ठः ठः स्वाहा।

३ हजार बार जपे धूप दीप करे। ७-२१ बार शक्कर मन्त्र कर स्त्री की योनि में रखे तो प्रदर रोग दूर होवे।

॥ मस्सा नाशक मन्त्र ॥

(१) ॐ उमती उमती चल चल स्वाहा।

११००० बार जप करें। २१-२१ बार पढ़कर लाल डोरे के ३ गांठें देवे। इस डोरे को दाहिने पैर के अंगूठे में बांधें तो खूनी बवासीर की पीड़ा दूर होवे।

(२) ॐ ऋषभाय किरु किरु स्वाहा।

॥ अण्डकोष वृद्धि ॥

ॐ नमो नलाई ज्यां बैठ्या हनुमंत आके पके न फूटे चले वाल जति रक्षा करे गुरु रखवाला शब्द सांचा पिण्ड काचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

नीम की डाली से २१ बार झाड़ने से कांख बिलाई व अण्डकोष वृद्धि ठीक होवे।

॥ मृगी दूर करने के मंत्र ॥

(१) ॐ नाम नारसिंघ तू घूंघरियालो सबह वीरह खरउ पियारउ ॐ तली धरती ऊपर आकाश मरहि मृगी जइ लहइ प्रकाश।

जिस समय मृगी आवे मन्त्र माथे पर स्याही लिखें। औषधि मन्त्र कर खिलावें।

(२) ॐ नमो आदेश गुरु कूं तेरह सरसों चौदह राई घट की धूलि मसान की छाई पढकर मारुं मंगलवारै तो कदई ना आवह रोग द्वारे फुरई मन्त्र ईश्वरो वाचा।

मंगलवार को १३ महिला से हाथ में ७ दाना सरसों ७ दाना राई १ चुटकी चौराहे की धूल १ चुटकी मसान की राख इकट्ठा करें। रविवार को मंत्र कर रोगी के गले में बांधे।

(३) ॐ नमो ऊंचा पर्वत भेष विसाल सुवरणमृगा चरइ तसु आस पास श्रीरामचन्द्र धनुष वाण चढाया आजि रे मृगा तुझको रामचन्द्र मारने आया गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

वर्षाकाल में जब इन्द्रधनुष दिखे कुमारी के हाथ से कते डोरे कीनौ लड़ बनाकर ७ गांठें मन्त्र कर देवें उस डोरे को ताबीज में भरकर रविवार को बांधे।

॥ दाद ठीक करने का मन्त्र ॥

ॐ गुरुभ्यो नमः देव देवपुरी दिशा मेरुनाथ दलक्षना भरे विशाह तो राजा वैरधिन आज्ञा राजा वासुकी के आन हाथ वेगे चलाव।

२१ बार मन्त्र कर पानी पिलाने से दाद ठीक होवे।

॥ घाव भरने का मन्त्र ॥

सीता देलागउ घाउ फूकिउ भलउ होइ जाउ।

तैल ७ या २१ बार मन्त्र कर घाव पर लगाने से ठीक होवे।

॥ घाव ठीक करने का मन्त्र ॥

ॐ सार सार बिजै सार बांधू सात बार फूटे अन्न उपजे धाव सीर रासे श्री गोरखनाथ।

॥ कामला (पीलिया) मंत्र ॥

(१) **ॐ कमले कमले अमुकस्य कामलं नाशय नाशय स्वाहा।**

इस मन्त्र से चने मंत्र कर खिलायें।

(२) **ॐ कामली सामली विवहिन कामली चड़र सामली पडइ विहुसुइ सारतणी।**

विधि उपरोक्त।

॥ कामल रोग मंत्र ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्र ह्रः लूह लूह लक्ष्मी स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से चना को मंत्रीत करके खिलाने से कामल रोग नाश होता है।

॥ हैजा निवारण हेतु मंत्र ॥

ॐ नमो भगवते नमो अरहंताणं नमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं ह्रं असि आ उ सा ज्रौं ज्रौं ज्रौं ज्रौं स्वाहा।

॥ वातनाशक मंत्र ॥

(१) **उद्गीध गधगंती प्रज्वलंती हणइ झाल गुरूपदेशी नामार्ज्जनपार्या।**

विधि- ध्यायती सिद्धिः स्तंभयति घात वात अग्नि दग्वलावणा दौपिंछ्रादिना उँजनं कलपानीयं सर्वमुप शमयति दृष्ट प्रत्ययः।

(२) **ॐ वीर नारसिंहाय प्रचंड वातग्रह भंजनाय सर्वदोष प्रहरणाय ॐ ह्रीं अम्ल व लूं श्रीं स्फीं त्रौटय त्रौटय हुं फट् स्वाहा।**

विधि- इस मंत्र से दुष्ट वात वायु का नाश होता है।

॥ वातनाश हेतु (मणिभद्र) मंत्र ॥

(३) **ॐ नमो भगवतो मणिभद्राय कपिंग लोग लोचनाय वाताचल प्रेतांचल डाकिनी अचलं शाकिनी अचलं वंध्या चलं सर्वाचलं ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा।**

(४) (हनुमान मंत्र)- **ॐ पवणु पवणु पुत्र वायु वायुपुत्र हणमंतु हणमंतु भणइ निगवाय अंगज्ज भणइ।**

(५) (नरसिंह मंत्र)- **ॐ नील नील क्षीर वृक्षकपिल पिंगल नारसिंह वायुस्स वेदनां नाशय नाशय फट् ह्रीं स्वाहा।**

(६) **ॐ रक्ते विरक्ते रक्तवाते हुं फट् स्वाहा।**

॥ फोड़ा फुंसी मंत्र ॥

ॐ ह्रूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः महादुष्ट लूता दूष्ट फोडी व्रण ॐ ह्रां ह्रीं सर्व नाशय नाशय पुलिंत खड्गेन् छिंन भिंन्न भिंन्न हुं फट् स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से तैल २१ या १०८ बार मंत्रित करके लगाने से और राख मंत्रीत करके लगाने से सर्व प्रकार के गड गुमड फुंसी आदि शांत होते हैं।

॥ व्रणनाश मंत्र ॥

लोहु खाहु लोहु पीयउ लोह ही वरु दितु चंवसुर राजा अनुनाही कोइ राजा।

विधि- इस मंत्र से फोड़े को ७ बार मंत्रीत करने से फोड़ा (घाव) अच्छा होता है।

॥ विशुचिका मंत्र ॥

मंत्र- ॐ विमिचि भस्मकरी स्वाहा ।

विधि- इस मंत्र से खुजली दूर होती है।

॥ ज्वर नाश मंत्र प्रयोगा: ॥

(१) **ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लीं सर्वज्वरो नाशय नाशय सर्वप्रेत नाशिनी ॐ ह्रीं ठः भस्वं करि फट् स्वाहा।**

विधि- इस महामंत्र को जपकर से अथवा २१ बार पानी मंत्रीत कर पिलाने से पेट दर्द, अजीर्ण, नजर दोषादि नष्ट होते हैं।

(२) **ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय हुं फट् ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः।**

(३) **ॐ वज्रदण्डो महादण्ड वज्रकमल लोचन वज्रहस्त निपातेन भूमीगच्छ महाज्वरः**

एकाहिक द्वयाहिक त्राहिक चातुर्थिक नश्यन्तु त्रिभिः।

पान के पत्ते पर किसी तृण से चूने के पानी से लिखें एवं यन्त्र बांध देवें।

(४) **ॐ महादंडेन मारय मारय मारय मारय स्फोटय स्फोटय आवेशय आवेशय शीध्रं भंजय भंजय चूरि चूरि स्फेटि स्फेटि इन्द्र ज्वरं एकाहिकं द्वयाहिकं त्राहिकं चातुर्दिकं वेला ज्वरं समज्वरं दुष्ट ज्वरं विनाशय विनाशय सर्वदुष्टान नाशय नाशय ॐ ७ र ७ हौं स्वाहा स्वाहा यः यः यः।**

विधि- इस मंत्र को अष्टमी अथवा चतुर्दशि को उपवास करके १०८ बार जपने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। **और** यह मंत्र सर्व कार्य के लिए काम देता है।

(५) **ॐ नमो भगवते ईश्वराय गौरी विनायकषए मुष संहिताय कपाल मालाधराय चन्द्रशोभिताय तृतीय ज्वर वर प्रदाय गमय गमय स्फोटय स्फोटय त्रोटय त्रोटय परमेश्वरीस्य आज्ञायाम् रहिरे तृतीयज्वर जइ पीड़ा करई।**

शिव का ध्यान करके गुगल धूप देवे १०८ बार मंत्र पढ़ें। रोगी शिर पर हाथ रखें।

॥ एकान्तर ज्वर विद्या ॥

(६) **ॐ ए हु सुउग्रइ सुरोए जिब्मंति तिमिर संघायां अणलिए वयणा सुद्धाए गंतरमापुणो एहि हुं फट् स्वाहा।**

विधि- इस मंत्र से एकान्तर ज्वर वाले को झाड़ा देने से ज्वर दूर हो जाता है।

॥ ज्वर नाश मन्त्र ॥

(७) **इंदते प्रजवलितं वज्रं सर्वज्वर विनाशनं अनेन अमुकस्य ज्वरं वंज्रेण चूर्णयामि यमि अद्यापिन कुर्वसो।**

विधि- इस मंत्र से जल को २१ बार मंत्रीत करके पिलाने से ज्वर का नाश होता है।

॥ ज्वर नाशक चक्रेश्वरी मंत्र ॥

(८) **ॐ नमो अप्रति चक्रे महावले महावींये अप्रतिहत्त शासने ज्वालामालोद्भान्त चक्रेश्वरे एह्येहि चक्रेश्वरी भगवति कुल कुल प्रविश प्रविश ह्लीं आविश आविश ह्लीं हन हन महाभूत ज्वारार्ति नाशिनी एकाहिक द्वाहिक त्राहिक चातुर्थिक ब्रह्मराक्षस ताल अपस्मार उन्माद ग्रहान् अपहर अपहर ह्लीं शिरोमुंच शिरोमुंच ललाटं मुंच मुंच भूजं भूजं मुंच मुंच उदर मुंच मुंच नाभिमुंच मुंच कटि मुंच मुंच जंघां मुंच मुंच भूमिं गच्छ गच्छ हूं फट् स्वाहा।**

विधि- अनेन ज्वरिणि हस्तं भ्रांमयित्वा ज्वर प्रमाणित्रि गुण कुमारीसूत्र दवरक अमुं बार २१ जपन वेला ज्वरे **ग्रंथि** सात एकांत रादौ रादौ दत्वा स्त्रीणां वामे वाहौ पुरुषस्य दक्षिणे वंधयेत् प्रथमं दवन कस्य कुंकुम धूप पूजा क्रियते।

****

(९) ॐ सीय ज्वर उष्ण ज्वर वेल ज्वरवाय ज्वरपमूह रोगे वं उवसमेउ संतित्तिथयरो कुणउ आरोग्गं स्वाहा। (वार २१ स्मरणीया)। ज्वरान् सर्व भूतान् सर्व लूतान् सर्व वात्तान् सर्वोपद्रवान् समस्त वै डाकिन्यो हन हन त्राशय त्राशय क्षोभय क्षोभय विज्ञापय विज्ञापय श्री पार्श्वनाथ आज्ञापयति।

विधि- अनेन बार ७ गुण्या ग्रन्थि दीयन्ते अयं मंत्र खटिकाया प्रथमं नव सरावे लेख्य: द्वितीय शरावे चान विछिन्न खटिकया एवं विघं ठ कारत्रय लिखित्वालं शरावं अधोमुखं उपरि निवेश्य कुमारी सूत्रेण द्वयमपि वेष्टियित्वा सू विधानेन मंचकाघो धरणीयं धूपादिना पूजनीयं नैवेद्यं च दातव्यं सर्वरोग निवृति:।

(१०) ॐ नमो अरिहंते (उत्पति) स्वाहा। बाहुबलि चत्तारि सरणं पवज्जामी एक रूप मेल्हि उजेणि महि कालि गगन खाली भूत पंचास वांधि चेडउ वांधि चेटकु वांधि एकंतरु बांधि वेंतरउ बांधि त्रेयतरउ बांधि चालंतउ दोषु चरडकइ काटि।

विधि- इस मंत्र से कन्या कत्रित सुत्र में ३ गाँठ लगाकर उन तीनों गांठ के मध्य में (कोलिया पुट) डाले फिर उस डोरे को हाथ में बाँधे तो एकांतरादि ज्वर का नाश होता है। प्रत्यक्ष बात है।

(११) ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथय हुं फट् ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौ ह्र:।

विधि- इस मंत्र को पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के सामने १०८ बार जपने से वेला ज्वर का नाश होता है।

(१२) वज्रदंडो महादंड: वज्र कामल लोचन: वज्रहस्त निपातेन भूमौगछ महाज्वर: एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक नश्यंतु त्रिभि:।

मन्त्र का झाड़ा देवें या जल पिलावें। ज्वर शान्त होवे।

(१३) ॐ नमो भगवते ईश्वराय गौरी विनाय कषए मुष सहिताए कपाल मालाधराय चंद्र शोभिताय तृतीय ज्वर वर प्रदाय गमय गमय स्फोटय स्फोटय त्रोटय त्रोटय परमेश्वरीस्य आज्ञायाम रहिरे तृतीय ज्वर जइ पीडा करइ।

विधि- इस मंत्र से गुग्गुल को १०८ बार मंत्रीत करके, फिर रोगी के सिर पर महेश्वर ज्वर है ऐसा विचार करता हुआ रोगी के सामने उस गुगुल को जलाने से तथा पानी कलवानी करके पिलावे तो तृतीय ज्वर जाता है।

(१४) ॐ नमो भगवत: क्षेत्रपालं त्रिशूलं कपालं जटा मुकुटवद्धं शिरो डमरूक शोभितं उग्रनादं जियं गोगिणी जय जया बहुला संद विकट नै मुंखं जयंतु कुंडल विशालं।

विधि- इससे दर्भ हाथ में लेकर रोगी को झाड़ा दे तो ज्वर का नाश होता है।

॥ बाला नहरवा का मन्त्र ॥

ॐ नमो मरहर देश क सारी गांव महामा सिधुर चांद से बालै कियो विस्तार बालो उपनो कपाल भांय या हूंतियो गीहु ओ तोड़ कीजै नै उबाला किया पाचे फुटे पीड़ा करे तो विप्रनाथ जोगी री आज्ञा फुरे।

कुमारी कन्या के काते हुये सूत को मन्त्र कर ७ गांठे देवे और जहां पीड़ा हो उस पैर के बांध देवे। बाला ठीक होगा।

विष नाशक एवं विविध मन्त्र प्रयोगाः

॥ विष नाशक मंत्राः॥

(१) ॐ ह्रीं ला ह्वां प लक्ष्मी हंसः स्वाहा।

विधिः- इस मंत्र का दस हजार जाप जाइ के फूलों से करने से और दशांश होम करने से मंत्र सिद्ध हो जायेगा। मंत्र के प्रभाव से स्थावर या जंगम विष की शक्ति का नाश होता है।

जहर नाशक आदित्य मन्त्र

(२) आदित्यरथ वेगेन वासुदेव बलेन च गुरुड पक्षिनिपात्रेन भूम्यां गछ गछ महाबलः ॐ उनीलउ कविलउ भमरू पंखालउ रत्तउ विंछिउ अनंत्तरि कालउ एउ मंत्रु जो मणि अवधारइ सो विंछिउ डंक उत्तारइ।

विधि- इस मंत्र रुपमणि को जो जो धारण करता है। याने स्मरण करता है वह बिच्छू के डंक के जहर को उतार देता है। इस मन्त्र से झाड़ा देवें व जल पिलावें।

(३) ॐ ज्रं ज्रां श्रीं हा हंसः वं हं सः क्षं हंः सः हा हं सः स्थावर जंगम विष नाशिनी निर्जरण हंस निर्वाण हंस अहं हंस जुं।

विधि- जल अभिमंत्रयपाय येत् यदि जीर्यते तदा जीवति अन्यथा मृत्युः।

(४) ॐ क्रों प्रो नृ ठः।

विधि- इस मंत्र से बिच्छु और सांप का जहर बंध जाता है। वृश्चिक सर्प विषयेकंडक बंधः।

॥ बिच्छु के जहर का मन्त्र॥

(५) ॐ चंडे फुः।

विधि- इस मंत्र को २१ बार पढ़कर फूक देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

॥ बिच्छु के जहर का मन्त्र॥

(६) ॐ जः जः कविसी गाइ तणइच्छाणि तिणिउप्पन्नी विंछिणि पंचता हांलगिउ अठारह गोत्त विंछिणि भणइनिसुणिहो विंछिय विसुपायाल हं हुं तउ आवइ जिम चूडंतु तिम पडंतु छइ पायालि अभिय नव नव कुंड सो अभिउमइ मंत्रिहि आणिउं डंकह दीधउं तइं विसु जाणिउ ॐ जः जः।

विधि- इस मंत्र को पढ़कर झाडा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

॥ सर्पभयनाश, विष नाशक मंत्रा:॥

(१) ॐ सर्पाय सर्प भद्रंते दूर गच्छ महाविषः।
जन्मेजयस्य यज्ञीते (यज्ञाते) आस्तीक वचनं स्मर ॥१॥
आस्तीक वचनं श्रुत्वा यस्सर्प्योन निवत्तते ।
शतधाभिद्यते मून्र्द्धिं शीर्ष वृक्ष फलं यथा ॥२॥

जब सर्प सामने आ रहा हो तो मन्त्र कर उसके सामने मिट्टी डालें फिर भी अगर डसने की कोशिश करे तो वह मृत हो जायेगा।

(२) ॐ कुरुकुल्ले मातंग सवराय शंखं वादय वादय ह्रीं फट् स्वाहा।

२१ बार मिट्टी मंत्र कर घर में डाल देवे तो सर्प जगह छोड़ देवे।

(३) ॐ गरुड़ाय विलि विलि गरुडो ज्ञापयति तस्य विज्जुवचने न हिलि हिलि हर हर हिरि हिरि हुर हुर निरक्खे व समुष्द्ध यारे।

(४) ॐ हंसः शिव हंसः हं हं हं सः पारिरे हंसः अक्षि जांगुली नामेण मंतु असुणं तहं पटि जइ सुणइ तो कीडउ मरइ अहन सुणइ तो सत्त कसाइ निधि सो होइ ॐ जांगुलिके स्वाहाः।

(५) ॐ ह्रीं गरुड़ ह्रीं हंस सर्व सर्प जातीनां मुख बंधं कुरु कुरु स्वाहा।

(६) ॐ ज्रं ज्रां श्रीं हा हंसः वं हं सः क्षं हंसः स्थावर जंगम विष नाशिनि निर्जरण हंस निर्वाण हंस अहं हंस जुं।

पानी मंत्र कर पिलावे विष दूर होवे।

(७) ॐ हंसः नील हंसः महाहंसः ॐ पक्षि महापक्षि सर्प्यस्य मुखं बंध गति बंधं ॐ वं सं क्षं ठः।

इस मन्त्र से सर्प विष दूर होवे।

(८) ॐ क्रों प्रों न्टं ठः।

इस मन्त्र से सांप व बिच्छु का जहर बंध जाता है।

(९) ॐ गरुड़ जीमुत वाहन सर्प भयं निवर्त्तय निवर्त्तय आस्तिक की आज्ञा पर्यन्त पदं।

इस मन्त्र से ताली बजायें तो सर्प चला जाता है।

(१०) ॐ इलवित्ते तिलवित्ते डुंवे डुवालिए दुस्से दुस्सालिए जक्के जक्करणे मम्मे मम्मरणे संजक्करणे अहो अनद्ये अखायंतीए अपायंतीए श्वेतं श्वेते तुण्डे अनानुं रक्ते ठः ठः

ॐ इल्ला विल्ला चक्का वक्का कोरडा कोरडपति घोरडा घोरडत्ति मोरड़ा मोरडति अट्टे अट्टरुहे अट्टटटोडुरूहे सप्पे सप्परुहे सप्प ट्टोंडुरुहे नागे नागरुहे नागटटोडुरुहे अछे अछले विषत्तंडि विषत्तंडि त्रिंडि त्रिंडि स्फुट स्फुट स्फोटय स्फोटय इदां विषं विषं गच्छतु दातारं गच्छतु भोक्तारं गच्छतु भूम्यां गच्छतु स्वाहा।

(११) ॐ रौद्रं महारौद्रं वृश्चकं अवतारय अवतारय स्वाहा।

१०८ बार हाथ फेरे वृश्चक का विष उतरे।

(१२) अट्ठारह जाति बिछियह अरुणार उदे बुल्लावइ महादेवउ उत्तारइ खंभाक देवकरी आज्ञा फुरतु देव उतारउ।

(१३) अट्ठगंट्ठि नव फोडि ३ तालि बीछतु उपरि मोरु उडिरे जावन गरुड भक्खइ।

विधि उपरोक्त।

॥ सर्पभयनाश मन्त्र॥

(१४) ॐ हँसः शिव हँसः हं हं हं सः पारिरेहंसः अ (क्षि) च्छि जांगुली नामेण मंतु असुणं तहं पटि जइ सुणइ तो किडउ मरइ अहन सुणइ तो सत्त वासाइं निघिसो होइ ॐ जांगुलिके स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से बालू २१ बार मंत्रित करके सांप की बांबी अथवा सांप के बिल पर ड़ाल देवे तो सांप बिल छोड़ कर भाग जायेगा।

॥ सर्प नहीं काटने का मन्त्र॥

(१५) ॐ ह्रीं गरुड ह्रीं हंस सर्व सर्प जातीनां मुख वंधं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि- इस मंत्र को ७ बार स्मरण करने से १ वर्ष तक साँप नहीं काट सकता है।

॥ सर्पबंध मन्त्र॥

(१६) ॐ हंसः नील हंसः महा हंसः ॐ पक्षि महापक्षि सर्प्पस्य मुखं वंध गति वंधं ॐ वं सं क्षं ठः।

विधि- इस मंत्र से सर्प का मुख बंधन होता है।

॥ आस्तीक सर्प मंत्र॥

(१७) अपसर्प सर्प भ्रदंते दूरं गछ महाविषु जनमेजय य ज्ञाते आस्तिक्य वचनं श्रृणु। आस्तिक्य वचनं श्रुत्वा यः सर्पेनि निवर्त्तंते। तस्यैव भिद्यते मुर्द्धा सं सृ वृक्ष फलं यथा।

॥ आस्तीक सर्प मंत्र॥

(१८) ॐ गरुड़ जीमुत वाहन सर्प भयं निवर्त्तय निवर्त्तय आस्तिक की आज्ञा पर्यंत पदं।

विधि- इस मंत्र को पढ़ते हुये हाथ से ताली बजाते जायें तो सांप चला जाता है, किन्तु मंत्र तीन बार पढ़ना चाहिये।

॥ सर्प मंत्र ॥

(१९) ॐ हिमवंतस्योत्तरे पार्श्वे पर्वते गंधमादने तस्य पर्वतस्य प्राग्दिग्विभागे कुमारी शुभ पुण्य लक्षणाए णेव चर्मवसना घीणसैः कृतके ऊरन्नुपुरा सर्पमंडित मेखला आसी विसचोंभलि का दृष्टि विषकर्णा व तंसिका खादंती विषपुष्पाणि पिवंतो मारुतां लतां समांल वेति लावेति एह्येहि वत्से श्रुणोहि मे जांगुली नाम विद्याहं उत्तमा विषनाशिनी (यत्किंचि मम नाम नातत्सर्व नश्यते विषं)।

॥ सर्प मंत्र ॥

(२०) ॐ इलवित्ते तिलवित्ते डुंवे डुवालिए दुस्से दुस्सालिए जक्के जक्करणे मम्मे मम्मरणे संजक्करणे अघे अनघे अखायंतीए अपायंतीए श्वेतं श्वेते तुंडे अनानुं रक्ते ठः ठः ॐ इल्ला विल्ला चक्का वक्का कोरडा कोरड़रत्ति घोरडा घोरड़त्ति मोरडा मोरड़ति अट्टे अट्टरुहे अट्टट्टोंडु रुहे सप्पे सप्प रुहे सप्प ट्टोंडु रुहे नागे नागरुहे नाग ट्टोडु रुहे अछे अछले विषत्तंडि विषत्तंडि त्रिंडि त्रिंडि स्फुट स्फुट स्फोटय स्फोटय इदांविषम विषं गछतु दातारं गछतु भोक्तारं गछतु भूम्यां गछतु स्वाहा।

विधि- इस मंत्र विद्या को जो पढ़ता है, सुनता है, उसको सात वर्ष तक सांप दृष्टि में नहीं दिखेगा याने उसको सात **वर्ष** तक सर्प के दर्शन नहीं होंगे और काटेगा भी नहीं और काटेगा भी तो शरीर में जहर नहीं चढ़ेगा।

॥ कुत्ते के काटने का मन्त्र ॥

(१) ॐ धु लः दे उ लः धुल पुरः तिहाने में दायण देव कुकर विस कुनर ईमाण माणस के ही मातरीख मन्त्री बंधीजै सगलाई श्वान रो विषलत्तरई सही।

३ रविवार तक पागल कुत्ते के काटे हुये आदमी को २१-२१ बार झाड़ा लगावें।

(२) सोवन कंचोमलउ राजादुधु पियइ घाउ न अउधाइ भस्मांत होइ जाइ।

कुत्ते के काटने की जगह भस्म मन्त्र कर लगावें ठीक होवे।

॥ टीड्डी नाश हेतु मंत्र ॥

ॐ नमो आवी टीडी हु अ ऊ उकाम छाडयउ मन्दिर मेरु कवित्र हाकाइ हनुमंत हूकई भीम छांडिरे टीड्डी हमारी सीम।

१०८ बार सरसों अभिमंत्रित करके खेत में फेंके टीड्डी जाये।

॥ चींटी नाश हेतु सुग्रीव मंत्र ॥

ॐ नमो सुग्रीव हनुमंताय सर्व कीटकाय मक्षिकाय पिपीलिका बिले प्रवेश प्रवेश स्वाहा।

रविवार को सूर्य राशि बदले उस दिन १०८ बार जपे। ग्रहण में सही सिद्धि होवे। राख मंत्रकर डालें चींटी बिल में जाये।

॥ कीड़ी नाशक मन्त्र ॥

मंत्र- **ॐ हिमवंत स्योत्तरे पार्श्वे कठकटी नाम राक्षसी तस्यानूपुर शब्देन मकुणा**

नश्यतु ठः ठः स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से कीड़ा-कीड़ी नाश होते है।

॥ चूहा नाशक मन्त्राः॥

(१) ॐ टें टें टें मार टें स्वाहा।

दोपहर को चौराहे की मिट्टी लेकर १०८ बार अभिमंत्रित कर जहां चूहे हो वहां डालें, चूहे भाग जाते हैं।

(२) ॐ धूं धूं महा धूं धूं स्वाहा।

१०८ बार राख मन्त्र कर डालें।

॥ चूहे नाशक मातंगी मंत्र॥

(३) ॐ ठों ठों मातंगे स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से २१ बार सरसों मंत्रीत करके डालने से चूहे नष्ट हो जाते है।

॥ मूषक मंत्र॥

(४) ॐ नमों शिवाय ॐ नमो चंड गरुडाय क्लीं स्वाहा श्री गरुडो आज्ञा पयति स्वाहा विष्णुं क्लीं क्लीं मिलि मिलि हर हर हरि हरि फुरु फुरु मुषकान् निवारय निवारय स्वाहा।

विधि- इस मंत्र से सरसों मंत्रीत कर डालने से चूहे नहीं रहते है।

॥ प्रदीपन (अग्नि) मन्त्र॥

मंत्र- ॐ ह्री कपिले लंगेपुंरो वः महामेद्य प्रवर्षणस्य अनेक प्रदीपनकं विज्ञापय विज्ञापय स्वाहा।

विधि- जातिपुष्पेः १०८ मूल साधनं एकविंशति कृत्वोऽभिमंत्रनेन अंविलेन धारादीयने प्रदीपन केन क्रामति।

॥ दुग्धवृद्धि मंत्र॥

ॐ ब्लीं ब्लीं सा दुग्धवृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

चावल की खीर मन्त्रकर स्त्री या पशु को खिलावें दुग्ध वृद्धि होवे।

विविध

सकाम प्रयोग

॥ बवासीर नाशक यन्त्र ॥

१	४	४४	८
४५	७	२	४६
६	४२	४६	३
४८	४	५	४३

इस यन्त्र को केसर या लाल चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर धारण करने से खूनी वादी बवासीर दूर होवे।

॥ बवासीर नाशक यन्त्र ॥

५	३८	३५	१२
३६	११	६	३७
१०	३३	४०	७
३९	८	९	३४

इय यन्त्र को नाभि के पास बांधे। तीन दिन विशेष ध्यान रखें।

४ ७
१ ४४ ४५ २
८ ४६
४२ ४
६ ४६ ४८ ५
३ ४६

॥ बाल रोग बाधा हर यन्त्र ॥

इय यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर बालक के गले में बांधे, निरोग रहे।

३३	३२	२७
३३	६६	३७
३७	४६	६७

॥ मसान (सूखिया) नाशक यन्त्र ॥

१३	१६	७९	६
१८	७	१२	१७
८	२१	१४	१२
१५	१०	९	१०

इस यन्त्र को स्याही से लिखकर गले में बांधने से बच्चों का सूखिया मसान रोग दूर होवे।

॥ बन्ध्या दोष निवारण यन्त्र ॥

ॐ	रं	रा	म	स्वा	हा
ह	१	०	५	७	रा
न्द्र	०	९	१	८	म
प	०	९	१	८	च
श	०	९	७	९	न्द्र
कृ	०	१	५	४	र
क	ल	ति	ल	कु	घु

पहले मन्त्र 'ॐ रं राम स्वाहा। रामचन्द्र रघुकुल तिलक कृशपन्द्रह' इस तरह से लिख कर फिर अंक लिखें। अष्टगंध से लिखकर बन्ध्या के गले में बांधे तो संतान होवे।

॥ पुत्र प्राप्ति का यंत्र ॥

रोहिणी नक्षत्र के दिन पुत्रवती स्त्री के दूध में केसर चन्दन मिला कर अनार की कलम से सफेद कागज पर आठ यंत्र लिखें। एक यंत्र ताबीज में भर कर गले में बांधें। शेष सात यन्त्र प्रत्येक मंगलवार को एक एक यन्त्र जल में धोकर स्त्री को पिलावें।
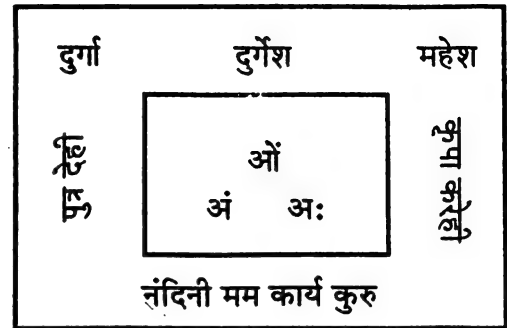
॥ प्रसूता विघ्न हर्ता यन्त्र ॥

४	२२	१०	६
६	१०	६	४
१०	६	४	१२
१२	४	१२	१०

इय यन्त्र को दिवाली को सिद्ध करें। मंगल या शनि के दिन इस यन्त्र को त्रिकोणे मिट्टी के पात्र पर लिखकर प्रसूता के सिरहाने रखने से सर्वभय दूर होवे।

॥ गर्भ रक्षा यन्त्र ॥

मन्त्र - **ओं ह्रीं चण्डिकायै गर्भ रक्षां कुरु नमः स्वाहा।**

इस तरह लिखें। गर्भिणी के मस्तक पर लगाकर जल में विसर्जन करें।

॥ स्त्री दुग्धवर्धक यन्त्र ॥

औं प्रीं दुग्धः वीखा		
३०४	३०३	३०४
औं प्रीं दुग्धः वीखा		

जिस स्त्री को दुग्ध कम आता हो या दूध बच्चे को विकार करने वाला हो, उसके लिये भरणी नक्षत्र में ८ यन्त्र लिखें। एक यन्त्र गले में बांधें। यंत्र श्वेत जीरे के जल से कागज पर लिखें। बाकी सात यन्त्र प्रतिदिन पानी में खोल कर पीयें।

॥ बालक की आयुवृद्धि कारक यन्त्र ॥

शंकरमातु शंकर पितु

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४५	५	४
२	७	४७	४४

(बायें ओर) कैरै करबल जीव चाहे
(दायें ओर) शंकर रखे चारों दीप

मन्त्र को यन्त्र के चारों ओर लिखें। गोरोचन से अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर यन्त्र धारण करायें। बालक की मारकेश पीड़ा हटे।

॥ सुख प्रसव यन्त्र ॥

(क)

१६	६	८
२	१०	१८
१२	४१	४

इय यन्त्र को केसर या गोरोचन कांसी की थाली या कागज पर लिखकर जल खोल कर पिलावें। कष्ट दूर हो,, सुख प्रसव होवे।

(ख)

च	क्र
व्यू	ह

श्रीकृष्ण का स्मरण करते हुये इस यन्त्र को लिखकर प्रसूता को दिखावें। 'श्रीकृष्ण शरणं मम' मन्त्र का जप स्मरण प्रसूता करे, कष्ट दूर होवे।

(ग)

६	७	२
८	५	१९
१	३	४

इस यन्त्र को भोजपत्र पर सहदेई या पुनर्नवा के रस से लिखकर प्रसूता की जांघ पर बांधे तो कष्ट दूर होवे।

॥ बाल रक्षा कारक यंत्र ॥

४	२२	१०	६
६	१०	६	४
१०	६	४	१२
१२	४	१२	१०

अमावस्या की रात को केसर व अनार की कलम से लिखकर बालक के गले में बांधे तो बालक डरेगा व चमकेगा नहीं।

॥ बालक रोदन निवारण ॥

१२	२	११	१
१९	२	३६	८
५	२४	६	२३
४	१३	६	१८

अष्टगंध से यंत्र भोजपत्र पर लिखकर बालक के बांधे तो रोना बंद कर देवे।

॥ बालक की कांच न निकलने का यंत्र ॥

७६	८२	२	८
७	३	८०	७९
८२	७७	९	१
४	६	८२	८१

सोमवार को माजूफल के रस से यन्त्र लिखकर बालक के गले में बांधे। जिस समय माजू और सीप को बारीक पीस कर उपर पर लगा देवे तो काँच न निकले।

॥ पशु दुग्धवृद्धि कारक यन्त्र ॥

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३१

केसर, गोरोचन या कुमकुम द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर पूजन कर गुगल धूप देकर पशु के बांधने से दूग्ध वृद्धि होवे।

॥ फलवृद्धि कारक यन्त्र ॥

८७	९४	२	८
७	३	९१	९१
९३	८८	९०	१
४	६	८६	९२

भोजपत्र व कागज के जंभीरी नींबू के रस से लिखें। या इस यंत्र को तांबे पर लिखें एवं जंभीरी नींबू के रस युक्त जल में खोले उस का छिड़काव फसल पर करें। एक ही वृक्ष हो तो यंत्र बांध देवे।

॥ सर्वजन वशीकरण ॥

६१	६२	२	८
७	३	६५	६४
६७	६२	९	१
४	६	६३	६६

इस यन्त्र को कुमकुम या सिन्दूर से लोटे या बड़े पात्र के पैंदे में नीचे लिखे फिर उसमें जलभर देवे, उस जल को जो पीवे उसका वशीकरण होगा।

॥ पति वशीकरण यन्त्र ॥

७	२१	२	७
६	३	१९	५१
२५	५७	८	१
४	५	७०	२४

इस यन्त्र को प्याज के रस से रोटी पर लिखकर पति को रोटी खिलावें तो सदा अनुकूल रहे।

॥ पत्नि वशीकरण यन्त्र ॥

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३९	४१

अपने मुंह के पान की पीक से दूसरे पान पर इस यंत्र को लिखें जिस स्त्री को वह पान खिलाया जायेगा वह उसके वशी होगी।

॥ शत्रु वशीकरण यन्त्र ॥

२७	३४	२	८
७	३	३१	३०
३३	२८	९	१
४	६	२४	२३

इस यन्त्र को हल्दी से नगाड़े पर लिखें। जैसे जैसे नगाड़े पर चोट पड़े शत्रु का हृदय परिवर्तन होवे।

॥ शीतला शान्ति यन्त्र ॥
(१)

१	२१६९	११	८
१२	७	२	१२६८
६	९	३१७१	३
३१७	४	५	१०

लाल या सफेद चन्दन से भोजपत्र पर यंत्र लिखकर रोगी की भुजा के बांधे शान्ति होवे।

(२)

७	४४	९	३८
७१	४	१७	५२
३	२८	९	८
८	५	३९	४५

इस यन्त्र को लाल चन्दन से कागज पर लिखें गुगल धूप देकर रोगी के गले में बांधे तो चेचक का प्रकोप शांत होवे।

॥ गर्भ स्थिरता का यन्त्र ॥

२०	२७	२	७
६	३	२४	२३
२६	२१	८	१
४	५	२२	२५ ओं

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर रविवार या मंगलवार को गले या भुजे में बांधे तो गर्भ रक्षा होवे।

॥ स्त्री उदर पीड़ा नाशक ॥

१	१५	११	८
१२	७	२	१४
६	९	१७	३
१६	४	५	१०

जिस समय स्त्री के पेट में दर्द न हो उस समय यह यन्त्र स्त्री को धारण करायें।

॥ उदर शूल नाशक यंत्र ॥

१६	२	युवार
२	५/१	हे
अज	कुंन	मलमा

इय यन्त्र को लिखकर उसका जल पिलाने से शान्ति होवे।

॥ द्यूत विजयप्रद यंत्र ॥

१	२५।	२३।	२३।
३२॥	२७॥	३५॥	३६॥
१॥	९॥	२४॥	१९॥
२६।	९॥।	५॥।	४॥।

इस यन्त्र को अष्टगंध से लिखकर धारण करें।

॥ बीसा यन्त्र ॥

(१) नजर का यन्त्र

(१)

४	२	६	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

इस यन्त्र को अष्टगंध या लाल चंदन से लिखकर गुगल धूप देवे तो नजर दोष दूर होवे।

(२) लक्ष्मीप्रद यंत्र
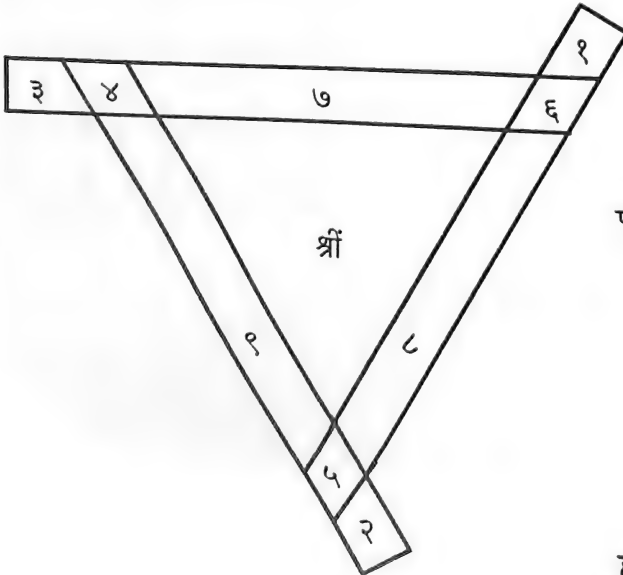
इस यन्त्र को लिखकर पूजन में रखें। लाल वस्त्र पहनकर पूजा करें। यंत्र को प्रणाम करें।

दिव्यांपरां सुधनवल चक्रयतां,
मूलादि बिन्दु परिपूर्ण कलात्मरूपाम् ।
स्थित्यात्मिकां शरधनु सृणि पाशहस्तां,
श्रीचक्रतां परिणतां सततं नमामि ॥

पश्चात् त्रिपुरसुन्दरि का ध्यान करके लक्ष्मी मन्त्र या '**ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**' मन्त्र का जप करें।

बालार्कयुत तेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीम् ।
नानालंकृति राजमान वपुषं बालेन्दुयुत शेखरम् ॥
हस्तैरिक्षु धनुः सृणिं सुरशरं पाशं मुद्रां विभ्रतीम् ।
श्रीचक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगतामाधार भूतां भजे ॥

त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र - **ह्रीं कएईल ह्रीं, हसकहल ह्रीं सकल ह्रीं ॥**

(३) लक्ष्मीप्रद यंत्र
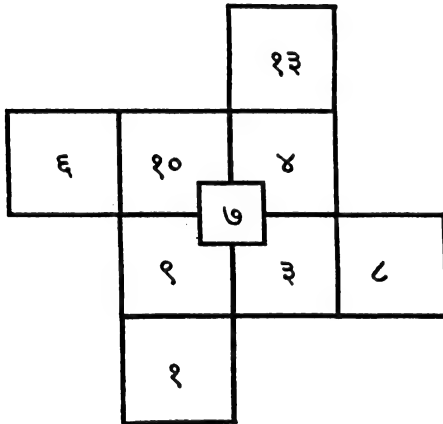
दीपावली पूजन को यन्त्र को सिद्ध करें।

मन्त्र- **ह्रीं श्रीं कमलवासिन्यै नमः ॥**

॥ ध्यानम् ॥

कान्त्या कांचन सन्निभां, हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः ।
हस्तोक्षिप्त हिरण्मयामत घटैरासिच्यमाना श्रियम् ॥
विभ्राणावरमब्ज युग्ममभयं हस्तैः किरोटोज्ज्वलाम् ।
क्षौमाबद्ध नितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

(४) लक्ष्मी यन्त्र

महालक्ष्म्यै			नमः
९	श्रीं		६
ह्रीं	१	४	ह्रीं
ॐ	७	८	
३	क्लीं		२

(५) दुर्गा यन्त्र
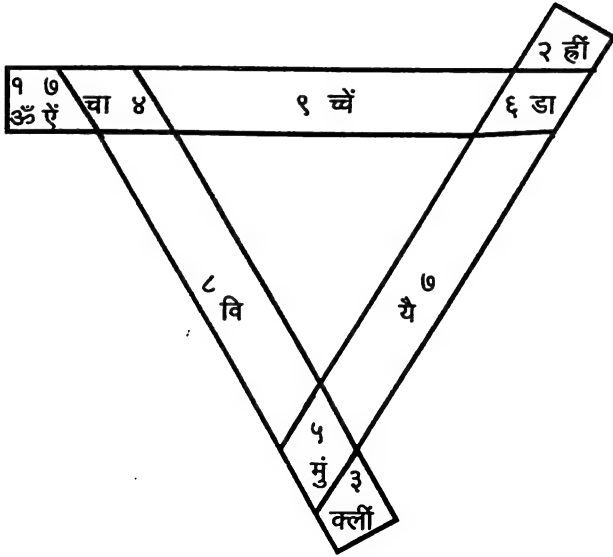
दुर्गा की प्रतिष्ठा कर **'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'** मंत्र की माला करें।

(६) लक्ष्मी यंत्र

अष्टगंध से यंत्र लिखकर प्रतिष्ठा करके लक्ष्मी मंत्र की माला जप करें।
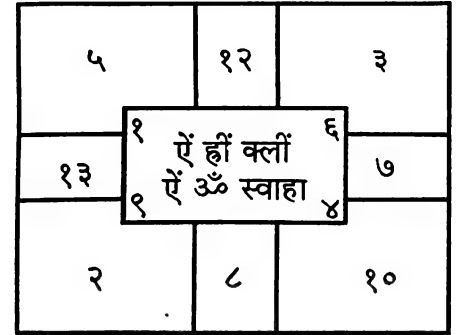
(७) ॥ महालक्ष्मी यन्त्रम् ॥
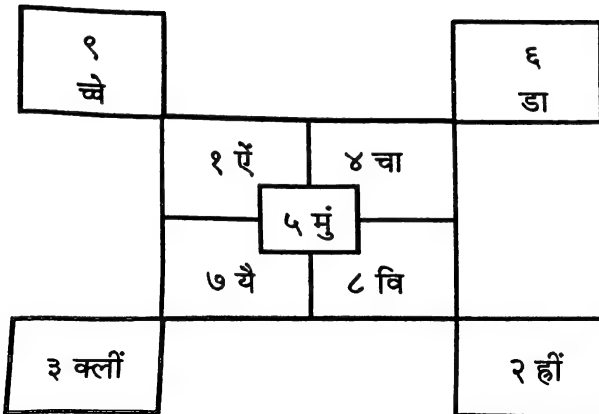
दुर्गा की प्रतिष्ठा करके नवार्ण मन्त्र **'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'** की माला करें।

(८) ॥ विष्णु यन्त्रम् ॥
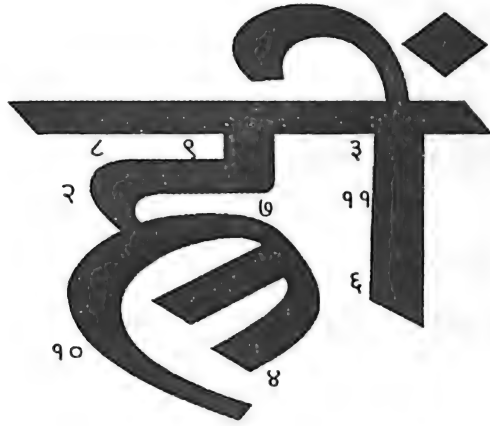
विष्णु की पूजा कर जप करें।

मन्त्र – **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।**

॥ ध्यानम् ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभय हरणं सर्वलोकैकनाथम् ॥

(९) ॥ सूर्यनारायण यन्त्रम् ॥

अष्टगंध व लालचन्दन से भोजपत्र पर लिखकर सूर्य पूजा करें।

मन्त्र – **ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः।**

॥ ध्यानम् ॥

भास्वद् रत्नाढ्य मौलिः स्फुरदधर-श्चारु रंजित चारुकेशो ।
भास्वानयो दिव्यः तेजोः करकमलयुतः स्वर्णवर्णः प्रभामिः ।
विश्वाकाशावकाशो ग्रहगण सहितौ भाति यश्चोदयाद्रौ ।
सर्वानन्द प्रदाता हरिहर नमितः पातुमाम् विश्वचक्षुः ॥
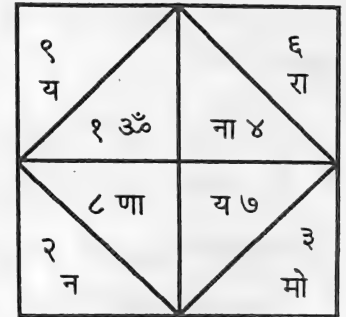
(१०) ॥ वेंकटेश यन्त्रम् ॥
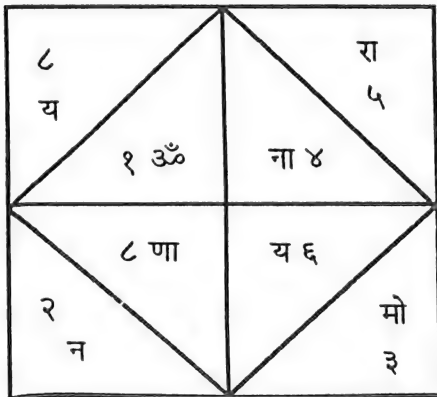
मन्त्र – **ॐ नमो नारायणाय।**

॥ ध्यानम् ॥

सशंखचक्रं सकिरीट कुण्डलम्,
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणाम् ।
सहार वक्षस्थल कौस्तुभश्रियं
नमामि विष्णुः शिरसा चतुर्भुजम् ॥

॥ कुबेर यन्त्रम् ॥

इय यन्त्र को शुभ दिन मंगलवार के दिन लिखें। अर्धरात्रि में लाल चन्दन, कस्तूरी, गोरोचन अष्टगंध से लिखें। पश्चिमाभिमुख हो लालचन्दन कुमकुम व लाल पुष्पों से पूजा करें।

मन्त्र – **ह्रीं श्रीं कुं कुबेराय नमः।**

प्रार्थना –

कुबेर त्वं धनाधीशं गृहे ते कमला स्थिता ।
तां देवी प्रेषया त्वंशु मद्गृहे ते नमो नमः ॥

॥ दत्तात्रेय यन्त्रम् ॥

दत्तात्रेय की साधना से ज्ञान व धन की वृद्धि होती है। इनकी उपासना के समय कुत्ता, भिक्षु, अतिथि साधु सन्यासी का हमेशा सत्कार करें।

दत्तात्रेय हरे कृष्ण उन्मत्तानन्द दायकः ।
दिगम्बर मुने बालः पिशाचं ज्ञानसागरः ॥

दत्तात्रेय शीवं शान्तं इन्द्रनीलनिभं प्रभुम् ।
आत्मायारतं देवं अवधूत दिगम्बरम् ॥

ज्ञान योग निधिं विश्वगुरुं योगिजन प्रियम् ।
भक्तानुकम्पिनं सर्व साक्षिणं सिद्ध सेवितम् ॥

मन्त्र –

(१) द्रां ॐ दत्तात्रेयाय नमः ।

(२) श्रीं ह्रीं क्लीं दत्तात्रेयाय नमः ॥

(३) ॐ आं ह्रीं क्रौं एहि दत्तात्रेयाय स्वाहा।

साधनाकाल में सोमवार के क्षुधार्त्त प्राणी को भोजन कर स्तुति करें –

भिक्षाटनं गृहे ग्रामे पात्रं हेममयं करे ।
नाना स्वादमयी भिक्षाः दत्तात्रेय नमोऽस्तुते ॥

॥ सर्व विघ्न नाशक (६६) यन्त्र ॥

२३	३	९	१५	१६
१४	२०	२२	२	८
१	७	१३	१९	२६
१८	२५	५	६	१२
१०	११	१७	२४	४
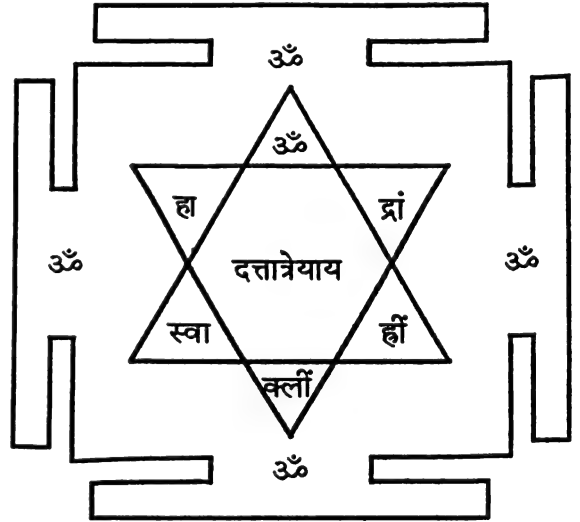
इस यंत्र को धारण करने व दुकान में लिखने से व्यापार के विघ्न दूर होते हैं। प्रेत बाधा से भी रक्षा होती है।

॥ महाकाली यन्त्र (चौत्तीसा) ॥

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

यह महाकाली भद्रकाली का यन्त्र है। विघ्न दूर करने व आर्थिक समृद्धि हेतु सात्विक कर्म कर हवन करें। यंत्र लिखते समय मंत्र बोलकर अमुक अमुक देवता का ध्यान करते जायें। यथा –

सात पूनम काल का (७), बारह वरस क्वांर (१२), एको देवी जानिए (१) चौदह भुवन द्वार (१४) द्वि पक्षे निर्मलिए (२) तेरह देवन देव (१३) अष्टभुजी परमेश्वरी (८) ग्यारह रुद्र देवता (११), सोलह कला संपूर्णा (१६), तीन नयन भरपूर (३) दसों द्वारी (१०), तू ही मां, पांचों बाजे नूर (५) नवनिधी (९), षडदर्शनी (६), पन्द्रह तिथी जान (१५) चारों युग (४), में कालका, कर काली कल्याण।

सामान्य क्रम में केशर व लालचन्दन से अनार की कलम से यन्त्र लिखें, होली, दीवाली, सोमवती अमावस्या व पूर्णिमा से प्रयोग करें।

मन्त्र –**आं क्रीं भद्रकाली कर कल्याण।**

अन्य विधि

लकड़ी के पट्टे पर लाल कपड़ा बिछाकर इस काली यन्त्र को स्थापित करें, काली का चित्र हो तो उसे भी रखें। पंचोपचार से पूजन करें। भटकटैया व लाल या पीले कनेर के पुष्प रखें, पंचमेवा, लौंग, इलायची, नारेल चढ़ावें। नींबू बिजौरा हो तो अधिक उत्तम रहे अन्यथा जो उपलब्ध हो लेवें, काली यंत्र व नींबू के सिन्दूर की टींकी लगावें। नींबू, कनेर पुष्प, भटकटैया पुष्प अर्पण करें। चौमुखा दीपक जलायें, काले केवांच के बीज चढ़ायें। जप प्रारंभ करें। फिर गुगल होम करें, मन्त्र से होम करें। जप समाप्ति समय नींबू को चीर कर उस पर अपनी अनामिका अंगुली के खून का टीका लगावें फिर नींबू को अग्नि में निचौड़ें, गुगल होम धूप करें। हवन की राख, नींबू केवाच के बीज व फूल संभाल कर रखें, ब्राह्मण भोजन करें। नित्य पूजा कर १०८ बार जप करें सब विघ्न दूर होवे।

मन्त्र – **ॐ कङ्काली महाकाली केलिकलाभ्यां स्वाहा।**

॥ महालक्ष्मी (चौतीसा)यन्त्र ॥

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

इय यन्त्र को अनार की कलम से केसर व अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखें। दुकान में हिंगुलु या सिन्दूर से लिखें। दीपावली व अन्य पर्व को पूजा करें शुभ रहे।

॥ महालक्ष्मी (६५वां)यन्त्र ॥

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
९	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इस यन्त्र को लिखकर पूजा कर जप करें।

मन्त्र - **ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।**

गुगल धूप करने से शुभ रहे।

॥ सरस्वती (तैंतीसा)यन्त्र ॥

८	१५	२	८
७	३	१२	११
१४	९	९	१
४	६	१०	१३

इस यन्त्र को लिखकर सरस्वती मन्त्र का जप करें।

मन्त्र - **ऐं सरस्वत्यै नमः।**

॥ कान की पीड़ा निवारण यन्त्र ॥

इस यन्त्र को स्याही से कागज पर लिखकर कान के बांध देवें तो पीड़ा कम होवे।

भ	ज	व
क	ग	जः
छः	छः	दः

॥ भूत प्रेत निवारक यन्त्र ॥

८५	५६	१	१२
६	६०	६२	१३
४६	४	१८	९१
७	६९	२८	५८

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर धारण करने से बाधा नहीं होती है। यदि इस यन्त्र को श्मशान की मिट्टी से चांदी या कांसी की तस्तरी पर लिखें एवं तस्तरी रोगी के सिर पर रखकर ७ बार घूमाकर उसे तालाब या नदी में फेंक दे तो बाधा चली जायेगी।

॥ स्थान भयनाश यन्त्र ॥

जिस स्थान मे अशुभ आत्मा का भय होवे वहां इस यन्त्र को लिखकर गाड़ देवे।

५६	५७	६	९
६	९	४५	४३
७६	३६	९	८
७	५	७५	५४

॥ भय निवारक यन्त्र ॥

८०	८७	२	७
६	३	८४	८३
८६	८१	८	१
४	५	८२	८५

किसी स्थान पर डाकिनी शाकिनी चोर व सर्प भय हो वहां इस यन्त्र को लगा देवें भय दूर होवे।

॥ प्रेत निवारण यन्त्र ॥

प्रेतग्रस्त रोगी को यन्त्र धारण कराने से लाभ होवे।

१०ऽ	ॐ	ह्रीं	२
ऽ।	६	३	ऽ७
१८	स्वं	क्र	क्लीं
९	यं	८	१

॥ कारागार मुक्ति यन्त्र ॥

या हाफिज	३३२	३३८	२२१०
या हाफिज	३३२	३३४	२३६
या हाफिज	३३७	३३०	३३५
बंदी और उसके पिता का नाम	या हाफिज	या हाफिज	या हाफिज

रविवार के दिन प्रातःकाल यन्त्र को केसर से भोजपत्र पर लिखकर जंगली काले कबूतर की गर्दन में बांध कर उसे छोड़ देवें तो व्यक्ति बंधन मुक्त होवे।

॥ कारागार मुक्ति यन्त्र ॥

इस यन्त्र को १०००० बार कागज या भोजपत्र पर लिखकर आटे की गोलियाँ बनाकर नदी में डाले या मछलियों को डालें तो बंदी छूटेगा या विचाराधीन सजा कम हो जायेगी।

७८६

१८	११	१६
१३	१५	१७
१४	१९	१२

॥ भूत बाधा निवारक यन्त्र ॥

७	१३	१९	२६	१५
बुदो हो	१२	२	८	१४
३	९	५	१६	२३
११	२७	३१	१०	१०
२५	५	६	१२	८

इस यन्त्र को केसर से चीनी की प्लेट में (कांसे के बर्तन में) लिखकर उसका जल रोगी को पिलावें लाभ होवे।

॥ प्रेत नाशक यन्त्र ॥

(१)

यह यन्त्र कोरे कपड़े पर सिन्दूर से लिखें तथा रोगी को दिखावें पश्चात् ७ बार घूमाकर अग्नि में डाल देवें तो प्रेत भाग जायेगा।

(२)
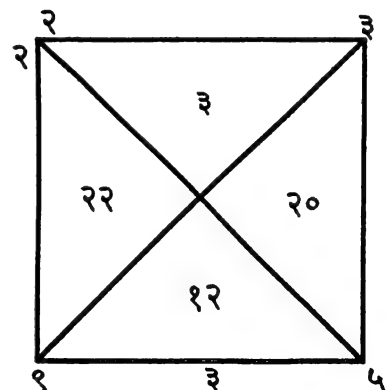
५०५	दुन दन	३६९६
दूर भव भूतः		

पुष्य नक्षत्र मे यन्त्र लिखकर लोबान की धूनी देवे तथा यन्त्र को गले में धारण करायें। भूत भय दूर होवे।

(३)

१४	७	४	३
६	३	६	५
७	३	४	१४
४	१४	३	७

इस यन्त्र को धारण करने से भूत भय नहीं रहता है।

॥ घर से गये मनुष्य को लौटाने का यन्त्र ॥

(१)

६२	६९	२	६
६	३	६८	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

इस यन्त्र को पानी से अपनी मध्यमा अंगुली से लिखें फिर उस पर कोड़ा मारे और कहें अमुक व्यक्ति वापस आये। सूखने पर पुनः लिखें, पुनः कोड़ा मारे। १०८ बार करने से रुठा हुआ व्यक्ति व गया हुआ व्यक्ति वापस आयेगा।

(२)

५०५	दुन दन	३६९६
दूरभव भूतः अमुक आगतः		

अमुक के स्थान पर खोये हुये व्यक्ति का नाम लिखें। गये हुये व्यक्ति के वस्त्र के यन्त्र को बांध कर उल्टा चरखा घुमाने से व्यक्ति आ जाता है।

(३)

ॐ कार्तवीर्य नाम राजा सहस्त्रबाहुकम् ।
यस्य स्मरण मात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते ॥

इस यंत्र को चोरी गयी वस्तु व व्यक्ति के लिये काम में लिया जाता है।

इस यन्त्र को गये हुये व्यक्ति को वापस बुलाने के लिये उसके वस्त्र में लिखकर बांधे। वस्त्र सहित चरखा उल्टा घुमावें तो व्यक्ति आ जाये।

चरखे के अभाव में हमने २-३ बार कपड़े को बिजली के छत के पंखे के बांध १-२ दिन घुमाने से ही सफलता प्राप्त हुई किन्तु एक सेठ का नौकर रुपया लेकर भाग गया उसमें सफलता नहीं मिली।

॥ डाकिनी हटाने का यन्त्र ॥

(१)

३७१००	३७१	३७१००
३७७००	७७००	३७००
३७७००	(साध्य नाम)	३०००

साध्य की पीड़ित व्यक्ति का नाम लिखें। यन्त्र को गूगल की धूनी देकर गले में धारण करावें।

(२)

११९	६६	१	५
७	६	७	६
१	–	.।.	.।.
८	१	ऽ	४०

(३)

७	७	९	८
ऽ	६	६	५
४	।।।	ऽ	११
७।	६	१।।	।।।

इन यन्त्रों को गले में बांधने व इनका जल खोल कर पिलाने से डाकिनी शाकिनी दोष दूर होवे।

॥ ज्वर नाशक यन्त्र ॥

(१)

स: ७ ४	स: १	स:३ ८
स: ९	२स:	स:५
स: ८	स: ६	स: ४

चतुर्थ दिन आने वाले ज्वर के लिये यह यन्त्र रविवार को लिखकर दाहिने हाथ के बांधें।

(२)

५५९	२१७	३६९
६५५	१३८१	४९३
७७२	१२७७	१५२१
९९१	९६६	१००१

इस यन्त्र को लिखकर रविवार को बांधे ज्वर नष्ट होवे।

(३) ॥ इकातरा ज्वर नाशक यन्त्र॥

१२	११	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

इस यन्त्र को ठीकरी पर या भोजपत्र पर लिखकर रोगी की भुजा में बांधे तो इकातरा ज्वर नष्ट होवे।

(४) ॥ शीतज्वर नाशक यन्त्र॥

३	४	७	१४
१	६	१०	६
१४	४	३	७
७.	३	१४	४

यन्त्र से भोजपत्र पर लिखकर लोबान धूप देकर गले में बांधे तो प्रकोप शान्त होवे।

(५) ॥ बालज्वर नाशक यन्त्र॥

५६	१	४४
२०	३८	४१
२८	६२	१४

५६

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर लोबान धूप देकर बालक के गले में बांधे तो बार बार बालक को आने वाला ज्वर दूर होवे।

कृष्णाष्टमी व चतुर्दशी को इस यन्त्र को श्मशान की राख व धतूरे के रस से ठीकरी पर लिखें बालक पर घूमाकर श्मशान में गाड़ देने से ज्वर तत्काल शांत होवे। यन्त्र की भद्रकाली के नाम से पूजन करें।

(६) ॥ त्राहिक ज्वर नाशक यन्त्र॥

इस यन्त्र को अष्टगंध से लिखकर दाहिनी भुजा के बांधे ३-३ दिन बाद आने वाला ज्वर नष्ट हो जायेगा।

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

॥ तिजारी (तिजड़ा) का यन्त्र ॥

(१)

०	०	०	०
७१	७१	७१	०
७१	७१	७१	०
७१	७१	७१	०

इस यन्त्र को बुखार टायफाइड में काम मे लेवें। यन्त्र को दाहिनी भुजा में बांधे।

(२)

इस यन्त्र को कांसी की कटोरी में या थाली में केसर या काजल से लिखें।

थाली कटोरी में पानी भरें। तीन आलपिनें या सुईयां लेकर उनसे सिरे ऐसे मिलायें जिससे त्रिकोण की आकृति बन जाये। रोगी के अंग में जहां टायफाइड के दाने महसूस होवे उस स्थान के पास पलंग के नीचे रखें तो सुबह पानी में छोटे छोटे दाने थाली में नजर आयेगें। शाम सुबह प्रयोग करें जैसे जैसे टायफाइड सरकता जाये वैसे वैसे थाली कटोरी को आगे सरकाते जावे। यदि यन्त्र नहीं लिखे तो भी यह लौकिक विधि कार्य करेगी।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

(३)

इस यन्त्र को अनार की कलम व लालचन्दन से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप देकर रोगी के गले में बांधें लाभ होवे। टायफाइड मोतीझरा दूर होवे।

श्रीः	श्रीः	श्रीः	श्रीः
श्रीः	श्रीः	श्रीः	श्रीः
श्रीः	श्रीः	श्रीः	श्रीः
श्रीः	श्रीः	श्रीः	श्रीः

(४)

ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये ।
पिशाचाधिपतये आविश्य कृष्ण पिंगल फट् स्वाहा।

इस यन्त्र को कागज पर कोयले से लिखकर धारण करने से ज्वर दूर होवे।

****

(२)

श्रीकृष्ण बलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्ध च ।
उषा स्मरण मात्रेण ज्वर व्याधि विमुच्यते ॥

इस मन्त्र के जप करने एवं यन्त्र लिखकर धारण करने से ज्वर दूर होवे।

(३)

कृष्ण वाणासुर संग्राम के विषय में भागवत में प्रसंग है उसमें वैष्णव एवं शिव ज्वर के विषय में पाठ है उसका स्वाध्याय करे।

॥ आंधा शीशी दूर करने का यन्त्र ॥

३६	४६	२६	७१
३	८	४	७
३	८	२	३
११	७	२०	९

रविवार को यन्त्र लिखकर मस्तक में धारण करे तो पीड़ा दूर होवे।

॥ रोजगार प्राप्ति यन्त्र ॥

या अल्ला हो	०	२	६	३	६	६	१
या रहमानो	२	३	२	८	२	९	३
या रहीमो	१	६	६	६	१	६	६
या अजीज	१	२	७	६	२	२	७
या वासितो	७	३	३	६	६	४	२
या वहूदो	२	२	६	६	६	२	६
या बुदूहो	६	६	२	ऐन	६	५	२

इस यन्त्र को पूर्णिमा की रात्रि को केसर से लिखें तो बेरोजगारी दूर होगी। यन्त्र सदा अपने पास रखें।

॥ हाजरात सिद्धि यन्त्र ॥

१	८	३	८	त
५	६	३	६	र
७	२	९	२	क
७	४	५	४	ली
ॐ	का	मा	क्षा	ॐ

मन्त्र - **ॐ नमो कामाख्यायै सर्वसिद्धिदायै मम प्रश्न वाचा कर्म कुरु कुरु स्वाहा।**

विनियोग - **अस्य श्री कामाख्या मन्त्रस्य वह्निक ऋषि जगती छन्दः कामाख्या देवता ॐ शक्तिः, अव्यक्त कीलकं मम ज्ञात अज्ञात प्रश्न वाचा शुभाशुभ फल ज्ञातवे जपे विनियोगः।**

हृदयादिन्यास :- **ॐ नमो हृदयाय। कामाख्यायै शिरसे स्वाहा। सर्वसिद्धिदायै शिखायै वषट्। मम प्रश्न वाचा कर्म कवचाय हुं। कुरु कुरु नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।**

इसी तरह कराङ्गन्यास करके ध्यान करे-

योनि मात्र शरीरा या कंगुवासिनि कामदा ।
रजःस्वला महातेजा कामाक्षी ध्येयतां सदा ॥

दस हजार जप करके १००० गुडहल के फूलों से होम कर, कन्या भोजन ब्राह्मण भोजन करायें।

प्रयोग करते समय यन्त्र को लालचन्दन केसर से भोजपत्र पर लिखें यन्त्र पूजा करें। दीपक जलाने के लिये रुई में मेढल की राख मिलाकर बत्ती बनायें फिर तेलपूर कर दीपक जलावें, यन्त्र व दीप का पूजन करें। ८-१० वर्ष के बालक या बालिका को दीपक के सामने बैठायें, यन्त्र बालक के हाथ में देवें। दूसरे हाथ में तेल व मेढल की राख सनाकर लगा देवे। बालिका को उसमें देखने को कहें तो शुभाशुभ दृश्य दिखाई देगा।

॥ आपत्ति नाशक यन्त्र ॥

क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं
अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं	ॠं
जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ऋं
छं	भं	मं	यं	रं	ढं	लृं
चं	बं	सं	हं	लं	णं	लृ
ङं	फं	षं	शं	वं	तं	एं
घं	पं	नं	धं	दं	थं	ऐं
गं	खं	कं	अः	अं	औं	ओं
क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं

दु:ख दरिद्रता क्लेश रोग भयनाश हेतु इस मातृका यन्त्र का पूजन करें। अष्टगंध कपूर कुंमकुम केसर गोरोचन से चमेली की कलम से कांसी के पात्र में यन्त्र को लिखे। षोडशोपचार पूजन करें। लाल श्वेत कमल, मालती जूही के केतकी, चमेली, बकुल जो भी पुष्प उपलब्ध हो उनसे पूजा करें। दुर्गापाठ ३-५-७ दिन कराकर क्षीरान्न (खीर) से ब्राह्मण कन्या भोजन करायें।

॥ विपत्ति नाशक यन्त्र ॥

८	१०	१३	१
७४	२	७२	७१
१४	१५	६८	६
३९	१६	४	१५

भोजपत्र पर अष्टगंध से चार यंत्र बनाकर लिखें। मकान के चारों कोनों में गाड़ देवे तो आपत्ति विपत्ति दूर होवे।

॥ ज्ञानवृद्धि यन्त्र ॥

८४	९१	२	८
७	३	८८	८७
९	८५	९१	१
४	६	८६	९०

मालकांगनी के रस से शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को अपनी जीभ पर लिखें तो ज्ञान वृद्धि होवे।

यह विधि कठिन है, अतः इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर अपनी जिह्वा पर रख लेवें। फिर मौन होकर '**ह्रीं श्रीं उच्छिष्ट चाण्डालिनी मातंगी हुं फट् स्वाहा**' मन्त्र का जप करें।

॥ रोजगार व प्रसिद्धि प्राप्ति यन्त्र ॥

२६३	२५८	२६५
२६४	२६२	२६०
२५९	२६६	२६१

इस यन्त्र को गुरुवार के दिन केसर, अम्बर व गुलाब जल से लिखें। १२१ बार **बिस्मिल्लाह** पढ़कर लोबान का धूप देवे तो बंद किस्मत खुल जायेगी। खुशहाली रहें।

॥ प्रसिद्धि प्राप्ति यंत्र ॥

दं०	दं०	दं०	दं०
वं०	वं०	वं०	वं०
सं०	सं०	सं०	सं०
अं०	अं०	अं०	अं०

शिव व दत्तात्रेय का पूजन करके इस यंत्र को दाहिनी भुजा में धारण करने से प्रसिद्धि मिले।

॥ राज सम्मान प्रद यन्त्र ॥

(१)

४२	५०	२	७
०	२०	१७	४६
४९	४४	८	१
४	५	४५	४८

(२)

८१	१२	२	८
७	३	८५	८४
८७	८४	९	१
४	६	८४	८७

(३)

४४	५१	२	७
६	३	४०	४७
५०	४५	८	१
४७	४	४६	४९

तीनों यन्त्र का विधान समान है। भोजपत्र पर अष्टगंध या केसर से अनार की कलम द्वारा लिखकर पूजन कर दाहिनी भुजा के बांधे तो मान सम्मान में वृद्धि होवे।

॥ कामवर्धक यंत्र ॥

७९	७८	२	८
७	३	७४	७४
७७	७२	८	१
४	६	७३	७६

स्वाति नक्षत्र के दिन रात्रि में थूहर के दूध से भोजपत्र पर लिखकर कमर में बांधे तो कामिनी को प्रसन्न करें।

॥ राजावशीकरण ॥

(१)
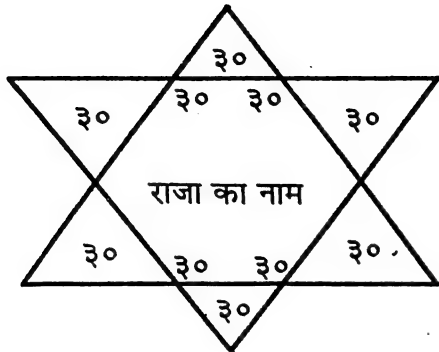
(१) चमेली की कलम और कुंकुम, गोरोचन, कपूर से लिखकर सिर पर धारण कर राजा के पास जाए तो आपके अनुकूल रहे।

(२)
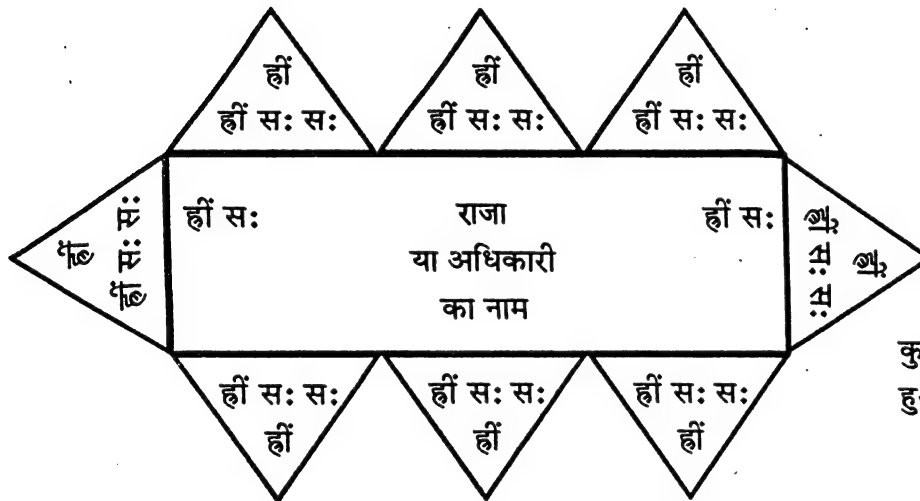
इस यन्त्र को केसर गोरोचन कुमकुम से लिखकर धारण करें। रुठा हुआ राजा प्रसन्न होगा।

(३)

जो अधिकारी आपको बार बार परेशान करता है। उसका नाम बीच में लिखें भोजपत्र पर अपने रक्त से लिखकर २१ दिन तक पूजन करें। बाद में दूध पात्र में स्थापित करें। तो पुनः सम्मान मित्रता प्राप्त होगी।
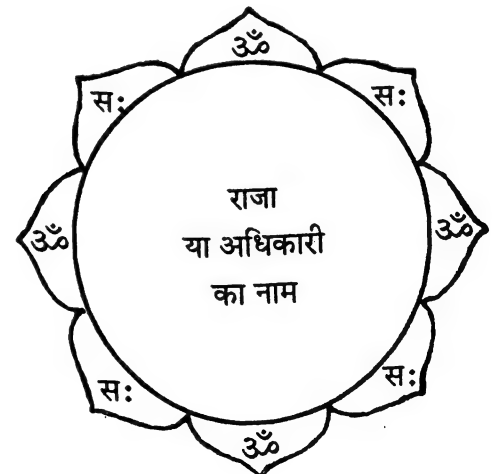
॥ सर्वजन वशीकरण ॥
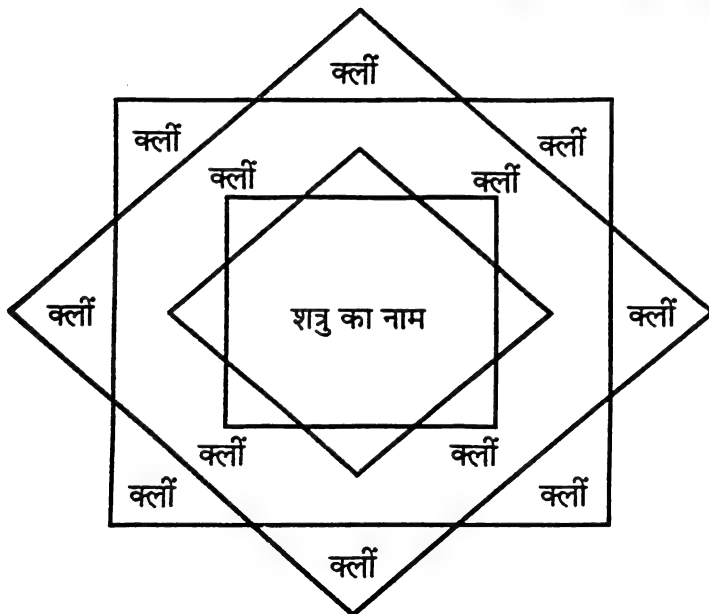
वसन्त पंचमी के दिन इस यंत्र को गोरोचन, केसर, कुंकुम से लिखे। शिर पर धारण करके जहां- जहां जायेगा, राजा- प्रजा सभी वशीभूत होवे।

॥ सिर दर्द दूर करने का मंत्र ॥

इस यंत्र को २ भोजपत्र पर लिखे एक ताबीज को खारी धरती में गाढ देवे दूसरे को रोगी के सिर पर बांध देवें।

॥ राजा वशीकरण ॥

	भू	मनाय
श्री	प	शोरत
ह्रीं	सिं	

इस यंत्र को काले कमल के पत्ते पर सफेद गाय के दूध, केसर, लाजवन्ती के पौधे के रस व सारस पक्षी के पंख की कलम से लिखें। १ वर्ष प्रदोष व्रत कर एकसौ पन्द्रह यंत्र शिवजी के अपर्ण कर बाद में इस यंत्र को ताबीज में धारण करे, राज पक्ष सदा अनुकूल रहे।

॥ देव वशीकरण ॥

६५	७२	२	८
४	६	६७	७०
७१	६३	९	१
७	३	३६	६८

कुल देवता या पितर देवता की नाराजगी के कारण परेशानी आ रही हो तो बसन्त पंचमी को पूर्व की ओर मुँह करके आक की लकड़ी लाकर उसकी कलम से यंत्र लिखे। फिर अपने देवताओं का नाम लेकर सिर पर यंत्र को धारण करें।

॥ स्वामी वशीकरण यंत्रम् ॥

(१)

इस यंत्र को गोरोचन, केसर से भोजपत्र पर लिखकर मिट्टी के कोरे सिकोरे मे डाले, दूसरे कोरे सिकोरे से ढक दे फिर उनको आग में पकाने पर यंत्र अन्दर जल जायेगा उसकी भस्म को सेवक स्वामी को या स्त्री अपने पति को पान में खिलावे तो सदैव वशीभूत रहे।

(२)

४९	४२	४	५
३	६	४८	४३
४६	४५	१	८
२	७	४७	४४
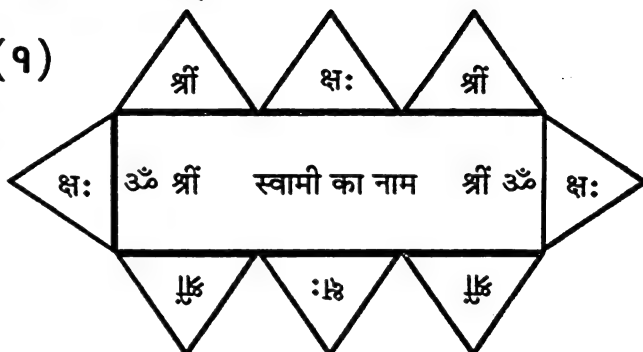
इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर दाहिनी भुजा में धारण करे, तो स्वामी अनुकूल होवे।

(३) व्यवसाय वशीकरण
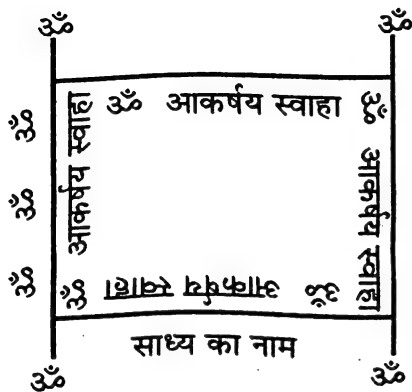
बसन्त ऋतु में शनिवार के दिन अपने रक्त व गोरोचन से यह यंत्र लिखकर पूजन कर जप करे। गुगल धूप करे। जिस व्यक्ति से कारोबार लेन देन हो उसका नाम लिखे तथा उसके नाम सहित जप करे तो वह आपके अनुकूल रहेगा

मंत्र- **ॐ अमुकं (साध्य का नाम) आकर्षय स्वाहा**

॥ प्रेम उत्पन्न करने का यन्त्र ॥

११	८	१	१०
२	१३	१२	७
१९	३	६	९
५	१०	१५	४०

जो व्यक्ति निष्ठुर हो गया हो उसमें प्रेम जागृति हेतु यह प्रयोग करें। इस यन्त्र को केसर से भोजपत्र पर लिखें। मिट्टी के दीपक में कुजंड या अरंडी का तेल डालकर उस यन्त्र की बत्ति बनाकर जलायें दीपक का मुंह साध्य के घर की दिशा में कर देवें। ७ दिन तक प्रयोग करने पर उसका हृदय परिवर्तन होगा।

॥ स्त्री आकर्षण यन्त्र ॥

(१)

४	२४	२२	२९	१०
१८	१५	२७	११	२०
२५	२१	१२	१६	१९
१३	२३	२६	२८	१७

जुम्मेरात के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले आम के पेड़ के नीचे शुद्धासन पर बैठकर यन्त्र लिखें। यन्त्र को दाहिनी डाली पर लटका दें फिर '**कुल्ला बल्ला**' आयत अगले महिने की जुम्मेरात तक रोज २२१ बार पढ़ें तो जिसे आप चाहते हैं वह आपके अनुकूल होगी।

(२)

५१	७	९	२२	१८	११	८	५	२	राम
ऐं	ह्री	क्लीं	श्रीं	ग्रीं	भ्रीं	ग्रीं	घ्रीं	ह्रीं	ह्रीं
८	४१	५	२८	७	१२	३	८	६	राम
साध्या का नाम									

इय यन्त्र को गोरोचन कुमकुम केसर से लिखकर ७ दिन तक घड़े के नीचे रखे तो वह स्त्री वशीभूत होगी।

(३)

५ ५ १ ५ १ ७ १ २ १......... साध्या का नाम...........७ ५ ५ ५ ५ १ २ १ ७ १

इस यन्त्र को कागज पर लिखकर उसका पलीता बनाकर अग्नि में जलावें तो उस स्त्री का हृदय द्रवित हो जायेगा।

॥ प्रगाढ़ वशीकरण ॥

७८६

३५२१	३५१८	३५१५
३५१६	प्रेयसी एवं उसकी माँ का नाम	३५२०
३५१९	३५१४	३५१७

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर उसका पलीता बना लेवें। एक दीपक में चमेली का तेल डाले उसमें इस यन्त्र की बत्ती बनाकर डालकर जलावें दीपक का मुंह साध्या स्त्री के घर की दिशा में करें तो वह वशीभूत होगी।

॥ कलह दूर करने का यंत्र ॥

११	०	४	८
७	३	१५	१४
२७	१२	१९	१
४	६	१३	६

इस यन्त्र को लालचन्दन से किसी गुलदस्ते पर ७ दिन तक लिखें तो गृह कलेश दूर हो जायेगी।

॥ कलह कारक यन्त्र ॥

इस यन्त्र को काली या लाल स्याही या लालचन्दन से भोजपत्र पर लिखकर जिस व्यक्ति के द्वार पर गाड़ देवे वहां नित्य कलह रहेगी।

३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१
३१	३१	३१	३१

॥ पति वशीकरण यन्त्र ॥

६	७	२
१	५	९
८	३	४

(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर केसर से लिखकर गले या कमर में धारण करें तो पति उस स्त्री के अनुकूल होने लगेगा।

(२)

८	३	४	अलहुब बन फलां	६	७	२
१	५	९	अलाहुब अमुकनाम (स्वयं)	१	५	९
६	७	२	बन (पति का नाम)	८	३	४

जिस स्त्री का पति उपेक्षा करता है वह स्त्री अमुक की जगह अपना नाम लिखें फिर बन के बाद पति का नाम लिखें। केसर गोरोचन से भोजपत्र पर यंत्र लिखकर यंत्र को मिट्टी में दबा देवें। जब तक यंत्र दबा रहेगा तब तक पुरुष वश में रहेगा।

(३)

स्वयं का नाम	२३	बिन	१२	पति का नाम
२५	१५	१३	२०	१८
२४	१४	१६	१९	२१
स्वयं का नाम	२२	बिन	१७	पति का नाम

विधि उपरोक्त

(४)

इस यंत्र को गोरोचन से लिखकर ३ दिन तक गंधपुष्पादि से रतिदेवि के नाम से पूजन करें। चौथे दिन तीन सौभाग्यवती स्त्रियों को भोजन कराकर प्रार्थना करें।

अंगवल्लभे देवि त्वं च मे प्रीयतामिति ।
एनं प्रियं महावश्यं कुरु त्वं स्मरवल्लभे ॥

(५)

यह यंत्र पति से प्रीति व आयु सौभाग्य बढाने वाला है। इस यंत्र को कृष्णपक्ष की त्रयोदशी से ७ दिन तक पूजा करें। भोजपत्र पर कस्तूरी कुंकुम व लालचन्दन या अष्टगंध से लिखें। ७ दिन बाद सात स्त्रियों को भोजन करायें। पार्वती दुर्गा का सदैव स्मरण करें। प्रार्थना करें -

शंकरस्य प्रिये देवि ललिते प्रीयतामित ।
रूपं देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे श्रियम् ॥
भगवती वांछितं देहि प्रिय मायुष्य वर्द्धनम् ॥

इसके बाद यंत्र को गले में धारण करें।
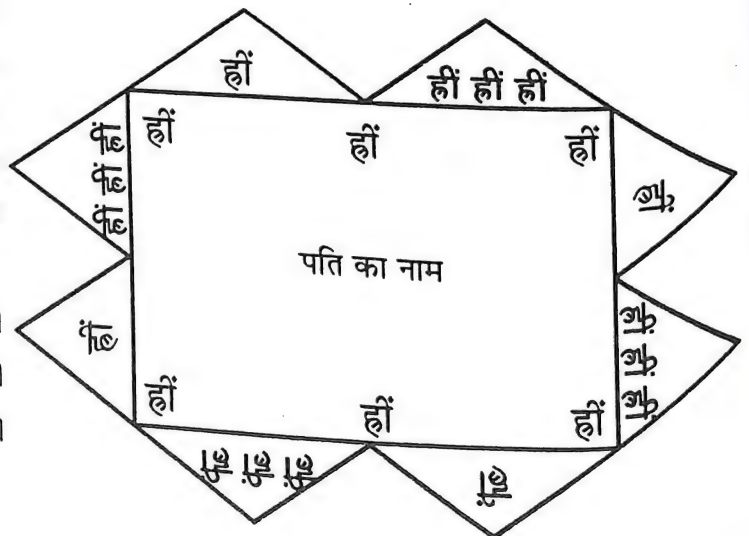
॥ शत्रु वशीकरण ॥

(१)
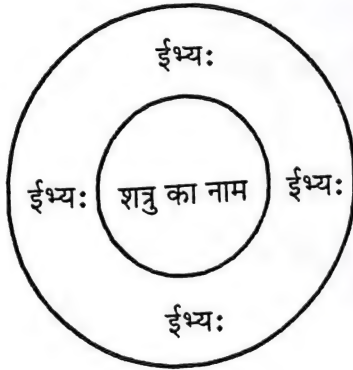
इस यन्त्र को मरघट की राख से कृष्ण पक्ष में धतूरों के दो पत्तों पर लिखें। दोनों पत्तों को मिलाकर लपेटे व काटों से छेद कर पूजन कर श्मशान में गाड कर भूतादि बलि प्रदान करें तो शत्रु वशीभूत होवे।

(२)

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर शहद के बरतन में ड़ाल देवे तो शत्रु संमोहित रहेगा।

॥ शत्रु को परास्त करने का यन्त्र ॥

यन्त्र मध्य में शत्रु का नाम लिखें। भोजपत्र पर हरताल से यन्त्र लिखें। कुंवारी कन्या के काते हुये सूत से यन्त्र को पूजन करके ७ बार लपेटे फिर उसे पृथ्वी में गाड़ देवें। नित्य प्रति कुल्ला दातुन के बाद सात बार उस भूमि पर लात मारे प्रयोग तब तक करे जब तक शत्रु परास्त नहीं होवे।

॥ शत्रु की छाती फटने का यन्त्र ॥

२०	२७	२	८
७	३	२४	२३
२६	२१	९	१
४	६	२२	२५

इस यन्त्र को बकरे के रक्त से किसी कपड़े पर लिखें एवं धोबी के पटले (कपड़ा धोने के पत्थर) के नीचे रखें। जैसे-जैसे धोबी कपड़े को पटले पर पछाडेगा वैसे-वैसे शत्रु के सीने में दर्द होगा।

॥ शत्रुनाशक यन्त्र ॥

इस यन्त्र को भोजपत्र पर हल्दी तथा हरताल से लिखें। एकांत स्थान में जाकर मन्त्र जप करते हुये सरसों के तेल से हवन करें शत्रुनाश होवे।

मन्त्र - **भुंक्ष्व भुंक्ष्व अमुकं क्षं।**

अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम पढ़ें, यन्त्र मध्य में भी शत्रु का नाम लिखें।

॥ प्रेत विमोचन यन्त्र ॥

प्रेत प्रेतनी जिंद भूत '

यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः
यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः
यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः
यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः
यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः
यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः
यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः	यः वु दुः

अमुक (रोगी)

इस यन्त्र को कागज पर स्याही से लिखें। फिर उसे रुई के साथ लपेट कर बत्ती बनाकर घी में भिगो लेवें। आंगन में एक बलिश्त का गोबर का चौका लगाकर उस पर बत्ती का दीपक जलावें। जिस व्यक्ति पर प्रेत चढ़ा हो उस व्यक्ति को दीपक के सामने बैठा देवें। प्रेत रोगी उस दीपक को देखें फिर दीपक बुझा देवे। फिर दीपक जलावे फिर थोड़ी देर बाद दीपक बुझा देवें।

ऐसी बत्ती जले तब तक ३-४ बार करे तो प्रेत रोगी को छोड कर भाग जायेगा।

यन्त्र के नीचे रोगी का नाम लिखें। ऊपर **प्रेत, प्रेतनी, जिंद, भूत** लिखें।

॥ विवाद विजय यन्त्र ॥

३४	३३८	३३३	या हाफिज
३३८	३३२	३३३	या हाफिज
३३५	३३७	३३७	९९
या हाफिज	या हाफिज	९९	॥

यन्त्र के नीचे साध्य व्यक्ति व माता का नाम लिखें शुक्रवार को यन्त्र लिखकर गले में धारण करें तो विवाद में विजय होवे।

॥ ऋण मोचन यन्त्र ॥

व्यापार में हानि के कारण धनिक व्यापारियों का तकाजा अधिक हो तो इस यन्त्र को गोरोचन कुंकुम से लिख कर ७ दिन तक दुर्गासप्तशती का पाठ करायें पश्चात् खीर, शहद, घी की आहुति देकर व कन्या, वटुक भोजन कराकर यन्त्र गले में धारण करे तो तकाजा कम होकर व्यापारी आपकी मदद करेंगे।
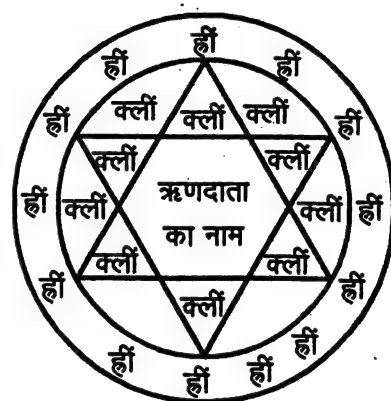
॥ शत्रु के घर में कलह होने का यन्त्र ॥

७९	७६	२७	
६	३	८३	४८
८५	८०	८१	
५	९	९१	९४

कुम्हार के आवे की ठीकरी पर लाल चन्दन से यह यन्त्र लिखकर शत्रु के घर में फेंक देवे तो उसके घर में कलह होवे।

॥ शत्रु बुद्धि स्तंभन यन्त्र ॥

रविवार को इस यन्त्र को केले के रस से भोजपत्र या ठीकरी पर लिखकर शत्रु के घर में दबा देवे तो उसकी बुद्धि मंद होवे।

॥ सौभाग्यप्रद यन्त्र ॥

केसर, श्वेत चन्दन, गोरोचन व अनार की कलम से इस यन्त्र को शुभ दिन भोजपत्र पर लिखें, ३ दिन तक यन्त्र व शिव की पूजा करें।

पश्चात् जप शिवजी को अर्पण करते हुये कहें **'हे लोकेश प्रीयताम्'** फिर एक दम्पत्ति को भोजन करायें। यन्त्र को कच्चे डोरे में लपेट कर तीन धातु के ताबीज में डाल कर गले में पहनने से सुख सम्पत्ति मिले। वन्ध्या स्त्री धारण करे तो उसे सन्तान सुख प्राप्त होवे।

॥ शत्रु विद्वेषण यन्त्र ॥

(१)

इस यन्त्र को श्मशान के वस्त्र पर कोए के पंख व बकरे के खून से लिखें। अजारक्त मिश्रित भात, नैवेद्य बलि देवे। गंधार्चन करें। एक योगिनी (स्त्री) को भोजन करायें। फिर उस यन्त्र को एकान्त के शिव मन्दिर में श्मशान में गाड़ देवे तो शत्रु पक्ष निर्बल हो जायेगा। देवदत्त के स्थान पर शत्रुनाम लिखें।
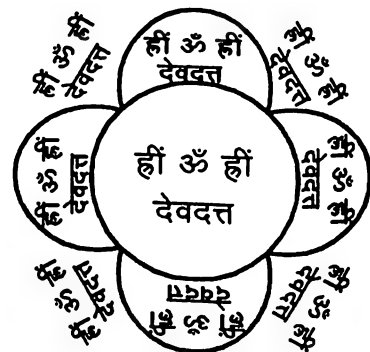
(२)

इस यन्त्र को श्मशान के कपड़े पर उल्लू, कौआ व ऋतुमती स्त्री के रज से लिखें अथवा भोजपत्र पर लिखें। भक्ष्य भोज्य बलि देकर शत्रु के घर में गाड़ देवे तो विद्वेषण होवे।
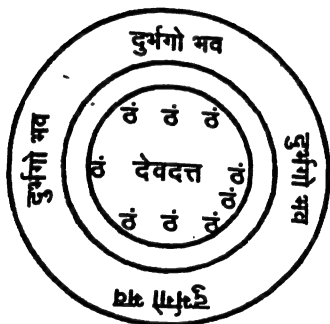
(३)

शत्रु के नाम व उसकी स्त्री के नाम से दो पुतलियाँ बनायें। उनके कज्जल, टींकी करें। उनके मस्तक में सुई, आलपिन व कांटे चुभोवें। दोनों पुतलियों को नीम, कैर या बबूल के पेड़ के नीचे अथवा चौराहे, श्मशान में विपरीत दिशा में मुंह करके औंधी गाड़ देवे तो उनकी विपरीत बुद्धि हो जायेगी।

॥ सौभाग्य वृद्धि कारक यन्त्र ॥

४	६	३	६
४	४	७	५
६	६	३	५
५	४	७	४

इस यन्त्र को केसर, कुमकुम से लिखकर सिर पर धारण करें। सौभाग्य वृद्धि होवे।

॥ आकर्षण यंत्र ॥

स: स: स: स: स: इ
स: स: क्रौं ह्रीं क्रों
साध्य व्यक्ति का नाम
ह्रों क्रों ह्रीं क्रों ह्रीं क्रों
ह्रीं दर
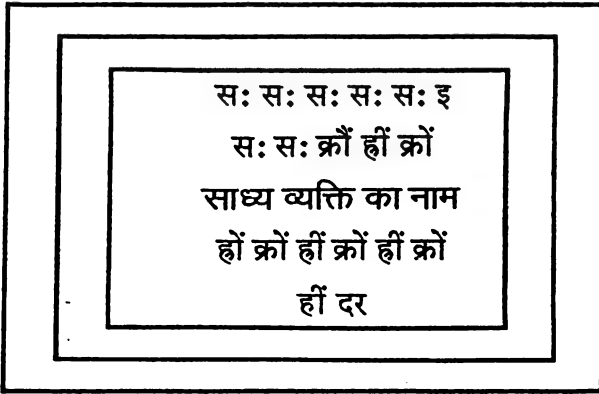
भोजपत्र पर गोरोचन, लालचन्दन, कुंकुम से यन्त्र लिखकर पूजा कर लाल डोरे में बांधें।

अपने शरीर का मैल उबटन बनाकर उतारें। उस मैल से साध्य प्रिय व्यक्ति जो रूठ कर चला गया है उसकी प्रतिमा बनायें। खदिर की समिध की अग्नि जलावें। मध्य में खाली जगह में प्रतिमा रखकर यन्त्र उसके हृदय या शरीर पर डाल देवें। प्रतिमा को आड़ी या सीधी रखें। चारों और अग्नि जलती रहे तथा निम्न मन्त्र का जाप करें –

मंत्र- **ॐ अमुकं तीव्र वेगेन आकर्षय आकर्षय मणिभद्राय स्वाहा।**

सातदिन तक त्रिकाल समय प्रयोग करें।

॥ मारण यन्त्र ॥
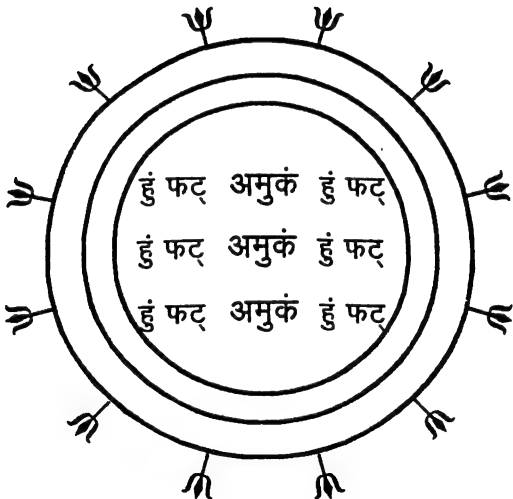
इस यन्त्र को श्मशान के वस्त्र पर मनुष्य के रक्त व श्मशान के कोयले से घिसकर कौए के पंख से लिखें। शत्रु के बायें पैर की मिट्टी तथा राई, उड़द, राज के मिश्रण सहित पुतली बनाकर यह यन्त्र उसके हृदय में रखें।

७ दिन तक '**ॐ क्रां क्रीं क्रीं कालिके नमः**' मन्त्र जप करें फिर इस यन्त्र व पुतली को चौराहे श्मशान में गाड़ देवें तो शत्रु का मारण होवे।

॥ उच्चाटन यन्त्र ॥

(१)

इस यन्त्र को गधे के रक्त से लकड़ी पर कौए के पंख से लिखकर पूजन करें। क्षेत्रपाल महाभैरव को बलि देकर भूमि में गाड़ देवें तो शत्रु का उच्चाटन होवे।
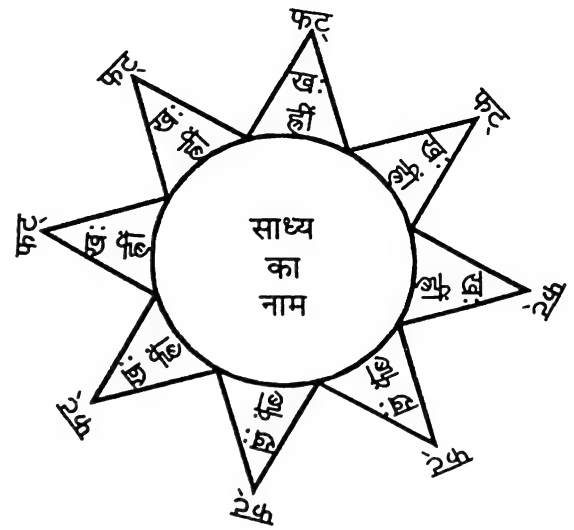
(२)
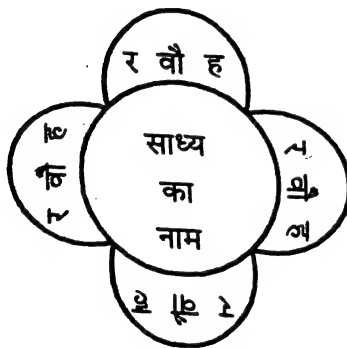
इस यन्त्र को नीम के पत्तों की राख से भोजपत्र पर कौए के पंख से लिखकर पूजन कर जमीन में गाड़ देवें तो शत्रु का उच्चाटन होवे।

(३)
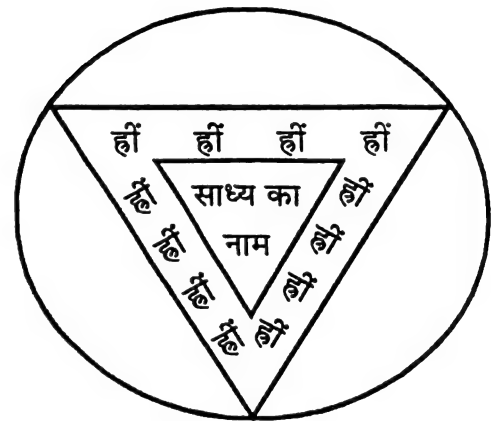
इस यन्त्र को काले मुर्गे के रक्त से कौए के पंख से भोजपत्र पर लिखकर कुत्ते के गले में बांध देवे। जैसे जैसे कुत्ता भ्रमण करे व भौंके वैसे वैसे शत्रु का उच्चाटन होवे।

॥ बुद्धि फेरने का यन्त्र ॥

(१)

इस यन्त्र को हल्दी, लालचन्दन से भोजपत्र पर लिखें। एक बैल की आकृति की प्रतिमा बनाकर यन्त्र को उसके गले में बांध देवें। पश्चात् बैल को किसी डोरी से किसी कील या अन्य वस्तु से बांध देवे एवं बैल को उल्टा घुमावें तो जो राजदरबारी, शत्रु आपके विरोधी है उसकी बुद्धि भ्रमित हो जायेगी आपके अनुकूल हो जायेगा।

(२)

ह्लीं
ह्लीं ह्लीं
साध्य
का नाम
ह्लीं ह्लीं
ह्लीं
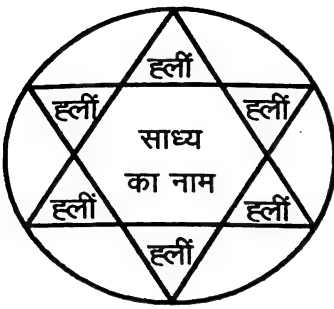
पूर्व के समान यन्त्र लिखें एवं उसी विधान से प्रयोग करें। बैलं को घुमाते समय बगलामुखी देवी के मन्त्र का जाप करें -

ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्वशत्रु स्तंभिनी स्वाहा।

॥ विदेश गये व्यक्ति को बुलाने का यन्त्र ॥

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर गये हुये उस व्यक्ति के वस्त्र के साथ चक्की के पाट के नीचे दबा देवें। या मिट्टी पर जमीन पर लिखकर ७ जूते की रोज मारे जब तक व्यक्ति वापस घर पर नहीं आवे। जूते मारते समय शत्रु का नाम लेकर मारे।

(अमुक व्यक्ति वापस आवे)

७२	७६	२	७
६	३	७६	७६
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

अमुक आगच्छ

अमुक आगच्छ

अमुक आगच्छ

(२)

३५	८	१५	१
४	५२	५	१३
९	१३	६४	३
७२	६५	७२	६

यन्त्र को लिखकर गये हुये व्यक्ति के वस्त्र में लपेटकर चरखे के बांध कर सात दिन तक सुबह शाम चरखे को उल्टा घुमावे।

॥ उच्चाटन यन्त्र ॥

मंगलवार को अनुराधा नक्षत्र या शनिवार के ज्येष्ठा मूल नक्षत्र को उस दिन पान के रस से इस यन्त्र को कागज पर लिखें। शत्रु के शयन कक्ष में गाड़ देवें तो उसका उच्चाटन होवे। या यन्त्र को पानी में घोलकर उस जल को जिसे पिलावें उसका उच्चाटन होवे।

३१	१७	१५	१
२९	१९	१३	३
२७	२१	११	५
२५	२३	९	७

***

॥ खोई हुई वस्तु का यन्त्र ॥

ह्रां	ह्रां	ह्रं	ह्रां
ह्रां	ह्रां	ह्रं	ह्रां
प्रां	प्रां	प्रां	प्रां
प्रीं	प्रीं	प्रीं	प्रीं

यह यन्त्र अनार की कलम से कनेर के वृक्ष के नीचे एक लाख बार लिखें।

॥ खोये हुये पशु को वापस लाने का यन्त्र ॥

१९	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	९	१
४	६	२१	२३

इस यन्त्र को कुमकुम व स्याही से पशु के कांटे से लिखकर खोये हुये पशु के खूंटे के पास गाड़ देवे तो पशु वापस लौट आवे।

॥ विघ्नराज यन्त्र ॥

५६	६२	२	८
७	३	६०	५६
६२	५७	९	१
४	६	५८	६१

इस यन्त्र को गोरोचन केसर से लिखकर ताबीज में धारण करें तो सभी विघ्न दूर होवे।

॥ कामना सिद्धि यन्त्र ॥

इस यन्त्र को दाहिने हाथ में धारण करें।

मः ४	ह्रां १	ॐ ८
महः ५	ह्रीं २	श्रीं ९
सः ६	भ्रीं ३	ह्रीं ८

॥ सर्वतोभद्र यन्त्र ॥

१६५६११	१६५६२५	१६५६२१	१६५६१८
१६५६२२	१६५६१७	१६५६२७	१६५६१३
१६५६१६	१६५६१९	१६५६२७	१६५६१३
१६५६२६	१६५६१४	१६५६१५	१६५६२०

यह यन्त्र नजर टोक, भूत प्रेत, पिशाच, भय, ग्रहारिष्ट, दोर्भाग्यदोष, बिमारी पीड़ा को दूर कर सौभाग्य वृद्धि करता है।

॥ व्यापार वृद्धि यन्त्र ॥

७३	८०	२	७
६	३	७७	७६
७९	७४	८	१
४	४	७५	७४

इस यन्त्र को रक्तचन्दन से भोजपत्र पर लिखें। यदि दीवार पर लिखें तो सिन्दूर या हिंगुलू से लिखें।

इस को लिखने के लिये दीपावली का दिन श्रेष्ठ है।

॥ सर्पभय नाशक यन्त्र ॥

मालकांगणी के रस से सोमवार रेवती नक्षत्र के दिन इस यन्त्र को लिखकर घर में रखें तो सर्प भय नहीं होवे।

३०	३७	३	८
७	६	३४	३३
३६	३१	९	१
४	५	३२	३४

॥ स्मरण शक्ति वर्धक यन्त्र ॥

मालकांगणी के रस से जिह्वा पर प्रतिदिन १० बार लिखें। चांदी की शलाका से लिखें। यह तो सभी जानते हैं कि पूरा यन्त्र एक साथ नहीं लिखा जा सकता है। अत: एक एक पंक्ति की कल्पना करते हुये चार बार में पूरा यन्त्र लिख सकते हैं। दूसरे व्यक्ति से लिखवाने पर बारीकी से पूरा यन्त्र एक साथ लिखा जा सकता है।

१४	९१	२	९
७	३	९९	९७
९०	९	९	१
४	६	९६	८९

॥ बीसा यन्त्र के विविध प्रयोग ॥
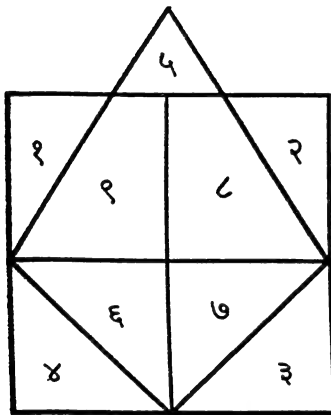
(१) व्यापार वृद्धि कारक

दीपावली के दिन इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर व्यापार स्थान में रखें।

१	९	१०
१४	७ ऐं २ श्रीं ॐ ह्रीं ३ क्लीं ८	६
५	११	४

(२) यश वृद्धि कारक

इस यन्त्र को लिखकर प्रतिदिन **'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'** मन्त्र का जाप करें।
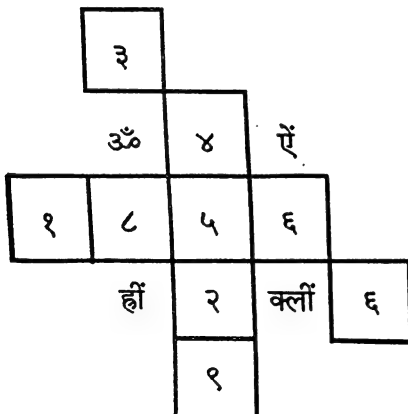
(३) भाग्योदय कारक

अष्टगंध से भोजपत्र पर चमेली की कलम या सवर्ण शलाका से लिखकर यन्त्र धारण करें।
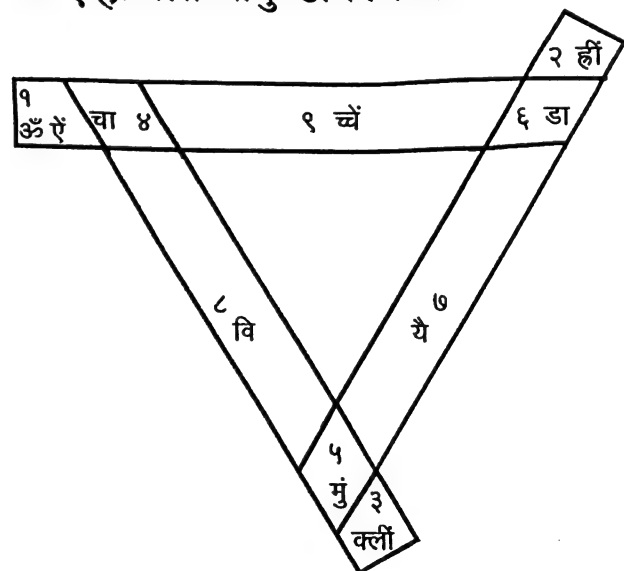
विधि यन्त्र २ के समान

विविध वस्तु

एवं

वनौषधी तन्त्रम्

अथ वस्तु विज्ञान तंत्रम्

॥ १. एकाक्षी नारियल ॥

सामान्य नारियल के जब बाल उतारे जाते है तो अंदर के नारियल गिट पर दो बिन्दु याने २ आंखे होती है। किसी किसी पर एक ही बिन्दु होता है उसे एकाक्षी नारेल कहते है। यह लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है।

इसे प्राप्त कर विष्णु व लक्ष्मी रूप से पूजन करे।

पुरूष सूक्त-लक्ष्मी सूक्त व श्री सूक्त से दुग्धाभिषेक कर पूजन करे। धूप दीप नैवेद्य अर्पण करे। बिल्व पत्र चढावे जहां कमल पुष्प उपलब्ध हो वहां कमल पुष्प चढावे। अथवा लाल पुष्प चढावे। फिर लाल वस्त्र में लपेट कर व्यवसाय स्थल में रखे। इसके चक्षु पर कपड़ा नहीं लपेटे। भण्डार वृद्धि धनवृद्धि होवे।

॥ २. श्रीफल तंत्रम् ॥

यह नारियल के समान की होता है। आकार में छोटी सुपारी या बादाम के आकार का होता है इसे एकाक्षी नारेल के विधान की तरह ही पूजन कर प्रयोग करे धनवृद्धि होवे। लाल चन्दन का प्रयोग पूजन में करे।

लक्ष्मी मंत्र का जप करे-

मन्त्र - ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्री श्रीमहालक्ष्मै नमः।

॥ ३. शंख तंत्रम् ॥

दक्षिणावर्त्त शंख का फल उत्तम कोटि का होता है। इसका खुला भाग दांयी ओर होता है। आज कल ये नकली मिलते है अतः सावधानी से प्राप्त करें।

इसे पंचामृत गंगाजल से धोकर चांदी के पात्र या ताम्रपात्र पर रखे अथवा श्वेत या पीले वस्त्र पर रखे। पूजन हेतु गुरुवार व अन्य सिद्धि योग हो तो उत्तम रहे।

श्वेत चन्दन, केसर, गोरोचन, पीले पुष्प, धूप दीपादि से अर्चन करे। विष्णु पूजन कर नैवेद्य चढावे फिर मंत्र जप करे-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधरकरस्थ पयोनिधि जाताय श्रीदक्षिणावर्त्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः।

इसे गल्ले, तिजोरी या पूजा स्थल में रखे धन वृद्धि होवे।

॥ ४. शिवलिङ्ग तन्त्रम् ॥

नर्मदा नदी किनारे मुख्यतः ओंकारेश्वर क्षेत्र और धावड़ी कुण्ड में विविध तरह के शिव लिङ्ग प्राप्त होते है। आकृति भेद से इनकी अनेक श्रेणियां है यथा तिलक लिङ्ग, मुखलिङ्ग, धारालिङ्ग, ज्योतिर्लिङ्ग, ओंकारलिङ्ग, चन्द्रभाललिङ्ग

एवं अर्द्धनारीश्वर लिङ्ग। इस लिङ्ग की नियमित शिव पूजा विधान से पूजन कर **ॐ नमः शिवाय** मंत्र से जप कर शिव प्रसन्नता प्राप्त करे। अनेक विघ्न दूर होवे।

॥ ५. श्वेतार्क तंत्रम् ॥

सफेद फूल वाले आक का यह दुर्लभ पौधा है कहते है १२ वर्ष की अवधि में इसकी जड़ में स्वतः गणेश आकृति बनती है परन्तु कहां बनती है इसके लिये तो पूरे पोधे को ही उखाड़ना पड़ेगा। जड़ के उस भाग को प्राप्त कर गणेश प्रतिमा की तरह घर में पूजन करे।

सामान्यतः श्वेतार्क की जड़ प्राप्त करने से पहले दिन गणेश जी के नाम से पूजन कर निमंत्रण देवे कि कल हम आपको प्राप्त करेगें।

दूसरे दिन बिना शस्त्र की सहायता से जड़ को प्राप्त करे। इस जड़ पर गणेश जी आकृति शिल्पी से खुदाये। तंत्र में हाथी पर बैठकर बनाने का विधान है अथवा कहीं मंदिर बाहर मार्बल, चूने के हाथी हो उस पर बैठकर मूर्ति बनाये। गल्ले में रखने के लिये अगुष्ठ प्रमाण की मूर्ति बनाये। उच्छिष्ट गणपति विधान से पूजन करे।

मंत्र-गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र जप करते समय मुंह में लौंग, इलायची, सुपारी, मिश्री, लड्डू के दाने से मुंह झूठा रहे। मंत्र दस हजार से एक लाख तक करे जितना जप होगा उतनी ही सिद्धि होगी।

अक्षय भण्डार व धन की वृद्धि होगी। सिद्ध पुरुष भण्डारा करते समय उच्छिष्ट गणपति या उच्छिष्ट चाण्डालिनि का प्रयोग करते है।

॥ ६. शिवलिङ्गी तन्त्रम् ॥

इस औषधि के बीज काल रंग के छोटे लंबे चपटे दाने रूप में होते है तथा बीज छोटा बिन्दु उभरा हुआ होता है। गर्भवती स्त्री को १०-२० दाने रोज गाय के दूध के साथ (बछड़े की मा होवे) पहले महिने ३ महिने देवे पुत्र प्राप्त होवे। दाने चबाने नहीं चाहिये इससे शिव का अपमान होता है।

॥ ७. बांदावृक्ष तंत्रम् ॥

बहुधा नीम, पीपल, खेजड़ी, आम, महुआ, जामुन पेड़ मे कभी दूसरी जाति का पेड़ उग जाता है उसे बांदा पेड़ कहते है। इनके लक्ष्मी प्राप्ति हेतु अनेक प्रयोग होते है।

१. यज्ञीय प्रयोग में अरणी आदि उपकरण बनाये जाते है।

२. भरणी नक्षत्र में कुशा का बांदा लाकर गंध पुष्पादि से पूजन करे।
मन्त्र - ॐ धनदाय स्वाहा
मंत्र से पूजन कर ११ माला जप कर हवन करे। फिर उस बांदा कुशा को पीले या लाल वस्त्र में लपेटे साथ में अक्षत, हल्दी गांठ व सिक्का भी रखें। इस पोटली को भण्डार में रखे धन वृद्धि, भण्डार वृद्धि होवे। गल्ले में भी रख सकते है। **इमलि के पेड़ का बांदा** भी इसी विधि से प्राप्त कर प्रयोग करे।

३. रोहिणी नक्षत्र में गूलर का बांदा लाकर प्रयोग करे धन लाभ होवे।

४. स्वाति नक्षत्र में बेर का बांदा लाकर प्रयोग करे धन वाहन संपदा की वृद्धि करे।

५. दूब (दूर्वा) के पौधे पर बांदा मिल जाये तो पूर्वाषाढा नक्षत्र में लाकर प्रयोग करे धन वृद्धि व्यापार वृद्धि होवे।

६. आश्लेषा नक्षत्र में सोमवार के दिन बहेड़ा वृक्ष का बांदा लाकर पूजा प्रयोग करे धन वृद्धि होवे।

७. रविपुष्प के दिन बहेड़ा की जड़ व पत्ते लाकर पूजन कर लाल वस्त्र में बांधकर घर में रखे धन वृद्धि होवे।

८. पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में सेमल वृक्ष का बांदा लाकर पूजन कर प्रयोग करे धन वृद्धि होवे।

९. होली के दिन पलाश वृक्ष का बांदा लाकर पूजन प्रयोग कर घर में रखे भण्डार कभी रिक्त नहीं होगा।

१०. सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण से एक दिन पहले निमंत्रण देवे तथा प्रातः काल गूलर वृक्ष का बांदा लाकर पूजन करे। ग्रहण समय कमल गट्टे की माला पर जप करे। ग्रहण मोक्ष होने पर १०८ बार होम करे। बांदा वृक्ष के अंश को सोने के ताबिज में धारण करे धन वृद्धि होवे। बांदा वृक्ष के प्रयोगों के समय कुबेर एवं लक्ष्मी मंत्र का जप कर पूजन करे।

मंत्र –

१ ॐ नमो धनदाय स्वाहा।

२ ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।

॥ ८. शंख पुष्पी तंत्रम् ॥

पुष्य नक्षत्र के दिन शंखपुष्पी की जड़ लाकर पूजन करे। कुबेर व लक्ष्मी मंत्र से पूजन कर चाँदी डिब्बी में रख कर भण्डार में रखे धन वृद्धि होवे।

॥ ९. लक्ष्मणा तंत्रम् ॥

लक्ष्मणा के पौधे को घर में लगाने से विघ्न नहीं आते। रविपुष्प, गुरु पुष्प, दीपावली, ग्रहण व अन्य सिद्धि योग में इस पौधे की जड़ लावे। जड़ शस्त्र से नहीं काटे। उसकी पूजा कर लक्ष्मी, चामुण्डा मंत्र का जप करे। लाल वस्त्र में लपेटकर घर में रखे। परिवार की रक्षा होवे। संतान प्राप्ति हेतु इसके साथ शिव पूजा करे। धन प्राप्ति हेतुं लक्ष्मी कुबेर गणेश की उपासना जप करके अभिमंत्रित करे। सिन्दूर के साथ जड़ को घिसकर तिलक करे तो वशीकरण हो, सम्मान मिले।

॥ १०. निर्गुण्डी तंत्रम् ॥

पुष्य नक्षत्र में निर्गुण्डी की जड़ लाकर पूजन प्रयोग कर लाल वस्त्र या पीले वस्त्र में रखे धन वृद्धि होवे।

॥ ११. सहदेवी तंत्रम् ॥

सहदेवी से देवताओं का आकर्षण होता है। रविपुष्प के दिन इसको लाकर पूजन करे। लक्ष्मी मंत्र का जप करे। पौधे को लाल वस्त्र में डिब्बी में रखकर भण्डार (तिजोरी) में रखे धन वृद्धि होवे।

॥ १२. हत्थाजोड़ी तंत्रम् ॥

दो हाथों की जुड़ी हुई आकृति (५ अंगुलियों सहित) वाली यह वनस्पति बड़े काम की है। पर यह प्रयोग से रक्षा करती है, सम्मान बढाती है, धन सम्पदा भी देती है।

रवि-मंगल या शुक्रवार के दिन या सिद्धि योग में इसे तिल्ली के तेल में डुबो देवे। १०-१५ दिन बाद सिद्धि योग में इसे निकालकर लाल चंदन, सिन्दूर, लाल पुष्प, लाल वस्त्र, धूप दीपादि से पूजन करे। इसकी चामुण्डा व भद्रकाली रूप से पूजन कर जप करे। १०८ बार गुगल व लोबान से धूप करे। १२००० जप कर १००८ बार होम करें।

मंत्र–

१. ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

२. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डायै नमः स्वाहा।

३. ॐ किलि किलि भद्रकाली स्वाहा।

सिन्दूर के साथ इस हत्थाजोड़ी को डिब्बी में रखे।

॥ १३. सियार सींगी ॥

सियार के ऊपर आंवले के आकार की एक प्रकार की गांठ बन जाती है। शिकारी लोग उसे मारकर प्राप्त कर लेते है। इसको प्राप्त कर नवरात्र, दीपावली, अष्टमी, ग्रहण या रवि पुष्प, गुरू पुष्प व सिद्धि योग में सिद्ध करे।

मंत्र–

१. ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

२. ॐ नमो भगवते रूद्राय ॐ चामुण्डे सर्वजन मे वशमानय स्वाहा।

यदि किसी व्यक्ति से आवश्यक काम है तो **ॐ चामुण्डे अमुकं में वशमानय स्वाहा** का जप होम कर सियार सिंगी पास में रख कर ले जाये। यदि राज्याधिकारी से काम है तो- **ॐ चामुण्डे अमुक अमुक राज्याधिकारीगणान् मे वशमानय स्वाहा** का मंत्र जप करके इसको साथ में ले जाये।

सियार सिंगी के बाल होते है। यदि इसकेबाल काट दिये जाये एवं सिन्दूर में इसे रखे रहे तो बाल पुनः बढ जायेगें यदि असली होने की परिक्षा है।

सिद्ध करके सियार सिंगी को चांदी या पीतल की डिब्बी में रखे उसमें सिन्दूर भी डाल देवे। कार्य पर जाते समय उस सिन्दूर से तिलक करे एवं डिब्बी साथ ले जाये।

॥ १४. कांचनार तंत्रम् ॥

कांचनार का आयुर्वेद में बहुत प्रयोग होता है परन्तु गृहस्थ के लिये भी लक्ष्मी रूप में फलदायी है।

दशहरे के दिन सौभाग्यशाली व्यक्ति से ५, ७, ११ पत्तियां तुड़वाये, उस व्यक्ति का मुंह पूर्व की ओर होवे। फिर स्वयं पूर्व की ओर मुंह करके उन पत्तियों को उससे प्रसाद रूप में ग्रहण करे। घर लाकर उन पत्तियों को चांदी या पीतल की डिब्बी में लाल-पीले वस्त्र पर रखकर लक्ष्मी व चामुण्डा मंत्र से पूजन कर जप करे। फिर डिब्बी को तिजोरी में रखे तो धनवृद्धि होवे।

॥ १५. मुद्रा तंत्रम् ॥

ह प्रयोग अमावस्या शनि से प्रारंभ कर ७ शनिवार तक किया जाता है। सूर्योदय से पूर्व ही साधक घर से उत्तर दिशा

में पीपल या बरगद के पेड़ से बिना बोले ही पत्ते तोड़कर लाये। मन में धारणा रखे कि अब शनि देव की कृपा से मेरे अरिष्ट दूर होंगे।

पत्ता सिर या जमीन पर नहीं गिरना चाहिये। पत्ते को धोकर आसन पर रखे। फिर नागकेसर को चन्दन की भांति घिसे फिर दोब की कलम से उस पर **शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु** लिखे। पुनः गंध अक्षत् पुष्पादि से पूजन करे।

पत्ते का पूजन करे किसी धार्मिक ग्रंथ- रामायण, गीता भागवत या दुर्गासप्तशती में रख देवे। प्रत्येक शनिवार पूजा करे। अगले शनिवार को पहला पत्ता निकालकर वहां नया पत्ता रख देवे पहले वाले को पानी में विर्सजन कर देवे। अंतिम शनिवार को पत्ते पर रूपया कलदार कोई मुद्रा चढावे तथा उड़द की दाल के तीन पकोड़े मुद्रा व पत्ते पर नैवेद्य रूप में चढावे। पूजा हो चुकने पर सिक्के घर के मुख्य द्वार पर कील से देहरी या किवाड़ पर जड़ देवे। उस समय अपने इष्टदेव का स्मरण करे। फिर आकर प्रसाद के तीनों पकोड़े स्वयं ग्रहण करे। पत्ते को विसर्जन करे। प्रत्येक शनिवार को हनुमान जी के दर्शन करे। यदि मूर्ति सुलभ नहीं हो तो जहां से पत्ते लाये वहां शनि देव का वास मानकर उन्हे प्रणाम करे, संकट दूर करने की प्रार्थना करे। इससे ऋण मुक्त होकर धन प्राप्ति होती है।

॥ १६. सदाहार तंत्रम् ॥

यह प्रयोग भी अमावस्या शनिवार से प्रारंभ करे। वर्ष में जब भी यह योग हो उस दिन करे। कूड़ा करकट, फटी पुरानी रद्दी वस्तुयें, टूटे फूटे बर्तन, फटे पुराने कपड़े तथा घर में आंगन में कचरा, दीवारों पर जाला ये सब दरिद्रता की निशानी है।

अतः इस दिन घर के प्रत्येक भाग की सफाई करे, दीवारों को जालों से मुक्त करे। घर की रद्दी व टूटी फूटी वस्तुओं का विसर्जन कर सफाई करे।

बरतनों को अच्छी तरह धोकर चमकाये, घर की सजा सज्जा करे। गुगल, लोबान, अगरबत्ती, घी, गुड़ के धूप से पूरे मकान को शुद्ध करे। घर को प्रकाश यंत्र (लालटेन, चिमनी, कुप्पी, दीपक, बल्ब, ट्यूबलाइट को साफ कर कुछ देर जलावे) दीपक को फूंक से नहीं बुझायें वस्त्र या हाथ के झोंके से बुझाऐं। इस नियम का पालन करने से धीरे धीरे दरिद्रता दूर होने लगती है।

॥ १७. अतिथि तंत्रम् ॥

अतिथि को हमेशा हिन्दू संस्कृति में आदर का पात्र माना। संध्या समय यदि कोई स्त्री अड़ोस पड़ोस की या अन्य कोई सदाचार आचरण वाली आये कोई वस्तु की कामना करे तो उसकी उपेक्षा नहीं करे। यदि स्त्री कुलटा व हीन स्वभाव की होवे तो उसे इस तरह से मना करे कि उसे उसकी उपेक्षा महसूस नहीं होवे। सदाचार से भी लक्ष्मी की कृपा होती है।

॥ १८. लता तंत्रम् ॥

बहुधा कहीं कहीं वटवृक्ष पर जमीन में उगने वाली लताये चढ जाती है। पूर्णमासी की रात को बरगद के पेड़ पर चढी हुई लता की जड़ का ४-५ अंगुल का टुकड़ा काटकर लावे। उसे धोकर पीले या लाल वस्त्र पर रखे। नाग केसर से पूजन करे। देव पूजा की तरह नित्य पूजा करे। वर्ष भर में धीरे धीरे संपदा वृद्धि होवे।

॥ १९. हरिद्रा तंत्रम् ॥

हरिद्रा याने हल्दी दैनिक उपयोग की वस्तु है। कटे घाव पर लगाने से खून बंद होता है। दैनिक रूप से घाव पर लगाने से घाव ठीक हो जाता है। गहरे घाव के लिये। रूई के टुकड़े को गीला करके देशी घी में डालकर गर्म करे उसमें हल्दी डाल देवे। इससे घाव पर पट्टी करने से घाव जल्दी भेर जाता है। चोट लगने पर दूध में घी हल्दी डालकर पीने से जमा हुआ खून फटकर सूजन उतरती है रक्त संचार बढकर घाव जल्दी भरता है।

॥ २०. दारूहल्दी तन्त्रम् ॥

आमी हल्दी को चोट की सूजन वाले स्थान पर घिस कर लगाकर धूप में सेकने से दर्द कम हो जाता है। पीली हल्दी मांगलीक कार्यों में प्रयोग में अक्सर आती है इसे लक्ष्मी का रूप माना जाता है अतः पूजन प्रयोग में उपयुक्त होती है।

काली हल्दी में लक्ष्मी का विशेष निवास माना जाता है। अतः काली हल्दी लाकर उसका अष्टमी के दिन पीले या लाल आसन पर बैठकर पूजन करे। सूर्योदय समय पूर्व की ओर मुंह करके लक्ष्मी मंत्र से पूजन करे।

मंत्र- श्रीं ह्रीं ऐं कमले कमालये प्रसीद प्रसीद महलक्ष्म्यै नमः।

या वैदिक मंत्र- **श्रीश्चते लक्ष्मीश्च................।** से पूजन करे।

सूर्य का जप करे, मंत्र- **ॐ ह्रीं सूर्याय नमः।**

सूर्य को नमस्कार करे। इस हल्दी के साथ साबुत धनिया, चांदी का सिक्का या टुकड़ा, इनको पीले कपड़े में बांध कर गल्ले में रखे श्री वृद्धि होवे।

अष्टमी के दिन व्रत, उपवास करे। मूली, गाजर एवं जमीकन्द नहीं खावें।

॥ २१. अशोक तंत्रम् ॥

शिवरात्रि या सोमवार को घर से **ॐ नमः शिवाय** मंत्र बोलते हुये जाये एवं अशोक वृक्ष की जड़ के पास की मिट्टी खोद कर लाये शिव मंत्र का जप करते रहे।

मिट्टी में गंगाजल, केसर, केवड़ा इत्र, नागकेसर, सफेद चूर्ण डालकर उससे शिवलिंग बनाये।

पट्टे पर सफेद कपड़े का वस्त्र रखकर उस पर शिवलिंग रखे उसका पूजन करे। शिवमंत्र बोलते हुये १०८ बिल्व पत्र चढ़ावे। रूद्राक्ष या लाल चंदन माला पर ७-११-२१ माला तक जप करे।

शाम को आरती कर बिल्व पत्र उतार कर रख लेवे। अगले दिन से नित्य पूजा करे सात सोमवार को बिल्व पत्रों से पूजन करे। बिल्व पत्रों को अलग-अलग पोटली में इकट्ठे करे। सातवें सोमवार को सिघाड़े व मेवों की खीर का भोग लगावे।

एक-एक पोटली में से त एक-एक बिल्व पतत्र इकट्ठा करे पीतल या तांबे की डिब्बी में रखे। शेष पत्रों को पानी में विसर्जन करे। डिब्बी को नित्य धूप दीप करे तो वर्ष भर समृद्धि रहे।

॥ २२. नकुल (नेवला) तंत्रम् ॥

नकुल को देखने पर वह कभी मुँह खोलता, कभी खड़ा होता है, कभी गरदन हिलाता है या दाये-बांये निकले तो

उसके संकेत में भगवान विष्णु का संकेत मानते है।

यदि कार्य हेतु आवश्यक जाना होवे तो विष्णु का स्मरण करके आगे बढ़ना चाहिये। आगे जाना जरूरी नहीं हो तो घर आकर (बिना बोले) विष्णु व लक्ष्मी का पूजन करे, मंत्र जप करे।

मंत्र–

१. ॐ नमो नारायणाय

२. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

॥ २३. सप्तवस्तु तंत्रम् ॥

यह साधना चैत्र शुक्ला प्रतिपदा या अन्य शुभ दिन करे।

ताबें का पैसा या गोल टुकड़ा, पादुका के आकार में काटा हुआ तांबे का टुकड़ा, ५० ग्राम गेहू, ५० ग्राम साबुत हल्दी, एक बड़ी हरड़, एक बड़ी डली नमक की, ५० ग्राम नागकेसर इन सब को पीले कपड़े में बांधकर लक्ष्मी मंत्र से पूजा करे, अन्नपूर्णा का स्मरण करके पूजा करे एवं धान्य के भण्डार में या रसोई में लटका देवे तो भण्डार वृद्धि रहेगी।

॥ २४. अश्वनाल तंत्रम् ॥

काले घोड़े के पैर की नाल मिल जाय तो उत्तम रहे। शनिवार को नाल लेकर आवे परन्तु उस दिन अपने घर नहीं लावे अन्यत्र रखे। रविवार को उसका टुकड़ा काट कर केवल लोहे या ताम्र व लोहा मिश्रित कर सुनार से अपनी मध्यमा अंगुली की अंगुठी बनवावे। उसमें **शिव या शिवमस्तु** लिखावें। पश्चात् शनिवार को शिवमंत्र, शनि मंत्र से पीपल के पेड़ के पास जाकर उसका पूजन करे।

मंत्र– **ॐ शं शनैश्चराय नमः।**

७ बार शनि मंत्र बोलकर पीपल के पेड़ के स्पर्श कर अंगुठी पहने। उस दिन व्रत करे। ७ बार शनिवार शाम को पीपल पेड़ की पूजा करे। घी का दीपक जलावे तो उसमें ७ बूंद सरसों के तेल की अवश्य डाले। मुद्रिका धारण करने से शनि पीड़ा दूर होकर धन समृद्धि बढ़े।

मकान के दरवाजे पर लगाये तो नाल का मुंह (U) नीचे होवे ऊपर खुला भाग होवे। दुकान के दरवाजे पर लगावे तो खुला मुंह नीचे होवे।

॥ २५. शनि तंत्रम् ॥

एक सफेद कागज लेकर उस पर काली या नीली स्याही से मंत्र लिखे–

नीलाञ्जन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्त्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

कागज के दूसरे भाग को काजल से काला कर देवे।

लकड़ी के पट्टे पर नीलाकपड़ा बिछाकर उस पर कागज रख कर शनैश्चर की पूजा करे। घी के दीपक में थोड़ा

सरसों का तेल डाल देवे।

मंत्र—

ॐ शं शनैश्चराय यशो देहि धनं देहि।

इस मंत्र का जप करे नमस्कार कर शनैश्चर का विसर्जन करे। गच्छ गच्छ शनिदेव धनं देहि धनं देहि।

शकुन शास्त्र के लिये प्रयोग करने के लिये इस कागज के १०-१२ टुकड़े कर लेवे। प्रत्येक के पीछे १ से १२ तक अलग अलग अंक लिखे। गोलियां बनाये। शुभाऽशुभ जानने के लिये अपने मन मे सम या विषम संख्या सोचकर किसी एक टुकड़े को उठा लेवे उसके अनुसार फल जाने।

सट्टा के अंक लगाने वाले ३ गोलियां उठावे उनमे से प्राप्त कोई संख्या या तीनों के योग की संख्या का सट्टा का नंबर जाने।

॥ २६. अश्वजिहवा तंत्रम् ॥

यह दुर्लभ वस्तु है। कहा जाता है कि प्रसव समय घोड़ी की जिह्वा का कुछ अग्र भाग गिर जाता है कुछ समय बाद पुनः जिह्वा सही हो जाती है। यह जिहवा प्राप्त होने पर सुखा कर रखे उस पर हल्दी लगावे। लक्ष्मी मंत्र से पूजा करके गल्ले में रखे धूप दीप करे, धन वृद्धि होवे।

॥ २७. मार्जारी तंत्रम् ॥

बिल्ली जब प्रसव करती है तो कुछ समय बाद उसकी आंवल गिरती है। संग्रह करने वाला ऐसे समय का ध्यान रखते है, प्रसव होते ही उसे खाने को कुछ दे देते है ताकि आंवल या अपने बच्चों को नहीं खावे। आंवल को सुखाकर हल्दी लगा देवे। उसकी लक्ष्मी मंत्र से शुभ दिन में पूजा करे। उसे डिब्बी में रख कर गल्ले में रखे धन वृद्धि होवे।

॥ २८. चन्द्रतंत्रम् ॥

जिनको चन्द्रमा कुण्डली में कमजोर हो उनको यह प्रयोग करना चाहिये। प्रयोग शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक प्रति माह करे। शाम को चन्द्रोदय समय चन्द्रमा का पूजन कर खीर या दही भात का नैवेद्य अर्पण करे। पूर्णमासी को निर्धन को सफेद वस्तु का दान करे।

चांदनी रात में दूध या मावे में बनी औषधी को चन्द्रमा की किरणों में रखे, चन्द्र पूजन करे दीपक जलाये बाद में उसे ग्रहण करने से लाभ होवे।

॥ २९. दूर्वा तंत्रम् ॥

गणेश प्रतिमा पर दूर्वा के अंकुर २१-५१-१०८ चढावे। नित्य या हर बुधवार को प्रयोग कर मोदक का भोग लगावे तो दरिद्रता दूर होवे।

॥ ३०. पुष्प तंत्रम् ॥

बहुत समय अनुष्ठान प्रयोग समय प्रतिमा पर चढायी माला खिसक जाती है या कोई पुष्प गिर जाता है तो उसे संभाल कर रखे। पुष्प को गल्ले में रखै। आवश्यक कार्य पर जाते समय साथ रखे तो कार्य सिद्ध होवे।

वैसे भी घर में या मंदिर की प्रतिमा पर चढाया पुष्प साथ रखने से शुभ रहे।

॥ ३१. स्वस्तिक तंत्रम्॥

भोज पत्र पर स्वस्तिक यंत्र बनाये उसमें बीसा मंत्र लिखे पूजन कर साथ रखे। नागकेसर से भी स्वस्तिक सुशोभित किया जाता है। भोजपत्र पर लाल चंदन से स्वस्तिक बनाये उस पर गोंद की सहायता से नागकेसर को चिपकाकर यंत्र बनाये। इस यंत्र को काँच में मंडवाकर रखे तथा गणेश जी का अनुष्ठान करे तो सफल रहे। आम के पट्टे पर सिन्दूर या हिंगलू से स्वास्तिक बना कर घर में लगाये, वास्तु दोष दूर होवे।

॥ ३२. नाग केसर तंत्रम्॥

सोमवार के दिन शुभ मुहुर्त में प्रयोग प्रारंभ करे। शिव प्रतिमा पर पूजन कर नागकेसर अर्पण करे। शिव मंत्र का जप करे। २१ सोमवार उपवास पूर्वक क्रम करे। अंतिम सोमवार पुत्रवती सुहागिनी को भोजनकराकर वस्त्रादि से संतुष्ट करे। दैनिक क्रम में भिखारियों को भी दान देते रहे तो शिव कृपा से धन लाभ होवे।

॥ ३३. अमरबेल प्रयोग॥

अमरबेल वृक्ष पर छायी रहती है परन्तु उसकी जड़ का केन्द्र भूमि में रहता है। अत: जिस पेड़ पर अमरबेल हो उसके नीचे घास में आग लगावें, जहां जड़ होगी वहां पर घास नहीं जलेगी। इस तरह से लकड़ी लावें। लकड़ी नहीं मिले तो लता लावे। रात्रि को धूप करे, उससे लकड़ी को चामुण्डा या स्वप्नेश्वरी मंत्र से अभिमंत्रित करे और सिराहने रख कर सो जाये। रात्रि में स्वप्न में वार्ता फल कहे।

मयूरेश प्रकाशन

छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज-किशनगढ़ जिला-अजमेर (राज.)
फोन - 01463 244198, 098291 44050, 9214512223

लेखक एवं प्रकाशक पं० रमेशचन्द्र शर्मा "मिश्र" के श्रेष्ठ प्रकाशन

बिना तोड फोड के वास्तुदोष का निवारण
भवन वास्तुशास्त्र एवं भाग्यफल

लाल किताब के सिद्धान्तों के आधार पर वास्तु दोष का शमन (1) नूतन मकान कुण्डली सिद्धान्त द्धारा जानिये है कि आपके मकान में क्या वास्तु दोष होंगे। (2) वास्तु के समस्त नियमों की उत्पत्ति ज्योतिष सिद्धान्त से सिद्ध करने वाली पहली पुस्तक। (3) पुस्तक सिद्ध करती है कि **50 प्रतिशत भाग्य एवं 50 प्रतिशत वास्तुफल होता है**। (4) राशी व वास्तु दोष के अनुसार मकान के पर्दे, कांच का रंग व चित्र, खिलौनों से दोष का निवारण। (5) नींव रखने की पंचशिला व नवशिला स्थापन विधि (6) **परामिड़ के निर्माण, फेंगशुई सिद्धान्त की जानकारियाँ इस पुस्तक में उपलब्ध है।**

मूल्य २००/-

सुबोध दुर्गासप्तशती एवं याग विधानम् (तंत्र याग दीपिका)

रंग भेद व संधि विच्छेद द्वारा दुर्गापाठ आसानी से सीखिये।

प्रत्येक मंत्र के हवनीय द्रव्य दिये गये है। दुर्गा यंत्र, श्रीयंत्र, काली, बगलामुखी, मृत्युंजय, गायत्र्यादि के यंत्रार्चन की सरल व सम्पूर्ण क्रियायें। पूजन के समस्त रंगीनमंडल देवताओं के आवाहन, स्थापन की सरल विधि ।। पूजन, अर्चन, 9 कुण्डादि निर्माण, यज्ञ की सम्पूर्ण जानकारी एवं सरल विधि। विभिन्न सूक्त व सिद्ध तांत्रिक स्त्रोतादि।

मूल्य 270.00

तंत्रात्मक दुर्गासप्तशती

(गुप्तवती टीकानुसार)

१. दुर्गासप्तशती के ७०० मंत्र अलग-अलग ७०० बीजाक्षर मंत्रों से पुटित है। २. प्रत्येक मंत्र के ध्यान, विनियोग, न्यास आदि दिये हैं। ३. प्रत्येक विनियोग में ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक के अलावा महाविद्या, ज्ञानेनेन्द्रिय, रस, स्वाद, धातु, तत्त्व, गुण एवं उनकी मुद्रा का पूर्ण उल्लेख है। ४. प्रत्येक बीजाक्षर युक्त मंत्र के षडंगन्यास दिये गयें है। ४. प्रत्येक मंत्र की आहुति, द्रव्य का उल्लेख है। ५. कामना सिद्धि हेतु प्रत्येक मंत्र का पुरश्चरण का पर्याप्त विधान है।

मूल्य ३५०/-

भिन्नपाद दुर्गासप्तशती

पुस्तक में दुर्गासप्तशती को नवार्ण मन्त्र व ललितात्रिपुरसुन्दरी के मन्त्र से गर्भस्थ करके विधान दिया गया है। दुर्गासप्तशती के भिन्नपाद मंत्रों की यह सर्वप्रथम कृति है। साथ में गायत्री, शिव, दुर्गा, जातवेददुर्गा, मृत्युञ्जय, शरभ, भैरव एवं अन्य देवताओं के भिन्नपाद मंत्र प्रयोग दिये गये हैं।

मूल्य २००/-

श्रीदुर्गासप्तसती सर्वस्वम्

आकर्षण - १. सहस्राधिक श्लोकी दुर्गासप्तसती। २. प्रचलित दुर्गा सप्तशती ३. प्रतिमन्त्रविलोम दुर्गा सप्तशती। ४. उत्कीलित दुर्गा सप्तशती। ५. प्रतिमन्त्र लोमविलोम दुर्गा सप्तशती ६. बीजात्मक सप्तशती। ७. लघु सप्तशती। नवदुर्गा, ब्राह्मयादि के मन्त्र। हवन विधि। शतचण्डी, सहस्रचण्डी, लक्षचण्डी विधान।

मूल्य ३३०/-

डाक द्वारा पुस्तकें प्राप्त करने हेतु - फोन - 01463 244198, 9214512223 098291 44050

सांगोपांग वैवाहिक पद्धति

गुण मेलापक एवं कुण्डली मिलान विधि. विभिन्न समाजों की प्रथायें, रीति रिवाज. विवाहकर्म पद्धति, सरल हस्त क्रियाविधि युक्त. वैधव्य योग परिहार हेतु – कुंभविवाह, विष्णुविवाह, पिप्पल विवाह. विदुर योग निवारण हेतु – अर्कविवाह. गृहप्रवेशनीय होम (चतुर्थी कर्म). तुलसीविवाह, पीपलविवाह पद्धति. अशौच निवारण व रजोदोष शान्ति. ★ शीघ्र विवाह के उपाय ★ पुनर्विवाह का विस्तृत विधान। मूल्य ७५/-

शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी

सचित्र सस्वर एवं सरल रुद्रपाठ (मृत्युञ्जय प्रयोग सहितम्)

(1) सस्वर पाठ के चित्र छापकर क्रिया को सरल किया गया है। (2) स्वर दीर्घ, ह्रस्व, दक्षिण वाम होगा, उच्चारण काल लघु या दीर्घ होगा इसे विभिन्न रंगों में छापा गया है। (3) रंग भेद से स्वर का विभाग समझाया गया है। (4) सभी मंत्रों के ऋषिछंद व देवता भी अलग से दिये गये है। मूल्य १००/-

नवग्रह एवं नक्षत्र शान्ति

१. इस तंत्र में सभी नवग्रहों के यंत्रार्चन, कवच, स्तोत्र एवं शतनाम दिये गये है। २. सभी ग्रहों के वैदिक मंत्रों के ऋषिन्यास सहित सविधि प्रयोग दिये गये है। ३. शांति प्रयोगों में ज्येष्ठा मूल अश्लेषा मघा रेवती अश्विनी शांति मंड्ल विधान सहित वर्णित है। ४. गंडान्त शांति हेतु गोमुखप्रसव, शांतिप्रयोग, पुंसवन, नामकरणादि संस्कार विधि पूर्ण है। ५. यमलशान्ति, त्रितरशांति, वैधृत्यादि योग शांति, कुहू सिनीवाली शान्ति, एक जनन नक्षत्र शांति, अशुभ दन्तोत्पत्ति शांति इत्यादि कई शांति प्रयोग कर्मकाण्डी विद्वानों हेतु दिये गये है। मूल्य १००/-

गायत्री उपासना रहस्य

गायत्री के आवश्यक न्यास प्रयोग, मुद्रायें, त्रिकालसंध्या पूजन विधान, तर्पण प्रयोग, राजोपचार पूजा (८४ उपचार)। विविध स्तोत्र, कवच तथा मन्त्रवर्णात्मक सहस्रनामादि सहित कई प्रयोग एवं विद्याओं का वर्णन।

श्रीविद्या उपासना रहस्य

प्रस्तुत पुस्तक में बाला एवं ललितात्रिपुरसुन्दरी की क्रमबद्ध उपासना पद्धति, त्रिपुरसुन्दरी के सैंकडों मन्त्र, यन्त्रार्चन, कई प्रकार के स्तोत्र, सहस्नाम पाठ सरल व सुबोध तरीके से दिये गये हैं, जो प्रचलित उच्चकोटी की पुस्तकों में संकलित नहीं है।

मूल्य ५००/-

बगलामुखी उपासना रहस्य

शत्रुस्तंभन एवं बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी बगलामुखी की साधना शक्ति उपासकों में प्रचलित है। बगलामुखी की क्रमबद्ध उपासना पद्धति, सैंकडों मन्त्र, यन्त्रार्चन, कई प्रकार के स्तोत्र, सहस्नाम पाठ सरल व सुबोध तरीके से इस पुस्तक में दिये गये हैं। प्रचलित ग्रंथों से सर्वाधिक संकलन व सरल रूप में दिये गये हैं।

श्रीबगलामुखी चालीसा

अद्वितीय बगलामुखी चालिसा, बगलामुखी सप्तक, आरती व भजन, बगलामुखी कवच, बगलामुखी शतनाम स्तोत्र भी पुस्तक में दिये गये हैं। मूल्य ७/-

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाश: भाग (१)

'पूजा–प्रतिष्ठा'

(1) समस्त भद्रमंडल रंगीन, आवाहित स्थानसहित। (2) सर्वदेवपूजा एवं मूर्तिप्रतिष्ठा का हस्तक्रिया युक्त स्पष्टीकरण। (3) दशविधस्नान, पापघटदान, हेमाद्रिस्नानादि संकल्प विधि।(4) नामावलि, तथा वेदोक्तमंत्रों से पूजाविधान (5) तीनवेदी स्नान की सरल सचित्र प्रतिष्ठाविधि। (6) मण्डपविधान, कुण्डनिर्माण विधि सरल क्रिया में है। (7) पंचकुण्डी, नवकुण्डी संपूर्ण यज्ञविधि दी गई है। (9) चल, अचल मूर्ति प्रतिष्ठा एवं जीर्णोद्धार प्रतिष्ठाविधि पूर्ण रूपेण। (10) विभिन्नतरह के प्रासादों का वर्णन है। (11) वास्तु के 77 देवताओं के आवाहन व स्थापन के वैदिक, पुराणोक्त मंत्र एवं ध्यान दिये गये हैं। मूल्य २७०/-

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (२)

'तन्त्रोक्त देव पूजा रहस्य'

देवखण्ड में गणेश, हनुमान, विष्णु, शिव, भैरव, रुद्रादि देवों के विविधप्रयोग दिये हैं। मृत्युञ्जय प्रयोग, शरभ शालुव पक्षिराज, आशुगरुड़ प्रयोग, गंधर्वराज, कार्त्तवीर्यअर्जुन, परशुरामादि के विविध प्रयोग है। वांछाकल्पलता प्रयोग एवं अन्य कई प्रयोगों का वर्णन किया गया है। मूल्य २८०/-

सर्वकर्म-अनुष्ठानप्रकाशः भाग (३)

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य

उत्तर भारतीय व दक्षिण भारतीय पद्धति द्वारा सभी नवरात्र के कर्म का सम्पूर्ण विधान है। भगवती दुर्गा के नवदुर्गा स्वरूपों के प्रयोगों का वर्णन। गायत्री पुरश्चरण, काली, तारा, षोडशी, त्रिपुरभैरवी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, बगुलामुखी, मातंगी, धूमावती, एवं कमलादि देवियों के यंत्रार्चन का सरल विधान स्तोत्र, कवच, सहस्रनाम एवं विविध काम्य प्रयोगों का वर्णन। मूल्य ६००/-

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (४)

'उपमहाविद्या रहस्य - प्रथम भाग'

सभी देवियों की मातृकायें, भगवती त्रिपुर सुन्दरी की १५ नित्याओं का अर्चन, नवदुर्गा, ब्राह्मयादि अष्टमातृकाओं का यंत्रार्चन, कौशिकी, अंबिका, शिवदूति गायत्रीब्रह्मास्त्र, श्यामा, बगला, प्रत्यङ्गिरा, गुह्यकाली प्रयोग, वाराही का यन्त्रार्चन आदि देवियों के प्रयोग दिये गये हैं। मूल्य ५००/-

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (६)

'सिद्धविद्या रहस्य - द्वितीय भाग'

त्रिपुरसुन्दरी के मन्त्र से गर्भस्थ कई प्रयोग, कालिक्रम की १५ नित्याओं के प्रयोग, कामकला काली, महामाया वैष्णवी (पञ्चमुखी चण्डिका), भद्रा, स्वाहा, स्वधा, षष्ठीदेवी, मंगलचण्डी विधान, पार्श्वनाथ, पद्मावति, पञ्चांगुलि, ज्वाला मालिनि गंगादि देवियों प्रयोग, ज्वालादेवी, सारिका महाराज्ञि यन्त्रार्चन, कवच, सहस्रनाम, शब्दकोष। मूल्य ५००/-

कालसर्प योग एवं शाप दोष शांति

राहु केतु, शांति स्तोत्र, कवच, १०८ नामावलि,। नाग अष्टोत्तरशत नामावली- नागमण्डल पूजा। कालसर्पनाशाक तंत्रोक्त त्वरिता देवी, मनसादेवी, गरुड मंत्र प्रयोग। पितर सूक्त-स्तोत्र, कालसर्प यंत्र पूजा एवं विसर्जन प्रयोग विधि सहित। प्रेत, पिशाच विमोचन-प्रेतबाधा निवारण उपाय दिये गये है। मूल्य २२०/-

ब्रह्मकर्म सपर्या

नित्य संध्या प्रयोग, तर्पण प्रयोग, भूत शुद्धि मातृकादि प्रयोग, सरल रुद्राभिषेक प्रयोग। नवरात्र विधान व चण्डी प्रयोग। सर्वतोभद्र, लिङ्गतोभद्रादि पूजन। ग्रह शांति, गृह प्रवेश विधि, षोडश संस्कार, विवाह पद्धति, मूलादिगण्ड शांति एवं कुंभविवाह, अर्कविवाह पद्धति, एवं कुंभविवाह आवश्यक कर्म एवं महालय चटश्राद्धादि सभी कर्म सविधि बताये गये है। मूल्य ३३०/-

साधक का सत्य

☆ पुस्तक में लेखक की 40 वर्ष की साधना के नीजि अनुभव व दिव्य योग विधियाँ दी गई है ☆ गुरु परंपरा, गुरु की महत्ती कृपा कैसे प्राप्त करें ☆ दीक्षा, शक्तिपात की शक्ति व प्रभाव ☆ कुण्डलिनी जागरण के लक्षण ☆ कुण्डलिनी जागरण की विधियाँ ☆ षट्चक्रों का वर्णन। मन्त्र साधना द्वारा घट्चक्र भेदने की विधियाँ ☆ मन्त्र साधना द्वारा ध्यान, धारणा, समाधि, नादसाधना ☆ ध्यान लगाते समय होने वाली समस्याओं का आनुभविक निराकरण ☆ साधना के मार्ग की दिव्य अनुभूतियों का आनुभविक वर्णन। ☆ त्रिनाड़ी शक्ति का वर्णन, ☆ पञ्चकोषमय शरीर का वर्णन मूल्य १५०/-

वैदिक पूजन के मन्त्र (दण्डक)

दैनिक पूजन के वैदिक मन्त्रों की कुञ्जिका जिससे कर्मकाण्डी विद्वान सभी कार्य सुगमता से करा सकते हैं।

मूल्य - ३०/-

लेखक : पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)

विशेषज्ञ :

ज्योतिष, तंत्रशास्त्र, वास्तुशास्त्र एवं कर्मकाण्ड (डिप्लो. मैकेनिकल इंजि.)

हमारे प्रकाशन

क्रम	पुस्तक	मूल्य
1	सुबोध दुर्गा सप्तशती एवं याग विधानम्	330
2	सचित्र सस्वर रूद्राष्टाध्यायी	120
3	भवन वास्तुशास्त्र एवं भाग्यफल	220
4	सांगोपांग वैवाहिक पद्धति	100
5	नवग्रह एवं नक्षत्र शान्ति	120
6	सर्वकर्म अनु० भाग 1 पूजा प्रतिष्ठा	330
7	सर्वकर्म अनु० भाग 2 देवखण्ड	350
8	सर्वकर्म अनु० भाग 3 देवीखण्ड पूर्वार्द्ध	650
9	सर्वकर्म अनु० भाग 4 देवीखण्ड उत्तरार्द्ध	550
10	सर्वकर्म अनु० भाग 5 तंत्रसिद्धि रहस्य	350
11	सर्वकर्म अनु० भाग 6 सिद्ध विद्या रहस्य	550
12	सर्वकर्म अनुष्ठान भाग 7 लघुविद्या रहस्य	
13	तंत्रात्मक दुर्गा सप्तशती	350
14	भिन्नपाद दुर्गा सप्तशती	220
15	दुर्गा सप्तशती सर्वस्वम्	350
16	ब्रह्मकर्म सपर्या	350
17	कालसर्प एवं शाप दोष शान्ति	250
18	दैनिक पूजन के वैदिक मंत्र दण्डक	30
19	साधक का सत्य	150
20	बगलामुखी चालीसा	15
21	श्रीविद्या उपासना रहस्य	550
22	बगलामुखी उपासना रहस्य	650
23	गायत्री उपासना रहस्य	
24	[illegible] उपासना रहस्य	

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (1)

पूजा–प्रतिष्ठा

सभी देवताओ की प्रतिष्ठा, सम्पूर्ण पूजा विधान तथा हवन कुण्ड निर्माण का विधान।

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (2)

तन्त्रोक्त देव पूजा रहस्य

सभी देवताओ के तन्त्रोक्त कामना सिद्धि प्रयोग।

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (3) देवीखण्ड पूर्वार्द्ध–

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य

गायत्री पुरश्चरण प्रयोग। नवदुर्गा के उत्तर भारत, दक्षिण भारत के चारों नवरात्र विधान। दशमहाविद्याओं के विशेष प्रयोग जो एक साथ अन्य किसी पुस्तक में संकलित नहीं हैं।

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (4) देवी खण्ड उत्तरार्द्ध–

उपमहाविद्या रहस्य

गायत्री ब्रह्मदण्ड, ब्रह्मदण्ड, ब्रह्मास्त्र, नवदुर्गाओं की आवरण पूजा। काली व श्रीविद्या की नित्याओं के प्रयोग व अन्य महाविद्याओं की नित्याओं तथा मातृकाओं के एवं अन्य विद्याओं के प्रयोग सहित। पद्मावती उपासना एवं कई देवियों के प्रयोग दिये गये हैं।

तन्त्रात्मक दुर्गासप्तशती

दुर्गा सप्तशती के 700 श्लोकों के न्यास, ध्यान, विनियोग सहित विधान।

भिन्नपाद दुर्गासप्तशती

नवार्ण मंत्र एवं त्रिपुरसुंदरी मंत्र से चरण भेद पुटित दुर्गा पाठ प्रयोग तथा अन्य कई देवताओं के भिन्नपाद प्रयोग।

ब्रह्मकर्म सपर्या

यह पुस्तक कर्मकाण्डी ब्राह्मणों हेतु सरल वैदिक विधि से संकलित है। रुद्राभिषेक प्रयोग, यज्ञोपवीत, विवाह, गृह प्रवेश, ग्रहशांति आदि कई विधान दिये गये हैं।

कालसर्प एवं शाप दोष शांति

राहु केतु जनित उपद्रव शांति, पूर्वजन्मोक्त, प्रेत, पितर, पिशाच शाप विमुक्ति प्रयोग दिये गये हैं।